हिंदी ग्रंथ सूचिका

खोज में उपलब्ध

हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों

का

उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

[सं० २००१-२००३ वि० (सन् १९४४-४६ ई०)]

प्रथम भाग

संपादक

पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र

नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

प्रकाशक—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

मुद्रक—शंभुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, काशी

प्रथम संस्करण, सं० २०३१, ११०० प्रतियाँ

मूल्य [illegible]

भारत गणतंत्र के शिक्षामंत्री
माननीय श्री नूरुलहसन जी को
सादर समर्पित

वक्तव्य

खोज का उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण पाठकों के सामने प्रस्तुत है। खोज का यह त्रैवार्षिक विवरण विक्रम संवत् के क्रम से तैयार किया गया है। इसमें सं० २००१ से २००३ तक (सन् १९४४ से १९४६ ई०) के खोजकार्य का उल्लेख किया गया है। यद्यपि इसका आकार बहुत बड़ा हो गया है, तथापि अनुसंधान की उपयोगिता की दृष्टि से संक्षेपीकरण नहीं किया गया है। यह दो खंडों मे प्रकाशित किया जा रहा है। इस विवरण को भूतपूर्व निरीक्षक पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने तत्कालीन खोज अन्वेषकों, विशेषत: श्री दौलतराम जुयाल की सहायता से हिंदी में संपादित किया था। पूर्व विवरण के अनुसार ही इस विवरण मे भी ग्रंथों और ग्रंथकारों का अनुक्रम हिंदी वर्णमाला के अनुसार हुआ है।

उत्तर प्रदेशीय राज्य शासन द्वारा दिए गए प्रथम १०,०००) रु० के अनुदान से चार त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२६--३७ ई०) छापे गए थे। उसके पश्चात् चार त्रैवार्षिक विवरणों (सन् १९२३—४९ ई०) के प्रकाशन के निमित्त राज्य शासन ने सन् १९५६ ई० में कृपापूर्वक ७,०००) का द्वितीय अनुदान दिया। यह आशा की गई थी कि इस द्वितीय अनुदान से कम से कम तीन त्रैवार्षिक विवरणों के प्रकाशन का कार्य तो संपन्न हो ही जायगा किंतु दो ही (सन् १९३८-४० तथा सन् १९४१-४३) त्रैवार्षिक विवरणो के प्रकाशन मे प्राप्त अनुदान से अधिक व्यय हो गया। फलत: आगे के दो तैयार त्रैवार्षिक विवरणो के प्रकाशन का कार्य रुक गया। सन् १९५६ से ही उक्त दोनों त्रैवार्षिक विवरण प्रकाशन की असुविधा के कारण पाठकों के संमुख न आ सके।

अनुसंधित्सुओं की आवश्यकताओ को दृष्टि में रखते हुए सभा ने उनके प्रकाशन के कई प्रयत्न किए किंतु द्रव्याभाव के कारण सफलता न मिली। अंत मे केंद्रीय सरकार की महती कृपा से उसके शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय की २९.६.१९७४ की एफ ९-२।७४-एच (डी० आई०) (एल) संख्यक राजाज्ञा द्वारा १२,६७६) का अनुदान प्राप्त हुआ। इससे प्रस्तुत विवरण के प्रकाशन का कार्य प्रारंभ हुआ और यह इस रूप मे विद्वत्समाज के समक्ष उपस्थित है। इसका दूसरा खंड भी मुद्रित हो रहा है जो शीघ्र ही प्रकाशित हो जायगा। केंद्रीय सरकार की इस सामयिक कृपा के निमित्त हम उसके अत्यंत आभारी है।

मेष संक्रांति,
सं० २०३२ वि०

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

विषय सूची

प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का

उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

संवत् २००१–२००३ वि०

सभा के नियमानुसार उसके सभी कार्यों में पहले से ही सौर विक्रम संवत् का उपयोग होता आ रहा है। परतु अग्रेजी शासन मे प्रातीय सरकार के (जिसकी सहायता से यह कार्य हो रहा है) नियमानुकूल खोज विवरणो मे ईसाई सन् का ही व्यवहार होता रहा। खोज का प्रस्तुत त्रैवार्षिक विवरण विक्रम सवत् के क्रम मे तैयार किया गया है। वैसे इसमें तीन ही वर्षो के विवरण-पत्र रहने चाहिए थे, परंतु वि० सवत् के क्रम से व्यवस्थित करने के लिये इसमें लगभग चार मास के विवरण-पत्र और सम्मिलित कर देने पड़े। आगे के खोज-विवरण अग्रेजी मे न छपकर हिदी मे ही छपेगे।

खोज की उक्त कार्यविधि मे तीन अन्वेषको—श्री दौलतराम जुयाल, श्री विद्याधर त्रिवेदी और श्री कृष्णकुमार वाजपेयी ने विवरण लेने का कार्य किया। श्री विद्याधर त्रिवेदी ने प्रस्तुत त्रिवर्षी के आरभ मे ही थोडे दिन काम करके त्यागपत्र दे दिया, जिसके एक वर्ष पश्चात् श्री कृष्णकुमार वाजपेयी उनके स्थान पर नियुक्त हुए। इस प्रकार वर्ष भर एक अन्वेषक का काम बद रहने से विवरण लेने के कार्य मे निश्चय ही कुछ कमी हुई।

श्री दौलतराम जुयाल ने सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय के थोड़े से ग्रथो के विवरण लेने का कार्य निपटाकर आजमगढ, गोरखपुर, इलाहाबाद और सुलतानपुर जिलो मे कार्य किया। प्रथम तीन जिलो का कार्य समाप्त हो गया है और अब सुलतानपुर मे कार्य चल रहा है। श्री कृष्णकुमार वाजपेयी ने गाजीपुर जिले का कार्य समाप्त करके जौनपुर जिले मे कार्य आरभ किया ही था कि वहाँ के अधिकाश भागो मे प्लेग का प्रकोप हो गया। अतः वहाँ का कार्य स्थगित कर उन्हें श्री जुयाल जी के साथ ही काम करने के लिये सुलतानपुर भेज दिया गया।

प्रस्तुत त्रिवर्षी मे १२५८ ग्रथो के विवरण लिए गए है। इसमे ३४७ ग्रंथों के विवरण श्री कटमणि शास्त्री (शिक्षाविभाग, कॉकरोली) और २७ ग्रथो के विवरण श्री मोतीलाल अग्रवाल (एक्साइज इस्पेक्टर रियासत छतरपुर) से प्राप्त हुए। शेष कार्य तीन वर्षों में इस प्रकार विभक्त है :—

स० २००० (पौष–चैत्र) मे २०१ विवरण; सं० २००१ मे १२६; सं० २००२ में २४१ और स० २००३ मे ३१२ विवरण।

५६६ ग्रंथकारो के रचे ८७२ ग्रंथों की ९९७ प्रतियो के विवरण लिए गए है। इनके अतिरिक्त २५७ ग्रंथ ऐसे है जिनके रचयिता अज्ञात है। ४०३ ग्रथकारो के रचे ५६७ ग्रथ खोज में बिलकुल नए है। इनमें १६३ ऐसे नवीन ग्रथ सम्मिलित है जिनके रचयिता तो ज्ञात थे; किंतु उनके इन ग्रथो का पता न था।

ग्रंथों और उनके रचयिताओं का शताब्दि-क्रम निम्नलिखित है—

शताब्दी	१०वीं	१३वीं	१४वीं	१५वीं	१६वीं	१७वीं	१८वीं	१९वीं	२०वीं	अज्ञात	योग
ग्रंथकार	१	१	१	५	१२	४३	७३	८७	३१	३१२	५६६
ग्रंथ	१	१	१	२३	३८	१७८	९२	१४१	४५	४७४	१२५४

विषय-विभाग की सारिणी यों है—

काव्य–१३९; दर्शन और अध्यात्म–७३; भक्ति–१५०; योग–३; अलंकार–१७; शृंगार–१२२; पिंगल–११; नाटक–२, संगीत–९; कोश–७, व्याकरण–१; भूगोल-७; ज्योतिष तथा गणित–२६, पुराण और इतिहास–२६; पौराणिक कथाएँ–५५; कथा-कहानी–५८; परिचयी या जीवनवार्ता–६; धार्मिक और सांप्रदायिक–५०; लीलाविहार–६२; नीति, राजनीति और हितोपदेश–६५; माहात्म्य और स्तोत्र–५०; वैद्यक–३६; कोकशास्त्र–५; स्वरोदय–६; शालिहोत्र–१०; रमल और शकुन–९, वंशावली–६; वास्तु-विद्या–२; यात्रा–९; पाकविद्या–१, पहेली–१, रत्नपरीक्षा–१; जंत्र, मंत्र और तंत्र–५; सामुद्रिक–४; रसायन–१; आखेट–१; धनुर्विद्या–१; फुटकल–१८९।

नवीन रचयिताओं में ईश्वरदास, कन्हैयालाल भट्ट "कान्ह", कान्ह कवि (लघु-कान्ह), कुदरतीदास या कुदरती साहब, कृष्णदास, गंगाराम, धनदेव कान्यकुब्ज (वैष्णव), चतुर्भुज मिश्र, छविनाथ, जान कवि, मिरजा मुहम्मद जान, तामसन साहब, थेघनाथ या थेघू, देवेश्वर माथुर, नवरंगदास स्वामी पचौली देवकर्ण, प्राणनाथ सोती, फणींद्र मिश्र, बलदेव कवि, बलरामदास, भगवतदास, भरमी मिश्र–रामनाथ पंडित, भारथ सिंह या भारथ साहि, भीम, महीपति या महीप, मुरलीधर कविराइ, शिवदत्त त्रिपाठी, शिवदास गदाधर, शेख अहमद, शेख निसार, समाधान, हसन अली खाँ, हेमरतन और हेमराज मथेन मुख्य हैं।

१. **ईश्वरदास (इशरदास)**—इनकी एक रचना 'सत्यवती की कथा' (काशी नागरी-प्रचारिणी सभा में विद्यमान) का पता खोज में प्रथम बार ही लगा है। यह खंडित है जिसमें केवल संख्या ४, १८ और १९ के तीन ही पत्रे हैं। रचनाकाल और लिपिकाल तो अज्ञात है ही, पर इन पत्रों द्वारा रचना के नाम का भी पता न चल सका। ग्रंथकार का नाम अंतिम पत्र में इशरदास (ईश्वरदास) दिया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत हिंदी साहित्य के इतिहास में इस नाम के एक रचयिता की रचना 'सत्यवती-कथा' का उल्लेख है। उसमें कथा का सार भी दिया है। मिलान करने पर पता चला कि प्रस्तुत रचना में भी वही कथा है। इसी आधार पर इसका नाम 'सत्यवती-कथा' विदित हुआ। उक्त इतिहास में रचनाकाल और रचयिता के संबंध में ये उद्धरण दिए हैं :—

भादौं मास पाख उजियारा। तिथि नौमी औ मंगल वारा॥
नषत अस्विनी मेषक चंदा। पंच जना सो सदा अनंदा॥
जोगिनिपुर दिल्ली बड़ थाना। साह सिकंदर बड़ सुलताना॥
कंठे बैठ सरसुती, विद्या गनपति दीन।
ता दिन कथा आरंभ यह, "इसरदास" कवि कीन्ह॥

इसके अनुसार रचयिता दिल्लीपति शाह सिकंदर के राज्यकाल (संवत् १५४६–१५७४ वि०) में वर्तमान थे और दिल्ली के ही पास जोगिनीपुर स्थान के निवासी थे। भाव, भाषा और शैली के विचार से, विवरणिका में आए "भरतविलाप" (सख्या २१) और "अंगदपैज" (संख्या २३) भी इन्हीं के रचे जान पड़ते हैं। उदाहरण के लिये इन ग्रथों से कुछ उद्धरण दिए जाते हैं—

सत्यवती की कथा

कंठे बैठ सरसुती, विद्या गनपति दीन्ह।
ता दिन कथा आरंभ यह, इसरदास कवि कीन॥
रोवै ब्याधि बहुत पुकारी। छोहन बिछ रोवै सब झारी॥
बाघ सिंघ रोवत वनमांही। रोवत पंछी बहुत ओनाही॥
(हिंदी साहित्य का इतिहास)

रिषिअन के राआ पुछत हव मौ तोहि।
कैसे बाढे ही पाचौ पंडौ चोषे अरथ सुनावहु मोहि॥
(खोज में प्राप्त प्रति)

भरतविलाप

सुरसत चरन मनिवहु, मनमैं बहुत उछाह।
राम कथा कछु भाषहु, जाकै गुन औगाह॥
रामचंदर छाडा असथाना। रोए नगर सकल परधाना॥
रोए सीआ सतीवर नारी। राम लखन बीनु अवध उजारी॥
:o: :o: :o: :o: :o: :o:
चोषे दूत विदा जब भयऊ। अतरवास जोजन सत गयऊ॥
:o: :o: :o: :o: :o: :o:
घर घर रोअही पुरुषवर नारी। राह बाट रोए पनिहारी॥
मन मह रोवत पसु औ पंछी। हाहाकार रोए जल मंछी॥
:o: :o: :o: :o: :o:
भरथवीलाप कथा वीमल, इसरदास कही गाव।
जो नर सुनही जो गावही, जनम जनम अघ जाइ॥
:o: :o: :o: :o: :o:

अंगद पेंज

मोरी दोहई मंत्री चोषे पठवहु एक दूता।
वेगि जइ लै अवही वलि रइक पुत्रा (? वालिराइ के पूता)॥
:o: :o: :o: :o: :o:
रघुनंदन अस बोले अंगद को नही जन (जान ?)।
राम राम जग तरन इसरदास कवि मान॥

"भरतविलाप" और "अंगदपैज" तो एक ही ग्रथ के अश जान पड़ते है। संभव है, कवि ने "रामचरित्र" पूरा लिखा हो और उसी के ये अश हों। इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि सरस्वती की वदना "सत्यवती कथा" और "भरतविलाप" दोनो मे की गई है। "अगदपैज" की प्रति खंडित मिली है जिससे उसके—यदि वह स्वतत्र रचना हो—मगलाचरण के उद्धरण प्राप्त नहीं; पर विलाप-वर्णन दोनों के मिलते-जुलते है। कवि का नाम "इसरदास" तीनों ग्रंथों में दिया है। भाषा भी सबकी अवधी ही है।

२. कन्हैयालाल भट्ट उपनाम "कान्ह"—इनका पता भी इस त्रिवर्षी में नया ही लगा है। ये जयपुर के निवासी थे और मथुरा में रहने लगे थे। इन्होंने अपने को किसी सरदार नरेश का मंत्रसिरताज कहा है—

श्री सिरदार नरेस कौ सकल मंत्र सिरताज।
जग जाहर जसरा के हित यह रचित समाज॥
श्री जैपुर वासी सुकवि मथुरास्थ दुजराज।
'कानभट्ट' कीने कवित्त विंशति श्लेष समाज॥

इनकी "श्लेषार्थविंशति" नामक महत्वपूर्ण रचना के विवरण लिये गए है, जिसमे श्लेषालंकार पर एक सौ कवित्त है। ग्रंथ पूर्ण होते हुए भी उसमें रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही।

३. कान्ह कवि (लघुकान्ह)—इन्होंने संवत् १९१६ मे "हरिनाथविनोद" नामक नायिका-भेद-विषयक ग्रंथ की रचना की। ये पाली शहर के निवासी मनीराम के वंशज थे। ग्रंथ के दूसरे अध्याय की समाप्ति के लेख से पता चलता है कि ये जगदंबा के भक्त थे—

इति श्री सकल गुन विचछ्छन स्वच्छ लछ्छन प्रतच्छ परेस्वर पदारविंद अनुरक्त भक्त भवद जोतम स्वयंवर सुवन दुवन दहन रोगवन अनल विध्वंसन कुलधर वंसावतंस समर्थ परमार्थ स्वारथानुरक्त वैद्यराज हरिनाथविनोदे जगदंब जन कान्ह कृते संछेप स्वकीया वर्ननोनाम द्वितीयोध्याय॥

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना इन्होंने किसी हरिनाथ के नाम पर की है जो अलवरनरेश विनेश के यहाँ छह रत्नों में से एक थे—

······उपजे जू पंडित जहाँ पाली सहर जरूर॥ ४॥
मनीराम के वंश मै कान्ह सुजान। कीनी रचना ग्रंथ की रस सिंगार पहिचान॥
श्री विनेश भूपति भयो भू पर भान समान। जिनकी कीरति छंद पढ़ि कवि कल करत बखान॥
तिन कर कृपा कटाक्ष ये राखे छै गुनवंत। एक स्वयंवर वौध कौ लषिगुन गूढ़ अनंत॥
दूजे कवि हरिनाथ कौ भवभूषनि मनिमानि। ··················॥
················तिनके हित यह कान्ह कवि रचो ग्रंथ सुखदाई॥"

इन उद्धरणों से यह भी विदित होता है कि हरिनाथ के पिता का नाम स्वयंवर बौध (वैद्य ?) था। दोनों पिता-पुत्र वैद्य और बडे गुणी तथा अलवर राजदरबार के छह रत्नों में से प्रथम दो रत्न थे। ये पाठक ब्राह्मण थे। ग्रंथ-स्वामी गयाप्रसाद पाठक का कहना है कि हरिनाथ पाठक उनके बाबा थे और मई ग्राम—जहाँ ग्रंथ-स्वामी रहते है—के निवासी थे।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित तथा जीर्णावस्था मे मिली है। बहुत से स्थानों की स्याही उखड गई है और अक्षर भी ठीक पढे नही जाते। अतः रचयिता के उपर्युक्त वृत्त के संबंध मे निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता। ग्रंथ का लिपिकाल अज्ञात है। काव्य की दृष्टि से रचना सुंदर है।

४. कुदरतीदास या कुदरती साहब—इनकी दो रचनाएँ "रामायण" (अनुमान से) और "विश्वकारन" मिली है, जिनका विवरण निम्नलिखित है—

रामायण—यह खंडित है जिसमे ग्रंथ के नाम तक का उल्लेख नहीं। विषय को देखकर ही इसका नाम "रामायण" रखा गया है। इसमे चौपाई और साखियों मे रामचरित वर्णित है। दोहे के लिये साखी शब्द प्रयुक्त हुआ है। कथावस्तु मे जहाँ तहाँ परिवर्तन किया गया है। अनेक कथाएँ स्वतंत्र रूप से वर्णित है और कितनी ही छोड भी दी गई है। कथारंभ रचयिता ने अपना पूर्व जन्म का इतिहास देकर किया है, जिसका वर्णन स्वयं भगवान रामचंद्र करते है। ग्रंथ में

कांडों, अध्यायों और सर्गों आदि का उपयोग नही हुआ है । और कथा भी अत्यंत सक्षेप मे लिखी गई है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं ।

विश्वकारन--यह ग्रथ पूर्ण है। इसमे जगत् की उत्पत्ति के कारण तथा भस्मासुर की कथा का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है पर लिपिकाल सवत् १६०८ वि० दिया है।

इन ग्रथो के द्वारा रचयिता के विषय मे केवल इतना ही पता चलता है कि इनको स्वप्न मे राम-दर्शन होने पर भक्ति का वरदान मिला था। अन्य कोई विवरण नही मिलता। परंतु ग्रथ-स्वामी (गुसाँई रामस्वरूपदास, कुटी, सठियाँव, डाकघर जहानागंज रोड, जिला, आजमगढ) के कथनानुसार ये जिला गोरखपुर के अतर्गत गोला बाजार के निकट बराहगाँव के रहनेवाले ब्राह्मण थे। सतमत ग्रहण करने पर इन्होने अपना नाम कुदरतसाहब रख लिया था। इन्होने बहुत से ग्रथो की रचना की। लगभग चौबीस ग्रथ ग्रथ-स्वामी के पास थे जो काल-गति से नष्ट हो गए और कुछ इधर उधर चले गए। उनमे एक ग्रथ "जगसमाधि" भी था।

ग्रथो को पढने से पता चलता है कि रचयिता निर्गुण और सगुण दोनो प्रकार की भक्ति के समर्थक थे। भक्ति करते हुए कष्टो को झेलना ये वाछनीय नही समझते थे। ससार के सब सुखो को भोग कर भी भक्ति की जा सकती है, परतु सत्य और विश्वास अवश्य करना चाहिए।

५. कृष्णदास--सवत् १६२८ मे इन्होने "जैमुनि कथा" की रचना की, जिसमे पाडवों के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन है। इसकी वर्तमान प्रति सवत १८६७ मे लिखी गई। इसमे मध्यकाल का कुछ ऐतिहासिक तथ्य मिलने से ग्रथ महत्त्व का है। इसके अनुसार रचयिता सरजू और गडक के बीच गोरखपुर प्रात के निवासी थे। इनके पितामह का नाम धानो और पिता का नाम परान था। पिता का जन्म सरजू और गडक के सगम पर बसे कलेस्वर स्थान मे हुआ था, जहाँ उदैसिंह नाम का राजा राज्य करता था। राज्यविद्रोह होने के कारण इनके पितामह तथा पिता कुटुब सहित उस स्थान से भागकर तिवई जदुनदनपुर मे जा बसे। ये चार भाई थे जिनके नाम मुकुद, भक्तमनि, केदार और कृष्णदास थे। वह समय अकबर बादशाह का था।

एक अनंत भौ सागर तरना। कृष्णदास प्रभु प्रनवै चरना॥
कविन मांह हम कवित आना। पुन्यभूमि गोरखपुर थाना॥
इत सरजू उत गंडक सीला। कलेस्वर मध्य मनोरम सीला॥
उदैसिंह तह भयो नरेसा। पीता हमार जन्म तेही देसा॥
पितु परान पितामह धानो। राज उपद्रौ अगमन जानो॥
सकुल सहित ले तुरित सिधाए। तीवइ जदुनंदनपुर आए॥
विन्हए पुन्य दया सत धर्मा। चारि पुत्र मति मानस कर्मा॥
प्रथम मकुंद महा मतिमाना। प्रम भक्त मनि ध्रप सुजाना॥
तीसर पुत्र केदार सुग्याता। चौथे कृष्णदास विख्याता॥
संवतसर जो गयो सतैसा। सोरह सौ जो उपर अठैसा॥
जैठ मास जे पछ उजियारा। तिथि सातै ता दिन गुरुवारा॥
कीन्ह अरंभ तब कथा समाजा। अकबर साह छत्रपति राजा॥

६. गंगाराम*--इनकी एक पुस्तक "पोथी मैनसत के उत्तर" नाम से मिली है जिसमे

---

* **रचयिता और रचना के संबंध में श्री परमेश्वरीलाल गुप्त (प्रिंस ऑव वेल्स म्यूजियम फोर्ट, बंबई) यों सूचित करते हैं--'मैना सत के उत्तर' वस्तुतः गंगाराम कृत नहीं हैं। वह साधन कृत 'मैनासत' या 'मैनासतवंती' के नाम से प्रसिद्ध प्रेमाख्यान की प्रति है। उसकी अनेक प्रतियाँ ज्ञात हैं।······ज्ञात प्रतियों पर अगरचंद नाहटा का एक लेख आगरा विद्यापीठ की पत्रिका में छपा है। दूसरा 'अवध भारती' के नवंबर दिसंबर सन् १९५६ ई० के अंक में छपा है।**

मैन नाम की सती की कथा है। कथा सक्षेप में इस प्रकार है—सतन कुँवर के दूत के कहने पर रतन मालिनी ने लोर की पत्नी मैंन का सत डिगाने की बडी चेष्टा की, पर असफल रही। विरह के अवसर पर बारहमासो के कष्टो का वर्णन कर पर-पुरुष से प्रेम करने के लिये उसने मैन को उत्साहित करना चाहा, परन्तु वह तिल भर भी सत से विचलित न हुई। अत मे जब मालिनी की पापयुक्त बाते सहन न हो सकी तो मैन ने उसकी दुर्गति करने का निश्चय किया। उसने उसके केश मुँड़वा दिए, शिर सिंदूर से रँगवा दिया और माथे पर काले पीले टीके लगवा कर और गदहे पर बिठलाकर हाट-हाट फिराने के पश्चात् निकाल दिया। इस प्रकार सत की विजय हुई।

रचना प्राचीन प्रेम-कथानक के ढग की है और प्राचीन अवधी में लिखी भी गई है। इसकी प्रस्तुत प्रति कैथी लिपि मे है जो अत्यत भ्रष्ट है और ठीक ठीक पढी नही जाती। रचना-काल अज्ञात है। लिपिकाल अस्पष्ट सवत् ८३२ दिया है। अनुमान से इसको सवत् १८३२ मान लिया गया है। रचयिता का नाम ग्रथारंभ मे तथा पुष्पिका मे "गग" या "गगाराम" लिखा है। अन्य परिचय नही मिलता। इस नाम के कई रचयिताओ का उल्लेख पिछले खोज विवरणों मे पाया जाता है, पर ये उन सबसे भिन्न ज्ञात होते है।

७. घनदेव कान्यकुब्ज (वैष्णव)—इनकी "नवलनेह" नाम की रचना मिली है, जिसमे कृष्णलीलाओ के अतर्गत मिलन और वियोग-शृगार का सुदर वर्णन है। रचनाकाल संवत् १८५४ है। लिपिकाल नही है।

रचयिता काशी-निवासी कान्यकुब्ज दुबे ब्राह्मण थे। इस ग्रथ की रचना इन्होने द्वारावती जाकर की थी, जहाँ के भूमिपति का उल्लेख इन्होने "राणा श्री सुरतान" कहकर किया है—

समत अष्टादस सुसत, चौवन ही परमान।
माघ मास दसमी सुकल, वार भानु सुत जानि॥ ६॥
कहे ग्रंथ घनदेव कवि, विप्र बनारस वासि।
कान्यकुब्ज दुबे सही, जेसी बुध प्रकास॥१०॥
पछिम धरि द्वारावती, देस कुसस्थल जानि।
पुरी सुदामा बसत तहा, महामुक्ति की दानि॥११॥
ताहा भूमिपति जानिये, हे राणा श्री सुरतान।
वाता ईस मानि पुनि, वीर जथा हनुमान॥१२॥
दरस द्वारिकानाथ को, आप करे घनदेव।
पुनि पूरब हर में तहा, कीनो ग्रंथ सुभेव॥१३॥

८. चतुर्भुज मिश्र—प्रस्तुत खोज मे इनका "भाषा-सग्रह" नामक ग्रथ मिला है, जिसमे रचनाकाल सवत् १७०२ वि० उल्लिखित है। लिपिकाल अज्ञात है। यह महत्त्वपूर्ण संग्रह है, जिसमे इनके अतिरिक्त अन्य अनेक कवियो के नौ रसो पर रचे गए १२०० छंद सगृहीत है। कवियो के नाम अत के दो पत्रो मे इस प्रकार दिए है—

गग, केसोदास, अनत, सुदर, प्रसिद्ध, सुकविराइ, वीरवर, रामकृष्ण, गोपीनाथ मिश्र, प्रेमनाथमिश्र, शकरमिश्र, नरोत्तममिश्र, गोवर्धनमिश्र, सूरदास, सूरदासमदनमोहन, नंददास, गो० तुलसीदास, परमानद, कबीर, ईश्वरदास, दयादेव, शिरोमनि, माधो, जगदीस, अभिमन्य, हरिवश, रूपनारायन, शकर, श्याम, मडन, परवत, मधुसूदन, विद्यापति, कासीराम, ब्रह्म, दामोदर, नैन, वान, जगजीवन, बलभद्र, नारायण, जदुनाथ, सज्जन, लघुगंग, बिश्वंभर, असद, राजा जगतमनि, छीत, मल्ल, मुकुट, पुरुषोत्तम और राम।

इसमे संग्रहकर्ता के स्वरचित १६० छद है। इसको इन्होने सायस्ताखान के आदेश से तैयार किया था—

"यो भाषा संग्रह भयो, नौरस कबित समेत ।
साहिब साइस्तखान के, मन रंजन के हेत ।।

ये सायस्ताखान सभवत औरगजेब के सेनापति थे जो शिवाजी को जीतने के अभिप्राय से पूना गए थे, पर हारकर भाग खड़े हुए थे । रचयिता का अन्य वृत्त नही मिलता । पिछले खोज विवरणों (१७-३८; ३८-२७) मे आए चतुर्भुज मिश्र से ये भिन्न जान पडते हैं । संग्रह के ऊपर "गोस्वामी श्री गोकुलनाथात्मज श्री पुरुषोत्तमस्य' लिखा है, अतः इसका लिपिकाल इनके (श्री पुरुषोत्तम के) समय सवत् १८४७-१९०३ के लगभग होना चाहिए ।

९. छविनाथ—इनके पिगलविषयक "माधव-सुयश-प्रकाश" नामक ग्रंथ का विवरण लिया गया है । ग्रथ मे छदो के जो उदाहरण है उनमे जयपुर-नरेश महाराज माधवसिंह का यश वर्णित है । जयपुर राज्य का भी सुदर वर्णन है । रचनाकाल का ग्रथ मे कोई उल्लेख नही, पर जयपुराधीश राजा माधोसिह का राज्यकाल कॉकरोली के इतिहास के अनुसार संवत् १८२५ के लगभग है । अतः इसी समय प्रस्तुत ग्रथ की रचना हुई होगी । लिपिकाल का सवत् भी अज्ञात है, पर मास, पक्ष, तिथि और वार दिए है, जो इस प्रकार है—"बहुधान्य सवत्सरे उत्तरायणे शिशिर ऋतौ फाल्गुने मासि कृष्णपक्षे एकादश्या गुरुवासरे समाप्त. ।" यह रचनाकाल विदित होता है, क्योकि इसमे लिपिकर्ता का कोई उल्लेख नही । यदि यह नकल की हुई होती तो लिपिकर्ता ने अपना नाम भी अवश्य दिया होता ।

रचयिता उपमन्यु गोत्र के कान्यकुब्ज अवस्थी ब्राह्मण थे । पिता का नाम गोविंददास था । गगा के तट पर स्थित बक्सर (वगसर, जिला उन्नाव ?) के ये निवासी थे, जहाँ एक ओर चडी का और दूसरी ओर महादेव का मदिर है । यहाँ के राजा भवानीसिंह थे । ये (रचयिता) द्वारिकेश (श्रीकृष्ण) की सेवा करते थे और महाराज माधवेश के आश्रय मे रहते थे—

गंगा जू के निकट सहर बगिसर सोंहै जामे एक ओर चंडी दूजी घा महेश है ।
जामे चारि वर्णहू कों पालै मरजाद ही सों सुख सो भवानीसिंह प्रबल नरेश है ।
तामें गोविंददास उपमन्यवंशी आवस्थीक तासुत छविनाथ सेयि द्वारकेश है ।
तिहिं शिरताज महाराज माधवेश जू कों सुजस प्रकाश करि दीनों ग्रंथ वेश है ।।२५।।

१०. जान कवि—इस त्रिवर्षी मे मिले नवीन और प्रमुख रचयिताओ मे ये मुसलमान कवि भी हैं । हिंदुस्तानी एकेडेमी (प्रयाग) मे इनकी छोटी-बडी ६६ रचनाओ का बृहद् हस्तलेख मिला है, जो अत्यत जीर्णावस्था मे है । रचनाओ मे अधिकांश प्रेमकथाएँ है, जो विवरणपत्रो मे यथास्थान दे दी गई है । ग्रथो के नाम रचनाकाल सहित नीचे दिए जाते है—

रत्नावली (१६६१ वि०), लैलामजनू (१६६१ वि०), रतनमजरी (१६८७ वि०), कथा नलदमयती (१७१६ वि०), कथा पुहुपबरिखा (१६८५ वि०), कथा कँवलावती की (१६७० वि०), बारहमासा, सवैया या झूलना, बरवा, षट्ऋतुबरवा बध, पवंगमषट्ऋतु वर्णन, कथा छबिसागर (१७०६ वि०), कथा कामलता की (१६७८ वि०), कथा छीता की (१६६३ वि०), कथा कलावती की (१६७० वि०), कथा रूपमजरी की (१६८५ वि०), मोहनी (१६६४ वि०), चद्रसेन राजा शीलनिधान की कथा (१६६१ वि०), कथा अरदसेर पातसाहि (१६६० वि०), कथा कामरानी व पीतमदास की (१६६१ वि०) पाहनपरीक्ष्या शृगारसत (१६७१ वि०), भावसत (१६७१ वि०), विरहसत, बलूकिया विरही की कथा (१६८७ वि०), तमीम अंसारी की कथा (१७०२ वि०), कथाकलंदर की (१७०२ वि०), कथा निरमल की (१७०४ वि०), कथा सतवती की (१६७८ वि०), कथा सीलवती की (१६८४ वि०), कथा कुलवती की (१६६३ वि०), कथा खिजरखाँ शाहजादे व देवल दे की (१६६४ वि०), कथा कनकावती की (१६७५ वि०), कथा कौतूहली की (१६७५ वि०); कथा सुभटराइ की (१७२० वि०), बुधिसागर या मधुकर मालती की कथा (१६६१ वि०), चेतनामा, सिख-ग्रंथ, ग्रथ सुधासिख, ग्रथ बुद्धिदाइक, बुद्धिदीप, घूंघट नावा, दरसनावा, अलक-

नावा, बारहमासा, सतनावा (१६६३ वि०) वर्णनावा, बाँदीनावा, बाजनावा, कबूतरनावा, गूढग्रंथ, ग्रथ देसावली, ग्रथ रसकोप (१६७६ वि०), ग्रथ उत्तमशब्दा, सिषसागर पदनावा (१६६५ वि०), वैद्यकमतपदनावा (१६६५ वि०), सिगार तिलक (१७०६ वि०), पैमसागर (१६६८ वि०), वियोगसागर (१७१३ वि०), रस तरगिनी (१७११ वि०), कंद्रप कलोल, भाव कल्लोल (१७१३ वि०), पदनामा लुकमान का (१७२१ वि०), जफरनामा नौसेरवा (१७२१ वि०), मानविनोद, विरही कौ मनोरथ (१६६४ वि०), पैमुनामा (१६७५ वि०), नाममाला अनेकार्थ।

कथा कँवलावती, पुहुपबरिषा और कथा नलदमयती से रचयिता के संबध मे निश्चित रूप से इतना ही पता चलता है कि इनका नाम "जान" है। इनके पीर हाँसी वाले शेख मुहम्मद चिश्ती थे। ये मुगल बादशाह जहाँगीर, शाहजहाँ और औरगजेब के समय में वर्तमान थे जिससे इनकी दीर्घायु का पता चलता है। ये सभवत शिया मत के मुसलमान थे तथा आजम इमाम के मार्ग को मानते थे। शेख मुहम्मद चिश्ती के चार कुतुब कहलाए गए है जिनके नाम जमाल, बुरहान, नूरदी और नरवर थे—

अबहि साहि की अस्तुति करिहूँ। रसन धाग जस मुकुता भरिहूँ॥
जहाँगीर जानहुँ तिह नाव। आन फिरो जाकी सब ठाँव॥
पीर सेष महमद है चिसती। बदन नूरि भाषतु हौ फिसती॥
रहन ठांव जानहु तिह हांसी। देषत कटै चित्त की फांसी॥
क्यों न होइ प.छ जिहि कुतुब। चहूँ कूट प्रगट जिन रुतब॥

दोहा—पहिलै कुतुब जमाल है, दूसर है बुरहान।
नाव जाहि औषद परम, लये चित जुरहान॥

तीसर जानहु नूरदी चतुर मनवर हेर।
सभ जग मै जिनकी फिरी, कुतुबपने की रेर॥ (कँवलावती)

साहिजहाँ साहिन कौ साहु। जहाँगीर सुत जगतपनाहु॥ (पुहुपर्वारषा)
दारा सुजा षेत बिचराये। पुनि मुराद ग्वारेर चढ़ाये॥
को अरि रह्यौ लरिन को नाहिं। इकछत राज करै जग माँहि॥
दीनहार वरबडडौ जूझार। औरगजेब साहिमू द्वार॥ (नलदमयंती)

"राजस्थान मे हिंदी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज" नामक पुस्तक के प्रथम भाग मे इनके विषय मे इस प्रकार लिखा है :—

"ये मुसलमान जाति के कवि मुगल सम्राट् शाहजहाँ के समय से जयपुर राज्य के फतेहपुर परगने के नवाब थे। इनका असली नाम अलफ खाँ था। कविता मे अपना नाम "जान" लिखा करते थे। इनके पिता का नाम मुहम्मद खाँ और दादा का नाम ताज खाँ था। इनका "रसमंजरी" नामक ग्रथ मिला है, जो सवत् १७०६वि० मे लिखा गया था। यह नाम इसी नाम के किसी सस्कृत ग्रथ का भाषातर है। इनके सिवा इनके रचे चार और ग्रथो का पता है—रत्नावती, सतबंधी, मदनविनोद, कविवल्लभ। ये ग्रथ जैपुर के प्रसिद्ध विद्वान् हरिनारायण पुरोहित बी० ए० के पुस्तकालय मे सुरक्षित है।"

प्रथम दो ग्रथ प्रस्तुत खोज विवरण में आ गए है। श्री अगरचद नाहटा का एक लेख "कविवर जान और उनका कायमरासो" शीर्षक मे "हिंदुस्तानी" (अप्रैल-जून ४५ ई०)मे छपा है जिससे रचयिता के सबध मे यह पता चलता है—

"फतेहपुर (जयपुर के अतर्गत) के कायमखानी नवाबो के वश मे अलफ खाँ के पुत्र न्यामत खाँ "जानकवि" थे। इनके अन्य भाई दौलत खाँ, शरीफ खाँ, जरीफ खाँ और फकीर

खाँ थे। ये दौलत खाँ से छोटे और अतिम तीन भाइयों से बड़े थे। इनका वंश पहले चौहान था, जिसका कवि को अपने जीवन मे बड़ा गर्व था।

'पुहुपबरिषा' रचना से विदित होता है कि अलफ खाँ का पुत्र दौलत खाँ था जिसके दादौ (पुरखे) का नाम क्याम खाँ था। इसमें दौलत खाँ की वीरता का वर्णन है—

जहाँगीर प्रिथी के पाल। साहिन साहि भये बस काल॥
उपज्यो सोर मेवनो माही। काहू कै मन कौ कल नांहि॥
कियो अचानक साहि पयानौ। सकल जगत पल में थहरानौं॥
जे हे बडडे राजे राने। घर आगजे सब तजि तजि थाने॥
तिहि छिन दौलत खाँ चहुवान। रोपे पाव मेर परवान॥

नीकै राष्यौ काँगरौ, स्वामधर्म ज्यों मांहि।
अलिफ खान जाकौ पिता, तातें अचिरज नांहि॥
इनकौ दादौ क्यामखाँ, मार्यौ पेरोसाहि।
दौलतखाँ कौ वावनी दै, करिहौ सम ताहि॥

रचनाओ को देखने मे पता चलता है कि "जान" बडे प्रतिभा-सपन्न कवि थे। विषयों की विविधता से इनकी बहुज्ञता का भी परिचय मिलता है। हिंदी में लिखनेवाले मुसलमान रचयिताओ मे सबसे अधिक इन्ही की रचनाएँ है और सभवत. सबसे अधिक प्रेम-कथानक काव्य लिखनेवाले भी ये ही है। प्रेम-कथानक काव्यो की कथावस्तु भारतीय और भारतीयेतर दोनों तरह की है। इनकी भाषा अवधी न होकर ब्रज और ग्वालियरी है। ग्वालियरी का "कथा कनकावती" मे उल्लेख स्पष्ट है—

भाषा आनी जो मुख आई। ग्वारेरीहू मनसा धाई॥

प्रस्तुत ग्रथो मे कथा नलदमयती, कथा कुलवती, कथा खिजिरखाँ शाहजादे व देवल दे की, और कथा "सुभटराई" ऐतिहासिक रचनाएँ है। "कथा खिजिरखाँ शाहजादे व देवलदे" मे हिंदुओ पर मुसलमानो के अत्याचारो का उल्लेख है जिसके अनुसार मुसलमानी काल मे हिंदुओं को बलात् मुसलमान (तुरक) बनाया जाता था। जो मुसलमान बनना अस्वीकार करते उनको मार दिया जाता था—

हिंदू बहुत तुरक करि डारे। जे न भये ते पल में मारे॥

"सिख ग्रथ" और ग्रथ "सुधासिख" मे जहाँ दशावतारो को ईश्वर न समझने का वर्णन है वहाँ मक्का-मदीना जाने का उपदेश किया गया है।

निरंजन एक कौ धावहु। कहा चौबीस दस गावहु॥
अयोध्या राम कहिए ना। सुमथुरा स्याम लहिए ना।
भए वे कालवस सिगरे। तिनहिं मानहु जनम धिगरे॥ (सिख ग्रंथ)
करता दये जुग पाइ रे। मकै मदीनै जाइ रे॥
................सेवा करहु चित लाइ रे॥ (सुधासिख)

स्वर्ग मे भी हिंदू मुसलमानो का द्वेष दिखलाया गया है। "बलूकिया विरही की कथा" और "तमीम असारी की कथा" मे हिंदू अप्सराओ (अप्सरो) और मुसलमान अप्सराओं की लड़ाई का उल्लेख है, जिसमे उत्तर पक्ष की विजय होती है। साहित्यिक, ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टियो से ये ग्रथ महत्त्वपूर्ण है। पाहन-परीक्षा, बाजनामा और कबूतरनामा भी अपने अपने विषय की सुंदर रचनाएँ है। "रत्नावती" मे रचयिता ने प्राचीन कथा को नई करने का उल्लेख किया है—

कथा पुरातन कीनी नई। नौ दिन में संपूरन भई॥

लैलामजनू, नलदमयंती, छीता, अरदसेर पातसाहि, तमीम असारी आदि कथाएँ प्राचीन हैं। रतनमंजरी, पुहुपवग्पिा, छविसागर, कँवलावती, कामलता, कलावती, रूपमजरी आदि कथाओं का भी प्राचीन आधार सभाव्य है।

११. मिरजा मुहम्मद "जान"—इनकी "प्रेमलीला" नामक पुस्तक प्रेममार्गी शैली की है, जिसमे प्रेम के अतर्गत कोमल और मधुर भावो का अत्यत स्वाभाविक और सरस वर्णन है। इसमे कोई प्रेम-कथा नही दी है वरन् प्रेम की ही अनेक व्यजनाएँ है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल हिजरी सन् १२६५ (१६०६ वि० ?) है।

प्रस्तुत रचना के साथ साथ इन्होंने फारसी अनुवाद भी रखा है।

१२. तामसन साहब—इनका "ज्योतिष और गोलाध्याय" नाम से एक पुराना छपा ग्रथ मिला है। यह पहले बँगला मे था जिसका इन्होंने हिंदी खडी बोली गद्य मे अनुवाद कर श्रीरामपुर (बगाल) में सन् १८२२ ई० (सवत् १८६६ वि०) मे छपवाया था। इसमे भूगोल और खगोल का वर्णन प्राचीन भारतीय ग्रथों एव आधुनिक खोज और विज्ञान के आधार पर किया गया है। नीचे इनकी भाषा का नमूना दिया जाता है—

ज्योतिष के विवरण

आकर्षण विषय

ईश्वर ने सब वस्तुओं को ऐसा स्थापन किया है कि सब वस्तु महत्व क्षुद्रत्व के अनुसार आपस में आकर्षण करती है तिससे सब बड़ी वस्तु चारों ओड़ को छोटी वस्तुओं को अपनी तर्फ खेंचती है इसलिए सूर्य पृथ्वी को अरु और और ग्रह को आकर्षण करता है और पृथ्वी चान्द को आकर्षण करती है क्योंकि वह पृथ्वी से छोटा है।

१३. थेघनाथ या थेघू—इस त्रिवर्षी मे इनका "गीताभाषा" नामक ग्रंथ मिला है, जो गीता का पद्यानुवाद है। रचनाकाल सवत् १५५७ वि० है। लिपिकाल चतुरदास कृत भागवत एकादश स्कंध के आधार पर सवत् १७२७ है। ये दोनों ग्रथ एक ही जिल्द मे थे; परंतु जिल्द टूट जाने पर इनको अलग अलग बँधवा दिया गया। इसके अत मे स्वर्गीय मयाशंकर जी याज्ञिक ने निम्नलिखित टिप्पणी लिखी है—

"थेघनाथ कृत गीता अनुवाद का लिपिकाल संवत् १७२७ वि० मानना चाहिए कारण कि चतुरदास कृत एकादश स्कध (भागवत) की प्रति जो इसी जिल्द मे थी उसका लिपिकाल १७२७ वि० है : दोनो के लिपिकार एक ही व्यक्ति है। देखो प्रति न० २७८।५०। जिल्द टूट जाने से दोनो पुस्तके अलग कर दी गई है।"

रचयिता का नाम थेघनाथ या 'थेघू' है। इनके आश्रयदाता का नाम भानुकुँवर था जो गोपाचल (ग्वालियर) के तत्कालीन राजा मानसाहि के पुरुखो मे थे। उनके पिता का नाम कीरतसिह था।

पंद्रसै सत्तावनि आनु। गढ़ु गोपाचल उत्तम ठानु॥
मान साहि तिह दुर्ग निरिंदु। जनु अमरावति सोहै इंदु॥
ता घर भान महा भरु तिसै। हथनापुर महि भीषम जिसे॥
सर्व जीव प्रतिपालै दया। भानु निरंदु करै तिह मया॥
:o: :o: :o: :o: :o: :o:
इहि संसार न कोऊ रह्यौ। भान कुवरु थेघू सों कह्यौ॥
माता पिता पुत्र संसारु। यहि सब दीसै माया जारु॥
जाहि नाम ना कलजुग रहै। जीवै सदा मुवौ को कहै॥

कहा बहुत करि कीजे आन । जो जानै गीता को ग्यान ।।

१४. **देवेश्वर माथुर**—इन्होंने भरतपुर-नरेश बहादुरसिंह के पुत्र पहौपसिंह के नाम पर "पहौपप्रकाश" की रचना की । इसमे शारदास्तुति, श्रीकृष्ण और राधिका का गुण-वर्णन, प्रीतपावस, वसंत-वर्णन, राजकुल वर्णन, नगर-वर्णन आदि पर रचनाएँ है । रचनाकाल और लिपिकाल सवत् १८३६ वि० है ।

रचयिता ने ग्रंथ को प्रस्तुत करने मे सुजानसिंह को भी हेतु माना है ।

ताही छिन उत्पति कीय, उन मन मतो उपाइ ।
सिंह सुजान बैठ्यौ हुतौ, यौ तासौ फुरमाइ ।।
देवेसुर और राज कौ, है बिसेस बिवहार ।
हमहू उनतौ हुतौ, परपाटौ कौ प्यार ।।
पिता पिता के नाम के, द्वै स्कंद उधारि ।
वेउ हित करिके करै, पौहौप 'प्रकाश' प्रकार ।।
सिंघ सुजान सुभ गौर कुल, राजस्यंघ कौ भाय ।
कहौ क्यों न विधिपूरवक, देवेश्वर सौ जाय ।।
:o: :o: :o: :o: :o: :o:
इम सुजान मम अइसु पाइब । गिरा गनेस ध्यान धरि ध्याइब ।।
जुक्त युक्त तिनतै तब पाइव । यथा यथा परसंग रचाइव ।।

।। दोहा ।।

टिपन देवेस्वर कियव, जुरति जुगति सौ सांठि ।
वासुदेव वसुदेव सुत, वरस गांठि कौ गांठि ।।

इस अवतरण से स्पष्ट है कि पहौपसिंह ने गौड़-कुलोद्भव सुजानसिंह को आज्ञा दी कि वह देवेश्वर की सहायता से पहौपप्रकाश की रचना करे । अस्तु ।

देवेश्वर माथुर पहौपसिंह के आश्रित थे, जिनके वश के साथ इनका परपरागत संबंध था । ये माथुर चौबे थे या माथुर कायस्थ, यह स्पष्ट नही होता । ग्रथ के छठे अध्याय की पुष्पिका में इस प्रकार उल्लेख है—''इति श्री यदुकुल कलस मनिराजो राज पौहोपसिंह माथुर कुल कवि देवेस्वर रसमजरी षष्टमो दलः ६ ।।'

पहौपसिंह वैरीगढ़ (भरतपुर राज्य) मे रहते थे । इनकी वंशावली नीचे दी जाती है—

महाराज वदनसिह
- सुजानसिंह
- प्रतापसिंह
  - बहादुरसिंह
    - पहौपसिंह

१५. **नवरंगदास**—प्रस्तुत त्रिवर्षी में 'लीलाप्रकाश' नाम से इनका एक ग्रंथ मिला है जिसमे धामी पंथ के सिद्धांतानुसार ब्रह्म के अवतारो की लीलाओ का वर्णन है । रचनाकाल एव लिपिकाल अज्ञात है ।

ग्रंथ द्वारा रचयिता के संबंध मे इतना ही पता चलता है कि ये धामी पंथ के अनुयायी थे । मंदिरवालों (धामी पंथ का मदिर, बिसुनपुरा, डाकखाना भागलपुर, जिला—गोरखपुर)

से पूछने पर पता लगा कि ये स्वामी प्राणनाथ जी के शिष्य थे। इससे ग्रंथ की प्राचीनता प्रकट होती है।

उक्त मदिर से तथा वहाँ रखे हुए ग्रथ "निजानद चरितामृत" (रचयिता कानपुर-निवासी पं० कृष्णदत्त शास्त्री, प्रकाशक--श्री निजानद प्रि० प्रेस, श्री नवतन पुरी, जामनगर) से स्वामी प्राणनाथ जी के सबध मे बहुत सी नवीन बाते ज्ञात हुई, जो इस प्रकार है--

इद्रावती, श्री जी और महामति स्वामी प्राणनाथ जी के नाम है। उनके निवास-स्थान का नाम नवतनपुरी (गुजरात), माता-पिता के नाम धनबाई और केशवराय, भाइयों के नाम क्रमशः हरिवश जी, सामलिया जी, गोवरधन जी, श्री महेराज जी (स्वय प्राणनाथ जी) और उद्धव जी थे। पिता राजा के दीवान थे। गुरु का नाम श्री देवचद था। फूलबाई और तेज-कुँवरि इनकी स्त्रियाँ थी। पिछले खोज विवरणों मे इद्रावती, श्री जी और महामति उनकी स्त्रियों के नाम माने गए है। स्वामी प्राणनाथ जी के लिये देखिए खोज विवरण (२०--१२६, ६--६०, २६--३६६, ४१--१६०, दि० ३१--६५, २६--२६६, ६--२२५, ३२--१६८, ३८--१०६)।

१६ पंचौली देवकर्ण--ये 'वाराणसी-विलास' नामक वृहद ग्रथ के रचयिता है। प्रस्तुत ग्रथ बाराह-पुराणातर्गत काशी-खड के आधार पर लिखा गया है। रचनाकाल सवत् १८०७ और लिपिकाल १८०८ वि० है।

ग्रथ की पुष्पिका के आधार पर रचयिता महाराणा जगतसिह (मेवाड़ ?) के अमात्य थे। ग्रथो मे इन्होने अपने गुरु लछीराम का उल्लेख किया है--

ब्राह्मण माथुर एक जाति जाकी घरबारी।
हरजी मिश्रह नाम भक्त गरणपति के भारी॥
तिन सुत उद्धवदास आहि जो चतुर सिरोमनि।
लछीराम तिन पुत्र देवबानी प्रवीन मनि॥
जिन सम न वियौ भाषाय में, उन असीस की शक्ति सों।
मुहि करयौ कवी तब मैं रच्यौ, यहै ग्रंथ शिव भक्ति सों॥ ६७॥

इससे विदित होता है कि उनके गुरु लछीराम के पिता का नाम उद्धव जी और पिता-मह का नाम हरि जी मिश्र था। ये लोग माथुर चौबे थे। और कोई परिचय नही मिलता। "राजस्थान मे हिदी के हस्तलिखित ग्रथों की खोज" (प्रथम भाग) मे रचयिता का उल्लेख इस प्रकार हुआ है--"ये कायस्थ जाति के कवि, मेवाड के राणा जगतसिह (दूसरे) के दीवान थे। इनके पिता का नाम हरनाथ और दादा का नाम महीदास था। सवत् १८०३ मे इन्होने 'वाराणसी विलास' नामक एक बहुत बडा और उच्च कोटि का ग्रथ वाराह पुराण के काशीखड के आधार पर लिखा था--

आश्विन कृष्णा अनंत तिथि, अठारह सै तीन।
उदयपुर शुभ नगर में, उपज्यौ ग्रंथ नवीन॥

"देवकर्ण हिदी, संस्कृत के अच्छे विद्वान् और प्रतिभाशाली कवि थे। वाराणसी-विलास मे इन्होने कई प्रकार के छदो का प्रयोग किया है और विषय के अनुसार छदो के बदलने में भी अच्छी पटुता प्रदर्शित की है। इनकी भाषा ब्रजभाषा है। कविता प्रौढ, कर्णमधुर और सद्भावोत्पादक है।"

उपर्युक्त विवरण मे दिया गया रचनाकाल प्रस्तुत प्रति के रचनाकाल से नही मिलता। प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल इस प्रकार है--

श्री विक्रम ते वर्ष वीतिगे जबही इतने।
७ ० ८ १
मुनि, नभ, वसु, अरु इंदु, जानि लीज्यौ चित तितने॥

परंतु यह रचनाकाल अनुक्रमणिका के अंश मे दिया है, जो ग्रंथ की समाप्ति के पीछे जोड़ा गया होगा।

१७. **प्राणनाथ सोती**—इनकी 'जेहली जवाहिर'' नाम से एक रचना मिली है जिसमें मूर्ख (जेहली) और सुकुमार (सोफी) तथा व्यसनी (अमली) और नपुसक (नामर्द) लोगों की लड़ाई का वर्णन किया गया है। मूर्ख और सुकुमार एक ओर थे तथा व्यसनी और नपुसक दूसरी ओर। पूर्व पक्ष लडाई मे नष्ट हो जाता है। कथा हास्य-रस की है। रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल १७६० वि० है। रचयिता का नाम पुष्पिका के अनुसार प्राणनाथ सोती है। अन्य परिचय नही मिलता।

प्रस्तुत प्रति महत्त्वपूर्ण है। यह सुप्रसिद्ध कवि सोमनाथ की लिखी है। इससे उस समय के प्रसिद्ध कवियों की शुद्धाशुद्ध लेखन-शैली के विषय मे पता चलता है। अनुस्वार के बदले चद्रबिंदु प्रयुक्त हुआ है। प्रति शुद्ध है। एक महाकवि को दूसरे के ग्रंथ की प्रतिलिपि करने मे अपने उत्तरदायित्व का किस प्रकार निर्वाह करना चाहिए, यह इससे प्रकट होता है।

१८ **फणींद्र मिश्र**—इन्होंने सवत् १७०१ मे हुई एक पचायत की अध्यक्षता की थी और मिताक्षरो के आधार पर उसमे न्याय भी किया था। यह न्याय एक देशी कागज के पत्र पर लिखा मिला जिसका विवरण लेते समय सुविधा की दृष्टि से "पचायत का न्यायपत्र" नाम रख दिया गया है। यह गद्य में है और इसकी भाषा पूर्वी अवधी है। मध्यकालीन पंचायतों की कार्यवाही का स्वरूप किस प्रकार का था, इसके द्वारा उसकी जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही इसमे प्रयुक्त तत्कालीन स्थानीय बोली का नमूना भी देखने को मिलता है, जो भाषाशास्त्र की दृष्टि से पठनीय है। नीचे पत्र की नकल दी जाती है—

श्री कृष्णशरणम् ॥

लि० फणींद्र मिश्र आगे हमने इहाँ भूमि के विवाद में मिताक्षरा पूँछं ऐलहि लाग वादी धारूराय प्रतिवादी विजयीराय से वद दुनौ वादी क शुनल दुनौ वादी मीचलिका लिखि बिहल मिताक्षरा कै पूजा भैलि मिताक्षरा देषल मिताक्षरा की उक्ति ते धारूराय कें दिव्य उतरल धारूराय लोहे आपन सत्व साधि लेहि वैशाख सुदि मह (?) आदितवार कें दिव्य होइ ॥ तथा च वाक्यं ॥ भोगे नष्टे ततः कश्चिद सोयं मे भुनक्त्युत। तद्दिवा देवि धातव्यं दिव्य विसारदैरिति वचनादेवेति किं बहु विस्तरेण = संवत् १७८१ चैत्र वदि चतुर्दशी शनेश्चर

लिखनक वृत्तंतदर्शी रेवतीराम पाठक

१९. **बलदेव कवि**—इनका 'दशकुमार-चरित'' ग्रंथ मिला है जो इसी नाम के सस्कृत ग्रंथ का हिंदी अनुवाद है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता। रचयिता का इसके द्वारा इतना ही वृत्त मिलता है कि ये किसी बघेल-खडी राजा विक्रमाजीत देव के आश्रय मे रहते थे—

"इति सकलारांति जनाकी कीर्तिछपामुपाभ्युदित्यं यशश्चदचद्रिकानदि मित्र चकोर **बघेल वंसावतंस श्रीमहाराजकुमार बिक्रमाजीतदेव प्रोत्साहित बलदेव कवि विरंचिते** दसकुमार-चरिते अपहारवर्मा चरित नाम सप्तमोछ्वास ॥ ७ ॥"

अन्य विवरण अप्राप्य है। परतु "शिवसिंहसरोज" (पृ० ४५५) मे जिस **बलदेव** का उल्लेख है वह यही जान पडते है। उसमें इनका उल्लेख इस प्रकार है—

"ये कवि राजा विक्रमसाहि बघेल देवगनगर वाले के इहाँ थे। उन्ही राजा की आज्ञा-नुसार एक ग्रथ **'सतकविगिराविलास'** नाम बहुत ही अद्भुत सग्रह बनाया। इस ग्रंथ में १७ कवि लोगों की कविताई है अर्थात् शंभुनाथमिश्र १ शभुराज सुलकी २ चितामणि ३ मतिराम ४ नीलकंठ ५ सुखदेव पिंगली ६ कविंद त्रिवेदी ७ कालिदास ८ केशवदास ९ बिहारी १०

रविदत्त ११ मुकुंदलाल १२ विश्वनाथ अताई १३ बाबू केशवराइ १४ राजागुरुदत्तसिंह १५ नवाब हिम्मतिबहादुर १६ दूलह १७ और बलदेव की काव्य महा विचित्र है ॥ २०६ सफा ॥"

२०. **बलरामदास**---"गीता-ग्रंथ-सार" नाम से इन्होने गीता का अनुवाद किया है। रचनाकाल लिपिकाल ग्रथ मे नही दिए है। इसकी भाषा बिहार-उड़ीसा की सीमा पर बोली जानेवाली हिंदी है।

रचयिता के पिता का नाम सोमनाथ महापात्र था जो सभवत: नीलगिरि के राजा जगन्नाथ के मत्री थे। इन्ही जगन्नाथ की आज्ञा से प्रस्तुत ग्रथ की रचना हुई---

श्रीकृष्ण कहे अर्जुन सुणि गीता ग्रंथसार। से योग बलरामदास भणिये आज्ञा देले जगन्नाथ ॥१॥

:o: :o: :o: :o: :o: :o:

प्रथम अध्यागीता प्रश्नधा बलरामदास भणी। नीरगिरी जगन्नाथदास प्रसने परम रस बखाणी १२५

:o: :o: :o: :o: :o: :o:

रामराज्य लक्ष्मि सुखे भोग करु थांई श्री जगन्नाथ प्रसने गिता शास्त्र एहि अष्टादश अध्या गिता सार ए संपूर्ण पुठिला सुणिला लोकं कर बड़ पुन्य लिलगिरी विजये मो प्रभु जगन्नाथ मुकुट कुंडलहार संख चक्र हस्त स्थूल जोगभोग पुन्यर प्रकास निल मुख भावि भणे बलरामदास ६० मन्त्रिवर महापात्र सोमनाथ नाम ताहार तनये मुँहि बलराम जगन्नाथ ठाकुर मुदया मोते कले **विष्णु रपिरित बोलि लोके प्रते गते गले ६१ मंथन चतुरो वेदा सार उद्धार षार्डस लवणी भुंजंती ज्ञानिनो तिक्त भक्षति पंदिता।**

ये सभवत. बिहार-उड़ीसा की ही ओर के रहने वाले थे, जैसा ग्रथ की भाषा से प्रकट होता है। नीलगिरि राज्य भी उधर ही है।

२१. **भगवतदास**---ये "शृगाररससिंधु" नामक ग्रथ के रचयिता है। ग्रथ मे शृगार रस का शास्त्रीय विवेचन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल क्रमश सवत् १७७० वि० और सवत् १७७७ वि० है। रचनाकाल का दोहा इस प्रकार है---

संवत् सत्रह से सुभग, सत्तर बरस बखानि।
माधव सित तृतीया गुरो, धाता सोभन मानि॥ २१॥

रचयिता पुष्पिका के अनुसार किसी कृष्णदास के वशज थे, अन्य परिचय नही मिलता---

"इति श्री कृष्णदास वंस सभव भगवद्दास प्रकासिते शृगाररस सिधौ द्वादसमासवर्णन नाम द्वादश कल्लोल सपूर्ण।"

पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न है।

२२. **भरसीमिश्र---रामनाथ पंडित**---ये "नलोपाख्यान" ग्रथ के रचयिता है। ग्रंथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। इसकी प्रस्तुत प्रति जीर्ण-शीर्ण एव खडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का उससे कोई पता नही चलता। साहित्यिक दृष्टि से यह उत्तम रचना है।

रचयिता ने अपना जो वृत्त दिया है उसके कई अश नष्ट हो गए है। जो कुछ बच गया है उसके अनुसार ये आजमगढ़ के दक्षिण मेहाग्राम के निवासी थे। इस गॉव से दक्षिण की ओर बसे महादेवपारा की इन्होने प्रशसा की है। इसके अतिरिक्त इनका और कोई वृत्त नही मिलता। परन्तु ऐसा हो सकता है कि भरसीमिश्र और रामनाथ पंडित अलग व्यक्ति हो। एक मेहाग्राम के और दूसरे महादेव पारा के।

आजमगढ़ के दछिन अहई। मेहाग्राम विदित जग कहई॥
ताके दखिन महदेवपारा। तापर रामदयाल कृपाला॥

:o: :o: :o: :o:

रामनाथ पंडित तहं रहई । राम कृपा ते बहु सुख लहई ॥ २४ ॥

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना हर्षकृत नैषध के आधार पर हुई है जिसमे महाभारत की कथा से भी कुछ सहायता ली गई है—

नैषध कवि श्रीहर्ष बनाए । विद्यामानन्ह के... ॥
ताहि बिलोकि कियो हम भाषा । भारथ कथहि कछुक तहं राषा ॥

२३. **भारथसिंह** या **भारथसाहि**—इन्होने "सतकवि कुलदीपिका" नाम के महत्वपूर्ण ग्रंथ की रचना की है जिसमे साहित्य (पिंगल, अलकार और नायिकाभेद) और कविशिक्षा (राजा, रानी, पुरोहित और सेनापति) सबधी विषयो का वर्णन है । नीचे विषयो का नामोल्लेख किया जाता है—

पिंगल, झूठ, सत्य, टेढा, त्रिकोण, आवर्त, सौत, कठिन, सुख, दुख, चंचल, वर्ण, ऋतुराज, राजा, रानी, कुमार, पुरोहित, सेनापति, आखेट, जुक्ताजुक्त, अतिशयोक्ति, उपमालकार, किलकिंचित-हाव, नख-शिख, शृंगार, राग, अनुराग और अर्थविधान आदि ।

रचनाकाल का उल्लेख नही किया गया है । लिपिकाल सवत् १८६७ है । रचयिता ने अपने निवास-स्थान का नाम 'देउरा' और पिता का नाम 'हरिसिघ' लिखा है । अपनी विस्तृत वशावली भी दी है जिसके अनुसार ये राजवशी थे । अत. ग्रथ का महत्त्व ऐतिहासिक दृष्टि से और बढ़ जाता है । इनके मूल पुरुष पृथीचंद बाधवगढनरेश शालिवाहन के भाई थे । इस गढ को सौमित्त (शत्रुघ्न ?) ने बनवाया था । पृथीचद यहाँ से अमिला (जमुनातट, प्रयाग) मे जा बसे और उनके पुत्र कर्णराय देउरी मे । ग्रथकर्ता ने अपनी वशावली इस प्रकार दी है—

बाँधवगढ़ सब गढ़नि वर, विरच्यौ जेहि सौमित्तु ।
दुर्गम दुसह दुरूह अति, उन्नत अमित पवित्तु ॥
दीर्घ कोस लौ उच्च अति, कोस चकरइ चारि ।
केदली केतकि आदि वन, चहुँदिसि पूरित वारि ॥ ४
घेरि सिषर चहुँ फेरि जहँ, सिध्यन केर निवास ।
होम धूम प्रगटत महा, निसिवासर चहु पास ॥
असगड के वर भूप भै, सालिवाँहु तेहि नाम ।
ताहि सहोदर पुन्निमैं, प्रीथीचंद भै राव ॥
दौउ पदवी पाइ तिनि, कीन अमिलिआ धाम ।
जमुना तट पावन परम, सुख समूह वसु जाम ॥ ७ ॥
:o: :o: :o: :o:
पृथीचंद के प्रथम सुत, कर्नराय जेहि नाम ।
छोडि अमिलिआ सो वसै, देउरा गुनमैं धाम ॥
ताके सुत वर पुन्निमैं, नाम मेदिनीसिंघ ।
तेहि सन्मुष खलहु हृदै, भुलिहु रहै न रिंध ॥ १० ॥
ताके प्रथम कुमार भे, मानसिंघ जेहि नाम ।
ताके सुत वर पुन्निमैं, राईसिंघ जसुधाम ॥
तासु तनै वर जुध्य कृत, जसीराव कल्यान ।
फतेसिंघ ता सुत भए, सुंदर सील निधान ॥ १२ ॥
तासुत भै पुनि राइजीव, महासुभट रनधीर ।
दानि षानि गुन मानि हित, अति भरि ग्यान गंभीर ॥ १३ ॥
सत्रुसाल ता तनुज भो, जाचक करत निहाल ।
गऊ पाल ब्राह्मन सहित, सत्रुन के वर काल ॥ १४ ॥

पृथीपति ता सुत भए महासुभट रनधीर ।
तेज देवाकर रूप ससि, सागर ज्ञान गंभीर ॥ १५ ॥
ताके प्रथम कुमार भो, नाम विक्रमाजीत ।
जनपालक घालक द्रुमन, आंभन कुल के मीत ॥ १६ ॥
प्रतापदित्य ता तनुज भो, जगतराज सुत ताहि ।
छत्रपति ता सुत भए दाता, सील निवाहि ॥ १७ ॥
हरीसिंघ विक्रम अनुज, ता सुत भारथसाहि ।
एह सतकुल कविदीपिका, कीन्हौ ग्रंथ निवाहि ॥ १८ ॥

इसमे संदेह नही कि रचयिता प्रौढ और सर्वतोमुखी प्रतिभा के कवि थे।

२४. **भीम**——इनकी राजस्थानी भाषा मे रची हुई "हरिलीला सोलह कला" नामक रचना मिली है। इसमे भागवत का विषय विशेषकर श्रीकृष्ण चरित्र का सक्षेप मे वर्णन किया गया है। रचनाकाल सवत १५८१ वि० है——

संवत् १५ रुद्रनी बीस। वर्ष एक उपस्य (? उपरय = उपरि) चालीश ॥
उत्तमे उत्तरायण वीशेष। रतु वसत संक्रात्य शेष ॥ ८ ॥

अर्थात, १५ सौ ऊपर एक चालीस या १५८१। 'रुद्रनी बीस' मे यह तात्पर्य है कि उस समय रुद्र-बीसी चल रही थी। लिपिकाल सवत १७२६ है।

रचयिता का, नाम के अतिरिक्त, और कोई वृत्त नही मिलता। परतु प्रस्तुत ग्रथ राजस्थानी भाषा मे होने के कारण स्पष्ट है कि ये राजस्थान के रहनेवाले थे। प्रस्तुत विवरण मे आए अपने नाम के रचयिता से ये सर्वथा भिन्न है।

रचना दोहे-चौपाइयो और पदो मे की गई है।

२५ **महीपति या महीप**——ये "कविकुल-तिलक-प्रकाश" नामक ग्रथ के रचयिता है। ग्रथ मे नायिकाभेद, रस, अलकार, गुण-दोष तथा पिगल आदि का वर्णन है। इसमे सदेह नही कि यह साहित्यशास्त्र पर लिखे गए उत्तम ग्रथो मे से है। रचनाकाल सवत् १७६६ वि० है। लिपिकाल नही दिया गया है। आधुनिक बादामी कागज पर लिखी होने से इसकी प्रस्तुत प्रति बहुत प्राचीन नही।

रचयिता ने अपना जो परिचय दिया है, उसके अनुसार इनका नाम 'महीपति' या 'महीप' है। ये रायपुर (अमेठी, सुलतानपुर, अवध) के रहनेवाले थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है——

१७ ६६
संवत् सत्रह सौ मिलै, तापर छासठि दीन्ह ।
भादौ सुदि दसमी गुरौ, विदित ग्रंथ तब कीन्ह ॥ ७ ॥
गढ़ा अमेठी देश है, रायपुरा शुभ थान ।
आश्रम-चारि बसैं जहाँ, सब पंडित सब जान ॥ ८ ॥
सुललित ताहि नगर में, कियो "महीपति" बास ।
तिन्ह कीन्हो सुषरासि यह, "कविकुल तिलक प्रकास" ॥

ग्रथस्वामी कुँवर रणजयसिंह (ददन सदन, अमेठी, जि० सुलतानपुर) से पता चला कि ये (रचयिता) अमेठी राज्य के अधिपति थे। इनका वास्तविक नाम हिम्मतसिंह था। सुप्रसिद्ध कवि राजा गुरुदत्तसिंह उपनाम 'भूपति' के ये पिता थे। इनके आश्रय मे सुखदेवमिश्र, कालिदास त्रिवेदी, उदयनाथ कवींद्र और दूलह आदि कवि रहते थे।

२६. **मुरलीधर कबिराई**——ये भागवत भाषा पचम-स्कध के रचयिता है। ग्रथ मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है तथा रचयिता का वृत्त भी अज्ञात है। अपने नाम मे

इन्होंने 'कविराई' शब्द जोड़ा है, इसकी पुष्टि ग्रंथ द्वारा भी होती है, जो काव्य की दृष्टि से सरस है। इन्होने अपने आश्रयदाता का नाम राजा नवलसिह लिखा है; परंतु यह पता नहीं चलता कि वे कहाँ के राजा थे। ग्रंथ मे जहाँ तहाँ "यदुराज मुजान कौ सुत" आदि प्रयोगों से पता चलता है कि ये भरतपुर के महाराजा सुजानसिह के पुत्र थे। पिछले खोज विवरणो (१७-१७८) में उनका उल्लेख है, जिसके अनुसार वे सवत् १८१८ मे वर्तमान थे।

ग्रथ मे चौपाइयो का प्रयोग न करके दोहा, सवैया, कबित्त, तोमर, छप्पय, कुंडलिया, भुजंगप्रयात, संखनारी, मालिनी और हरिगीतिका आदि छंदों में कविता की गई है। भाषा ब्रज है। पता चलता है कि रचयिता ने अपने आश्रयदाता के आदेशानुसार केवल पंचम-स्कंध का ही अनुवाद किया था—

नवलसिंह नृप ने कही, मुरलीधर कविराइ।
स्कंध पाँचयों भागवत भाषा देहु बनाइ॥

२७. **शिवदत्त त्रिपाठी**—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे "दशकुमारचरित" नाम से इनकी एक रचना मिली है, जो इस नाम के मूल सस्कृत ग्रथ का सरस हिंदी पद्यानुवाद है। इसमे दोहा, चौपाई, कवित्त और सवैया आदि छद प्रयुक्त हुए है। साहित्य की दृष्टि से रचना निस्संदेह उत्तम है। खेद है, इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है जिससे रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चलता।

रचयिता ब्राह्मण थे और वनउध देश (सभवतः प्रयाग के अंतर्गत?) के अंतर्गत पटीपुर के राजा जबरेससिह के आश्रित थे। अन्य विवरण अज्ञात है। आश्रयदाता का वंशवृक्ष इस प्रकार है—

मित्रजीत (वनउध देश के अतर्गत बेलखर स्थान के निवासी)
|
धीरसिह (पटीपुर राजधानी बनाई)
|
समरसिह
|
अमरेससिह — जबरेससिह (रचयिता के आश्रयदाता)

ये राजा वत्सगोत्रीय चौहान थे और पहले वनउध के अतर्गत बेलखर मे रहते थे—

धरनी चक्र समस्त में, वनवध देश अनूप।
नीति रीति जुत भीति बिनु, विविध वसै तह भूप॥
वनउध हू मैं अति सुभग, सोभित बेलखर देस।
बसत लोक बिनु सोक तहं, धन ते तुलित धनेस॥ ३॥

:o: :o: :o: :o:

ता पति सुरपति के सरिस, अद्भुत वीर चरित्र।
मित्रजीत भूपति भए, निज कुल-सरसिज-मित्र॥
जगत प्रसंसा होत जेहि, बंस विदित चौहान।
बछगोती विष्यात महि, उदभट उदित कृपान॥
धीरसिंह ताके तनै, भये प्रबल रनधीर।
को नर सकै सराहि तेहि, जैसी मति गंभीर॥

:o: :o: :o: :o:

नीति रीति बसकरि सबै, उन्नत धीर नरेस।
पटीपुर नृपपुर कियो, मध्य सकल निज देस ॥ १० ॥
:o: :o: :o: :o:
धीरसिंह के सुत भये, समरसिंह छितिपाल।
नृपगुण रंचि विरंचि बहु, लिखे भाग्य जेहि भाल ॥
:o: :o: :o: :o:
श्री समरेस नरेस के, दो सुत भे अभिराम।
अमरसिंह जबरेस यों, धरे जथारथ नाम ॥ १७ ॥
:o: :o: :o: :o:
यों जबरेस महीपमनि, मंगलमय सब काल।
राजत राजसमाज में, भूरि भाग्य भरि भाल ॥
:o: :o: :o: :o:
बार बार सिवदत्त द्विज, इमि करि बुद्धिविचार।
तेहि विनोद कारन रच्यौ, भाषा दसोकुमार ॥

२८. **शिवदास गदाधर**—इन्होने संवत् १६१० में "दिग्विजै चपू" की रचना की, जिसमें सृष्टि-तत्त्व, राजनीति, धर्म और ज्ञानोपदेश वर्णित हैं। ज्ञानोपदेश देव्यागमों के आधार पर हुआ है, जिसमे दीक्षा, निर्णय, योग, ध्यान, आसन, जप-तप, नियम-उपनियम, माला, नाम-स्मरण, पूजा और कलि-संसर्ग-दोष आदि समिलित है। पुष्टि और प्रमाणो के लिये शैवागमों और वैदिक ग्रथों से भी उद्धरण दिए गए है। प्रत्येक विषय का वर्णन अध्यायो (खडों) में काव्य-शैली पर हुआ है, अतः यह एक उत्तम काव्य भी है। यद्यपि इसको चपू कहा गया है, पर यह सार्थक नही। समग्र रचना पद्य मे ही है।

रचयिता का निवास-स्थान बलरामपुर रियासत (गोडा, अवध) के अतर्गत मोगरा स्थान था, जहाँ समग्रनाथ महाज्योतिर्लिंग बतलाया गया है। पिता का नाम रामदीन था जो उक्त रियासत के राजा नेवलसिंह के मत्री थे। ये राजा दिग्विजयसिंह (नेवलसिंह के पौत्र) के आश्रय मे रहते थे। राजा दिग्विजयसिंह के पैतृक राज्य को शत्रुओ के चगुल से छुड़ाने मे इन्होने उनकी अपूर्व सहायता की थी, ग्रथारभ मे इसका इन्होने बडा विस्तृत और कवित्वपूर्ण वर्णन किया है। ग्रथ को पढने मे पता चलता है कि ये धुरधर राजनीतिज्ञ, उद्भट विद्वान्, प्रतिभा-संपन्न कवि और बड़े सहृदय व्यक्ति थे। संभवतः ये शैव थे और देवी की भी उपासना करते थे। इनके आश्रयदाता की वशावली इस प्रकार है—

पावागढ़ गुजरात तें, आयो नृप जनवार।
सुभट वीर वरिवंड बहु, संघ में सैन अपार ॥
सूबा अवध को जेर करि, छीनि मुल्क सब लीन।
ता मंह यह बलिरामपुर, सुभग थली निजु कीन ॥
:o: :o: :o: :o:
तातें अब संछेप करि, कहत हौं सुनिये राज।
नौ पीढ़ी के बादि भे, नेवलसिंह महाराज ॥
:o: :o: :o: :o:
ता नृप के जुग तनै भे, सिंह बहादुर वीर।
अर्जुनसिंह भे सिंह सम, धीर वीर गंभीर ॥
ता अर्जुन भूपाल के, भये उग्र द्वै वंस।
जैनारायन प्रथम भे, हंस वंस अवतंस ॥

दूजो सुत है आप प्रभु, विदित तेज गुणग्राम ।
पसु पंछी सुर असुर नर, गावत जाको नाम ।।
नेवलसिंह पर पिता तुम्हारे । ता समीप पितु आय हमारे ।।
दीन(ज) कुलीन जानि विद्वाना । "रामदीन" अस नाम बषाना ।।
:o: :o: :o: :o:
रामदीन को निज जन जानी । सौंपे पुनह सकल रजधानी ।।
धर्मपुत्र महाराज को, ताको सुत मै तात ।
नाम गदाधरदास शिव, प्रगट जगत विष्यात ।। २७६ ।।

ग्रंथ की पूर्णता की तिथि

० १ ६ १
नभ इंदु ग्रह चंद है, संवत्त सुभ व्रतमान ।
५ ७ ७ १
वान दीप रिषि ब्रह्ममो, सका सुभग सुजान ।।

नृपवंश का वर्णन करने के कारण प्रस्तुत ग्रंथ का महत्व ऐतिहासिक दृष्टि से भी बढ़ जाता है ।

२६. शेख अहमद—इनकी दो रचनाएँ 'वियोगसागर' और 'मोहनी' मिली हैं, जो एक ही विवरण पत्र मे है । प्रथम मे वियोग-शृगार और दूसरी मे शिख-नख का वर्णन है । काव्य की दृष्टि से दोनो सरस और उत्तम है तथा कवि की प्रतिभा को व्यक्त करती है । इनमे केवल दोहा छद प्रयुक्त हुआ है । ये रचनाएँ प्रस्तुत विवरण की सख्या १२६ मे आए कवि जान की रचनाओ के साथ एक ही हस्तलेख मे है । रचनाकाल का उल्लेख नही है । लिपिकाल संवत् १७७८ दिया है ।

रचयिता के गुरु पीर साहि मुहुदी औलिया के पुत्र पीर जलाल मुहुदी थे । अन्य विवरण अज्ञात है ।

३०. शेख निसार—इनकी सूफी शैली पर लिखी हुई 'यूसुफ जुलेखा' सुदर प्रेम कथानक काव्य है, जिसमें यूसुफ और जुलेखा के प्रेम का अत्यत सरस एव उत्कृष्ट वर्णन किया गया है । रचनाकाल सवत् १८४७ और लिपिकाल सवत् १६५६ है । इसका कथानक रोम देश का है ।

रचयिता शेखपुर (सुलतानपुर) के निवासी थे । इनके पुरखे रोम देश में रहते थे । पिता का नाम गुलाम मुहम्मद और पितामह का शेख मुहम्मद था । शेख हबीबुल्ला इनके मूल पुरुष थे, जिन्होंने अकबर बादशाह के समय शेखपुर गाँव बसाया था । ये (रचयिता) मौलवी थे और संस्कृत, हिंदी, फारसी, तुरकी के बड़े विद्वान् थे । इन सभी भाषाओ मे इन्होने सात रचनाएँ भी की—

शेख हबीबुल्ला सोहाए (सोहाई) । शेखपुर जिन्ह आन बसाई ।।
पातसाह अकबर सुलताना । तंह के राजकर जगत बखाना ।।
औ वह देस सूबा होइ आई । तीस बरस की रही सोहाई ।।
तंह के शेख मुँहमद वारा । रूपवंत भू के अवतारा ।।
शेख गुलाम मुहंमद नाऊँ । सो मम पिता औ ताकर गाँऊँ ।।
:o: :o: :o: :o:
वंस मोलबी रोमकी, जंह कर प्रेम गरंथ ।
हुई सिद्ध पढ़ मसनवी, पावे प्रेम की पंथ ।।
सात ग्रंथ अनूप बनाई । हिंदी और पारसी सोहाई ।।
संसकृत तुरकी मन भाई । सभे प्रेम रस भरी सोहाई ।।

प्रस्तुत रचना इन्होने सत्तावन वर्ष की वयस्था मे की। इससे पहले संभवतः शृंगार और चोज की अधिक रचनाएँ की, जिनसे इनका चित्त हटकर सत्य से पूर्ण रचनाओं की ओर आकर्षित हो रहा था। प्रस्तुत रचना इसी बात की द्योतक है। यह सात दिन मे लिखी गई थी—

झूठ जान सबते मन भागा। अब यह सांच कथा चित लागा॥
हिजरी सन् बारह से पाँचा। बरन्यो पेमकथा यह साँचा॥
अठारह से सँयतालीसा। संवत् विक्रमसेन नरेसा॥
सतरह सै बारह पुन साका। पौष मास पून्यौ बस राका॥
सत्तावन बरख बीते आव। तब उपज्यो यह कथा के चाव॥
सात दिवस महं कीन समापत। दुरमत नाम लह्यो यह संवत॥

इन्होने कुछ ऐतिहासिक विवरण भी दिया है। उस समय दिल्ली की गद्दी पर शाह-आलम नाम मात्र का बादशाह था। नादिर खाँ रुहेला ने उसको अंधा कर दिया था और उसकी स्त्री और पुत्रो को अत्यत दुख देकर तैमूर के वश को अप्रतिष्ठित कर दिया था—

आलमशाह हिंद सुलताना। तहं के राज यह कथा बखाना॥
देहली राज करी अवनीता (सा)। अपर वही तेह कीन्ह अनीता॥
नादिरखाँ सो अधम रुहेला। सवा परध कीन्ह बड़ पेला॥
पातसाह कंह अंध जो कीन्हा। सुत और नार सभे दुख दीन्हा॥
कीन्ह अपत तैमूर घराना। राज प्रताप अधम तेह माना॥

रचयिता ने ग्रथ समाप्त करते हुए विनीत भाव का परिचय दिया है, जो विद्वानो और पहुँचे हुए भक्तो का विशेष गुण है—

पढ़े प्रेम के अछर कोई। दई असीस मुक्ति जिन होई॥
हम न रहब अछर रह जायह। जो कोउ पढ भेद नर पायह॥
अवगुन होइ तो लेहु छिपाई। हम न रहब जो देब बताई॥
रहें बो भगत पेम अव ज्ञाना। धरम नीत सुभ कथा बखाना॥

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति फारसी लिपि मे लिखी हुई है।

३१. समाधान—इनका "लक्ष्मणशतक" नाम से वीररसपूर्ण उत्तम काव्यग्रथ मिला है। ग्रंथ मे लक्ष्मण और मेघनाद के युद्ध का बडा ओजस्वी वर्णन है। खेद है, ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, जिससे रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चलता।

रचयिता का भी कोई विवरण नही मिलता। ग्रथ से ये प्रतिभावान् कवि ज्ञात होते है। इनकी यह रचना सवत् १९५६ (सन् १८९९ ई०) मे बाबू रामकृष्ण वर्मा (संपादक, "भारतजीवन") द्वारा भारतजीवन प्रेस से प्रकाशित हो चुकी है, परतु उसमे भी इनका कोई वृत्त नही दिया है।

किरवान छंद इन्हे विशेष प्रिय है। उदाहरणस्वरूप दो कवित्त दिए जाते है—

कहूं हथ्थिन पै हथ्थि कहूं रथ्थिन पै रथ्थि कहूं बथ्थिन पै बथ्थि कपि कौन पमिलान।
कहूं मुंडन पै मुंड कहूं रुंडन पै रुंड कहूं तुंडन पै तुंड परे लोटत धरान।
मच्यौ जोर सफर जंग टुट्ट फुट्ट तन भंग छिन्न भिन्न अंग अंग भगे राछस जमान।
तहाँ तेज के निधान करि कोप "समाधान" वीर लछ्छन सुजान झुक झारै किरवान॥
बढ्यौ जोर पारावार चहु ओर धारापार नहि जासु वारापार ग्रह ग्राह उछलान।
करै असुर अतंक मिलै नभ मे निसंक अनदेखे हंक हंक अत्र घालत अमान।
फिरै भूत प्रेत धार मुष बोलै मार मार कपि सीस असरार सार झार झहरान।
तहाँ तेज के निधान करि कोप "समाधान" वीर लछ्छन सुजान झुक झारै किरवान॥

३२. हसनअली खाँ--इन्होंने "दस्तूर शिकार" का फारसी से हिंदी-गद्य (हिंदवी) में अनुवाद किया, जिसमें शिकारी पक्षियों को पकड़ने, पालने और उनके रोग तथा चिकित्सादि का वर्णन है। प्रति खंडित है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८१६ है। पुष्पिका से विदित होता है कि यह मूल प्रति है, अत. रचनाकाल और लिपिकाल एक ही मनना उचित होगा--

"तमाम हुवा दस्तुर सीकार का बनाया हुवा हसन अली खाँ का सवत् १८१६ मीती क्वार बदी १५ सुकरवार फारसी से हींदवी कीय ।।"

रचयिता का कोई वृत्त नहीं मिलता।

३३. हेमरतन--राजस्थानी भाषा मे रची हुई "गोरा-बादल-पद्मिनी चौपाई" नामक इनकी एक रचना का विवरण लिया गया है, जिसमें गोरा, बादल और पद्मिनी की कथा का अत्यत सरस वर्णन है। रचनाकाल सवत् १६४५ (?) है। लिपिकाल का पता नही चलता।

हस्तलेख का अत का पत्र अत्यत जीर्ण-शीर्ण दशा मे है। उसमे रचयिता ने रचनाकाल के साथ साथ अपना परिचय भी दिया था, पर वह अश पढा नही जाता। इसके आरंभ के अंश को पढने मे पता चलता है कि ये किसी पद्मराज वाचक के शिष्य थे--

पदमराज वाचक प्रभृति, प्रणमी निज गुरु पाय ।
केलविसूँ सांची कथा, कानन आवै वाय ।।

ग्रथ की भाषा के आधार पर ये राजस्थान के निवासी जान पडते है। "राजस्थान मे हिंदी के हस्तलिखित ग्रथों की खोज" (प्रथम भाग पृष्ठ ५३, १७८) मे भी इस ग्रथ का उल्लेख है। उसमे रचयिता का वृक्ष इस प्रकार दिया है--

"ये मेवाड के जैन साधु थे। गुरु का नाम पद्मराज था। इनका "पद्मिनी चौपई" नामक एक ग्रथ उपलब्ध हुआ है, जो सवत् १७६० मे रचा गया था। यह ग्रथ इन्होने मेवाड़ के महाराणा अमरसिह (द्वितीय) के राज्यकाल मे कुंभलनेर मे लिखा था। इसमे मेवाड़ की इतिहास-प्रसिद्ध महारानी पद्मिनी की कथा का वर्णन है। ग्रथ जायसी कृत पद्मावत की छाया पर लिखा गया प्रतीत होता है। इसकी भाषा बोलचाल की राजस्थानी है। रचना सरस और मनोहारिणी है।"

इस विवरण से तो प्रस्तुत प्रति मे दिया गया रचनाकाल अशुद्ध ठहरता है। इसमे नाम के साथ 'गोराबादल' और जुडा है। रचनाकाल का छद इसमे खडित है, पर जो अश वर्तमान है उससे सवत् १६४५ का ग्रहण किया जा सकता है--

संवत सोले सोले से पहुंता . . . . ।
पुहुनी पीठ षण परग की सवलपुरी सोहै सावणी ।।७०१।।

उपर्युक्त राजस्थानी खोज-विवरण मे रचनाकाल निम्नलिखित प्रकार से है--

बदि चैतह साठैं बरस, तिथि चौदसि गुरुवार ।
बँधे कवित्त सुवित्त परि, कुंभलमेर मँझारि ।।६१७।।

राणा अमरसिह (द्वितीय) का राज्यकाल ओझा जी कृत 'राजपूताने का इतिहास' (पृ० ६०५) के अनुसार सवत् १७६० के आसपास है।

परतु श्री अगरचद नाहटा ने सूचित किया है कि प्रस्तुत रचना का रचनाकाल सं० १६४५ ही है। उन्होने 'शोध पत्रिका' (साहित्य सस्थान, राजस्थान विश्वविद्यालय, उदयपुर की प्रमुख त्रैमासिक पत्रिका)--भाग ३, अक २--मे "हेमरत्न रचित गोराबादल का रचनाकाल और अन्य ज्ञातव्य बातें" शीर्षक से लेख छपाया है, जिसमे ग्रथ का उक्त रचनाकाल प्रति-

पादित किया है। उसमें उल्लिखित रचनाकाल और रचयिता के वृत्तसंबंधी उद्धरण इस प्रकार है :—

'पूनिम गछि गिरुग्रा गरणधार, देव तिलक सूरीसर सार ।
न्यान तिलक सूरीसर तास, प्रतपइ पाटह् बुद्धि निवास ।।६०६।।
पदमराज वाचक परधान, पुहवी परगट बुद्धि निधान ।
तास सीस सेवक हम भणई, हेमरतन मनि हरखइ घणई ।।६१०।।
संमत सोले सइ पणयाल, श्रावण सुदि पचमि सुविसाल ।
पुहवी पीठ घणं परगड़ी, सबल पुरों सोहइ सादड़ी ।।६११।।'

इसके अनुसार रचयिता पूर्निम (पूर्णिमा) गछ के देवतिलक सूरि के पट्टधर ज्ञानतिलक सूरि के शिष्य पद्मवाचक के शिष्य थे।

इस सबध मे ना० प्र० प० (भा० ५३, ग्र० १) भी द्रष्टव्य है।

३४. हेमराज मथेन—इनकी "वैन बत्तीसी" शृगार रस की उत्तम रचना है, जिसमे श्रीकृष्ण की वशी के प्रति गोपियो का द्वेष भाव वर्णित है। रचना सवैयो मे है। केवल अत मे दो दोहे है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। बीच बीच के कितने ही छद अथवा उनके चरण स्याही के उखड़ जाने से नष्ट हो गए है, अतः नही कहा जा सकता कि कुल कितने छद थे। परतु ग्रथ के नाम से स्पष्ट है कि बत्तीस सवैए रहे होगे। प्रस्तुत प्रति मे दोहे-सवैयो की समस्त सख्या छत्तीस है। अतः स्पष्ट है कि चार छद बढे हुए है। पुराने ग्रथो मे कवित्तो और सवैयो के साथ दोहे-सोरठो की सख्या प्राय. परिगणित नही होती थी।

रचनाकाल सवत् १६१६ वि० है। लिपिकाल का उल्लेख नही है। रचयिता का नाम मथेन हेमराज है। और कोई परिचय उपलब्ध नही। इनकी उपाधि या आस्पद लिपिकर्ता की भी उपाधि है—

लिषतं मथेन हरिचंद वासी रूपनगर

अतः अनुमान होता है कि ये और लिपिकर्ता एक ही वंश के और एक ही स्थान (रूपनगर) के थे।

ज्ञात लेखको मे, जिनके ग्रथ मिले है, अलीमुहीबखाँ "प्रीतम", आलम और शेख, गिरिधरदास, जटमल नाहर, देवीदास, भोम, रसरासि, लखनसेनि, विश्वनाथ सिंह, वृद कवि और सोमनाथ मुख्य है।

३५. अलीमुहीब खाँ "प्रीतम"—ये अपनी सुप्रसिद्ध रचना "खटमल-बाईसी" के कारण हिंदी साहित्य मे अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुके है। इस बार इनकी "रसधमार" नाम से एक और नवीन रचना मिली है। रचनाकाल सवत् १७६७ है और लिपिकाल सवत् १८००। लिपिकाल को देखकर प्रस्तुत प्रति रचयिता के समय की ही लिखी जान पड़ती है। इसको जानी भवानी शकर वृद्धनाम कृपाराम नाम के किसी व्यक्ति ने लिखा था। ग्रथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। कविता दोहा, चौपाई और कवित्त आदि छदो मे की गई है।

रचयिता आगरा-निवासी थे तथा वही के प्रसिद्ध कवि सूरतिमिश्र के शिष्य थे—

प्रीतम बसत सुआगरे, अलीमुहब खाँ नाम ।
सूरत कवि कौ सिष्य है, जानो कवि रसधाम ।।२।।
सर के मन इहि मास मो, उपजत सरस तरंग ।
रस धमार बरनन करों, फागुन पाइ प्रसंग ।।३।।
सत्रह सै सत्तानवै, संवत फागुन मास ।
सुकल पक्ष बुधवार छठ, रसधमार जगवास ।।४।।

'खटमल-बाईसी' का उल्लेख पिछले खोज विवरण (०३–७०) मे हो चुका है।

३६. आलम और शेख—ये हिंदी साहित्य ससार मे प्रेमी दपति के रूप मे प्रसिद्ध है।

पिछली खोज में इनकी बहुत सी रचनाओं का पता लगा है। इस बार भी इनके कवित्तों के तीन सग्रह 'कवित्त चतु:शती', 'कविता-सग्रह' और 'अकार के कवित्त' और मिले हैं। रचनाकाल, लिपिकाल तथा विषय की दृष्टि से इनका उल्लेख नीचे किया जाता है—

१—कवित्त चतुःशती—इसमे चार सौ कवित्त है जिनमे अधिकतर शृंगार रस और राधाकृष्ण की लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल ज्ञात नही, लिपिकाल सवत् १७१२ दिया है। विवरणपत्र मे दिए गए उद्धरणो मे सग्रह का नाम 'कवित्त चतु शती' नही मिलता। पुष्पिका में 'शेख आलम के कवित्त' लिखा है। विवरणकर्त्ता (प० कठमणि जी शास्त्री) ने विशेष ज्ञातव्य मे लिखा है कि श्री भवानीशंकर जी याज्ञिक (स्व० प० मायाशंकर जी याज्ञिक के भतीजे) ने इस सग्रह को देखा था और एक कागद पर जो इसी सग्रह मे रखा है, इस प्रकार लिखा है—

(१) चतु.शती कल्पित नाम प्रतीत होता है। इस ग्रंथ की कई प्रतियाँ हमारे देखने में आई है, पर चतु शती नाम किसी मे भी नही दिया हुआ है।

(२) यह प्रति सवत् १७१२ वि० की है। हमारे अनुमान से समस्त प्राप्त प्रतियों में यह सबसे प्राचीनतम है।

(३) इस प्रति मे बीसवाँ पत्र नही है। इस कारण जो भाग लुप्त हो गया है उसे एक अलग पत्र पर लिख दिया है। अतः इससे पता चलता है कि इस सग्रह में चतु:शती नाम कही न कही अवश्य दिया है।

२—कविता संग्रह—इसका भी विषय शृंगार (राधाकृष्ण के केलिकलाप का वर्णन) है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। कुछ 'कवित्त-सग्रह' खोज विवरण (०३-६; २३-६; ४१-१२) मे उल्लिखित है।

३—अकार के कवित्त—इस संग्रह मे कवित्तो का विभाग अक्षरक्रम से किया गया है, पर विवरणपत्र मे दिए गए उद्धरणों से पता चलता है कि इन्हे अक्षरक्रम से लिखा नही। आरभ मे 'न' पर लिखा गया दोहा है और अत मे 'अ' पर की रचनाएँ है। इनका विषय भक्ति और शृंगार है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल अनुमान से सवत् १८२१ से १८५५ तक है।

इनके अतिरिक्त 'सुदामाचरित्र' की एक प्रति और 'माधवानल-कामकदला' की छह प्रतियों के भी विवरण लिए गए है। इन दोनो ग्रथों का उल्लेख खोज विवरण (३५-४; ०४-६; २३-८; २६-८) मे हो चुका है।

३७. गिरधरदास—ये खोज विवरण (१२-६०; २६-१४०; ४१-४६) में उल्लिखित गिरिधरदास है जो भारतेंदु बाबू हरिश्चद्र के पिता थे। इनके सबंध मे प्रसिद्ध है कि इन्होंने 'नहुष नाटक' की रचना की थी जिसका आज से पहले 'खोज' मे कोई पता नही चल सका था। इस बार इसकी एक प्रति का विवरण लिया गया है। प्रति पूर्ण है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६२३ दिया है। इसमे सूर्यवशी राजा नहुष की कथा का वर्णन है और प्राचीन संस्कृत नाटको की शैली पर लिखा गया है। पहले मंगल और फिर नादीपाठ है। गद्य और पद्य दोनो का प्रयोग हुआ है।

ग्रंथ द्वारा रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरण में इनका उपनाम 'गोपालचंद' लिखा है। जन्मकाल संवत् १८८१ माना गया है। सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष की अल्पावस्था मे ही ये स्वर्गस्थ हो गए थे। फिर भी इतनी अवस्था तक लगभग चालीस ग्रंथों की रचना कर चुके थे।

यहाँ नाटक का कुछ अंश दिया जाता है—

मातलि की ओर देखि कै ॥ नहुस ॥ सानंद ॥

दोहा

देखनीय कमनीय अति, उपवन यह रमनीय ।
अहै कौन को सो कहहु, लग्यो मोहि अति प्रीय ।।७३।।

मातलि ।।

दोहा

यह सब रितु सोभा भरयो, सुखमय पूरन काम ।
महाराज को विपिन है, नंदन याको नाम ।।७४५।।
नहुस ।सानंद। सीघ्र चलहु सीघ्र चलहु ।।

तब मातलि रथ चढाय नंदनवन मै गयो ।। तहां की सोभा देखि कं नहुष ।। सानंद ।।............

३८. जटमल नाहर—इनके "प्रेमविलास—प्रेमलता-कथा" ग्रथ के विवरण लिए गए है । यह शुद्ध भारतीय प्रेम-कथानक शैली पर लिखा गया मनोरजक और सरस काव्य है । इसमें दी हुई कथा इस प्रकार है—

यौतनपुर मे राजा प्रेमविजय राज करता था । उसकी रानी का नाम प्रेमवती और पुत्री का प्रेमलता था । उसके मत्री मदनविलास के एक पुत्र था, जिसका नाम प्रेमविलास रखा गया । प्रेमलता और प्रेमविलास दोनो एक गुरु के पास पढने लगे । दोनो रूपवान् थे, अत. गुरु ने आशका से कि कही उनमे अनुचित प्रेम न हो जाय, दोनों को एक दूसरे के झूममूठ दोष बताए । राजकुमारी से कहा कि प्रेमविलास कोढी है और प्रेमविलास को बताया कि राजकुमारी अंधी है । फलस्वरूप साथ साथ पढते हुए भी दोनो एक दूसरे को घृणित दोष से युक्त समझकर देखना भी पाप समझते थे । एक दिन जब गुरु किसी काम मे बाहर गए हुए थे, राजकुमारी के पढने मे कुछ अशुद्धि हो गई, जिसपर प्रेमविलास ने उसको अधी कह दिया । राजकुमारी को बड़ा क्रोध आया और उसने भी प्रेमविलास को कोढी कहकर सबोधित किया । प्रेमविलास ने कहा—"गुरु ने तुम्हे अधी बतलाया था । अत यह सोचकर कि उसी दोप से तुमने अशुद्ध पढा है, मैंने तुमक. अधी कहा; परतु तुमने मुझे कोढी क्यो कहा ?" राजकुमारी ने भी सत्य बात बतला दी । इसपर दोनो एक दूसरे को ध्यानपूर्वक देखने लगे । दोनो रूपवान् तो थे ही, अत. शीघ्र ही एक दूसरे पर अनुरक्त हो गए । इतने में गुरु जी आ गए और देखा कि उनकी चतुरता का परदा खुल गया । उन्होंने उनको डॉटा और समझाया, पर फल कुछ न हुआ । दोनो ने गुरु से अपने अपने हृदय की बाते कह दी । दुष्परिणाम की आशका से गुरु ने शीघ्र ही दोनो को घर जाने का आदेश दिया । परतु दोनो प्रेमियो को शाति कहाँ ? एक दिन उन्होंने निश्चय किया कि महाकाल के सम्मुख विवाह कर भाग जायँ । आगे की अमावास्या का दिन इसके लिये निश्चित हुआ । इस बीच नगर मे एक जोगिन आई, जो वीणा बजाना और गाना बहुत अच्छा जानती थी । लोग उसकी कला पर मुग्ध हो गए । राजा भी उससे मिलकर प्रसन्न हुआ । उसने उससे राजकुमारी को भी वीणा बजाना और गाना सिखाने की प्रार्थना की । जोगिनी ने स्वीकृति दे दी । राजकुमारी नित्य जोगिनी की कुटिया पर सगीत-शिक्षा के लिये जाने लगी । प्रेमविलास भी अवसर पाकर कुटिया पर राजकुमारी से मिल लिया करता । दोनो एक दूसरे को देखकर व्याकुल हो उठते । एक दिन ऐसे ही अवसर पर राजकुमारी की आँखो से आँसू गिरते देख जोगिन को बडा आश्चर्य हुआ, पर मूल कारण ज्ञात हो जाने पर उसने राजकुमारी को आँखों का अजन देकर उडने तथा रूप पलटने की विद्या सिखाई । थोडे ही दिनो पश्चात् राजकुमारी की शिक्षा पूर्ण होने पर जोगिन चली गई । इधर पूर्व निश्चयानुसार दोनों प्रेमी चपकमाला सखी के साथ महाकाल के सामने वैवाहिक कृत्य संपन्न कर और देवता का आशीर्वाद लेकर आकाश-मार्ग से उड़ भागे । तीनो रतनपुर नगर पहुँचे, जहाँ का राजा उसी दिन मर चुका था । राजा संतानहीन था, अत: यह निश्चय हुआ कि हाथी जिसको राजतिलक कर देगा वही

राजा बनाया जायगा। संयोगवश हाथी ने प्रेमविलास को ही राजतिलक कर दिया। अतः वह और प्रेमलता उस राज्य के राजारानी हो गए। कुछ दिनोपरांत प्रेमविलास को चंद्रपुरी पाटण के राजा चंद्रचूड़ से घोर युद्ध करना पड़ा, जिसमे चद्रचूड़ पराजित हुआ। इस प्रकार अनेक कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर प्रेमलता और प्रेमविलास अपने दिन सुखपूर्वक बिताने लगे। एक दिन उन्होने अपने मातापिता के पास एक दूत भेजा। उनके मातापिता उनके लिये अत्यत व्याकुल रहते थे, पर महाकाल की उपासना से जब उन्हें पता चला कि वे रतनपुरी में राज करते हैं तो उनको पाने की उत्कट अभिलाषा रखते हुए भी सतोष कर चुप रह गए। इधर जब दूत उनके पास पहुँचा तो वे प्रसन्न हुए और उसको अनेक पारितोषिक तथा उपायन देकर प्रेमलता और प्रेमविलास को यौतनपुर आने का सदेश भेजा। दोनो प्रेमी अपने घर आए और मातापिता से मिलकर आनदित हुए। दोनो का पुनः विधिवत् विवाह किया गया। इस प्रकार कुछ दिन मातापिता के पास रहकर वे दोनो फिर अपनी राजधानी को लौट गए।

ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १६९३ है। इसकी प्रस्तुत प्रतिलिपि राजपूताने के प्रसिद्ध लेखक श्री अगरचद नाहटा ने सवत् १९९९ वि० मे करके, हिंदी-साहित्य सम्मेलन को दी थी। यह सवत् १८०९ की लिखी प्रति की नकल है। ग्रथ के अनुसार रचयिता लाहौर के निवासी थे और सिधु नदी से लगे हुए प्रदेश के अतर्गत जलालपुर के राजा सहिवाज के आश्रय मे रहते थे। ये नाहर वंश के थे। राजा सहिवाज को सइदा का सहिवाज खाँ भी कहा गया है—

संवत् सोलह सै त्रेंयानुं। भादरमास सुकल पछ जानुं॥
पंचमि चौथ तिथैं संलगना। दिन रविवार परम रस मगना॥७८॥
सिंध नदी कै कंठ पइ, मेवासी चोफेर।
राजा बली पराक्रमी, कोऊ न सक्कै घेर॥७९॥

पूरा कोट कटक पुनि पूरा। परसिरदार गाऊ का सूरा॥
मसलत मंत्र बहुत सुजाने। मिले खान सुलतान पिछाने॥
सइदा कौ सहिबाजखाँ, बइरी सिर कलवत्र।
जानत नाही जेहली, सब अवान कौ छत्र॥८१॥

रइयत बहुत रहत सुंराजी। मुसलमान सुखास निमाजी॥
चोर जार देखया न सुहावै। बहुत दिलासा लोक बसावै॥८२॥
बसै अडोल जलालपुर, राजा थिरु सहिबाज।
रइयत सकल बसै सुखी, जब लगि थिरहू राज॥८३॥
तहाँ बसै जटमल लाहोरी। करनै कथा सुमति तसु दोरी॥
नाहरबंस न कुछ सो जानै। जो सरसती कहै सो आनै॥८४॥

अन्य परिचय नही दिया है। नाहटा जी ने प्रति और कवि के विषय में इस प्रकार लिखा है—

(१) **प्रतिपरिचय**—हमारे संग्रह की ८ पत्रो वाली प्रति मे प्रस्तुत प्रति नकल करवाई गई है। प्रशस्ति (पुष्पिका) से स्पष्ट है कि प्रति संवत् १८०८ की वैशाख बदी ७ को मरोठ मे स्वरूपचद ने लिखी है। प्रस्तुत ग्रथ की एक और प्रति हमारे सग्रह मे है।

(२) **कविपरिचय**—आप (जटमल नाहर) नाहरगोत्रीय ओशवाल जैन श्रावक थे। इनकी गोराबादल की बात हिंदी-संसार में काफी प्रसिद्धि-प्राप्त है। आप अच्छे कवि थे। अभी तक हमारी खोज मे निम्नोक्त ग्रथ प्राप्त हुए है एव हमारे संग्रह मे है। ये अपने को लाहोरी लिखते है, अतः ये लाहोर-निवासी थे। आपके पिता का नाम धर्मसी था।

पुस्तकों के नाम—(१) गोराबादल की बात—सवत् १६८६ भादवा ११ सुंबली;

(२) प्रेमविलास प्रेमलता चौपाई—संवत् १६६३ भा० सु० ४।५ रवि; (३) जटमल बावनी; (४) लाहोर गजल; (५) सुंदरी (स्त्री) गजल; (६) झिंगोर गजल; (७) फुटकर सवैयादि।

रचयिता की गोराबादल की कथा का उल्लेख खोज विवरण (१-४८), (३८-७१) में हो चुका है। उनमें इनका जो परिचय मिला, वह ठीक नहीं।

३९. देवीदास—इनकी "सोमवंश की वंशावली" ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रचना है। संवत् ११०३ वि० (फागुन तीन रविवार) की एक ऐतिहासिक घटना का इसमें उल्लेख है। उस समय इस वंश के राजा विजयपाल थे, जो बड़े प्रसिद्ध हुए और जिन्होने विजयगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया। गुजरात, महाराष्ट्र, तैलंग, भोट और नेपाल के राजाओं को इन्होंने जीत लिया था। कंदहार के बूबक्कसाहि से इनकी दस मास तक घोर लड़ाई हुई, जिसमे ग्यारह हजार यवन (तिमिर) मारे गए थे। परंतु इस लड़ाई का परिणाम भारत के लिये अच्छा नहीं हुआ। दिन-प्रति-दिन हिंदुओं का ह्रास होता गया और यवनों की शक्ति बढ़ती गई। कवि के शब्दों में इसका उल्लेख इस प्रकार है—

तब तें भई देस तुरक्कमई। भइ घोर मसीति तु बाँग दई॥
कलमा पढ़ि पाँच नवाज करी। भुवपाल 'विजै' बिनु गाइ परी॥
हिंदुवान घट्यौ तुरकान बढ्यौ। सबको सब भाँति निपोतु कढ्यौ॥

इस घटना के अतिरिक्त बहुत सी पौराणिक कथाएँ भी दी है। जैसे कलियुग का प्रवेश और व्यासदेव जी का अपने शिष्य वैशंपायन को सब पुराण देना तथा श्रीकृष्ण-वंश का वर्णन करते रहने का उपदेश देकर गुप्त हो जाना आदि।

सोमवंश के राजाओं के नामों की तालिका विषय के खाने मे दी हुई है। ग्रंथ मे रचनाकाल का उलेलख नहीं। लिपिकाल संवत् १८३१ वि० है।

रचयिता ने अपना और कोई वृत्त न देकर केवल आश्रयदाता रतनपाल (करौली नरेश) का उल्लेख किया है। वे सोमवंशी थे। अतः इस आधार पर ये पिछले खोज विवरणों (६-२२०; १७-४७; २३-९६, २६-९८, दि० ३१-२५; ०२-१; २-८३; ६-२७) में उल्लिखित देवीदास ही हैं। उक्त विवरणों मे आए प्रेमरत्नाकर और "राजानीतिरा कवित्त" इन्हीं की रचनाएँ हैं।

४०. भीम—इन्होंने संवत् १५५० मे "डँगवेपुराण" की रचना की। यह महाभारतांतर्गत डंगवे-कथा का अनुवाद है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल संवत् १७७७ वि० है।

रचयिता ने अपना विस्तृत विवरण दिया है, पर ग्रंथ कैथी लिपि मे अत्यंत अशुद्ध लिखा होने के कारण ठीक ठीक पढ़ा नहीं गया। फिर भी, यह अंश जैसा कुछ पढ़ा जा सका, उद्धृत किया जाता है—

संवत पंद्रह सै पचास जब भएऊ। द्रमुष नम संमत चलि गएऊ॥
सावन सुकुल संतमो आई। डंगवे कथ भीम सुनाई॥
कवन नग्र कँसनो ठाऊ। कौन देस कौन से गाऊ॥
जह ए भए कबीसर विचरा। तह बसंत है कौन भूअर॥
पुहुमी धर्म प्रन एक देसा। बसै लोग न्रीमल रेह॥
:o: :o: :o: :o:
नसै कवी दोसन को देही। जो कवी अपन नाउ न लेइ॥
कवीत तहव मैं उतपती। कवन नग्र कौन सो जती॥
नग्र भ्रमर सब वै रे कहा। वसुक इंद्रदेव तीस लहा॥
जती के कएथ करन कुवेरु। महीपत ही कलीनेम अवेरु॥

संतुत नौ रतन बर बीरू । अती प्रचंड नीक सुसरीरू ॥
मत मतंग बीरू मह दीन्ह । तब तेनह सब गवरह लीन्ह ॥
तेही कुल भीम बरियरा । वैरी बुधी बहु वंसरा ॥
कहै चहै कछु कथा सुभउ । भरथ कथा डंगवे गउ ॥
चहु उरबं फोरो ग्रावे सोहइ । सोइ प्रीती कंठमन लइ ॥

जान पड़ता है कि रचयिता ग्रमर नगर के निवासी ग्रौर वसुक इंद्रदेव कायस्थ के पुत्र नौरतन के कुल मे उत्पन्न हुए थे । सभवत: ये खोज विवरण (२०-१९) मे उल्लिखित महाभारत 'द्रोणपर्व' के रचयिता भीम है, क्योकि दोनो ग्रथ महाभारत से ही सबंध रखते हैं ग्रौर भाषा भी दोनो की एक ही है । ग्रत: इनका एक ही रचयिता द्वारा रचा जाना संभव है ।

४१. रसरासि (रामनारायण)—"रसिकपच्चीसी" के ये रचयिता है । ग्रंथ में गोपी-उद्धव संवाद वर्णित है । साहित्यिक दृष्टि से रचना सरस ग्रौर सुदर है । रचनाकाल ग्रौर लिपिकाल ग्रज्ञात है ।

रचयिता जयपुर-नरेश सवाई प्रतापसिह के ग्राश्रय मे रहते थे, जिनकी ग्राज्ञा से इन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की । खोज विवरण (१-९३) मे इनकी 'कवित्त रत्नमालिका' का उल्लेख है जिसके ग्रनुसार इनका नाम रामनारायण था ग्रौर ये जयपुर-निवासी ब्राह्मण, रामानुज-सप्रदाय के ग्रनुयायी थे तथा जयपुर-नरेश महाराज प्रतापसिह के दीवान जीवरखसिह के ग्राश्रित थे ।

इनकी प्रस्तुत रचना का उल्लेख राजस्थान की "हिदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज" (प्रथम भाग, पृष्ठ १०९) मे भी है ।

४२. लखनसेनी—इस त्रिवर्षी मे इनके "हरिचरित्र विराट पर्व" का विवरण लिया गया है । ग्रथ महाभारत के 'विराट' पर्व का हिदी पद्यानुवाद है । रचनाकाल सवत् १४८१ (?) ग्रौर लिपिकाल सवत् १८८७ है ।

रचयिता का उल्लेख "महाभारत भाषा" के साथ पिछले खोज विवरण (९-१६८) में हो चुका है । परतु उसमे इनके न तो वृत्त का उल्लेख है ग्रौर न समय का ही । प्रस्तुत प्रति मे ग्रपना वृत्त इन्होने विस्तृत रूप से दिया है । कुछ कवियो, यथा जयदेव, घघ, विद्यापति, बैजलदास ग्रादि का उल्लेख भी है तथा तत्कालीन देशकाल की परिस्थिति के संबंध में भी ऐतिहासिक बातें दी है । परतु खेद के साथ कहना पड़ता है कि यह विवरण ठीक ठीक स्पष्ट नही होता । इसका कारण ग्रथ की प्राचीनता ही है । लिपिकारो की ग्रसावधानी ग्रौर उनकी ग्रयोग्यता के कारण इतने दीर्घ समय से ग्रथ की प्रतिलिपि होते रहने से ग्रशुद्धियाँ हो जाना ग्रसंभव नही। परंतु जब तक कोई शुद्ध ग्रौर प्रामाणिक प्रति नही मिलती तब तक इसी से संतोष करना पड़ता है । ग्राशा है, सावधानी से ग्रध्ययन करने पर कुछ काम की बाते ज्ञात हो सकेंगी । विवरण का सार इस प्रकार है—

जौनपुर का राजा (बादशाह) वीराहीममाहि (इब्राहीम शाह) बड़ा शक्तिशाली था । उस समय गुणियो का ग्रत्यंत ह्रास हो गया था । यह देख कवि बैजल दासराइ (?) के पास गया ग्रौर प्रस्तुत ग्रंथ लिखना ग्रारंभ किया । इसके पश्चात् 'सखाराजा' तथा डीलेश्वर (?) के ग्रधिपति ग्रनुकाराम ग्रौर उसके पुत्र लखनकुमार के उल्लेख है । ये जब कवि-मंडली मे जाने लगे तो बड़े बड़े कवि इनकी प्रतिभा के सामने लज्जित होने लगे । जयदेव, घघ ग्रौर विद्यापति उठ चुके थे । उस समय देश का (संभवत. जहाँ कवि का निवास था) घोर पतन हो गया था । ग्रच्छे ग्रच्छे राजाग्रो ग्रौर उनके ग्राश्रय मे रहनेवाले गुणी जनों मे न रहने से ग्रधम श्रेणी के मनुष्यों का बाहुल्य होता जा रहा था । ग्रत: जन-परिजन सहित कवि ने वह देश छोड़ दिया, पर

जहाँ गया वहाँ भी वही दुर्दशा थी। गोंदू महत कान फूँकते थे और सुंदर कामों को छोड़ बुरे काम करते थे। कपटी धर्माधिकारी बने हुए थे। खोटे वैद्य व्याधि की पहचान तक नही कर सकते थे। हाथी बँधे बँधे भूख से मरते थे और गदहों की यत्नपूर्वक सेवा टहल होती थी। चदन और आम के वृक्ष काटकर लोग करील और बबूल लगाते थे। कोकिल, हस और मजार (बिल्ली) मारकर काक का पालन करते थे। सारिका का पख उखडवाते थे और मुर्गियो का पोषण करते थे। कवि उस देश मे पहुँचा जहाँ लोग उधार लेकर खाते थे।

चौसा नगर प्रसिद्ध था, जहाँ गोरखनाथ का रामराज था। वहाँ के नृपति बड़नदन दूसरे राम थे, जिसने गंगा के किनारे शत्रुओं को बुरी तरह परास्त किया था। उसी के अनुरूप उसका पुत्र पूरणमल भी था।

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि उस समय हिंदू समाज और हिंदू संस्कृति का बहुत पतन हो गया था तथा देश मे चारो ओर मुसलमानी आचार-विचार फैल रहा था। कवि ने 'घघ' का उल्लेख किया है जिससे यह जिज्ञासा होती है कि ये प्रसिद्ध 'घाघ' तो नही है ! बैजलदास राई और अनुकाराम (डीलेश्वर) का निश्चित विवरण अप्राप्त है। ग्रंथ ऐतिहासिक महत्व रखता है।

चौपाई

बादसाहि जे बिराहिमसाही। राज करहि महि मंडल माही॥
आपुन महाबली पुहमी धावै। जउनपुर मह छत्र चलावै॥
संवत चौदह सइ एकासी। लषनसेन कवि कथा प्रगासी॥
गुनी जन सब अधीर भैउ। बैजलदास राइ पह गएउ॥

दोहा

बैजलदास मन हरषीत, ताहीमरावै जीव।
लषनसेनि कवि भाषा, कथा बैरठ जे कीव॥

:o: :o: :o: :o:

कैसे मैरवउ अछर कं पाती। सरवार राजा कइ जाती॥
हंसन पछि होइ छन छन बाका। महबेलाभ भए नीहलंका॥
अछर सुनत सुन्य सुधी काढा। अम्रती बोल बचन सो बाढा॥

दोहा

नर्गहि चहि नगसरी पंडित रहै सीर धनी।
छलै बैल सब होषै लषनसेनी कवि गुनी॥
ढीलेस्वर अनुकाराम। तेजरासि कुल राजा धर्म।
तासु तनै जे लषन कुमार। दुरजन द्रवन सींघ करीवार॥

दोहा

कंठे बसै सुरसती, हीरदै बसहि गनेस।
लषमसेनी तहने बसे, धन्य धन्य सो देस॥ ५॥
लषनसेनी कविजन में आइ। बड़ बड़ कविता गए लगाइ॥
गए धर्म औ सतजुग राजा। देवीपुर गए बली के काजा॥
गए कीती धनसेनि नरेसा। भोजपुर गए देव गनेसा॥
जैदेव चले सर्ग की बाटा। औ गए घघ सुरपति भाटा॥
नगर नरिन्द्र जो गए उनारी। वीद्यापति कइ गइ लचारी॥

अवित कुंड नग्र जे थहाइ । न्ोधमी कुंड नग्र अब गहइ ।।
तेन्ह पापीन्ह कह षोज उठाऊ । जे नहीं लीन जन्म भरि नाऊ ।।

दोहा

तेहि पापी तह राषीए, जेई हरिनाम न लीन ।
अछर तीनीसा जीव करि, भ्रम होइ दीन दीन्ह ।।
जन-परिजन छड़ि सो देसा । जहव उपमवन बसै नरेसा ।।
भोदु महंथ जे लागे काना । काज छांड़ि जे अकाजै जाना ।।
कपटी लोग सब भे धरमाधी । षोट बाद नहि चीन्है बीयाधी ।।
कुंजल बांधै भुष्षन मरई । आदर सो घर सेइ चराइ ।।
चंदन काटि करील जे लावा । आबँ काटि कइ बबुर बोवावा ।।
कोकिल हंस मंजारही मारी । बहुत जतन कागहि प्रतिपाली ।।

दोहा

सारीव पंष उपरिव पालै तमचुर जग संसार ।
लषनसेनी ताहने बसै काढ़ि जो षाहि उधारि ।।

चौपाई

चौसा नगर जगत परमोधा । रामराज तह गोरष सीधा ।।
जुंजै कहि जवा वीग्रह चढ़ाइ । कांपै सेज (सेस?) धरनी लरषरइ ।।
प्रीथीमी वडनंदन नरनाहा । दूपर रघुपति उपजे ताहा ।।
चारी षानी चौरासी भीरा । मारेउ सबै गंगा के तीरा ।।
जेकर पुत्र जे पुरनमाला । अरि के हीरदै महाबलसाला ।।

दोहा

साठि गाइ बांधी चरु पूरनमल के ठाट ।
कौतुक कीन सुरस कवी बिबिध कथा बैराट ।।

प्रस्तुत विवरण मे सख्या ३६८ के रचयिता भी यही लखनसेनि कवि जान पड़ते है ।

४३. विश्वनार्थसिह—इनका "भाषा भक्तचद्रिका" नामक उत्तम काव्यग्रथ मिला है, जिसमे गोपी-उद्धव सवाद वर्णित है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है । रचनाकाल लिपिकाल क्रमश: १८६४ और १६०५ वि० है ।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता । सभव है, ये रीवाँ के महाराज विश्वनार्थसिह (राज्यकाल सवत् १८७०-१६११) हो । इनके लिये देखिए, खोज-विवरण (००-४३; १-६, ३-२२- ६-३२८) ।

४४. वृंद कवि—इनका "यमकालकार सतसैया" या "वृंदविनोद" नाम से एक उत्तम ग्रथ मिला है जिसमे यमकालकार के अव्यपेत और व्यपेत नाम से दो भेद तथा उनके भिन्न-भिन्न प्रयोगो का वर्णन है । इसका रचनाकाल अस्पष्ट है—

गुन रस सुष (ऋषि) अमृत बरम, बरस सुकुल नभ मास ।
दूज सुकवि कवि वृंद ए, दोहा किए प्रकास ।।

यह संवत १७६३ जान पड़ता है । लिपिकाल अज्ञात है । खोज विवरण (४१-२५६ग) में इस ग्रथ का उल्लेख हो गया है ।

पिछले खोज विवरणो मे रचयिता के कई ग्रंथ आ चुके हैं (द्रष्टव्य खोज विवरण

४१–२५६; ६–३३०; २३–४४६ और ००–१२१; २–६; १७–३३०)। उक्त विवरणों मे इनका वृत्त इस प्रकार है—

"ये सेवक जाति के ब्राह्मण, मेडता जोधपुर-निवासी, संवत् १७४३–१७६१ के लगभग वर्तमान और कृष्णगढ-नरेश महाराज सावतसिह (नागरीदास) के पिता महाराज राजसिह के गुरु थे। सवत् १७६१ मे ये बादशाह औरगजेब की फौज के साथ ढाके तक गए थे। इनके वंशज जयलाल कवि कृष्णगढ मे वर्तमान है।"

४५. सोमनाथ या शशिनाथ—ये हिंदी के सुप्रसिद्ध कवियो मे से है। इनकी कई रचनाएँ पहले मिल चुकी है। (द्रष्टव्य खोज विवरण ४–८७; ६–२६८, १७–१७६, २३–३६६; प० २२–१०३)। उक्त विवरणो के अनुसार ये माथुर चौबे, नीलकंठ के पुत्र, सवत् १८०६ के लगभग वर्तमान और भरतपुर के महाराजकुमार प्रतापसिह के आश्रित थे। इस बार इनकी दो नवीन रचनाएँ "शृगारविलास" और "प्रेमपच्चीसी" नाम से और मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका विवरण इस प्रकार है—

शृंगार बिलास—रचनाकाल-लिपिकाल अज्ञात। विषय नायिकाभेद। इसमे भावो को स्पष्ट करने के लिये कही-कही गद्य का भी प्रयोग किया गया है। उदाहरणार्थ यहाँ एक कवित्त दिया जाता है, जिसका भाव गद्य मे स्पष्ट किया गया है—

प्रेमरंगराते परजंक पं हसत दोऊ अंक भरि लेत करि बिरह निवारनें।
कबहूँ बिनोद सों बिलोकत उमंग संग संगहीं सरस किये भूषन सँवारनें।
"सोमनाथ" रीझि पियें अधर पियूष ऐसी सोभ कित पाई रति मदन गँवारनें।
छाई अजों नेंननि निकाई आजु दंपति की हेरति हिराई री किए में प्रान वारनें।

इहां दंपति आलंबन विभाव ॥ भूषन सुंदरता उद्दीपन विभाव ॥ बिलोकिबो अरु अधरपान करिबो अनुभाव ॥ बिनोद सब्द करि हर्ष संचारी भाव ॥ इन सबते रति स्थायी व्यंग तातें सिंगार रस पूर्ण ॥

प्रस्तुत प्रति स्वयं रचयिता के हाथ की लिखी है। इसमे जहाँ-तहाँ काट-छाँट की गई है और प्रत्येक अध्याय (उल्लास) की पुष्पिका मे त्रुटियो का भी उल्लेख है।

(२) **प्रेमपच्चीसी**—इसके भी रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। विषय श्रीकृष्ण-भक्ति है। यह पजाबी भाषा मे रची गई है, जिसमे फारसी शब्दों का भी मिश्रण है और खड़ी बोली का भी प्रयोग है। इसमे कवि के 'सोमनाथ' और 'शशिनाथ' दोनो नाम पाए जाते है।

प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इस कवि के सबध की खोज विशेष महत्त्व रखती है। 'शृगार-विलास' की प्रति स्वय उनके हाथ की लिखी प्रतीत होती है। इस विवरण मे सख्या २२० पर उल्लिखित प्राणनाथ सोती कृत "जेहली जवाहर" की नकल भी इन्होने ही की है। उसकी लिपि का प्रस्तुत ग्रथ की लिपि के साथ मिलान करने से स्पष्ट पता चलता है कि दोनो एक ही व्यक्ति की लिखी हुई है। दोनो की लिपियाँ मिलती है और दोनो के अक्षरो के ऊपर अनुस्वार लगाने मे एकता पाई जाती है। 'शृगारविलास' मे इनके गद्य का नमूना ऊपर दिया गया है। 'प्रेमपच्चीसी' इनके पंजाबी भाषा के ज्ञान का प्रमाण है। प्रसन्नता की बात है कि ये दोनो रचनाएँ सभा के लिये प्राप्त हो गई है और आर्यभाषा पुस्तकालय के याज्ञिक-सग्रह मे सुरक्षित है।

प्रेमपच्चीसी से दो छद दिए जाते है—

क्या कीती तकसीर तुसांडी नही मुषउ दिषलावें है।
राति दिहां बिन तंडी चरचा मुझनू और न भावें है।

बेवरवीं महबूब गीरदे क्यौं अरबगी करदा है ।
सोमनाथ नेही सों कैसा दिल ग्रंदरदा परदा है ॥२॥
:o: :o: :o: :o:
काम नही यह सबदा कोइल नीरवाहै टाडा है ।
साहिब दे दरसन दा दरसन नही ठोदा चाटा है ।
कहि ससिनाथ सुनो बेदाए नहचै बिलदा साटा है ।
नही किसीदा आठा तौ भी इसका सेहदा काटा है ॥२६॥

नीचे विवरण के परिशिष्टो की सूची दी जाती है—

परिशिष्ट १—ग्रथकारो पर टिप्पणियाँ ।
,, २—ग्रथो के विवरणपत्र (उद्धरण, विषय, लिपि और कहाँ वर्तमान है—आदि विवरण) ।
,, ३—उन महत्त्वपूर्ण रचनाओ के विवरणपत्र (उद्धरण, विषय, लिपि और कहाँ वर्तमान है आदि विवरण) जिनके रचयिता अज्ञात है ।
,, ४—(क) परिशिष्ट १ और २ मे आए उन कवियो की नामावली जो आज तक अज्ञात थे ।
(ख) परिशिष्ट १ और २ मे आए पूर्वज्ञात रचयिताओ के उन ग्रथों की नामावली जो खोज मे नवीन मिले है ।
(ग) काव्य-सग्रहो मे आए उन कवियों की नामावली जिनका पता आज तक न था ।
,, ५—ग्रंथकार और उनके आश्रयदाताओं की सूची ।

अंत में ग्रथकारो और ग्रथों की नामानुक्रमणिकाएँ ।

१. **अखैराम**—इस त्रिवर्षी मे "गगा माहात्म्य" के रचयिता अखैराम का पता प्रथम बार ही लगा । ये इसी नाम के अन्य रचयिताओ से भिन्न है । पुस्तक के आधार पर इतना ही पता चलता है कि सुप्रसिद्ध स्वामी चरणदास जी के शिष्य गुरु छौना इनके गुरु थे, जिन्होने स्वप्न में इनको प्रस्तुत ग्रंथ लिखने की आज्ञा दी । अन्य वृत्त अज्ञात है ।

ग्रंथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है । इसका रचनाकाल संवत् १८३२ है और लिपि-काल संवत् १८४० वि० ।

२. **अखैराम**—इनकी "सिघासन बत्तीसी" (सिंहासन बत्तीसी) की एक प्रति मिली है, जिसका उल्लेख पिछले खोज विवरण (३२–४बी) मे हो चुका है । इसका दूसरा नाम 'सुजान विलास' है—

प्रथम ताहि आसीस करि उपज्यो हिये हुलास ।
सूरज मल्ल के नाम कौ रच्यौ "सुजानविलास" ॥

रचनाकाल सवत् १८१२ वि० है । प्रस्तुत प्रति सवत् १६१० मे लिखी गई । रचयिता भरतपुर नरेश सुजानसिह के आश्रित थे । पूर्वोक्त खोज विवरण मे इन्हें मथुरा प्रांत के अंतर्गत चून नगर निवासी और भागवत के अनुवादकर्त्ता भीष्म का वशज लिखा है ।

३. **अग्रस्वामी**—अग्रस्वामी की 'गुरुअष्टक' नाम से नवीन रचना मिली है । ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में न तो रचना काल का उल्लेख है और न लिपिकाल का ही । रचयिता का भी

---

० इस त्रैवार्षिक खोज-विवरण की सामग्री खोज-विभाग के अन्वेषक श्री दौलतराम जुयाल ने प्रस्तुत की है, एतदर्थ उन्हें धन्यवाद । —निरीक्षक ।

कोई वृत्त नहीं मिलता। कृष्णदास पयहारी के शिष्य, स्वामी अग्रदास जी से ये भिन्न जान पड़ते हैं। संभवतः खोज विवरण (१७–६०) मे उल्लिखित युगलप्रिया के ये गुरु हैं। रचना साधारण है।

४. अचलकीर्ति—इस रचयिता की "अठारह नाते" के नाम से नई रचना मिली है। इसमें जैन धर्मानुसार ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल तथा लिपिकाल का कोई उल्लेख नही। रचयिता के संबध मे पता चलता है कि ये फिरोजाबाद के रहनेवाले थे। अन्य परिचय अज्ञात है। पिछले खोज विवरणो मे उल्लिखित 'विषापहार' के रचयिता नारनौल (दिल्ली प्रांत) निवासी अचलकीर्त्ति (आचारज) से ये भिन्न ही जान पडते हैं, देखिए खोज विवरण (१६००–१०३) (दिल्ली ३१–१) (३२–१)।

५. अजगरनाथ—यद्यपि प्रस्तुत रचयिता की 'हरसूब्रह्ममुक्तावली' नामक रचना छप गई है (प्रकाशक—बाबू महाबीर प्रसाद गजवैद्य व महादेवराम, अध्यापक, पो०–चैनपुर), पर खोज मे इनका पता प्रथम बार ही लगा है। सवत् १६०४ मे इन्होंने उक्त ग्रथ की रचना की। ये अजगरा (बनारस) के निवासी थे।

ग्रंथ काव्य की दृष्टि से रोचक है। इसका विषय मध्यकालीन एक ऐतिहासिक घटना है जो इस प्रकार है—"बिहारप्रात मे शाहाबाद जिला के अतर्गत चैनपुर स्थान मे राजा शालिवाहन ने रानी मानमती के कहने पर अपने कर्मनिष्ठ पुरोहित हरसू पाडेय का घर अकारण ही नष्ट कर दिया था। फलस्वरूप ब्रह्मकोप से राजा सपरिवार नष्ट हो गया। एकमात्र ज्ञानकुंवरि, राजकन्या बच रही। राजकन्या ने पुरोहित को राजमहल मे अनशन करते समय रस पिलाकर प्रसन्न कर लिया था, अत उसको वशरहित न होने का आशीर्वाद मिला। पुरोहित हरसू पांडेय ने बीस दिन तक अनशन करने के पश्चात् सवत् १४८४ मे माघ कृष्ण गणेश चतुर्थी के दिन प्राण त्याग किए। पश्चात् फिर रूप (तैजमरूप) धारण कर दिल्ली गए और सैयद वश के तत्कालीन बादशाह मुबारकशाह (आलमशाह) को लेकर चैनपुर पर आक्रमण किया। घोर युद्ध के पश्चात् शालिवाहन मारा गया और उसका समस्त परिवार भी अग्नि मे भस्म हो गया।

"हरसू पाडेय का उनके मृत्युस्थान पर चबूतरा बना दिया गया जो उनके स्मृतिस्वरूप अभी तक प्रसिद्ध है तथा जिसका बडा माहात्म्य भी कहा जाता है।"

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति आदि अत मे खडित है। लिपिकाल का भी कोई पता नही।

६. अनंतदास—अनतदास कृत "परचरी पीपा जी की (परिचयी पीपाजी की)" मिली है। पिछले दो खोज विवरणो मे भी इसका उल्लेख है, दे० खो० वि० (६–१२८ ए २३–१८ सी)। इनके गुरु के सबध मे कुछ भ्रम दिखाई देता है। उपर्युक्त अतिम खोज विवरण में इसके निराकरण करने की चेष्टा की गई, पर पूरी तरह समाधान नही हुआ। उसमें गुरु-परंपरा का जो उद्धरण दिया गया है, उसके अनुसार रचयिता के गुरु 'विनोदा' या 'विनोददास' ठहरते है, परतु टिप्पणी मे उन्हे अग्रदास जी का शिष्य लिखा है। उद्धरण इस प्रकार है—

रामानंद के अनंतानंदा। सदा प्रकट ज्यों पूरन चंदा।
ताके कृष्णदास अधिकारी। सब कोउ जाने दूधाधारी।
ताके अग्र आगरो प्रेम्। लै बैठे सुमिरन को नेम्।
अग्र के शिष्य विनोदहि पाई। ताकी दास अनंत पै आई।

अंतिम पद से स्पष्ट है कि अग्र की शिष्यता 'विनोद', 'विनोदा' या 'विनोददास' ने पाई और उसकी ('ताकी' शब्द से तात्पर्य है, विनोद की) शिष्यता अनतदास पर आई। अतः अब यह निश्चित हो गया कि अनतदास विनोददास के शिष्य थे न कि अग्रदास के।

प्रस्तुत ग्रंथ में सुप्रसिद्ध भक्त पीपाजी की भक्ति का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १७८६ वि० है। इस दृष्टि से ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति प्राचीन है।

७. अमरदास—इनका पता पहली बार लगा है। इस नाम के दो रचयिता पिछले खोज विवरणो मे भी उल्लिखित है, दे० खो० वि० (६–१२३; २०–५; २६–८ ए, बी; २६–६ ए, बी; ६–२३६, २६८)। पर उनसे ये भिन्न है। इनके "एकादशी माहात्म्य" का विवरण लिया गया है। ग्रथ के अनुसार ये लखनऊ (लक्ष्मणपुरी) के रहने वाले थे—

लछिमन पुरी प्रसिद्धि जग षटकुल बिप्रनेवास ।।
नदी गोमती तट रहत चारिउ बरन सुपास ।।

रचनाकाल संवत् १८१५ वि० है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १६६६ वि० की लिखी है।

८. अमरेश कुमार—ये "राधाकृष्णरूप युगल विलास" नामक ग्रंथ के रचयिता है। इनका पता पहली बार लगा है। ग्रंथ द्वारा ज्ञात होता है कि ये साहपुर के राजा या राजकुमार थे :

धन्य नगरी धन्य देसा। सुष सोवे नृपत हमेसा ।।
सदा सहाय गिरीसा। चिरजीवो कोर बरीसा ।।१६।।
साहपुर प्रगट भई श्री अमरेस कुमार।
तिन लीला वरनन करी भक्ति रूप निसतार ।।२०।।

ग्रंथ का विषय श्रीकृष्ण लीला है। रचनाकाल संवत् १६२३ है। लिपिकाल दिया नहीं।

६. अयोध्या गिरि—अयोध्या गिरि के कुछ 'पद' मिले है। पदों द्वारा ये प्रौढ़ एवं प्रतिभाशाली कवि जान पड़ते है। खेद है, इनका विवरण अज्ञात है। संभवत: ये रामभक्ति-शाखा के थे। इस शाखा के बहुत से लोगों ने अपने को 'सखी' या 'अली' शब्द से सबोधित किया और राधा-कृष्ण सबधी रचनाओ की तरह राम और जानकी के सबंध मे भी शृंगारपूर्ण पद रचे। प्रस्तुत 'पद' इसी कोटि के है। इनमे राम और कृष्ण में से किसी का नाम नही। 'पद' की प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है। इससे न तो रचनाकाल का पता लगता है और न लिपिकाल का ही। रचयिता नवोपलब्ध है।

१०. अली मुहीब खाँ "प्रीतम"—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग में हो गया है। देखिए, भूमिका भाग, सख्या ३५।

११. अली रंगीली—इनकी 'रासपंचाध्यायी' नामक रचना का विवरण लिया गया है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति पूर्ण होने पर भी इसके द्वारा रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता के सबध में कुछ पता नही चलता। विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचना पदो मे साधारण कोटि की है। रचयिता नवोपलब्ध है।

१२. अहलाद दास—'अहलाद दास' के कुछ शब्द 'झूलना' नाम से पहले भी मिले हैं, देखिए खोज विवरण (३५–१)। इस बार 'ज्ञानचेटक' नाम से इनकी नवीन कृति मिली है, जिसमें ३३३ चौपाइयाँ है। रचनाकाल सवत् १८२८ और लिपिकाल सवत् १६१६ है। विषय संत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश है। रचयिता के सबध मे केवल इतना ही पता चलता है कि ये स्वामी जगजीवनदास के सप्रदाय के थे। उनको इन्होने 'सतगुरु' और 'प्रभु' नाम से सबोधित किया है। परंतु उपर्युक्त खोज विवरण के अनुसार ये चदेलवशी क्षत्रिय स्वामी जगजीवनदास के भतीजे थे। इन्होने स्वामीजी के बनाए हुए कई ग्रंथ लिखकर पूरे किए थे। फारसी में भी बहुत से रेखते बनाए। उक्त विवरण मे सवत् १७४० मे इनके जन्म की संभावना की गई है।

प्रस्तुत हस्तलेख के लिपिकर्त्ता फकीरदास के कथनानुसार हस्तलेख में दूलनदास की रचनाएँ, प्रभु सिध्या (सिध्यादास बाबा) के दोहे और शब्द तथा गिरिवरदास जी के शब्द लिपिबद्ध थे। परतु अब इसमे प्रस्तुत रचना के अतिरिक्त गिरिवरदास जी के शब्दो का केवल एक पत्र विद्यमान है। पत्रो की सख्याओ से विदित होता है कि इसमे उपर्युक्त रचनाएँ रही होगी। हस्तलेख का जो अश प्राप्त है उसके प्रथम पत्र की सख्या १२६ है और अत मे पत्र की १३८। इससे स्पष्ट है कि हस्तलेख का बहुत बड़ा अश नष्ट हो गया है।

१३. आत्माराम—आयुर्वेदविषयक इनके 'आत्मप्रकाश' ग्रंथ की एक छपी प्रति मिली है। इसमें रचनाकाल का उल्लेख नही। मुद्रणकाल सवत् १६३५ है।

रचयिता ग्रंथ के अनुसार जूनियानगर के निवासी थे। इनकी गुरु परपरा इस प्रकार है—

दादू
|
मोखप्रकाश
|
वेणीदास
|
गगाराम
|
भगतराम
|
नारायणदास
|
दौलतिराम
|
आत्माराम

अन्य वृत्त नही दिया है। विषय की दृष्टि से ग्रंथ उपादेय है। रचयिता खोज में नवोपलब्ध है।

१४. आनंद (कृष्णानंद या गंगाराम)—इनके छह ग्रंथों—(१) आनंद अनुभव, (२) दानलीला, (३) प्रबोध चद्रोदय नाटक, (४) भगवद्गीता, (५) भागवत दशम स्कंध और (६) रासपचाध्यायी के उल्लेख पिछले खोज विवरणो मे हो चुके है। देखिए खोज विवरण (३–३७; ६–४ ए, बी, सी; २०–७; ४१–६)।

इस बार इनके एक और नवीन ग्रंथ 'अर्जुनगीता' का पता चला है, जिसकी प्रस्तुत प्रति अंत से खडित है। रचनाकाल का उल्लेख तो नही है; परंतु ग्रथकार के संवत् १८३५ में काशी आने का उल्लेख किया गया है। अत ग्रथ का रचनाकाल भी लगभग यही होगा। लिपिकाल अज्ञात है।

पिछले ग्रंथों में रचयिता का कोई विशेष वृत्त नही मिलता, पर इस बार इनका पूरा परिचय प्राप्त हुआ है। प्रस्तुत ग्रंथ के अनुसार इनका जन्म दिल्ली मे हुआ था। ये सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ वर्षो के पश्चात् दिल्ली छोडकर वृंदावन चले गए और गोविंद का भजन करने लगे। संवत् १८३५ मे इन्हे वृंदावन छोडकर काशी जाना पड़ा। और तब से काशी में ही रहने लगे। इनका पहले का नाम 'गगाराम' था। पश्चात्—जैसा कि इनका कहना है—घनश्याम (श्रीकृष्ण) ने 'आनंद' नाम रखा, जिसमे 'कृष्ण' शब्द और जोड़कर इन्होंने 'कृष्णानंद'

नाम रख लिया। इसपर इन्होंने देहाभिमान को समूल नष्ट कर दिया और कृष्णभक्ति में लीन रहने लगे।

प्रस्तुत ग्रंथ की टीका करते समय इनकी आयु बीस वर्ष की थी :

'बीसवर्ष की हमारी आयो। ज्ञान विष्णु कृपा ते पायो' ॥

रेखांकित 'विष्णु' शब्द से अनुमान होता है कि कोई 'विष्णुदास' इनके गुरु रहे। इनके समस्त ग्रंथो मे मंगलाचरण का दोहा एक ही है जो इस प्रकार है :

आदि करूं परणाम जगत गुरु जगदीश को।
ईष्ट आनंद के श्याम तिने निवाऊं सीस को॥१॥

पर (४१–६) में उल्लिखित 'रासपचाध्यायी' मे यह दोहा नही मिलता । अतः उसको प्रस्तुत रचयिता की रचना मानने मे कुछ सदेह होता है।

१५. आनंद कवि—इस कवि के नाम से दो पुस्तके 'आनंद विलास' और 'ककावली' मिली है। दोनो एक हस्तलेख मे होने के कारण एक ही रचयिता की कृतियाँ मान ली गई है। रचनाकाल और लिपिकाल किसी मे नही है। पहली पुस्तक मे राधा-कृष्ण के लीलासबधी ५६ कवित्त है और दूसरी मे 'क' से लेकर 'ज्ञ' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहे रचकर रास क्रीड़ा का सक्षेप में वर्णन किया है।

रचयिता का वृत्त अज्ञात है। खोज में ये नवोपलब्ध है।

१६. आनंदकवि—आनद कविकृत 'कोकशास्त्र' का उल्लेख 'कोकसार', 'कोकमंजरी' और 'कोकविलास' आदि भिन्न भिन्न नामो से पिछले कई खोज विवरणो मे हो चुका है। देखिए खोज विवरण (२–५; ६–१२६ ए; १७–७, २०–६ ए, बी; २३–१३ 'बी' से 'जे' तक; २६–१० 'ए' से 'के' तक; २६–११ 'ए' से 'जी' तक, दि० ३१–७, प० २२–५), परतु अभी तक इनका परिचय अज्ञात ही है। इस बार इस पुस्तक की दो पुरानी प्रतियाँ और मिली है। इनमे से एक मे लिपिकाल सवत् १७०५ तथा दूसरी मे सवत् १७६३ है। रचनाकाल का उल्लेख किसी मे नही है।

१७. आनंददास—इस त्रिवर्षी मे इनका पता पहली बार लगा है। इनकी 'सुदामाचरित्र' नामक रचना का विवरण लिया गया है। इसका विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का विवरण भी अप्राप्य है। ग्रथ की रचनाशैली फारसी है। भाषा प्राचीन खड़ी बोली है जिसमे फारसी शब्दो का बाहुल्य है।

१८. आलम और शेख—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग में हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे संख्या ३६।

१९. ईशकवि या कवि व्यंकटेश—इनकी 'महा महोत्सव' (अन्नकूट लीला') नामक रचना का विवरण लिया गया है। यह पहले भी एक बार मिल चुकी है, देखिए, खोज विवरण (३२–६०)। वल्लभकुल संप्रदाय मे मनाये जाने वाले 'अन्नकूट लीला महोत्सव' का इसमें वर्णन है। रचनाकाल संवत् १८७६ वि० है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का वृत्त पुष्पिका मे दिया है, जिसके अनुसार इनका दूसरा नाम 'व्यंकटेश' था। ये वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी और गोकुल निवासी तैलग ब्राह्मण मोहन भट्ट के पुत्र थे। प्रस्तुत रचना वल्लभ कुल के गोस्वामी श्री दामोदर महाराज के लिए रची गई।

२०. ईश—'शिव अंबिका स्तोत्र' के ये रचयिता है। रचना मे अंबिका भवानी की स्तुति वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचना साधारण है।

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। अपने नाम के पूर्व रचयिता से ये सर्वथा भिन्न हैं। खोज में नवोपलब्ध हैं।

२१. ईश्वरदास (इसरदास)—ईश्वरदास की "भरतमिलाप" या "भरतविलाप" नामक रचना मिली है, जिसका उल्लेख खोज विवरण (२३–१७३) मे भी है। इस बार इसकी चार प्रतियाँ प्राप्त हुई है, पर रचनाकाल का उल्लेख किसी में भी नही है। लिपिकाल केवल दो प्रतियो मे सन् ११६ और सवत् १८८० वि० दिए है। सन् ११६ सभवत हिजरी सन् १०६६ जान पड़ता है जो सं० १७०७ के लगभग होता है। इस दृष्टि से यह प्रति प्राचीन है। विषय चित्रकूट मे राम-भरत-मिलन का वर्णन है। रचना का नाम किसी प्रति मे "भरतमिलाप" तथा किसी मे "भरतविलाप" है।

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। सभवतः ये आचार्य रामचद्र शुक्ल के "हिंदी साहित्य के इतिहास" के पृष्ठ सख्या ७२, ७३ पर उल्लिखित "सत्यवती की कथा" के रचयिता ईश्वरदास है। दोनो ग्रथो मे रचयिता का नाम "इसरदास" लिखा मिलता है। इसके अतिरिक्त दोनो की वर्णन शैली मिलती जुलती है, देखिए आगे सख्या २२ पर का विवरण।

२२. ईश्वरदास (इसरदास)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग में संख्या १।

२३. ईश्वरदास (इसरदास)—इनकी "अंगदपैज" नामक रचना नई मिली है। रचना की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल अप्राप्त है। लिपिकाल दो दिए है—सवत् १७०६ और सवत् १८०६। इससे स्पष्ट से कि प्रस्तुत प्रति सवत् १७०६ मे लिखी गई प्रति से नकल हुई है। विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है।

रचयिता का वृत्त नहीं मिलता, पर ये भी 'भरतमिलाप' और 'सत्यवती कथा' के रचयिता (संख्या २१, २२) जान पड़ते है। क्योंकि भरतमिलाप और इनके प्रस्तुत ग्रथ का विषय एक ही है, अर्थात् रामायण की कथा का वर्णन करना। दोनो में रचयिता का नाम भी 'इसरदास' ही दिया है। इस दृष्टि से यदि दोनो एक ही ग्रथ के अश हो तो सदेह भी नहीं। इनकी और 'सत्यवती की कथा' की रचनाशैली मिलती जुलती है।

२४. ईश्वर कवि—इनके नाम से अलकारविषयक बिना नाम का एक ग्रथ मिला है। ये संभवतः पंजाब (खोज विवरण २२–११७) तथा खोज विवरण १२६–१५६ बी. सी) मे आए ईश्वरकवि है। उक्त खोज विवरण मे इनके क्रमश. "चित्र चंद्रिका", "नरेंद्रभूषण", "भक्ति रत्नावली" और "मानव प्रबोध" नामक ग्रथो के उल्लेख है। "चित्र चद्रिका" प्रस्तुत ग्रंथ विदित होता है। पंजाब खोज विवरण मे ग्रथो के उद्धरण नही छपे है, जिससे विवरण पत्रो का मिलान नही हो सका। प्रस्तुत ग्रथ मे—जैसा चित्र चद्रिका मे है—तुलसी कृत रामायण में आए प्रसिद्ध प्रसिद्ध अर्थालंकारो और चित्रालकारो का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है। रचनाकाल अज्ञात है, पर पजाब खोज विवरण में सवत् १६१७ वि० रचनाकाल के रूप मे उल्लिखित है। लिपिकाल संवत् १६१६ है।

रचयिता के संबध मे कुछ पता नही चलता, पर उपर्युक्त खोज विवरणो के अनुसार ये संवत् १६१३ से १६३० के लगभग वर्तमान थे। ये पहले पटियाला नरेश महाराज नरेंद्र सिंह के आश्रय मे रहते थे, पर पीछे धौलपुर के महाराणा भगवत सिंह के यहाँ रहने लगे।

२५. उदय या उदयराम—इनकी पहले बहुत सी रचनाएँ मिली हैं, देखिए खोज विवरण (००–६८), (३२–२२३), (३५–१०२) और सन् (३८–१५६)। इस बार इनकी "दामोदरलीला" और मिली है, जिसमे श्रीकृष्ण की "दधि माखन" और गोवर्द्धन लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल संवत् १८५२ है। लिपिकाल दिया नही। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मोहनलाल कृत 'रंगमंजरी' (याज्ञिक सग्रह, आर्यभाषा पुस्तकालय) के साथ एक हस्तलेख मे है।

रचयिता का अन्य परिचय नहीं मिलता पर ऊपर लिखित खोज विवरणों के अनुसार ये जाति के वैश्य और ब्रज निवासी थे। स्वर्गीय मयाशंकर जी याज्ञिक इनके संबंध में कहा करते थे कि "नददास जडिया तो **उदै पालसिया**। इसमे संदेह नही कि इनकी कविता उत्तम है।

२६. **उदै**—ये महाशय इस नाम के अन्य कवियों से भिन्न प्रतीत होते हैं। प्रस्तुत खोज मे इनकी "राम रघुनाथ स्तोत्र" नामक रचना मिली है। इसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही। रचयिता का वृत्त भी अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२७. **उमादास**—इस रचयिता के नाम पर "नवरत्न कवित्त" का विवरण लिया गया है। विवरण पत्र मे जो उद्धरण है उनमें इनका नाम कही नहीं मिलता। अन्वेषक का कथन है कि इनका रचा "नवरत्न" नामक नीति ग्रथ है, अत. सभव है कि प्रस्तुत कवित्त उन्ही के हो।

उमादास के 'नवरत्न' को देखने मे इस सबध मे कुछ भी पता नही चलता, देखिए खोज विवरण (४–६५)। उसमें कोई ऐसी बात नही मिलती जिसका प्रस्तुत कवित्तो से किसी प्रकार साम्य बैठाया जा सके। उसके रचयिता सवत् १६१६ के लगभग वर्तमान थे। परंतु प्रस्तुत 'कवित्तो' के लिपिकाल (स० १८८८ वि०) को देखने से पता चलता है कि इसके रचयिता सं० १८८८ वि० के पहले वर्तमान थे। अत प्रस्तुत "नवरत्न कवित्त" को 'नवरत्न' के कर्त्ता उमादास कृत बतलाना ठीक नही। अस्तु, ग्रथ का रचनाकाल अज्ञात है। विषय नीति तथा ज्ञानोपदेश है।

२८. **ऋषिकेश**—इनकी "स्वरोदय षट् प्रकाश" नामक रचना मिली है। रचना का उल्लेख खोज विवरण (६–२२१) मे भी है, परतु उसमें विवरण पत्र नही छपा है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १८०८ वि० है। अत का भाग खडित होने के कारण लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता ने जीवनराम नामक अपने एक मित्र की प्रेरणा से प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। ये स० १८०८ के लगभग वर्तमान थे और आगरा मे रहते थे।

२६. **ऋषिकेश**—ये महाशय 'ऋतुराजमजरी' के रचयिता है। ये वृदावन के रहने वाले थे। खोज मे इनका पता पहली बार लगा है। इनके प्रस्तुत ग्रंथ मे षट्ऋतुओ के अनुसार राधाकृष्ण की लीलाओ का सरस वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

३०. **कनाय साहब (फरासीसी हकीम)**—'अजुल पुराण' फरासीसी हकीम के नाम पर पहले कई बार मिल चुका है, देखिए खोज विवरण (२–११३) (६–१६६) और (२६–१०० ए, बी)। अब इसकी एक प्रति और मिली है, जिसकी पुष्पिका से ज्ञात हुआ है कि इसके वास्तविक रचयिता 'कनाय साहब' है, जो फरासीसी हकीम के पुत्र थे —

"इति श्री अजुल पुराणे वैद सास्त्रे हकीम फरासीस मतीस सुत कनाय साहेब विरचितायां रोग उत्पत्ति नाम षष्टमोध्याय १"–

इनका काल एव अन्य वृत्त फिर भी अज्ञात ही है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे किसी संवत् का उल्लेख नही।

३१. **कन्हैयालाल भट्ट उपनाम 'कान्ह'**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। भूमिका भाग में संख्या २।

३२. **कबीर**—इस त्रिवर्षी मे कबीर के नाम पर निम्नलिखित ग्रथ और मिले है।

(१) कबीर **सागर**—लिपिकाल संवत् १७२३ वि०।
(२) **कबीर और निरंजन ज्ञानगुष्टि, शब्द, मंगल, रेखता तथा वेहला**—लिपिकाल सवत् १६०८ वि०।
(३) **ज्ञानसागर**।

(४) **चितामनि**—लिपिकाल सं० १८८४ वि० ।
(५) **बसिष्ट बोध** ।
(६) **मूलध्यान** ।
(७) **मूलबानी** ।

(८) **सुकृतध्यान**—इसमे कबीर का नाम नही आया । सवत् १५१६ एक स्थान पर आया है जो संभवतः सुकृत के अवतार किसी जुड़ावन (जुदावन) का जन्म समय है । यह ज्ञात नही होता कि ये जुड़ावन कौन थे और किस स्थान मे पैदा हुए थे तथा उन्होने क्या काम किया ।

(९) **हनुमानबोध** ।

रचनाकाल किसी मे नही दिया है । विषय सत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश है ।

निश्चित रूप से यह नही कहा जा सकता कि ये कबीर की ही रचनाएँ है । रचयिता के वृत्त के सबंध मे भी कोई नवीन बात प्रकट नही होती ।

३३. **करता राम**—इनके एक ग्रथ की खडित प्रति मिली है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल के अतिरिक्त ग्रथ के नाम का भी उल्लेख नही । ग्रथ मे श्रीकृष्ण और गोपियो की दधिलीला का वर्णन है । अत. इसी आधार पर इसका "दधिलीला" नाम रख दिया गया है ।

रचयिता का कोई परिचय नही दिया है । यह भी नहीं कहा जा सकता कि ये खोज विवरण (४१–२२) पर उल्लिखित शालिहोत्र के रचयिता 'करताराम' से भिन्न है या अभिन्न ।

३४. **करताराम**—इनकी "शालिहोत्र" रचना की एक प्रति का विवरण इस बार भी लिया गया है । रचना का खोज विवरण (४१–२२) मे उल्लेख हो चुका है । रचनाकाल सवत् १८५४ है और लिपिकाल सवत् १९२३ वि० ।

उपर्युक्त खोज विवरण और ग्रथ की प्रस्तुत प्रति के अनुसार रचयिता पडरौना (गोरखपुर) के अतर्गत सिधुआ ग्राम के रहनेवाले थे । वहाँ के नरेश प्रबलराय के कहने पर इन्होने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की ।

३५. **कल्याणदास**—इनके "सुदामा जी के सवैया" मिले है, जो इन्ही के 'सुदामा चरित्र' से लेकर संगृहीत किए गए है । 'सुदामा चरित्र' का उल्लेख खोज विवरण (३५–५०) मे है । रचयिता के सबध मे अभी तक कुछ पता नही चला । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

३६. **कल्यानदास**—प्रस्तुत खोज मे इनकी 'बहुला लीला' विवृत हुई है । ग्रथ का विषय एक पौराणिक आख्यान है, जिसमे एक ब्राह्मण की बहुला गाय की सत्यप्रियता और एक सिह की उदारता का वर्णन है । रचनाकाल का उल्लेख नही । लिपिकाल सवत् १८४८ है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता । अत नही कहा जा सकता कि पूर्व कवि से ये भिन्न है या अभिन्न ।

३७. **काकराम**—इनकी "राम विवाह" नामक छोटी सी रचना मिली है । इनके संबध मे केवल यह कि ये अधे थे और कोई वृत्त नही मिलता । ग्रथ की प्रति खडित है । रचनाकाल का पता नही । लिपिकाल सवत् १७६६ वि० दिया है । रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है ।

३८. **कान्ह कवि (लघु कान्ह)**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है । अतः देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ३ ।

३९. **कान्ह और व्यास**—इन दो महाशयो ने "बिहारी सतसई" का सपादन अकारादि क्रम से किया है । गद्य मे दोहो का मर्म भी सूत्र रूप मे लिखा है । अपने रचे इनके केवल तीन दोहे है जो ग्रंथात मे दिए है और जिनमे प्रस्तुत प्रयास का कारण प्रकट किया है—

सरस सलंकृत सतसया किये बिहारी दास ।
तिनकी पूरब पीठिका कीन्ही "कान्ह व व्यास" ॥७१०॥
प्रथम अकारादि आदि दै अवर हकार अवसान ।
मसकत कर एकत्र कीये अति प्रबंध यह जानि ॥७११॥
जाको जासौं वचन है सोइ कीयो प्रवान ।
जहां होइ अनमिल कहू लेहु सुधारि सुजान ॥७१३॥

ग्रंथ द्वारा इनका कोई परिचय नही मिलता । यह भी नही कहा जा सकता कि पिछले खोज विवरणो (२६–१८४) (३–६०) (६–२२७) (३२–१०७) मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न है या अभिन्न ।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल सवत् १७८७ दिया है । रचनाकाल ज्ञात नहीं ।

४०. **कालिदास**—इनके "वसतराज" नामक एक ग्रथ की दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं । ग्रंथ मे शुभाशुभ शकुन का विषय वर्णन है । रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख किसी प्रति मे नही है ।

रचयिता का परिचय भी अज्ञात है । पिछले खोज विवरणो (१–६८) (४–५; ६–१७८) (२०–७५; २३–२००) (पं० २२–५२; ६–१४४) मे इस नाम के दो रचयिताओ का उल्लेख है; परंतु प्रस्तुत रचयिता उनसे सर्वथा भिन्न जान पड़ते है ।

४१. **कासी गिरि**—प्रस्तुत रचयिता कृत "भगवद्गीता" का विवरण पहिले भी लिया जा चुका है, देखिए खोज विवरण (३२–१०८) । इस बार संवत् १८६३ की लिखी इसकी एक प्रति और मिली है जिसमे रचनाकाल का उल्लेख है । परतु उपर्युक्त खोज विवरण के अनुसार रचनाकाल संवत् १७६१ है ।

रचयिता का परिचय अभी तक अज्ञात है ।

४२. **किसनलाल**—इस त्रिवर्षी में इनके नाम से "वियोग मालती" का विवरण लिया गया है । विवरण पत्र मे दिए गए उद्धरणो से रचयिता और ग्रथ के नाम का कोई पता नहीं चलता । अतः नही कहा जा सकता कि अन्वेषक ने किस आधार पर इन नामों का उल्लेख किया है । ग्रंथ मे वियोग शृगार पूर्ण कहानी का वर्णन है । इसमे एक 'राजाराम सिंह' (संभवतः भरतपुर नरेश) का वर्णन है जो रचयिता के आश्रयदाता जान पड़ते है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं ।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता । खोज विवरण (४१–१२७) में इस नाम के एक रचयिता का उल्लेख है, पर उनके साथ इनका कोई साम्य है या नही कहा नही जा सकता ।

४३. **किसोरदास**—इनकी "गीता भाषा टीका" नाम की पुस्तक मिली है, जो गद्य में है । नाम के अतिरिक्त इनका और कोई वृत्त नही मिलता । पिछले खोज विवरणों (६–६१) (१२–६३) (२३–२१३) में इस नाम के कुछ रचयिता आए है पर प्रमाणाभाव में नही कहा जा सकता कि उनमे से ये कोई एक है या नही । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं ।

४४. **कुंभनदास**—इनकी "दानलीला" की दो प्रतियो के विवरण लिए गए हैं । इनका कोई वृत्त नही मिलता । अतः नही कहा जा सकता कि अष्टछाप वाले कुंभनदास (३२–१२८) से ये भिन्न हैं अथवा अभिन्न ।

ग्रंथ मे कृष्ण और गोपियो की दानलीला का वर्णन है । रचनाकाल उल्लिखित नहीं । लिपिकाल केवल एक प्रति मे संवत् १६१८ है ।

४५. **कुदरतीदास या कुदरती साहब**—रचयिता का विस्तृत विवेचन भूमिका भाग में हो गया है । देखिए, भूमिका भाग में संख्या ४ ।

४६. कृपाराम—इनका "भागवत" ग्रंथ मिला है। ग्रंथ का उल्लेख पिछले खोज-विवरण (२६–२४५) में भी है। उक्त विवरण के अनुसार ये जाति के नागर ब्राह्मण, सवत् १७७२ के लगभग वर्तमान और जयपुर नरेश महाराज सवाई जयसिह के आश्रित थे। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल संवत् १८९९ वि० दिया है।

४७. कृष्णचंद अग्रवाल—खोज मे ये नवोपलब्ध है। इनके "कृष्ण विलास" नामक ग्रंथ का विवरण लिया गया है। ग्रंथ की पुष्पिका के आधार पर ये वल्लभ कुल के गुसाईं श्री गुलाल चंद जी के पुत्र श्री द्वारिकानाथ जी के सेवक (शिष्य) थे।

इतिश्री भगवते महापुराणे दशम स्कंध लीला अध्याई ॥९०॥ संपूर्ण॥ संवत् १८०४ माघ सुदी ३० गुरुवासरे ।...इग्र काथ संवत् १७९४ पस वद ११ बुधवासरे कृष्णचंद्र अग्रवाल गुलाल चंद जु के सुत श्री द्वारकानाथ वल्लभ कुल के गोसाई के सेवक ने जथा मत श्रीगुर ईश्वर की कृपा तें वरनन कीये सुभ ॥

'श्री गुर ईस्वर' का तात्पर्य यही हो सकता है कि ये गुरु को ईश्वर तुल्य समझते थे। गुरु इनके "द्वारिकानाथ" अथवा "द्वारिकेश" ही थे जैसा कि ग्रथारभ मे भी दिया है—

"द्वारकेस गुरुदेव कृपा तें मोहिं भरोसो है निरधारि ॥२॥"

ग्रंथ भागवत दशमस्कध का अनुवाद है। रचनाकाल सवत् १७९४ और लिपिकाल संवत् १८०४ है।

४८. कृष्णदास—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग में संख्या ५।

४९. कृष्णदास (अनुमान से)—इनकी बिना नाम की खडित रचना मिली है। रचना में भगवद् विरुदावली का वर्णन है। अत. विषय के आधार पर ग्रथ का नाम "विरुदावली" रख दिया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचना साधारण है।

रचयिता का नाम "दास क्रसुन" लिखा मिलता है। अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

५०. कृष्णदास (अष्टछाप)—इस बार इनके पदो का एक बडा संग्रह "कृष्णसागर" नाम से मिला है। सगृहीत पदो मे राधा-कृष्ण की भक्ति का सकीर्तन है। रचना काल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता, पर भाषा तथा शैली से ये अष्टछाप के कवि ज्ञात होते है।

पिछली बार इनकी दो रचनाएँ—(१) जुगलमान चरित और (२) दानलीला, मिली है, देखिए खोज विवरण (६–३०३) (२६–२४७)।

५१. कृष्णदास जाड़ा—इनकी "विद्रुभदेस" (विदर्भदेस ?) नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमे कृष्णरुक्मिणी विवाह वर्णित है। "विद्रुभदेस विदर्भदेस" का बिगड़ा हुआ। रूप है जो लिपिकर्ता के हस्तदोष से जान पड़ता है।

इसमें रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए है।

रचना मे रचयिता का नाम कृष्णदास तो नही मिलता पर ग्रथात मे "जनकृष्ण" और "जाडा" नामो का उल्लेख हुआ है। अत इन्ही के आधार पर अन्वेषक ने "कृष्णदास जाड़ा" नाम रख दिया है। उन्होने इनको अष्टछाप का कवि माना है, पर इनकी रचनाशैली अष्टछाप के कवियों की शैली से मेल नही खाती।

५२. कृष्णदास कायस्थ—इस कवि का पता प्रथम बार लगा है। खोज में इनकी "रासपचाध्यायी" की खड़ित प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता रामपुर, शमशाबाद निवासी और जाति के कायस्थ (सकसेना) थे—

"कृष्णदास" मम नाम हरिजन चरन सरोजरज ।
रहत रामपुर ग्राम शमशाबाद प्रसिद्ध जो ।।
करी कृपा पूंछी वरन वरन सुनावों तोंहि ।
सक सुन्यों कायस्थ कुल जान दूसरो मोह ।।

अन्य वृत्त नहीं मिलता । प्रस्तुत प्रति फारसी लिपि में है ।

५३. कृष्णदेव—खोज मे ये पहले पहल मिले है । इनकी "वबुरबाहन" नामक रचना की एक खंडित प्रति मिली है, जिसमे महाभारत के आधार पर 'वभ्रुवाहन' की कथा का वर्णन है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८६७ अथवा शकाब्द १७३१ दिया है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता । खोज विवरण (६–१५६) मे आए कृष्णदेव से ये भिन्न जान पड़ते है ।

५४. कृष्णराम संतोषिया चक्रवर्ती—इन्होने गीता की टीका "गीता भाषा टीका" नाम से की है, जो गद्य मे है । टीका का रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १६२३ है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

५५. कृष्णाबाई या कृष्णदासि (श्री आचार्य जी की सेविका)—श्रीकृष्ण और गोपियों के रास विषय पर लिखी गई "शरदनिसा" नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है । खोज मे इनका पता पहली बार लगा है । अन्वेषक ने इनके लिये, "अडल निवासी, सवत् १६०० के पूर्व वर्तमान और आचार्यजी के सेवक" लिखा है, परतु विवरण में दिए गए उद्धरणो से ऐसा पता नही चलता । संभवतः सुनी सुनाई बातो पर ही ऐसा लिखा गया है ।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचना काल और लिपिकाल उल्लिखित नही है ।

५६. केवललीन "द्विज"—इनके कुछ 'कवित्त' मिले है, जिनका विषय भगवद्भक्ति है । यद्यपि रचना का शीर्षक 'कवित्त' है पर कविता सवैया छदो मे की गई है । रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चला । कविता साधारण है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नहीं मिलता । खोज मे नवोपलब्ध हैं ।

५७. केशव किशोर—इन्होंने "श्री आचार्य जी की वंशावली" की रचना की, जिसमे वल्लभ सप्रदाय के सस्थापक श्री वल्लभाचार्य जी की वशावली का वर्णन है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

ग्रथ के आधार पर रचयिता वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे । गुरु का नाम द्वारिकेश था ।

श्री द्वारिकेस जी कृपा करी लीनो हूँ अपनाय ।
श्री वल्लभ कुल की केलि पर "केसो किसोर" बलि जाय ।।

अन्य परिचय अज्ञात है । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

५८. केशवदास—प्रसिद्ध कवि केशवदास के नाम से "वैराग्यशतक" (विवेक दीपिका) ग्रंथ का विवरण लिया गया है । यह व्रजभाषा गद्य मे भर्तृहरिकृत सस्कृत ग्रंथ "वैराग्यशतक" का अनुवाद है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १७४३ है । प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है । ग्रंथ की निम्नलिखित पुष्पिका के आधार पर रचयिता केशवदास माने गए है :—

"इति श्री मत्सकल नृपति मौलि मडन मनि श्री मधुकरी नृपति तनूज श्री मदिद्र विरचिताया विवेक दीपिकाया भर्तृहरि विरचिताया वैराग्यसतं संपूर्ण भवति ।।"

केशवदास ने अपने ग्रथो की पुष्पिकाएँ इसी प्रकार लिखी है, जिसमे आश्रयदाता को ही रचयिता के रूप मे लिखा है । अतः इसी आधार पर उन्हे प्रस्तुत ग्रथ का रचयिता माना है, अन्यथा रचयिता के संबंध में कोई निश्चित पता नही लगता ।

५६. केशवदास नारायण—"विवाहखेल" नामक रचना के ये रचयिता हैं। रचना में राधा कृष्ण की विवाह खल लीला (इसमें राधा 'वधु' और श्रीकृष्ण 'वर' बने है) का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का परिचय भी अनुपलब्ध है। खोज मे ये नये मिले हैं।

६०. केशवप्रसाद शर्मा—इन्होने "केशव विनोद भाषा निघटु" की सवत् १८६७ वि० में रचना की। ग्रंथ पहले सस्कृत मे रचा गया था, पर लोकोपचार की भावना से हिंदी मे अनुवाद कर विद्या रत्नाकर यत्रालय आगरा मे पुराने पत्थर टाइप मे छापा गया। मुद्रणकाल संवत् १९३० वि० है। इसमे ओषधियो, व्यजनो और अनेक प्रकार के मांसो के गुण-दोषो का वर्णन है।

रचयिता के पिता का नाम परमसुख और छोटे भाई का नाम बलदेव था। इनके पूर्वज भवानीदत्त द्विवेदी थे, जो अयोध्या के समीप वैसवार के अतर्गत जैराजमऊ ग्राम मे रहते थे। वहाँ से वे बिठूर के पास राधनगाँव मे जा बसे। पश्चात् इनके पिता पडित परमसुख इनको लेकर आगरे चले गए और अध्यापन कार्य कर जीवन यापन करने लगे। ये भी आगरा कॉलेज मे संस्कृत के प्रथम अध्यापक हो गए। इनका उल्लेख खोज विवरण (२६–२३०) मे भी हुआ है।

६१. केशोराम—इनके केवल दो 'कवित्त' मिले है, जिनमे चतुराईहीन मनुष्यो की निंदा की गई है। कवित्तो का रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी परिचय अप्राप्त है। खोज में ये नवोपलब्ध है।

६२. केसोदास—इस त्रिवर्षी मे इनके "महाभारत" (स्वर्गारोहणपर्व) ग्रंथ का पता लगा है। ग्रथ मूल सस्कृत का हिंदी पद्यानुवाद है। यह खडितावस्था मे है और इसकी भाषा अवधी है। रचनाकाल का कोई पता नही चलता। लिपिकाल अस्पष्ट है, पर अनुमान से संवत् १८३२ जान पडता है।

"गिरिवर जन जगजीवन साँइ। सदा राषु सत सरन गोसांइ॥"

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति कैथी लिपि मे है, जो अत्यत भ्रष्ट है। परंतु भाषा प्राचीन जान पड़ती है, जिससे रचयिता का प्राचीन होना विदित होता है। सभवत रचयिता उस समय के हैं जिस समय गोरखनाथ को ज्ञानियों मे श्रेष्ठ बतलाने की प्रथा सी चल पड़ी थी :—

जसदेवन्ह म नरायन भोगी। तस ग्यानीन्ह म 'गोरख' जोगी॥

६३. क्षेमकरण—ये "श्रीराम गीतमाला" के रचयिता है। ग्रथ मे रामचरित्र के अंतर्गत बालकांड की कथा वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचना साहित्यिक है।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। खोज विवरण (६–४६) मे भी 'कृष्ण-चरितामृत' के रचयिता एक क्षेमकरन आए है, पर प्रमाणाभाव मे नही कहा जा सकता कि वे इनसे भिन्न हैं या अभिन्न।

६४. खेम कवि—इनकी "खेम पच्चीसी" नामक रचना की एक अपूर्ण प्रति का विवरण लिया गया है। रचना में हनुमान जी की लकायात्रा का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का विशेष वृत्त नही मिलता। अतः नही कहा जा सकता कि खोज विवरण (२३–२०६) (३२–११७) और (४१–४२) पर आए इस नाम के रचयिताओं से इनका कोई साम्य है या नही।

६५. गंग या गंगाराम—इनके "महाभारत" (शल्यपर्व) की एक जीर्णशीर्ण तथा खंडित प्रति मिली है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। विषय नाम से ही स्पष्ट है।

ग्रंथ में रचयिता का नाम "गंग" या "गगाराम" दिए हैं। अन्य परिचय नहीं मिलता। इस त्रिवर्षी में "धर्मदास" और "श्रीपति" कृत महाभारत के कुछ पर्वों के विवरण लिए गए हैं, जिनमें गंग का भी उल्लेख है। धर्मदास ने पुत्र और श्रीपति ने उन्हें भाई लिखा है। संभवतः उनके ग्रंथो में उल्लिखित गंग प्रस्तुत गग ही हो। एक बात का सदेह अवश्य होता है कि गंग की कविता के संबंध में जितनी प्रशसा उन लोगों ने की है, प्रस्तुत ग्रथ को देखकर उस संबंध में निराशा सी होती है। हो सकता है कि प्रस्तुत रचना उनकी आरंभिक रचनाओ में से हो। ग्रंथ की लिपि भी इतनी भ्रष्ट है कि ठीक ठीक पढ़ने मे नहीं आती। श्रीपति का समय संवत् १७१९ दिया है।

अतः इस दृष्टि से ये सवत् १७१९ के लगभग वर्तमान थे। खोज विवरण (२०-४१) में उल्लिखित गंग यही जान पड़ते है।

६६. गंगकवि—"गोदोहन लीला" के रचयिता इस कवि का कोई परिचय नही मिलता। अतः नही कहा जा सकता कि पिछले खोज विवरणों मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न है या अभिन्न। देखिए खोज विवरण (२०-४१) (१२-५५) (२६-१२६) (२६-१०६) (३२-६२) (६-८४) और (२३-११४)।

ग्रंथ मे श्रीकृष्ण की गोदोहन लीला का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

६७. गंगसरन—इनकी "चौर्यलीला" नाम की छोटी सी पुस्तक मिली है। पुस्तक मे श्रीकृष्ण की दधि-माखन-चोरी की लीला वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

६८. गंगागिरि—इनके दो ग्रथ—"ज्ञानकथा रहस्य" और "ज्ञानकथा कर्म निर्णय" मिले है। दोनो रचनाओ का विषय ब्रह्म ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल अज्ञात है।
लिपिकाल दोनो मे सवत् १९३४ है।

ग्रथो द्वारा रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। सभवत. ये खोज विवरण (६-२१५) मे आए रामरसिक के गुरु गगागिरि है।

६९. गंगादास—इनके "शब्द या वाणी" मिले है जिनमे भक्ति तथा ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचयिता का ग्रथ द्वारा इतना ही पता चलता है कि इनके गुरु कोई काशीराम थे। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कुछ रचयिताओ का उल्लेख है पर प्रमाणाभाव मे नहीं कहा जा सकता कि उनमे से किसी के साथ इनका कोई साम्य है या नही। देखिए खोज विवरण (९-८५) (२-५६) (६-२५२) (२६-१२७) (३८-४९) (३५-२५)।

७०. गंगादास (जनगंगा)—इनके दो ग्रथो "तिथिप्रबध" और "दोहावली" के विवरण लिए गए है। ग्रंथो का विषय क्रमशः तिथियो का आध्यात्मिक वर्णन एवं ब्रह्म ज्ञानोपदेश है।

रचना और लिपिकाल अज्ञात है। सभवतः पूर्व रचयिता भी यही है।

७१. गंगाराम—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग में हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ६।

७२. गंजन सिंह कायस्थ—इस रचयिता के "शालिहोत्र प्रकाश" की एक प्रति का विवरण इस बार भो लिया गया है। पिछले खोज विवरण (९-८९) मे इस ग्रंथ का उल्लेख हो गया है।

इसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी विशेष परिचय नही मिलता, परतु उपर्युक्त खोज विवरणो मे इन्हे शिवप्रसाद का पुत्र और संवत् १८४० के लगभग वर्तमान लिखा है।

७३. गजराज—इनकी पिंगल विषय पर लिखी हुई "सुवृहतहार (? सुवृत्तहार) पुस्तक मिली है। पुस्तक का विवरण पहले भी लिया जा चुका है, देखिए खोज विवरण (३–७१)।

रचनाकाल संवत् १९०३ वि० है। लिपिकाल अप्राप्त है।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति द्वारा रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। पिछले खोज-विवरण में इनको बनारसनिवासी बतलाया गया है।

७४. गजेंद्र—खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है। "कोक शास्त्र" नाम से इनकी एक पुस्तक मिली है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का परिचय भी अनुपलब्ध है।

७५. गणराम (ऋषि)—इनकी "सगुनौटी या अकारवल" शकुनविषयक रचना मिली है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल संवत् १९२० है।

रचयिता का भी कोई विशेष परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

७६. गिरिधर—शकुन विषय पर लिखी हुई इनकी "शकुनावती" नामक रचना मिली है। रचना की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही है।

रचयिता का भी परिचय अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

७७. गिरिधरदास—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ३७।

७८. गिरिधर जी—इनकी रची "समर्पण श्लोक गद्यार्थ की टीका" मिली है। रचना में पुष्टिमार्गीय दीक्षा सिद्धातो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता—विद्या विभाग कॉकरोली के सचालक श्री कठमणि शास्त्री के कथनानुसार—कॉकरोली मे स्थित वल्लभ सप्रदाय की तृतीय पीठ के सस्थापक श्री बालकृष्ण जी के पौत्र और श्री द्वारकेश्वर जी के पुत्र थे। ये सवत् १६६२ से सवत् १७१९ तक वर्तमान थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

७९. गिरिधर लाल जी—इनकी दो रचनाएँ (१) "श्री द्वारिकानाथ जी के घर की उत्सवमालिका" और (२) "श्री गिरधरलाल जी के वचनामृत" नाम से मिली है। उक्त रचनाएँ साप्रदायिक है, जिनका सबध वल्लभ सप्रदाय के सिद्धात एव सेवा शृगार प्रणाली से है। दूसरे ग्रंथ के आरभ मे एक सवत् १९३३ दिया है, अतः इसी के लगभग दोनो का रचनाकाल माना जा सकता है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता कॉकरोली निवासी थे। इनके पिता का नाम गो० श्री पुरुषोत्तम जी था। खोज में ये नवोपलब्ध है।

८०. गो० श्री गिरिधरलाल जी—इन्होंने "सर्वोत्तम स्तोत्र" नामक सस्कृत ग्रथ का हिंदी मे पद्यानुवाद किया है। ग्रथ मे श्री वल्लभाचार्य जी के एक सौ आठ नामो का गुणगान है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के पिता का नाम व्रजभूषण था। अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

८१. गिरिवरदास—इनका उल्लेख खोज विवरण (२०–२०) (२३–१२८) और (२६–१४२) मे भी है, जिनके अनुसार ये जगजीवनदास (सतनामी पथ के संस्थापक) के पौत्र, कोटवा (बाराबकी) निवासी और संवत् १८४८ के लगभग वर्तमान थे। इस बार इनके कुछ "शब्द" मिले है, जिनमे निर्गुण सिद्धातानुसार भक्ति एव ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल अह्लाददास कृत 'ज्ञान चेटक' के आधार पर, जो इस ग्रथ के साथ एक ही हस्तलेख में है, सवत् १९१६ है।

रचयिता ने प्रस्तुत 'शब्दो' मे भी 'जगजीवनदास' जी का उल्लेख साई के रूप में किया है—

८२. गुमानकवि—इनकी "रुक्मिणी मगल" नामक रचना मिली है। जिसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही। प्रति मे रचना का नाम भी नही दिया है। विषय को देखने से उपर्युक्त नाम रख दिया है।

रचयिता का भी कोई विशेष परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरणो (६–४४) (५–२३) (१२–६८) (४१–४६०) (२३–१४१) (२६–१५७) मे इस नाम के दो रचयिताओं के उल्लेख है, पर पता नही उनमे से ये कोई एक है या नही।

८३. गुरु गोविंद (?)—इनके नाम पर "ब्रह्मांडलीला" नाम की रचना मिली है। रचना मे एक स्थान पर 'सम १५५६' लिखा मिलता है, जिसको यदि सवत् १५५६ माने तो रचयिता के समय से मेल नही खाता। अतः यह रचना काल नही हो सकता। लिपिकाल भी अज्ञात है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है। इससे रचयिता के नाम का कोई निश्चित पता नही चलता। यदि ये गुरु गोबिद है तो प्रसिद्ध गुरु गोविद सिह ही है या उनसे भिन्न, प्रमाणाभाव मे कुछ नही कहा जा सकता।

८४. गुरुदीन कवि (पांडे)—इनके "शालिहोत्र" की दो प्रतियो के विवरण लिए गए है। ग्रथ मे घोडे की उत्पत्ति, उनके गुण-अवगुण और रोगो के उपचारो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल किसी मे नही है।

रचयिता के सबध मे नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

८५. गुलाम मुहम्मद—इस कवि की एक रचना "प्रेमरमाल" नाम से मिली है, जिसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। विवरण पत्र मे दिए गए ग्रथ के उद्धरणो से रचयिता और रचना के नामो के सबध मे कुछ ज्ञात नही होता। पता नही, अन्वेषक ने इन्हे किस आधार पर लिखा है। रचना सभवतः प्रेम कथानक शैली की है, पर खडित होने से पता नही चलता कि इसमे कौन सी कथा वर्णित है। रचनाकाल, लिपिकाल का भी कोई पता नही चलता।

८६. गोकुल कवि—इस त्रिवर्षी मे इस कवि की "नखशिख" नामक रचना का पता चलता है। ग्रथ मे श्रीकृष्ण के अग प्रत्यग (नख से शिख तक) का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे। इसके अतिरिक्त इनका अन्य कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

८७. गोकुल कायस्थ—पिछली खोज मे इनके चार ग्रथ मिले है, देखिए, खोज विवरण (२३–१२६) (२६–१४३) और (६–६५)। इस बार दो नये ग्रथो—(१) शक्ति प्रभाकर (अद्भुतरामायण) और (२) "शोक विनास" का पता और चला है। प्रथम ग्रथ मे सीता जी द्वारा सहस्रवदन रावण का वध वर्णित है और दूसरे मे आध्यात्मिक विषय का वर्णन है। रचनाकाल दोनो ग्रथो के क्रमशः सवत् १६१३ और १६१२ है तथा लिपिकाल सवत् १६३६ और १६३३ है।

रचयिता बलरामपुर (गोडा) के निवासी थे और वही के राजा दिग्विजय सिंह के आश्रय में रहते थे।

८८. गोकुलनाथ 'गोस्वामी'—ये वल्लभ सप्रदाय के सस्थापक श्री वल्लभाचार्य जी के पौत्र और गोस्वामी श्री विट्ठलनाथ जी के पुत्र थे तथा सवत् १६२५ में वर्तमान थे। इनके कुछ ग्रथ पहले मिल चुके है, देखिए खोज विवरण (२६–१२२) (३२–६५) (३५–२८)। **इस बार निम्नलिखित ग्यारह ग्रंथ और मिले है :—**

(१) **विविध भावना भाषा**—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय, पुष्टिमार्ग के अंतर्गत सेवाभावादि का वर्णन।

(२) **श्री महाप्रभूजी श्री गुसाईं जी को स्वरूप विचार**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय श्री वल्लभाचार्य जी तथा उनके पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी के स्वरूपों का आध्यात्मिक वर्णन।

(३) **श्री आचार्य जी महाप्रभूजी की (प्राकटच) वार्ता द्वादश कुंज भावना**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय श्री वल्लभाचार्य जी के प्राकटच सबंधी आध्यात्मिक, आधिदैविक रहस्यो तथा भगवल्लीलाओं का वर्णन।

(४) **जप को प्रकार**—रचनाकला अज्ञात। लिपिकाल संवत् १९६४ वि०। विषय—वल्लभकुल के भावनानुमार जप तथा पूजा आदि का विधान वर्णन।

(५) **चौरासी वैष्णव की वार्ता**—रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त। विषय—श्री वल्लभाचार्य जी के चौरासी सेवकों की वार्ता का वर्णन।

(६) **चरण चिह्न को भावना**—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल सवत् १९६४ वि०। विषय—श्री राधा जी के चरणचिह्नों का ध्यान तथा उनकी पूजाविधि का वर्णन।

(७) **गोवर्द्धननाथ जी की वार्ता प्रागटच की**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल खंडित संभवत. १९०४ वि०। विषय—श्री गोवर्द्धननाथ जी के प्रकट होने की कठा का वर्णन।

(८) **श्री गुसाईं जी की ब्रज चोरासी कोस की बन यात्रा संवत् १६०० की**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८१३ वि०। विषय—व्रज की चौरासी कोस की यात्रा का वर्णन।

(९) **वैष्णव लक्षण ग्रंथ**—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय—संप्रदाय के लोगों द्वारा पालन करने योग्य नियमों एव शिक्षाओं का वर्णन।

(१०) **नित्य सेवा शृंगार की भावना**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १९५९। विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा प्रकार मे अनुभवादि का वर्णन।

(११) **बत्तीसलक्षण—(भगवदीय वैष्णवो के लक्षण)**—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णवों को पालन करने योग्य बत्तीस लक्षणो का वर्णन।

८६. गोपाल (जन)—इनका "भागवत" ग्रंथ मिला है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल नही है, लिपिकाल सवत् १९०७ है। ग्रंथ द्वारा रचयिता का परिचय नही मिलता, पर ये संभवत पिछले खोज विवरण (००–२८) (२३–१९) (६–१७५) (२६–१२४) (पं० २२–४४) मे आए दादूदयाल जी के शिष्य गोपाल 'जन' है, जो सवत् १६५७ मे वर्तमान थे

९०. गोपाल (जन)—इनकी रचनाएँ, (१) "विजयाष्टक" और (२) "हनुमदष्टक", एक ही हस्तलेख में मिली है। रचनाकाल किसी भी रचना मे नही है। लिपिकाल दोनों का संवत् १८९५ है। प्रथम पुस्तक मे विजया (भग) का गुणगान और दूसरे में हनुमान की स्तुति की गई है।

रचयिता का ग्रथों द्वारा कोई परिचय नही मिलता। परतु ग्रथस्वामी से पता चला कि ये विरोही स्टेशन (जिला मिरजापुर मे विध्याचल से एक स्टेशन पश्चिम) से ग्रथस्वामी के बाबा प० हरिहर जी के पास आकर रहने लगे थे। उनके कोई न था। हनुमान जीके बड़े भक्त थे। एक दिन बिना पूजा किए कचहरी चले गए तो हनुमान जी रुष्ट हो गए। इससे उन्हे वात रोग हो गया था।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

९१. गोपालदास (स्वर्णकार)—इन्होंने "गोवर्द्धन चरित्र" की रचना की, जिसमें

भागवत पुराण के आधार पर भगवान् श्रीकृष्ण के गोवर्द्धन चरित्र का वर्णन है । रचनाकाल, लिपिकाल दोनो अज्ञात है ।

ग्रंथ की पुष्पिका के अनुसार रचयिता जाति के स्वर्णकार और किसी गंगाविष्णु के शिष्य थे । अन्य वृत्त अप्राप्त है । खोज में ये नए मिले है ।

६२. गोपालदास—ये खोज मे नए मिले है । "गुरु हरि भक्ति प्रकाश" और "गुरुभक्ति चंद्रिका" नाम से इनके दो ग्रंथो के विवरण लिए गए है । पहले मे गुरुभक्ति का वर्णन है और दूसरे में इन्होने अपने गुरु गो० श्री ब्रजभूषण (सभवत. वल्लभ सप्रदायी) जी का वर्णन किया है । रचना काल और लिपिकाल दोनो के अज्ञात है ।

रचयिता का परिचय किसी ग्रथ मे नही मिलता ।

६३. गोपिकालंकार जी (गोस्वामी)—इनकी "श्रीनाथ जी की सेवाविधि" नामक रचना मिली है, जिसमे श्रीनाथद्वारा मे स्थित श्रीनाथ जी की सेवा विधि का वर्णन है । ग्रंथ की पुष्पिका के अनुसार ये रचयिता श्री वल्लभाचार्य के वश में उत्पन्न श्री मथुरानाथ जी के पौत्र और श्री द्वारकेश जी के पुत्र थे । इनके एक पुरखे श्री वल्लभ जी भी थे जो 'काका वल्लभ' जी के नाम से प्रसिद्ध हुए :—

"श्री वल्लभाचार्य के वश मे प्रगट भए **काका श्री वल्लभ जी** तिनके मुख्य वस मे प्रकट भए श्री मथुरानाथ जी सुत श्री द्वारिकेस जी महासय सुत श्री गोपिकालकार जी ने कृत **शुभमस्तु**"

अन्य परिचय नही मिलता । प्रस्तुत ग्रंथ ब्रजभाषा गद्य मे है । रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं । खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है ।

६४. गोविंद या गोविंददास—इस त्रिवर्षी मे इनके भक्तिविषयक कुछ 'कवित्त' मिले है । कवित्तो की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल के उल्लेख नही है । रचयिता के संबंध में भी कुछ ज्ञात नही होता । परतु ग्रथस्वामी (श्री नृसिह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीर जहाँपुर, पो०—मिडारा, जिला—इलाहाबाद) के कथनानुसार रचयिता उन्ही के पूर्वजो में से कोई एक थे । खोज में रचयिता का पता प्रथम बार लगा है ।

६५. गोविंद—इन्होने चार रचनाओ—(१) गोवर्द्धन लीला, (२) उत्सव के प्रकार, (३) वैष्णवों के नित्यकर्म और (४) गोवर्धन लीला का सग्रह किया है । उक्त रचनाएँ सूरदास आदि की रची हुई है, जिनमे प्रायः वल्लभ संप्रदायानुसार भक्ति, उत्सवो के प्रकार तथा नियमों का वर्णन है । रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही चलता । रचयिता का भी वृत्त उपलब्ध नही ।

प्रस्तुत रचनाएँ गद्य-पद्य दोनों मे है । रचयिता खोज में नवोपलब्ध हैं ।

६६. गोविंददास—इनके कुछ शब्द या पद "शब्द विष्णपद" नाम से मिले हैं । शब्दों मे भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है । इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है । रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है । रचयिता का भी कोई परिचय नही मिलता । संभवत ये (३२–६६) वाले गोविंद-दास है । उनकी रचनाशैली भी इन्ही जैसी है । दोनो 'सतगुरु' का उल्लेख करते है, यथा :—

'सतगुरु' दास आस चरनन्ह की मरन जीवन दोउ शुक्ता ॥२॥
—प्रस्तुत रचयिता

गोविंददासु दया 'सतगुरु' की आपु आपु सौं खेलौ ॥
—पिछले रचयिता

६७. गोविंद पंडित (काश्मीरी)—ये "मुमोक्षशास्त्र" के रचयिता हैं, जिसमें मोक्ष विषयक बातों का वर्णन है । ग्रथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल नही है, लिपिकाल संवत् १६२२ दिया है । संभवतः यह मूल प्रति है ।

रचयिता के संबंध में केवल इतना ही पता चलता है कि ये काश्मीरी थे। खोज में ये नये मिले हैं।

९८. गोविंद स्वामी (अष्टछाप)—ये सुप्रसिद्ध अष्टछाप के कवि हैं। पिछली बार इनके 'पद' मिल चुके है। देखिए खोज विवरण (४१–६०) (३२–६७)। इस बार भी 'पदों' की दो प्रतियाँ तथा "कीर्तन सग्रह" और "श्रीनाथ जी के शृगार के वस्त्रन के नोरंग" नामक रचनाएँ और मिली है। पिछली दो रचनाएँ इनके 'पदो' के फुटकर संग्रह मात्र हैं। विषय सब रचनाओं का कृष्णभक्ति है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल केवल पिछली दो ग्रंथों की प्रतियो मे दिए है, जो क्रमश. सवत् १८९३ और सवत् १९३५ है।

रचयिता के विषय मे नयी बात कुछ नही मिली।

९९. गोविंदलाल—इनके "कलिजुग के कवित्त" पहले मिल चुके है, देखिए खोज विवरण (२९–१२९)। इस बार भी उक्त ग्रथ को एक प्रति मिली है, पर उसमे न तो रचनाकाल का उल्लेख पाया जाता है और न लिपिकाल का ही।

रचयिता के सबध मे भी कुछ पता नही चला। इनके रचयिता होने में भी संदेह है।

१००. गोरखनाथ—इस त्रिवर्षी मे इनके नाम पर निम्नलिखित ग्रथ और मिले हैं :—

(१) **बेद गोरखनाथ का**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८५६ वि०, विषय, तत्व ज्ञानोपदेश।

(२) **गोरख ग्रंथ**—ग्रथांत मे हाशिए पर १४१३ लिखा है जिसको संवत् अनुमित किया गया है। लिपिकाल दिया नही, विषय, ज्ञानोपदेश।

(३) **गोरखबोध**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८५६ है। विषय, तत्वज्ञानोपदेश।

(४) **गोरख कुंडली**—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल सवत् १८५५। विषय, योग।

(५) **सूक्ष्मवेद**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८३७। विषय, ब्रह्मज्ञानोपदेश।

रचयिता के सबध मे विशेष कुछ ज्ञान नही हुआ।

१०१. घनदेव कान्यकुब्ज (वैष्णव)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग में हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या १०।

१०२. घनश्याम (चतुर्भुज मिश्रात्मज)—इन्होने सवत् १७०० मे "रागमाला" की रचना की। ग्रथ की एक प्रति का इस बार विवरण लिया गया है। इसमे हनुमत सगीतशास्त्र के अनुसार सगीत का वर्णन है। विषय की दृष्टि से ग्रथ उपादेय है। लिपिकाल का कुछ पता नही।

ग्रंथ के अनुसार रचयिता आगरा के राजघाट स्थान पर रहते थे। पिता का नाम चतुर्भुज मिश्र और गुरु का नाम शिरोमनि मिश्र था। आश्रयदाता कोई कासिम थे :—

"प्रथम सरसुती देवी गणेश मनाई के। मिश्र शिरोमनि जानि सुबुध गुरु पाइके॥
कासिम जानि सुजान कृपा कवि पर करी। 'रागमाला' भाषा करिबे को चित धरी॥
स्याम् आगरे नगर को राजघाट हे ठोर। पुत्र चतुरभुज मिश्र घट वापिनि की पोरि॥
संवत् सत्रह सै बरस तापर बीते होइ। फागुन सुदि तिथि त्रोदसी सुनहु जुगुन जन लोइ॥'

खोज में नए मिले है।

१०३. घनश्याम 'द्विज'—इन्होने "वैद्य जीवन" नाम से सस्कृत के सुप्रसिद्ध वैद्यक ग्रंथ "लोलंबराज" का अनुवाद किया है। ग्रंथ का रचनाकाल संवत् १९१४ है और लिपिकाल संवत् १९१७।

रचयिता का स्थान आजमगढ में गौरीशंकर के निकट था। ये रामानुजी संप्रदाय के अनुयायी थे। खोज में ये नवोपलब्ध है।

१०४. घनश्याम या स्यामदास—इनकी "प्रहलाद लीला" मिली है। ग्रंथ का रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८०२ दिया है।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। इनका पता प्रथम बार लगा है।

१०५. घनश्यामदास—"यमुना लहरी" नाम की छोटी सी रचना इनके नाम से मिली है, जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता का भी कोई विशेष परिचय नही मिलता। अंतिम पद से ये गोवर्धन (व्रज) के रहनेवाले विदित होते है। अन्वेषक ने पता नही किस आधार पर इनको भरतपुरवासी लिखा है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१०६. चंद (गुसाईं)—इनकी "अरिल्ल" नामक रचना प्राप्त हुई है, जिसमे गोपी-उद्धव संवाद वर्णित है। पिछले खोज विवरण (६–१९) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख हो चुका है। उसके अनुसार ये बुंदेलखड के निवासी थे। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे न तो रचयिता का कोई परिचय दिया है और न रचनाकाल का ही उल्लेख है। लिपिकाल सवत् १८१८ है।

१०७. चंद परतिष—इस त्रिवर्षी मे इस रचयिता की "बूढा रासो" नामक डिंगल भाषा की रचना मिली है, जिसकी एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचना मे वृद्ध विवाह के दोष वर्णन किए गए है।

रचनाकाल सवत् १८३२ और लिपिकाल सवत् १९१४ है। रचयिता का वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१०८. चक्रपाणि—ये "भाषा लीलावती" के रचयिता है। पुस्तक मे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नहीं है। यह सस्कृत लीलावती का अनुवाद है। विवरण मे दिए गए उद्धरणो से रचयिता के नाम का पता नही चलता, पर अन्वेषक का कहना है कि पुस्तक मे 'चक्रपाणि' का नाम कही कही आता है।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१०९. चतुरराय—इनकी "गढपथैना रासो" नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है। ग्रथ मे भरतपुर के अतर्गत 'गढ पथैना' पर अली सहादत खॉ के आक्रमण का वर्णन है। विवरण पत्र मे दिए गए उद्धरणो द्वारा रचयिता के नाम का पता नही लगता। उसका अन्य वृत्त भी अप्राप्त है। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है।

प्रस्तुत ग्रंथ ऐतिहासिक महत्व रखता है, पर यह खडित है। इसके आरभ के सख्या चालीस और अंत के सख्या सैतालीस के पश्चात् के पत्रे नष्ट हो गए है। रचयिता का पता पहली बार लगा है।

११०. चतुर्भुजदास कायस्थ—चतुर्भुजदास कायस्थ कृत "मधुमालतीकथा" की एक प्रति इस बार भी प्राप्त हुई है। रचना में मधु और मालती की प्रेम-कथा (भारतीय पद्धति पर) वर्णित है। पिछले खोज विवरण (२–४४) (प० २२–१९) मे इसका उल्लेख है।

ग्रथ पूर्ण होते हुए भी इसके द्वारा रचयिता का कोई परिचय नही मिलता और न इसमें रचनाकाल का ही उल्लेख है। लिपिकाल सवत् १८८४ वि० है। उक्त खोज विवरणों के अनुसार रचयिता निगम जाति के कायस्थ थे और सभवतः राजस्थान की ओर के रहनेवाले थे।

१११. चतुर्भुज मिश्र—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ८।

११२. चतुर्भुजदास (अष्टछाप)—इनकी नवीन रचना, "मृग कपोत की लीला" नाम से मिली है, जिसमे एक मृग और एक कपोत की कथा वर्णित है। मृग को एक व्याघ्र ने घेरकर मारना चाहा; परतु कपोत के उपदेश से एव हरिनाम स्मरण करने से मृग बच गया और व्याध सर्प के काटने से मर गया।

रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८८८ वि० है।

रचयिता के "कीर्त्तनों" की दो खडित प्रतियों के भी विवरण लिए गए है, जिनका उल्लेख खोज विवरण (३२-४०) मे हो चुका है। 'मृग कपोत की लीला' में रचयिता ने श्री वल्लभ के गुण गाए हैं। अतः इसी आधार पर इन्हे वल्लभसप्रदायानुयायी सुप्रसिद्ध 'अष्टछाप' कवि माना गया है। अन्य वृत्त अप्राप्त है।

११३. चरपटनाथ—इनकी दो रचनाओ—'चरपटिका पत्रिका' और "सबदी"—के विवरण लिए गए है। प्रथम रचना का विषय वैद्यक है, जिसमें राजरोग और अठारह कुष्ठो के उपचारो का वर्णन है। इसमें रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल ग्रंथस्वामी के कथनानुसार संवत् १९३२ है; क्योकि उन्होने ही ग्रथ की प्रतिलिपि की है। रचना पर कई स्थलो पर गोरखनाथ का भी नाम आता है।

दूसरी रचना का विषय ज्ञानोपदेश, समाज सुधार और धर्म सुधार है। इसमें पाखंडी तथा धूर्त जोगियों, संन्यासियों, ज्ञानियो और गृहस्थो को फटकारा गया है। इसकी भाषा प्राचीन है। अतः इस दृष्टि से यह महत्व की है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के सबध मे इन रचनाओ द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये गोरखनाथ के समकालीन अथवा उनके शिष्य थे—

"आई भी छोडिये लेन भि जाइये कहे गोरखनाथ पूता विचारि विचारि षाईये ॥४६॥ (सबदी) जनश्रुति से भी प्रसिद्ध है कि ये गोरखनाथ के शिष्य थे। अन्य कोई परिचय नहीं मिलता। इनका उल्लेख खोज विवरण (४१-५६) मे भी है।

'सबदियो' से प्रकट होता है कि रचयिता के समय मे धर्म के नाम पर समाज में अनेक तरह के अनाचार और दुराचार फैल रहे थे। यदि यह कहा जाय कि आर्य जाति का उस समय तक बहुत ही पतन हो गया था तो अत्युक्ति न होगी। नामधारी जोगियो और संन्यासियों ने तो अंधेर मचा रखा था। क्रियाहीन ज्ञानियो, दुराचारी गृहस्थो और कुलटा स्त्रियो ने भी उनका साथ दिया। गोरखनाथ और उनके अनुयायियो ने इस अनैतिकता को दूर करने का घोर प्रयत्न किया।

११४. चूड़ामणि—इनकी "नागलीला" नामक रचना की एक प्रति का विवरण लिया गया है। रचना का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल अप्राप्त है, लिपिकाल संवत् १८६० वि० है। ग्रंथ पूर्ण है, फिर भी रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरण (५-७०) मे उल्लिखित चूड़ामणि से ये भिन्न हैं या अभिन्न, कहा नहीं जा सकता।

११५. छबिनाथ—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग में संख्या ६।

११६. छितिपाल—खोज में इस रचयिता का पता प्रथम बार लगा है। 'नखशिख' नाम की इनकी एक प्रौढ साहित्यिक कृति मिली है जिसके द्वारा इनकी प्रतिभा का अच्छा परिचय मिलता है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता।

११७. छंल—इनकी "कवित्त" नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है, जिसमें

केवल दो ही छंद हैं। उक्त छंदों में राजाराम कायस्थ और फतेह मुहंमद के यश का वर्णन किया गया है। शेख मुहंमद द्वारा सिगड़ीगढ़ जीतने का भी उल्लेख है। रचयिता संभवतः जौनपुर के रहनेवाले थे :—

"करन करतूति रीति प्रीति धर्म द्वार जाके जौरपुर माह छल छहु रितु देखियै ॥"

शेख मुहंमद और सिगड़ीगढ़ के संबध मे और कुछ ज्ञात नही होता। रचयिता का परिचय अप्राप्त है। रचना के साथ काल लिपिकाल भी अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

११८. जगजीवनदास—इनके दो ग्रथो—"महाप्रलय और ज्ञानप्रकाश" के विवरण लिए गए है। दोनो ग्रथो मे सतमतानुसार ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल दोनो प्रतियो का सवत् १९२३ वि० है।

रचयिता का उल्लेख खोज विवरण (२९–१६३ क्यू, आर) मे भी हो चुका है। ये सतनामी सप्रदाय के सस्थापक प्रसिद्ध जगजीवनदास है। इनके सबध मे और कोई नई बात ज्ञात नही हुई।

११९. जगतानंद—इस त्रिवर्षी मे इनके तीन ग्रथ—(१) "उपखाने (उपाख्यान) सहित दशम की लीला, (२) दोहासाखी और (३) श्री वल्लभाचार्य जी की वशावली तथा स्वरूप वर्णन मिलते है। ग्रथो का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है :—

(१) "उपखाने" (उपाख्यान) सहित दशम की लीला—इसमे श्रीमद्भागवत दशम स्कंध का सक्षिप्त वर्णन है। रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात। परतु इसका उल्लेख खोज विवरण (१७–८० बी) मे है, जिसके अनुसार रचनाकाल सवत् १७३१ वि० है।

(२) दोहा साखी—इसमें वल्लभाचार्य का गुणगान किया गया है और उनके प्रति भक्ति प्रदर्शित की गई है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल स० १९१४ वि० है।

(३) वल्लभाचार्य की वंशावली तथा स्वरूपवर्णन—इसमे श्री वल्लभाचार्य की वंशावली वर्णित है। रचनकाल सवत् १७८१ वि० है, लिपिकाल दिया नही।

इन ग्रथो के द्वारा रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि वे वल्लभ संप्रदाय के थे।

१२०. जगदीश 'जन'—इनकी "इकादसि कथा" नामक रचना की एक प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रंथ मे एकादशी व्रत का माहात्म्य वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल संवत् १८४६ वि० दिया है। रचयिता का कोई परिचय नही मिलता।

खोज विवरण (१२–७८) मे आए 'जगत रस रंजन' के रचयिता जगदीश से ये भिन्न जान पड़ते है। अतः खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१२१. जगदीश—इनकी "जगतरसरंजन" नामक रचना मिली है, जिसमें नायिका-भेद और रसादि का वर्णन है। रचनाकाल १८६२ वि० है, लिपिकाल दिया नही। रचयिता जयपुर नरेश सवाई जगतसिह के आश्रित और श्रीकृष्ण भट्ट उपनाम 'कलानिधि' के पुत्र थे। खोज विवरण (१२–७८) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख हो चुका है। अन्य परिचय अप्राप्त है।

१२२. जगनकवि—ये "जगन बत्तीसी" नामक रचना के रचयिता है। खोज में इनका पता पहली बार लगा है। पुस्तक मे बत्तीस छदो मे राम-कथा का वर्णन है। रचनाकाल लिपि-काल अज्ञात है। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नही मिलता। संभवतः इनके गुरु का नाम छल था—

"एकचित ह्वै के गुर छल कौ प्रनाम करूँ
जाके गुन ऐसे जैसे गुनवधि छीर के ॥"

१२३. जगन्नाथ—इनके रचे "सुदरकांड" नामक ग्रथ की खडित प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे राम-कथा वर्णित है। रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय अप्राप्त है। खोज विवरण (२९–१६४ ए) (२६–१६४ ए) (६।–१३१) मे आए 'जन जगन्नाथ', 'जगन्नाथ दास' या 'जन अनाथ' से ये भिन्न है या अभिन्न, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

१२४. जटमल नाहर—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ३८।

१२५. जयशंकर (सहस्र अवदीच)—इस त्रिवर्षी मे "व्यजनप्रकार" (पहला भाग) नामक रचना की एक छपी प्रति का विवरण लिया गया है। पुस्तक मे पाक विद्या का वर्णन है।

मुद्रणकाल सवत् १९२५ वि० है। अत. रचना इसी के लगभग हुई होगी। रचयिता आगरा निवासी थे। प० वशीधर (खोज विवरण २९–२९) की प्रेरणा और प्रातीय गवर्नर की आज्ञा तथा एम० केमसन साहब, डाइरेक्टर आंव पब्लिक इन्स्ट्रक्शन की इच्छा से इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की।

अन्य परिचय अप्राप्त है। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

१२६. जान कवि—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या १०।

१२७. मिरजा मुहंमद जान—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। अतः देखिए, भूमिका भाग सख्या मे ११।

१२८. जानकीदास—इनकी "शत्रुवश कुठार" नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है। रचना मे दुर्गा और हनुमान् की स्तुति की गई है।

रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९०८ वि० है। रचयिता का वृत्त अप्राप्त है। ग्रंथ स्वामी के कथनानुसार ये "बरोसा ग्राम" (सुलतानपुर) के रहनवाले ब्राह्मण थे, जो बाद को साधु हो गए। ये अठारहवी सदी मे वर्तमान थे।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१२९. जीराम—इस त्रिवर्षी मे इनके सीता स्वयंवर विषयक कुछ पद "पदस्वयवर" के नाम से मिले है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। प्रस्तुत पद ख्याल और लावनी की शैली पर रचे गए है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नही मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध है।

१३०. जीवनदास—इनकी "नारायण लीला" नामक रचना की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचना मे नारायण के समस्त अवतारो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी वृत्त अनुपलब्ध है।

एक जीवनदास (गाजीपुर निवासी) का उल्लेख खोज विवरण (९–१०५) मे हर-सहाय के गुरु के रूप में हुआ है। परतु उनसे इनका कोई साम्य नही जान पडता। अतः खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१३१. जीवनराम—इनकी "ज्ञानचद्रिका" की एक खडित प्रति मिली है। ग्रथ में नासकेत कथा का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही चलता। रचयिता का भी वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१३२. जुगतानंद—जुगतानद कृत "आठ प्रहर मूलचेत प्रसग" नामक अपूर्ण ग्रंथ मिला है। ग्रंथ मे आठ प्रहरो के कृत्यो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चला। रचयिता के सबध मे इतना ही ज्ञात होता है कि ये स्वामी चरणदास के शिष्य थे।

पिछले खोज विवरण (४१–८३ क, ख) मे इनका उल्लेख हो चुका है, उसके अनुसार ये सवत् १८२४ मे वर्तमान थे।

१३३. जैकृष्णदास—इनकी "ढाढियादान" नामक रचना का विवरण लिया गया है। रचना मे ढाढी द्वारा श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव का उत्तम वर्णन है।

रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के सबध मे भी नाम के अतिरिक्त और कुछ ज्ञात नही होता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१३४. झामदास—इस विवर्णी मे इनके "रामचरित रामार्णव" नामक ग्रथ की दो खडित प्रतियो और "ज्वराकुश" की तीन खडित प्रतियो के विवरण लिए गए है।

(१) **रामार्णव**—इसकी एक प्रति मे द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पचम अर्णव है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। दूसरी प्रति मे बाल और सुदर काड है। रचनाकाल सवत् १८१८ वि० है और लिपिकाल सवत् १८६५ वि०। इस प्रकार लका और उत्तरकाड को छोड़ कर अन्य सभी काड इन दो प्रतियो म आ गए है।

(२) **ज्वरांकुश**—इसमे हनूमान् जी की स्तुति की गई है। खंडित होने के कारण रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चला।

रामार्णव की रचना विध्याचल घाट (मिर्जापुर) मे हुई थी। रचयिता साधु थे। अन्य परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरणो (१–२१) (२०–७२) २३–१९२) (२६–२०८ ए, बी) मे भी इनका उल्लेख हुआ है, जिनमे इनके 'पिगल रामायण' और प्रस्तुत 'रामायण' को एक ही माना गया है, पर यह भूल है। ये ग्रथ अलग अलग है।

१३५. टोडरमल कायस्थ—टोडरमल की "दपति प्रत्युत्तर" नाम से छोटी सी पुस्तक मिली है। पुस्तक मे स्त्री और पुरुष के प्रश्नोत्तर द्वारा भारतवर्ष के समस्त भागो मे उत्पन्न होनेवाली वस्तुओ का वर्णन है।

रचनाकाल सवत् १८६७ वि० है, लिपिकाल दिया नही। रचयिता जाति के कायस्थ और जयपुर राज्य के अतर्गत सुवसुवा के रहनेवाले थे। उस समय जयपुरनरेश जगत सिह थे :—

"टोडरमल कायथ प्रगट बसतु सुवसुवा बास॥
जगतसिह जैपुर नृपति राज सुषद परकास॥"

खोज विवरण (००–१३४) (२६–४८२) (२३–४२९ ए, बी, सी) में भी एक टोडरमल का उल्लेख है पर उनसे इनका कोई साम्य है कि नही, कहा नही जा सकता।

१३६. डूंगरसी साधु—इनकी "लालदास की कथा" नामक ग्रथ की एक प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रंथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। कथा का सक्षेप इस प्रकार है :—

लालदास का जन्म सवत् १५५७ (? पदरह से सतावणो) मे हुआ था। पिता का नाम चाँदमल और माता का नाम समदा था। अलवर रियासत के धौलीप्रव गॉव के निवासी थे। जन्म से ही अलौकिक गुण सपन्न थे और इनकी कृपा से कितने ही पापियो का तरणतारण हुआ। इनकी शिष्य परपरा इस प्रकार है :—

लालदास
 वेगादास
  मारूदास
   निहालदास
    हीरादास
     ठाकरदास
      ज्ञानदास
       मलूकदास

(सं० १६५५ में इन्हीं के कहने से प्रस्तुत प्रति लिखी गई।)

रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १६५५ है। प्रस्तुत ग्रंथ में रचयिता का इतना ही पता चलता है कि ये पुरपट्टन के रहनेवाले थे। नाम के साथ 'साधु' शब्द जुड़ने से ये विरक्त थे, ऐसा प्रतीत होता है।

संभवतः रसिकलाल कृत 'भाषा करुणानंद' के लिपिकर्ता यही है, देखिए प्रस्तुत विवरण में संख्या (३३०)। उक्त ग्रंथ की प्रतिलिपि संवत् १८१७ में हुई थी, अतः इसी के लगभग इनका वर्तमान होना निश्चित होता है।

१३७. तामसन साहब—रचयिता का उल्लेख भूमिका भाग में हो गया है, देखिए, भूमिका भाग में संख्या १२।

१३८. ताराचंद, चेतनचंद या चेतनिचंद—इस बार इनकी "शालिहोत्र" की दो प्रतियाँ और मिली है। पहले इस ग्रंथ का उल्लेख खोज विवरण (६–८६, २३–७७ ए, बी, २६–७०; ३२–२१८ ए) में हो चुका है। इसका दूसरा नाम "अश्वविनोद" भी है। इसकी प्रस्तुत प्रतियों में जो रचनाकाल है, वह उक्त विवरणों में आई प्रतियों में उल्लिखित रचनाकाल से नहीं मिलता। इसीलिए इनका उल्लेख प्रस्तुत विवरण में पुनः किया जा रहा है। इन प्रतियों में रचनाकाल संवत् १६१६ दिया है :—

"संवत् सोरह संए आधीका चारी चौगुनो जान।
ग्रंथ कहो कुसलेस हित रछक श्री भगवान॥६३॥"
(प्रथम प्रति)

संवत षोन सं अधीक चारी चौगुनी जान।
ग्रंथ कहो कुसलेस हित रछक श्री भगवान"॥
(दूसरी प्रति)

दूसरी प्रति में 'सोरह' वाची शब्द नहीं। शेष प्रथम प्रति के तुल्य ही है। अतः दोनों के अनुसार रचनाकाल संवत् १६१६ होने में कोई तात्विक अंतर नहीं पड़ता। पिछली प्रतियों का रचनाकाल खोज विवरण (२३–७७) के अनुसार संवत् १६२८ निश्चित किया गया है :—

संवत् सोरह सौ अधिक वार चौगुने आन। ग्रंथ कह्यौ कुशलेश हित रक्षक श्री भगवान॥
मास फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया शुभ तिथि नाम। चेतनचंद भाषियत गुरु को कियो प्रनाम॥"

यहाँ 'वार चौगुने' का तात्पर्य स्पष्ट २८ है। 'वार' और 'चार' शब्दों ने किस प्रकार अंतर उपस्थित कर दिया है, ध्यान देने योग्य है। प्राचीन काल की गणनाओं में सामान्यतः इसी प्रकार की कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाया करती है। अस्तु। संवत् १६२८ वाली प्रति में मास और तिथि के साथ यदि वार भी दिया गया होता तो गणना से संवत् निकाला जा सकता था; परंतु ऐसा नहीं किया गया। अतः इस संबंध में कुछ अधिक नहीं कहा जा सकता। फिर भी प्रस्तुत प्रतियों का रचनाकाल विचारणीय है। इनमें से किसी में भी 'वार' शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है। वार शब्द प्रयुक्त करने वाली केवल पिछली एक प्रति है। दो प्रतियों में जो इस बार मिली है 'वार' के स्थान पर 'चार' है जो ठीक जान पड़ता है। अतएव रचनाकाल सं० १६१६ होने की संभावना अधिक है। लिपिकाल दूसरी प्रति में दिया है जो संवत् १६३० है।

रचयिता कान्यकुब्ज ब्राह्मण और गोपीनाथ के पुत्र थे। इंद्रजीत, लक्ष्मण (प्रथम प्रति में सिधिमन) और जदुराई इनके भाई कहे गए है। राजा शुभकरन के पुत्र कुशल सिह (कुशलेश) के ये आश्रित थे।

१३९. ताराचंद—इनकी "तत्व उपदेश या पोथी ज्ञान गोष्ठी" नामक रचना की एक **खंडित प्रति मिली है। ग्रंथ में तत्त्वज्ञान का उपदेश वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपि-**

काल संवत् १८१२ वि० दिया है। रचयिता जाति के कायस्थ, पितंबर के पुत्र और रामचंद्र के शिष्य थे। इनका जन्मवास वराहिम नगर था और मूल ग्राम भोजपुर। संभवतः वराहिम-नगर मे उस समय खेड़वाल शासन था :—

"पिता पितंबर नाम षेडवाल शाशन कहै।
जन्म वास ता धाम नगर वराहिम महम ढिग॥
ते पूरन जोगेश रामचंद शत गुरु गए।
:o: :o: :o:
श्रीवासतव सोइ काएथ दुशरी पंक्ति के।
साल होत्र पद होइ मूलग्राम सोई भोजपुर॥"

खोज में रचयिता नवोपलब्ध है।

१४०. ताहिर—इनके दो ग्रथ—"अद्भुत विलास" और "मुक्ति विलास (हठ प्रदीपिका)" मिले है, जिनका विषय क्रमशः वशीकरण और हठयोग है। रचनाकाल केवल प्रथम ग्रथ मे १६५५ संवत् का अंत समय उल्लिखित है :—

"संवत् सोले सौ गने॥ और पचपन में राष॥
अंतकाल गिनि लीजिये॥ वेद भेद सब भाष॥"

लिपिकाल किसी मे नही है। रचयिता के गुरु का नाम अहमद था। अन्य वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरण (६–३१६) (३२–२) में उल्लिखित ताहिर यही है। इन विवरणों के अनुसार ये आगरे के निवासी थे।

१४१. गो० तुलसीदास—इस बार इनकी "रामायण" की पाँच प्रतियाँ मिली हैं। इनके अतिरिक्त "तुलसी सतसई या राम सतसई" और "सर्वांग परिमोचन" ग्रंथों के भी विवरण लिए गए है।

"रामायण" की प्रतियाँ प्राचीन है, "तुलसी सतसई" मे रचनाकाल संवत् १५४२ दिया है और "सर्वांग परिमोचन" नई रचना है। अतः इन दृष्टियो से ये महत्व की है। रामायण की प्रतियों मे लिपिकाल निम्नलिखित प्रकार से है :—

(१)	रामायण	(बालकांड)	लिपिकाल	संवत्	१७४६ वि०।
(२)	,,	(अयोध्याकांड)	,,	,,	१७७७ वि०।
(३)	,,		,,	,,	१७५२ वि०।
(४)	,,		,,	,,	१७७७ वि०।
(५)	,,		,,	,,	१७८३ वि०।

"तुलसी सतसई" मे रचनाकाल इस प्रकार है :—

२ ४ ५ १
"अहि रसना थन धेनु सर गनपति दिन गुरुवार।
माधव सित सिय जन्म तिथि सतसैया अवतार॥"

इससे संवत् १५४२ आता है, जो रचयिता के जीवनकाल से मेल नही खाता। ऐसा जान पड़ता है कि दोहे मे "रस" के बदले लिपिकर्त्ता के हस्तदोष से 'सर' हो गया। 'रस' मानने से रचना काल संवत् १६४२ होता है जो सगतिपूर्ण है।

सर्वांग परिमोचम—इसका पता प्रथम बार ही लगा है। पिछले किसी खोज विवरण में भी इसका उल्लेख नही मिलता। इसमे समस्त शरीर के रोग निवारणार्थ हनुमान जी की स्तुति की गई है। रचनाकाल अविदित है। लिपिकाल संवत् १८७४ वि० दिया है। रचयिता के सबंध मे और विशेष विवरण नही मिलता।

१४२. तुलसीदास—इस बार इनके दो ग्रंथो—"बानी" और "बृहस्पति कांड या रत्नसागर ज्योतिष" के विवरण फिर से लिए गए है। प्रथम ग्रथ का विषय निरगुन मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश है। दूसरे का सबध ज्योतिष से है, जिसमे बृहस्पति की द्वादश राशियों का फलाफल वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख किसी मे नही दिया है। ग्रथो का उल्लेख क्रमानुसार खोज विवरण (६–३२३ आई) और (३–३०) मे हो चुका है।

रचयिता के सबंध मे इतना ही पता चलता है कि ये सुप्रसिद्ध महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी से भिन्न निरगुन मतानुयायी कोई सत थे।

१४३. तुलसीदास—प्रस्तुत रचयिता के नाम पर निम्नलिखित तीन ग्रथो के विवरण लिए गए है :—

(१) **ज्ञानबारामासा**—इसकी दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

(२) **रामजन्म**—इसमे रामचद्र जी के जन्म और विवाह तक की कथा का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६२७ वि० दिया है।

(३) **भरतविलाप**—इसमे भरत का विलाप तथा चित्रकूट मे राम से उनकी भेंट का सरस वर्णन है। इसकी तीन प्रतियाँ उपलब्ध हुई है। रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख किसी मे नही। यह रचना विवादग्रस्त है। इसमे तथा ईसरदास या ईश्वरदास कृत 'भरत विलाप' मे, जिसका उल्लेख प्रस्तुत विवरण मे इससे पूर्व सख्या (२०) पर हो चुका है, साम्य है। प्रस्तुत तीनो रचनाएँ रामचरित्र से सबधित होने के कारण एक ही रचयिता की मानी गई है, जो पिछले खोज विवरण मे आए इस नाम के रचयिताओ से भिन्न है। इनका वृत्त उपलब्ध नही है।

१४४. तेज कवि—इनकी कवित्त सवैयो में रची गई "भ्रमर गीत" नामक रचना की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे गोपी-उद्धव सवाद वर्णित है। इसमे जहाँ तहाँ कहावतो के भी प्रयोग है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचना के नाम का उल्लेख नही है। विषय के अनुसार नाम रख दिया गया है। रचयिता का भी कोई वृत्त नही मिलता।

खोज विवरण (४१–६०) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख है। उक्त खोज विवरण की प्रति और प्रस्तुत प्रति एक ही है तथा एक ही स्थान की है।

१४५. त्रिलोक सिह—'राजनीति के दोहा' नाम से इनका ग्रथ मिला है, जिसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। पुस्तक की प्रस्तुत प्रति मे समस्त एक सौ सोलह (११६) दोहे है।

पिछले खोज विवरण (४१–४३) मे "राजनीति चद्रिका" के साथ इनका उल्लेख हो चुका है। 'राजनीति चद्रिका' और 'राजनीति के दोहे' दोनो एक ही ग्रथ है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है। 'राजनीति चद्रिका' मे विषय से सबधित २०२ दोहे है। इनके अतिरिक्त दो दोहे और एक छद और दिए है जिनमे ग्रथ का उपसहार किया गया है।

रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता।

१४६. थेघनाथ या थेघू—रचयिता का उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, देखिए, भूमिका भाग मे सख्या १३।

१४७. दक्षसखी—"अष्टकाल की लीला" नाम से इनकी रचना मिली है। ये गौड़ीय संप्रदाय के वैष्णव थे, जिसम चैतन्य महाप्रभु हुए है। इसके अतिरिक्त इनका और वृत्त नहीं मिलता।

ग्रथ में राधाकृष्ण की अष्ट प्रहर की लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८३६ है। लिपिकाल दिया नही। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

१४८. वत्तकवि—"सूरजमल की कृपाण" नाम से इनकी वीररस पूर्ण रचना का विवरण लिया गया है। रचना द्वारा इनका इतना ही पता चलता है कि ये भरतपुर नरेश सूरजमल (सुजान सिंह, राज्यकाल सवत् १७१२–१७२० वि०) के आश्रित थे। अन्य वृत्त नहीं मिलता। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

खोज में इनका पता प्रथम बार लगा है।

१४९. दयाराम भाई—इनके निम्नलिखित पाँच ग्रंथों के विवरण लिए गए हैं :—

(१) कृष्णनामचंद्रिका—रचनाकाल सवत् १८७० के लगभग। लिपिकाल अज्ञात। विषय—नाम माहात्म्य वर्णन।

(२) दयाराम सतसई—रचनाकाल सवत् १८७२ तथा लिपिकाल संवत् १८९५ वि०। विषय—भक्ति, नीति तथा ज्ञानोपदेश।

(३) श्रीमद्भागवतानुक्रमणिका—रचनाकाल सवत् १८७० के लगभग। लिपिकाल अज्ञात। विषय—भागवत की अनुक्रमणिका श्री वल्लभ सप्रदाय के सिद्धातानुसार वर्णन की गई है।

(४) श्रीकृष्ण अनन्य चंद्रिका—रचनाकाल संवत् १८७०। लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्री वल्लभ संप्रदाय के अनुसार भगवान् की सेवा पद्धति का वर्णन।

(५) वस्तुवृंदनामदीपिका—रचनाकाल संवत् १८७४ वि० और लिपिकाल संवत् १८९५ वि०। विषय—कोश।

तीसरे और चौथे ग्रथ के अनुसार रचयिता गुर्जरदेश (गुजरात) के अंतर्गत नर्मदा तट पर बसे चडी ग्राम (अब चाणोद) के निवासी, नागर ब्राह्मण और श्री वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे।

खोज मे ये नए मिले है।

१५०. दयालदास (? संभवतः लछीदास)—ये 'सुखसागर पुराण' के रचयिता हैं। ग्रथ द्वारा इनका कोई वृत्त नही मिलता। प्रस्तुत ग्रथ मे इन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान का वर्णन किया है, जो इनके तथा इनके शिष्य लछीदास के कथोपकथन के रूप मे है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के नाम मे भूल दिखाई देती है। सभवत. लछीदास रचयिता है।

इनका पता खोज मे प्रथम बार लगा है।

१५१. दरियासाहब—इनकी "शब्दलीला" और "साखी" ग्रंथ मिले है, जिनमे संत-परंपरा के अनुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल का उल्लेख किसी भी ग्रंथ मे नही है। लिपिकाल केवल साखी मे सवत् १९३८ वि० दिया है।

'साखी' का उल्लेख खोज विवरण (९–५५ एल) मे भी हो चुका है।

प्रस्तुत ग्रंथो से रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। परतु उपर्युक्त खोज विवरण और (१७–४३) मे इनका अन्य ग्रथो के साथ भी उल्लेख हुआ है, जिनके अनुसार ये एक महात्मा थे, अपने को कबीर का अवतार बतलाते थे, द्वार कधी मे निवास करते थे और स० १८३७ वि० में मृत्यु को प्राप्त हुए थे।

१५२. दलजीत—इनकी "सुदामाचरित्र" नामक रचना की एक खंडित प्रति मिली है। रचना का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८१८ दिया है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही मिलता।

इनकी प्रस्तुत रचना काव्य की दृष्टि से सरस और सुदर है। खोज में इनका पता प्रथम बार लगा है।

१५३. दादू (? संभवतः चैन या भूपति)—इनका "चित्रबंध" काव्य मिला है, जिसमें वृक्ष बंध, पर्वतबध, स्वस्तिकबंध, कदलीबध, धनुषबध, कपाटबध, सर्पबध, तालाबंध, चोपड़बंध, हारबध, कलमबध, जहाजबध और ध्वजाबध आदि चित्रकाव्यों का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। ग्रथ विषय की दृष्टि से उत्तम है।

रचयिता के नाम मे भूल दिखाई देती है। वास्तविक रचयिता 'चैन' या 'भूपति' में से कोई एक है। इन दोनों नामों का उल्लेख चित्रबधों मे हुआ है तथा ये दादू के अनुयायी थे। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

१५४. दास—दासकृत "राज निर्णय" ग्रंथ की खडित प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रंथ में संगीत विषय का वर्णन है। इसमे अध्यायों के स्थान पर 'प्रकासो' का प्रयोग हुआ है। इसके साथ माणिक कृत सस्कृत ग्रथ 'रागरत्न' भी लिपिबद्ध है, जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है:—

"इति नादार्णवेहि श्री मदुपाध्याय जदुनदन सूनुना माणिक्येन कृतो रागरत्नः समाप्तः॥"

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही मिलते। उपर्युक्त 'रागरत्न' के आधार पर लिपिकाल सवत् १८३५ वि० माना गया है। इसके नाम का पता बाईसवें प्रकाश की पुष्पिका के द्वारा चला है:—

"इति दीपक पुत्र गारा जलधर भरन अरत करन वर्णन राग निर्णय बाइसमो प्रकासा ॥२२॥"

रचयिता के नाम के अतिरिक्त और कोई पता नही चलता। पिछले खोज विवरणों में आए इस नाम के अन्य रचयिताओं से ये भिन्न है या अभिन्न, निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता।

१५५. दास—इनकी "व्रज महात्मचद्रिका" कृष्णभक्ति और व्रजमाहात्म्य विषयक रचना है। इसमे प्रकाश नाम मे छह अध्याय है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल संवत् १८०५ है। ग्रथ की पुष्पिका से विदित होता है कि लिपिकाल ही रचना काल भी है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है।

रचयिता का वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओं से ये भिन्न हैं या अभिन्न, कुछ ज्ञात नही होता।

१५६. दास—ये "पथ पारख्या" के रचयिता है। ग्रथ से इनका इतना ही पता चलता है कि ये दादूपथी थे। ग्रंथ मे पथ के सिद्धांतो और नियमो का वर्णन है।

रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। खोज मे रचयिता का पहली बार पता लगा है।

१५७. दासराम—इनकी ज्योतिष विषय पर "सूर्यकाड" नाम की पुस्तक मिली है जिसमें सूर्य के बारह राशियो पर रहने का फलाफल वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९११ वि० दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१५८. दिग्विजय सिंह—इस त्रिवर्षी मे प्रस्तुत रचयिता का 'नीतिरत्नाकर' ग्रंथ मिला है। ग्रंथ के अनुसार ये गोडा (अवध) के अतर्गत बलरामपुर के राजा थे। पिता का नाम अर्जुन सिंह था। ये बडे काव्यप्रेमी थे। प्रस्तुत ग्रथ मे इन्होने राजनीति के अतिरिक्त रस और अलकारो का भी वर्णन किया है। इनका उल्लेख अन्य ग्रथ के साथ विवरण (२०–४३) में भी है।

प्रस्तुत ग्रंथ छपा हुआ है। रचनाकाल संवत् १९२० है। खडित हो जाने के कारण इसका मुद्रणकाल विदित न हो सका।

१५९. दुखहरण (जन)—इनकी 'प्रह्लादचरित्र' रचना की तीन प्रतियाँ मिली हैं। ग्रंथ का विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल किसी प्रति मे नही है। लिपिकाल केवल दो प्रतियों मे क्रमशः सवत् १९३४ और सन् १२४० साल दिए हैं।

रचयिता के नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं मिलता। संभवतः **खोज विवरण** (४१-१०५) में उल्लिखित दुखहरण यही है।

१६०. दुखीराम बरनवाल—'बोलार चरित्र' नाम से इनका ग्रंथ मिला है, जिसमें नाग कन्या से उत्पन्न भीमसेन के पुत्र बोलार का चरित्र वर्णित है। ग्रंथ का रचनाकाल सं० १८५३ ही लिपिकाल विदित होता है, क्योकि पुष्पिका को देखने से पता चलता है कि प्रस्तुत प्रति मूल प्रति है। लिपिकर्त्ता का उल्लेख नही है :—

"इतिश्री बोलार चरित्र **दुखीराम बरनवार साकीन गोठनी परगने कोवरमी भादो** बदी १४ रो बुध के तइआर भेआ समत १८५३, सन् १२४१ शाल मोकाम बलुआ कोठी नई ॥"

इसके अनुसार रचयिता गोठनी गाँव परगना चौवरमी (सारन, बिहार) के निवासी थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१६०. दूलनदास—इनकी "निर्गुन निहछुर" नामक रचना मिली है जिसमे निर्गुण भक्ति का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १९२३ वि० है।

रचयिता के संबंध मे इतना ही पता चलता है कि ये सत्यनामी संप्रदाय के प्रवर्तक स्वा० जगजीवनदास के शिष्य थे। इनकी प्रस्तुत रचना खोज विवरण (२३-१०८) मे उल्लिखित है।

१६२. देवकृष्ण—'रामाश्वमेध' नाम से इनका ग्रथ मिला है। ग्रथ का विषय नाम से ही स्पष्ट है। रामचरितमानस की शैली पर इसकी रचना हुई है। आरभ मे स्तुति वदना उसी प्रकार विस्तारपूर्वक दी गई है। भाषा भी अवधी है। कथा का आरभ वात्सायन ऋषि और शेष के संवाद रूप मे हुआ है। काव्य की दृष्टि से रचना सुदर है।

रचनाकाल संवत् १८२८ है। ग्रथ अत से खंडित है, अत लिपिकाल का कोई पता न चल सका। रचयिता का उपनाम 'देव' है। इसके अतिरिक्त और कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१६३. देवीदत्त शुक्ल उपनाम 'पंडित' और 'धीर'—इनकी 'हनुमतवीररक्षा' और 'अलकार दर्पण' नाम से दो रचनाएँ मिली है। रचनाओ का विषय क्रमश: हनुमान जी की स्तुति और अलकार वर्णन करना है। प्रथम ग्रथ मे रचनाकाल, लिपिकाल सवत् १९०४ है और दूसरे मे सवत् १९१०।

रचयिता प्रयाग (इलाहाबाद) जिले के अंतर्गत हसराजपुर के रहनेवाले थे। इनके दो उपनाम थे—'पंडित' और 'धीर'। पिता का नाम रामदत्त था। दोनो पिता पुत्र बड़े धुरंधर विद्वान् तथा तांत्रिक थे। ये होलागढ़ के राजा महरबान सिह और उनके पुत्र शिवप्रसन्न सिह के आश्रय मे रहते थे। इन राजाओ का कवि ने ओजस्वी भाषा मे यश वर्णन किया है। इनका वंश तो निःशेष हो गया है, पर अब इनके भानजे पं० लक्ष्मीदत्त का वश चल रहा है। प० लक्ष्मीदत्त भी बड़े विद्वान् और तात्रिक थे।

१६४. देवीदास—यह कोई सत जान पड़ते है। प्रस्तुत खोज मे इनकी "कजानामा" नाम से छोटी सी रचना मिली है जिसमे निर्गुन मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८२३ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१६५. देवीदास—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग में सख्या ३९।

१६६. देवेश्वर माथुर—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग में हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग में संख्या १४।

१६७. द्वारिकादास—प्रस्तुत खोज मे इनकी बिना नाम की खडित रचना मिली है, जिसका नाम इन्ही के नाम पर "द्वारिका दास की बानी" रख दिया गया है। बानी मे भक्ति और विनय सबधी पद है। रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चलता।

रचयिता का नाम, जहाँ तहाँ पदो मे, "द्वारिका दास" या "जन द्वारिका" दिया है। अन्य परिचय नही मिलता। इन्होने सगुन और निरगुन दोनो विषयो पर रचनाएँ की। सगुन पदों मे श्रीकृष्ण, राम और शिव की भक्ति का वर्णन है। निरगुन पदो मे निरगुनी सतो की तरह योग का भी वर्णन मिलता है। रेखता भी इन्होने रचे है।

इसमे सदेह नही कि इनकी प्रस्तुत रचना अपने विषय की उत्तम है। खोज विवरण (२६-११४) मे उल्लिखित 'राधाविलास' के रचयिता से ये भिन्न जान पडते है। अत. खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१६८. गो० द्वारिकेश जी—इनकी 'सात स्वरूप के कीर्तन' नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमे वल्लभ सप्रदाय के सात स्वरूपो, मथुरेश जी, विट्ठलनाथ जी, द्वारकाधीश जी, गोकुल चद्रमा जी, गोकुलनाथ जी और मदनमोहन जी एव श्रीनाथ जी का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का प्रस्तुत ग्रथ मे कुछ पता नही चलता, पर इनका उल्लेख खोज विवरण (१२-५३) (६-१६४) और (३८-४८) मे अन्य ग्रथो के साथ हो चुका है, जिनके अनुसार ये व्रज निवासी, वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी, मथुरानाथ के पुत्र और सोलहवी शताब्दी के मध्य में वर्तमान थे।

विद्या विभाग कॉकरोली के सचालक श्री कठमणि शास्त्री के कथनानुसार ये श्री वल्लभाचार्य जी के वशज थे।

१६९. धनपाल—इस रचयिता के 'भविष्य दत्त कथा' नामक अपभ्रश भाषा के ग्रथ के दो पत्रे मिले है, जो अत्यत जीर्णशीर्ण अवस्था मे है। अपभ्रश हिंदी का प्रारंभिक रूप है, जिसमे अनेक उच्चकोटि की रचनाएँ हुई है। अत इस दृष्टि से प्रस्तुत खोज महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत ग्रथ प्रबध काव्य है और गायकवाड ओरियेंटल सीरीज से छप गया है।

उपलब्ध पत्रो द्वारा रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही चलता। परतु स्याही, लिपि और कागद को देखने से ये कम से कम पाच सौ वर्ष पहले के लिखे जान पड़ते है। राहुल साकृत्यायन रचित 'हिंदी काव्यधारा' पुस्तक की पृष्ठ सख्या २६० पर धनपाल का उल्लेख है जो पुस्तक के अनुसार सवत् १००० मे वर्तमान, माएसर (गुजरात ?) देश का रहनेवाला धाकड़ वैश्य था।

१७०. धरनीदास—इनकी "चेतावनी" और "निर्गुनलीला" नाम से दो रचनाएँ मिली है, जिनमे सतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल क्रमश सवत् १८४१ और १९१० वि० है।

प्रस्तुत ग्रथो मे रचयिता के वृत्त का कोई उल्लेख नही मिलता। खोज विवरण (४१-११४) तथा (६-७१) मे इनका उल्लेख हो गया है। प्रथम विवरण के आधार पर इनके सबंध मे इस प्रकार ज्ञात होता है कि ये कायस्थ, माझी (मारन) के निवासी, टिकैतराय के पौत्र, परशुराम के पुत्र, सभवत विनोदानद के शिष्य और बाद मे गोसाई हो गए थे। दूसरे खोज विवरण मे इनका उल्लेख धरनीदास से अलग 'धरनीधर' नाम से किया गया है, जो भूल है। उक्त विवरण मे 'धरनीधर' के 'शब्दो' के जो उद्धरण दिए है, उनमे 'धरनीदास' नाम का भी स्पष्ट उल्लेख है :—

"सूरमा संत साधु जन जेते जिन हरिनाम अधार ।
'धरनीदास' बंदिश्रा तिनको इत उत बार उज्यार ।।"

इनकी बानियाँ भी साहित्यविषयक है, अतः उपर्युक्त दोनो खोज विवरणो मे उल्लिखित 'धरनीदास' और 'धरनीधर' एक ही है ।

१७१. धरमादास—इस रचयिता के "धरमीनामा" की खंडित प्रति मिली है। ग्रंथ मे संतमतानुसार निरगुन भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८६६ वि० है ।

प्रस्तुत ग्रथ द्वारा रचयिता के पिता का नाम घासी और गुरु का नाम गगाराम था । ये मानिकपुर शहर (काछी पट्टी) के निवासी थे । जब ये छोटे थे तभी माता और पिता का शारीरात हो गया था । इन्होने कुछ और भी विवरण दिया है, जो ठीक ठीक ज्ञात नही होता—

"एक दीली एक वंग सजावे एक आगरा प आना हो ।
एक लंका एक मानिक गावै एक मारं मुलताना हो ।।
काछीपटी सहर मानीकपुर तहा भया है धरमा हो ।
आनै वाव बढाया साहेव आया बीबापुर मा हो ।
राम एक धरी ग्यान आपने सीर मो दाग दगाया हो ।
वोन्ह वीनु कोई बात न पुछै वडा पढगा पाआ हो ।
है घासी का बेटा धरमा गंगाराम क चेला हा ।
नान्हे माई बाप कह षाएसी आपुही रहा अकेला हो ।
जैसा षच महीना तैसा वीना उजुर पहुचावै हो ।
:o: :o: :o:
भला औ बुरा एक कै जानै सो मेरा दील जोई हो ।
षाक सवारो पाक कीता है नाम धरावा धरमा हो ।
गंगाराम गुरु हुआ दीआ है तव पावा कछु मरमा हो ।"

ऐसा कुछ विदित होता है कि माता पिता के मर जाने पर ये मानिकपुर से बीबीपुर चले आए, जहाँ राम का ज्ञान (रामभक्ति) हो जाने स इन्होने अपना शिर दगा लिया । इसके पीछे संभवत ये गुरु के साथ दिल्ली, बगाल, आगरा, लका और मुलतान आदि स्थानो पर घूमते रहे ।

खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

१७२. धर्मदास—इनके 'महाभारत' ग्रथ की चार प्रतियाँ इस बार भी मिली हैं। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रतियो मे आए पर्वो का उल्लेख नीचे किया जाता है :—

(१) महाभारत भीष्मपर्व और द्रोणपर्व—रचनाकाल केवल द्रोणपर्व मे दिया है, जो संवत् १६६४ वि० है । लिपिकाल दोनो पर्वो का सवत् १६५० है । प्रस्तुत विवरण पत्र मे ग्रंथ की दो प्रतियो के विवरण सम्मिलित है । एक का विवरण विवरणपत्र मे ही है तथा दूसरे का विवरण अतिरिक्त कागदो मे है । प्रथम प्रति दूसरी की नकल है ।

(२) महाभारत (सभापर्व, वनपर्व और उद्योगपर्व)—रचनाकाल सभापर्व के आधार पर सवत् १७११ वि० और लिपिकाल सवत् १८७७ वि० है ।

(३) महाभारत (उद्योगपर्व, भीष्मपर्व और द्रोणपर्व)—रचनाकाल द्रोणपर्व के आधार पर सवत् १६६४ । लिपिकाल उद्योगपर्व मे सवत् १८८८ वि० और अन्य पर्वों मे सवत् १८८४ वि० । इससे विदित होता है कि उद्योग पर्व बाद को लिखा गया ।

(४) **महाभारत (उद्योगपर्व)**—रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल संवत् १८६३ वि०।

रचयिता ने अपना वृत्त 'सभापर्व' और 'द्रोणपर्व' मे दिया है जो क्रमश. नीचे दिया जाता है :—

द्रोणपर्व

प्रस्तुत पर्व की रचना कवि ने पच्चीस वर्ष की अवस्था में की थी। बघेल खड मे डहार-देश के अतर्गत मऊ इनका गॉव था। वासुदेव यहाँ का राजा था। इनके कुल मे हरिहर और चद्रभान दो प्रसिद्ध पुरुष हुए। इनका एक पुत्र 'गग' था, जो भाषा विलास मे बड़ा प्रसिद्ध हुआ :—

"श्री नरसीह कोपा भइ जबही। वार्ष पाचीस केर कवि तबही॥
संवत वीक्रम भूपति भएऊ। सोरह सए औ चौसठी गएऊ॥
जंह लगि उगवं अथव ही आना। ताहि सलाम सकल सुठाना॥
माहि बघेल वीक्रम काह साके। उपर सात्रु आही नहि जाके॥
मऊ गाँऊ औ वेस डहारा। वासुदेव तहि भुंम्या भुआरा॥
रितु वसंत औ माधव मासा। पुन्या देवस तेहि कीन्ह प्रकासा॥
.ारथ सुनेही जवन फल होइ। पाछेहि वार्नी कहा रहे सोइ॥
धार्मक नतए महाकवि धार्मदास कविराज।
चाद्रभान तेन्ह के कुल वार्नत लागहि लाज॥
आपन मइ नहि कहा वषाना। जगत विदित जसु जेहि सब जाना॥
वीस्न भाक्ती पुरुष न चलि आइ। जप तप नेम धार्म अधिकाइ॥
पंडित गुनकर पारव पारा। भाषा मह कवि रीति रसारा॥
ओथावाद वोष कह डरउ। तेहि वरे नर कवित्या ना करउ॥
आपने कहे न कीरती होइ। परमुष अस्तुति सोभा सोइ॥
अपने मुष कर षान समाइ। इद्री कहइ हरू होइ जाइ॥
धाना कहे घटि जानही लोगा। होर्दे एक आषर जीभी जमोगा॥
हरिहर देव हरिहि लए लाए। चद्रभान जेन्ह के कुल जाए॥
तन्ह के वंस धार्म कर धामा। धार्मदास कविराज क नामा॥
तासु तनए कुल मंडन कवि सेषर कवि "गंग"।
जेन्ह के भाष विलास कं वानी तरल तरंग॥"

सभापर्व

इनके पुत्र श्रीपति बड़े गुणी थे। उन्होने महाभारत की रचना करने के लिये इनसे प्रार्थना की, जिसको इन्होने स्वीकार कर लिया। उस समय शाहजहाँ बादशाह का राज्य था। विध्य मे डहारदेश के राजा प्रतापसाहि सेगर के आदेश से इन्होने प्रस्तुत रचना की। एक आसान देव कवि का भी उल्लेख किया है, जिसने राजा को आज्ञा दी कि वे महाभारत की रचना करावे। इनके (रचयिता के) एक पुत्र का नाम 'गग' था जिसको इन्होने कवियो मे श्रेष्ठ बताया है। प्रतापसाहि सेगर के पुत्र का नाम महासिह था :—

"धर्मदास कवि जेहि सब जाना। तेनकर तनं गुनी सग्याना॥
तेनमह एकहि श्रीपति नामा। गुनगन विद्या कह अभिरामा॥
तेन हसि बंचन कहा कर जोरी। तात सुनहु विनती एक मोरी॥
कवरौ पंडउ उपजेउ कसे। दुनहुन दुसह वैर भा कंसे॥

॥ दोहा ॥

सो सब मोहि सुनावहु जस जानलहहु तात ।
ब्यास कहा जो भारथ पर्व इगारह औ सात ॥

पर्वात

संवत साह असीक कर भैउ । सत्रह सै इगारह गएउ ॥
वसुधा साहिजहा कै साके । उपमा रिपु बरिआर न ताके ॥
विंध्या उपर इहा देस डहारा । सेंगरसाहि प्रताप भुआरा ॥
महासिंघ ताकर जुवराजा । दान जुध्य कै जासौ लाजा ॥
आसान देव कवि इक जाहा । कुसुम दिस्टी वरषहि सुरताहा ॥
सो नरसिंहनि सु आएसु दीन्ह । धर्मदास कवि तब एह कीन्ह ॥
पुन्य कथा एह पातक हरइ । नर नारी जेहि सुनतै तरइ ॥

॥ दोहा ॥

धर्मदास एहि भातिन्ह भारत सभा प्रसंग ।
ताके तनै लोक मानी कविगन मह जनु "गंग" ॥१८॥"

इन वर्णनों से पता चलता है कि रचयिता ने ग्रंथ की रचना केवल अपने पुत्र श्रीपति के कहने से ही नही की, वरन् उससे बहुत पहले अपनी पच्चीम वर्ष की अवस्था से ही कर रहा था। इस अवस्था में श्रीपति का जन्म सभव नही हो सकता क्योकि वह सबसे छोटा पुत्र था। अपने कर्णपर्व मे जो उसका रचा है, अपने से बडे तीन भाइयो गंग, स्वर्गसेन (? खड्गसेन) और दलपति का उसने उल्लेख किया है। देखिए प्रस्तुत खोज विवरण मे संख्या (४३०)।

यह निश्चित रूप से विदित होता है कि पर्वो की रचना मिलसिलेवार नही हुई। श्रीपति और आसान देव के कहने पर रचयिता को क्रमपूर्वक ग्रथ रचने की सूझी। अतः जो पर्व नही रचे गए थे उनकी रचना करने लगा। सभवत. केवल द्रोणपर्व ही पहले रचा गया था। ऊपर सभापर्व से दिए गए उद्धरणो मे श्रीपति के कथन से इसकी पुष्टि होती है। उसमे रेखांकित पदों से स्पष्ट है कि श्रीपति ने जब द्रोणपर्व को पढा होगा तब ही कौरव-पांडवो की उत्पत्ति और उनके बैर के विषय मे जानने की उसकी जिज्ञासा हुई होगी। यदि आदि के पर्व भी रचे रहते तो उक्त जिज्ञासा न होती, क्योकि उन्हे सिलसिलेवार कथा का सूत्र विदित रहता। उक्त उद्धरण से यह भी पता चलता है कि उसने रचनाओ मे अपने पिता की सहायता की। वनपर्व के अत मे दिए गए हरिगीतिका छंद से इसका सकेत मिलता है :—

"दुखहरन रमानेवास सो सुनि राधीका पति बोलेउ ।
मम अंग जानेहु आपु सबको भंग कबौ न बोलेउ ॥
अब अजर अमरा अछेह वरदै दान हरी गवनेव घरे ।
सुनि हर्ष धर्मनेवास श्रीपतिदास वनभाषा करो ॥"

रेखांकित पद में श्रीपतिदास स्पष्ट आया है। धर्मदास के वृद्ध हो जाने के कारण यह संगत भी है। कर्णपर्व तो स्वयं श्रीपति ने ही रचा, देखिए संख्या (४३०)।

इसमे संदेह नही कि प्रस्तुत ग्रंथ अत्यत महत्वपूर्ण है। प्रसिद्ध 'गंग' के संबंध में जिसकी भाषा 'तरल तरंग' कही जाती है, निश्चित रूप से जानकारी प्राप्त होती है। प्रस्तुत खोज विवरण में इसका उल्लेख संख्या (६५) पर है। ये निश्चय ही औरंगजेब के काल के गंग है और अकबरकालीन गंग से भिन्न हैं।

पिछले खोज विवरण (१७-४८ और २०-४१) में भी प्रस्तुत रचयित्ता का उल्लेख हुआ है।

१७३. धौंकल मिश्र—इनका "प्रबोध चद्रोदय नाटक" मिला है, जो इसी नाम के मूल संस्कृत ग्रथ का अनुवाद है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। ग्रंथ के अनुसार रचयिता भरतपुरनरेश पुहुपसिह के पुत्र तेजसिह के आश्रित थे। अन्य परिचय नही मिलता। आश्रयदाता तेजसिह का वश इस प्रकार है :—

महाराज, वदन सिह (१७७६–१८१२ वि०)

- सूरजमल्ल (१८१२–१८२०)
- प्रतापसिह
  - बहादुरसिह
    - पुहुपसिह
      - तेजसिह
- अन्य

खोज विवरण (३२–५५) मे रचयिता का 'शकुतला नाटक' आया है जिसके अनुसार ये संवत् १८५६ के लगभग वर्तमान थे।

१७४. ध्रुवदास (हित)—इस विवर्णी मे इनकी निम्नलिखित रचनाएँ और मिली है :—

(१) **अनुरागलता**—रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त। विषय—हित सप्रदाय के सिद्धांतानुसार भगवत्प्रेम और युगलस्वरूप का वर्णन। खोज विवरण (६–२३) मे इसका उल्लेख है।

(२) **आनंदाष्टक**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—हित सप्रदाय की सेवा सिद्धात भावना के अनुसार भगवत्प्रेम का वर्णन। खोज विवरण (४१–११७) मे इसका उल्लेख है।

(३) **प्रेमलता**—रचनाकाल और लिपिकाल दिए नही। विषय—हित सप्रदायानुसार भगवत्स्वरूप सबधी प्रेम तथा उनके युगल स्वरूप की लीलाओं का वर्णन। खोज विवरण (००–१३) तथा (६–७३) मे इसका उल्लेख हो चुका है।

(४) **भजनाष्टक**—रचनाकाल और लिपिकाल अप्राप्त। विषय—हितसंप्रदायानुसार भगवद्भजन की महिमा आदि का वर्णन। खोज विवरण (४१–११७) मे इसका उल्लेख है।

(५) **रसानंदलीला**—रचनाकाल सवत् १६८५। लिपिकाल दिया नही। विषय—राधा कृष्ण का सयोग शृगार वर्णन। खोज विवरण (६–७३) मे यह आ गया है।

(६) **रस हीरावली**—रचनाकाल और लिपिकाल अप्राप्त। विषय—राधा और कृष्ण का ऋतु विहार वर्णन। खोज विवरण (६–७३) मे यह उल्लिखित है।

(७) **हित सिंगार लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—राधा कृष्ण की सयोग शृगार विषयक लीलाओं का वर्णन। खोज विवरण (६–७३) मे इसका उल्लेख है।

(८) **व्रज लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल का उल्लेख नही। विषय—श्रीकृष्ण तथा गोपियो की व्रज लीलाओं का वर्णन। इसका उल्लेख खोज विवरण (६–७३() मे है।

(९) **वैद्यक ज्ञान लीला**—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल सवत् १७८१ वि०। विषय—श्रीकृष्ण की वैद्यक लीला का वर्णन। खोज विवरण (६–७३) मे यह आ गया है।

रचयिता हित संप्रदाय के सस्थापक श्री हित हरिवश जी के शिष्य थे। पिछले खोज-विवरणो के अनुसार ये सवत् १६६० से १७०० तक रचना करते रहे। इनके लिखे बहुत से ग्रथ

हैं। देखिए खोज विवरण (००–१३; ६–१५६; ६–७३– १२–५२; १७–५१; २६–८६; ३८–४२; (४१–११७) और (पं० २२–२६, दि० ३१–२६)।

१७५. नंददास—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनकी निम्नलिखित रचनाओ के विवरण लिए गए हैं :—

(१) **रूपमंजरी**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—राधा के रूप शृंगार का वर्णन। इसका उल्लेख खोज विवरण (६–३०१) और (पं० २२–७२) मे हो गया है।

(२) **रसमंजरी**—रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही। विषय—नायिकाभेद। ग्रथ का उल्लेख खोज विवरण (६–२०६) मे हो गया है।

(३) **स्याम सगाई**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—राधाकृष्ण की सगाई का वर्णन। रचना खोज विवरण (६–२०० ई) (१७–११६) मे आ गई है।

इन रचनाओं के द्वारा रचयिता के सबध मे कुछ ज्ञात नही होता, पर पिछले खोज विवरणो (२०–११३, २३–२८४, २६–३१६– २६, २४४, ३५–६७, ६–२००) (३२–१५२; १–११, ४१–५०८) (१७–११६) मे इनका उल्लेख हो चुका है और उनके अनुसार ये अष्टछाप के प्रसिद्ध कवियो मे से है।

१७६. नजीर—इस त्रिवर्षी मे इनकी "नजीर की रचनाएँ फुटकर एव सुदामाचरित्र" नाम से कुछ रचनाएँ मिली है। रचनाओ का विषय उपदेश एव सुदामा चरित्र वर्णन करना है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी वृत्त नही मिलता, पर पिछले खोज विवरणो (२६–२५१; ३२–१५६, २६–३३३ ए, बी) के अनुसार इनका वृत्त इस प्रकार है—

ये प्रसिद्ध मुसलमान कवि, अकबराबाद (आगरा) के मुहल्ला ताजगंज के रहनेवाले थे। इनका जन्म सवत् १७६७ और मृत्यु सवत् १८७७ है। ये सेठो और अमीरो के लड़को को पढ़ाया करते थे। सूफीमत के अनुयायी थे और इनका ८० वर्ष की अवस्था मे देहात हुआ। ताजगज मे गाडे गए थे।

१७७. नथमल—"चौबीस तीर्थकर की विनती" नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है, जिसमे जैन धर्म के चौबीस तीर्थकरो की स्तुति की गई है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१७८. नयनसुख या नैन कवि—खोज मे इनकी "सारगधर वैद्यक" नामक रचना का पता लगा है, जो इसी नाम के सस्कृत ग्रथ का अनुवाद है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल सवत् १८६० वि० है।

ग्रथ के द्वारा तो इनका नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता, पर पिछले खोज विवरण मे उल्लिखित इनके 'वैद्यमनोत्सव' ग्रथ के अनुसार ये केशवराज के पुत्र, सरहिद निवासी और सवत् १६४६ के लगभग वर्तमान थे। देखिए खोज विवरण (००–३४; ६–२१४; १७–१२५, २०–११६, २३–२६२, २६–३३०) और पजाब रिपोर्ट (२२–७५)।

१७९. नरसी मेहता—इनके भक्ति विषयक कुछ पदो का एक सग्रह "नरसी मेहानी माला" नाम से मिला है। रचनाकाल विदित नही। लिपिकाल संवत् १८६३ वि० है।

रचयिता के विषय मे प्रस्तुत ग्रथ द्वारा कुछ पता नहीं चलता। पर ये प्रसिद्ध नरसी भक्त ही है, जो गुजरात के रहने वाले थे। खोज विवरण (२–६४) में आए नरसी कदाचित् यही है।

पदो की भाषा पश्चिमी राजस्थानी है।

१८०. नरहरि दास बारहट—इनके "अवतार गीता या विजै अवतार गीता", "अवतार चरित्र" की दो प्रतियाँ इस बार भी मिली है। ग्रथ मे चौबीस अवतारो की कथाएँ सक्षेप मे दी गई है। रचनाकाल केवल एक प्रति मे सवत् १७३३ है। लिपिकाल क्रमशः स० १७६७ और संवत् १८१२ हैं।

प्रस्तुत प्रतियो द्वारा रचयिता के सबंध मे इतना ही पता चलता है कि ये जाति के चारण और किसी गिरिधर दीक्षित के शिष्य थे। गुरु का नाम प्रारभ के एक श्लोक मे है। पिछले खोज विवरणो के अनुसार ये "बारहट जाति के चारण, टहलेंगा पडना, मेड़ता (जोधपुर) के निवासी, जोधपुर नरेश महाराज सूरसिंह और जसवत सिह के आश्रित एवं सत्रहवी शताब्दी में वर्तमान थे।" देखिए खोज विवरण (२–८८, ६–२१०) (२–५०; २–४८; २–५१; २–४६; ३२–१५३)।

१८१. नवनीत कवि—इनकी 'मनोरथ मुक्तावली' के विवरण लिए गए हैं। ग्रंथ मे श्रीकृष्ण लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१८२. मुंशी नवनीतराय—ये 'नवनीत नवसई' के रचयिता है। ग्रथ मे शृगारविषयक नौ सौ दोनो का संग्रह है। इसकी रचना बिहारी सतसई के आधार पर हुई जान पडती है; क्योकि इसमे अधिकांश उसी के भाव लिए गए है। बिहारी सतसई का प्रथम दोहा—'मेरी भव बाधा हरो' इसका भी प्रथम दोहा है जो उलट पुलट कर रखा गया है। रचनाकाल सवत् १८७७ वि० है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है। संभवतः पूर्व कवि भी यही हैं।

१८३. नवरंगदास स्वामी—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग मे सख्या १५।

१८४. नवलदास—इनका "कहरनामा" (ककहरानामा) पहले भी मिल चुका है। देखिए खोज विवरण (२६–२४६)। रचना का विषय भक्ति तथा ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल का पता नही। लिपिकाल सवत् १६२३ है।

प्रस्तुत ग्रथ द्वारा तो रचयिता का कोई विवरण नही मिलता, पर पिछले खोज विवरणों (२६–२४६; २३–३०१; २६–३२७; ६–१२८; २०–११८) के आधार पर ये सतनामी पंथ के अनुयायी, स्वामी दूलनदास जी के शिष्य और धनेशा निवासी थे। संवत् १८०७ से १८२३ तक वर्तमान थे।

१८५. नागरीदास—"नागरीदास जी के कवित्त संग्रह" नाम से इनके कुछ कवित्त मिले है, जिनमे विविध विषयो–यथा शरद, दिवाली, गोवर्द्धनपूजा, होरी, फागुन, ग्रीष्म, गंगा जी, वर्षा, मान और बाल लीला आदि का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १८७३ वि० है।

प्रस्तुत संग्रह द्वारा रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरण में आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न है या अभिन्न, कुछ नही कहा जा सकता।

१८६. नागरीदास हित—इनका एक ग्रंथ "समै प्रबध सेवा सात समें की भावना" नाम से मिला है। ग्रंथ मे हित सप्रदाय के सिद्धातानुसार सात समय की सेवा भावना वर्णित है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८६३ है।

रचयिता हितानुयायी थे। इन्होंने प्रस्तुत ग्रथ मे सेवक, दामोदर और श्री गोवर्द्धन लाल का उल्लेख किया है। अतिम व्यक्ति के लिये गुरु शब्द का प्रयोग है, अतः ज्ञात होता है कि वे इनके गुरु थे :—

"प्रथम श्री सेवक पद सिर नाऊं। करौ कृपा दामोदर मोपै श्री हरिवंश चरन रति पाऊं॥
:o: ००० ००० ०००
श्री गुरु 'गोवर्द्धनलाल' जू चरन कमल उरधार। प्रणाम प्ररायम सुरम्य मति वाढं भजन विचार॥"

अन्य परिचय नही मिलता। खोज विवरण (१२-११६) में इनका उल्लेख हो चुका है, जिसके अनुसार ये हित हरिवश जी के पुत्र श्री वनचद्र जी के शिष्य थे। पहले वृंदावन में ही रहते थे, पश्चात् बरसान चल गए, जहाँ इनकी कुटी अब तक है।

१८७. नाथकवि—'रामविहार' नाम स इनकी रचना मिली है। रामचद्र जी ने स्त्री और भाइयो सहित जो जो आनद विहार किए, उन कथाओं का इसमे वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८६८ है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय विदित न हो सका। खोज विवरण (२६-३२५) में आए इस नाम के रचयिता यही जान पड़ते है। इनकी 'रगभूमि' भी रामचरित्र विषयक रचना है।

१८८. 'कवि' नाथ—इस कवि के कुछ 'कवित्त' मिले है, जिनमे वर्णाश्रम धर्म का मडन और अन्य धर्मों का खडन किया गया ह। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता का कोई पता भी नही मिलता। परतु इन्होंने कबीर, नानक, दरिया साहब, भीखा और शिवनारायण से लेकर स्वामी दयानद सरस्वती तक के वर्णाश्रम धर्म के विरोधी सभी मतो का खडन किया है। अतः इस दृष्टि से ये स्वामी दयानद (स० १९२० के लगभग) के पीछे के कवि जान पड़ते है। खोज में इनका पता पहले पहल लगा है।

१८९. नानक—इनके नाम से दो रचनाएँ—"सलोक महलानो" और "वैद्यक" मिली हैं। रचनाओ का विषय क्रमशः ज्ञानोपदेश और आयुर्वेद है। रचनाकाल, लिपिकाल दोनो के अज्ञात है। पर इनमें प्रयुक्त कुछ रूढ़ प्रयोगो से विदित होता है कि ये सुप्रसिद्ध नानक ही है :—जैसे—

"श्रीगणेशायनमः॥ सतगुर प्रसादि॥ सलोक महलानौं॥"

—सलोक महलानो

"१ ॐ सतिनाम करता पुरुषु निरभउ निरवैरू अकालि मुरति अजुनीसं भंगुर प्रसादं"

—वैद्यक

ये प्रयोग नानक पंथ मे प्रचलित है।

रचयिता का उल्लेख खोज विवरण (६-१९९; ३२-१५१; २३-२९३; २०-६९) और (पं० २२-७०) तथा (६-२०७; २६-३१५) मे भी है।

१९०. नामदेव—इनके नाम से 'ककहरा' का विवरण लिया गया है, जिसमें नागरी के प्रत्येक अक्षर पर चौपाई रचकर शिवपार्वती का विवाह वर्णन किया गया है। रचना काल, लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता का भी प्रस्तुत ग्रथ द्वारा कोई पता नही चलता। ये महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध संत नामदेव से भिन्न जान पड़ते है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१९१. नारायणदास—इनका 'रामाश्वमेध' ग्रथ मिला है। ग्रंथ मे पद्मपुराण के आधार पर रामाश्वमेध का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १७३९ और लिपिकाल संवत् १९१५ वि० है।

रचयिता का नाम नारायणदास है। पहले का नाम 'उग्र' था, पर रामानुज संप्रदाय में दीक्षित हो जाने से नारायणदास नाम पड़ा। ये वशिष्ठ गोत्र के माथुर ब्राह्मण थे। यमुना

के किनारे स्थित इटावा नगर निवासस्थान था। अपने को इन्होंने ऋग्वेदी ब्राह्मण कहा है। गुरु परपरा एक 'छप्पय' मे दी है, जो इस प्रकार है :--

"बंदि पर्म गुर चरन सर्व गुर कों सिर नावहुं।
रामानुज पद कमल चारु संतत उर लावहु।
नौमि परांकुस दास बहुरिया मुनि मुनिकायक।
राममिश्र द्रुग कलनाथ निज सुषदायक।
श्री सठारि पद वंदि कै विस्वकसैन उदारमति।
सेवहु जगदंबा चरन श्रीनिवास पद कमल रति॥२॥"

इसमे नामो का क्रम ठीक ठीक स्पष्ट नही होता। पिछले खोज विवरणों मे आए इस नाम के रचयिताओं मे से ये कोई एक है या नही, ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता।

प्रस्तुत ग्रथ काव्य की दृष्टि से उत्तम है। इसकी शैली 'रामचरित मानस' की तरह है, पर छदो का स्वतत्र चुनाव हुआ है। अनेक प्रकार के छद प्रयुक्त किए गए है। कुछ नाम दिए जाते है :—

"दडक, छप्पै, दोहा, कवित्त, विजय छद, चौपाई, रूपमाला, सोरठा, तोटक, नाराच, मालती, चद्रकला, सवैया, पद्धटिका, विजया, गीतिका, सुदरी, भुजगप्रयात, तोमर, दोधक, त्रिभगी, चरचरी, छद मोतीदाम, गीता, निसिपालिका, भूलना, पद्मावती, मरहटा, नगस्वरूप, मदभार, तारक, हरनीप्रिया, मजुता, रोला, प्लवगम और नगस्वरूपनी आदि।"

१६२. नारायणदास (ब्रजवासिया)--इनकी 'गोवर्द्धनलीला' और 'स्वामिनी जी को ब्याह' नाम से दो ग्रथ मिले है। प्रथम ग्रथ मे श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन है और दूसरे मे राधाकृष्ण का विवाह वर्णित है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल गोवर्द्धन लीला मे संवत् १८२८ वि० दिया है।

रचयिता के सबध मे केवल प्रथम ग्रथ से पता चलता है कि वे ब्रजवासी थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है। पिछले खोज विवरण मे इस नाम के कई रचयिता है, पर नहीं कहा जा सकता कि प्रस्तुत रचयिता उनमे से कोई एक है या नही।

१६३. नारायण सिंह नृप--ये 'नामकुसुममाला' ग्रथ के रचयिता है और खोज मे नवोपलब्ध है। अन्य वृत्त नही मिलता। ग्रथ का विषय कोश है, जो हलायुध, धनजय, हेमचद्र और अमरसिह कृत कोषो के आधार पर सवत् १७२० मे रचा गया। लिपिकाल दिया नही। विषय की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है।

१६४. नित्यानंद--'माया को अग' नाम से इनकी ब्रह्मज्ञानविषयक रचना मिली है, जिसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८६६ दिया है। ग्रंथ द्वारा रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कई रचयिता आए है, पर उनमे से ये कोई एक है या नही, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

१६५. निर्मल कवि--इनका 'रस रत्नाकर' आयुर्वेद के अतर्गत रसायनविषयक ग्रथ है, जो इसी नाम के मूल सस्कृत ग्रथ से अनूदित हुआ है। रचनाकाल सवत् १७७३ वि० है। लिपिकाल का उल्लेख नही।

रचयिता का ग्रथ द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये जाति के कायस्थ और चडेस गाँव के रहनेवाले थे। चडेस गाँव सभवत चनेल गाँव है जो गोरखपुर जिला मे बरहज (सलेमपुर तहसील) के पास है।

खोज मे इस कवि का पता प्रथम बार लगा है।

१६६. निर्मलदास—इन्होने सवत् १८३८ मे 'हरतालिका व्रतकथा' की रचना की। लिपिकाल भी इस ग्रथ का सवत् १८३८ ही है। अत इसकी प्रस्तुत प्रति मूल प्रति विदित होती है। इसका विषय नाम से ही स्पष्ट है।

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। पूर्व कवि से ये भिन्न जान पडते है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१६७. निश्चयदास—इनके रचे 'श्री महाप्रभु जी के स्वरूप चितन को पद' मे श्री वल्लभाचार्य के स्वरूप का वर्णन किया गया है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही है। रचयिता का भी वृत्त अज्ञात है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

१६८. नूर मुहंमद—इनके "इद्रावती" नामक प्रेमाख्यान काव्य की एक खडित प्रति इस बार भी मिली है। खोज विवरण (२–१०६) मे इस ग्रथ का उल्लेख हो चुका है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता न चल सका। रचयिता के सबध मे भी कोई विवरण नही मिलता। ग्रथ स्वामी (शेख अब्दुल हमीद साहब, गाँव—चितारा, डाकघर गुरहन, जिला—आजमगढ़) द्वारा विदित हुआ कि ये भादो (ग्रथस्वामी के गाँव, चितारा के समीप) के निवासी थे। इनके वशज अभी तक उक्त गाँव मे रहते है।

उपर्युक्त खोज विवरण मे इनको सबरहद (जौनपुर) निवासी और अठारहवी शती मे वर्तमान बताया गया है।

इन दोनो कथनो मे, स्थान के विषय मे, स्पष्ट अतर दिखाई देता है। जहाँ तक अनुमान होता है, खोज विवरण के उल्लेख मे भूल है। उसमे उल्लिखित ग्रथ की प्रति से जो उद्धरण दिए गए है उनमे रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। वह प्रति मिर्जापुर मे मिली है। अत सभव है, वहाँ से कवि के परिचय के सबध मे केवल आनुमानिक आधार पर ही सूचना मिली हो। इस बार जहाँ से सूचना मिली है वह स्थान कवि के स्थान के समीप ही है। अत विश्वास करने योग्य है। चितारा और भादो गाँव से थोडी ही दूर पर जौनपुर की सरहद लग जाती है। इस दृष्टि से हो सकता है कि सबरहद गाँव भी उक्त गाँवो के पास ही हो।

१६६. पंचौली देवकर्ण—रचयिता का उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग मे सख्या १६।

२००. परमसुख दैवज्ञ—ये ज्योतिषविषयक मूल सस्कृत ग्रथ 'पाराशरीजातक या उड्दाय प्रदीप' के अनुवादक है। अनुवाद सवत् १८६८ वि० मे सपन्न हुआ। इसकी प्रस्तुत प्रति १६०१ मे लिखी गई।

रचयिता के सबध मे इतना ही ज्ञात होता है कि इन्होने प्रस्तुत अनुवाद किसी विष्णुदास के लिये किया था :—

८ ६ ८ १
**"वसु रस गज चंद्रे विक्रमार्कस्य वर्षे, शिव तिथि शित पुष्पे चाश्विने कृष्णपक्षे।
लिखित मिह हितार्थं विष्णदासस्य पूर्वं, तदनुजवपुराख्ये पत्तने ब्राह्मणानो॥"**

प्रस्तुत अनुवाद की भाषा प्राचीन खडी बोली है।

खोज मे ये रचयिता नवोपलब्ध है।

२०१. परमानंद—इन्होने श्री शकराचार्य कृत ब्रह्मज्ञानविषयक सस्कृत ग्रथ 'आत्मबोध' और 'तत्वबोध' का हिदी मे अनुवाद किया। अनुवादकाल और प्रतिलिपिकाल दोनो अज्ञात है।

प्रस्तुत ग्रथो की पुष्पिका के आधार पर ही रचयिता का नाम विदित हुआ। इन्होने किसी रामावतार की सहायता से प्रस्तुत ग्रथो की टीकाए की। ग्रथ स्वामी (प० महानद पाडेय

वैद्य; ग्राम-पंडित का पुरवा, गढवा; डाकघर–हँडिया; जिला इलाहाबाद) से विदित हुआ कि प० रामावतार जी उनकी बुआ के श्वशुर थे, जिन्हे मरे लगभग सौ वर्ष हो गए। अतः इस दृष्टि से अनुवादकर्त्ता श्री परमानद जी का भी यही समय समझना उपयुक्त होगा, क्योकि ये उन्ही पडित जी के समसामयिक थे।

टीकाएँ खडी बोली मे की गई है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२०२. **परमानंददास (अष्टछाप)**—इनकी दो रचनाएँ "परमानदसागर" और "विरह के पद" मिले है। दोनो रचनाओ का विषय श्रीकृष्ण भक्ति और उनका चरित्र तथा लीलाएँ हैं। रचनाकाल, लिपिकाल किसी मे नही है। "विरह के पद" सभवत. परमानदसागर से ही सगृहीत हुए है।

रचयिता का प्रस्तुत ग्रथो द्वारा कोई वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे इनका वृत्त इस प्रकार दिया है :—

"उपनाम विष्णुदास, कन्नौज निवासी, बाद मे गोकुल मे रहने लगे। कदाचित् कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। सवत् १६०६ के लगभग वर्तमान। अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि। देखिए खोज-विवरण (३५–७२, ६–२०३, ३२–१६२, २३–३१०) और (२६–३४१, ४१–५१४; २–६२)।

२०३. **परसनविप्र या परसन द्विज**—प्रस्तुत रचयिता के 'पद' और 'कवित्तो' मे की गई रचनाओ के आठ खर्रों के विवरण लिए गए है। ये खर्रे स्वय रचयिता के ही हाथ के लिखे हैं, अत रचनाकाल और लिपिकाल एक ही सवत् १८८० से सवत् १८६० तक है। रचनाओ का विषय—राम, कृष्ण और शिव भक्ति है।

रचयिता का कोई वृत्त उपलब्ध नही होता, पर ग्रथ स्वामी (प० जानकी चौबे; ग्राम, चौबौली; डाकघर, अहरौला, जिला, आजमगढ) जो इनके ही वशज है, इस प्रकार इनका वृत्त देते है—

"इनका वास्तविक नाम 'परसन' या 'परसनदास' था। नाम के साथ 'विप्र' और 'द्विज' जोडकर कविता करते थे। आजमगढ जिला के अतर्गत फूलपुर तहसील मे स्थित चौबौली गाँव के निवासी, भार्गव गोत्रीय चौबे ब्राह्मण थे। इनके वशज अभी तक उस ग्राम मे रहते है। इनकी अबतक की वशावली इस प्रकार है —

परसन 'विप्र'
कालीदीन
ईश्वरीबक्स
सीताराम
जानकी चौबे (वर्तमान ग्रथ स्वामी)

खोज मे ये नए मिले है।

साहित्यिक दृष्टि से इनका रचनाएँ साधारणतया अच्छी है।

२०४. **पर्मल**—ये "कोकशास्त्र" पुस्तक के रचयिता है। पुस्तक की प्रस्तुत प्रति खडित है। इसमे न तो रचनाकाल, लिपिकाल का पता चलता है और न रचयिता के ही सबध मे कोई विवरण मिलता है।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२०५. **पलटू दास**—पिछले खोज विवरणो मे इनका कई बार उल्लेख हो चुका है, देखिए—(२०–१२८, ६–२२२, ३८–१०६)। उक्त खोज विवरणो के अनुसार ये कबीर-पंथी प्रसिद्ध सत और भीखा साहब के शिष्य जयगोविद के शिष्य थे। सवत् १८२७ के लगभग वर्तमान थे।

इस बार इनकी 'बानी' नामक रचना की खंडित प्रति और मिली है। बानी की प्रस्तुत प्रति से इनके संबंध मे कोई विशेष बात ज्ञात नही होती। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है।

२०५. **पुरुषोत्तम**—इनके नाम से "फूलमंजरी या पहौपमजरी" रचना का विवरण लिया गया है। रचना मे इकतीस दोहे है, जिनमें राधाकृष्ण की भक्ति और शृंगार वर्णन के साथ साथ फूलों का (प्रत्येक दोहे मे एक फूल का) नामोल्लेख भी किया गया है। रचनाकाल, लिपि-काल अज्ञात है।

रचयिता के नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता। प्रस्तुत रचना खोज विवरण (२६-२४४ एच) मे नंददास के नाम से उल्लिखित है, जो भूल है। इसकी वर्तमान प्रति में पुरुषोत्तम का नाम स्पष्ट रूप से आया है, जहाँ कि उक्त विवरण मे नददास का नाम सदिग्ध है।

खोज मे रचयिता का पता प्रथम बार लगा है।

२०७. **पुरुषोत्तम**—इनके पाँच ग्रंथ—१ उत्सव मालिका भाषा, २. द्रव्य शुद्धि भाषा, ३. वन यात्रा, ४. श्री द्वारिकाधीश के शृगार और ५. उत्सव निर्णय भाषा या उत्सव सेवा प्रणाली उत्सव निर्णय सहित मिले है। अतिम ग्रथ की दो प्रतियाँ है। सब ग्रथो का विषय तथा रचनाकाल और लिपिकाल निम्नलिखित प्रकार से है :—

(१) **उत्सवमालिका**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय-पुष्टिमार्गी सिद्धांता-नुसार सेवाक्रम तथा वर्ष भर के उत्सवो का धर्मशास्त्रो के आधार पर निर्णय।

(२) **द्रव्यशुद्धि भाषा**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८४१। विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धांतानुसार वस्तुओ की शुद्धि का वर्णन।

(३) **वनयात्रा**—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९१६ वि०। विषय—व्रज चौरासी कोस की परिक्रमा का वर्णन।

(४) **श्री द्वारिकाधीश के शृंगार**—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल सवत् १८६५ वि०। विषय—श्री द्वारिकाधीश के शृगार का वर्णन।

(५) ***'उत्सव निर्णय भाषा' तथा 'उत्सव सेवा प्रणाली' उत्सव निर्णय सहित***—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धातो के अनुसार वर्ष भर के उत्सवो का वर्णन। इस ग्रंथ का उल्लेख खोज विवरण (१२-१३६) मे भी हुआ है, किंतु उसमे रच-यिता को 'राधावल्लभी संप्रदाय' का होना बतलाया है।

इन ग्रथों के आधार पर रचयिता वल्लभ सप्रदाय के गोस्वामी थे। अन्य परिचय नहीं मिलता। सभव है, प्रस्तुत ग्रंथो के रचयिता एक से अधिक पुरुषोत्तम हों। पर जब तक कोई ठोस प्रमाण नही मिलता तबतक उनको अलग अलग बताना सभव नही। ग्रथों का विषय एक ही है। अतः प्रमाणाभाव के कारण इनको एक ही रचयिताकृत मान लिया गया है। रचयिता पिछले खोज विवरणों मे आए इस नाम के रचयिताओ मे से कोई एक है या नही, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

२०८. **पुरुषोत्तमदास**—इनकी 'सिहासन बत्तीसी' की खडित प्रति मिली है। इसमें रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता। यह सुप्रसिद्ध मूल सस्कृत ग्रंथ 'सिंहासन द्विविंशिका' का अनुवाद है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता। इस नाम के पूर्व रचयिताओ मे से ये कोई है या नही, इस विषय मे भी ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

२०९. **पुरुषोत्तम**—'विषिक्षय' (? विषक्षय) तथा 'स्फुट रसायन' नामक इनकी खडित रचना का विवरण लिया गया है। रचना में अनेक प्रकार के विषो की औषधो और धातु मारने

तथा सोना बनाने की विधियों का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के नाम के अतिरिक्त कोई परिचय उपलब्ध नहीं। अपने नाम के पूर्व रचयिताओं से ये भिन्न जान पड़ते है। अत खोज म ये नवोपलब्ध है।

२१०. **पूरनकवि**—इन्होंने 'यमुना नवरत्न' की रचना की ह जिसमे यमुना जी की स्तुति का वर्णन है। रचना की प्रस्तुत प्रति म रचनाकाल, लिपिकाल का उल्लेख नहीं।

रचयिता का भी वृत्त अप्राप्त है। इस नाम के कुछ रचयिता पिछले खोज विवरणो मे आए हैं, पर ये उनसे भिन्न है या अभिन्न, निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

२११. **पृथ्वीराज**—इनकी "वेलरी या श्रीकृष्णदेव रुक्मिणी वेलि" राजस्थानी भाषा मे रची गई सुप्रसिद्ध रचना है, जिसमे श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह वर्णित है। इस बार ग्रथ की एक खडित प्रति मिली है जो टीका सहित है। टीका राजस्थानी भाषा मे है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

रचयिता का भी इसके द्वारा कोई परिचय उपलब्ध नहीं होता, परन्तु ये बीकानेर के पृथ्वीराज राठौर है, जिन्होंने महाराणा प्रताप सिंह को अकबरी अधीनता स्वीकार न करने के लिये लिखा था। ये अकबर के दरबार मे रहते थे और उस समय के प्रसिद्ध योद्धाओं मे थे। खोज विवरण (००-८७) और (दि० ३१-६६) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख है।

२१२. **प्रतापसिंह जी (सवाई)**—इस विवर्षो मे इनके निम्नलिखित ग्रथ मिले है :—

(१) **प्रेम प्रकाश**—रचनाकाल सवत् १८४८। लिपिकाल अज्ञात। विषय—प्रेम।

(२) **नीतिमंजरी**—रचना काल सवत् १८५२। लिपिकाल अज्ञात। विषय—भर्तृहरिकृत सस्कृत ग्रथ 'नीतिशतक' का हिंदी अनुवाद। खोज विवरण (६-२०५ बी) मे इसका उल्लेख है।

(३) **वैराग्यमंजरी**—रचनाकाल सवत् १८५२। लिपिकाल अप्राप्त। विषय—भर्तृहरि कृत सस्कृत ग्रथ 'वैराग्य शतक' का हिंदी अनुवाद। खोज विवरण '(२२-८६) मे इसका उल्लेख है।

(४) **स्नेहमंजरी**—रचनाकाल संवत् १८५०। लिपिकाल दिया नहीं। विषय—प्रेम। पजाब खोज विवरण (२२-८६) मे इसका उल्लेख हो गया है।

(५) **शृंगार मंजरी**—रचनाकाल सवत् १८५२। लिपिकाल अज्ञात। विषय—भर्तृहरिकृत 'शृगार शतक' का हिंदी अनुवाद।

रचयिता जयपुर के सुप्रसिद्ध महाराज सवाई प्रताप सिंह उपनाम 'व्रजनिधि' है। ये महाराज सवाई जयसिंह के पौत्र और महाराज जगतसिंह के पिता थे। इनका राज्यकाल सवत् १८३५ से १८६० तक था। उपर्युक्त खोज विवरणो के अतिरिक्त इनका उल्लेख खोज विवरण (२३-३२२ ए, ००-३५४, २६-२७२) मे भी है।

२१३. **प्रधान**—ये 'अगद रावण सवाद' के रचयिता है। रचना की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नहीं है। विषय ग्रथ के नाम से ही स्पष्ट है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता, पर जान पडता है कि ये खोज विवरण (१-८, ६-२५३, ६-२१४, २०-१५३ और २३-३४६) मे आए प्रधान है।

२१४. **प्रधान**—इनके कुछ 'कवित्त' मिले है, जिनमे अच्छे बुरे पचो और वैद्यो पर कटाक्ष किए गए है। रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नहीं मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२१५. प्रभुलाल—इनकी "बारहखड़ी" नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमें ज्ञानोपदेश किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल ज्ञात नही।

रचयिता का भी कोई विवरण नही मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

२१६. प्रमादास—इनकी 'दधिलीला' का विवरण लिया गया है। ग्रंथ में श्रीकृष्ण और गोपियो की दधिलीला का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता न चल सका। प्रति अत्यत अशुद्ध लिखी गई है, जिससे रचना की सरसता और मनोरंजकता में अवरोध उत्पन्न होता है।

रचयिता का विवरण अज्ञात है। खोज में ये नवोपलब्ध है।

२१७. प्रवीन कवि—ये निम्नलिखित दो ग्रंथो के रचयिता हैं:—

(१) **कृष्णवृत्त चंद्रावली**—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय—पिंगल। इसमें दिए गए छदो के उदाहरणो मे श्रीकृष्ण चरित्र वर्णित है। विषय की दृष्टि से रचना उत्तम है।

(२) **श्रीद्वारिकाधीश के विचित्र विलास**—रचनाकाल संवत् १८१७। लिपिकाल अज्ञात। विषय—कांकरोली में स्थित द्वारिकाधीश मदिर के ठाकुर जी और राय समुद्र तालाब का वर्णन।

रचयिता का वर्णन अप्राप्त है। खोज विवरण (६–३०७) में 'प्रवीन या कलाप्रवीन' नामक रचयिता का उल्लेख है, पर उसमे उनकी रचना, 'प्रवीन सागर' का उद्धरण नहीं छपा है। इसलिये निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि प्रस्तुत रचयिता और वे एक ही है या भिन्न भिन्न। प्रस्तुत रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है।

२१८. प्राणचंद चौहान—इनकी 'प्रह्लादचरित्र' नामक रचना मिली है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल सवत् १८८० है। रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। ये खोज विवरण (३–९५; १७–१३८, २३–३१७; ४१–५१८) मे आए प्राणचद चौहान ही है। उक्त खोज विवरण मे इनके सबध मे इतना ही दिया है कि ये चौहान क्षत्रिय थे और स० १६६७ के लगभग वर्तमान थे।

२१९. प्राणनाथ (इंद्रावती और महामति)—इनका 'अजीरारास' धामीपंथ का प्रधान ग्रथ है, जिसमे भगवद्भक्ति, ज्ञानोपदेश और पथ सबधी अनेक बातो का वर्णन है। रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १८५३ वि० है। पत्र ४३३ मे 'मारफतसागर' की पुष्पिका मे एक सवत् १७५१ भी दिया है जो उस प्रति का समय विदित होता है जिससे प्रस्तुत प्रति लिखी गई है। खोज विवरण (२०–१२९) मे इस ग्रथ का उल्लेख हो गया है।

रचयिता पन्नानरेश महाराज छत्रसाल के गुरु प्रसिद्ध है। उनके एक शिष्य केशवदास जी भी थे। पूर्वोक्त 'मारफतसागर' की पुष्पिका मे केशवदास का और 'बडो क्यामतनामा' में छत्रसाल का उल्लेख है। इनकी (रचयिता की) रचनाओं के साथ साथ 'इंद्रावती' और 'महामति' के नाम से भी रचनाएँ मिलती है। परतु ये अलग अलग व्यक्ति न होकर रचयिता के ही अन्य नाम हैं। प्रस्तुत विवरण मे आए 'नवरंगदास स्वामी' के विवरण से इस संबंध में पूरी जानकारी प्राप्त हो जाती है। देखिए विवरण संख्या–१८३। उक्त विवरण में इनके संबंध मे इस प्रकार लिखा गया है:—

इंद्रावती श्री जी और महामति स्वामी प्राणनाथ जी की स्त्रियों के नाम नहीं, जैसा पिछले खोज विवरणो मे लिखा है, वरन् उन्ही के नाम थे। उनके निवास स्थान का नाम नवतन-पुरी (गुजरात); माता पिता का नाम धनबाई और केशवराई; भाइयों के क्रमशः नाम हरिवंश

जी, सामलिया जी, गोवर्द्धन जी, श्री मेहरा जी (स्वयं स्वामी प्राणनाथ जी का नाम) और उद्धव जी थे। पिता राजा के दीवान थे। गुरु का नाम श्री देवचद जी था। फूलराई और तेज-कुँवरि नाम की इनकी दो स्त्रियाँ थी।

पिछले खोज विवरणों मे इनके सबध मे जो कुछ भ्रमजनक बाते लिखी गई हैं, प्रस्तुत विवरण से अब उनका निवारण हो जायगा। इनके लिये द्रष्टव्य है, खोज विवरण (२०–१२६; ६–६०; २६–३४६; ४१–१४०; दि० ३१–६५; २६–२६६; ६–२२५; ३२–१६८; ३८–१०६)।

प्रस्तुत ग्रंथ बहुत बडा है, जिसके लगभग १५ भाग है। इनमे हिंदू और मुसलमान धर्मों की दृष्टि से रचनाएँ दी गई है। वेद, वेदात, कुरान तथा भक्तिविषयक बातो का भी समावेश है। भाषाएँ अनेक प्रकार की प्रयुक्त हुई है। यथा उर्दू, हिंदी, गुजराती, राजास्थानी और सिंधी। शैली अधिकतर उर्दू है, परतु निर्गुण और सगुण भक्ति साहित्य के ढग पर भी रचनाएँ हुई हैं। इसमे जहाँ तहाँ मोमिनो को सबोधन करके ज्ञानोपदेश किया गया है।

२२०. **प्राणनाथ सोती**––इनका उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग मे सख्या १७।

२२१. **प्रेमदास**—ये 'मनमोहनलीला', 'प्रेमसागर', 'गेंदलीला या पंचरतनी गेंद लीला' और 'नासकेतपुरान' के रचयिता है। इनका उल्लेख पिछले खोज विवरणो मे भी है, देखिए खोज विवरण (६–६३ ए, बी, डी) और (४१–५१०)। विषय, रचना काल और लिपिकाल का विवरण नीचे दिया जाता है :—

(१) **मनमोहनलीला**––रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय––श्रीकृष्ण की गेंद लीला और शिव दरसन लीला का वर्णन।

(२) **प्रेमसागर**—रचनाकाल सवत् १८२७। लिपिकाल दिया नही। विषय—श्रीकृष्ण और गोपियों के रास का वर्णन।

(३) **गेंद लीला या पंचरत्न गेंद लीला**—इसकी दो प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल संवत् १८४५। लिपिकाल केवल एक मे सवत १६१७ वि०। विषय––श्री कृष्ण की गेंद-लीला का वर्णन।

(४) **नासकेत पुरान**––रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—नासकेत पुराण की कथा का वर्णन।

रचयिता का प्रस्तुत ग्रथो द्वारा कोई विवरण नही मिलता, पर उपर्युक्त पिछले खोज-विवरणो के अनुसार ये अग्रवाल वैश्य, आजमगढ निवासी, रामानुज सप्रदाय के अनुयायी और संवत् १८२७ के लगभग वर्तमान थे।

२२२. **प्रेमरंग**—इनकी दो रचनाएँ "आभास रामायण" और "गरवावली रामायण" मिली है। दोनो रचनाएँ वाल्मीकि रामायण के आधार पर रची गई है। प्रथम ग्रंथ की दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे रचनाकाल सवत् १८५८ है। लिपिकाल एक ही प्रति मे संवत् १८६७ दिया है। दूसरे ग्रथ मे रचनाकाल, लिपिकाल के कोई उल्लेख नही। यह सोरठराग में है।

रचयिता नागर ब्राह्मण थे और काशी मे रामघाट पर स्थित राममंदिर मे ठाकुर जी को गाना सुनाया करते थे। ये हनुमान जी के भी भक्त थे। अन्य परिचय नही मिलता। परंतु नागर ब्राह्मण होने से ये गुजराती जान पडते है। 'गरवावली' रचना से उक्त वृत्त ज्ञात होता है। इसकी रचना पच्छिमी हिंदी मे हुई है, जिसमे गुजराती शब्दो का भी समावेश है। 'आभास रामायण' मे इन्होंने हिंदी उर्दू मिश्रित रचना भी की है :—

**"लवकुश ग्रहें ग्रो राम सुनें पुर नर मुनि बीच । रघुनाथ ने किया सो ग्राखर तलब भया ॥१३॥
एक ग्रवधपुरी भरी पुरी जरजरी निशान । खुशदिल बसे बसिंदे मुतलक सें गम गया ॥१४॥"**

पिछले खोज विवरणों (४१–१४४) में इनका प्रस्तुत ग्रंथो के साथ उल्लेख है, पर उसमें इनका कोई विवरण नही मिलता ।

२२३. फकीर सिंह और मनिकंठ मनि—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनके नाम से 'बैताल-पच्चीसी' का विवरण लिया गया है, जो सुप्रसिद्ध सस्कृत ग्रथ का हिंदी रूपातर है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १७८२ और लिपिकाल सवत् १८४७ है ।

रचयिता वैश्य वर्ण के थे । इससे अधिक इनका कोई परिचय नही मिलता । पिछले खोज विवरण (४१–१४७) मे इनका उल्लेख है । उसके अनुसार ये वास्तव मे ग्रथ के रचयिता नही है । ग्रंथ के रचयिता 'मनिकठ मान' है, जो उनके आश्रय मे रहते थे । 'मनिकठ मनि' के लिये प्रस्तुत विवरण मे सख्या २७३ द्रष्टव्य है ।

२२४. फणि नृपति—इस त्रिवर्षी मे इस रचयिता के नाम से पिगलविषयक एक बिना नाम का तथा खडित ग्रथ (?वा० भू०) मिला है । ग्रथ की रचना यद्यपि सस्कृत मे है तो भी हिंदी मे प्रयुक्त होने वाले वृत्तों, यथा—दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, कुडलिया आदि का भी इसमे वर्णन मिलता है । भाषा भी सरल सस्कृत है । इसी कारण इसका विवरण लिया गया है । यह पत्राकार रूप मे है और प्रत्येक पत्र के दाहिने किनारे कोनो पर "वा० भू०" लिखा है जिससे इसका नाम "वाग्भूषण" होने का अनुमान होता है । रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही चलता ।

रचयिता फणिनृपति है । कही कही 'फणिपति' और 'फणिनायक' नाम भी मिलते है । जान पड़ता है, ये नाम वास्तविक रचयिता के न होकर पिगल ऋषि के हे, जिन्होने पिगल शास्त्र की रचना की ।

२२५. फणींद्र मिश्र—इनका उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग में सख्या १८ ।

२२६. फेकद्विज—इनकी 'चिरई चेतनी' नाम की रचना मिली है । ग्रथ मे विरह श्रृंगार का वर्णन है । इसकी एक विशेषता यह है कि इसके प्रत्येक दोहे मे गुण सादृश्य अथवा श्लेष से एक पक्षी का नामोल्लेख किया गया है । रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है ।

रचयिता के संबध मे केवल इतना ही विदित होता है कि ये किसी राजसभा मे रहते थे :—

**"कहत 'फेक द्विज' समुझि चित थेम कर्णी विश्राम ।
नृपति सभा में बैठि के 'चिरइ चेतनी' नाम ॥"**

रचयिता और रचना के नाम इसी दोहे से विदित हुए है ।

प्रस्तुत रचना साहित्यिक तो है ही, साथ ही साथ इसके द्वारा अनेक पक्षियों के नाम ज्ञात होते हैं । ये पक्षी अधिकतर साहित्य मे स्थान पाते रहे है । प्राचीन साहित्य मे तो इनका विशिष्ट स्थान था । सप्रति इस ओर मद प्रगति है, पर आशा है, आगे साहित्य जगत् मे इनका अवश्य सम्मान होगा और प्रस्तुत रचना का भी आदर होगा ।

२२७. बंशीधर (पंडित)—इनका छपा हुआ ग्रथ 'भोज प्रबंधसार' मिला है । ग्रथ मे राजा भोज और उनकी रानी लीलावती की विद्याभिरुचि का वर्णन है । रचनाकाल अज्ञात है । मुद्रणकाल सन् १८७७ ई० है । ग्रथ खड़ी बोली गद्य मे है ।

रचयिता ने अपने तथा ग्रंथ-रचना के सबध मे पुस्तक के मुख पृष्ठ पर इस प्रकार लिखा है :—

"श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी श्रीयुत् नव्वाब लेफिटनेंटगवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार श्रीयुत विद्या विज्ञ श्री साहब डैरेक्टर आफ पब्लिक इन्सट्रक्शन बहादुर के सरिश्तह मे पंडित वंशीधर ने संस्कृत भोज प्रबंध और उसके अनुयायी ग्रंथो से संग्रह करके बनाया उसको अवधदेशीय पाठशालाओ के विद्यार्थियो के लिये नार्मल स्कूल के थर्ड मास्टर पंडित कालीचरण ने जहाँ तहाँ अशुद्धियाँ बनाकर शुद्ध किया"

मुद्रण यंत्रो एवं हिंदी गद्य इतिहास की दृष्टि से प्रस्तुत ग्रंथ का विशेष महत्व है। तत्कालीन पाठशालाओ मे किस प्रकार के उपयोगी ग्रंथो का पठन-पाठन कराया जाता था, इस संबंध मे भी जानकारी प्राप्त होती है।

खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

२२८. **बखत सिंह (राजा)**—'इश्कशतक' इनकी प्रेमविषयक उत्तम रचना है। इनका यह प्रेम ईश्वर के प्रति ही है, पर सासारिक प्रेम की ओर भी कुछ झुका जान पड़ता है :—

"बखत बरन दूहन विषें कही इश्क की रीति।
जो बाचें समझे अरथ लगे ब्रह्म सो प्रीति॥"

यहाँ 'दूहन' (दोनो) शब्द मे सांसारिक प्रेम की ओर भी लक्ष्य जान पडता है। रचना हिंदी और उर्दू मिश्रित भाषा मे की गई है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का केवल इतना ही पता चलता है कि ये राजा थे, और किसी उमेदसिंह महाराज के पुत्र थे। स्थान तथा अन्य बातो का कोई पता नही चलता।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२२९. **बदलीदास**—इनका 'अनभौ प्रकास' ग्रंथ मिला है। ग्रंथ मे संत मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल का उल्लेख नही। लिपिकाल संवत् १९५० वि० है।

रचयिता बदली दास है। इनके गुरु का नाम जलाली था और ये सतनामी संप्रदाय के अनुयायी थे :—

"'जगजीवन' सुष मूल सूल हरन निज दास की।
होहु नाथ अनुकूल निज सुत सेवक जानि मोहि॥४॥"

इससे पता चलता है कि जलाली श्री जगजीवन स्वामी के पुत्र थे।

इन्होने निर्गुण और सगुण दोनो सिद्धांतो का समान रूप से वर्णन किया है। खोज विवरण (३५-७) मे प्रस्तुत ग्रंथ के साथ इनका उल्लेख है।

२३०. **बनादास**—ये निम्नलिखित चार ग्रंथो के रचयिता है :—

(१) **अनुराग विवर्द्धक रामायण**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १९२२। विषय—रामचरित्र वर्णन।

(२) **मात्रा मुक्तावली**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १९२०। विषय—ईश्वर भक्ति तथा ज्ञानोपदेश। खोज विवरण (२०-११ एन) मे इसका उल्लेख है।

(३) **ब्रह्मायन द्वार**—रचनाकाल संवत् १९२९। लिपिकाल दिया नही। विषय—ब्रह्मज्ञानोपदेश। खोज विवरण (२०-११ आई) मे इसका उल्लेख है।

(४) **विज्ञान मुक्तावली**—रचनाकाल अस्पष्ट है, पर अनुमान से संवत् १९२४ जान पड़ता है। लिपिकाल भी यही है। दोनो कालो मे एक मास का अंतर दिखाई देता है। अतः प्रतिलिपि भी रचयिता के समय मे ही हुई है। विषय—ज्ञानोपदेश। संभवतः यह रचना खोज-विवरण (२०-११ जी) मे आई, 'ब्रह्मायन ज्ञान मुक्तावली' ही है।

रचयिता का वृत्त इन ग्रंथो द्वारा नही मिलता। उपर्युक्त पिछले खोज विवरण (२०-११) के अनुसार ये क्षत्रिय थे और पश्चात् साधु होकर अयोध्या में रहने लगे थे।

ग्रंथस्वामी (श्री भगवतीप्रसाद सिह, प्रधानाध्यापक डी० ए० वी० हाईस्कूल, बलरामपुर, गोंडा) से इनके सबध मे निम्नलिखित प्रकार से ज्ञात हुआ है :—

"ये गोडा (अवध) जिला वासी थे। पीछे विरक्त होकर अयोध्या मे जाकर रहने लगे थे। इनके रचे लगभग ६१ ग्रथो का पता चला है। रचनाएँ सवत् १६०० से लेकर सवत् १६४७ तक की मिलती है।"

प्रस्तुत रचनाएँ सवत् १६३७ के पहले की है। अत. विवरण के अतर्गत आती है। इसके पश्चात् की रचनाओ के विवरण नियमानुसार नही लिये जाते है। इसी कारण इनके अन्य ग्रथ छोड़ दिए गए है। इसमे सदेह नही कि ये प्रतिभासपन्न कवि, प्रौढ़ विद्वान् और उच्चकोटि के रामोपासक भक्त थे।

२३१. **बलदेव कवि**—इनका उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अत: देखिए भूमिका भाग मे सख्या—१६।

२३२. **बलरामदास**—इनका उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अत. देखिए भूमिका भाग मे संख्या—२०।

२३३. **बलिराम**—ये 'विवेक कली' के रचयिता है। रचना मे ज्ञानोपदेश वर्णित है। इसकी प्रस्तुत प्रति द्वारा रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

२३४. **गो० श्री वल्लभ जी**—इनके 'रेखता तथा कीर्तन' मिले है, जिनका विषय शृंगार है। रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय उपलब्ध नही। खोज में ये नवोपलब्ध है।

२३५. **बल्लभ रसिक**—इस रचयिता की 'बारह बाट अठारह पैंडे' नामक रचना का इस बार भी विवरण लिया गया है। रचना का उल्लेख खोज विवरण (१२—१४) में भी हुआ है। विषय, राधाकृष्ण का युगल स्वरूप वर्णन है। साहित्यिक दृष्टि मे यह उत्तम रचना है।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता, पर पिछले खोज विवरणो के अनुसार ये स्वामी हरिदास के शिष्य थे। जन्मकाल सवत् १६८१ दिया है, देखिए खोज विवरण (००—६७; ६—३२६; १२—१४)।

२३६. **बहोरन द्विज**—इनकी 'अद्भुत रामायण' की खंडित प्रति मिली है। ग्रंथ मे सीता जी द्वारा सहस्रबाहु रावण के मारे जाने का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अप्राप्त हैं।

रचयिता के सबंध मे इतना ही पता चलता है कि ये कुलीन ब्राह्मण थे और संभवत: सीता जी के भक्त थे :—

> **"दीज वर विमल कुलीन सुकवि 'बहोरन' नामरत।**
> **जनक सुता आधीन कहत तासु महिमा कछुक॥"**

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२३७. **बालकृष्ण वैष्णव**—इन्होने प्रसिद्ध कवि सूरदास के दृष्टिकूटों की भाषा टीका की है। टीका का काल तथा इसकी प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल दोनो अज्ञात है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। विवरण कर्त्ता ने इनको भावनगर निवासी तो लिखा है, पर यह नही बतलाया कि किस सूत्र से यह विदित हुआ।

इनका उल्लेख प्रस्तुत ग्रंथ के साथ खोज विवरण (००–६) में है, जिसके अनुसार ये गो० गिरिधर दास के शिष्य, वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी और सवत् १८८५ मे वर्तमान थे। इनका पूरा नाम बालकृष्ण दास था।

२३८. **विट्ठलदास**—'रामनाम गुण सागर' नाम से इनकी रचना मिली है। रचना में राम माहात्म्य का वर्णन है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल सवत् १७६५ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

२३९. **गोस्वामी विट्ठलनाथ**—इनके 'यमुनाष्टक की टीका' और 'चतु श्लोकी टीका' के विवरण लिए गए है। ग्रथो की प्रस्तुत प्रतियो म रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही मिलते। 'यमुनाष्टक' का उल्लेख खोज विवरण (३२–७२ ए) मे भी है।

रचयिता सुप्रसिद्ध आचार्य श्रीवल्लभाचार्य के पुत्र प्रसिद्ध है। देखिए, खोज विवरण (६–१६८; ६–२००) और (३२–७२)। प्रस्तुत खोज मे इनके सबध मे विशेष कुछ ज्ञात नही हुआ।

२४०. **बिहारी रमणेश**—इनका 'रामायण माहात्म्य' ग्रथ मिला है, जिसमे रामचरितमानस का माहात्म्य वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १६३८ दिया है।

रचयिता अयोध्या के महत रसिकेश के शिष्य थे। अन्य वृत्त अज्ञात है। पिछले खोजविवरणो मे इस नाम के कई रचयिता आए है, पर उनमे से ये कोई है या नही, कुछ कहा नही जा सकता।

२४१. **बैजनाथ**—इनके 'नीलकठ स्तोत्र' का विवरण लिया गया है। ग्रथ में नीलकठ महादेव की स्तुति है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२४२. **बोधदास, बोधादास या बोधीदास**—इस त्रिवर्षी मे इनकी 'झूलना' नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है। ग्रथ का उल्लेख पिछले खोज विवरण (६–३३) मे हो चुका है। इसमे सतमतानुसार ज्ञान और भक्ति का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही है।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता। इनके लिये देखिए, खोज विवरण (२३–६५, २६–५५; २६–७१) और (दि० ३१–१४)।

२४३. **बोधलाल**—इनका पता प्रथम बार लगा है। 'सोनालोहावाद' नाम से इनकी मनोरजक रचना मिली है। रचना मे सोने और लोहे के विवाद का वर्णन है, जिसमे दोनो बराबर ठहरते है। विवाद का अत स्वय भगवान् श्रीकृष्ण ने किया। समाज की ऊँच नीच की विषमता मिटाने मे प्रस्तुत रचना सहायक हो सकती है। यह ठेठ ग्रामीण भाषा मे रची गई है, जिसमे छदो का भी कोई नियम नही। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के नाम के अतिरिक्त और विवरण उपलब्ध नही।

२४४. **ब्रह्मज्ञानेंदु**—इनका 'ब्रजविहार (द्वितीय सोपान)' नामक बृहद् ग्रथ मिला है। ग्रंथ मे भागवत के आधार पर श्रीकृष्ण की ब्रज लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल सवत् १८८४ वि० है।

रचयिता के वृत्त के सबंध में ग्रथ द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये किसी शुक्राचार्य के शिष्य थे। पिछले खोज विवरण (६–३७) मे वेदातविषयक 'ब्रह्म विलास ग्रथ' के साथ इनका उल्लेख है, पर उसमे भी इनका कोई विशेष परिचय नही मिलता।

२४५. भगवतदास—इनका उल्लेख भूमिका भाग में हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग में सख्या–२१।

२४६. भगवतदास—इनकी 'राम सावित्री' नामक रचना मिली है, जिसमें श्रीरामचंद्र के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत की लीलाओ एव घटनाओ सबधी तिथिक्रमो का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९१२ वि० है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। ग्रंथ का उल्लेख खोज विवरण (२६–५२) मे हो चुका है।

२४७. भगवतदास—इनके 'दीपरामायण' ग्रथ का विवरण लिया गया है। ग्रंथ में स्कंद पुराण के आधार पर रामचरित वर्णित है। रचनाकाल का पता नही। लिपिकाल संवत् १८९९ है।

रचयिता ने अपना इतना ही परिचय दिया है कि उसका निवास स्थान अयोध्या से दक्षिण था। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कई रचयिता आए है, पर उनमे से किसी के साथ इनका साम्य स्थापित करने के लिये निश्चित प्रमाण नही मिलते। संभव है, पूर्ववर्ती रचयिता और ये एक ही हो।

२४८. भगवतदास—इनका 'प्रयाग शतक भाषा' नाम से छपा हुआ ग्रंथ मिला है। ग्रंथ मे प्रयाग माहात्म्य का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९१९ दिया है।

रचयिता प्रयाग मे रहते थे और संभवतः टहलदास जी के शिष्य थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है। पिछले खोज विवरणो मे उल्लिखित इस नाम के रचयिताओ मे से ये एक है या नहीं, कहा नही जा सकता।

२४९. भगवतदास—इनके 'बोधरतन' नामक ग्रंथ की खंडित प्रति मिली है, जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही है। ग्रथ का विषय वेदात है।

रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि ये रामानुज सप्रदाय के थे। खोज विवरण (२३–४४) मे इनके प्रस्तुत ग्रथ का उल्लेख है, पर वृत्त इनका उसमे भी नही दिया है।

२५०. भगवानदास—'रमलसार' नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है, जिसमें रचनाकाल का उल्लेख नही। इसकी प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल संवत् १८९९ है।

रचयिता का परिचय अज्ञात है। खोज विवरण (३५–११ ए, बी, सी) में इनके प्रस्तुत ग्रथ का उल्लेख हो गया है। पर वृत्त उसमे भी उपलब्ध नही।

२५१. भगवानदास 'निरंजनी'—ये निरजनी सप्रदाय के अनुयायियो मे प्रसिद्ध है। 'गीता माहात्म्य' नाम से इनके ग्रथ का विवरण लिया गया है, जिसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। खोज विवरण (२३–४२ ए, बी, सी) मे इसका उल्लेख हो गया है।

रचयिता उपर्युक्त खोज विवरणो के अतिरिक्त अन्य खोज विवरणो (६–१३६; २६–४८) तथा (पं० २२–१३) और (२९–३६ ए, बी, सी, डी, ३८–१० बी) मे भी उल्लिखित है, जिनके अनुसार ये वारल विहटा क्षेत्रवास निवासी, अर्जुनदास के शिष्य और सवत् १७२२ में वर्तमान थे।

इस बार इनका कोई विशेष विवरण नही मिला।

२५२. भगवान (भगवान हित रामराय)—ये पिछले खोज विवरण (४१–१६७) मे उल्लिखित भगवानदास है। उक्त खोज विवरण के अनुसार ये माधव गौडेश्वर संप्रदाय के आचार्य के शिष्य थे। ये एक राजा (सभवतः जयपुर के) थे, जिन्होंने गोवर्द्धन मे मानसी गगा का पक्का घाट और हरदेव जी का मंदिर बनवाया। ये अकबर बादशाह के समकालीन थे।

रचनाओं में इन्होंने अपना उल्लेख 'भगवान हितु रामराय' नाम से किया है। उक्त नाम में प्रयुक्त 'हितु' शब्द को प्रतिलिपिकर्त्ताओं ने भ्रमवश 'हित' लिखा, जिससे इनका हितानुयायी होने का संदेह हुआ। परन्तु यह ठीक नही। ये जैसा कि ऊपर कहा गया है माध्व गौडेश्वर सप्रदायानुयायी थे।

इस त्रिवर्षी मे इनकी 'रुक्मिणीमगल' और 'प्रह्लादचरित्र' नाम से दो रचनाएँ मिली है। रचनाओ का विषय उनके नामो से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचनाओ द्वारा रचयिता के सबध मे नवीन जानकारी कुछ नही होती।

२५३. भट्टोत्पल—इन्होने वराह मिहिराचार्य कृत ज्योतिष विषयक सुप्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ 'बृहत्सहिता' का हिंदी गद्य मे अनुवाद किया है। टीका का रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल संवत् १८४८ है।

रचयिता का केवल इतना ही वृत्त मिलता है कि ये किसी महाराजकुमार अचलसिह के आश्रित थे। सभवतः ये खोज विवरण (३८-११) मे 'प्रश्नज्ञान' के रचयिता महोत्पल है।

२५४. भड्डुली—इनके नाम से 'भड्डुली ज्योतिष टीका' का विवरण लिया गया है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति आदि और अत मे खडित हो जाने के कारण इसका और रचयिता का नाम ठीक ठीक विदित न हो सका। ग्रथ मे जहाँ तहाँ भड्डुली को सबोधित किया गया है, जिससे रचयिता कोई दूसरा ही विदित होता है : परतु प्रस्तुत विषय पर भड्डुली की भी रचनाएँ पाई जाती है; अतः इसी अनुमान पर इसका नाम 'भड्डुली ज्योतिष' रखा गया है और रचयिता का भड्डुली।

मूल ग्रंथ पद्य मे है, जिसकी हिंदी गद्य मे टीका की गई है। रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही। रचयिता का जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है, कोई परिचय नही मिलता। पिछली खोज मे भी इनके सबध मे कोई निश्चित बात ज्ञात नही हुई।

पिछले खोज विवरणों (३५-६०, २६-४६, ००-६८; दि० ३१-२३; १२-२०; ३८-७) तथा (४१-५६६) मे भी इनके कुछ ग्रथो का उल्लेख है।

२५५. भरसी मिश्र रामनाथ पंडित—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग मे सख्या-२२।

२५६. भवानी—इनकी 'बारहमासी' मिली है, जिसके अन्य नाम 'राम जी के बारहमासा' और 'कौशिल्या की बारहमासी' भी है। ग्रथ मे रामचद्रजी के वनगमन पर कौशिल्या का पुत्रवियोग वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६३३ वि० है। रचना लावनी ढग की है।

रचयिता अयोध्या मे रहते थे। अन्य विवरण नही मिलता। खोज विवरण (२६-५८) मे इनका प्रस्तुत ग्रंथ आ चुका है।

२५७. भारतसिंह या भारथसाहि—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग में सख्या-२३।

२५८. भीम—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो चुका है, अतः देखिए भूमिका भाग में सख्या-४०।

२५९. भीम—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अतः देखिए भूमिका भाग में सख्या-२४।

२६०. भीमसेन—'चक्रव्यूह' नाम की इनकी रचना मिली है, जिसमें महाभारतांतर्गत अभिमन्यु की लड़ाई का वर्णन है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल संवत् १६०७ है। रचना साधारण है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२६१. **भीष्म**—इनकी 'माधव विलास' या 'माधवानल कामकंदकला' नाम की रचना का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे माधवानल कामकदला की प्रेमकथा का अत्यंत सरस वर्णन है। साहित्य की दृष्टि से रचना उत्तम है। रचनाकाल दिया तो है पर ग्रथ के खडित होने के कारण अपूर्ण है। अनुमान से सवत् १८०० विदित होता है :—

० ८ १
"नभ वसु विधु वरष गणिए सुषद कार्त्तिकमास।
सुर गुर सुकुल त्रयोदसी कीनो ग्रंथ प्रकास।।"

लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के वृत्त का अश भी खडित है। जो कुछ उपलब्ध है उसके अनुसार ये पुष्पावती के राजा गोविंद चद के आश्रित थे। इन्होने अपने इसी आश्रयदाता की जुवती (स्त्री) के कहने पर प्रस्तुत ग्रथ की रचना की :—

"अति पुनीत पुष्पावती पुरी रुचिर सब काल।
पुन्य पुंज तहँ अवतरचो गोविंद चंद भुग्राल।।
जुवती तिहि क्षितिपाल की कहै सुकवि से सा. . .।
. . .सील जौवन गुण सो सब क्यों कहि जात।।"

शेष वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२६२. **भुग्राल**—इस रचयिता के 'भगवतगीता' और 'भूगोलपुरान' नामक दो ग्रंथ मिले हैं। प्रथम ग्रथ गीता का अनुवाद है और दूसरे मे पुराणो के आधार पर सृष्टि का भूगोल वर्णन किया गया है। रचनाकाल गीता मे दिया तो है पर वह अस्पष्ट है :—

"संवत सुनै कहै परावण। सहस्र सय तीन्ह कही जन।।
मक्रमस जो क्रीमन पछ भएव। दुतीए अरथ रह सुरा गएव।।"

यह ग्रथ खोज विवरण (१७–२०) मे आ चुका है, जिसमे रचनाकाल संवत् १७०० निर्णीत हुआ है। लिपिकाल केवल 'भूपाल पुराण' मे सवत् १८६२ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। उपर्युक्त खोज विवरण मे भी इनका कोई विवरण नही दिया है। प्रस्तुत ग्रथो के आरंभिक अंश एक दूसरे से मिलते है, अतः इसी आधार पर इनको इन दोनो ग्रथो का रचयिता मान लिया गया है।

२६३. **भूषण**—ये छत्रपति श्री शिवाजी महाराज के आश्रय मे रहनेवाले सुप्रसिद्ध महाकवि है। इस बार इनके 'महाकवि भूषण के कुछ नवीन छद' नाम से ३१ छद मिले है। ये छद सुप्रसिद्ध साहित्यिक पं० मयाशंकर जी याज्ञिक द्वारा काशी नागरीप्रचारिणी सभा को प्रदत्त 'याज्ञिक संग्रह' मे सुरक्षित है। संग्रह के आदि मे एक टिप्पणी निम्नलिखित प्रकार से है :—

(१) यह ३१ छद पं० रामनरेश त्रिपाठी को सिहोर निवासी कविवर गोविंद गिल्लाभाई काठियावाडी से प्राप्त हुए है। उन्होंने 'शिवाजी शतक' भेजा था उसके अन्य छद 'भूषण ग्रंथावली' मे मौजूद है।

(२) कुछ छदो मे भूषण का नाम नही है, इसलिए उनके रचयिता भूषण है, इसमें सदेह हो सकता है।

(३) छद न० २५ मे 'इगलाड', 'रूसियान' शब्दो का व्यवहार होने से यह छद भूषण-रचित होने मे सदेह है।

(४) छद न० २० का अंतिम चरण भूषण ग्रथावली के एक छंद से बिलकुल मिलता है।

ये छंद 'प्रभा' (मासिक पत्रिका) मे भी प्रकाशित हुए है। रचयिता का इनके द्वारा कोई नवीन वृत्त नही मिलता।

२६४. भोलानाथ—इनके 'सुमनप्रकाश' ग्रंथ में रस, नायिका भेद और काव्यांगों का वर्णन है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नहीं है। विषय की दृष्टि से ग्रंथ महत्वपूर्ण है।

रचयिता का वृत्त अस्पष्ट है, पर खोज विवरण (३२–२६) में प्रस्तुत ग्रंथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है, जिसके अनुसार ये भरतपुर के रहनेवाले और वहाँ के राजा नरहरिसिंह के आश्रित थे।

२६५. मंडन—'बारामासी' नाम से इनकी खंडित रचना मिली है। रचना का विषय विरह शृंगार है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी कोई वृत्त नही मिलता। संभवत: ये बुंदेलखड निवासी तथा राजा मंगददेव के आश्रित सुप्रसिद्ध मंडन है, देखिए, खोज विवरण (६–७२; २०–१०३; २३–२६५) और (२६–२६२; ४१–१७६)।

२६६. मगनजी—इनकी 'बारहमासी' नाम से विरह शृंगार विषयक रचना मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२६७. मटुकमनि—इनकी 'गोविंदस्तुति' नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

२६८. मतिराम—इन्होने दूलह कवि कृत 'कंठाभरन' की गद्य मे 'टीका' की है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

इनका कोई वृत्त नही मिलता। परंतु ये महाकवि मतिराम से भिन्न बहुत इधर के जान पड़ते हैं। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२६९. मतिराम—इनका 'बरवा' छंदो में रचा हुआ नायिका भेद विषयक ग्रंथ मिला है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित है, जिसके कारण रचनाकाल, लिपिकाल के साथ साथ इसका नाम भी विदित न हो सका। पत्रों के कोनो पर "ब० ना०" अक्षर लिखे मिलते है, जिनके आधार पर "बरवै नायिका भेद" नाम रख दिया गया है। खोज विवरण (२३–२७६) मे इसका उल्लेख इसी नाम से हुआ है।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति से रचयिता के वृत्त के संबंध मे कुछ पता नही चलता, पर उक्त खोज-विवरण से ये सुप्रसिद्ध महाकवि मतिराम विदित हुए।

२७०. मथुरादास कवि—ये खोज मे नए मिले है। 'नीति विलास' नामक इनकी रचना का विवरण लिया गया है। रचना का विषय नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल संवत् १९२९ है। पुस्तक विषय की दृष्टि से अच्छी है।

२७१. मथुरानाथ भारद्वाज—इनके 'गीत गोविंद भाषा पद्यानुवाद' ग्रंथ का विवरण लिया गया है। ग्रंथ मे रचनाकाल का उल्लेख नही मिलता। लिपिकाल संवत् १८२५ है।

रचयिता का वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२७२. मनसाराम—इनके नाम से दो रचनाएँ—'चिंतामणि या हरिनाम गुरुनाम चिंतामणि' और 'चौबीस अवतार को जस' नाम से मिली है। प्रथम ग्रंथ में हरि और गुरु के यश का वर्णन किया गया है और दूसरे मे चौबीस अवतारो का। रचनाकाल, लिपिकाल किसी मे नहीं हैं।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय अनुपलब्ध है। पिछले खोज विवरणों

में इस नाम के कई रचयिता आए है, पर प्रमाणाभाव मे यह नही कहा जा सकता कि उनमें से ये कोई एक है या नही।

२७३. **मनिकंठ मनि**—इनकी रची 'बैताल पच्चीसी' इस नाम के मूल संस्कृत ग्रंथ का हिंदी पद्यानुवाद है। ग्रथ की दो प्रतियो से विवरण लिए गए है। रचनाकाल संवत् १७८२ है। लिपिकाल दोनो प्रतियो के क्रमश. सवत् १८८१ और सवत् १८६२ हैं।

रचयिता का एक प्रति मे 'मनिकठ मनि' नाम दिया है, जिससे ये मणि (त्रिपाठी) विदित होते है। त्रिपाठियों मे 'मणि त्रिपाठी' श्रेष्ठ कहे जाते है।

ये गाजीपुर के अतर्गत नगरानगर के राजा फकीरसिह के आश्रित थे, जिनके आदेश से प्रस्तुत ग्रथ की उन्होंने रचना की। फकीरसिह वैसकुल (सभवतः वैस क्षत्रिय) के थे। इनकी वशावली इस प्रकार है :—

गाजेनसाहि
- बाण सिह
  - कृष्णसिह
  - विष्णुसिह
    - फकीर सिह
    - बलभद्र सिह
  - वीर वरवीर

"गाधिपुर सरकार मै नगरा नगर बिष्यात। बहु भू सिरोमनि पुर बसै आनंदमय सुष सांत॥
वेद विधि चारो वरण नर चलत वेद विचारि। रथ नेम जो मगु आपनी नीज धर्मरत मुष कारि॥
तहा राजनीति प्रतीति द्विज पद प्रेम उरमें चाहि। वैश बंस सरोज पूषन भये गांजन साहि॥'

कुंडलिया

मरदाने ताको भयो 'वाणशीह सुषधाम'। दाता दीन दयाल अति शुंदर तन ज्यौ काम॥
वाना केहरि को भये 'कृष्णसिंह' मरदान। ताशो लहुरो विदित जश 'विस्नुशिह' जगजान॥
दूनो ते लहुरो बहुरि भयो वीर 'वरवीर'। पातषमै कालिकाल लषि गयो सो त्यागि सरीर॥

:o: :o: :o: :o: :o:

विष्णसिह के पुत्र है करते दयो विचारि। 'फकीरसिंह' जेठो भयो जिन्ह रिपु हन्यो प्रचारि॥
अनुज भयो 'बलभद्रसाहि'। निज राज राषिबे लाज जाहि॥
श्री 'फकीर सिंहहि' दयो राजतिलक को भार। साम दाम दंड अरु भेद अनुग्रह वीति॥

:o: :o: :o: :o: :o:

कवि कोविद 'मनि कंठमनि' तहवा बसै निसंक। 'फकीरसिह को' निरषि के अभय बजायो डंक॥
वहु धन दै उन्हि कीन्ह निहोरा। वचन एक मानिलै मोरा॥
अवर कथा मोसो न बची सो। करु भाषा 'बयताल पचीसो॥"
(विनती यही एक द्विज मोरा) दूसरी प्रति में।

प्रस्तुत ग्रथ का विवरण फकीर सिह के नाम से भी लिया गया है। देखिए, प्रस्तुत खोज विवरण मे सख्या (२२३) और पिछले खोज विवरण मे (४१-१४७)। परतु अब वास्तविक रचयिता का पता चल गया है। फकीर सिह रचयिता के आश्रयदाता मात्र थे। पुष्पिका में लिखे 'फकीर सिंह कारिते' से भी यही स्पष्ट है कि फकीर सिह द्वारा कराया गया था।

रचयिता प्रस्तुत ग्रंथ के साथ खोज विवरण (२३-२६६) पर भी उल्लिखित है; पर उसमें दिया गया विवरण संदेहोत्पादक है। उसमे ग्रंथ में जो उद्धरण दिए गए है उनमे 'मनिकंठ' का कही उल्लेख नही। पुष्पिका मे नीरतनलाल का उल्लेख है जिनका ग्रंथारंभ मे विवरण भी दिया है। इसके अनुसार ये आजमपुर ग्राम के निवासी भवानी साहु के पुत्र थे :—

"है आजमपुर विदित ग्राम। सुख संपति आनंद धाम॥
भूमि तिलक सम अति उदार। बेद विदित बाढ़े अचार॥
जहाँ चारि वर्न निज धर्म धारि। रथ नमि चलत जो पथ विचारि॥
जप जोग जज्ञ नित करत दान। नितही सुनत घर घर पुरान॥
अगरवार के गोत सुभ तेहि पुर बसे अनेक।
गर्ग वंश घर एक है क्षिदित धर्म की टेक॥
धर्म धुरंधर सीलजुत भए भवानी साहु।
मुदित जगहि लखि हित सदा और उर उपजत दाह॥
तिनके सुत तहं तीन भे लहुरे 'निरतनलाल'।
रूप काम सम कामतरु दाता दीनदयाल॥"

परंतु जहाँ इतनी भिन्नता है वहाँ कुछ साम्य भी है। दोनो मे रचनाकाल एक ही है। तथा ग्रंथांत का एक दोहा भी मिलता जुलता है :—

"साति सील के रुधिर ते त्रिपित कियो बैताल।
उन दीन्हो वस्तु सिद्धि तव हरषे विक्रमलाल॥
—प्रस्तुत प्रतियों मे संवत् १८८१ की लिखी।

सांति शील के रुधिर ते कीन्हो वृत्त वेताल।
उन्ह दीन्हे वहु सिषि वहुरि हर्षे विक्रमलाल॥
—प्रस्तुत प्रतियों मे संवत् १८९२ की लिखी

सातिसील के रुधिर को पिवत त्रिपित बैताल।
उन्ह दीन्हो वसु सिद्ध तव पाइ हरष भुआल॥
—खोज विवरण (२३-२६६)

उक्त खोज विवरण मे रचयिता का विवरण इस प्रकार है :—

"वैश्य, संवत् १७८२ के लगभग वर्तमान। आजमपुर निवासी। सूदन ने अपने 'सुजानचरित्र' मे इनका उल्लेख किया है।"

इन सब बातो से तो यही पता चलता है कि दोनो रचयिता एक ही है। निरतनलाल और फकीरसिंह इसके आश्रयदाता थे। उसने एक ही ग्रंथ इन दो आश्रयदाताओं के नाम पर रचा है। हिंदी के अन्य कवियो ने भी ऐसा किया है, जैसे देव और पद्माकर। उपर्युक्त खोज विवरण मे इनको भूल से वैश्य लिखा है। ये ब्राह्मण ही थे जैसा कि ग्रंथ के प्रस्तुत विवरण से स्पष्ट है। एक विवरण पत्र के आदि मे 'मिश्र' शब्द भी लिखा है जो ब्राह्मणवाची ही है। संभवत इनके आश्रयदाता फकीर सिंह के नाम के साथ जो 'वैस' (वैस क्षत्रिय) शब्द प्रयुक्त हुआ है उसी ने यह भ्रम उत्पन्न किया है।

२७४. मनोहरदास—इनकी एक रचना 'बरन चरित्र' नाम से मिली है, जो दोहो मे है। प्रत्येक दोहे में एक वर्ण (जातिगत, जैसे धोबी, ब्राह्मण, कायस्थ आदि) का नाम लेकर ज्ञानोपदेश किया गया है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल संवत् १९३५ दिया है।

रचयिता का प्रस्तुत रचना द्वारा कोई पता नही चलता। पिछली खोज मे एक दूसरी रचना 'फूलचरित्र' भी मिली है, जो खोज विवरण (६-१९२, २६-२९६) मे आ चुकी है। उक्त खोज विवरणो मे इनके विषय मे इस प्रकार लिखा है :—

"सेवक जाति के चारण। सं० १८५७ के लगभग वर्तमान। जोधपुर नरेश महाराज मानसिह के आश्रित। इनको गुरु आयुस लाडलूनाथ ने एक लाख रुपये (? पसाव) और एक हाथी इनाम मे दिया था। उन्हे महाराज की ओर से एक गाँव भी मिला था।

खोज विवरण (२–१३) मे इनकी रची 'जस आभूषण चद्रिका' भी उल्लिखित है।

२७५. मलूकदास—इस त्रिवर्षी मे इनका 'साखी' ग्रथ मिला है, जिसमे भक्ति, उपदेश, नीति और चेतावनी आदि विषय वर्णित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता प्रसिद्ध महात्मा मलूकदास है, जो कड़ा मानिकपुर (इलाहाबाद जिला) मे रहते थे। प्रस्तुत ग्रथ उन्ही की गद्दी पर (कड़ा मानिकपुर मे) रखा रहता है। इस समय गद्दी के अधिकारी उन्हो के वशज श्री मथुरादास और महेशप्रसाद है। इन लोगो से पता चला कि ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मलूकदास जी के समय की है। इसके आरभ मे मलूकदास जी की 'साखी' है, जिनकी सख्या २७६ है। पश्चात् उनके वशज रामसनेही, कृष्णसनेही और कान्ह गुआल की साखियाँ है, जो क्रम से उनके उत्तराधिकारी हुए। रामसनेही की साखियाँ पद्रह है, कृष्णसनेही की एक और कान्ह गुआल की पैतीस। इनके अतिरिक्त नराइनदास (मलूकदास जी के वशज) का भी एक पद मिलता है। ग्रथ की यह प्रति मलूकदास जी के हाथ की लिखी है, इसमे सदेह है, क्योकि कागद नया प्रतीत होता है, फिर भी हो सकता है कि प्रस्तुत प्रति मूल प्रति की नकल हो। लिपि कैथी है, जिसमे मात्राओ का उपयोग नही किया गया है। खोज विवरणो (६–१६४) (१७–१०६, ४१–१८८, ४–८०, ६–१८५, २६–२६०, ३२–१३८) मे भी रचयिता का उल्लेख हुआ है।

२७६. महम्मद औलिया और सरमद—इनके नाम से कुछ 'बैत' मिले है, जिनमे साप्रदायिक (हिंदू-मुसलमान) द्वेष मिटाने के लिये ज्ञानोपदेश किया गया है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

ग्रंथारभ मे 'बैत सरमद की' लिखा है, जिसमे रचयिता सरमद जान पडते है, पर 'गालिब' और 'महमद औलिया' के भी नाम आते है। गालिब उर्दू के कवि प्रसिद्ध है। महम्मद औलिया के सबध मे कुछ ज्ञात नही।

प्रस्तुत रचना हिंदू मुसलमानो की एकता की दृष्टि से लिखी गई है। कहते है कि सरमद के उपदेशो का ही प्रभाव दाराशिकोह (औरगजेब के बडे भाई) पर पड़ा था जिससे वे हिंदू मुसलमानो की एकता के बड़े समर्थक हो गए थे।

रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है।

२७७. महरचंद द्विज—ये 'रुक्मिणी मंगल' के रचयिता है। ग्रथ मे श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के विवाह का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १७१६ है, लिपिकाल का पता नही।

रचयिता ने जो अपना वृत्त दिया है उसके अनुसार ये रूपनिधान नगर के निवासी थे और प्रस्तुत 'मगल' की रचना की :—

"मंगल किये हेत सौ साहिगंग सुभ थान।
'महैरचंद द्विज' जग सुन्यौ नगर रूप निधान॥"

अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२७८. महादास—'गनगौर के ख्याल' नाम से इनकी रचना मिली है, जिसमे गनगौर (चैत्र शुक्ल तृतीया) त्योहार के अवसर पर गाये जाने वाले गीतो का सग्रह है। गनगौर का त्योहार राजस्थान मे अधिक प्रचलित है। रचना की भाषा भी राजस्थानी (मारवाड़ी) है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९२३ वि० है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त नहीं मिलता, पर ग्रथ की भाषा को देखने से ये राजस्थान के विदित होते है। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

२७९. महाराज कवि--इन्होंने 'निघट मदनोदै' नामक ग्रथ की रचना की, जिसमे औषधो के नाम और उनके गुणो का वर्णन है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, जिससे रचनाकाल का कोई पता नही चलता। लिपिकाल सवत् १६०० है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और वृत्त नहीं मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२८०. महाबदास--'बाल चरित्र' नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है, जिसमे श्रीकृष्ण की बाललीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी परिचय नहीं मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है। सभवत आगे वाले रचयिता (सख्या--२८१) भी यही है।

२८१. महाबदास वैरागी--इनकी 'रसमिधु' नामक रचना की दो प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल किसी मे नहीं दिया है। लिपिकाल केवल एक प्रति मे है सवत् १८३५। विषय--वल्लभ सप्रदाय के सिद्धातो का वर्णन करना है।

रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि ये वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे और गोकुल मे रहते थे। खोज मे नवोपलब्ध है।

सभवत ये पूर्व रचयिता 'महाबदास' (सख्या--२८०) है।

२८२. महीपति या महीप--रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या--२५।

२८३. मातादीन शुक्ल--ये अजगरा (प्रतापगढ, अवध) निवासी और सवत् १६०३ के लगभग वर्तमान थे। पिछले खोज विवरणो मे इनका उल्लेख हो गया है। देखिए खोज विवरण (२६--२८७), (२३--२७४) और (३५--८१)।

(१) रससारिणी--रचनाकाल सवत १६०३। लिपिकाल सवत् १६२२। विषय--नायिकाभेद का सक्षिप्त वर्णन। इसकी दो प्रतियाँ मिली है। यह जगबहादुरीय यत्रालय, बलरामपुर (गोडा) मे छपी थी। श्री बाबू अजीतसिंह की आज्ञा से ग्रथ की रचना हुई। खोज विवरण (२६--२८७ एच० जी०) मे इसका उल्लेख है।

(२) रामायणमाला--रचनाकाल सवत् १८८०। लिपिकाल सवत् १६३१। विषय--रामचरित्र का सक्षेप मे वर्णन। यह नवल... प्रेस मे छपा। खोज विवरण (२६--२८७ ई, एफ) मे यह उल्लिखित है।

(३) राम गीताष्टक--रचनाकाल सवत् १८६६। लिपिकाल सवत् १६३१ वि०। विषय--राम जी की स्तुति वर्णन। इसकी दो प्रतिया मिली है। एक नवलकिशोर छापेखाने की है और दूसरी जग बहादुरीय यत्रालय बलरामपुर (गोडा) की छपी है। खोज विवरण (२६--२८७ सी, डी) मे इसका उल्लेख हो गया है।

पिछली दो रचनाओ से स्पष्ट है कि रचयिता सवत् १८६६ में वर्तमान थे। और नवीन वृत्त कुछ नही मिलता।

२८४. माधवदास (मधवादास)--इनकी 'बालकाड और अयोध्याकाड युक्त' अध्यात्म रामायण' की एक प्रति मिली है। ग्रथ की उक्त प्रति द्वारा रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

रचयिता का नाम प्रस्तुत प्रति मे मधवादास है। ये किसी दामोदर के शिष्य थे। ग्रथ द्वारा राम मतावलबी विदित होते है। सभवत ये खोज विवरण (प० २२--६०) मे आए 'मदालसाख्यान' के रचयिता माधवदास है। उसमे भी रचयिता के गुरु का नाम दामोदरदास मिलता है और वे दादू पथी एव १८वी शताब्दी मे वर्तमान थे।

२८५. माधवदास—ये 'तत्व चिंतामणि' के रचयिता हैं। ग्रंथ का विषय भक्ति और ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नही।

रचयिता का भी कोई विवरण नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कई रचयिता है, पर पता नही उनमें से ये कोई एक है या नही। पूर्ववर्ती रचयिता से ये भिन्न है। अतः खोज मे नवोपलब्ध है।

२८६. माधवदास—इनकी निम्नलिखित रचनाएँ मिली है :—

(१) **मुरली की लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्रीकृष्ण की मुरली लीला का वर्णन।

(२) **दशमस्कंध संक्षेप लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—भागवत दशम स्कध की श्रीकृष्ण लीलाओं का सक्षेप में वर्णन।

(३) **नारायण लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—अवतारो का वर्णन। खोज विवरण (९–१७७) मे यह आ गया है।

इन सब ग्रथो के नामो के आगे 'लीला' शब्द का प्रयोग है। अतएव ये एक ही रचयिता-कृत मान लिए गए है। इनके द्वारा रचयिता का नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता, पर खोज विवरण (९–१७७) मे आए माधवदास यही विदित होते है। उक्त विवरणो मे रचयिता का परिचय इसप्रकार दिया है :—

'कायस्थ, वैष्णव, नागौद निवासी और १८वी शताब्दी में वर्तमान। इनके लिये खोज-विवरण (१–७८) भी द्रष्टव्य है।

२८७. माधवदास—इनके नाम पर 'दानलीला' का विवरण लिया गया है। ग्रथ की प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही है।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज विवरण (४१–१९५) मे इस नाम के एक रचयिता की दान लीला आई है, पर वह प्रस्तुत 'दानलीला' से नही मिलती। भाषा भी उसकी राजस्थानी है। अत. उसका रचयिता प्रस्तुत रचयिता से भिन्न है।

२८८. माधवदास चारण—इनका उल्लेख 'गुणरामरासो' तथा 'रामरासो' के साथ खोज विवरण (१–८०) मे हो गया है। उसके अनुसार ये दधिवरिया जाति के चारण, सवत् १६७५ के लगभग वर्तमान और मारवाड निवासी थे।

इनके उक्त ग्रंथ की एक अपूर्ण प्रति इस बार भी मिली है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता के सबध मे भी इससे कोई विवरण नही मिलता।

२८९. माधवदास भट्ट—इनका 'संस्कृत हिंदी का कोश' मिला है। जो अमरकोश की ही शैली पर लिखा गया है। रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नही।

रचयिता का भी कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२९०. माधवसिंह राजा (क्षितिपाल, छितिपाल, माधवनृप या नृप माधव)—ये सुलतानपुर (अवध) के अतर्गत अमेठी के राजा थे। क्षितिपाल, छितिपाल, माधवनृप और नृप माधव नामो से भी ये रचनाएँ करते थे। ये बडे विद्याव्यसनी और काव्य रसिक थे। खोज-विवरण (२३–२५६) और (४१–१९८) मे इनके दो ग्रथो का उल्लेख है। इन्होने बहुत से ग्रथो की रचनाएँ की, पर उनमे से अधिकाश सवत् १९३७ के पश्चात् रचित होने से विवरण के अंतर्गत नही आती। इस बार निम्नलिखित दो ग्रथो के विवरण और लिए गए है :—

(१) **रागप्रकाश**—रचनाकाल १७८० शकाब्द (सवत् १९१५) है। लिपिकाल दिया नही। विषय—राग रागनियो का सग्रह।

(२) **स्तुति**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—देवी-देवताओं की स्तुति।

रचयिता की रचनाएँ संवत् १६१५ से लेकर संवत १६४५ तक की मिलती है, अतः इसी के लगभग ये वर्तमान थे।

२६१. माधुरीदास कपूर—ये खोज विवरण (८–१०८, १२–१०५; ६–१६३; ६–१८०) और (३२–१३७, पं० २२–६१) में आए माधुरीदास है। उक्त विवरणों के अनुसार ये मथुरा (माधुरी कुंड) के निवासी, संभवत १६८० के लगभग वर्तमान थे।

इस बार इनकी 'वनविहार माधुरी' के विवरण लिए गए है। ग्रंथ मे रचनाकाल, और लिपिकाल उल्लिखित नही है। विषय—राधाकृष्ण का वन विहार वर्णित है। रचयिता का इसके द्वारा कोई नवीन वृत्त नही मिलता।

२६२. मानकवि या मुनिमान—खोज विवरण (२०–१०१, ३५–६६ और ४१–१६६) मे इनका उल्लेख हो चुका है। उक्त खोज विवरणों के अनुसार ये जैन, बीकानेर निवासी और संवत् १७३१ के लगभग वर्तमान थे।

प्रस्तुत खोज मे इनकी निम्नलिखित दो रचनाएँ और मिली है —

(१) संयोगबत्तीसी—रचनाकाल संवत् १७३१, लिपिकाल दिया नही। विषय—नायिकाभेद का वर्णन। खोज विवरण (४१–१६६) मे इसका उल्लेख है।

(२) कवि विनोद—रचनाकाल संवत् १७४५, लिपिकाल अज्ञात। विषय—वैद्यक।

इनमे से दूसरी रचना नई है। इसमे रचयिता ने अपना वृत्त इस प्रकार दिया है :—

"जाको गछ वासी प्रगट वाचक 'सुमतीमेर'।
ताको सिसै 'मुनिमान जी' वासी बीकानेर॥"

अर्थात् ये सुमतिमेर के शिष्य और बीकानेर के वासी थे। गछ का नाम अस्पष्ट है।

२६३. मानिक—इनके नाम से 'पांडे लीला' का विवरण लिया गया है। जिस स्थल पर इनका नाम आता है वहाँ श्लेष से इस नाम का 'मणि' (रत्न) अर्थ भी निकलता है। अतः नाम मे कुछ संदेह सा है।

ग्रंथ मे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल संवत् १७११ है, जिससे इसकी प्राचीनता प्रकट होती है। विषय—भागवत के आधार पर श्रीकृष्ण की पांडे लीला का वर्णन है। रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२६४. मिहिर या छत्रपति चौहान—ये 'समरसार' ग्रंथ के रचयिता है। ग्रंथ का विषय युद्ध ज्योतिष है। रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल संवत् १६१८ है। रचयिता का नाम कुछ अस्पष्ट है। ग्रंथ मे तीन नाम—'छत्रपति चौहान', 'बलिराम' और 'मिहिर' आते है —

"रजनीपति आदि गनै भट आदि किए ग्रह शेष बचै नवएक न ग्राम मे शत्रु सिवान कहो।
नेत्रा रष्ट ८ वचैपुर मध्य रहै मुनि ७ राम ३ यही पंथ ज्ञात महो।
वेदां ४ ग ६ बचै गृह मध्य रहै शर ५ शेष वचै निज सैन्य कहो।
एह 'छत्रपति चौहान' भनै 'बलिराम' प्रताप ते सिद्ध दहो॥६॥
जन्म पंचमे सप्तमे उदय अस्त स्वर जाहि।
'मिहिर' कहे कवि काम सो रुग न लीजै ताहि॥"

इस उद्धरण से पता चलता है कि संभवत छत्रपति चौहान का उपनाम 'मिहिर' था। 'बलिराम' नाम स्वतंत्र है, जो या तो रचयिता के गुरु रहे होंगे अथवा आश्रयदाता। इससे अधिक रचयिता का और कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२६५. मुकुंद (? शिवमुकुंद)—इनका "गंगापुरान" ग्रंथ मिला है, जिसमें भिन्न भिन्न विषय यथा—पूर्वजन्म की बात, नायिका भेद और ज्योतिष आदि का वर्णन है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है। उसमें रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही। इसके रचयिता का नाम अन्वेषक ने मुकुंद लिखा है, पर वास्तविक नाम 'शिवमकुद' जान पड़ता है, जो मंगलाचरण के दोहे में है :—

"श्रीगुरु चर्न शरोज रज शिर पर धारन कीन ।।
'सिव मुकुंद' बर गुन कहे सरस्वती वर बीन ।।१।।

इन्होंने ब्याना (भरतपुर) के नरेश गंगाप्रसाद के लिये इस ग्रंथ की रचना की थी। अन्य विवरण अप्राप्त हैं। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२६६. मुकुंद या रूपदेव्या—इनका 'विनय विहारी रूप उत्सवाष्टक' मे विनयभूप की रानी राणावत द्वारा निर्मित मदिर के ठाकुर जी का वर्णन है। ये रानी कहाँ की थी, कुछ पता नहीं। मंदिर का निर्माण संवत् १६०८ मे हुआ था। अत. इसी समय के लगभग यह रचना भी हुई होगी। लिपिकाल संवत् १६०८ है।

रचयिता का नाम अन्वेषक ने मुकुद लिखा है, पर पुष्पिका में 'रूप देवी' का नाम रचयिता के रूप में आता है। संभव है, 'मुकुद' ने ही रूपदेवी के नाम पर यह रचना की हो। अन्य वृत्त अप्राप्त हैं।

२६७. मुकुंददास, जनमुकुंद (नंददास)—मुकुंददास या जनमुकुंद के नाम पर 'भ्रमर-गीत' की एक प्रति और मिली है। पिछली बार खोज विवरण (२०–११३ एफ. और २६–२४४ डी.) में इसका उल्लेख हो गया है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के संबंध मे इस बार कोई नवीन विवरण नही मिला।

२६८. मुकुंदलाल—इनके नाम से 'पिंगल ग्रंथ' का विवरण लिया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है। रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही। रचयिता के नाम का भी ग्रथ द्वारा कोई निश्चित पता नही चलता, पर अनुमान से 'मुकुदलाल' माना है। पत्रसख्या छह में यह नाम आया है :—

"वर्ण वर्ण के अर्धकरि तासम गुरु लहु तासु ।
तासु मत्त गुरु वर्ण मिलि 'लालमुकुंद' प्रकासु ।।"

ग्रंथ की भाषा अपभ्रंश है, पर कही कही शुद्ध हिंदी भी प्रयुक्त हुई है, यद्यपि इसका भी रूप प्राचीन है :—

"लघु गुरु जासु मिलाइए तासु वर्ण गण तौण ।
बर्ण मर्कटी भेवपुनि बुइते बूणे ठौण ।।"

इससे रचयिता की प्राचीनता तो स्पष्ट रूप से प्रकट होती ही है, पर भाषा की दृष्टि से ग्रंथ भी महत्वपूर्ण है।

खोज में रचयिता नवोपलब्ध है।

२६९. मुन्ना—इनकी 'सतान कल्प लतिका' नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमें वंध्यारोग की औषधो आदि का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता; परंतु पुस्तक की भाषा देखने से ये २०वी शताब्दी के विदित होते है। प्रस्तुत पुस्तक मे इन्होने लुकमान हकीम के नुसखे भी लिखे हैं। खोज विवरण (२६–३११) में इनका उल्लेख प्रस्तुत ग्रंथ के साथ हो गया है।

३००. मेघराज (या मुनि मेघराज)—इनके 'मेघमाला' ग्रंथ का विवरण लिया गया है, जो पिछले खोज विवरण (२६-३०२, प० २२-६५ वी और २३-२७८) मे उल्लिखित है। उक्त खोज विवरण के अनुसार इनका उपनाम 'मेघमुनि' था और ये फगवाडा (कपूरथला राज्य) निवासी, श्वेतांबर जैन और सवत् १८१७ के लगभग वर्तमान थे। इस बार गुरु परपरा और आश्रयदाता के सबध मे पता चला है, जो इस प्रकार है :—

इनके आश्रयदाता फगवाड़ा (जालंधर) के राजा 'भूरेमल चौधरी' थे। गुरु परंपरा नीचे दी जाती है :—

जटमल
परमानंद
सदानंद
नारायन
नरोत्तम
मुनिमेघराज (रचयिता)

"यह देस 'जलंधर' सोभा सुंदर नाम बुआवा ठौर कह्यौ।
शुभदानपुन्य की यही ठौर है मानो सुरपुर आनि रह्यौ॥
तामहि पंडित नर सोभैं कवि भारी गीत व जंत्र न रंग रस्यौ।
घर घर मंगल चार जु होंवहि तार्मांहि पर इक एह बस्यौ॥५६॥
सकल रिधिकर सोभहै 'फगवाड़ा' शुभ थान।
'तहांमेघ' कविता करी आछी विध मनि आन॥५७॥
'भूरेमल' जो चौधरी फगवाड़ा को राइ।
चतुर सैनकर सोभहै जिव ससि उडगन भाई॥५८॥
सब कबियन सो वीनती कर मेघ कर जोरि।
करो सुध इस ग्रंथ को कह्यौ अधिक जिहि ठौर॥५६॥

:o: :o: :o: :o:

श्री 'जटमल' मुनिस जी सब सब साधन राजा।
'परमानंद' ससी जहै ग्रन्थन गुन साजा॥
'सदानंद' भयो शिष्य ताहितें उपमा भारी।
चौदह विद्या जुक्ति सुगुरु के अज्ञाकारी॥
तासु शिष्य 'नारायन' नाम। ताको शिष्य 'सुनरोत्तम'।
तिनकी दया भई मुझ पर! . . . .।
७ १ ८ १
मुनि ससि वसु महि जान विक्रमादित संवत् आषत।
कातिक सुदी गुरुवार पंचमी तिथि सुभ भाषत॥"

प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल १८१७ और लिपिकाल सवत् १९३९ है।

३०१. मुरलीदास—इनके दो ग्रथ 'ऊपालीला' और 'सुखदेवलीला' नाम से मिले है। ग्रंथो का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है :—

(१) ऊषाचरित्र—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८८८। विषय—ऊषाअनिरुद्ध की कथा का वर्णन।

(२) सुखदेव लीला—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्री शुकदेव मुनि की कथा का वर्णन।

रचयिता का कोई परिचय नहीं मिलता। परंतु संतो और गुरु के प्रति आदर भावना व्यक्त करने के कारण ये कोई सत जान पडते है। सभवत. ये खोज विवरण (२६–३१२) मे आए 'गुरुमहिमा' के रचयिता है। उक्त विवरण मे रचयिता को सतनामी सप्रदाय का अनुयायी और १९वी शताब्दी मे वर्तमान बताया है।

३०२. मुरलीदास—इनकी 'बारामासी' नामक रचना मिली है जिसका विषय शृंगार है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। अपने पूर्ववर्ती और पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न है या नही, कुछ निश्चित नही होता।

३०३. मुरलीधर (कविराई)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या २६।

३०४. मुरलीधर—इनके दो ग्रथ 'नल चरित्र' और 'रामचरित्र' मिले हैं। जिनका उल्लेख क्रमशः खोज विवरण (१२–११७ और ३२–१४८) मे हो गया है। उक्त विवरणो के अनुसार ये माथुर ब्राह्मण, आगरा निवासी, दिनमणि के पुत्र और सवत् १८१४ के लगभग वर्तमान थे।

ग्रंथों की प्रस्तुत प्रतियो में इनका विस्तृत विवरण मिलता है। वशवृक्ष इस प्रकार है :—

परमानद सतावधानी (अकबर के काल मे तथा आश्रय मे)
कपूरचंद
पुरुषोत्तम (शाहजहाँ काल तथा आश्रय मे)
प्रेमराज
पृथ्वीराज
दिनमणि (ज्योतिषी)
मुरलीधर (मुहमदशाह के आश्रित)

उपर्युक्त सभी लोग विद्वान् तथा कवि थे। परमानद (सतावधानी) गगा यमुना के बीच गभीरौपुरी मे रहते थे। पश्चात् कपूरचद अर्गलापुरी (कालिदी तट) चले गए। और तब से ये लोग वही रहने लगे। रचयिता दिल्ली के बादशाह मुहमदशाह के आश्रित थे। नादिरशाह का दिल्ली पर आक्रमण होने के कारण ये घर पर चले आए और राम भक्ति की ओर प्रवृत्त हुए :—

"गंगा जमुन के मधि गभीरौ पुरीन कौ गाऊ है।
वहु कोट ऊँचौ सुघर नीकौ परम उत्तम ठाऊ है॥
शुभ सरोवर तट विराजत सिद्ध वीरेश्वर थली।
उन अधिप कौ धर्मज्ञ कीनौ कृपा करि भांतिन भली॥
माथुर वसै है जामकै तहां सजै सदन सुहावनें।
मुनि से लसत है निगम आगम गुनन ज्ञान बढ़ावने॥
उनही में 'परमानंद' प्रगटे पढी विद्या जिन भली।
गुन गन सुनत ही वोलि लीनौ आगरे अकबरवली॥
चरचा भई दरबार के मधि रीझि के अकबर कह्यौ।
हम कह्यौ तुमहिं सतावधानो आन में नहिं गुन लह्यौ॥
बकसीस कीनी बहुत उनकौं मिश्र की पदवी दई।
उन वास अपने ग्राम राष्यौ चाकरि लांकरि रई॥
उनके सनाभि 'कपूरचंद' तिन वास अर्गलपुर कियो।
ढोला मधुरिबा कालिंदी तट सदन बसिबे को लियौ॥

वे बसे प्राय कुटुंब के युत सील गुन मति षानि हैं ।
सबहीन जान्यौ सवन मान्यौ सवत सौ हित वांनिहैं ।।
तिनके तनय 'पुरुषोत्तम' सु जिनकी सुनी कविता अतिभली ।
बिल्लीस के सेनापति की चाकरी तिनकौं फली ।।
वे मिले साहिजहा बली सौ मिली वकसीस प्यार मैं ।
सोभा बढ़ाई साहि जिनकी कबिन के दरबार में ।।
तिनके भये सुत 'प्रेमराज' न चाकरी चित में धरी ।
मिलबो करै सज्जन नहीं सौ जव का सहजें करी ।।
तिनके 'सुप्रथ्वीराज' तिनने लह्यौ गुन अरु ग्यान है ।
सबही सराहै सुघर ताकौ परम बुद्धि निधान है ।।
तिनके तनय 'दिनमणि' भए जिन ग्रंथ ज्योतिष के पढ़े ।
. . . . ।।
तिनके सुतन मे भयौ 'मुरलीधर' कछुक गुनवान है ।
कवि कोविदन ने कृप करिके लई कविता मानिहै ।।
दिल्ली महम्मद साहि सौ मिलि चाकरी हूँ करि लई ।
औरो अमीरनि कृपा करि मनरीति के बकसिस दई ।।
यह कथा अपनी कही में अब ग्रंथ को कारन कहौ ।
इक बार समयौ भयौ ऐसौ थिर न काहू को लहौ ।।
पश्चिम दिशा तें प्रबल आयौ शत्रु शोर बढ़ाय कें ।
उन दाबि लीनो राज दिल्ली भजे सब भय पाय कें ।।
उन किते मारे किते लूटे किते कीने बंदि में ।
केतेक अपने संग लीनें फसे वाकी फंदि में ।।
वह गयो वहां हिदुवान के मधि राज औरें ह्वै गयौ ।
सब मिटि गई गुन ज्ञान चर्चा कृपन जग सिगरौ भयौ ।।
तब चित्त आई हौंहु चाकर चरित बरनौ राम कौ ।
वे नेंक हू जौ कृपा करिहै तो सबै हौ काम कौ ।।

उक्त उद्धरण से पता चलता है कि परमानद शतावधानी को अकबर ने 'मिश्र' की उपाधि दी थी, जो इनकी वश परपरा मे चलती रही । वास्तव मे ये माथुर ब्राह्मण थे ।

ग्रथों की वर्तमान प्रतियो मे रचनाकाल क्रमश सवत् १८१४ और सवत् १८१८ है और लिपिकाल क्रमशः सवत् १९१० और सवत् १९०९ ।

३०५. मोकमदास—इनकी एक 'बाराखडी' मिली है जिसमे 'क' से लेकर 'क्ष' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहे चौपाइयाँ रचकर भगवद्भक्ति और ज्ञानोपदेश किया गया है । रचनाकाल संवत् १८३५ और लिपिकाल सवत् १८४० है ।

रचयिता संभरपुरबावन प्रदेश मे स्थित खडेल स्थान के अतर्गत जोगीपुरा के रहने वाले थे—

"संभरपुर बावन जग प्रधान ।
सुखवासी जोगीपुरा खंडेल नगर सो थान ।।"

अन्य विवरण उपलब्ध नही । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

३०६. मोतीलाल—इनके रचे 'गणेश पुराण' की दो प्रतियाँ और मिली है । पिछले खोज विवरणो (१–९७; ६–२००, २३–२८२; २६–३०९ ए. से ई. तक) मे इनका उल्लेख हो चुका है । उक्त विवरणों के आधार पर इनका जन्म काल संवत् १५९७ है । अन्य वृत्त का कोई उल्लेख नही । इस बार इनके निवास स्थान के संबंध में पता चला है—

"नाग नगर के प्रगणः नौस्ता सुभ ग्राम ।
सुरसर के तट बसत है तहा है कवि को धाम ॥
षट जोजन है प्राग ते पछिम दिसि सो नाउ ।
बसै विप्र बुद्धिमान तह नौवस्ता जेहि नाउ ॥"

इसके अनुसार ये प्रयाग से छह योजन पश्चिम नागनगर परगना के अंतर्गत गंगा तट पर बसे नौस्ता (नौवस्ता) ग्राम के निवासी थे । उक्त ग्राम में 'बुद्धिमान विप्र बसते थे' से जान पड़ता है कि ये ब्राह्मण थे । ग्रथ की प्रस्तुत प्रतियो मे रचनाकाल नही है । लिपिकाल क्रमशः सवत् १८७२ और १७६६ है ।

३०७. मोहन—इनके तीन ग्रथो—(१) आनद लहरी, (२) केलि कल्लोल और (३) मोहन हुलास—के विवरण लिए गए है । दूसरा ग्रथ पहले भी मिल चुका है, देखिए खोज विवरण (१७–११२) । शेष ग्रथ नए है । रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका उल्लेख नीचे किया जाता है :—

(१) आनंद लहरी—रचनाकाल अज्ञात । लिपिकाल सवत् १७८६ । **विषय**—आध्यात्मिक प्रेम का वर्णन और सयोग शृगारान्तर्गत अद्वैत भावना की विशेषता का वर्णन है ।

(२) कल्लोल केलि—रचनाकाल अज्ञात । लिपिकाल संवत् १७८६ ई० । **विषय**—अद्वैत भावना के रूप मे सयोग शृंगार का माहात्म्य वर्णन ।

(३) मोहन हुलास—रचनाकाल अज्ञात । लिपिकाल सवत् १७८६ । **विषय**—संयोग और वियोग शृगार का वर्णन ।

प्रस्तुत ग्रथो द्वारा रचयिता के सबध मे कुछ पता नही चलता । परतु उपर्युक्त खोज-विवरण और अन्य खोज विवरण (३–४) मे इनके संबध मे इस प्रकार लिखा है :—

"उपनाम सहज सनेही, मथुरा निवासी, शिरोमणि के पिता, बादशाह जहाँगीर के आश्रित और संवत् १६६७ के लगभग वर्तमान थे ।

३०८. मोहनदास—ये 'दत्तात्रेय लीला' के रचयिता है । ग्रथ मे श्रीकृष्ण द्वारा उद्धव् को ज्ञानोपदेश और दत्तात्रेय की लीला का वर्णन है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत १८५३ है । ग्रथ की प्रस्तुत प्रति बहुत अशुद्ध लिखी गई है ।

रचयिता के विषय मे भी कोई विवरण नही मिलता । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

३०९. मोहनदास 'मिश्र'—ये 'भावचद्रिका' ग्रथ के रचयिता है । रचनाकाल १८५१ और लिपिकाल सवत् १९१५ है । ग्रथ प्रसिद्ध सस्कृत ग्रथ गीत गोविद का हिंदी मे पद्यबद्ध अनुवाद है । रचयिता ने ग्रथ की प्राचीन भाषा टीका देखने के पश्चात् यह अनुवाद किया । काव्य की दृष्टि से अनुवाद सरस है । खोज विवरण (५–७२) मे इसका उल्लेख हो गया है । उक्त खोज विवरण के अनुसार रचयिता का परिचय इस प्रकार है :—

"ब्राह्मण, उपनाम शिवराम, सभवत. चदपुरी के समीप पत्तनपुर निवासी, कपूर मिश्र के पुत्र, संवत् १८५१ के लगभग वर्तमान और चरखारी नरेश महाराज मधुकरशाह के वंशजों के कुल पुरोहित थे ।"

प्रस्तुत प्रति द्वारा इनके आश्रयदाता का नाम 'सिंघनृप' था, जो उपर्युक्त महाराज मधुकर शाह के वशज ही थे ।

३१०. मोहनलाल—ये 'फूलमंजरी' और 'रंगमजरी' के रचयिता है । ग्रंथों का विवरण इस प्रकार है :—

(१) **फूलमंजरी**—रचनाकाल सवत् १८४५ । लिपिकाल अज्ञात । **विषय**—प्रत्येक दोहे मे एक फूल का नामोल्लेख कर श्रीकृष्ण प्रेम का वर्णन ।

(२) **रंगमंजरी**—रचनाकाल संवत् १८३७। लिपिकाल अज्ञात। विषय—शृंगार-विषयक कविता कर उनमे रंगों का नामोल्लेख किया गया है।

रचयिता भरतपुर राज्य के अंतर्गत कुम्हेर स्थान के निवासी थे। पिता का नाम केशव था। खोज विवरण (३८–६८) मे उल्लिखित 'सगुनावली' के रचयिता भी यही है।

३११. यशोधर (?)—ये 'भास्वति भाषा टीका' के रचयिता मान लिये गए है। ग्रंथ के प्रत्येक अध्याय की पुष्पिका मे यह नाम आता है। सभव है, ये मूल सस्कृत ग्रथ के रचयिता हों। अन्य सूत्र द्वारा कोई वृत्त नही मिलता। ग्रथ का विषय ज्योतिष है।

रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति भी खडित है। रचयिता खोज में नवोपलब्ध है।

३१२. रघुनंदन—इन्होंने 'द्रौपदी स्वयंवर' की रचना महाभारत के आदिपर्व के आधार पर की है। रचनाकाल, लिपिकाल एक ही सवत् १६८० वि० विदित होता है। ग्रथ की पुष्पिका के पश्चात् दो सोरठे दिए है, जो रचयिता के ही रचे हुए जान पडते है। पहले सोरठे मे छदो की संख्या दी गई है और दूसरे में संवत् १६८० का उल्लेख है।

संभव है, ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मूल प्रति ही हो अथवा उसी काल की लिखी हो। रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३१३. रघुनाथ वंदीजन—इनके 'रसिकमोहन' ग्रथ का विवरण लिया गया है। ग्रथ में अलंकारो का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १७६६ वि० है। लिपिकाल दिया नही। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है।

रचयिता वंदीजन थे और काशी मे निवास करते थे। काशीनरेश महाराज बरिबड सिह इनके आश्रयदाता थे, उन्होने प्रसन्न होकर इन्हे 'चौरा' नामक ग्राम दिया था। खोज विवरण (३–५६; २३–३२६ ई० एफ०) मे प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है।

३१४. रघुनाथ कवि—इन्होंने सस्कृत ग्रथ 'रसमजरी' का हिंदी पद्यानुवाद किया है। ग्रंथ मे रस और नायिका भेद का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचयिता का इसके द्वारा कोई विवरण नही मिलता। खोजविवरण (२६–३६७) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख है। उसमें इनका वृत्त इस प्रकार है —

ब्राह्मण, सवत् १६६७ के लगभग वर्तमान और प्रसिद्ध कवि गग के शिष्य थे।

३१५. रघुनाथदास रामसनेही—इनका उल्लेख खोज विवरण (२६–३७०; २३–३२७; २६–२७८ और २०–१३६) मे हो चुका है। उनके अनुसार इनका वृत्त इस प्रकार है :—

"इन्हें लोग जन रघुनाथ और रामसनेही भी कहते थे। अयोध्या निवासी महंत। देवदास के शिष्य। सीतापुर जिले मे जन्म। रामसनेही सप्रदाय के अनुयायी। संभवत: १६वी शताब्दी के अंत और बीसवी शताब्दी के आरभ मे वर्तमान।"

इस बार 'ज्ञान ककहरा' इनका नया ग्रथ मिला है। ग्रथ मे ज्ञानोपदेश और ईश्वरभक्ति का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६२० वि० है। रचयिता के सबध मे कोई नवीन बात प्रकट नही होती।

३१६. रघुबर—इनके नाम से 'ग्वाल पहेली' और 'द्रौपदी की स्तुति' नामक रचनाओं के विवरण लिए गए है। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका उल्लेख इस प्रकार है :—

(१) **ग्वाल पहेली**—रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल सवत् १८६०। विषय—**ग्वाल बालो के साथ श्रीकृष्ण लीला का वर्णन।**

(२) **द्रौपदी की स्तुति**—रचनकाल अज्ञात । लिपिकाल संवत् १८९० । **विषय**—द्रौपदी के चीरहरण का वर्णन ।

इन ग्रथो द्वारा रचयिता के सबध मे कोई विवरण नही मिलता । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

३१७. रज्जबजी—ये खोज विवरण (१७–१४२) और खोज विवरण १६०२ की परिशिष्ट एक की सख्या १६० मे आए रज्जब हैं, जो दादूदयाल जी के अनुयायी थे । उक्त खोज-विवरणों मे इनकी 'सर्बांगी' का उल्लेख है । इस बार इनके कुछ कवित्त मिले है, जिनमे संतमतानुसार ज्ञानोपदेश का वर्णन है । 'दादूजी' का उल्लेख इनमे भी पाया जाता है । रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है ।

३१८. रणधीर सिंह राजा—इन्होने सवत् १८९४ वि० मे 'पिगल नामार्णव' की रचना की जो संवत् १९२० मे बनारस मे छापी गई थी । छापनेवाले का और छापेखाने का नाम ग्रंथ में इसप्रकार है—

"बनारस मे मुहल्ला बागहाडा बिस्वनाथ लाल के सुधा निवास छापेखाने मे छपी शिष्य सरदार कवि के नारायणदास कवि ने छपाई ।"

ग्रंथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है । रचयिता शिरमौर वंशावतंस सिगरामऊ (जौनपुर) के अधिपति थे । खोज विवरण (६–३१६ ए; २३–३५२ सी) मे प्रस्तुत ग्रंथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है ।

३१९. रनजीत—इनका 'नासिकेतोपाख्यान' मिला है । ग्रथ मे नासिकेत ऋषि की कथा का वर्णन है । रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है । ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है ।

रचयिता का विवरण भी अप्राप्त है । स्वामी चरणदास जी का भी मूलनाम रणजीत था तथा उन्होने भी 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की । सभव है, वे और प्रस्तुत रचयिता एक ही हों । प्रस्तुत ग्रंथ की प्रति खडित है जिसके कारण दोनो ग्रथों का मिलान न हो सका ।

३२०. रमताराम—इनका 'गगाष्टक' मिला है, जिसमे गंगाजी की स्तुति है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता : खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है ।

३२१. रमयोज—इनकी 'बाराखडी' मिली है, जिसमे 'क' से लेकर 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर ज्ञानोपदेश किया है । हस्तलेख अत्यत अशुद्ध लिखा है ।

रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही चलता । रचयिता का नाम केवल पुष्पिका में आता है । अन्य विवरण नही मिलता । खोगज मे ये नवोपलब्ध है ।

३२२. रसनिधि—इनका 'बलदेवषट्क' नामक ग्रथ मिला है । ग्रथ में श्री बलराम जी का यश और महिमा वर्णित है । रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है । रचयिता का वृत्त भी अप्राप्त है । संभवत ये दतिया वाले पृथ्वीसिह उपनाम 'रसनिधि' है । इनके लिये देखिए, खोज विवरण (६–९५; ३–९४; २६–४०२, ५–७३) और (१२–१५३) ।

३२३. रसरासि (रामनारायण)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है । देखिए, भूमिका भाग में सख्या ४१ ।

३२४. रसरूप—इनका 'तुलसीभूषण' नामक ग्रथ मिला है, जिसमे गोस्वामी तुलसीदास के ग्रथो, विशेषतः रामायण, से उदाहरण देकर अलकारो (शब्दालकार, अर्थालंकार और चित्रालंकारो) का वर्णन है । रचनाकाल संवत् १८११ वि० है, लिपिकाल दिया नहीं । ग्रंथ का उल्लेख खोज विवरण (४–११) में भी है ।

प्रस्तुत ग्रंथ द्वारा रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता, पर पिछले खोज विवरणों के आधार पर इनका जन्मकाल सवत् १७८८ है। इन्हे सुकवि की उपाधि मिली थी और ये सस्कृत और फारसी भाषाओ के विद्वान् थे। देखिए, खोज विवरण (६–२६१, २६–४०३, ५–७६)।

३२५. रससिंधु (श्रीकृष्ण लाला जी)—इनके 'पड्ऋतुमार्तंड' नाम से पदो का संग्रह मिला है। पदो का विषय भक्ति और श्रीकृष्णलीला है। रचनाकाल सवत् १६३० है। लिपिकाल का उल्लेख नही।

रचयिता का वास्तविक नाम 'श्रीकृष्ण लाला जी' था, 'रससिधु' उपनाम था। ये काशीस्थ गोपाललाल जी के मंदिर के महाराज, गो० गिरिधरजी महाराज की पुत्री श्यामाबेटी के पुत्र थे। अन्य वृत्त अप्राप्य है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३२६. रसानंद—इनकी 'रासपचाध्यायी' और 'बारहमासी' नाम से दो रचनाएँ मिली हैं। प्रथम ग्रंथ का रचनाकाल सवत् १८८६ है। लिपिकाल दिया नही। विषय नाम से ही स्पष्ट है। दूसरे ग्रथ का विषय गोपियो का विरह शृंगार है। इसमे रचनाकाल, लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता 'रासपचाध्यायी' के अनुसार स्वामी विट्ठलेश के शिष्य थे। खोज विवरण (६–२६०) और (४१–२१७ तथा पं० २२–६५) मे आए रसानद भी यही है। उक्त विवरणो के आधार पर इनका वृत्त इस प्रकार है :—

"वास्तविक नाम रसानद भट्ट, गोकुल निवासी, सवत् १८६६ के लगभग वर्तमान, भरतपुराधीश महाराज बलवंत सिह के आश्रित और वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे।"

३२७. रसिक—ये 'दानलीला' के रचयिता है। रचना मे श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन है। रचनाकाल अप्राप्त है। लिपिकाल 'मानमाधुरी' नामक अन्य ग्रथ के आधार पर संवत् १८८८ है। दोनो ग्रथ एक ही हस्तलेख मे है और एक ही लिपिकर्त्ता के लिखे है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरणो में इस नाम के कई रचयिता आए हैं, पर उनमे से ये कोई एक है या नही, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

३२८. रसिकदास (वास्तविक नाम गोपिकालंकार या मट्टू जी महाराज)—इनके कीर्तनो के 'कीर्तन सग्रह' या 'कीर्तन समूह' नाम से दो सग्रह मिले है। सग्रहो मे श्री वल्लभ-संप्रदाय के सिद्धातानुसार भक्ति और लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल केवल कीर्तनसमूह मे सवत् १६१५ दिया है।

रचयिता, दूसरे सग्रह की पुष्पिका के आधार पर, गो० द्वारिकेश जी के पुत्र थे। इनका वास्तविक नाम गोपिकालकार या मट्टू जी महाराज था। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

३२६. रसिकराय जी—इन्होने 'कलिचरित्र' की रचना की। ग्रथ मे कलियुग के प्रभाव द्वारा ब्राह्मण, क्षत्रियो के विकृत संबध का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता का विवरण भी अप्राप्त ही है। पिछले खोजविवरणो मे इस नाम के दो रचयिताओं का उल्लेख है, पर उनमे से किसी एक के साथ इनका साम्य स्थापित करने के लिये कोई प्रमाण नही मिलता।

३३०. रसिकलाल या रसिक सुजान—इन्होने सवत् १७२४ मे 'भाषा करुणानंद' की रचना की, जो अनुवाद ग्रंथ है, और जिसमें श्रीकृष्ण भक्ति का प्रतिपादन है। मूल ग्रंथ श्रीकृष्णदास (सं० १५२०) रचित सस्कृत मे है :—

"राधावल्लभ चरन कमल तट वृंदावन जहाँ ।
सदा स्याम रस त्रषित कर्यौ हित कृष्णदास तहां ।
व्यौम जुगल इषुचंद १५२० जन संख्या गई वितीति ।
कृष्ण जन्म अष्टमी सुदिन भयौ ग्रंथ शुभ रीति ।।
करुणानंद पूरण भयौ श्री कृष्णदास कृत चारु ।
अद्भुत अमल प्रबंध यह रसिकनि कौ आधारु ।।१।।

:o: :o: :o: :o:

जैसी मोमति है कछू ताही के उनमान । भाषा करुणानंद की कीनी 'रसिकसुजान' ।।१।।"

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १८१७ मे किमी डूँगरसिह के द्वारा लिखी गई। रचयिता वृंदावन मे रहते थे और राधावल्लभी सप्रदाय के गो० दामोदर हित के शिष्य थे। खोज विवरण (१२–१५७) मे ये इम ग्रथ के साथ उल्लिखित है।

३३१. राघवदास या राघोदास––इनकी तीन रचनाओं––'कार्त्तिकमाहात्म्य', 'नागलीला' और 'रुक्मिणीमगल' के विवरण लिये गए है। 'रुक्मिणीमगल' का उल्लेख खोज विवरण (४१–२२१) मे हो चुका है, शेष ग्रथ नवीन है।

(१) कार्तिकमाहात्म्य––रचनाकाल सवत् १८४८। लिपिकाल दिया नही। **विषय**—पद्मपुराण के आधार पर कार्तिक माहात्म्य का वर्णन।

(२) नागलीला––रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८५३ वि०। **विषय**––श्रीकृष्ण की नागलीला का वर्णन।

(३) रुक्मिणीमंगल––रचनाकाल संवत् १८४९। लिपिकाल दिया नही। **विषय**––श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का विवाह वर्णन।

रचयिता का नाम राघवदास के अतिरिक्त 'राघोदास' भी दिया है। ग्रथों के द्वारा इनका और कोई वृत्त नही मिलता। उपर्युक्त खोज विवरण मे इन्हे उपाध्याय लिखा है। ग्रथ स्वामी (प० महेशप्रसाद मिश्र, ग्राम, लेदहावरा, डाक, अटरामपुर, जिला, इलाहाबाद) से पता चला कि ये संभवत. नवाबगज (सोराव तहसील, इलाहाबाद) के रहनेवाले थे। इनके अतिम वशज रामगुलाम उपाध्याय थे जिनको गत हुए आठ-दस वर्ष हुए है।

इनकी रचनाएँ साहित्यिक है, जिनमे जान पडता है कि ये अच्छे कवि रहे। प्रस्तुत ग्रंथों की तीनो प्रतियाँ स्वयं रचयिता के हाथ की लिखी विदित होती है। इनमे किसी लिपिकर्ता का उल्लेख नही पाया जाता। लिपिकाल केवल 'नागलीला' मे दिया है, जो अतिम रचना जान पड़ती है।

३३२. राजमती (?)––इनके नाम मे "छप्पैरामायरण' का विवरण लिया गया है। पुस्तक मे अत्यंत सक्षेप में रामचरित्र का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल १२५९ फसली है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध है।

३३३. राजसिंह (महाराजा)––इनके 'बाहुविलास' ग्रथ की एक प्रति विवृत हुई है। ग्रंथ मे श्रीकृष्ण और जरासध का युद्ध अत्यत ओजपूर्ण भाषा मे वर्णित है। वीररस का यह उत्तम काव्य है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८२७ है।

रचयिता रूपनगर, कृष्णगढ के राजा प्रसिद्ध है। पिछले खोज विवरण (२–७४) मे प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है। उक्त खोज विवरण के आधार पर ये महाराज सावत सिंह (नागरीदास) और सुदरि कुअरि के पिता थे। वृंद कवि से इन्होंने कविता करनी सीखी। इनका संवत् १७६३ से १८०५ तक राज्यकाल था।

३३४. राजाराम (गंगारामसुत) —इन्होंने अपने रचे 'वल्लभकुलकल्पवृक्ष' में गो० वल्लभाचार्य से लेकर संवत् १७७९ तक की उनकी वंशावली दी है। जान पड़ता है, रचयिता सं० १७७९ तक ही जीवित रहे। यदि उसके पश्चात् जीवित रहते तो आगे की वंशावली भी देते।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति को देखने से पता चलता है कि यह स्वयं रचयिता के हाथ की लिखी है। इसके अनुसार रचयिता गुजरात में राजनगर प्रदेश के अंतर्गत सारंगपुर के निवासी थे। पिता का नाम गंगादास था तथा वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे।

खोज में ये नवोपलब्ध है।

३३५. राधाकृष्ण अथवा कृष्णकवि—इनका संगीत विषय पर रचा हुआ 'रागरत्नाकर' ग्रंथ मिला है। ग्रंथ खोज विवरण (९–२३३) में आ चुका है। उक्त विवरण के अनुसार रचयिता जयपुर निवासी, गौड़ ब्राह्मण, संवत् १८५३ के लगभग वर्तमान और जयपुर के राव राजा भीमसिंह के आश्रित थे। गान विद्या में ये बड़े निपुण थे।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का पता नहीं चलता। रचयिता का दूसरा नाम 'कृष्ण कवि' था। इस बार विशेष इतना ही पता चला कि इनके आश्रयदाता जयपुर के अंतर्गत उनियारौगढ़ के थे —

"देस सुनागर चाल में गढ़ उनियारौ नाम।
राजत राव नरेश जहिं भीमस्यंघ गुनधाम॥"

३३६. राधाकृष्ण द्विवेदी—इनकी 'औषधि संग्रह कल्पवल्ली' का विवरण लिया गया है। ग्रंथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल उल्लिखित नहीं। लिपिकाल संवत् १८९० है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता। खोज में इनका पता प्रथम बार लगा है।

३३७. रामकवि या 'द्विजराम'—'पिंगल' और 'मंगलशाखोच्चार' नाम से इनकी दो रचनाएँ मिली है। प्रथम ग्रंथ का विषय स्पष्ट है। दूसरे में शिव पार्वती विवाह और उनका शाखोच्चार वर्णित है। ग्रंथों की प्रस्तुत प्रतियों में न तो रचनाकाल का उल्लेख मिलता है, और न लिपिकाल का ही।

रचयिता का दूसरा नाम 'द्विजराम' था। ये जाति के ब्राह्मण और डीग (भरतपुर) के निवासी थे। अन्य वृत्त नहीं ज्ञात है। खोज में ये नवोपलब्ध है।

३३८. रामकृष्ण—इनकी 'ग्वारनी झगड़ा' का उल्लेख 'दानलीला' नाम से खोज विवरण (२६–३८२) में हो चुका है।

पुस्तक की प्रस्तुत प्रति खंडित है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल संवत् १८३६ है। रचयिता का अब तक कोई विवरण नहीं मिल सका।

३३९. रामकृष्ण—इनकी 'बिनैपच्चीसी' रचना में द्रौपदी चीरहरण का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९४३ दिया है।

रचयिता का कोई वृत्त नहीं मिलता। संभवतः ये पूर्ववर्ती रचयिता है।

३४०. रामकृष्ण—इनके नाम पर 'लक्ष्मी चरित्र' ग्रंथ मिला है, जो खोज विवरण (४१–२२२) में आ चुका है। रचयिता का नाम उक्त विवरण में ही मिला है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति पूर्ण होते हुए भी उसमे रचनाकाल और रचयिता के नाम तक का उल्लेख नहीं मिलता। लिपिकाल सन् १२६५ (फसली) है।

३४१. रामगरीब चौबे उपनाम 'गरीबजू'—इनके भक्ति, शृंगार और सामाजिक विषयक कुछ 'कवित्त' मिले है। कवित्तो का रचनाकाल ज्ञात नहीं। लिपिकाल संवत् १९१७ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है। ये कुछ सामाजिक सुधारों के पक्षपाती विदित होते है। इन्होंने मछली मास खाकर वैष्णव कहलाने वालो और अन्य बुरे विचार फैलाने वाले व्यक्तियों की जो समाज को दूषित करते है, खूब निदा की है।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३४२. रामगुलाम—इन्होंने 'रामतैतीसी' की रचना की। रचना मे 'अ' से लेकर 'ऐ' तक के और 'क' से लेकर 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर सक्षिप्त रामचरित्र वर्णित है।

पुस्तक की प्रस्तुत प्रति यद्यपि पूर्ण है, पर इसमे रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल संवत् १८८३ है। रचयिता का वृत्त नही मिलता। सभवत: ये खोज विवरण (९–२४७) (६–२१३ और १७–१८७) मे आए रामगुलाम द्विवेदी है, जो मिर्जापुर निवासी, तुलसीकृत रामायण के विशेष मर्मज्ञ और लगभग सवत् १८७० से लेकर १९०१ तक वर्तमान थे।

३४३. रामचंद्र—इनके कुछ 'कवित्त' रामचद्र जी के विरह सबधी मिले है। रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा।

३४४. रामदया (दयाराम)—इनके दो ग्रथ 'सभाजीत' और 'वेद सामुद्रिक' मिले है। ग्रथो का उल्लेख खोज विवरण (२३–३४२) मे हो गया है। प्रस्तुत प्रतियो द्वारा इनके रचनाकाल औ लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

रचयिता के सबध मे अब तक कोई विवरण नही मिला।

३४५. रामदास—ये 'रुक्मिणीब्याह' के रचयिता है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही है। रचयिता का विवरण अज्ञात है। सभवत: ये खोज विवरण (६–२१२; २९–२५९) मे आए रामदास है, जो मलिनी (मालवा सिरोज के निकट) निवासी और मनोहरदास के पुत्र थे। माता का नाम वीरावती था। प्रथम खोज विवरण मे स्थान का नाम 'मालती' लिखा है और दूसरे मे मालिनी। परतु प्रथम खोज विवरण मे विवरण पत्र नही छपा है। दूसरे खोज विवरण मे विवरण पत्र छपा है, जिसमे वृत्त का अश पूरा उद्धृत है इसलिये इसी के अनुसार वृत्त दिया है।

३४६. रामदास—इनका 'गगा जी का ब्यावला' मिला है। जिसके साथ ये खोज विवरण (२६–३८१) म उल्लिखित है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही है।

रचयिता का इस बार भी कोई वृत्त उपलब्ध नही हुआ।

३४७. रामदास बरसानिया—ये गोवर्धन लीला' और 'राधाविलास' ग्रंथो के रचयिता है। ग्रंथो का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है:—

(१) गोवर्द्धन लीला—इसकी तीन प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल किसी मे नहीं। लिपिकाल एक प्रति मे सवत् १८२७ है। विषय—गोवर्धन लीला का वर्णन।

(२) राधाविलास—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन।

रचयिता बरसाना (मथुरा मे नदगाँव के निकट) के रहनेवाले थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे नवोपलब्ध है।

३४८. रामनाथ प्रधान—इनकी 'रामहोरी रहस्य' नामक पुस्तक का इस बार भी विवरण लिया गया है। पुस्तक खोज विवरण (१–८) मे आ चुकी है। उक्त विवरण के अनुसार रचयिता का उपनाम 'प्रधान' था। ये सवत् १८८७–१९१२ के लगभग वर्तमान, रीवाँ राज्य के मंत्री घराने के वंशज और रीवाँ नरेश के आश्रित थे। प्रस्तुत ग्रंथ की रचना इन्होने प्रयाग मे

की थी। ग्रंथ का रचनाकाल सवत् १६१२ है और इसकी प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल संवत् १६१६ है।

३४६. रामप्रगाश गिरि—इनके निम्नलिखित तीन ग्रंथों के विवरण लिए गए है :—

(१) **काशी वर्णन** (?)—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—काशी और काशी स्थित शिवलिंग माहात्म्य वर्णन।

(२) **नासकेत पुराण**—रचनाकाल, लिपिकाल सवत् १८८३। इस दृष्टि से हस्तलेख मूल प्रति है। विषय—पुराणों के आधार पर नासकेत ऋषि की कथा का वर्णन।

(३) **पदावली**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन। उक्त सभी ग्रथ काव्य की दृष्टि से उत्तम है।

रचयिता हुरहुरी ग्राम (जौनपुर) के रहनेवाले थे। जाति के गुसाईं (अतीथ) थे। इनके वशज अभी तक उक्त ग्राम मे रहते है। इनके गुरु का नाम हरिहर था।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३५०. रामप्रसाद—इन्होने सवत् १६१२ मे 'अर्जुन गीता' नामक मूल सस्कृत ग्रथ का हिंदी मे अनुवाद किया। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १६१२ की लिखी है।

रचयिता लखनऊ (लछनापुरी) के निकटस्थ जयसार (?) ग्राम के थे।

> **"लछनापुरी रुचिर अति विमला। प्रगट प्रभाव जहाँ पर कमला॥**
> **तहाँ सुखद यह सुरस प्रकासा। 'रामप्रसाद' दास हरिदासा॥**
> **सो जयसार ग्राम लो लावा। भावा तंह निज धाम सोहावा॥"**

प्रस्तुत प्रति की लिपि फारसी है। जिसके कारण ग्राम का नाम ठीक ठीक पढ़ा नही गया। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३५१. रामफल—इन्होने सस्कृत ग्रथ 'तत्व सामुद्रिक' की हिंदी गद्य मे टीका की। पुस्तक सवत् १६१७ मे स्वय टीकाकार द्वारा बनारस मे गोपाल चौबे के छापेखाने मे छपवाई गई थी। टीका का समय ज्ञात नही, फिर भी उक्त सवत् के लगभग ही टीका हुई होगी।

टीकाकार का कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम बार ही लगा।

३५२. रामबक्स—ये पिछले खोज विवरण (२६–२८७) मे आ चुके है, जहाँ इनके तीन ग्रथो का उल्लेख हुआ है। उक्त विवरण में इनका, केवल इतना ही परिचय है कि ये ब्राह्मण थे, अन्य वृत्त नही दिया है।

इस बार इनके 'रामाश्वमेध' ग्रथ का विवरण लिया गया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६३२ दिया है। ग्रथ साहित्यिक है।

३५३. रामबछ या कविबछ—'भागवत दशम स्कध' के ये रचयिता है। ग्रथ मे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई निश्चित उल्लेख नही, पर जहाँ तहाँ १८६१ और १८७० का उल्लेख होने से पता चलता है कि इन्ही सवतो के लगभग यह लिखा गया होगा।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३५४. रामरतन लघुदास—इनके निम्नलिखित दो ग्रथों के विवरण लिए गए है :—

(१) **हनुमान जयति**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—हनुमान जी की विरुदावली का वर्णन।

(२) **कृष्णध्यानाष्टक**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—राधाकृष्ण की उपासना का वर्णन।

रचयिता हरियाणा (पंजाब) के विधासी गाँव के रहने वाले भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण थे। पिता का नाम मनिराम और गुरु का नाम मयाराम था। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३५५. रामरसिक—इन्होंने 'भागवत एकादश स्कध' का अनुवाद किया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८८० है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। सभवतः ये खोज विवरण (६–२१५) मे आए रामरसिक है। जो विरक्त साधु थे और झूँसी (प्रयाग) मे रहते थे। गगागिरि उनके गुरु का नाम था।

३५६. राम रहस्यदास—इनका 'परम विलास' मिला है, जिसमे संत मतानुसार ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८७८ दिया है।

रचयिता का परिचय अप्राप्त है। इन्होंने ग्रथ मे जहाँ तहाँ कबीर की 'साखियाँ' उद्धृत की है, अतः ये कोई कबीरपथी विदित होते है।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३५७. रामसिंह राजा—इनके 'जुगलविलास' का विवरण लिया गया है। ग्रंथ की रचना पदो मे की गई है, जिनमे राधाकृष्ण की लीलाओ एव भक्ति का वर्णन है।

रचनाकाल सवत् १८३६ है, लिपिकाल दिया नही। काव्य की दृष्टि से कृति सरस है। पिछले खोज विवरण (१२–१४६ ए, २६–३६६ बी) मे इसका उल्लेख हो गया है।

रचयिता नरवर (ग्वालियर) के राजा प्रसिद्ध है। पिता का नाम छत्रसिह था। ये बडे काव्य रसिक और प्रतिभाशाली कवि थे। पिछले खोज विवरणो मे इनके कई ग्रथो का उल्लेख है, देखिए खोज विवरण (२६–३६६, १२–१४६, ६–२१७, ४१–२३०)।

३५८. रामहितसिंह (जन)—इनकी तीन रचनाएँ—(१) गनक आह्लादिका, (२) चानक और (३) भागवत विलासिका नाम से मिली है। प्रथम ग्रथ खोज विवरण (२६–२८४ ए, बी) मे उल्लिखित है। शेष दो ग्रथ नये मिले है। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका विवरण नीचे दिया जाता है —

(१) गनक आह्लादिका—इसकी दो प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल सवत् १८८४। लिपिकाल एक प्रति मे सवत् १८८७। विषय—फलित ज्योतिष का वर्णन।

(२) चानक—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १९१६। विषय—नीति और ज्ञानोपदेश के साथ साथ सामाजिक बुराइयो का वर्णन किया गया है।

(३) भागवत विलासिका—रचनाकाल सवत् १८८१। लिपिकाल संवत् १८८३। विषय—भागवत के अतर्गत खगोल विद्या का वर्णन। यह ग्रथ निमिच (मालवा प्रात) मे रचा गया।

रचयिता के सबध मे उपर्युक्त खोज विवरणो मे केवल इतना ही लिखा मिलता है कि वे संवत् १८८४ के लगभग वर्तमान थे। इस बार भागवत विलासिका मे इनका कुछ वृत्त मिला है। जिसके अनुसार ये जाति के सिहेल क्षत्रिय और चित्तविसाँव (आजमगढ) ग्राम के निवासी थे। माता पिता का नाम क्रमश इदल और रामगति सिह था।

३५९. रामानुजदास—इन्होंने सुप्रसिद्ध रामानुजाचार्य के भाष्य के आधार पर 'गीता' की टीका की। ग्रंथ का रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९३४ दिया है।

रचयिता का, केवल इतना ही कि वे रामानुज सप्रदाय के अनुयायी थे, और कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३६०. रामावतार दास—इन्होंने सवत् १९२५ मे 'संतविलास' नामक ग्रंथ की रचना की। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १९२८ की लिखी हुई है। इसमे प्रार्थना, नीति, शिक्षा, शृंगार और शाति रस आदि अनेक विषयो पर रचनाएँ की गई है।

रचयिता अयोध्या से बीस कोस दूर दोस्तपुर के रहनेवाले वैश्य थे। पीछे साधु हो गए। अन्य वृत्त नही मिलता। इनका प्रस्तुत ग्रंथ साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३६१. रुद्रप्रताप सिंह (राजा)—इनका रचा हुआ 'सुसिद्धान्तोत्तमरामखंड' नामक बृहद् ग्रंथ का पता चला है। जिसमे प्राचीन आर्य ग्रथो के आधार पर रामचरित्र का विस्तारपूर्वक वर्णन है। यह चद्रप्रभा प्रेस बनारस से छपा हुआ है। सुप्रसिद्ध ज्योतिषी और विद्वान् स्व० प० सुधाकर द्विवेदी ने इसका सशोधन किया था। इसमे सदेह नही कि ग्रथ साहित्यिक दृष्टि से भी बड़े महत्व का है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे किष्किधा काड और उत्तर काड ही बचे हैं। विषयानुक्रमणिका से पता चलता है कि इसमे सात काड सपूर्ण थे। सुदर काड मे तो कवि ने अपने कुल का भी वर्णन किया था।

रचयिता माडा (विंध्याचल के निकट जिला इलाहाबाद) के राजा थे, जहाँ ग्रथ की प्रस्तुत प्रति का विवरण लिया गया है। स्थानीय सूचनाओं के आधार पर ये स्वय बडे विद्वान् और प्रतिभाशाली कवि थे तथा गुणियो को आश्रय दिया करते थे। इनके पश्चात् माडा मे इन्ही के वश मे तीन राजा और हुए, जिनके नाम क्रमश इस प्रकार थे :—क्षेत्रपाल सिह, रामप्रताप सिह और रामगोपाल सिह। अंतिम राजा सतानहीन होकर तीन चार वर्ष पहले गत हो चुके है। अब गद्दी के लिये उत्तराधिकारियो मे झगडा चल रहा है।

इनका एक ग्रथ 'कौशलपथ' (अयोध्याकाड) जो प्रस्तुत ग्रथ का ही एक अश है, खोज-विवरण (३–२५) पर आ चुका है। उक्त खोज विवरण के अनुसार ये सवत् १८७७ मे वर्तमान थे।

३६२. रूप—इनके नाम से 'ज्ञानोपदेश' विषयक बिना नाम की खडित रचना का विवरण लिया गया है। रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम निश्चित रूप से तो नही मिलता, पर दो कवियो मे 'रूप' का प्रयोग होने मे वही रचयिता विदित होता है। रचना सतोचित विचारो मे युक्त है। अत रचयिता सत मतानुयायी विदित होते है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३६३. रूप—इनका 'रूपमजरी' ग्रथ मिला है, जिसमे श्रीकृष्ण सबधी पद संगृहीत है। रचनाकाल में कुछ गड़बड़ है पर अनुमान से सवत् १९०८ ज्ञात होता है :—

८ ० ९
"संवत विक्रम नृपति कौं वसु व्योमांक जुरूप।
पौस मास सित पक्ष तिथि षटी सूर अनूप।।

लिपिकाल १९२८ दिया है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३६४. रूपराम—ये "गिरिवरसमौ" के रचयिता है। ग्रथ मे श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही।

रचयिता का भी वृत्त अज्ञात है। खोज विवरण (३८–१३० और २९–२९९) में क्रमश. रूपराम सनाढ्य नाम के दो रचयिताओं का उल्लेख है, पर नही कहा जा सकता कि ये उनमे से कोई एक है या अथवा नही।

३६५. रूपसनातन—इन्होंने ब्रजभाषा गद्य मे 'विदग्धमाधव' की रचना की, जिसमें गौडीय सप्रदाय के सिद्धातो के अनुसार राधाकृष्ण की क्रीडाओं का सरस वर्णन है। ग्रथ अपूर्ण है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति से रचयिता का कोई पता नही चलता, पर ये खोज विवरण (६-२२३) में उल्लिखित रूप सनातन है। उक्त विवरण मे इनके सबध में इस प्रकार लिखा है :—

"वृंदावन निवासी, गौड़ीय सप्रदाय के वैष्णव। कहते है कि रूप और सनातन दो भाई थे। रूप राधाकुड पर और सनातन वृ दावन मे रहते थे।

३६६. रैदास—इनके नाम पर "कबीर रैदास सवाद" का विवरण लिया गया है। ग्रथ में कबीर और रैदास का निर्गुण सबधी विवाद वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का ग्रंथ द्वारा कोई विवरण नही मिलता, पर ये काशी के प्रसिद्ध संत रैदास हैं, जो स्वामी रामानद जी के शिष्य थे। खोज विवरण (२-५५, २-६७; ६-२४०) और (२६-२७६) मे इनका उल्लेख हो गया है।

कबीर और रैदास का प्रस्तुत विवाद कहाँ तक सत्य है, नही कहा जा सकता। दोनों सत एक ही गुरु के चेले थे, अत दोनों में इस प्रकार का विवाद छिड़ जाना युक्तिसगत नही जँचता। जान पड़ता है, पीछ से इनके अनुयायियों मे से ही किसी ने इसकी रचना की।

३६७. लक्ष्मीदास—इन्होने अपने 'पदगुटका' मे बखना, दादू, सुदरदास और सूरदास के भक्ति विषयक कुछ पदो का सग्रह किया है। गुटका के अत मे इनके भी दो पद है। इसका सग्रहकाल अन्य ग्रथ 'रामरक्षा कवच' के आधार पर सवत् १६०५ है। दोनों रचनाएँ एक ही हस्तलेख मे है और हस्तलेख एक ही कलम और एक ही स्याही से लिखा हुआ है।

सग्रहकर्ता का कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३६८. लखनसेनि—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनकी 'बारहमासी' की एक प्रति का विवरण लिया गया है। पुस्तक पहले खोज विवरण (४१-२३६ क, ख) मे आ चुकी है। खेद है, इस बार भी इसके रचनाकाल और रचयिता के सबध मे कुछ पता न चल सका। प्रस्तुत प्रति सवत् १८६५ की लिखी हुई है।

३६९. लखनसेनि—इनकी 'लक्ष्मीचरित' रचना की दो प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६३४ और १६३५ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण उपलब्ध नही। पिछले खोज विवरणों में आए इस नाम के रचयिताओ मे ये भिन्न प्रतीत होते है। अतः खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३७०. लखनसेनि—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग में संख्या, ४१।

३७१. लछिमनदास—इन्होने संवत् १८६५ मे 'श्रीकृष्ण चरित्र' ग्रंथ की रचना की। ग्रंथ के अनुसार इनके गुरु का नाम हीरालाल था। अन्य वृत्त अज्ञात है। पिछले खोज विवरणों मे आए इस नाम के रचयिताओं मे ये सर्वथा भिन्न है।

ग्रथ काव्य की दृष्टि से सरस है। इसकी प्रस्तुत प्रति संवत् १८७६ मे लिखी गई थी। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है।

३७२. ललित किसोरी—इनकी 'राजपोरिया लीला' नामक छोटी सी रचना मिली है। पुस्तक में श्रीकृष्ण की बाललीला का बड़ा सरस वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का विवरण नही मिलता। पिछले खोज विवरणों में इस नाम का एक रचयिता आया है, पर प्रमाणाभाव के कारण नही कहा जा सकता कि ये वही है, या उनसे भिन्न कोई और।

३७३. लाल कवि—"अंगदपैज" नाम से इनकी खंडित रचना मिली है। रचना में अंगद के दौत्य-कर्म और उसकी निर्भीकता का ओजपूर्ण भाषा मे वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का ग्रंथ द्वारा कोई परिचय नही मिलता। परतु ये खोज विवरण (२३-२४४) और (२६-२५६) मे उल्लिखित 'हनुमत-पैज' के रचयिता लाल कवि है। उक्त विवरणो मे 'हनुमत पैज' को 'सुदरकांड' के अतर्गत बतलाया है, जिससे पता चलता है कि इन्होंने 'सपूर्ण रामचरित्र" की रचना की थी। उनमें इनके जिला सुलतानपुर निवासी और १६वी शताब्दी मे वर्तमान रहने का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत खोज मे इनकी 'हनुमत-पैज' की भी खडित प्रति मिली है, पर रचनाकाल, लिपिकाल उसमें भी नहीं है।

३७४. लाल कवि—ये 'मान बत्तीसी' के रचयिता है और इस नाम के पूर्ववर्ती रचयिता से सर्वथा भिन्न है। पुस्तक मे श्रीराधा के मान का सरस वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का कोई वृत्त नही दिया है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३७५. द्विजलाल—इन्होंने संस्कृत ग्रथ 'सौदर्य लहरी' का हिंदी पद्यानुवाद किया है। अनुवाद कविता की दृष्टि से सरस है। परन्तु इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे रचनाकाल, लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय अनुपलब्ध है। इन्होंने जिस प्रकार अपना उल्लेख किया है उससे तो ये महाकवि विदित होते है —

"करुना करी तुमही दीया उर पीयो द्रविड दिशिवाल।
बड़े कविन में महाकवि भए एसे 'द्विजलाल' ॥७६॥"

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३७६. लालचंद या लब्धोदय—'पद्मिनी चरित्र (गोरा बादल रणजय)' के ये रचयिता हैं। ग्रंथ का उल्लेख खोज विवरण (३२-१३१) मे हो चुका है, जिसके अनुसार ये जैन धर्म के अनुयायी और उदयपुर के राजा हिंदूपति श्री जगतसिंह के समकालीन सवत् १७०२ (सभवत) के लगभग वर्तमान थे। इन्होंने अपना नाम लक्षोदय भी दिया है—

प्रस्तुत ग्रथ का रचनाकाल सवत् १७०७ है —

"तसु श्रुत आग्रहकरि संवत सतरं सतोतरे चैनि पुनिम शनिवारि।
नवरस सहित सरस संबंध नवो रच्यो रे निज बुधिने अनुसारि ॥१४॥

रचयिता ने अपनी गुरु परपरा भी दी है, पर वह अस्पष्ट है —

"श्री जिनमाणिग सूरि प्रगटा वाचक विनय समुद्र तासुसीस वरषव तीज गभै जाणी परे श्री हर्ष सील उठइ ॥१५॥ तास विनय चवद विद्या सागमरे वाणी सरसविलास श्री जगनामी पाठक श्री ग्यान समुद्र जीरे प्रगट तेज प्रकास ॥१६॥ साधु सिरोमणि सकल विद्या गुण शोभतारे वाचक श्री ग्यानदास तास प्रसादें सीलतरगा गुण सथुव्यारे लब्धोदय हितकाज ॥१७॥ सामिधरम ने सील तरग गुण साभल्यारे पुर्ग मन नी आस ॥ उछौ अधिको कहिउ कवि चातुरी रे। मिछा दुकदतास ॥१८॥"

इसमे इनका नाम लब्दोदय है, पर सभवत लिपिकर्ता के हस्तदोष से ही लक्षोदय का लब्धोदय हो गया है या लब्धोदय ही नाम हो। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १७५७ की लिखी है।

'राजस्थान के हिंदी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज प्रथम भाग' पृष्ठ १७५ मे इनका नाम लब्धोदय दिया है। उसमे इनका उल्लेख निम्नलिखित प्रकार से है :—

"ये खर तरगच्छीय जैनसाधु जिन माणिक्य सूरि की परपरा मे ज्ञानराज गणि के शिष्य थे। इन्होंने 'पद्मिनी चरित्र' नामक एक ग्रथ सवत् १७०७ मे मेवाड़ के महाराणा जगत सिह के

समय में बनाया जिसकी भाषा गुजराती मिश्रित बोलचाल की राजस्थानी है। इसमें प्रसंगानुसार प्रायः नवो रसो का समावेश हुआ है और कविता भी साधारणतः अच्छी है।"

३७७. लालचदास या जन लालच--इन्होंने 'भागवत' का अनुवाद किया है। जिसकी दो प्रतियो के विवरण लिये गए है। खोज विवरण (२६--२६१) मे इसका उल्लेख हो चुका है। उक्त खोज विवरण के अनुसार ये हलुवाई थे और रायबरेली जिले मे डालमऊ के निवासी तथा संवत् १५८७ के लगभग वर्तमान थे।

प्रस्तुत प्रतियो द्वारा इनका और कोई विशेष विवरण नही मिलता।

३७८. लालसाराम बाबा--इनके नाम से 'देवकी चरित्र' का विवरण लिया गया है, जिसमे श्रीकृष्ण और बलराम जी की माता देवकी का चरित्र वर्णित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी कोई परिचय नही मिलता। ग्रंथदाता (नाम नही बताया, श्री पुजारी गोरखनाथ बाबा, दृगपुरा कुटी, पोस्ट, जिला गोरखपुर) के कथनानुसार इनका नाम बाबा लालसा राम था। ये डडैला ग्राम (गोरखपुर) के निवासी थे। जब बनारस से पढकर लौट रहे थे तो पचविमिया (बिहार प्रात) स्थान पर कबीर पथ मे दीक्षित हो गए। इनके कुटुबी जन इन्हे दृग-पुरा (डडैला ग्राम के समीप) ले आए, जहाँ ये अपनी स्त्री के साथ कुटी बनाकर रहने लगे। पैंकौली (गोरखपुर) के पौहारी जी से इनका शास्त्रार्थ हुआ था, जिसमे ये हार गए। फलतः पौहारी जीके शिष्य हो गए और कबीर पथ छोड़ दिया।

खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

३७९. लालूभट्ट उपनाम 'प्रवीन'--प्रस्तुत खोज मे इनके भक्ति संबंधी 'कबित्त, सवैयों' के एक सग्रह का पता लगा है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का विवरण भी अप्राप्त है। प्रस्तुत सग्रह के विवरणकर्त्ता (प० कंठमणि शास्त्री, सचालक, विद्या विभाग, काँकरोली) के लेखानुसार ये तैलग ब्राह्मण थे और सवत् १३४० के लगभग वर्तमान थे।

सवत् मे भूल है। रचयिता ने गो० वल्लभाचार्य के सबध मे भी कवित्त रचे है, पर उक्त आचार्य का जन्मकाल सवत् १५३५ है। अतः इसी के पश्चात् अधिक से अधिक १६वी शताब्दी के अत की यह रचना मानी जा सकती है। सभवतः यह संवत् १३४० न होकर संवत् १६४० है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३८०. लोना (?)--इस बार 'बहुला कथा' नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमे रचयिता के नाम का कोई निश्चित पता नही लगता। इसमे जहाँ तहाँ 'लोना' शब्द का प्रयोग हुआ है, इसलिये उसी को रचयिता का नाम मान लिया गया है।

रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १७०३ है। पुस्तक की भाषा से पता चलता है कि रचयिता बिहार की ओर का था। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३८१. लोहट (जैन)--इनकी जैनधर्म विषयक 'अठारा नातौ की चौढाल्यौ' नामक रचना मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त कोई विवरण नही मिलता। ग्रंथ के विषय के आधार पर ये जैन धर्मावलंबी थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३८२. वंशीधर--ये 'दानलीला' नामक ग्रंथ के प्रणेता है। ग्रथ का विषय उसके नाम से स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता वल्लभ कुल के अनुयायी और द्वारिकेश जी के शिष्य थे :--

"द्वारिकेस पद कविल 'वंशीधर' धरि ध्यान ।
श्रीवल्लभ जिह हेत ते करौ भक्ति कौ दान ॥१॥"

श्री द्वारिकेश जी खोज विवरणों के आधार पर १६वीं शताब्दी के मध्य मे वर्तमान थे अतः इसी के लगभग इनका भी काल मानना उचित होगा।

खोज में ये नवोपलब्ध है।

३८३. वत्साभट्ट—इनका 'अशौच विचार भाषा या मुडन नखच्छेद निर्णय' नाम से एक ग्रंथ मिला है, जिसमे धर्मशास्त्रानुसार सूतक, मुडन और नखच्छेद आदि के निर्णय प्रतिपादित हैं। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८७० दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३८४. वाजिद—'विरह अग' नाम मे इनकी रचना मिली है, जो इन्ही के रचे 'अरिल्लों' का एक अश है, देखिए खोज विवरण (२६–३२७ ए)। ग्रथ मे संतमतानुसार ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल का पता नही। लिपिकाल सवत् १८५६ है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे भी इनके संबध में कोई निश्चित बात नहीं लिखी है। कही कबीरपथी और कही दादूपथी लिखा है। काल भी अनुमान से १६५७ माना है, देखिए खोज विवरण (२–७६, ३२–२२७; २६–३२७)।

३८५. वासदेव शुक्ल—इनकी भक्ति तथा शृगार विषयक रचना 'कवितावली भक्ति विलास' मिली है। रचना की प्रस्तुत प्रति जुबली प्रेस सुलतानपुर मे छपी है। रचनाकाल अज्ञात है। मुद्रणकाल सवत् १६५२ है।

रचयिता सुलतानपुर के अतर्गत मिठनेपुर स्थान के रहने वाले थे। अन्य परिचय नही मिलता। ग्रंथ द्वारा ये प्रौढ कवि विदित होते है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३८६. विद्यारण्यतीर्थ 'देव'—इन्होने सवत् १८६८ मे 'युगलसुधा' या 'कृष्ण सुधा' नामक ग्रथ की रचना की। ग्रथ मे राधाकृष्ण की लीलाओं का सरस वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति प्राचीन पत्थर टाइप मे छपी हुई है और खडित है। यह पता नही चलता कि यह कहाँ छपी। छपने के लिये जो प्रति लिखी गई उसका भी सवत् १८६८ ही है।

रचयिता का नाम केवल पुष्पिका मे मिला। ग्रथ मे जहाँ तहाँ 'देव' शब्द का प्रयोग है, अतएव विदित होता है कि यह उनका उपनाम रहा होगा। प्रस्तुत ग्रथ की रचना इन्होने काशीराज के प्रेमपात्र बाबू रामप्रसन्न सिंह के निमित्त की।

खोज विवरण (२६–४६५) मे ये इस ग्रंथ के साथ आ गए है, पर उसमे इनका कोई विवरण नही दिया है।

३८७. विश्वनाथ सिंह—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ८३।

३८८. विष्णुकवि (विष्णुदास)—इनके 'महाभारत स्वर्गारोहण पर्व' की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता। पिछले खोज विवरण (६–२४८) और (२६–३२८) मे इसका उल्लेख हो गया है। उक्त खोज विवरणो के आधार पर रचयिता सवत् १४६२ के लगभग वर्तमान और गोपाचलगढ (ग्वालियर) के राजा डोंगर सिंह के आश्रित थे।

रचयिता का पूरा नाम विष्णुदास था। प्रस्तुत प्रति द्वारा इनका विशेष कोई वृत्त नही मिलता।

३८९. विष्णुदत्त—इन्होंने 'तत्त्वमसि', 'अहं ब्रह्मास्मि' आदि वेदांत के बारह वाक्यों पर 'भाषा महावाक्य विवरण' नाम से भाष्य किया है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित है। रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नहीं। विषय की दृष्टि से ग्रंथ महत्वपूर्ण है।

रचयिता का विवरण नहीं मिलता। संभवतः ये किसी मोहनलाल कायस्थ के आश्रय में रहते थे :—

"जाहिर तीन्यौ लोक मैं चित्रगुप्त को वंश।
ताहू मैं अंबिष्ट को बुधजन करत प्रसंश ॥४॥
दाता सुमति सुशील तँह प्रगटयौ मोहनलाल।
धर्म पथ में प्री पद यह श्रुति को मतसार॥"

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३९०. विष्णुदत्त महापात्र—इन्होंने संवत् १९१७ मे 'दुर्गाशतक' की रचना की। ग्रंथ में दुर्गा की स्तुति के साथ साथ उनका माहात्म्य और चरित्र भी वर्णित है। वर्णन सरस और ओजपूर्ण भाषा में है। अतः काव्य की दृष्टि से यह उत्तम रचना है। प्रस्तुत प्रति में लिपिकाल भी संवत् १९१७ ही है, जिससे यह मूल प्रति विदित होती है।

रचयिता का ग्रंथ से कोई परिचय नहीं मिलता। परंतु खोज विवरण (९–३२८; २३–४४३) में ये प्रस्तुत ग्रंथ के साथ आ चुके है। उक्त विवरणों के अनुसार ये महापात्र ब्राह्मण और विंध्याचल (मिरजापुर) निवासी थे।

३९१. विष्णुदास—इनके 'नव नागरी के पद' नाम से कुछ पद मिले है, जिनमे श्री राधा जी की कीर्ति और शृंगार का सरस वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नहीं।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता। पिछले खोज विवरणों मे इस नाम के कई रचयिता आए है, पर प्रमाणाभाव के कारण नहीं कहा जा सकता कि ये उनसे भिन्न है या अभिन्न।

३९२. विष्णुपुरी—इनकी भक्ति विषय पर लिखी हुई 'भक्ति रत्नावली' की 'भक्ति प्रकाशिका टीका' मिली है। टीका की प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल का उल्लेख है, और न लिपिकाल का ही।

रचयिता के संबंध मे केवल इतना ही पता चलता है कि इनके एक मित्र माधवदास थे, जिन्होंने इनसे मणिमुक्तामाला की माँग की। इन्होंने कुछ दिन पश्चात् माला के बदले प्रस्तुत रचना पुरुषोत्तम क्षेत्र में उन्हे समर्पित की। ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रंथ के टीकाकार कोई दूसरे व्यक्ति है। विष्णुपुरी मूलग्रंथ के रचयिता है। खोज में ये नवोपलब्ध है।

३९३. वीर भगत—'वृज की बाललीला' नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है। रचना मे श्रीकृष्णलीलाओं का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १८४८ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त कोई विवरण नहीं मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध है।

३९४. वीरभद्र—इनकी 'व्रजविलास, व्रजविहार और चंद्रावली' नाम से एक रचना की तीन प्रतियाँ मिली है। ग्रंथ मे श्रीकृष्ण की व्रजलीलाओं का सरस वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल किसी प्रति मे नहीं है।

रचयिता का विवरण भी अप्राप्त है। खोज विवरण (१७–२९) मे इनकी 'फागुन-लीला' का उल्लेख है, जो प्रस्तुत ग्रंथ से मिलता है। उक्त खोज विवरण द्वारा भी इनका कोई वृत्त उपलब्ध नहीं होता। संभवतः खोज विवरण (३५–१०५) में उल्लिखित 'बुढ़ियालीला' के रचयिता भी यही वीरभद्र हैं।

३९५. बीरभान चौहान—इन्होंने "अश्वमेध (भाषा)" की रचना की, जो मूल 'जैमुनी अश्वमेध' (संस्कृत ग्रंथ) का अनुवाद है। प्रस्तुत हस्तलेख बहुत जीर्ण शीर्ण और प्राचीन है। उसमें रचनाकाल और लिपिकाल का पता नहीं चलता।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज विवरण (३८-१७) में 'एकाक्षर मंजरी' के रचयिता बीरभाण का उल्लेख है, पर यह नहीं कहा जा सकता कि प्रस्तुत रचयिता से उनका कोई साम्य है या नहीं।

३९६. वृंदकवि—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग में हो गया है। देखिए, भूमिका भाग में संख्या, ८८।

३९७. वृजनाथ (त्रिविक्रमसुत)—इनका नायिका भेद विषयक 'सरस रस' नाम से उत्तम ग्रंथ मिला है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित है, जिससे रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नहीं चलता।

रचयिता के विषय में केवल इतना ही मालूम हुआ कि ये किसी त्रिविक्रम के पुत्र थे। अन्य परिचय उपलब्ध नहीं होता। विवरणकर्ता (पं० कंठमणि शास्त्री, संचालक विद्या विभाग, कांकरोली) ने इन्हें भरतपुर निवासी लिखा है, पर इसका आधार क्या है, पता नहीं। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

३९८. वेणीमाधव भट्ट 'प्रवीन कवि'—इनकी 'विचित्रालंकार' और 'चतुर्विधपत्री' नाम से दो रचनाएँ मिली हैं। प्रथम में द्वयर्थक रचना करके प्रेम का वर्णन किया गया है। दूसरे में गुरु, माता, पिता, मित्र, प्रेमपात्री और प्रेमपात्र को पत्र लिखने के प्रकार वर्णन किए गए हैं। रचनाकाल ज्ञात नहीं, पर विवरणकर्ता (पं० कंठमणि शास्त्री, संचालक, विद्या विभाग, कांकरोली) ने संवत् १७५० के लगभग लिखा है। लिपिकाल संवत् १७६८ है।

रचयिता का कोई विवरण नहीं मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

३९९. वैकुंठ जन—इनके कुछ 'पद' मिले हैं, जिनमें रावण संबंधी कथाएँ-जैसे, रावण का तपस्या करना, उसके बाद कुबेर का पराभव, पुष्पकयान का छीना जाना, कुंभकर्ण के सोने के लिये विशाल भवन का निर्माण करना, कुशध्वज राजा की पुत्री वेदवती के साथ बलात्कार करना और वेदवती का श्राप देना तथा अग्नि में भस्म होना आदि वर्णित है।

प्रस्तुत हस्तलेख खंडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नहीं। रचना काव्य की दृष्टि से सरस और उत्तम है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है। इन्होंने अपने नाम के साथ 'उपेंद्रसामी' (उपेंद्रस्वामी) का प्रयोग किया है, पर यह स्पष्ट नहीं होता कि वे कौन थे—

"जन वैकुंठ उपेंद्रसामि सुनो गुनि तव दूत कुबेरु पठाई"

रचना द्वारा ये प्रतिभाशाली कवि ज्ञात होते हैं। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

४००. व्यास जी—'वृंदावन वर्णन' नाम से इनकी रचना मिली है। रचना में रचनाकाल का उल्लेख नहीं। लिपिकाल संवत् १७८१ है। रचयिता का कोई वृत्त नहीं मिलता।

संभवतः खोज विवरण (६-११८, ६-३३२; ४१-२५६) में उल्लिखित व्यास जी यही हैं। उक्त खोज विवरणों के आधार पर ये संवत् १६१२ के लगभग वर्तमान, पहले ओड़छा के निवासी पीछे वृंदावन में साधु होकर रहने लगे।

४०१. व्रज दूलह—इनकी दो रचनाएँ "विनय (करुणा) के पद' और 'बारहखड़ी (भक्त पत्रिका)" मिली हैं। जिनका विषय कृष्णभक्ति है। दूसरी रचना में 'क' से लेकर 'ज्ञ' तक के अक्षरों पर दोहे रचे गए हैं। रचनाकाल किसी में नहीं। लिपिकाल बारह खड़ी में संवत् १९२६ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता। खोज विवरण (३८–१८) मे आए व्रज दूल्हा यही विदित होते है, पर उसमे भी इनका कोई वृत्त नही दिया है।

४०२. **गो० श्री व्रजभूषण जी**—इनकी तीन रचनाएँ 'दान लीला', 'साँझी कीर्तन' और 'नीति विनोद भाषा' नाम से मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका विवरण नीचे दिया जाता है :—

(१) **दानलीला**—रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल सवत् १८४८। **विषय**—श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन।

(२) **सांझी कीर्तन**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १६६०। **विषय**—राधाकृष्ण की साँझी लीला का वर्णन।

(३) **नीति विनोद भाषा**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—**ज्ञानोपदेश।**

विवरण कर्त्ता (प० कठमणि शास्त्री, सचालक, विद्या विभाग, काँकरोली, मेवाड) के लेखानुसार रचयिता काकरोली के निवासी और सवत् १७६५ मे १८३३ के लगभग वर्तमान थे। अन्य वृत्त नही दिया है। काँकरोली मे वल्लभ सप्रदाय की गद्दी है, अत रचयिता उक्त गद्दी के कोई गोस्वामी रहे, ऐसा जान पडता है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४०३. **गो० व्रजाभरण जी दीक्षित**—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनकी निम्नलिखित दो रचनाएँ मिली है —

(१) **प्रभु पूर्ण पुरुषोत्तम को रूप तथा गुण नाम वर्णन**—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल सवत् १८३०। विषय—श्रीकृष्ण चरित्र वर्णन।

(२) **वल्लभाख्यान सटीक**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—आचार्य श्रीवल्लभाचार्य जी तथा श्री गुसाई जी के चरित्र का वर्णन।

रचयिता का ग्रथो द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये दीक्षित ब्राह्मण, वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी और कोई गोस्वामी थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४०४. **गो० श्री व्रजराय जी**—ये "नित्य सेवा विधि आह्निक" के रचयिता है। ग्रंथ मे पुष्टिमार्गीय सिद्धात के अनुसार प्रात काल से लेकर शयन पर्यंत के नित्य कर्मों का वर्णन है। प्राप्त हस्तलेख मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही है।

विवरण कर्त्ता (प० कठमणि शास्त्री, सचालक, विद्या विभाग, काँकरोली, मेवाड) के लेखानुसार रचयिता अहमदाबाद (गुजरात) के रहनेवाले और सवत् १८५० के लगभग वर्तमान थे। अन्य विवरण अज्ञात है। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

४०५. **शंकरदास (राव)**—इनकी 'भाषा ज्योतिष' नामक रचना मिली है। रचना का उल्लेख खोज विवरण (६–३२८ ए) मे है, पर उसमे इसका विवरण पत्र नही छपा है। उक्त खोज विवरण के अनुसार रचयिता वर्ण के ब्राह्मण, विसवॉ (सीतापुर) निवासी और सवत् १८६१ मे उत्पन्न हुए थे।

जन्मकाल के सबध मे विवरण मे भूल है। प्रस्तुत प्रति सवत् १८६० की लिखी हुई है; अत रचयिता का जन्मकाल स्वभावत इससे पूर्व होना चाहिए। रचनाकाल अभी तक अज्ञात है।

४०६. **शंकर द्विज**—आयुर्वेद विषयक इनकी 'जोगरत्न' नाम की रचना मिली है। रचनाकाल सवत् १६०१ है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज मे ये नए हैं।

४०७. **शंकराचार्य**—इनके नाम पर 'तत्त्वविवेक' और 'गंगा पुष्पांजलि' नामक रचनाओं के विवरण लिए गए है। प्रथम ग्रथ इसी नाम के मूल ग्रथ का अनुवाद है जो किसी दूसरे ने रचा है तथा जिसमे ब्रह्मज्ञान का वर्णन है। मूल रचनाएं अद्वैतवादी सुप्रसिद्ध शंकराचार्य कृत हैं,

पर अनुवादको के नामों के अभाव मे उन्ही के नाम से विवरण लिये गए है। ग्रंथो मे भी उनका नाम आया है।

रचनाकाल, लिपिकाल ग्रथो की किसी भी प्रति मे उल्लिखित नही है।

४०८. शंभुनाथ त्रिपाठी—इस बार भी इनकी 'बैताल पच्चीसी' की एक प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रथ पहले खोज विवरण (६–२३८ बी, २३–३७१ ई, एफ) और (२६–४२१ ए) मे आ गया है। उक्त खोज विवरणों के आधार पर ये टेढ़ा (उन्नाव जिला) के निवासी, दौरियाखेड़ा (अवध) के राजा अचलसिंह वैस के आश्रित और सवत् १८०३ के लगभग वर्तमान थे।

प्रस्तुत प्रति द्वारा ये बगसर (?) के राजा रघुनाथ के आश्रित थे। आश्रयदाता की वशावली इस प्रकार दी है :—

तिलोकचद
|
पृथ्वीचद
|
अजयचद
|
देवराऊ
|
भैरवदास
|
नाराचद
|
सग्रामराऊ
|
कनक सिह
|
पृथीराज
|
पुरदर राऊ
|
मरदन सिह (रैयाराउ)
|
रघुनाथ

४०९. शंभूनाथ—इनकी 'शिवस्तुति' का विवरण लिया गया है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १९२६ वि० दिया है।

रचयिता अमेटी के राजा माधवप्रताप सिह के आश्रय मे रहते थे और उनके पुत्र होने के निमित्त प्रस्तुत स्तोत्र द्वारा शिव की स्तुति किया करते थे। अन्य वृत्त नही दिया है।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४१०. शारंगधर—इनके 'सगीत दीपिका' नामक ग्रथ की खंडित प्रति मिली है। ग्रंथ मे संगीत का शास्त्रीय पद्धति पर बडा विशद वर्णन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। विषय की दृष्टि से ग्रंथ महत्वपूर्ण है।

रचयिता का, केवल इतना ही कि ये ब्राह्मण थे और कोई वृत्त नही मिलता :—

"भैरवीप्रथम तिय षोडश शीगार किये पंसी मध्यमाधि 'द्विज सारंग' बषानि है" ।

खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

४११. **शारंगधर**—इनकी एक रचना 'भावशतक' का विवरण लिया गया है । रचना में प्रश्नोत्तर के रूप मे शृगार भाव लिये हुए दोहो का सग्रह है । साहित्यिक दृष्टि से रचना सरस और मनोरंजक है ।

रचनाकाल अज्ञात है, पर प्रस्तुत प्रति संवत् १६७२ की लिखी प्रति से नकल हुई है । अतः ग्रंथ की प्राचीनता स्पष्ट है । प्रस्तुत प्रति की नकल सवत् १९९९ मे राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्यिक श्री अगरचद नाहटा ने की, जो हिदी साहित्य समेलन को भेजी गई ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है । पूर्ववर्ती कवि से ये भिन्न है या अभिन्न, कुछ कहा नही जा सकता । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

४१२. **शिरोमणि**—इनका अलकार और कोश विषयक ग्रथ, "उर्वशी नाममाला या नाममाला" नाम से मिला है । ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, अतः रचनाकाल का कोई पता न चल सका । लिपिकाल सवत् १८४९ है ।

रचयिता का ग्रथ द्वारा कोई विवरण नही मिलता । खोज विवरण (६–२३५; २०–१७८) मे ये इस ग्रथ के साथ उल्लिखित है । उक्त विवरणो के अनुसार ये माथुर ब्राह्मण, संवत् १६९७ के लगभग वर्तमान और शाहजहाँ बादशाह के आश्रित थे । इनके पितामह परमानंद (शतावधानी) और पिता मोहन क्रमश. बादशाह अकबर और जहाँगीर के आश्रय मे रहते थे ।

४१३. **शिवटहल सिंह ठाकुर (साधू सिंह)**—'राधाकृष्ण' नाम से इनका ग्रथ मिला है । ग्रंथ मे राधाकृष्ण का जनसाधारण मे प्रचलित वासनामय प्रेम का खंडन है । यह बगाली भाषा मे रचित 'मुक्तालतावली' का हिदी पद्यानुवाद है । इस दृष्टि से ग्रथ इधर का ही लिखा ज्ञात होता है । प्रति खडित है और एक मे रचनाकाल तथा लिपिकाल के उल्लेख नही है ।

रचयिता को लोग साधूसिह भी कहते थे । उन्होने अपने को गर्ग सुमत (महाराज दशरथ के मत्री) के पुत्र का वशज लिखा है । अन्य वृत्त नही मिलता । इनके दो मित्र विष्णु प्रसाद सिह और ठाकुर भागीरथी सिह थे, जिनके अनुरोध से प्रस्तुत रचना की गई । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

४१४. **शिवदत्त त्रिपाठी**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है । देखिए, भूमिका भाग मे संख्या २७ ।

४१५. **शिवदास**—इन्होने 'दुर्गासप्तशती' का अनुवाद किया है, जिसकी बिना नाम की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है । विषय के अनुसार ग्रथ का नाम 'देवी चरित्र' रख दिया गया है । अनुवाद पदो मे है । भाषा पच्छिमी राजस्थानी है, जिसमे गुजराती का भी मिश्रण है । रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं ।

रचयिता का कोई वृत्त उपलब्ध नही, पर ग्रथ की भाषा को देखने से ये पच्छिमी राजस्थान के रहनवाले विदित होते है ।

खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है ।

४१६. **शिवदास गदाधर**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है । देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, २८ ।

४१७. **शिवबक्स सिंह सोमवंशी**—इस त्रिवर्षी मे इनकी निम्नलिखित दो रचनाएँ मिली है :—

(१) **कुंडलिया**—रचनाकाल अज्ञात । लिपिकाल संवत् १९०३ । विषय—शृंगार, उपदेश, भक्ति और नीति विषयक कुडलियों का संग्रह ।

(२) **राधे हरि मिलन सतसई**—रचनाकाल, लिपिकाल संवत् १८८० । विषय—राधाकृष्ण का विछोह और मिलन वर्णन । प्रस्तुत हस्तलेख मूल प्रति है ।

रचयिता सोमवंशी क्षत्रिय और समोगरा (प्रयाग जिला) के निवासी थे । इनके वंशज अभी तक उक्त ग्राम में रहते हैं । पिता का नाम देवीबक्स सिंह था । खोज में ये नवोपलब्ध हैं ।

४१८. **शिवाराम बाबा**—ये 'भक्ति जयमाल' ग्रंथ के रचयिता हैं और पिछले खोज विवरण (९–२९९, ४१–३९९) में इस ग्रंथ के साथ आ चुके हैं । ये जाति के कायस्थ और कारों (बलिया) के निवासी थे । जन्मकाल संवत् १७३७ था । वैष्णव संप्रदाय में दीक्षित हो जाने पर ये बड़े प्रसिद्ध महात्मा हुए । प्रसिद्ध औघड़पंथी कीनाराम के ये गुरु थे ।

इस बार 'भक्त जयमाल' की एक खंडित प्रति और मिली है, जिसमें रचनाकाल संवत् १७८७ दिया है । लिपिकाल अज्ञात है । इसके द्वारा रचयिता के संबंध में नवीन बातें कुछ नहीं मिलतीं ।

४१९. **शीतलदास**—इनकी 'रामायण माहात्म्य' नामक रचना मिली है, जिसमें तुलसीकृत रामायण का माहात्म्य वर्णित है । रचनाकाल संवत् १९२९ और लिपिकाल संवत् १९३६ है । ग्रंथ की विशेषता यह है कि इसमें रामचरितमानस के प्रत्येक कांड में आए श्लोकों, सोरठों, दोहों, छंदों और चौपाइयों की संख्याएँ दी हैं । यदि ग्रंथ और अधिक प्राचीन होता तो इसमें संदेह नहीं कि ये संख्याएँ बहुत कुछ विश्वसनीय होतीं । फिर भी आशा है, मानस प्रेमियों के लिये ये उपयोगी होंगी । इसमें कर्म, उपासना, ज्ञान और दैन्य का वर्णन कर गो० तुलसीदास जी का कुछ संक्षिप्त वृत्त और जीवन-घटनाएँ भी दी हुई हैं । वृत्त और जीवन घटनाएँ वही हैं, जो सर्वत्र प्रचलित हैं ।

रचयिता ब्राह्मण थे और अयोध्या से नैऋत्य कोण की ओर छह योजन की दूरी पर निवास करते थे । इससे अधिक इनका और कोई वृत्त नहीं मिलता । ग्रंथांत में एक नाम जगन्नाथ भी आया है जो इनका आदर से उल्लेख करते हैं

"श्रीवर सीतलदासकृत बनो महातम ज्ञान ।
जगन्नाथ रघुनाथ यश मरम तत्व करि जान ।।"

इससे अनुमान होता है कि या तो ये प्रतिलिपिकर्त्ता थे अथवा शीतलदास जी के शिष्य एवं लेखक । खोज में रचयिता नवोपलब्ध है ।

४२०. **शीतलदीन**—इनका 'पदसंग्रह' मिला है, जो खंडित है । इसमें रचनाकाल लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं मिलता । पदों में राधाकृष्ण की भक्ति और लीलाओं का वर्णन है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं मिलता । खोज में ये नवोपलब्ध हैं ।

४२१. **शेख अहमद**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग में हो गया है, देखिए, भूमिका भाग में संख्या, २९ ।

४२२. **शेख निसार**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग में हो गया है । देखिए, भूमिका भाग में संख्या, ३० ।

४२३. **शोभाचंद**—इन्होंने वल्लभकुल के श्री गोपीनाथ जी कृत संस्कृत ग्रंथ 'साधन दीपिका' के आधार पर 'भक्ति विधान' ग्रंथ की रचना की । ग्रंथ में पुष्टिमार्गीय संप्रदाय के सिद्धांतानुसार मंदिरों में ठाकुर जी की सेवा सामग्री तथा उत्सव प्रकार का वर्णन है । रचनाकाल संवत १६८१ और लिपिकाल संवत् १७४८ है ।

रचयिता विवरणकर्ता (प० कंठमणि शास्त्री, संचालक, विद्या विभाग, कांकरोली, मेवाड़) के लेखानुसार रचयिता किसी जयसिंह के सेवक, ब्रह्मभाट राय ताराचंद के पुत्र थे। शेष विवरण अज्ञात है।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४२४. शोभाराम (महाराज)—इनकी 'गणितबोधिनी' (प्रथम भाग) मिली है। ग्रथ मे रचनाकाल, लिपिकाल नही दिए है। रचयिता भरतपुर के राजा जसवत सिंह के समसामयिक थे और कामवन मे रहते थे। वहाँ के किसी आनदलाल के लिये इन्होंने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। अन्य वृत्त अप्राप्त है। एक शोभाराम महाराज ('राममाला' के रचयिता शकरराम के पिता) का उल्लेख खोज विवरण (१७–१६८) में भी है, पर इनसे उनका साम्य स्थापित करने के लिये कोई प्रमाण नही मिलता। अत ये खोज मे नवीन है।

४२५. श्यामराम—इनकी ज्योतिष विषयक 'द्वादश राशिविचार' नामक छोटी सी रचना मिली है, जिसमे बारह राशियो का विचार और फल वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८६३ दिया है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। खोज विवरण (२–८०) में उल्लिखित इस नाम के रचयिता से ये भिन्न है या अभिन्न, कुछ नही कहा जा सकता।

४२६. श्रीकृष्ण गंगाधर—इन्होंने सवत् १७१६ वि० मे "कुडनिर्माणवार्तिक" की रचना की, जिसमे यज्ञकुड विधान वर्णित है। वार्तिक राजस्थानी गद्य मे लिखा गया है, जो प्राचीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४२७. श्रीकृष्ण भट्ट—ये "दुर्गाभक्ति तरगिणी" के रचयिता है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही है। रचयिता का भी कोई विवरण नही मिलता। खोज विवरण (१७–९३), (१२–१७९) और (३२–२०६) में आए श्रीकृष्णकलानिधि से ये भिन्न है या अभिन्न, कुछ नही कहा जा सकता।

४२८. श्रीनिवास—इनकी 'सद्गुरु महिमा' नाम से रचना मिली है, जिसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई वृत्त उपलब्ध नही। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के रचयिता आए है, पर उनके साथ इनकी एकता स्थापित करने के लिये कोई प्रमाण नही।

४२९. श्रीनिवास—इनकी 'हनुमान पच्चीसी' का विवरण लिया गया है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति द्वारा रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

रचयिता का विवरण भी उपलब्ध नही। पूर्ववर्ती रचयिता और पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ मे से ये कोई एक है या नही, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

४३०. श्रीपति—इन्होंने सवत् १७१९ मे 'महाभारत कर्ण पर्व' की रचना की। ग्रथ का उल्लेख खोज विवरण (२०–१८५ और २०–४१) मे भी हो चुका है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल नही दिया है।

रचयिता धर्मदास के पुत्र थे। देखिए, प्रस्तुत खोज विवरण मे संख्या, १७२। ये चार भाई थे—गग, खड्गसेन, दलपति और श्रीपति। सभी अच्छे कवि थे, जिनमे गंग अधिक प्रसिद्ध हुए, देखिए प्रस्तुत खोज विवरण मे सख्या, ६५।

४३१. श्रीपति (काशीवासी)—इनके कुछ 'कवित्त' मिले है, जिनमे भक्ति और शृगार का वर्णन पाया जाता है। कविता की दृष्टि से कवित्त सरस और उत्तम हैं। रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता।

रचयिता काशी के निवासी थे :—

"लखि ललचानो रूप करत बखानो जन्यो श्रीपति सुजान काशी नगर निवासी हैं।"

पूर्ववर्ती रचयिता से ये भिन्न है। परन्तु पिछले खोज विवरणों में उल्लिखित इस नाम के अन्य रचयिता में से भी ये कोई एक है या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता।

४३२. **श्रीलाल पंडित**—इन्होंने निम्नलिखित दो ग्रंथ रचे :—

(१) **भाषा चंद्रोदय**—प्रस्तुत प्रति छपी हुई है। रचनाकाल और मुद्रणकाल संवत् १९२२ है। विषय—व्याकरण।

(२) **विद्यांकुर**—इसकी प्रस्तुत प्रति छपी है। रचनाकाल और मुद्रणकाल संवत् १९१७ है। विषय—भूगोल। यह राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद कृत भूगोल वृत्तांत और मसअलूमात के आधार पर रचा गया है।

रचयिता ने इन ग्रंथों को पाठशालाओं में पढ़ाने के लिये पाठ्य पुस्तकों के रूप में प्रांतीय (पश्चिम देश) गवर्नर तथा अवध देश के डाइरेक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन, श्रीयुत विलियम हैण्डफोर्ड साहब बहादुर की आज्ञा से बनाया। इनका अन्य वृत्त अज्ञात है। खोज में ये नवोपलब्ध है।

४३३. **संख्यानाथ**—इन्होंने संस्कृत ग्रंथ 'अवधूत गीता' का हिंदी पद्यबद्ध अनुवाद किया है। रचनाकाल अविदित है। लिपिकाल संवत् १८५६ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और वृत्त अप्राप्त है। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

४३४. **संतदास**—इनकी 'साखी' का पता लगा है, जिसमें मत मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचना की प्रस्तुत प्रति खंडित है। उसमें रचनाकाल, लिपिकाल के उल्लेख नहीं है।

रचयिता का भी कोई वृत्त उपलब्ध नहीं। ये प्रस्तुत रचना के साथ खोज विवरण (२९–३५७ ए, बी) में उल्लिखित है। उक्त खोज विवरण के अनुसार ये संवत् १८३० के लगभग वर्तमान थे। संभवतः खोज विवरण (६–२८१) (४१–२७४) में आए संतदास भी यही है।

४३५. **संतदास या संत रसिक**—इन्होंने पदों में "भ्रमरगीत" की रचना की। रचना में उद्धव और गोपियों का संवाद वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल संवत् १९२३ दिया है।

रचयिता के अन्य नाम संतदास या संत रसिक भी है। अन्य वृत्त उपलब्ध नहीं। ये अच्छे कवि विदित होते है। खोज में ये नवोपलब्ध है।

४३६. **सदानंद**—इन्होंने अनाथदास (खोज विवरण ६–१२९; ६–७) कृत 'विचार-माल' ग्रंथ की टीका की। टीका के रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का परिचय भी अप्राप्त है। खोज में ये नवोपलब्ध है।

४३७. **सदाराम**—इनके आध्यात्मिक ज्ञान विषयक 'अखंड प्रकाश' की एक शुद्ध प्रति का विवरण लिया गया है। प्रति में रचनाकाल ज्ञात नहीं। लिपिकाल संवत् १९३० है।

रचयिता का प्रस्तुत प्रति द्वारा कोई विवरण नहीं मिलता, पर खोज विवरण (६–२७२) में इनका यह ग्रंथ आ चुका है। जिसके अनुसार ये १८वीं शताब्दी में वर्तमान और राजगढ़ (मध्यभारत) के निवासी थे।

४३८. **सबल श्याम**—इनका वास्तविक नाम सबलसिंह चौहान था। पिछले खोज विवरणों में इनके "महाभारत भाषा" और "भागवतभाषा" नामक ग्रंथो का उल्लेख हो चुका है। देखिए खोज विवरण (४–६६) और (२३–३६३, प० २२–६७, ६–२२४; २६–४१२)। उक्त खोज विवरणो के अनुसार ये जाति के चौहान क्षत्रिय थे। जन्म संवत् १७०२ और संभवतः १७८१ तक वर्तमान थे। कदाचित् इटावा के निकट किसी गाँव के जमीदार रहे और राजा वीरसिंह के आश्रय में रहते थे।

इस बार इनकी "वरवैषट्ऋतु" नाम से नई रचना और मिली है। इसमें बरवा छदों में ट्ऋतु वर्णन के साथ साथ गोपियों के विरह का मार्मिक वर्णन है। काव्य की दृष्टि से रचना ,दर, सरस और मनोरजक है। खेद है, इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। उससे रचनाकाल और लपिकाल का कोई पता नही लगता।

रचयिता के सबध मे भी नाम के अतिरिक्त और कुछ विदित नही होता।

४३९. **समरसिंह महाराज**--इन्होंने मूल सस्कृत ग्रथ 'महिम्नस्तोत्र' की भाषा मे पद्य-द्ध टीका की, जिसकी एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल अज्ञात है। लपिकाल सवत् १८८० दिया है।

रचयिता कोई राजा थे, पर पता नही कि कहाँ के राजा थे। अन्य परिचय भी उपलब्ध ही। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४४०. **समाधान**--रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका ाग मे सख्या, ३१।

४४१. **सरदार कवि**--पिछले खोज विवरणों मे इनके कुछ ग्रथ आ चुके है, देखिए गोज विवरण (६-२८३), (४-५६, ४१-२७६, ३-६२ और २०-१५४)। उक्त विवरणो ; आधार पर ये ललितपुर (झाँसी) निवासी, हरिजन के पुत्र, काशीनरेश महाराज ईश्वरीप्रसाद ारायण सिह के आश्रित और सवत् १९०३-१९४० के लगभग वर्तमान थे।

इस त्रिवर्षी मे इनकी निम्नलिखित दो रचनाएँ और मिली है --

(१) **तर्कप्रकाश भाषा**--रचनाकाल सवत् १९०९ है। विषय--न्यायग्रथ तर्क-ग्रह का हिदी अनुवाद। प्रस्तुत प्रति खडित है।

(२) **रामकथाकल्पद्रुम**--रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल सवत् १९६२ है। त्रषय--रामकथा वर्णन।

रचयिता ने दूसरे ग्रथ (रामकथाकल्पद्रुम) मे अपनी वशावली इस प्रकार दी है --

राघोदास
|
भावसिह
|
भवानी
|
जयसिह
|
हरिजन
|
सरदार कवि

अन्य कोई नवीन बात नही प्रकट होती।

४४२. **सरदार सिंह (सुलतानसिंह सुत)**--इन्होंने सगीत पर 'सुरतरग' नामक ग्रंथ ी रचना की, जिसकी एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात हैं।

रचयिता के सबध मे केवल इतना ही पता चलता है कि ये किसी सुलतान सिह के पुत्र थे। ोज में ये नवोपलब्ध है। (दे० (०२-२)।

४४३. **सरमद**--इनके नाम से 'बैत सरमद' मिला है, जिसका विवरण लिया गया है।

ग्रंथ मे सब धर्मों की एकता के संबंध में समोचित विचार प्रकट किए गए है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का कोई विवरण नहीं मिलता। संभवत ये वही सरमद है जिनके उपदेशों का प्रभाव दारा (औरंगजेब के बड़े भाई, जिसको उसने मरवा दिया था) पर पड़ा था। इनके संबंध में देखिए प्रस्तुत विवरणिका में महमद औलिया का विवरण (संख्या २७६)।

४४४. **सर्वेश्वरदास**—इन्होंने संवत् १८८७ में "नैकाव्य कथा" की रचना की जिसमें संतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। ग्रंथ की दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे लिपिकाल क्रमश संवत् १६०७ और संवत् १६१० दिए हैं।

रचयिता गाजीपुर के अंतर्गत कुरथा ग्राम (स्थान) के समीप गंगातट पर रहते थे। संभवत ये संतमतानुयायी थे। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

४४५. **सहदेव**—इनका ज्योतिष विषयक बिना नाम का ग्रंथ मिला है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नहीं है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता। भड्डली के साथ भी सहदेव का नाम आता है, पर उस सहदेव से ये भिन्न ही जान पड़ते है। खोज में नवोपलब्ध है।

४४६. **सादिक**—इनकी शालिहोत्र विषयक 'सालोत्री' नाम से रचना मिली है। रचना की प्रस्तुत प्रति खंडित है। रचनाकाल ज्ञात नहीं। लिपिकाल संवत् १८६६ है।

रचयिता घोड़ों का व्यापारी था। अन्य परिचय नहीं मिलता। नाम से और ग्रंथ की शैली से ये मुसलमान विदित होते है। इनका पता प्रथम बार लगा है।

४४७. **साधु जन**—इनकी 'प्रेमपरीक्षा' रचना का पता चला है। रचना की प्रस्तुत प्रति खंडित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी विवरण उपलब्ध नही। खोज में ये नवोपलब्ध है।

४४८. **सिंधु कवि उपनाम 'आनंद'**—इस कवि की 'दिनमणि वंशावली गुण कथन' नामक रचना मिली है, जिसमें उदयपुर के महाराणाओं की वंशावली और उनके यशस्वी कार्यों का वर्णन है। ऐतिहासिक दृष्टि से रचना महत्वपूर्ण है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का उपनाम 'आनंद' है। इसके अतिरिक्त और कोई वृत्त नहीं मिलता। इन्होंने उदयपुर के राणाओं की वंशावली, बप्पा रावल से लेकर जगतसिंह महाराज तक, का वर्णन किया है। इससे पता चलता है कि ये महाराज जगतसिंह (राज्यकाल १८६८ के लगभग) के समसामयिक थे।

खोज में ये नवोपलब्ध है।

४४९. **सिकंदर फिरंगी**—इन्होंने 'बाजनामा' की रचना शाह आलमगीर के आदेश से शाहजादा आजमशाह के लिये की थी। ग्रंथ में बाज पकड़ने और पालने की विधि तथा उसके गुण-दोष आदि के वर्णन किए गए है। रचनाकाल ज्ञात नहीं, लिपिकाल संवत् १८२० है।

रचयिता आलमगीर बादशाह के आश्रय में रहते थे और हकीम थे। शेष वृत्त अज्ञात है। खोज में ये नवोपलब्ध है।

४५०. **सियाराम**—इन्होंने गोस्वामी तुलसीदास कृत 'वैराग्य संदीपनी' की टीका की है जिसकी एक प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का विवरण नहीं मिलता। संभवत: खोज विवरण (२६-४५३) में आए सियाराम, जो संवत् १८१३ के लगभग वर्तमान थे, यही है।

४५१. **सुंदरदास**—ये दादूदयाल जी के सुप्रसिद्ध शिष्य सुंदरदास है। खोज विवरणों मे इनकी बहुत सी रचनाओं का उल्लेख है, देखिए (२-२५ नौ०; ३-३४; ६-२४२; २३-

४१५) तथा (पं० २२–१०७, ६–३११, ४१–२८७, १२–१८४; २६–४७०)। इन खोज विवरणों के अनुसार ये खडेलवाल वैश्य, जन्म सवत् १६५३, मृत्यु सवत् १७४६, शाह परमानद के पुत्र और द्यौसा (जयपुर राज्य) निवासी थे।

इस बार इनकी दो रचनाएँ 'सुदर प्रबोध' और 'अद्भुत ग्रथ' नाम से और मिली है। पिछले खोज विवरणों मे इनका नामोल्लेख नही पाया जाता। रचनाकाल, लिपिकाल और विषयानुसार इनका विवरण इस प्रकार है --

(१) **सुंदरप्रबोध**--रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८८३। विषय--ज्ञान, वैराग्य और निर्गुण भक्ति का वर्णन।

(२) **अद्भुत ग्रंथ**--रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त। विषय--सतमतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन।

रचयिता के सबध मे इन रचनाओं द्वारा कोई नवीन बात विदित नही होती।

४५२. **सुंदर कवि**--इनकी "बारहमासी" मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का वृत्त भी अप्राप्त है। पिछले खोज विवरणों मे आए इस नाम के रचयिताओं से ये नितात भिन्न हैं। इनकी प्रस्तुत रचना फारसी मिश्रित खड़ी बोली मे है, जिससे ये बीसवी सदी के जान पड़ते है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४५३. **सुंदर कवि**--इनकी "रामरहस्य" नामक रचना की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है, जिसमे श्रीरामचद्र जी का जनकपुर-विहार वर्णित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। खोज विवरण (१–६८) मे इसका उल्लेख हो चुका है, जिसके अनुसार ये कृष्णगढ के महाराज राजसिह की पुत्री थी। महाराज सावतसिह (नागरीदास) और बहादुरसिह इनके भाई थे। सवत् १८४५ के लगभग वर्तमान। श्री कृष्ण भगवान् की ये भक्त थी।

इनकी बहुत सी रचनाएँ पहले मिल चुकी है, देखिए खोज विवरण (१–६५, ६६, ६७, ६८, ६६, १००, १०२, १०३ और १०४)।

४५४. **सुखदेव (अनुमान से)**--इनके नाम से 'गुरु महिमा' नामक छोटी सी रचना का विवरण लिया गया है। विषय पुस्तक के नाम से ही विदित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का वृत्त भी अप्राप्त है। इनके रचयिता होने मे भी सदेह है।

४५५. **सुखानंदनाथ**--इन्होने हरिहरानद कृत मूल सस्कृत ग्रथ 'पशुमर्दनाख्य' की भाषा टीका की। ग्रथ मे शैवधर्म सबधी बातो का सग्रह है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८६७ है।

रचयिता हरिहरानद के शिष्य थे, और विवरण अप्राप्त है। खोज मे नवोपलब्ध है।

४५६. **सुबंस कवि**--इनकी 'नरसिह पचासका' मिली है, जिसमे भगवान् नरसिंह की स्तुति वर्णित है। रचनाकाल सवत् १७१० है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का पूरा नाम सुबसराय था। ग्रथ से और कुछ पता नही लगता। खोज विवरण (३५–६८) मे आए सुबसराय यही विदित होते है।

४५७. **सुवरण**--इनके ज्ञान, भक्ति और शृगार विषयक कुछ 'कवित्त' मिले है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी वृत्त उपलब्ध नही। ये अच्छे कवि विदित होते है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४५८. **सूरजदास**--इनका एक ग्रथ "रामरहारी" नाम से मिला है जिसमे रामचरित्र के अंतर्गत लवकुश कथा का वर्णन है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८१६ है।

रचयिता का वृत्त नहीं मिलता। परन्तु खोज विवरण (१७-१८७) और (२३-४१७; २६-४७३) में आए 'रामजन्म' के रचयिता सूरजदास यही हैं। ऐसा विदित होता है कि इन्होंने संपूर्ण रामचरित रचा था, पर अभी तक उसकी कोई प्रति नहीं मिली। खेद है, अभी तक इनका कोई वृत्त भी नहीं मिला। उक्त खोज विवरणों में इनके किसी प्राणनाथ के शिष्य होने की संभावना की गई है।

४५९. **सूरतमिश्र**—ये हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि हैं। ये आगरा निवासी और कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। जन्मकाल संवत् १७४०, जोधपुर के दीवान अमरसिंह, नसरुल्लाखाँ, बीकानेर-नरेश जोरावर सिंह और दिल्ली के बादशाह मुहमदशाह के आश्रित थे। इनका कविताकाल संवत् १७६६ से १८०० तक माना जाता है। पिछले खोज विवरणों में इनके बहुत से ग्रंथ आ गए हैं, देखिए खोज विवरण (६-२४३, ६-३१४, २३-४१६, २६-४७४, ३-१०४, १२-१८६) तथा (४१-२८३ और १७-१८६)। इन्हें महाराज जसवंत सिंह का शिक्षक लिखा है, पर महाराज जसवंत सिंह सं० १७३७ (सन् १६८१) में परलोकगत हो गए थे, अतएव यह सत्य नहीं है।

इस बार इनके 'नखशिख' की एक प्रति और मिली है। खोज विवरण (२३-४१६) में इसका उल्लेख है। प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नहीं है। यह हिंदी-साहित्य समेलन द्वारा नकल करवाई गई है, अतः लिपिकाल बहुत इधर २०वीं शती के उत्तरार्द्ध का ही समझना चाहिए।

४६०. **सूरदया**—इनके धर्म और ज्ञानोपदेश विषयक कुछ 'कवित्तों' का विवरण लिया गया है। कवित्तों की प्रस्तुत प्रति खंडित है। इसमें रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिए हैं। रचयिता का भी कोई परिचय उपलब्ध नहीं। ये खोज में नवोपलब्ध हैं।

४६१. **सूरदास**—ये महाकवि 'सूरसागर' के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं। इस बार इनके निम्नलिखित ग्रंथ और मिले हैं, जिनमें से अधिकांश सूरसागर के ही अंश हैं—

(१) **सूरसाठि**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—भक्ति और ज्ञान।

(२) **सूर रामायण**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—हनुमान द्वारा लंका जलाने से लेकर संजीवनी ओषधि लाने तक की रामकथा का वर्णन।

(३) **सूरसारावली**—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय—रामचरित्र और कृष्ण लीलाओं का वर्णन।

(४) **सूर गूढार्थ पद संग्रह और अर्थ**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—भक्तिविषयक गूढ पदों का संग्रह।

(५) **सेवाफल**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—भगवत् सेवन करने का फल वर्णन। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं।

(६) **दानलीला**—इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनमें से एक में लिपिकाल संवत् १८४० है। रचनाकाल अज्ञात है। विषय—श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन।

(७) **पंचाध्यायी रासलीला**—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १८४०। विषय—श्रीकृष्ण की रासलीला का वर्णन।

(८) **बंशी लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्रीकृष्ण की वंशी-लीला का वर्णन।

(९) **गोवर्द्धन लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन।

कवि के सबंध में इन ग्रंथों द्वारा कोई विशेष बात प्रकट नही होती। पिछले कई खोज-विवरणो मे इनका उल्लेख हो गया है, देखिए (१–२३, ६–२४४, १२–१८५) और (१७–१८६; २३–४१६; २६–४७१, ३२–२१२) आदि।

४६२. सूरदास—इनकी 'बारहखडी' नामक छोटी सी रचना का विवरण लिया गया है। रचना मे 'क' से लेकर 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर चौपाई रचकर प्रह्लाद चरित्र वर्णन किया गया है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८३६ दिया है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। सूरसागर के रचयिता प्रसिद्ध सूरदास से ये भिन्न है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४६३. सूरदास—'गोपालगारी' नाम से इनकी रचना मिली है। रचना की प्रति खडित है, जिसमे रचनाकाल, लिपिकाल के सबध मे कोई उल्लेख नही मिलता।

रचयिता का विवरण भी अप्राप्त है। प्रसिद्ध कवि सूरदास से ये नितात भिन्न है और खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४६४. सूरदास—"बारहमासा या बेनी माधौ जी के बारहमासा" नाम से इनकी रचना का विवरण लिया गया है। रचना मे श्रीकृष्ण के वियोग मे राधा और गोपियो का विरह वर्णित है। रचनाकाल ज्ञात नही। ग्रथ की दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे से एक मे लिपिकाल सवत् १६४१ है। इसकी भाषा व्रज और खडी बोली का मिश्रण है। इस दृष्टि से रचयिता प्रसिद्ध कवि सूरदास से भिन्न १६वी शताब्दी का विदित होता है। इनका अन्य कोई विवरण नही मिलता।

खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

४६५. सूरसैन—ये "कुवॅर मदैवछ सावलि ग्यारी वार्ता" के रचयिता है। ग्रथ डिंगल भाषा मे है और पूर्ण है, पर इसमे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही मिलते।

रचयिता का भी वृत्त उपलब्ध नही। ग्रथ की भाषा द्वारा राजस्थान के रहनेवाले विदित होते है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४६६. सेवक सुकवि—इनकी "रामायण" नामक रचना का विवरण लिया गया है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे केवल बालकाड की कथा है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८६३ वि० दिया है।

रचयिता के सबध मे केवल इतना ही विदित होता है कि इन्होने प्रस्तुत कथा किसी जसवंत नामक व्यक्ति को सुनाई थी। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कई रचयिताओ का उल्लेख है, पर उनमे से किसी के साथ इनका साम्य स्थापित करने के लिये कोई प्रमाण नही। अस्तु, खोज मे नए है।

४६७. सेवादास (स्वामी)—इनकी सतमत विषयक रचना की खडित प्रति मिली है। ग्रंथ की प्राप्त प्रति से न तो ग्रथ के नाम का पता चलता है और न रचनाकाल और लिपिकाल का ही। अनुमान से 'बानी' नाम रख दिया गया है।

रचयिता का भी विवरण अज्ञात है। ये पिछले खोज विवरणो (प० २२–६६; ४१–२६६; ६–२८८) मे आए इस नाम के दो रचयिताओ, हरिदास निरजनी के शिष्य (सवत् १५४० के लगभग वर्तमान) और मलूक दास के शिष्य (सत्रहवी शताब्दी में वर्तमान), मे से कोई एक है। या नही, प्रमाणाभाव मे कुछ नही कहा जा सकता।

४६८. सेवादास—इनके दो ग्रथ 'रघुनाथ अलकार' और 'अलबेले लाल जी को नखसिख' नाम से मिले है, जिनका उल्लेख पिछले खोज विवरणो (३२–१६७ बी और सी) मे हो गया है। उक्त विवरण के अनुसार रचयिता पाडेय ब्राह्मण, अयोध्या निवासी और सवत् १८२१–२४ के लगभग वर्तमान थे।

रचनाकाल केवल 'रघुनाथ अलंकार' में सं० १८४० उल्लिखित है। प्रस्तुत दोनों ग्रंथ एक ही हस्तलेख मे है, जिसका लिपिकाल सवत् १८८५ है।

ग्रंथो के अनुसार रचयिता अलबेलेलाल जी के शिष्य थे और सवत् १८४० के लगभग वर्तमान थे।

४६९. सेवाराम—इनका "नलपुराण या नलदमयती चरित" ग्रथ मिला है। ग्रथ किसी पुराण के आधार पर लिखा गया है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८५३ है।

रचयिता बेरी ग्राम (मथुरा के निकट) के निवासी, किसी राजा रामपाल के आश्रित थे। अन्य वृत्त नही मिलता। इनके कुछ ग्रथ 'गगा चरित्र' आदि पहले भी मिल चुके है, देखिए खोज विवरण (३८–१३९, ३८–१६८)। उक्त खोज विवरणो के अनुसार ये वर्ण के ब्राह्मण, अखैराम के वशज और सवत् १८८८ के लगभग वर्तमान थे।

४७०. सैयदपहाड़ (सदपहाड़)—इनके "रससागर" नामक ग्रथ का विवरण लिया गया है। ग्रथ का विषय रसायन है। खोज विवरण (९–३०५, ६–२६३) मे इसका उल्लेख हो गया है। उक्त खोज विवरणो के अनुसार रचयिता काशी निवासी और सैयद हमजा के पुत्र थे।

प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल का उल्लेख नही। लिपिकाल सवत् १६१२ है। इसमे रचयिता को सैयद अहमद मुत या सैयद अहमदजासुत लिखा है, जो सभवत. सैयद हमजा का ही विकृत रूप है। अन्य वृत्त नही दिया है।

४७१. सोमनाथ या शशिनाथ—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ८५।

४७२. स्यामीदास (? स्वामीदास)—इनकी छोटी सी रचना 'रामअक्षरी' नाम से मिली है। रचना मे रामकथा का अत्यत सक्षेप मे वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता।

रचयिता का भी कोई विवरण उपलब्ध नही होता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४७३. स्वामी कार्तिक (?)—ये 'रागसकीर्ण रागमाला' नामक सगीत विषयक ग्रथ के रचयिता है। ग्रथ का रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १९२० है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४७४. हनुमंत कवि—इनका सवत् १९३५ मे रचा गया "पारसरी भाषा (उडदाय प्रदीप)" नामक ग्रथ मिला है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल नही है, पर यह मूल प्रति विदित होती है।

रचयिता ब्राह्मण वर्ण के और किसी नगरस्थान के निवासी थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४७५. हनुमंत कवि और राम नारायण—इन दोनो व्यक्तियो ने "सनेह लीलामृत पच्चीसी" की रचना की है। रचना लावनी चाल मे लिखी गई है। विषय गोपी उद्धव सवाद है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिताओ का परिचय नही मिलता। रामनारायण के तीन उपनाम 'रामगुसाई', 'गुसाईराम' और 'द्विजराम गुसाई' थे। इससे पता चलता है कि ये ब्राह्मण थे।

प्रस्तुत हस्तलेख याज्ञिक सग्रह (ना० प्र० सभा) मे है, जिसके ऊपर स्वर्गीय प० मयाशकर याज्ञिक ने लिखा है कि ये लोग व्रज मे राधाकुड पर रहते थे।

खोज में ये नवोपलब्ध है।

४७६. हनुमान—इनके दो ग्रथो 'शिखनख' और 'द्रौपदी अष्टक' के विवरण लिए गए है। प्रथम ग्रथ में राधा जी के शिख नख का और दूसरे मे द्रौपदी के चीरहरण का वर्णन है। दोनो उत्तम काव्य रचनाएँ है। इनकी प्रस्तुत प्रतियो मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही हैं।

रचयिता का भी इनके द्वारा कोई विवरण नही मिलता। परंतु 'शिखनख' का उल्लेख खोज विवरण (२३–१४७) मे हो चुका है, जिसमे इनके रीवाँ निवासी होने की सभावना की गई है। प्रस्तुत रचनाओ द्वारा ये प्रतिभाशाली कवि विदित होते है।

४७७. हरजू (सुकवि)—इन्होंने "बिहारी सतसई" का नायिका भेद के अनुसार नवीन क्रम लगाया, जिसकी एक प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १९४३ है। खोज विवरण (४१–३१२) मे ग्रंथ का उल्लेख हो गया है। उक्त विवरण के अनुसार रचयिता जौनपुर निवासी, किसी रामदत्त के आश्रित और सवत् १७९१ मे वर्तमान थे। प्रस्तुत प्रति द्वारा और कोई परिचय नही मिलता।

४७८. हरदेव गिरि—इनका 'भगवद्गीता का अनुवाद' मिला है, जो पहले खोज विवरण (१७–६९) मे आ चुका है। उक्त विवरण मे इनका परिचय इस प्रकार है :—

"काशी के परमहस साधु, पश्चात् दलीपपुर गाँव मे रहने लगे। संवत् १९०१ के लगभग वर्तमान"

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल एक ही सवत् १९०१ है। रचयिता ने किसी हनुमत नृपति का उल्लेख किया है, जिन्होंने गगा के किनारे एक ग्राम बसाया था। इनके विश्रामदास नामक शिष्य ने प्रस्तुत प्रति लिखी।

४७९. हरि आनंद—इन्होने "देवीविलास (दुर्गासंवाद)" की रचना की। ग्रथ में भगवती की कीर्ति और कर्मो का बड़ा सुदर, भव्य और काव्योपयुक्त वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८४९ और लिपिकाल सवत् १८७७ है। प्रस्तुत प्रति सवत् १८६२ मे रचयिता के हाथ की लिखी प्रति से नकल हुई है।

रचयिता गौड ब्राह्मण थे और गंगा यमुना के बीच डिभाई नगर मे रहते थे। पिता का नाम दूलहराम था। इनके एक धनी मित्र सीताराम थे, जिनके कहने पर इन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की। अन्य वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४८०. हरिकृष्णदास या कृष्णदास—इन्होने संवत् १९०७ मे 'रसमहोदधि' की रचना की। ग्रंथ मे वल्लभ कुल के गुसाई श्री गिरिधर लाल जी का चरित्र वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति सवत् १९४१ की लिखी है। जीवन वृत्त के अतिरिक्त काव्य की दृष्टि से भी रचना अच्छी है।

रचयिता का नाम हरिकृष्णदास या कृष्णदास दोनों मिलते हैं। ये वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे। इससे अधिक इनका और कोई परिचय नही मिलता। प्रस्तुत ग्रथ के द्वारा ये अच्छे कवि जान पडते है। खोज मे नवोपलब्ध है।

४८१. हरिचरण (द्विज)—इनके कुछ 'फाग' मिले है, जिनमे वियोग शृगार का अच्छा वर्णन है। रचना की भाषा मे भोजपुरी का मिश्रण है।

रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी परिचय नही मिलता। भाषा के आधार पर जान पडता है, ये पश्चिमी बिहार अथवा गोरखपुर, आजमगढ और बलिया जिले मे से कही के रहने वाले थे।

खोज में ये नवोपलब्ध है।

४८२. हरिदास—इनकी "ब्रजलीला" नामक रचना मिली है, जिसमें श्रीकृष्ण की व्रज लीला का वर्णन है। काव्य की दृष्टि से रचना साधारण कोटि की है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नहीं मिलता। पिछले खोज विवरणों में इस नाम के कई रचयिताओ का उल्लेख है, पर प्रमाणाभाव मे उनमें से किसी के साथ इनका साम्य नही ठहराया जा सकता।

४८३. हरिदास (संभवतः हरिराय)—इनकी दो रचनाएँ, "गोवर्द्धन लीला" और "श्री गुसाईं जी विट्ठलनाथ जी की वनयात्रा" नाम से, मिली है। इनके रचनाकाल, लिपिकाल और विषयादि का विवरण नीचे दिया जाता है —

(१) गोवर्धन लीला—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्धन लीला का वर्णन।

(२) श्री गुसाईं जी विट्ठलनाथ जी की वनयात्रा—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्री गो० विट्ठलनाथ जी की वनयात्रा का वर्णन।

ग्रथो द्वारा रचयिता का इतना ही पता चलता है कि ये वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे। अन्य वृत्त अज्ञात है। विवरणकर्ता (प० कठमणि शास्त्री, सचालक, विद्या विभाग, कॉंकरोली) के लेखानुसार ये सुप्रसिद्ध हरिराय है, जो नाथ द्वारा (उदयपुर) मे श्री गोकुल नाथ मदिर के अधिष्ठाता थे। इनके सबध मे देखिए, प्रस्तुत विवरण मे हरिराय जी का विवरण सख्या (४८६)।

४८४. हरिदास (जन)—इनके कुछ 'पद' मिले है, जिनमे संतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णित है। पदो की प्रस्तुत प्रति खडित है। उसमे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही है।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण उपलब्ध नही। इनकी रचना बहुत सरस है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४८५. हरिदेव—इनके दो ग्रथ, "गुरुमत" और "रामायण (रामवैभव)" नाम से मिले हैं जिनका विवरण नीचे दिया जाता है :—

(१) गुरुमत—रचनाकाल १८८६, लिपिकाल सवत् १८६० वि०। विषय—गुरु माहात्म्य। लिपिकाल की दृष्टि से प्रति रचयिता के काल की ही है, अत महत्वपूर्ण है।

(२) रामायण (रामवैभव)—रचनाकाल, लिपिकाल एक ही सवत् १८६४। विषय—रामचरित्र वर्णन। यह कवित्त, सवैया और छप्पय आदि छदो मे है। रचनाकाल, लिपिकाल एक होने से प्रस्तुत प्रति मूल प्रति विदित होती है।

रचयिता ब्राह्मण वर्ण के थे। अन्य परिचय उपलब्ध नही। खोज विवरण (३२–७९ ए) मे 'गुरुमत' का उल्लेख हो गया है, पर उसमे भी इनका कोई वृत्त नही मिलता। ये अच्छे कवि जान पडते है।

४८६ हरिराय (उपनाम रसिकदास, रसिकराय, रसिक प्रीतम आदि)—ये रसिक प्रीतम, रसिकदास, रसिकराय, रसिकचरण और रसिक शिरोमणि उपनामो से भी रचना करते थे। पिछले खोज विवरणो मे इनके कई ग्रथो के उल्लेख है, देखिए खोज विवरण (१७–७४; ३२–८३, ३५–३८, ४१–३२२– ००–३८, २३–१६०, ३८–५६)। इनके अनुसार ये गोकुल निवासी, वल्लभाचार्य के शिष्य व अनुयायी, सिहासनाथद्वारा (मेवाड, उदयपुर) मे श्री गोकुलनाथ जी के मदिर के अधिष्ठाता और सवत् १६०७ के लगभग वर्तमान थे।

इस बार इनके निम्नलिखित ग्रथ और मिले है :—

(१) मधुराष्टक की टीका—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धांतानुसार श्री ठाकुर जी के माधुर्य रस का वर्णन। मूल ग्रथ सस्कृत मे है।

(२) चिंतन—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धातानुसार ज्ञानोपदेश। इसमे रचयिता का नाम 'रसिकदास' है।

(३) अष्टाक्षर मंत्र की टीका—इसकी दो प्रतियो के विवरण लिये गए हैं। रचनाकाल, लिपिकाल किसी मे नही दिए है। विषय—पुष्टिमार्गीय अष्टाक्षर मंत्र की व्याख्या और माहात्म्य वर्णन।

(४) **गोकुलाष्टक की टीका**--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय--गोकुल का माहात्म्य वर्णन ।

(५) **षट्षष्टि अपराधा**--रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त । विषय--पुष्टिमार्गीय वैष्णवो के अपराध तथा उनसे निवृत्त होने के उपायो का वर्णन ।

(६) **नवरात्र के कीर्त्तन**--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय--नवरात्रो मे गाए जाने वाले पदो का सग्रह ।

(७) **नवग्रह आकार (नवग्रह पूजन प्रकार)**--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय--पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति मे शांति लाभ के निमित्त नवग्रहो का जप और उनकी पूजा का विधान वर्णन ।

(८) **नामरत्न स्तोत्र विवरण भाषा**--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय--गो० विट्ठलनाथ जी का यशवर्णन । मूलग्रथ सस्कृत मे है, जिसको गो० विट्ठलनाथ जी के पाँचवे पुत्र गो० रघुनाथ जी ने रचा ।

(९) **नित्यभावना (सेवा तथा स्वरूप की)**--रचनाकाल ज्ञात नही । लिपिकाल संवत् १८५५ के पूर्व । विषय पुष्टिमार्गीय सेवा प्रकार का विवेचन।

(१०) **पुष्टि दृढ़ाव की वार्ता**--रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त । विषय--पुष्टि संप्रदाय के वैष्णवो को ज्ञानोपदेश । इसकी दो प्रतियाँ मिली है । खोज विवरण (३२--८३) मे यह वार्ता आ गई है ।

(११) **श्री ठाकुर जी के षोडश चिह्न (सचित्र)**--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय--भगवान् के चरणो के षोडश चिह्नो का वर्णन ।

(१२) **बरसदिन के उत्सव को भाव**--रचनाकाल अज्ञात । लिपिकाल सवत् १६५६ । विषय--पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति का वर्णन ।

(१३) **वसंत होरी तथा डोल की भावना तथा तदात्म वर्णन**--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय--पुष्टिमार्गीय सप्रदाय मे डोलोत्सव मनाने का वर्णन ।

(१४) **चतुःश्लोकी टीका**--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय--चतुःश्लोकी भागवत की भाषा टीका । मूल सस्कृत टीका आचार्य वल्लभाचार्य जी कृत है ।

(१५) **कुंभनदास की वार्ता--चौरासी अपराध वर्णन**--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात । विषय--पुष्टिमार्गीय सेवापद्धति और सिद्धातो का वर्णन ।

(१६) **कीर्त्तन संग्रह**--रचनाकाल और लिपिकाल अविदित । विषय--पुष्टिमार्गीय मंदिरो मे गाये जाने वाले पदो का सग्रह ।

इन ग्रथो द्वारा रचयिता का और कोई विशेष परिचय नही मिलता ।

४८७. हरिवल्लभ--इनकी "राधानाम माधुरी" नामक रचना का विवरण लिया गया है, जिसमे श्री राधा जी के माधुर्य का वर्णन है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८२४ है ।

ग्रथ द्वारा न तो रचयिता के नाम का पता चलता है और न उसका अन्य कोई परिचय ही उपलब्ध होता है । खोज विवरण (२६--१४७ जी) मे यह हरिवल्लभ के नाम पर उल्लिखित है । इसी आधार पर यह इनकी रचना मान ली गई है । उक्त विवरण मे इनका इतना ही परिचय मिलता है कि ये वर्ण के ब्राह्मण और सवत् १७७१ के लगभग वर्तमान थे ।

४८८. हरि विलास--"हरिविलासाख्य" नाम से इनकी उत्तम काव्यकृति उपलब्ध हुई है, जिसमें राम और कृष्ण चरित्र सक्षेप मे वर्णन किए गए है । रचना की प्रस्तुत प्रति खडित

है। उसमें रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता । रचना दोहा, चौपाई, सवैया, कवित्त, छप्पय आदि अनेक छदो मे हुई है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। सभवतः ये खोज-विवरण (२६–१४६ और २६–१७७) मे आए हरिविलास है, जो दामोदर के पुत्र, गोमती तट पर लक्ष्मणपुर (लखनऊ) के निवासी और सवत् १६१६ के लगभग वर्तमान थे। उक्त खोज विवरणों मे इनके छह ग्रथो के उल्लेख है।

४८६. हुमन अली खाँ—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ३२।

४६०. हिम्मति सिंह—इनकी "गगा प्रबोध गीता" सरस रचना है, जिसमे गगा माहात्म्य वर्णित है। रचनाकाल सवत् १८२५ है और लिपिकाल सवत् १८५८।

रचयिता ने नाम के अतिरिक्त अपना और कोई परिचय नही दिया। पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के व्यक्तियो मे ये नितान्त भिन्न विदित होते है। अत. खोज मे नवोपलब्ध है।

४६१. हीरालाल (लाला)—इन्होने वाणिज्य व्यवसाय और वस्तुओ के क्रय विक्रय के सबध मे "बनिकप्रिया" ग्रथ की रचना की। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति से न तो रचनाकाल, लिपिकाल का पता चलता है और न इनके वृत्त का ही।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४६२. हुलास पाठक—इस विवर्षी मे इनके "शालिहोत्र" की एक खडित प्रति और मिली है। खोज विवरण (२६–१८३) मे इस ग्रथ का उल्लेख हो गया है, पर उसमे रचयिता का कोई विवरण नही दिया है। प्रस्तुत प्रति द्वारा भी इनका वृत्त उपलब्ध नही होता। रचनाकाल, लिपिकाल भी अज्ञात है।

४६३. हुलासदास—इनकी "गणेश कथा" का विवरण लिया गया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८८७ दिया है। रचयिता का परिचय उपलब्ध नही। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४६४, हेमरतन—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ३३।

४६५. हेमराज (मथेन)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ३४।

संख्या १. गगामहातम, रचयिता—अखैराम, कागज—दशी, पत्र—१३५, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४३८, पूर्ण। रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३२ वि०, लिपिकाल—स० १८४० वि०, प्राप्ति-स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस।

आदि—श्री गणाधिपतये नमः ॥ अथ गंगा महातम लिष्यते ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय श्री सुषदेव गुसांई। ग्यान भान जग प्रगटे आंई ॥
जिनके चरनदास बिष्याता। पारब्रह्म में निस दिन राता ॥१॥
गुर छौना पर भये कृपाला। तिनकूं ग्यान दियो ततकाला ॥
गुर छौंना गुर पुरवै आसा। तिनकौ "अषैराम" है दासा ॥२॥

कीजै कृपा दीन जन जानी । गुर महिमां कछु कहूं बषानी ।।
मम बुधि अलप कहन गम नाही । हिरदै बैठ प्रकासौ आही ।।३।।

:o: :o: :o: :o:

।। दोहा ।।

ऐसे ही मन सोच करि सोय गयो ता बार ।
सुपने में गुर छौन गुर बचन कहे ततसार ।।२५।।
सकल सिरोमनि भक्ति है तासूं अधिकी गंग ।
सिष सोई बरनन करो उपजै ज्ञान तरंग ।।२६।।

:o: :o: :o: :o:

अंत ।। दोहा ।।

गंग महातम की कथा पढै सुनै चित लाय ।
अषैराम सुष उपजै मुक्ति रूप होय जाय ।।३६।।
अषैराम बर्नन कियौ गंग महातम सार ।
जो कोई नित प्रति पढै लहै पदारथ च्यार ।।३७।।

।। चौपई ।।

संबत अठारह सै बत्तीसौ जानौ । माह सुदी पूनौ पहचानौ ।।
दीत वार बारकूं सोई । गंग महातम पूरन होई ।।३८।।
गंग महातम बरन सुनायौ । जे तो मेरी बुध मै आयौ ।।
सुरसरि की महिमा जु अपारा । संक्षेपन मै करी उचारा ।।३९।।

।। दोहा ।।

जटाशंकरी की कथा यौं बरनी अषैराम ।
जो कोई सीषै सुनै पावै हरिपुर धाम ।।४०।।

इति श्रीस्वामी अषैराम जी कृतं गंगा महातम संपूर्ण प्रकर्ण बीसमौ ।।२०।। इदं लिषतं केसोराम संबत् १८४० भादवा बदि ६ षष्टि चंद्र वासरे ।

विषय--गगा माहात्म्य वर्णन । ग्रथ मे बीस प्रकरण है । रचनाकाल सवत् अठारह सै बत्तीसौ जानौ । माह सुदी पूनौ पहचानौ ।।३२।।

संख्या २. सिघासनबत्तीसी, रचयिता--अखैराम, कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--४६, आकार--८३/४ X ७१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६५५, पूर्ण । रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८१२ वि०, लिपिकाल--स० १९१० वि०, प्राप्तिस्थान--भारती भवन, पुस्तकालय, इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमो नमः ।। अथ सिंहासन बत्तीसी छंदबद्ध लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

गणपति सुमिरौ सारदा श्रीवल्लभ सिर नाय ।
राधामोहन ध्यान धरि विक्रम जसहि बनाय ।।१।।
श्री विक्रम नरनाह की सुजस कथा बत्तीस ।
भाषा करि बरनौ तिन्है कृष्ण चरण धरि सीस ।।२।।
जितयक मेरी बुद्धि है तिहि सम कही बनाय ।
छिमित होउ कबिराज सब चूक्यौ लेहु सम्हारि ।।३।।

मथुरा मंडल देस में निज वृज मध्य सुथान ।
अतिही दीर्घ सुहावनौ अमरपुरी अनुमान ॥४॥
:o: :o: :o:

अथराजवंसवर्णन

॥ दोहा ॥

नारायण की नाभि ते चतुरानन अवरेषि ।
अत्रि भयौ ता दृगन ते ता दृग चन्द विसेषि ॥५१॥
:o: :o: :o:
ता वृजराज के सुत प्रगट भाव सिंह नरनाह ।
तिनके भए वदनेस सुत अनगुन गुनन अथाह ॥५६॥
:o: :o: :o:
ज्यौ दसरथ के सुत सकल भए राम अनुहार ।
त्यौ बदनेस पवित्र घर सूरज सिंघ कुमार ॥५७॥
:o: :o: :o:
प्रथम ताहि असीस करि उपज्यो हिये हुलास ।
सूरजमल्ल के नाम कौ रच्यौ "सुजान विलास" ॥६६॥
:o: :o: :o:

मध्य—

॥ दोहा ॥

और महूरत साधि के चढ़न लग्यौ भुवपाल ।
विजया बोली पूतरी दूजे बचन रसाल ॥१॥
विक्रम नृपति समान जौ एकहूं करहु जु काज ।
तौ निसंक नरनाह तुम चढ़ो सिंघासन आज ॥२॥
विक्रम नृप कैसौ भयौ कहौ पुत्रिका बान ।
कहन लगी वह पूतरी सुनत हियौ सरसान ॥३॥
:o: :o: :o:

हरिगीता

वदनेस श्री जदुवंस भूपति सकल गुन निधि जानिये ।
तिहि अरिन के बल षंड कीने कृष्णभक्त बषानिये ।
जिहि सुवन लाल सुजान सिंघ विलास कीरति छाइयौ ।
"कवि अषैराम" सनेह सौं पुतरी सिंघासन गाइयौ ॥३३॥
इति श्री सिंघासन बत्तीसी कवि अषैराम कृते द्वितीयो विलास ॥२२॥
:o: :o: :o:

अंत— देववधू फिरि भाषि के सुनो भोज महाराज ।
जो यह चरित कहे सुनें ते विलसे सुखसाज ॥२८॥
कहि कैं चली अकास कौ सहित सिंघासन साज ।
जाय मिली सुरराज कौ साजे सकल समाज ॥२९॥
अठारह से वारह गनौ संवतसर घर सूर ।
श्रांवण बदि की तीज कौ ग्रंथ कियौ परिपूर ॥१३०॥

हरिगीता

वदनेस श्री जदुवंस भूपति सकल गुननिधि जानिये ।
तिहि अरिनि के बल षंड कीने कृष्ण भक्ति प्रमानिये ।

जिहि सुवन लाल सुजान सिंघ अनेक कीरति गाइयौ ।
कवि अर्षराम सनेह सौं पुतरी सिंघासन गाइयौ ।।१३१।।

इति श्री सिंघासनबत्तीसी कवि अर्षराम विरचिते नाम द्वात्रिंशमों विलासः ।।३२।। समाप्तोयं ग्रंथश्च ।। संवत् १६१० मिति मार्गशिर कृष्ण ६ भृगौ लिषतं भोलानाथ ।।

विषय—संस्कृत ग्रथ सिंहासन बत्तीसी का हिंदी अनुवाद ।

संख्या ३. गुरू अष्टक, रचयिता—अग्र स्वामी, कागज—देसी, पत्र—१, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० जगेसर दुबे, ग्राम—मदरिया, पोस्ट—तरकुलवा, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री रामाय नमः

आनंद कंद अलोल अचवत ब्रंह्म वेद सनातनं ।
सकल मूनीजन चरन वंदितं श्री गुरु चरन प्रणामीहं ।।१।।
आकास जोति प्रकास पूर्ण त्रीवेणी तीर्थ संगमं ।
निरालंब अस कोटि यग्यं श्री गुरु चरन प्रणामिहं ।।२।।
धर्म धिर गंभिर धिरज ज्ञान गर्म संपूर्ण ।
लाल लीला मदन मोहन श्री गुरु........ ।।३।।
ब्रंह्म अमृत नयन पूरन सोहं तिलकं विराजितं ।
श्रवन कुंडल अजाय रतक श्री गुरु चरण... ।।४।।
मेरु डंड सुचित काया उनमुनी मुद्रा लीय ।
चारि स्नान नीत्यं श्री गुरु............ ।।५।।
सीध वृधि सीधतं वाणी आपदा भयभंजनं ।
कुमल पत्र यथायोधं श्री गुरु चरन...... ।।६।।

अंत— दिव्य रूप प्रधनु भानु सकल विघ्न विनासनं ।
निराधार आधार स्वामी श्री गुरु........ ।।७।।
श्री गुरु रामानंद दयाला आतुर ध्यायसून समाधिनं ।
अंक रूप तीहूं लोक गमता श्री गुरु चरन प्रणामीहं ।।८।।
श्री गुरु अष्टक पढत नीत दीन प्राप्यते फल दायकं ।
"अग्रस्वामी" चरनवंदित श्री गुरु चरन प्र.... ।।९।।
इति श्री गुरु अष्टक संपूर्णं समापतं ।।
कारतिक मासे सुकल पक्ष वार सुक्रवार ।।

श्री राम कृष्णाय नमः

विषय—गुरु (श्री रामानद जी) की स्तुति की गई है ।

संख्या ४. अठारह नाते, रचयिता—अचल कीर्ति (स्थान—फिरोजाबाद वासी), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—अथ अठारह नाते लिष्यते । प्रथम जीनेस्वराय नमः

गानु एक पसावोजी अठारह नातै कहूं सुनहु भतिविक चीतलाय जी ।।१।।
करम महा फल वरदाउ जं वुद्धीय प्रसिद्ध है भरथ दोष सुषराम से जी
आरज षंड मझार मथुरा सुष निवासो जी ।।२।।

कर्म विनांगव राजतहाँ जकीवंस उदारो जी
धनपति सेव वर्म तहा द्रव्यवंत अरोजी ।।३।।
कर्म मध सेन्या वेस्या तहो सबसे करे सनेह जी
कर्म एक समें सब वन कल्या क्रिडा करन वसंतो जी
धनपति नें देषी तबै मधु सेना सुषवंती जी ।।४।।

मध्य--कर्म चल्यौ कल्यौ वौ हौत्यो तहा मथुरा नगर ममारी जी।
मधु सेन्या वेस्या जहा जाय पौहौच्यौ व जी ।।२९।।
करम दीयौ दरव सुष भोगवै गये कछु काल्यौ जी
पुत्र एक ताकै भयौ पलना भूलौ ललौ जी करम ।।३०।।
एक समै आर्जिका पूछै श्री मुनि संतो जी
मोसो सब व्यौरो कहै कह हमारी कथो जी ।।३१।।
कर्म अवधिवंत मुनी वोलियो सुनो पुत्री एक वात जी
अपनी माता सौ कह्यौ जाय बतावो धाम जी ।।३२।।

अंत--कर्म यह संसार असार है हो
जिनवासी रस पिय दया धर्म चित मै हो यहै मुकन की नीक ।।५७।।
म कर्म धर्म कीयें धन होत है धर्म कीयें धन होय
अचल कीर्त्त कवी यौ कहै धर्म करौ सब कोय ।।५८।।
कर्म सहर फीरोजावाद मे हो नाते की चोवाल
उवारस वसौ कहौ सीषौ धर्म विचार ।।५९।।
इति श्री अठारह नाते संपूर्ण ।। श्री ।।

विषय--इसमें जैन धर्म संबंधी बातों का वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य--अचल कीर्ति के विषय में केवल इतना ही विदित है कि इनका निवास-स्थान फिरोजाबाद था। अन्य कुछ विदित नहीं होता।

संख्या ५. हरसूब्रह्म मुक्तावली, रचयिता--अजगरनाथ, (स्थान--अजगरा, बनारस), कागज--देशी, पत्र--१८, आकार--१० x ७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८५, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १९०४ वि०, प्राप्ति स्थान--श्री पं० देवराज पाण्डेय, ग्राम--नोनरा, पो०--राजपुर, डि०--गाजीपुर।

आदि--............................। (खंडित)
निम परच्यो सवारि ।। जीन लगा मरी के वस...।
षन विविधि सुठारि ।।५।। चौपाई ।। गज से तीनि वरनि नहिं जाई ।।
उत्तर दक्षिण देस सोहाई ।।
रथ सत पांच पचास विसेषा ।। अगनित गो वृष करै को लेषा ।।
हीरा मनि मानिक वहु जाती ।। स्वर्णरौप्य अगिनित वहुभांती ।।
:o: :o: :o: :o:
सप्तम राज महल महिराजू ।। मालिक सहित रहहिं तजि काजू ।।
वसै सदा नृप निज तिय संगा ।। परम प्रेम करि प्रीति अभंगा ।।
सप्तम राज महल महि राजू ।। मानिक सहित रहहिं तजि काजू ।।
वसै सदा नृप निज तिय संगा ।। परम प्रेम करि पृति अभंगा ।।

॥ दोहा ॥

अैसहि अहनिसि सुख करत तासु काल नियरान॥
हरसू द्विज गृह द्वीप लखि भूप नारि बिलखान॥७॥

:o: :o: :o:

सुनहु नाथ जहँ बर यह दीपा॥ ते जानिये बिसेष प्रतीपा॥

:o: :o: :o:

यहि प्रकार नृप हिय हरषाई॥ हरसू बल बुधि तेज सुनाई॥
सुनतहि परी मुरिछि महि कैसे॥ लागत बज्र गिरेव गिरि जैसे॥

॥ छंद ॥

मानिकमती कह आपु रथ चढ़ि सुभट लै तहँ जाइयें॥
दीपक बरै जेहि धाम ताकहँ नाथ बेगि गिराइयें॥
नाहोत मैं मरि जाब जल महँ डूबि बरु बिष खाइयें॥
राउर सपथ यह किये बिनु प्रभु जियत मोहि न पाइयें॥

:o: :o: :o:

अंत—— ॥ दोहा ॥

मुक्तावलि मणिमाल सुचि अजगर द्विज करतार॥
पहिरायउ द्विज सेवकन्ह प्रेम सूत्र सजदार॥

:o: :o: :o:

संबत श्रुति नभ अंक महि पौष शुक्ल गुरुवार॥
योग लग्न भल चन्द्र बल शंभु तिथी तिथिकार॥
श्री मुक्तावली गृंथ यह बिरच्यौ अजगर नाथ॥
श्री कालीचरणादि द्विज जो सुनि भयउ सनाथ॥४०॥

॥ अथ विसर्जन दोहा ॥

कहहिं सुनहिं जे ब्रह्म जस सहित बिबेक बिचारि।
तिनहिं चार फल देतु है श्री हरि हर सुखचारि॥

:o: :o: :o:

॥ छंद ॥

.... अपूर्ण।

विषय——हरसूब्रह्म की कथा का वर्णन।

विहार प्रांत के शाहाबाद जिले में चैनपुर नामक स्थान है, जहाँ शालिवाहन नामक राजा राज्य करते थे। उनकी स्त्री का नाम "मानमती" या मानिकमती था। राजमहल से कुछ ही दूरी पर "हरसू पाण्डेय" ब्राह्मण का घर था। आप राज पुरोहित थे। बड़े प्रसिद्ध एवं वैभवशाली व्यक्ति थे। एक दिन 'मानमती' ने महाराज से पूछा, 'महाराज यह किस व्यक्ति का घर है, जहाँ दिन रात दीपक प्रज्वलित रहता है। राजा के बताने पर रानी ने कहा, 'यदि आप इस मकान को गिरवा नहीं देते तो मैं आत्महत्या कर लूँगी।' बहुत समझाने पर भी रानी ने न माना तो लाचार होकर राजा को "हरसू" का घर गिरवाना पड़ा।

"हरसू पाण्डेय" ने राजमहल के सामने 'अनशन' आरंभ कर दिया। राजकन्या ने किसी प्रकार शर्बत पिलाकर उनकी प्राण रक्षा की। "हरसू के श्रापसे राजकुल का नाश हुआ, राजा वंशहीन हो गया। केवल वह कन्या रह गई जिसने हरसू ब्रह्म को शर्बत पिलाया था। संवत् १४८५ वि० में हरसू पाण्डेय का शरीरांत हुआ।

उस समय सैयद वंश के बादशाह मुबारक शाह दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ़ थे। उनका दूसरा नाम आलम शाह भी था। जनश्रुतियों से ज्ञात हुआ कि हरसू पाण्डेय मर कर भी जीवित हो गए। पश्चात् दिल्लीपति से उन्होंने अनुरोध किया कि आप चैनपुर पर चढाई करें। जो हो, शालिवाहन के इस कुकृत्य से प्रजा असंतुष्ट थी, इसलिये आलमशाह ने सुअवसर जान चैनपुर पर अपना अधिकार जमा लिया।

ब्राह्मणमण्डली एवं स्थानीय जनता "हरसू पाण्डेय" से संतुष्ट रही। राजवंश नष्ट होने पर वही उनके स्मारक स्वरूप "ब्रह्म" की स्थापना हुई। आज भी लोग उस स्मारक को आदर की दृष्टि से देखते है और दूर दूर से आकर उस स्थान की पूजा करते है।

रचनाकाल

४ ० ६ १

संबत श्रुति नभ अंक महि पौष शुक्ल गुरुवार।
योग लग्न भल चंद्रबल शंभु तिथी तिथिसार।।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण तथा खंडित है। केवल अठारह पत्रे उपलब्ध है। रचयिता "अजगरनाथ" जी है। आप अजगरा ग्राम (काशी) के रहनेवाले थे। प० कालीचरण के आग्रह पर 'हरसूब्रह्म मुक्तावली' की रचना की। रचनाकाल स० १६०४ वि० है, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के संबध मे और कुछ ज्ञात नही होता।

ग्रंथ की लिपि नागरी है। अनेक प्रकार के छंदो का प्रयोग किया गया है, जैसे--दोहा, चौपाई, छंद आदि। पद सरस एवं भावपूर्ण है। भाषा भी ओजस्वी है।

संख्या ६. परचरी पीपा जी, रचयिता--अनंतदास, कागज--देशी, पत्र--४४, आकार--६ x ५।। इन्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२४०, पूर्ण, रूप--जीर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १७०६, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब०--८२, पु० स० १८ है।

आदि--**।।श्री रामाय नमः।। श्री सुरसतीये नमः।। परचरी पीपा जु की लखीतं।। सब संतन की आग्या पाऊं।। तो पीपा जु की कथा सुनाऊं। गांगरूनपुर पाटण स्थानुं। कीधो दास अनंत बखानुं।।१।। गागरूनपुर वरनु केसा। दीखे पाप धरम तीहा पेसा। बहो बिधि बाड़ी काकु वानी बासु। ओर मंडी पसो ३ यको पासु।।२।। तेह पुर पीपा षीची राऊ। परजा कु दुख देअन काऊ।**

मध्य--पृ० २५

सेवा भक्त करे चित्त लाई। बहोर न मन मे दुबध्या आई।
पीपा करे राम की सेवा। ओर न कोई दूजा देवा।१६।
कली केवल नाम आधारा। ओर न कछु मनहीं बीचारा।
ताते हरजो सदा सहाई। त्रण भर लेषे लोक बडाई।१७।
सीता सहित लाज सब खोई। ऐसी भगत्य कोन पें होई।
ऐसी रीत सदा निभाई। तजी बडाई राम गुन गाई।।१८।।
साखी। सबते प्यारी कामनी लाग्य मुयो संसार।
सो पीपे तर्ण भर गणी डारा सिर का भार।।१६।। विश्राम।।२१।।

अंत-- **साखी**--

दास अनंत कहा कहे सारदा लखे न ओर।
सेसनाग गावे सदा नौतम गुण उठी भोर।३८।

निश्य नित्य गुण गावे सदा तोहू न पावे पार ।
दास अनंत कहा कहे हरि को जस अपार ।३६।
इति श्री पीपाजी की परचरी संपूर्ण ।।

समाप्त । विश्राम ३५ ।। संवत् १७८६ वरष होरी रोपनी के दीन पून के दीन दीन ग्रंथ संपूर्ण ।

विषय—पीपाजी की जीवनी और भगवद्भक्ति वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खुले पत्रो मे है और जीर्ण है । सरस्वती भडार की छाप लगी हुई है ।

संख्या ७. एकादशी माहात्म्य, रचयिता—अमरदास (स्थान—लक्षमणपुरी), कागज—देशी, पत्र—११८, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८१५ वि०, लिपिकाल—स० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गोपालचद्र सिह, एम० ए०; सिविल जज, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि................. ।

चरन कमल वंदौ गुरु केरे ।। सीतल सुभग सुमंगल घेरे ।। (पत्र २)
हृदे धरे अति मोह नसावै ।। बिमल बिराग बिबेक बढ़ावै ।।
श्री गुर चरण रेनु मनु लावै ।। मिटहिं अमंगल मंगल पावै ।।
हृदे मुकुर मल नेकु ना लागै ।। गुरु पद रेनु जासु चित पागै ।।
:o: :o: :o:
संवत अष्टादस सत जहिया ।। पंद्रह उपर राजत तहिया ।।(पत्र ३ व ४)
श्रावणमास कृष्ण रबिवारा ।। बिमल कथा ..र कृत बिस्तारा ।।
जासु महातम सो तिथि जानी ।। सकल सिद्धि प्रद मंगल षानी ।।

।। दोहा ।।

लछिमन पुरी प्रसिद्धि जग षट कुल बिप्रनेवास ।।
नदी गोमती तट बसत चारिउ बरन सुपास ।।

।। चौपाई ।।

बिमल सलिल जो मंजन करही ।। महा घोर त्रैताप न जरही ।।
तीरथ कोटि बसै तेहि मांझा ।। तेहि जल पान जनि दुष बांझा ।।
कामधेनु तनया के तीरा ।। तजहिं प्रान नहि बहुरि सरीरा ।।
महिमा अमित पार को लहई ।। लघु मति "अमरदास" किमि कहई ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

सुनहिं कथा विश्वास युत भगवत वचन प्रमान ।। (पत्र १६)
अंगद ते नर पार भव सिंधु बिना जलजान ।।
कहेउ सत्त इतिहास सुनि रिषि सौनक सुष मानि ।।
प्रेम नेम आनंद उर कथा प्रीति अधिकानि ।।

इति श्रीसूत सौनक संवादे ज्ञानदीपके मार्गशीर्ष कृष्ण पछे उतपत्ये सुबोधिनी नाम एकादसी प्रथमोध्याय १

अंत— **दोहा ॥** **पत्र (११८)**

सकल लोक आधार जेहि सक्ति मुक्ति सुष षानि ॥
ब्रह्मादिक सुरनमिते जेहि सो अंगद हित दानि ॥
मात पिता गोविंद गुर सुजन बंदि सिर नाई ॥
अंगद भाषा करिह यहु मुनि कलि कलुष नसाई ॥
१८१५ दोहा ॥ अष्टादस सरपंच दस संवत भै विमराज ॥
पौष कृष्ण सनि नवम तिथि कथा पुर्न सुभ साज ॥१६॥

इति श्री सूप्तज सौनक संवादे ग्यान दीपके कातिक मासे शुक्ल पक्षे प्रमोदिनि नाम एकादसी माहातमे चतुविंसमो अध्यायः ॥२४॥ संवत् १८६६—चैत्र सुक्ल पछे तिथौ दसम्यां रविवासरे
. . . . :o: :o: :o:

विषय—एकादशी माहात्म्य वर्णन। इसमें चौबीस अध्याय है।

रचनाकाल

संवत् अष्टादस सत जहिया ॥ पंद्रह उपर राजत तहिया ॥
श्रावण मास कृष्ण रविवारा ॥ विमल कथा कर कृत विस्तारा ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। केवल प्रथम पत्र उपलब्ध नहीं। रचनाकाल सं० १८१५ वि० और लिपिकाल सं० १८६६ वि० है। रचयिता "अमरदास" है। आप लछिमनपुरी के रहने वाले थे। यथा—

"पट कुल विप्र नेवास" मे प्रतीत होता है कि आप ब्राह्मण कुल के थे। अधिकांश स्थलों पर "अगद", "अगद दास" नाम मिलता है। केवल एक ही स्थान पर "अमर दास" मिलता है। कदाचित् "अंगददास" का लिपिकार ने भूल से 'अमर दास" कर दिया हो। शुद्ध नाम 'अगद दास' ही है। आप लछिमनपुरी (लखनऊ) निवासी थे।

संख्या ८. राधाकृष्ण रूपयुगल विलास रचित, रचयिता—अमरेश कुमार (निवासस्थान—शाहपुरा), कागज—देशी, पत्र—१०३ (पृ० ८ से १११ तक), आकार—८ × ११½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४९, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १९२३ वै०, प्राप्तिस्थान—श्रीसरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व०—१००, पु० सं०½ है।

आदि—छंद—

जय गणपति गणराय। बिनै करू सिर नाय।
जय सारद सुखदाय। दीजै विपत बहाय।
जै कपिपति हनूमंत। जपत तुम्हें सुर संत।
पोहौंचे जाय निसंक। छिन में जारी लंक।
जय गिरिजापति ईस। भक्ति करो बकसीस।
जय संकर त्रिपुरार। सेवत सदा मुरार।
जय जय दीन दयाल। कीनो बेगि निहाल॥

मध्य—पृ० ५७

अथ क्षीर सागर सेस सैया की लीला लिख्यते ॥
दोहा—व्रज भक्तन ने वीनती प्रभु सौ करी सुनाय।
सेस सैया निजि रूप कौ इन नैननि दरसाय ॥८१॥
श्री ठाकुर बलदेव जी सेस सिरोमन रूप।
अनिगिन सेस अनन्त अति अद्भुत अजब अनूप ॥८२॥

संख चक्र आयुध सरस गदा पद्म निजि पान ।
घन घुमंड घनघोर द्रुपुष्प बरस सुखबान ॥८३॥
देवन आदि सरूप लखि बिनै कीन्ह करि जोरि ।
अब ये रूप दुराईये मारो कंस कठोर ॥८४॥
व्रजगोपिकान कुं ये रूप दिखायो देवता नें पुष्पन की बरखा करी है ॥८५॥
आगें क्षीर सागर है ।
सेष शाई की झाकी दीखाई है ।

चित्र शेष शाई भगवान् का :--

अंत-- ॥चौपाई॥

धन्य नगरी धन्य देसा । सुव सौवे नृपत हमेसा ।
सदा सहाय गिररीसा । चिरजीवो कोर बरीसा ॥१६॥
साहपुर प्रगट भई श्री अमरेश कुमार ।
तिन लीला बरनन करी भक्ति रूप निसतार ॥२०॥

॥ दोहा ॥

संवत उगणीसह तेइस को माधव मास गुन ग्राम ।
शुक्ल पक्ष तिथि अष्टमी भानुरूप सुखधाम ॥२०॥

हस्ताक्षर तनसुख शर्मणों लिखितं सुभ ग्रंथ समूहम । इति श्री राधा कृष्ण रूप जुगल विलासं समाप्तं ग्रंथ ।

विषय--श्री कृष्ण और बलदेव जी की ब्रजलीला का वर्णन । ग्रथ मे सुदर चित्र दिए हुए है ।

विशेष ज्ञातव्य--यह पुस्तक लाल, नीली, सुनहली और काली स्याहियो मे सुदर लिपि मे लिखी हुई है । चारो तरफ हाशिया छोडे गए हैं । कागज दूधिया रग का है । इसके आदि मे ब्रज चौरासी कोस के यात्रास्थलो के नाम लिखे है । पश्चात् यह ग्रथ पृ० स० ८ से लिखा है । प्रकरणो के अनुसार ८१ सुदर रगीन चित्र भी दिए गए है, जो दर्शनीय है ।

संख्या ६. पद (अनुमान से), रचयिता--अयोध्यागिरि, कागज--देशी, पत्र--२, आकार--१२ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--प० मुन्नी चौबे, ग्राम--हुरभुजपुर; पो०--सादात, गाजीपुर ।

आदि--

प्रात रमौ दोउ रश लंपट शुरत जुह जै जुत अति फूल ।
श्रम वारिज घन विंदु वदन पर भूषण अंगहि अंग विकूल ॥१॥
कछु रह्यौ तिलक शिथिल अलकावलि वदन कमल मानौ अलि मूल ।
"अजोध्या गिर" मदन रग रगि रहे नैन बैन कटि शिथिल दुकूल ॥२॥
आजु तौ जुवति तेर्‌यौ वहन आनंद भर्‌यौ पिय शंगम के शूचत शुष चैन ।
आलश वलित वोल शुरगरगे कपोले विथकित अरुण ऊनीदोउ नैन ॥

अंत--

अतिहि अरुन तेरे नैन नलिन री ।
आलश जुत ईत रात रगमगे भये निशि जागरम षिन री ।
शिथिल पलक मैं उठति गोलक गति विधयो मोह न मृग शकत चालि न री ।
अजोध्यागीर कलगामिनि शंभ्रम देत मबरज अलिन री ॥२॥

विषय—गोपी कृष्ण प्रेम वर्णन ।

संख्या १०. रसधमार, रचयिता—अली मुहीब खाँ "प्रीतम", कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—५३ X ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, र० १७९७ (फागुन सुदि ६ बुधवार), लिपि-काल—सं० १८०० पौष सुदि १२ शनि), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ३५, पुस्तक सं० ७ ह ।

आदि—"श्री गणेशाय नमः ।। श्री गुरुभ्यो नमः ।। श्री सरस्वत्यै नमः ।।

दोहा–रंग गुलाल लपटे दोऊ पिय प्यारी सुख पाई ।
रस धमार बरनन करो हूजौ सदा सहाई ।।१।।
"प्रीतम" बसत सु आगरे अली मुहब खाँ नाम ।
सूरत कवि कौ शिष्य हे जानो कवि रसधाम ।।२।।
सर के मन इहि मास मों उपजत सरस तरंग ।।
रस धमार बरनन करो फागुन पाइ प्रसंग ।।३।।
सत्रह से सत्तानवे संवत फागुन मास ।
सुकल पक्ष बुधवार छठ रस धमार जगवास ।।४।।

मध्य—पृ० ५ कवित्त—

आजु प्यारी होरी को समाज करि घेरे लाल प्रेम सरसत मोद नेननि भरतु है ।
झोरी भरि न्यारी ह्वै सिहारी फेंकी प्रीतम पै जब प्रेम बढ्यो मन लालहि हरतु है ।
आँनि गहि आंचरु लडैती सो कहन लागे हमहू को देहू गति अद्भुत धरतु है ।
देख्यो न सुन्यों हे कहूं ऐसो है गुलाल यह तन पै परत लाल मन कों करतु है ।।

अंत—

इक उपमा तव प्रीतम परखी ।
कहत सुरीझि प्रेम रस बरखी ।।
नील कमल मनु सहित सुनाल ।
प्रेम बेल पै दीनो डाल ।।
प्यारी बांह परी गर प्यारें ।
ताकों प्रीतम कहत विचारे ।।
प्रीति सुपास प्रेम लै ठगिया ।
मनु सिंगार रस पकरन लगिया ।।
इहि बिधि दोऊ छबि सों रले ।
मन रंजन मे जन हित चले ।।
न्हाइ सरोवर करि जल केलि ।
सज सिंगार पुनि अति रस भेलि ।।
बैठे सिंघासन बर दंपति ।
कही न परै सोभ सुख संपति ।।
इहि छबि वृंदावन अति छायो ।
प्रीतम निरखि महासुख पायो ।।
इति श्री प्रातम कवि कृत रस धमार संपूर्णम् ।
शुभंभूयात् । लेखक पाठकयो शुभं भवति ।।
सं० १८०० पोस सुदी १२ शनिवासरे
लि० जानी भवानीशंकर वृद्धनाम कृपाराम

विषय—वसंत ऋतु और होरी विषयक पद्य।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खुले पत्रो मे है। ऊपर सरस्वती भडार की छाप है।

संख्या ११. रास पचाध्यायी, रचयिता—अली रगीली, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—$८\frac{१}{४} \times ४\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—
श्री कृष्णाय नमः ॥
राग गौरी छंद—रास पंचध्यायी

मन्मोहन लाल बिहारी काम रूप मनुहारी ॥
मदन रूप मनुहार मनोहर सुंदर नैन बिसाला ॥
पुष्कल चंद किरन जुत देप्यो ।
बन मनसिज मानो साला ॥
मोर मुकट कटि काछिनी काछें पीत पीतांबर धारी ॥
मुरली धुनि बोलत प्यारी प्यारी मनमोहन लाल बिहारी ॥१॥
वंसी जबै बजाई लाल, शब्द सुनत हुलसी व्रजबाल ॥
हुलसी व्रजबाल सुनत वंशीरव लाज शृंखला तोर ॥
हिय मद प्रगट प्रगट मद हिय में प्रेमा सिंध झकोर ॥
अस्तव्यस्त शृंगार वस्त्र, तज ग्रह कारज व्रजबाल ॥
आई लोल कपोल कुंडल छवि वंसी जबै बजाई लाल ॥२॥

मध्य—

जमुना पुलिन पुनि बैठीं आई गोपिन उत्री दई बिछाई ॥
दई बिछाइ उत्री गोपिन वंक बचन कल बोलीं ॥
कियो प्रश्न लाल सों भारों गृंथ हिये की षोलीं ॥
कह्यो लाल मै रिणी तिहारो जन्मन को मुसकाइ ॥
वचन न प्रेम मदन मद मांती जमुना पुलिन जब बैठी आइ ॥११॥
सुनी सुनि वचन मनोहर लाल आंई मंडल सव वृजवदन ॥
सबै आईं वृजबाल सबै मंडल जुरि गृंथ हिये की षोलि ॥
रास रच्यौ लाल गोपिन मिल गति मति अति हीं लोल ॥
बांहु परस्परि जोरि मंडिलत एक लाल इक बाल ॥
सरसे हिय रिस छाडयो सबहिन सुनि सुनि बचन मनोहर लाल ॥१२॥

अंत—
याते सबै बुद्धि बिसराई रास अनूठी जुक्त बनाई ॥
जुगत अनूठी अति बन आई मानो मन हुलास ॥
पूरन चंद सरद के निर्मल प्रगटन अद्भुत रास ॥
महारास हित गुनन प्रेछा सबहिन के मन आई ॥
लाल लड़ैती अली रंगीली मांती सबै बुद्धि बिसराई ॥२१॥

इति श्री रासपंचाध्यायी संपूर्ण ॥ ६ ॥

विषय—गोपियों के साथ श्रीकृष्ण के रास का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता अली रंगीली हैं, जिनके विषय मे ग्रथ से कुछ ज्ञात नहीं होता।

संख्या १२. ज्ञान चेटक, रचयिता—प्रहलाद दास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८५/८ × ६५/८ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२८ वि०, लिपिकाल—सं० १९१६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

आदि—अथ ज्ञान चेटक लिष्यते साहेब प्रहलाद दास जि के ॥

सत गुरनाम निरंतर रटै। करि परनाम ग्यान परगटै ॥
कहौ विवेक ग्यान मत पूरा। सुनै करै कोइ बिरला सूरा ॥
कीन्हे करै क्रम को जारा। नाम नाव चढि उतरै पारा ॥
जन प्रहलाद विनै चित लाया। प्रभु जगजीवन करिये दाया ॥१॥
ज्ञानी चेत महल नेहि डेरा। अगम दिष्टि लषि परयौ उजेरा ॥
गैब गुफा तह निरगुन साँई। करै बिचार बैठि तेहि ठाँई ॥
मन की दुरमति मारि निकारै। येक भाउ सब आपु निहारै ॥
दिढ बिस्वास नाम की सरना। जन प्रहलाद ग्यान कहि बरना ॥२॥
मन आचारी करै अचारा। आनै सतम (त) तंतु बिचारा ॥
काया गाउ करै दिढ आसन। सुरति निरति धरि गगन सिगासन ॥

अंत—

सत्य जतन कलि संतन्ह जानी। माषन औटि लीन्ह घ्रित छानी ॥
दुइ अछर निरगुन यौसाना। राम अमी चाषा हरि जाना ॥
प्रभु जगजीवन याद किया। जन प्रहलाद मते मह दिया ॥१०६॥
तीनिउ से तेतीस चौपइ। जेठ एकादसि का लिषि भई ॥

॥ दोहा ॥

८ २ ७ १
बसु लोचन अहि ससि समै क्रिशन दरस गुर जानु।
डंड भानु त्रित लोक मा तब सम्मपूरन मानु ॥

संबत ॥ १९१६ ॥

बैसाष मासे पुरनवासी दिन येतवारे जानु।
संवत बनइस से सोरह का लिषि संमपूरन जानु ॥

॥ दोहा ॥

सब्द ग्रथ नाषुर सहित दोहा कवित प्रमान।
प्रभु दूलह की बाँकि यह लिषि संमपूर जान ॥१॥

॥ सोरठा ॥

लिषि संपूरन जानु प्रभु मिथ्या के दोहा।
कछूक सब्द परमान सुजन चूक सभारिये ॥

॥ दोहा ॥

सब्द विषे येहि ग्रंथ मा प्रभु गिरवर के सोइ।
जो सुमिरै चित लाइ कै भक्त कहावै सोइ ॥२॥

॥ सोरठ ॥

भक्त कहावै सोइ ग्रंथ ज्ञान चेटक पढै।
प्रभु प्रहलादक सोइ दसषत दास फकीर के ॥
राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

विषय—निरगुन मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

८ २ ७ १
वसु लोचन अहि ससि समै त्रिश्न दरस गुर जानु ।
इंड भानु त्रित लोक भा तब संमपूरन मानु ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १७२८ और लिपिकाल संवत् १९१६ है। रचयिता का नाम "अहलाद दास" है। इन्होंने जगजीवन दास जी का आरंभ में आदर के साथ उल्लेख किया है, अतः उनके ये शिष्य जान पड़ते हैं। इनका अन्य वृत्त नहीं मिलता। रचना संतमत की दृष्टि से उत्तम है। लिपिकर्त्ता फकीरदास जी के कथनानुसार हस्तलेख में प्रस्तुत रचना के अतिरिक्त 'सिद्धों के दोहे' और कुछ 'शब्द' एवं गिरिवर दास जी के 'शब्द' भी लिपिबद्ध थे, पर अब इसमें प्रस्तुत रचना पूर्ण और गिरिवरदास जी के 'शब्दों' का केवल एक ही पत्र विद्यमान है। पत्रों की संख्याओं से अवश्य यह स्पष्ट होता है कि इसमें उपर्युक्त रचनाएँ रही होंगी। हस्तलेख का जो अंश प्राप्त है उसके प्रथम पत्र की संख्या १२६ तथा अंत के पत्र की संख्या १३८ है। जगजीवनदास के शिष्य दूलनदास जी का भी उल्लेख हुआ है, पर यह पता नहीं चलता कि ऐसा किसलिये किया गया है। उद्धरण नीचे दिया जाता है :—

सब्द ग्रंथ नाषुर सहित दोहा कवित प्रमान ।
प्रभु दूलह की बाँकि यह लिषि संमपूर जान ।।

संभवतः इनके भी शब्द प्रस्तुत हस्तलेख में रहे होंगे, जैसा कि ऊपर की पंक्ति से कुछ कुछ आभास मिलता है।

संख्या १३. आत्मप्रकाश, रचयिता—आत्माराम, कागज—देसी, पत्र—१८७, आकार—९½ × ५$\frac{1}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०१२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—सं० १९३५, प्राप्तिस्थान—ठा० जयराम सिंह, ग्राम—तिहिसा, पोस्ट—मेमरी महगदपुर, जिला—सुलतानपुर।

आदि—**श्री गणेशाय नमः अथ आत्मप्रकाशग्रंथ लिख्यते ।।**

प्रथम मंगलाचरण

।। दोहा ।।

परम निरंजन संत गुरु सारद गण के राज ।
इनकौ प्रथम ही बंदऊं ग्रंथ समापत काज ।।१।।
आयुर्वेद भाषा करूं अल्प बुदि नर जान ।
दोहा चौपाई के विषय औषधि ग्रंथ प्रमान ।।२।।

।। अथ आयुर्वेद की प्रकटता ।।

।। दोहा ।।

रोग ग्रसित जग देखि के ब्रह्मा कियो विचार ।
ब्रह्म संहिता एक लख रची पिता गुण सार ।।३।।
पिता संहिता दक्ष कूं दीनि आप पढ़ाय ।
सो अश्विनी सुत हरष सूं पढ़ो दक्ष पैं आय ।।४।।

।। अथ अश्विनी कुमार की प्रकटता ।।

अश्विनी सुत पढ़ि दक्ष पैं देववैद्य भये आप ।
छई गमाई चंद की विपद हरी सुरताप ।।५।।

वृद्ध अवस्था के विषय च्यवन कियो ग्रह पानि ।
लोचन दीने वय भली अश्विनी जिनिको आनि ।।६।।
भगरवि को लोचन दिये पूषहि दीने दंत ।
भुजा उतारी इन्द्र की सो जम भयो अनन्त ।।७।।
:o: :o: :o:

अंत--अथ ग्रंथ कर्त्ता की वंशावली लिख्यते ।।

।। छप्पय ।।

श्री दादू को शिष्य नाम माषू प्रकाश । जिनके प्रेम पुनीत भये सो वेणी दास ।।
वेणीदास के गंगाराम भये अति अनुरागी । भय गंग के भगत राम परचे दे वड़भागी ।।
वल्ल्ज वारे ज्याके भाई भगतराम सिद्धवंत है । चामल तट गंगा यचे अचल भजे भगवंत हैं ।।४।।
श्रीभगतराम के शिष्य नारायणदास सो जांण । तिनके दौलतिराम संत सोभए प्रमाणं ।।
जिनके खान जाद शिष्य सो आत्मराम । नगर जूनियां मध्य वास सु उत्तम ठाम ।।
आयुर्वेद भाषा कियो भिषक चतुर मन मानियो । न्यून अधिक त्वक अर्थ को कोप हृदय जिनि आनियो ।।४१।।

इति समाप्तः

इति श्री परम कृपालु महाराज श्री दौलतिराम जी तस्य शिष्य आत्माराम कृते आत्मप्रकाशे आयुर्वेद भाषायां वाजीवरण उपाय वल वीर्य क्षीण कूं उच्चटादिक मोदक विदारी कंद मोदक आकूल सप्त गुटी आदि वर्णन नाम द्विपंचाशतमो उच्छासः ।।५२।।
इति श्री आत्मप्रकाश नाम ग्रंथ समाप्तः
भादव कृष्णा त्रितीया संवत् विक्रमी १६३५ शुभं ।।

।। श्लोक ।।

५ ३ ६ १
बाणाग्न्यङ्कु निशाकरै विरहिते संवत्सरे वैक्रमे ।
मास्यूर्ज्जे प्रथमे दले हरितिथौ श्री भानुवारे शुभे ।
वैद्यानामुपकारकोयमधुना ग्रन्थः सतां प्रीतये ।
श्रीमत्केशव शर्म्मणाऽगलिपुरे संशोध्य मुद्राङ्कितः ।।१।।

विषय--आयुर्वेद विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ मुद्रित है, पर मुखपत्र और अंत का पत्र, जिसमें यंत्रालय आदि का पता रहता है, दोनों लुप्त हो गए हैं । रचनाकाल नहीं दिया है, मुद्रणकाल संवत् १६३५ वि० है ग्रंथ प्राचीन टाइप में छपा है ।

रचयिता का नाम आत्माराम है । ये दादू पंथी थे । इनकी परंपरा इस प्रकार है :--

दादू > मोख > प्रकाश > वेणीदास > गंगाराय > भगतराम > नरायणदास > दौलतिराम > आत्माराम ।

संख्या १४. अर्जुनगीता रचयिता--आनंद (गंगाराम), (स्थान--काशी), कागज--देसी, पत्र--२६, आकार ७ x ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२४, परिमाण (अनुष्टुप्)--६०६, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८३५ के लगभग प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह २७४।५३ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—ॐ श्री वासुदेवाय नमः ॥ श्री आनंदोवाच: ॥

॥ सोरठा ॥

आदि करुं पर्णाम जगत गुरू जगदीश को ।
ईष्ट आनंद के श्याम तिने निवाऊं सीस को ॥१॥

॥ चौपै ॥

शुद्ध ब्रह्म मोहन को ध्यावें । अंतकाल जिम वीच समावें ॥ २ ॥
जोत रूप ब्रजपति को जाना । सच्चिदानद अषड पछानो ॥ ३ ॥
जो है तीन लोक के माहो । उनक रूप की है परछाई ॥ ४ ॥
घट घट मे वा नट को वास । सकल जगत उनसो प्रकास ॥ ५ ॥
नित सत अव्यय अवनासी । कोट कोट ब्रह्मंड निवासी ॥ ६ ॥
उनकों जान अनादि अनंत । सकल जगत के सो भगवत ॥ ७ ॥

:o: :o: :o:

ब्राह्मण सारस्वत मोय जानो । आदि जन्म दिल्ली को मानो ॥ ४ ॥
पुन श्री विंदावन में आयो । तिह ठां बस गोवीद गुण गायो ॥ ५ ॥
वहुरो प्रालवध वस जान । श्री काशी म वस्यो आन ॥
संवत ठारह सो पैंतीस ॥३५॥ काशी वास दीया जगदीस ॥ ७ ॥
उत्तम महा कार्तिक मास । तव ते कीना काशीवास ॥

:o: :o: :o:

गंगा राम आदि मम नाम । आनंद नाम धर्‍यो घनस्याम ॥
जवते भयो श्याम को चेरो । आनद नाम तव ते मेरो ॥

॥ दोहा ॥

कृष्णानंद मम नाम है कृष्ण आनंद मोय दीन ॥
देह अभीमान त्याग के स्वामी मे भयो लीन ॥

अंत—

जब लौं मनुष शरीर है पाप पुन्य कर सोय ।
अंत मिलत फल सवन को कर्म करत है जोय ॥
पुन वोले त्रिभुवन के साई । अर्जुन और सुनो चित माही ॥
सूर्य चंद्र ग्रहन जब होई । अन्न जल इनमै षावे जोई ॥ २ ॥
अथवा कोई लघुशंका करे । अथवा जल घट मै भर धरे ॥ ३ ॥
बिना भजन और काज जो करे । सो जन नर्क घोर में पड़े ॥ ४ ॥
जो जन भजन विना कछू करे । दुर असीस रवि शशि उचरे ॥ ५ ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—संस्कृत ग्रंथ अर्जुन गीता का भाषानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख अंत से खंडित है । केवल १३ पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही है । परतु रचयिता ने अपना काशी मे आने का समय स० १८३५ दिया है, अतः इसी समय के लगभग उन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की टीका की होगी । टीका करते समय उनकी आयु बीस वर्ष की थी :—

ये पहले दिल्ली के वासी थे, जहाँ से वृंदावन गये और कृष्ण भक्ति मे लीन हो गए । परतु आगे जैसा कि ये कहते हैं, प्रारब्धवश सवत् १८३५ मे काशी मे आकर बस गए । पहले इनका नाम

गंगाराम था, परंतु पश्चात् श्री घनश्याम (श्रीकृष्ण भगवान्) ने 'आनंद' नाम रखा। इनके गुरु का नाम संभवतः विष्णुदास था। 'कृष्णानंद' अपना अन्य नाम इन्होंने स्वयं रखा।

संख्या १५क. आनंदविलास, रचयिता--आनंद कवि, कागज--देसी, पृष्ठ--१२, आकार--८¼ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--३०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० सं० ५२, पु० सं० १ मं ह।

आदि--श्री कृष्णाय नमः ।। कवित्त ।।

गरजें जलद अति घटा गहरानी कारी चहुं ओर चंचला चलाके बहु न्यारी हें ।
बरसे समूह घन लहरे पवन बहे गावत मलार तान गान छबि भारी हे ।
आनंद कहत तहा मोर पिक सोर करें दपति झरोखा में मुरति सुखकारी हे ।
केरनि पे बेल उरझाय रही जेसे यहां लाज मे लिपटी जात सांवरे सों प्यारी हे ।। १ ।।

मध्य--पृ० ६

ललिता बिसाखा राधा औरहू सखीन लीये क्रीडत कालिंदी मांझ कंज कर लीने हें ।
ता छिन चलत ब्रज चंद तहां ठाढ़े आय पेखि ब्रज स्यामा स्याम राच बस कीने हे ।
खेलत अनेक रंग नयन अनंग भरे आनंद कहे पहिरे पट झीने हे ।
ईन्दु मुख ऊपर अलक छबि छाय रही बेसर ललित मोती केलि रस भीने हे ।।४४।।

अंत--

मालती कमल कुंज महल गुलाब बने, वृंद पारजात खंचे छज्जन चमेली हे ।
कदली कदंब चंपा थहर थहर करें सेवति तमाल स्याम लिपटि सुबेली हे ।
फूलन सजी हे सेज फूलन गिलास पंखा फूल मन मदन ते बाल रस रेली हे ।

विषय--श्री कृष्ण और राधा जी के चरित्र संबंधी ५६ कवित्त।

विशेष ज्ञातव्य--लाल छींट के पुट्ठे में आसमानी रंग के कागजों पर लिखी हुई पुस्तक है। स० भं० की छाप लगी है।

संख्या १५ख. ककावली, रचयिता--आनंद कवि, कागज--देसी, पृष्ठ--३ (१३ से १५), आकार--८¼ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३२, अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)--५०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं०--५२, पु० सं० १।२ है।

आदि--अथ ककावली लिख्यते ।।

कका कालिंदी के कूल पर करत केल रस रास ।।
कामिन सब जुरि के चली मनमोहन के पास ।। १ ।।
खखा खान पान तजि ग्रहन ने सुन बंसी धुन कान ।
बिह्वल तन कछु सुध नही आंई परम सुजान ।। २ ।।

मध्य--

ददा दसन जोत दामिन दमकि कटि केहर लचकंत ।
गज गामिनि चंपक वरन कुच पर कच लटकंत ।।१८।।
धधा धनि धनि ये वृज गोपिका हरि संग करत विहार ।।
सुर नर मुनि मनसा करे ध्यान करत पचि हार ।।१९।।
नना नबला अबला कमल मुख भई श्रमित अति जानि ।।
कृष्ण मनोहर संग मिलि क्रीडत जल महि आनि ।।२०।।

पपा पहर वसन तट आवहीं करत कमल की मार ॥
पोहोप वृष्टि सुरगन करें जे जे शब्द उचार ॥२१॥

अंत--

क्षक्षा क्षण क्षण में लीला सुमरि धरत हिये जे गाढ़ ।
वे भवसागर तर गये तिनको जग जस बाढ़ ॥३५॥
ज्ञज्ञा ज्ञान गुरुन की कृपा ते भयो यथामति मोय ।
कवि आनंद मन हुलसि कें रच्यो ग्रंथ सब जोय ॥३६॥

इति श्री रास क्रीड़ा की ककावली संपूर्ण ।

विषय--रास क्रीडा विषयक दोहे है । बालकों को अक्षर ज्ञान कराने के लिये भगवान् कृष्ण की लीलाओं का अक्षर क्रम से वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--छीट के पुट्ठे मे पुस्तक रखी है । इसमे पहले 'आनद विलास' बाद मे प्रस्तुत 'ककावली' और तत्पश्चात् बारहमासी नामक ग्रथ है ।

संख्या १६क. कोकशास्त्र, रचयिता--आनद कवि, कागज--देसी, पत्र--१७ (२७ से ४३), आकार--६ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--३६, परिमाण (अनुष्टुप्)--४०१, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १७०५ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब०--१०१, पु० स० ५/३ है ।

आदि--॥ सीध श्री गणेसाइ नम ॥ कोकशास्त्र लीखे दुहा ॥
ललित सुमन घन अली प्रबचतन छबी अन लोकोद ।
रता बिनोद सेइ घक रूची जेजे मदन अनद ॥ १ ॥
बनो काम अभी राम छबा भामिनी भोग ।
सकल कोक दधि मथन करि रचौ सार संजोग ॥ २ ॥

मध्य--पृ० ३४ दोहा ॥ रती आदि मुख जल मोटे तालो गले पसुकोजी । निज मन आनंद उपसे तरुनी के सुख दीज ॥८१॥ नारी द्रवन वीध । सोरठ । द्रवन जब लगी नार तब लग सुख पावे नही । लीजेहु चतुर विचार रती एक नर भामकी ॥८२॥

अंत--ता पाछे भये जु कवी अनेक तीही रचे कावीअ । करी बावेक । कमो प्रदीप अरी पांच बान । फुनीर तीर हसुनां नहीं सुजान । महान बीनोद आनंद रग । रती राजन सपत मरती रांग । पठी कसकल काव्य अती करो बीचार । बरनौ आनंद अती कोकसार ।१७६। दूहा ॥ षांड तांच दस अती सरस । रचे जबहु बीधी छंद । पढत चढत अती चोप चीत बढ़त आनंद ।१७७। इति श्री कोक संपुरन समापतो । संवत १७०५ वर्षे शाके १५७१ प्रवर्तमाने वैशाख सुदि १३ शुभ दिने माहाराणा श्री ५ श्री जगत संघ जी कुंवर श्री राज कुंवार जी जियज राज्ये पंचोली अखेराज जी क्रसन दास जी समस्त पाठनार्थ चेला हीरा लिखतं । श्री उदेपुर मध्ये ।

विषय--कामशास्त्र विषयक ग्रथ है ।

संख्या १६ख. कोकसार, रचयिता--अनद, कागज--देसी, पत्र--२३, आकार--$६\frac{६}{१६}$ × $५\frac{५}{१६}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--५४६, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १७६३ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--

...नी के धरत वीस्ट पर पाइ ।
कोक पढ़ै...ता समै बीनु दीपक जीमी धाम ॥

ता कारन इह रचो है कोक सार इमी नाम ।
जो नर कोक अपाढ है राज घर घर सम ग्राही ।।
ललति नमन मथ अलपन जानत छवी अभीनव कद ।
मधी हति अतरिती रौन जं जै मदन अनंद ।।

।। प्रथम षंड ।।

प्रथम तरुनी सव कहत हो प्रगट वीचारी वीचारी ।
पदुमनी चीत्रीनी सषोना और हस्ती नारी ।।
पदुमीनी चपक वरन तन अतो कोमल तेहि अंग ।
चंहु दिसि गुंजत भवर तेहि नामिषो न छाड़त सग ।।
नही भारी नहो दुबली नही लघु दीरघ अग ।
अती बिचीत्र चात चीत्रनी लोचन ललति कुरंग ।।
तन दीरघ दीरघ चरन करवट दीरघ वाम ।
चलत चाल उत्ताल अती जानु संषीनी वाम ।।
तन भारी भारी भुजा भारो ग्रीव नितंब ।
भारी जोन नीतंब जुग चलत हस्तीनी मंद ।।

:o: :o: :o:

अंत--।। अथ पंचदस इस्त्री पुरुष इंद्रीरोग. . .औषधवर्नन ।।

अथ अस्थभन वीधी

।। आरील ।।

नीबु कागदी आनी दुफांक बनाइए ।
नौसादर अह फेन चुना सो डारीए ।
एक अना मतो राषीए ककरचो.....
.... दीजिए ।
अरुन वमन फल होंही नीकारी सो लीजीए ।
अती सुछम करी पीसी पात्र मह कीजिए ।।
नव औषध अहोफेन तासु मह दीजिए ।
सेध ओ..........न. ..म ।
लौग मीर्चो कस्तुरी ठानु ।।
केसरी चंदन वहुत वषानु ।
भीम सेनी कपूरहु जानु ।।
अकर . ...च धानु ।।
वोज उठगन से नौ नाम ।।

इति कोकसार समाप्त सीधीरस्तु सुभमस्तु समत १७६३ समै नाम पौष सुदी १५ वार मंग के लीषा माधव राम ब्रह्मचारी वासी परीगन भद्रोही ठेकाना सुरीआवा मुकाम सुभाउ गंज तहा सील कोकसार कथा राम राम राम ।

विषय--कामशास्त्र का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--सख्या १, १६, २५ और २६ के पत्रे नही है । रचनाकाल अप्राप्त है । लिपिकाल सवत् १७६३ दिया है ।

रचयिता का नाम अनद है । ये पिछले खोज विवरणो मे आ चुके है । खेद है, अभी तक इनका पूरा परिचय प्राप्त नही हुआ । प्रस्तुत नाम से इनके कई ग्रथ मिले है । कई तो एक दूसरे से भिन्न हैं ।

संख्या १७. सुदामा चरित्र, रचयिता--आनंददास, कागज--देसी, पत्र--१२, आकार--६ १०/१६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता--बाबा शिव दरसन दास, स्थान व पोस्ट-सिराथू, जिला-इलाहाबाद)

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। पोथी सुदामा चरीत्र लीष्यते ।।

अजब है गुरू जो वही कारवाज ।
षलक बीच जो है वोही कारसाज ।।
उसी कु कहें कुल आलम गनी ।
वोही है करमबक्ष साहेब धनी ।। १ ।।
उसी ने बनाया जीमीन आसमान ।
पवन आब आतस्य बनाया मकान ।।
स्वर्ग मृत्य पाताल ये भी तीन्हो ।
हरीहर जो ब्रह्मा कल्हावे तीन्हों ।। २ ।।
बनाया जो बंदा सबब बंदगी ।
नही जानता वो पड़ा गंदगी ।।
जबरदस्त माया लगाई पीछे ।
भवर जाल कर कर भुलाया उसे ।। ३ ।।
हमेशा फीकर पेट की है लगी ।
जीकर याद मौला नही बंदगी ।।
गुन्हेगार बंदा फीरे दर बदर ।
गीरफदार होकर हुवा बेषवर ।। ४ ।।
कीधर दीन दुनीया कीधर है षुदा ।
सबब पेट के मांगता है गदा ।।
अगर उस षुदा की करे बंदगी ।
मीले रोज न्यामत मीटें गंदगी ।।
इसी का जो तपसील बोलूं जीकर ।
करो माफ तकसीर साहेब मेहर ।।
भगत एक अजब सुदामा हता ।
सुनो कुल आलम उसी की कथा ।।

:o: :o: :o:

अंत--

चरीत्र सुदामा जो कोउ पढे ।
चला ज्याय बैंकुंठ ऊपर चढे ।।
हमेशा कीसन के चरन सो जड़े ।
जनम के भरोभर कभू ना पडे ।।९७।।
बनाया चरीत्र कीसन जी ये नाम ।
कीसन के क्रीपा सो हुवा है तमाम ।।
उसी कीसन का सारा बनाव ।
कहे "दास आनंद" वोही पाकपाव ।।९८।।

इति श्री सुदामा चरीत्र सपूर्णम ।। श्री कृष्णार्पणमस्तु ।। श्री राम जयराम ।।

विषय--सुदामा चरित्र वर्णन ।

संख्या १८क. कबित्त चतुःशती, रचयिता—शेख आलम, पत्र—६४, आकार—७¾ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५००, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७१२, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हि० बं० ७३, पु० सं० २८ है।

आदि—ओं ॥ श्री राधा वल्लभो जयति ॥ अथ लीला लिख्यते ॥

आंगन मे खेलत नंद ललन छल नवल गोद लै लै ललन करत मोद गान है।
आलम सुकवि पलपल मै या पावे सुख पोषन पदरख सुकरति पय पान है।
नंद सौं कहति नंदरानी हो महर सुत चंद की सी कलन बढ़त मेरे जान है।
आई देखि अनंद सों प्यारे कान्ह आखि आनद मै गान दिन आनधन आ छवि आन है ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ७३ कान्ह पयान लिखितं ॥

धीरतें अधीर भई पीर नीर चो भीजैं साचने कुंचन पर लोचन वहत है।
आलम अंदेसे कसे इहि भंग जी जे ऐसे उमासनि प्राण कैसे कै रहत है।
कहा करो माई मेरे प्राण मेरे हाथ नही प्राननाथ साथ प्रान चल्योई चहत है।
पल न लगति पल कल न परति सुनि आलीरी ललन कालिह चलन कहत है ॥७॥
सेवो सावधान देव चरितनि चेत राखैं कहा भयौ कान्ह कलेऊ रूंगे खात है।
आलम एवं है जिनि बलि छलि बधिलि मारि रावन के कंध जारि बांधे सिंधु सात है।
कहत अक्रूर नंद जू के दुख दूरि करैं रातौ पुनि पूरन पुराने वेई पात है।
अंच भरे कंचनहि कीरा कहूं कोर है कंटक की कोर कहूं हीरा वेधे जात है ॥६८॥

अंत—

पारासर लर खच्यो लहरि गार रूमें छोदरि।
शृंगी ऋषी सख रच्यो राजपुत्री सुमंत्र करि।
संकर संकि अनंग मरि अरधंग राखिलिय॥
लगति विषम फुंकार करिग कंकर गोतम मतिय॥

बच्यो न होइ आलम सुमति इहि चंचल ते कौन सौ कहियै कौन पुरुष निर्विष मह. . . न भुव गम को उरयो ॥४००॥

इति शेष आलम के कवित्त संपूर्ण संवत् १७१२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे ८ बुधवासरान्तायां लिखितं श्रीधर वैष्णव ब्रह्मचारी श्री मधुपुर्यां नमः पुस्तक स्वामी गोविन्द दास कौ।

विषय—शेख आलम कृत कवित्तों का बड़ा संग्रह है। इसमें कवि की प्राय सभी विषयों पर की गई विविध रचनाओं का समावेश है। विशेषकर राधाकृष्ण संबंधी लीलाओं का वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक के विषय में श्री भवानीशंकर जी याज्ञिक ने पुस्तक के ऊपर ऐसा लिखा है —

१ चतुःशती कल्पित नाम प्रतीत होता है। इस ग्रंथ की कई प्रतियाँ हमारे देखने में आई है। पर चतुःशती नाम किसी में भी नहीं दिया हुआ है।

२ यह प्रति सं० १७१२ वि० की है। हमारे अनुमान से समस्त प्राप्त प्रतियों में यह सबसे प्राचीनतम है।

३ इस प्रति में २०वां पत्र नहीं है। इस कारण जो भाग लुप्त हो गया है उसे एक अलग पत्र पर लिख दिया है।

संख्या १८ख. कवितासंग्रह, रचयिता--शेख आलम, पत्र--११, आकार--१० × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--४०, परिमाण (अनुष्टुप्)--५७७, अपूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि०, बं० सं०--६२, पु० सं०--३ ।

आदि--श्री कृष्णाय नमः ॥

श्री गोपाल रायो जयति ॥ कवित्त आलम के ॥

स्यामा साम संग जागे लागे प्रात आंखे लागे निपट उनिदे दोउ उपमा के खोज हे ।
स्याम तन स्याम सारी पीतांबर ओढे प्यारी छबी देख हारी जाके भरता मनोज हे ।
अधर बीराजे भारी पीके भरी लीको न्यारी पीय नेना चुबे प्यारी बरुनी के खोज हे ॥ १ ॥
आलम बीहार छबी कहांलो बरने कबी तीनहुं कों दूर जा के आसन सरोज हे ॥ १ ॥

मध्य--पृ० ११

जब के गोपाल मधु बन कों सीधारे आली मधबन भयो माहा दानव बिखम सो ।
सेख भने रयार मे सिखंडी सुक खंजरीट कीयो हे कलेस मिलि कालिंदि कदम सो ।
जांमनी बरन यह जामिनी मे जांम जग्यो बेधि बेकुं जुवती जुनांश्री कह्यो जम सो ।
देह भई करग करेजो काढ़ो चाहत हे काग भई कोकिल कगायो कारे हमसों ॥५६॥

अंत--

मन मीन काढि कय सागर के प्रेम दुते तेरें कहि बारु के पहार परगसि दे ।
पूहपन की माल हम जुवती सकोच करि तिन न कहत व्याल माल ही सँवारि दे ।
आलम सो कबी नंदलाल के समीप ह्वै ते न हां तु बीच मेरदेमे तक हारे ऊधो गारि दे ।
नेनन की धार उर बारन की वारि करे कान्ह छबी पर तेरो जोग वारि डारिदे ॥१२२॥

विषय--विविध विषयों पर रचे गए कवित्तों का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य--छुने पत्रे है । ऊपर कागज का पुट्ठा लगा है । उसके स० भं० की छाप लगी है ।

संख्या १८ग. अकार के कवित्त, रचयिता-आलम शेख पत्र--८४ आकार--६॥ × ५॥ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८ परिमाण (अनुष्टुप्)--१६११ पूर्ण । रूप--पुराना । पद्य । लिपि--नागरी । लिपिकाल--अनुमानतः सं० १८२१ से १८५५ तक । प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग कांकरोली, हिं० बं० ७७ पु० सं० ५ ।

आदि--॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ कवि शेष आलम कृत कवित्त ॥

नाथ निरंजन निरविघन करुणामय निष्काम ॥
निस्तारण तारन सो रटो निरंतर नाम ॥ १ ॥

मध्य--पृ० ७८ अथ धकार के कवित्त--

धोरी कहै दौरी आवै धूमरि धूसरि धावै ऊँची कै कै पूछनि बुलावै हरि जाहिनै ।
मैडी केरी काजरी पीरी भौरी चूरी चार वरई मंजीठी बन बेला औरु गाहिनै ।
मध्य स्याम धूम धैन धूमरी सूभरी भोहे बलि बलि सेख उपमा मै कहौं काहि नै ।
गोविंद को मन अति गैयनि मै रमि रह्यो आगे गाई पाछे गाई गाई बांए दाहिनै ॥१८॥

अंत--कवित्त--

आछे आछे खीर मेवै मंदाकिनी नीर सेवै सुरति के सीखे सुख तीखे परहरे सें ।
किधौ नलिनीलनि की पांति कांति चली जाति किधौ अरविंद तें भवर हरबरे सें ।

पखारे सेख आछे उनहारि मृग मीन परहरे से ।
ऐसें नेंनालियं स्याम आये सखि मेरे धाम दूति तनहूं तें काम बान सन हरे से ।।४३।।
इति अकार के कवित्त समाप्त ।। इति श्री कवित्त शेख आलम के समाप्त ।।

विषय—भक्ति तथा अन्य विषयक कवित्त संग्रह । प्रस्तुत संग्रह में शेख आलम कृत छंदों को अकारादि क्रम से लिखा गया है । अत. इसका कल्पित नाम 'अक्षर मालिका' प्रतीत होता है । आलम पर प० भवानी शंकर जी याज्ञिक ने अन्वेषण किया है ।

विशेष ज्ञातव्य—अक्षर क्रम से कवित्त है पर कही कहीं क्रम खंडित भी हो गया है । शेख आलम कृत कवित्तों का यह संग्रह है । कुछ कवित्तों के एक एक अथवा दो दो चरण नहीं है । पुस्तक की सिलाई में पत्रे उलट पुलट हो गए है । पुस्तक के ऊपर स० भ० की छाप लगी है । लिपि सुंदर है ।

संख्या १८घ. सुदामा चरित्र, रचयिता—कवि आलम, पत्र—५ आकार—६ × ८।। इंच । पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२ । परिमाण—(अनुष्टुप्) १३० । अपूर्ण । रूप—साधारण । पद्य । लिपि—नागरी । प्राप्तिस्थान—सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, बं०.स० १७, पु० स० २ ।

आदि—अथ सुदामा चरित्र लिखते ।

राम रमापति बिमुनी सु केसो किसुन गोपाल गोवर्धन धारी ।।
नादर सबके सीर पर कादर सुंदर तन घनिस्याम मुरारी ।। १ ।।
सूरती खूब अजायब मूरती आलम काम हे मोव बिहारी ।।
जगमग जगे जमाल जगत में हिलि मिलि दिल कीजै बलिहारी ।।

मध्य—

जिनके कदमों जव नांवो तहां न होय तुमे बदनामी ।
एक बार जाना जरूर है जैदिप हे वो आंतरजामी ।।
जो तू कहे तिर हे तो हे तो जाना मोजे जरूर भया हे ।
परी दरगाह बडे साहिब की बिना भेंट को कोन गया हें ।।
क्या तो फालि जैईस घरते जहा तहां जगदिस दया है ।
खाली हाथ नाथ सु मिलना ईसि सकुन का सोच बड़ा है ।।

अंत—प्राप्त नहीं—

विषय—सुदामा चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक में पृष्ठ संख्याएँ नहीं है । पृ० स० २ में पहले आचार्य जी श्री वल्लभाचार्य जी की वन यात्रा है, बाद में यह सुदामा चरित्र लिखा है, जिसके ६ पृष्ठ यहाँ लिखे जाकर हस्तलेख के अन्त के ४ पन्नों में और लिखा है । बाद में श्री द्वारकेश जी कृत 'पद उत्सवों' के लिखे हुए है । अंत में सनेह लीला है और रुक्मिणी विवाह है । छीट के पुट्ठे में रखी हुई पुस्तक है । सं० भ० की छाप पुट्ठे पर लगी है ।

संख्या १८ ड. माधवानल कामकदला रचयिता—कवि आलम, कागज—देसी, पत्र—२०, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६ परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६०२–३ वि० (सन् ६५१ ई०), प्राप्ति-स्थान—श्री प० बलदेव चौबे, ग्राम पो०—दुधौड़ा, जिला—जौनपुर ।

आदि--अंग नेम बल महा बल मंत्री ।। तहा राजा टोडरमल क्षत्री ।।

।। दोहा ।।

जो मंत्री विक्रम भोज के मंत्र करहि अरथाइ ।।
सुनै वेद सुमित्र सदा पुन्य करत दिन जाइ ।।
सन नव सं जो यकावन आहि ।। करौ कथा अब बोलौ ताहि ।।
कहै कथा सुनै सब लोगा ।। करौ कथा सिंगार विवोगा ।।
कछु आपनी कछु प्रती चोरि ।। कथा संसक्रित भाषा ओरि ।।
सव सींगार क्रम कीरति ।। माधव काम कंदला प्रीति ।।
कथा संसक्रित सुनि थोरि ।। भाषा बांधि चौपाइ जोरि ।।

।। दोहा ।।

माधव नल सब विधि चतुर काम कंदला सब जोग ।।
करं कथा "कवि आलम" उतपति विरह विवोग ।।
नग्र पुहुपावती उतिम संपुना ।। गोविंद चंद राजा वहुगुना ।।
ध्रम पंथ दिन प्रति पगु धरइ ।। पुहुमि पान षनि पातष करइ ।।
ताप हरन सदा सुष त्यागी ।। माधव नल विप्र वपुरागी ।।
:o: :o: :o:
सुनत नाद मोही पनिहारी ।। सिसहु ते गागरि भुइ डारी ।।
नाद सुनै तेन्ह दिन्ह काना ।। मिग्र जुथ थकित भये सुरग्याना ।।
सुनत नाद कल छुलीन संभारि ।। भुमि अहार दिन्ह सव डारी ।।
:o: :o: :o:

अंत--
अवसो किजै उपचारा ।। वाढ़े रैनि जो होइ अपारा ।।
तब माधव विना कर लिन्हा ।। विधुरूप म्रिगा श्रवन सुनि लिन्हा ।।
सरस वजावै वेनु सुरंगा ।। रहो चंद को रथ को कुरंगा ।।
सर वर व कावा अकुलाना ।। वाढि रैन न होइ विहाना ।।

।। दोहा ।।

औहे उदास अधराति राहु जाहि चंदहि गहै ।।
चलन कहाते प्रात बेनि सकल कवरौ विधी ।।
:o: :o: :o:
रसना थाकौ सोइ चलन कहै जो मित को ।।
नयेन जोति मंद होइ जो निरषै विछुरन पिउ को ।।
कर पोथी धोती कटि बांधे ।। उठा विप्र विना धरि कांधे ।।
गहि रहि कामकंदला वाहा ।। हो तोहि जानन वेउ नरनाहा ।।
कहे विग्राए मित वटाऊ ।। के जो चला मोर चित लुटाऊ ।।
अहो सजन विप्र परदेसि ।। विद्याधर मन मोहन भेसि ।।
मारहु कटा पेट महु दाहु ।। तेहि पाछे तुहु पर भुइ जाहु ।।

विषय--'माधवनल कामकंदला' नामक प्रेमकथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण है । समस्त बीस पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल सन् ९५१ हि० है । रचयिता "कविआलम" है । ग्रंथ देखने से प्राचीन ज्ञात होता है ।

संख्या १८ ख. माधवानल कामकंदला, रचयिता—आलम, कागज—देसी, पत्र—८४, **आकार**—७½ × ४६/१६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८२, **खंडित, रूप**—पुराना, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—सन् ६५१ हि०, संवत् १६०२–३ **वि०, प्राप्ति स्थान**—म्युनिसिपल म्यूजियम, इलाहाबाद।

आदि—

:o: :o: :o:

देस देस के भूपति आवैं। दवोरे भीर पार नहि पावैं॥
कांपैं बहुत त्राम जिय लेही। देश्रा कोर घर आनव लेही॥
एकछत राज विधाते कीन्हा। कहुँ दुरजन कर रहा न चीन्हा॥
धर्म देस सब राज चलावा। हिंदु तुरुक पंथ दुइ लावा॥
आगे अनेक महाबली भंवा। राजधोर ... ...॥
जे मति विक्रम भोज की सोय करन अरथाइ।
सुनत वेद सुमिरत सदा पुन्य करत दिन जाइ॥
सनि नौसे इक्यावन आहा। करौं कथा अब भाषो ताही॥
कहौं जो बात सुनो सब लोगा। करौं कथा शृंगार वियोगा॥

:o: :o: :o:

अंत—

सुनत कथा एह स्रवन सुहाई। अति रिसाल पंडित मन भाई॥
प्रीतिवंत जो होइहि कोई। बढै प्रीति मन सुख होई॥
कामी रसिक पुरुष जो सुनै। तो एह कथा रतिनि गुनै॥
...**गुनवंता** चतुर कविजन ... ... ।
...**निर्मिति** टछर धरे करि करि जतन ...॥

इति श्री पोथी माधौनल की समाप्त सं... । जो देषा सो लिषा मम दोष न दि... लिषिते **भाऊ सिंध रजपूत की मिति** कातिक वदि १० दसमी अम वासरे संवत १७६६ सनौ॥ जो एह **पोथी बांचै औ सुनै**............

र० का०

सनि नौ से एक्यावन आहीं। करौ कथा अब भाषो ताही॥

विषय—माधवानल और कामकंदला की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। आरंभ के तीन पत्रे तथा ३, ७, ८, ६, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, ७०, ७१ और ८० संख्या के पत्रे नहीं हैं।

रचनाकाल सन् ६५१ हिजरी है। लिपिकाल संवत १७६६ वि० है।

प्रस्तुत प्रति प्राचीन है तथा पाठभेद की दृष्टि से उपयोगी है।

यह श्री टंडन जी (श्री रामचंद्र टंडन, हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग) ने म्यु० म्यूजियम (प्रयाग) से कार्य के निमित्त ली है। अतः इन्हीं के यहां इसका विवरण लिया गया। पता म्यूजियम का ही है :

संख्या १८ छ. माधवानल कामकंदला, रचयिता—आलम कवि, कागज—देसी, पत्र—४६, **आकार**—७ × ५१/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०८, **पूर्ण, रूप**—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत रामचंद्र जी टंडन एम० ए०, एल-एल० बी०, १० नं० साउथरोड, इलाहाबाद। दूसरा पता—अकबरपुर, फैजाबाद, **जि० फैजाबाद।**

आदि--ॐ श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः ॐ ।।

अथ माधवानल लिख्यते ।।

ॐ प्रथमे पारब्रह्म को परणा । पुनि कछु जगत रीत कौ वरणा ।।
पार ब्रह्म पूरण पतिस्वामी । घट घटि रमि रहै प्रभु अंतर जामी ।।
जल थल रहे सरब मै सोई । जाको आद अंत लषै नहि कोई ।।

:o: :o: :o:

गज पतिराज कोटि जुग रीजै । साह जलाल छत्रपति दिज्जै ।।
दिल्लीपति अकबर सुलताना । सपत दीप महि जाकी आंना ।।

:o: :o: :o:

आगै रहै नृप मणि मंत्री । नृपराजा टोडरमल छत्री ।।

:o: :o: :o:

सुनो सोई इक नाम ताहि । .... ।।

:o: :o: :o:

अंत--

पंडित कवियंता सुनो कविजन अक्षर टेक ।
नाम निमित आलम कहि कविजन कथा अनेक ।।४०।।

इति श्री कवि आलम विरचिते माधवानल कथा समाप्तम् ।। संपूर्ण शुभम् ।।

विषय--माधवानल कामकंदला की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत प्रति यद्यपि पूर्ण है तथापि बहुत अशुद्ध लिखी है । रचनाकाल लिखने मे प्रतिलिपिकार ने ठीक ठीक न समझ सकने के कारण रचनाकाल के शब्दो के स्थान पर अन्य निरर्थक शब्द लिख दिए । जैसे, म्यू० म्यूजियम (प्रयाग) की प्रति मे र० का० इस प्रकार है :--

६ ५१

"सनि नौसै एक्यावन आहि । करौ कथा अब भाषौ ताही" ।।
"सुनो सोई इक नाम आहि । .... ।।

प्रस्तुत प्रति मे इसके स्थान पर लिखी पंक्ति दी जाती है --

सनि का 'सु' रह गया । "नो सै" का "नो सो" मे परिवर्तन हो गया और साथ ही 'नो', 'सु' के साथ लगकर 'सुनो' बन गया । इसी प्रकार "एक्यावन" का "इक नाम" हो गया । इस उलट-फेर का यह परिणाम हुआ कि पाठक को मानना पड़ेगा कि रचनाकाल नही दिया है । प्रतिलिपिकारो के द्वारा पता नही कितने ग्रंथ इस प्रकार लिखे गए है ।

संख्या १८ज. माधवानल कामकंदला, रचयिता--आलम, कागज--देसी, पत्र--१०८, आकार--७ x ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१४५८, अपूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८१३ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० राजनाथ पांडेय, एम० ए०, हिंदी अध्यापक, सेंट एंड्रूज कालेज, गोरखपुर (ग्रंथ स्वामी हि० सा० सम्मेलन, प्रयाग को ग्रंथ देने का वचन दे चुके है, अतः ग्रंथ को शीघ्र ही देने मे उन का प्रबंध हो रहा है) ।

आदि-- :o: :o: :o:

धरम रूप अवतार लिए आए । आपन कृपा...जे कीनो पाय ।
उनके नाम लेत जो रहिए । तत छीनि ताप जुरा नहि गहीये ।।
च्यारि मत बैठे एक साथा । बोलै बैनन जोरिकै हाथा ।।११।।

॥ दोहा ॥

अंबावकर उसमा वयर चौथा अलिषु भानु ।
जो इनकी सेवा करे ताहि होई अति ग्यानु ॥१२॥

॥ सोरठा ॥

बरनै च्यारो पीर अलम प्रगट संसार जस ।
ग्यान मुल मति धीर वंस रसुल ही चोत धरि ॥१३॥

॥ चौपाई ॥

गोस कुतुब का देनी कहीया । जगमनि सोद महदी अहीया ॥
वस रसुल कीया परगासा । पुरब नाम लेत मन आसा ॥
जे कोई चित ताहि सो लावै । निरभ रहिवो होत सुष पावै ॥
अपनो जन को द्रिष्टि जब करै । रिधि सिधि बहु संपति भरै ॥
जन आलम निश्च(य) करि जाना । ताके चरन ध्यान मन माना ॥१४॥

॥ दोहा ॥

सेव मुहदी पीर सो जो मन लावै कोई ।
तिहु लोक की संपदा मन वछित फल होई ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

आलम कहै वषानि जस प्रगट चहु षड मैं ।
विद्या अरथ निधान साहि अकबर जगतगुरू ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

जगतपति राज कोटि जुग कीजे । साहि जलाल छत्रपति लीजे ।
दिल्लीपति अकबर सुलताना । सप्त द्वीप मै जाको आना ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

पंडित बुधिवंता गुनि कविजन अछर टेक ।
नाम निर्मति गुन उचरै कहि कहि कथा अनेक ॥५७७॥

इति माधवानल की कथा संपूर्ण ॥ संवत् १८१३ भाद वा सुदि १ बृहस्पतिवार ॥ लिष्यतं गोपीराम वोघ मध्ये पठनार्थ रामकृष्ण जी

विषय—माधवानल और कामकदला की प्रेमकथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में १, २, ४, ६ और ७ संख्या के पन्ने नहीं हैं । रचनाकाल भी ज्ञात नहीं है । लिपिकाल संवत् १८१३ है ।

रचयिता आलम है, जो अकबर के समकालीन थे । ग्रंथारंभ में अकबर का उल्लेख है ।

संख्या १८ ङ. माधवानल कामकदला, रचयिता—आलम कवि, कागज—देसी, पत्र—८३, आकार—$6\frac{5}{10} \times 4\frac{5}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामरक्षा त्रिपाठी "निर्भीक", अध्यापक, फोर्ब्स हाईस्कूल, फैजाबाद ।

आदि....................

चै वेद पुरान नौ व्याकरन बखान है ।।
जोतक आगम जान सामुद्रिक संगीत रस ।।

।। चौपाई ।।

रूपवंत हसकल गुन भरेयो ।। पुरमे आइ काम अवतरेयो ।।
ताका रूप नार जो देखहि ।। सुध वुध भूल जाइ सविशेर्षाहं ।।
देषी रूप ते रीझ रहांहीं ।। श्रवन सुनें ते विष भर जाहीं ।।
चितवहि तीया चतुर गति कोई ।। द्रवै मदन तन व्याकुल होई ।।
जासो लोचन लागहि धाई ।। उरभ रहे मन सो नहीं जाई ।।

।। अडिल्ल ।।

मन लागै जिह धाइ सु मनहीं मैं वसै ।
सोवत जागत नैकु सु आषन मै लसै ।।
विनु देषहि अकुलाहि प्राण नहीं छोरहीं ।।
निस दिन भीजहि चीर नैन के नीरहीं ।।

।। चौपाई ।।

दिन इक प्रात भयो उजीयारा ।। माधवनल इसनान सिधारा ।।
कर मज्जन पुन तिलक सवारे ।। नाम मधुर धुन मुख उधारे ।।
सुनत नाद मोही पनहारी ।। सीसहूँ ते गगरी भुंइ डारी ।।
सुनत नाद जिन दीने काना ।। जनु मृग जूथ थकत सुरग्याना ।।

:o: :o: :o:

अंत--

।। चौपाई ।।

काम कंदला माधव कथा ।। आलम कही यथा की तथा ।।
कहुँ कहुँ बीच दोहरा परे ।। कहूं आन सोरठा धरे ।।
सुनत कान यह कथा सुहाई ।। अति रसाल पंडित मन भाई ।।
प्रीतवंत ह्वै सुनै जु कोई ।। वाढै प्रीत हीयै सुख होई ।।
कामी रसिक पुरुष जो सुनहीं ।। ते यह कथा रैन दिन गुनहीं ।।

।। दोहरा ।।

पंडित वुधवंता गुनी कविजन अछर टेक ।।
नाम हेत गुन उच्चरहिं आलम कथा अनेक ।।

।। गाहा ।।

इकु गुणा सों दो सो सज्जन जानंत सौ गुणा इक्को ।।
खल जन इहै सुभाग्रौ सौगुणा हंत हुत्त हो मित्ता ।।

इति आलमकृत माधवनल कामकंदला भाषा कथा संपूर्ण ।। शुभमस्तु सर्वेषाम् ।।
संवत १८४० ।

विषय--माधवानल कामकंदला की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ के आरभ के तीन पत्रे लुप्त है । रचयिता "आलम कवि" है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सं० १८४० वि० है ।

संख्या १८ डी. माधवानल कामकंदला, रचयिता—आलम, कागज—देसी, पत्र—४२, आकार—७$\frac{1}{8}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८८, खंडित, रूप—पुराना, (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० अक्षयवट मिश्र, ग्राम व पोस्ट—देवगाव, जिला—आजमगढ़)।

आदि ....

..........यो उजधारो । माधवानल अस्नान सिधारो ॥
कर मंजन और तिलक सवारे । नाद मधुर मुख उचारै ॥
सुनत नाद मोही पनहारी । सीस ते गगरी भुम डारी ॥
नाद हेत जिन दीने काना । रीझि रही मन चतुर सुजाना ॥
करत नाद मोहन के वेसा । मुरी ठन जो करे प्रवेसा ॥

॥ सोरठा ॥

थकी कुरंगन जूह सुनत नाद बिसरार गई ।
तब धाइ दे हूह काम कुबंड चढ़ाय के ॥

॥ चौपाई ॥

एक तो मोह मुरछ धर परही । एक बै कर ज अधर तर धरही ॥
एक नैनन सो मैन मिलावे । तन मन एक निकट चल आवे ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

अपनो सुष तिनहू तजो पर दुष षंडन जाय ।
और निवाहन दयानिधि धन धन बिक्रम राय ॥

॥ चौपाई ॥

कथा चौपही आलम कीनो । पहले नग कीन गुन लीनी ॥
कहु कहु जिन दोहरा धारा । ... सोरठा पारा ॥
सुन के कांन यह कथा सुहाई । ... मन भाई ॥
प्रीतवंत हो सुनै जु कोई । वाके प्रीत प्रधक सुष होई ॥
कामी पुरुष जु रस यह सुनई । तो दिनो न सदा गुन गनई ॥

॥ दोहा ॥

पंडित बुधवंता गुनी कव जग अंकुरि टेक ।
राम नाम गु उ.................॥

—अपूर्ण

:o: :o: :o:

विषय—माधवानल और कामकंदला की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख जीर्णावस्था में है। सब पत्ते अलग अलग हो गए हैं। आरंभ के दो पत्ते तथा अंत में ४४वीं संख्या के पश्चात के पत्ते नहीं हैं। अंत के संभवतः एक या दो ही पत्र नहीं हैं, क्योंकि ४४वें पत्र में रचयिता ने ग्रंथ समाप्ति की विज्ञप्ति कर दी है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

संख्या १६. महामहोत्सव (अन्नकूट लीला), रचयिता—ईश कवि या कवि 'व्यंकटेश' (निवासस्थान—गोकुल), कागज—देसी, पत्र—२२, आकार—७½ x ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (रत्नाकर संग्रह—४२३।४६ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ।। अथ महामहोत्सव लीला बरनन लिख्यते ।।

मोहनी छंद

कमल चरन श्री वल्लभ सीस नवाय । ईस सुकवि कह वंदत धरि द्रढ़ भाय ।। १ ।।
नंदनंदन के पद जुग तिहि धरि ध्यांन । भजहु निरंतर नित प्रति करत कल्यांन ।। २ ।।

।। छप्पय ।।

गावत सारद फिरत रटत नारद सुक लहि सुष ।
रसिक रमत मन भ्रमत रटत लंबोदर षटमुष ।।
गावत निगम अनादि शेष सनकादि सकल मुनि ।
गावत रवि ससि सकति मुकति वेधा शिव गुनि गुनि ।।
कवि ईस जोरि कर सीस नमि सदन सदा आनंद के ।
निज वंदत जुगपद कंज सुभ श्री गिरधर नंदनंद के ।। ३ ।।

:o: :o: :o:

अंत—

विनती यह कवि ईस की भूल्यो लेहु सुधारि ।
भूषन ही करि लीजियो दूषन दीजो टारि ।।२५२।।
अगहन सुदि तेरसि गुरू लीला पूरित कीन ।
संवत् कुंडलिया कह्यो समुझे परम प्रवीन ।।२५३।।

।। कुंडलिया ।।

९ ७ ८ १
निधि वारिध सिधि ससि जहां संवत सुषद सलाग ।
अन्नकोट उत्सव रच्यो श्री दाऊ बड़भाग ।।
श्री दाऊ बड़ भाग आध करि सबन समाजे ।
सातो निधि नट सहित लाल गिरधर सुविराजे ।।
वल्लभ कुल कहि 'ईस' रहें कर जोरि विबुध बिधि ।
संपति सकल सकेलि दिपति दुतिविधि सो नव निधि ।।२५४।।

।। दोहा ।।

मांन में हत सत कविनु के बढे बढ़ाये मित्र ।
परमदांन सनमांन करि जे हें पुरुष पवित्र ।।२५५।।

श्रीमद्गिरवर धरन चरन कमल चंचरिक वागधीस वंस मनि गोस्वामी श्री दामोदर महाराज हेतवे तैलंग गोकुलस्थ वागरोदी मोहन भट्टात्मज विंकटेश कवि ईस विरचितायां महा महोत्सव अन्नकोट लीला वरनन सम्पूर्ण ।। श्री ।। पुस्तक लिषि दीनी लाला बालमुकुंद कूं लिखिया बंसीधर नें ।। बांचें जाकों जेंसी कृष्ण जें गोपाल ।।

विषय—अन्नकूट महोत्सव का वर्णन ।

॥ संवत् ॥

९ ७ ८ १
निधि वारिध सिधि ससि जहां संवत् सुषद सलाग ।
अन्नकोट उत्सव रच्यो श्री दाऊ बड़भाग ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १८७९ है। लिपिकाल नहीं दिया है।

रचयिता का नाम ईश कवि है। पुष्पिका के अनुसार इनका दूसरा नाम 'व्यंकटेश' भी है। ये तैलंग ब्राह्मण मोहन भट्ट के पुत्र थे और गोकुल में रहते थे। प्रस्तुत रचना वल्लभ कुल के गोस्वामी श्री दामोदर महाराज के लिये रची गई। अतएव ये वल्लभ संप्रदाय के थे। रचना सांप्रदायिक है।

संख्या २०. शिव अंबिका स्तोत्र, रचयिता—ईश, कागज—देसी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—६ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकुमार ओझा व्याकरणाचार्य (मंत्री धर्म संघ प्रचारक), ग्राम—अंभौली, पोस्ट—बरहलगंज बाजार, जिला—गोरखपुर।

आदि—

इन्दु बाल भाल मो उरसि मुंडमाल कर कंकन कोपीन करि वासुकी अनंद के ।
देवतरु पुष्पमाल आकुलित केश वेश तन दुति विद्युताभ के समान अंबिके ।
भूषित विभूति से प्रताप सत कोटि रवि वारो मत कोटि छवि रति ओ अनंग के ।
दिव्य पट धारिनि दिगंबर सदा सोहात पाहि शंभु ईश पाहि भूधरेस कन्यके ॥ १ ॥
उन्दुर गजारि वृष वाहन परसु असि सूलपानि तेज मानो कोटिन्ह दिनेस को ।
अरुन पराग भाल सोहत दुकूल लाल मुंडमाल छार लपटाए उरगेश को ।
जगपूज्य जग की जननि वै जगत पितु अस्तुति करत देव आदि दे सुरेस को ।
मन वच कायकर जोरि के प्रनाम करे सहित गनेश गिरिजा को गिरिजेश को ॥ २ ॥
बरिबो बिचारि अग्नि मेरु विकरालन मो दुःख को समूह जहा केतिक कलेस है ।
सत्रुन को घेरि पट पार को अभेरि फेरि दुष्टन को फेरि जहां त्रुद्धित नरेश है ।
पूतना पिशाच भूत प्रेतन को दोष जहा विविधि प्रकार व्याधि ग्रह को गरेस है ।
संकट कठोर जहा जातना न जात कही तहाँ दीन दास को सहायक महेश है ॥ ३ ॥
जाके गुनगन को विरंचि विष्णु गावत है महिमा अपार पार पावत न सेस है ।
उतपति प्रलय सँघार के करैया सोई जाको दिव्य चक्षु इन्दु पावक दिनेश है ।
सोइ "ईश" के भरोसे जग की न आस करो तहाँ को न त्रास फेरि जहा महिशेष है ।
देस ओ विदेस स्वर्ग भूतल रसातल यो मोहि तो सहैआ एक सोई गिरिजेश है ॥ ४ ॥
आदि दै सुरेश सुर सकल समूह जुरि कज्जल बनावें मेरु जहाँ ल जहान को ।
अतिसै बिसाल वो अनूपम मनोहर बिरचि मसिपात्र सप्त सिंधु के प्रमान को ।
लेषनी सवारि सुरतरु वर साषन की पत्र जो विचित्र वसुमति के समान को ।
सारदा लिषत एहि भाँति सर्व काल "ईश" तदपि न पावैं पार तेरे गुन गान को ॥ ५ ॥

विषय—शिव पार्वती की स्तुति साथ साथ वर्णन की गई है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना खर्राकार पत्र में है जिसमें केवल ५ कवित्त लिखे है। र० का० और लि० का० अज्ञात है। रचयिता का नाम "ईश" अनुमान से लिखा गया है, जो श्लेष से प्रत्येक कवित्त में प्रयुक्त है। अन्य परिचय नहीं मिलता।

संख्या २१ क. भरतविलाप कथा, रचयिता--ईश्वरदास (इसरदास), कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--१३, आकार--७ ८/१० × ५ ८/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१५, परिमाण (अनुष्टुप्)--१७१, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--कैथीमिश्रित नागरी, लिपिकाल--संवत् १८८० वि०, प्राप्तिस्थान--पं० गयाप्रसाद शास्त्री, ग्राम--बेलासदाँ, पोस्ट--भदैया, जिला--सुलतानपुर।

आदि--राम जीव सहाए : गंगा जीव सहाए : हनुमान जीव सहाए

भरथ वीलाप काथा

॥ दोहा ॥

सुरसरि चरन मनावो : मन मह वहुत उछाह :
राम कथा कछु गावो : जाके गुन अवगाह :

॥ चोपाई ॥

राम चंदर वन कीन्ह पेआना । राजा दसरथ बहुत पछताना ॥
राम चंदर छोडा असथाना । रोए नगर सकल परधाना ॥
रोए सीआ सती वर नारी । राम लषन वीनु अवध उजारी ॥
रची रची केकइ पत्र लीषावा । दुत हाथ दे नहीअर पठावा ॥
जाहु दूत भरथ के पासा । अवधपुरी कर भयो नीरासा ॥
चोषे दुत वीदा जव भएऊ । अतरवास जोजन सत गएऊ ॥
जाहा भरथ सतुरगुन रहेउ । जाए दूत ताहा डंडवत कीएऊ ॥
कहो दूत अवध कुसलाई । कस कोसीला दरसरथ राई ॥
घर घर राजनेती ठकुराई । कसे राम लषन दोउ भाई ॥
तीनके पुतर भए अनुरागी । वीधीकर लीषा भए वएरागी ॥
कीदहु भए छत्र कर भागा (? भंगा) । की दहु दसरथ पावल गंगा ॥
अइसन मोर मन पतीआई । अब तब अवध देषो मे जाई ॥
चले दूत अवध धरो पाउ । अवधपुरी कर देषी सुभाउ ॥
आतुर चले ना वसतर सभारा । आगे पीछे ना एको वीचारा ॥
चली चली आए अवध परवेसा । नाही सभारी पगरी सीर केसा ॥
झषत कलपत रोअत जाई । पुनी कहु नगर लोग कुसलाई ॥
जबही दुत कही कुसलाई । इसट काज कछु अहे गोसाई ॥
:o: :o: :o:

अंत--

नही आए लछुमन रघुराई । तव पउआ सीर लीन्ह चढ़ाई ॥
राम लषन सीआ वन सुष पाई । परनसाल मह सेज वनाई ॥
हमहु रवह पुर वाहर जाई । हमहु सेज्या वोवरा षनाई ॥
नदीगराम भुइ वोबरी षनाई । कुसपत्र त्रेन सेज वनाई ॥
वैठे आसन प्रभु मन लाई । आगे पउआ धरी सिर नाई ॥
नीस दीन पुजन ताको करई । अवध अधार प्रान तव धरई ॥

॥ दोहा ॥

भरत वीलाप कथा वीमल "इसरदास" कही गाव ।
जो नर सुनही जो गावही जनम जनम अघ जाइ ॥

इति श्री भरथ बीलाप कथा सपुरन परती देषा सो लीषा मम दोष न दीग्रते पंडीत जनसे बीनती मोरी टुटल अषर लेव सब जोरी समत १८८० साल समे नाम माघ वदी अमावस रोज बीहफे मोकाम मउ ॥

विषय—राम के वनवास पर भरत विलाप वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८८० वि० है। लिपिकार कहता है, 'प्रति देषा सो लीषा मम दोष न दीग्रते . .' इससे स्पष्ट है कि प्रस्तुत प्रति किसी प्राचीन प्रति की नकल है। अत रचनाकाल सवत् १८८० के पहले होगा। रचना अवधी भाषा मे है और साहित्यिक है। वर्णनात्मक काव्य की दृष्टि मे सुंदर है। खेद है, रचनाकाल तथा कविपरिचय के सबध मे कुछ पता नही चला। ग्रंथ की एक खडित प्रति पहले भी मिली थी, पर उससे ग्रथ के विषय के सबध मे पूरा पता नही चला था ।

संख्या २१ ख. भरत मिलाप, रचयिता—ईश्वरदास, कागज—देसी, पत्र—८, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६ परिमाण (अनुष्टुप्)—१२० पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० दौलतराम पाडेय, स्थान व पोस्ट—सहिजादपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—अथ भरथ मिलाप लिषते ॥

॥ दोहा ॥

सुरसत चरन मनिवहु मन मै बहुत उछाह ।
राम कथा कछु भाषहु जाके गुन अौगाह ॥

॥ चौपाई ॥

रामचंद्र वन कीन्ह पयाना । राजा दसरथ बहुत पछताना ॥
रामचंद्र छांडा असथाना । दोरे नगर सकल परधाना ॥
रोवे सकल नगर नर नारी । रामचंद्र विन अवधि उजारी ॥
बचि रचि कैकई पत्र लिषावा । दूत हाथ नैहरिहि पठावा ॥

अंत—

निसिदिन पुजन ताको करई ।
अवध अधार अगोचर रहई ॥

॥ दोहा ॥

भरथ मिलाप कथा विमल "सरदासौ" कवि गाई ।
जो नर सुनहि जो गावहि जन्म जन्म अघ जाय ॥

इति श्री भरत मिलाप कथा संपूर्ण समाप्तं ॥

विषय—रामचद्र के वन चले जाने पर भरत विलाप वर्णन ।

संख्या २१ ग. भरत विलाप, रचयिता—ईश्वरदास, कागज—देसी, पत्र—१, आकार—१०×६ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८, अपूर्ण, रूप, —प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सन् १६६ (संदेहजनक), प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा ।

आदि—

तव लागी जबही मन चीत लाइ
व.....रघ सत काह बुझाई
सदा भजहु श्री राम चीत लाइ राम जपत सदा सुख पाइ
एक आचार राम प्रन लोव लाइ सीता राम लछुमन वन गयउ
अब तो आजो धानय धरी अर भएउ
.............नै दै काना .... लाना
राम राम सब कोइ काहाइ भरथ विलाप काथा वोलही
कहै स्वोदास कापी गा ।। ए
जो नरा सुनै भो सप्रताराई पाप छै जाय राम राम सुमिरै सोइ
.... संपूराना ....

अंत—एती श्री पोथी भरथ वोलाप काथ संपूरन जो पात्री देखा सो लीखा म्म दोस न दीएते पंडित जन सो बीनती मोरी भुला हराफ लेए सभ जोरी पोथी तेएरा भई दीन आता वए के रोजा सुभमस्तु...सुदी ४ सन १६६ दास खाती जानकी प्रास्द मीसीरा के राम राम ।।

विषय—रामचंद्र के वन गमन के पश्चात् भरत का विलाप वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। केवल एक पन्ना उपलब्ध है। यह जिस हस्तलेख मे है, उसमे रामायण, रामजनम और अर्जुनगीता नामक ग्रंथ भी लिपिबद्ध है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सन् १६६ दिया जो अस्पष्ट है। ग्रंथ कैथी लिपि मे है। लिपि अत्यंत भ्रष्ट तथा अशुद्ध है।

संख्या २१ घ. भरत मिलाप कथा, रचयिता—ईश्वरदास, कागज—बाँसी, पत्र—८, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ भरत मिलाप लिष्यते ।।

।। दोहा ।।

शारद चरण मनावहु मन में परम उछाह ।।
राम साखि कछु गायौ जाके गुन औगाह ।।

।। चौपाई ।।

रामचंद्र वन कीन्ह पयाना ।। राजा दसरथ मन पछताना ।।
रोवै सिया सती वर नारी ।। राम लषन विन औध उजारी ।।
रचि केकेई पत्र लिखावा ।। दूत हाथ दै नैहर पठवावा ।।
आएहु दूत भरत के पासा ।। अवधिपुरी तें भए निरासा ।।
चौथे दुत विदा जब भएऊ ।। अंतर दस जोजन सत गएऊ ।।
जहवा भरत चतुरगुन रहेऊ ।। जाइ दूत दंडवत तह करेऊ ।।
कहहु दूत औध कुसलाई ।। कस कौशल्य दशरथ राई ।।
घर घर राजनीत ठकुराई ।। कैसे राम लषन दोउ भाई ।।

मध्य— ।। दोहा ।।

दान द्रव्य भोजन द्विजनि पितु हितु श्रुति विधि कीन्ह ।।
बहुरि मातु पह जाइकै पुनि गो गोबर कीन्ह ।।

अंत— ॥ चौपाई ॥

जननी तैं अजोग अति कीना । सुत कह बहुत भाँति सुष दीना ॥
स्वामी हनेहु कवन यह जना । जहि सुष लागि राखहु निज प्रना ॥
केहि मुख जाइ कहब अब बैना । लाज न लागत तुमरे नैना ॥
समुझि राम वासी वन सैला । रोवत भरत करेउ मन मैला ॥
गुरु वशिष्ठ बोले तव जाई । तव उठि भरत गुरहि सिर नाई ॥
दै आसिष तव गुर समुझाई । वेगि राम कहु आनु वोलाई ॥

॥ चौपाई ॥

चौदह वरष अवधि सुनि पाई ॥ तवही भरत परे पग आई ॥
वहुत भाँति प्रभु तिन्है वुझई ॥ देश काल गति समुझहु भाई ॥
:o: :o: :o:
जोरि पानि वहु विनै सुनाई ॥ नहि आए लक्षमन रघुराई ॥
निसचै वचन कहौ समुझाई ॥ चौदह वरष राम नहि आई ॥
अस कहि लोगन वोध कराई ॥ कोशल्या पह गए दोउ भाई ॥
भरत देषि कौशल्या धाई ॥ परत भरत पद सो मुरझाई ॥
सुतहि उठाइ अंक मह लाई ॥ पा पकरि वहु विधि समुझाई ॥
नहि आए लछिमन रघुराई ॥ तव असीस लै सीस चढ़ाई ॥
राम लषन सिय वन सुष पाई ॥ परनशाल मह सेज बनाई ॥
हमहु रहब पुर वाहिर जाई । महि राज्या मह उघर वनाई ॥
नंदिया भूमि जावन वाई ॥ कुस पत्रन कौ सेज वनाई ॥
बैठे आसन प्रभु मन लाई ॥ सिंहासन पादुका धराई ॥
नित प्रति प्रन जनता को करई ॥ अवधि अधार प्रन तन धरई ॥

॥ दोहा ॥

भरत विलाप कथा विमल दास ईसुरहि गाई ॥
जे नर गावहि सुनहि यह जनम जनम अघ जाई ॥

इति श्री ईश्वरदास विरंचित भरत विलाप कथा संपूर्ण ॥

विषय—अयोध्या से राम के वन गमन के पश्चात् भरत का विलाप वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम 'ईश्वरदास' है, पर प्रस्तुत ग्रंथ से इनका कोई वृत्त ज्ञात नहीं होता । विशेष के लिये देखिये 'अद्भुत विलास' का विवरण पत्र ।

संख्या २२. सत्यवती कथा (सभवत), रचयिता—इसरदास (ईश्वरदास), कागज—देसी, पत्र—३, आकार—७¾×५१/१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, प्राप्ति स्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रंथदाता—पं० स्वामीनाथ दुबे, ग्राम—दुबौली, पोस्ट—खुखुंदू, जिला—गोरखपुर)

आदि—.............................

रिषिअन्ह के राआ पुछत हव मौ तोहि ।
कैसे वाढे ही पाचौ पंडौ चोषे अरथ सुनावहु मोहि ॥
सुनु जनमैं मैं कहौ वुझाई ।
तैसे वाटे ही पाचो भाई ॥

कंद मूल फल करही अहारा ।
वरष एक जाहा रहै केदारा ।।
दोसरे जमुना अगम गंभीरा ।
तीसरे नीरपति गगन गंभीरा ।।
चौथे वरष गए जग्रनाथा ।
पचए केदली सीध न शाथा ।।
छठए त्रीथी दोआरीका गएउ ।
सतए सेत वांध चली गएऊ ।।
अठए भारीषंड चली गएऊ ।
मारकंडे के दरशन पएउ ।।

।। दोहा ।।

तेही देषी उठे रिषेसर पुछत हव मैं तोही ।
कहवा से तुह पंडौ कहहु आपन सद माही ।।

:o: :o: :o:

अंत—

जौसती जाऊ अंधारा ।
भएउ वीहान सकल संवशारा ।।
हरषीत बंभा संभु मुरारी ।
"इशरदास कवी सरन तोहारी ।।

:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

तेतीस कोटि देवता सम सभके भैउ उछाह ।
अस शुनि लगन धराई जे दुनौ त्रकरी...... ।।
ब्रंभा देउ तव षंभ गडावा ।
आम डारी ताहा आनी वैशावा ।।
वालु के ताहा चौक पुरावा ।
धोतीन्ह पोथीन्ह माडौ छावा ।।
सुरज दीआ धरावा आना ।
कलस कवंडल भरी धनु पाना ।।
कुंअरी कुंअरी के चंदन लगावा ।
पारवती उठी मंगल गावा ।।

:o: :o: :o: —अपूर्ण

विषय—इंद्रपति राजा के पुत्र ऋतुपर्ण और मथुरा के राजा उदयचन्द्र की पुत्री सत्यवती की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना के केवल तीन पत्रे, संख्या ४, १८ और १९ के उपलब्ध हैं। ग्रंथ का नाम अज्ञात है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

रचयिता का नाम इशरदास कवि लिखा मिलता है, जो १९वें पत्रे मे दिया है । सभवत: इनका नाम परिष्कृत रूप मे 'ईश्वरदास' रहा होगा । शेष विवरण नही मिलता ।

संख्या २३. अंगद पैज, रचयिता—ईश्वरदास, कागज—देसी, पत्र—१५, आकार—६×६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१२००, खंडित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सवत् १८०६ वि० (जिस प्रति की नकल है उसका लि० काल सं० १७०६ है) । प्राप्तिस्थान—प० रामअनंद जी त्रिपाठी, ग्राम—दरवेशपुर, पो०—भरवारी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—.............................

दोहु वोसम करहु तव ना ।
नेपुर वैठि करहु मनग्येना ।
तुम सुवंस कुल क सिंगर । धनी जगजीवन भ्रम तुम्हर ।
अैसे भार न अगवै कोई । इन वपुरेन्ह सोक जन होई ।
सुनु स्वोमी जग की स्वौर : कहेक जु नसइ ।
वलि पुत्रा है अंगद : तेही अनींह करइ ।
कैसे हही धौ अंगव वीरा । तेजवंता धौ अलप सरीरा ।
तेही अनीकै मोहि वेख लवहु । वर वर क मोही सुनवहु ।
इ सब वनर कदर झरी । कैसे करव खेत मह मरी ।
गढे इनक्र कौन भरोसा । रहही की जही धौ अपने देसा ।
मोरी वो हई मंत्री : चोखे पठवहु एक दुता ।
वेगी जइ लै अवही : वलि रइ क पुत्रा ॥

॥ जामवंता वच ॥

जामवंत एक वुत वोलवा । केकु मल उठी अगेही अव ।
तसीवत कहै समुझइ । चोखे अंगद अनु वोलइ ।
सुनी कै दुता कटक मुँह धव । अंगव अंगद कै गोहरव ॥
अंगद नम लख दुइ चरी । वलीक अंगव अनुहं करी ।
संघ लेवइ लइ अए : जहवं वुनौ भाइ ।
राम लाछिमन के अगे : वंठे वीर सीर नइ ॥

॥ राम चंद वच ॥

छत्रीन मह तुमही वलवीरा । तुम सुवंस गुन ग्येन गंभीरा ।
क्रोध रीस कवनौ जनी मनहूँ । वीर ठरी लंक पुर गौनहूँ ।
.... । .... ।
:o: :o: :o:

अंत—

रघुनंदन अस वोले, अंगद को नही जान ।
राम राम जग तरतः "इसरदास" कवी मान ॥

इती श्री 'अंगद पैज' संपूरन समपती सुभमरतु कथ लीखी अंगद पैज संवत् १७०६ साल मिती कुआर सुदी सतीमीक कथ उत ववइनी हजरीनी पंडित जनसो विनती सोसइनक्र जोरी अछर ग्रंथ सव लेहु वीनती सुनु चीत मोरी पंडित जनसो विनती मोरी जह टूट होइ अछर तह पढ़हु तुम जोरी पद ही महमद सही की ।

संवत् १८०६ मीती माघ वदी.... ...."अक्षर उड़ गए हैं ।

विषय—रामदूत अंगद का रावण के दरबार मे जाना और अपनी वीरता दिखाना। रचनाकाल सवत् १७०६ वि० ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ में कुल पंद्रह पत्ते हैं। प्रथम पत्र लुप्त है। लिपि कैथी है, पर अत्यन्त अस्पष्ट और अशुद्ध है। ग्रथ के रचयिता 'ईश्वरदास' हैं। लिपिकाल संवत् १८०६ है। जिस प्रति से नकल हुई है उसमें लिपिकाल सं० १७०६ है, अत के कुछ अक्षर मिट गए हैं। ग्रंथ की भाषा अवधी है।

संख्या २४. अलंकार ग्रंथ, रचयिता--ईश्वर, कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--११, आकार--८½×५½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१३२, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--१९१६ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० चद्रभाल ओझा, एम० ए०, एल० टी०, मोहल्ला-जगन्नाथपुर, प्र० अध्यापक, ब्राह्मण हाईस्कूल, गोरखपुर।

आदि--राम १ श्री राम जू सहाय ॥ महावीर जू सहाय ॥

श्री गणेशायनमः

॥ दोहा ॥

एकरदन करिवर वदन सिधि सदन मुद दानि।
मदन कदन नंदन जपहु जगवंदन जिय जानि ॥ २ ॥
परसु धरन संपति भरन अवढर ढरन गनेस।
विघ्न हरन मंगल करन राषहु सरन हमेस ॥ १ ॥
सिंधुर सहि सिंधुर वदन रदन बिसद दुति भाति।
इस्वर कवि कवि वो निरषि रवि पवि छवि दबि जाति ॥
श्री गणेशायनमः अथ अर्थालंकार ॥

जाको वरनय सो उपमेय जाको उपमा देई सो उपमान समता कारक वाचक धर्म दुनो मो जो रहे चारो होय तहाँ पूरण उपमा यथा

तरुण अरुण अंबुज सम चरना।
अरु एके छै तोनी लुप्त ते आठ भेद ॥

:o: :o: :o:

अंत--व : जगे सर देयाल मी : कार्तिक शुक्ल ५ संवत १९१६ ॥ राम

विषय--तुलसीकृत रामायण में आये प्रसिद्ध प्रसिद्ध अर्थालंकारो और चित्रालंकारों का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खंडित है। बीच बीच मे इसके कुछ प्राचीन पत्रे भी है, जो एक दूसरे से इस प्रकार चिपक गए है कि उनको अलग करना बडा कठिन हो गया है। दीमक ने भी इनमें अगणित छेद कर दिए है। इससे यह पता चलता है कि जिस प्रति के ये पत्रे है उस प्रति से प्रस्तुत प्रति लिपिबद्ध हुई है। रचनाकाल उल्लिखित नही है। लिपिकाल संवत् १९१६ है। रचयिता का नाम ईश्वर कवि है। अन्य परिचय नही मिलता। प्रति बहुत अशुद्ध लिखी है।

संख्या २५. दामोदर लीला, रचयिता--उदयराम, कागज--देसी, पत्र--२६, आकार --७¼×५¼, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२२, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८५२ वि०, प्राप्ति स्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

गणपति गिरा गवरि गंगाधर गिरधरि गुर गोपाला ।
सुमिरहु सिद्ध वृद्ध विद्याधरहू जे देव दयाला ॥
लीला ललित लाल गिरधर की बाल ष्याल सुष सोहै ।
नैन बैन मुष श्रवन प्रान मन सुरनर मुनि जन मोहै ॥
बसत अहीर भीर गोकुल में गोपराज रजधानी ।
घर घर वृंद सकल सुरहिन के दही दूध रुचि मानी ॥
तिनमें नंद महरि बड़भागी भाग विभौ को बरनै ।
कृपा करी तिनके ऊपर अति तीन लोक ईश्वर नै ॥
जग्य जोग जप तप तीरथ व्रत दान मौन मन धरिकै ।
षोजत फिरत न पावत कोई कोटि जतन करि करिकै ॥

:o: :o: :o:

अंत—

कंठ कपोल भुजा गजवर दुज कमलनाल कर सोहै ।
उर वर उदर नाभि कटि कौं लषि कोटि काम मन मोहै ॥
करिवर सुंडि काम कदली जुग जंघन पर वारौं ।
चरन सरोज अरुन के आगे नष मनि मोती हारे ॥
अति सुकुमार स्याम तन सुंदर पति वसन मन मोहै ।
नव घन मनहुं दामिनी दुरि दबि देषि देषि छवि छोहै ॥
कोटि काम लावन्य स्याम तन सोभा अमित अमानौ ।
सो छवि बसौ "उदै" उर अंतर गिरधर रूप रमानौ ॥
यह लीला गिरधर गुपाल की बाल बिनोद बिलासी ।
सो या सुनें गुने अरु सीषैं सो साचौ वृजबासी ॥१६॥

॥ दोहा ॥

संवत् अठारह वामना सुदि कार्त्तिक सुदि बुधवार ।
भयौ "उदै" उर तै जबै यह लीला अवतार ॥

इति श्री उदैराम कृतो दामोदर लीला संपूर्ण ॥ १ ॥

रचनाकाल

संवत् अठारह वामना सुदि कार्तिक सुधि बुधवार ।
भयौ "उदै" उर तै जबै यह लीला अवतार ॥

विषय—श्रीकृष्ण की दधि माखन लीला तथा गोवर्धन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १८५२ है। लिपिकाल नहीं दिया है। रचयिता का नाम उदै या उदयराम है। ये वही प्रसिद्ध उदय हैं जिनके विषय में स्व० श्री मायाशंकर जी याज्ञिक कहा करते थे :—

'नंददास जड़िया तो उदै पालसिया' ॥

इनके अन्य कई ग्रंथ मिले हैं, जिनमें 'जोग लीला' बहुत उत्तम है। प्रस्तुत रचना भी उत्तम है। खेद है, इनका निवासस्थान आदि का अभी कोई पता नहीं लग सका। प्रस्तुत ग्रंथ मोहन लाल कृत 'रगमंजरी' के साथ एक हस्तलेख में है।

संख्या २६. राम रघुनाथ स्तोत्र, रचयिता--उदय कागज--देसी, पत्र--१५, आकार --६३/४ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८१, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि--श्री रामाय नमः

॥ छपै ॥

जै जै जै श्री राम मीन होय वेद उधारयो।
जै वराह जै कमठ असुर हति पुहमी धारयौ।
जै नरहरि बल पुंज प्रवल हरिनाछस मारयौ।
अति बालक प्रहलाद असुर ते वधत उबारयौ।
जौ बावन वलि छरन हरि सहस नयन रछ्या करन।
श्री रामचंद रघुनाथ प्रभु दीनबंधु असरन सरन॥ १॥

:o: :o: :o:

अंत--

राम गरीबनेवाज कहत सब जग परतछक।
सबही के प्रतिपाल दीन दुषियनि के रछक।
इह सुनि चरननि वोट लयो मैं राम तुम्हारो।
मोहि कहा है लाज नाथ तुमको सब भारो।
बार बार बिनती करैं अधम "उदै" कह इह वचन।
श्रीराम चंद रघुनाथ प्रभु दीनबधु असरन सरन॥५१॥

इति श्री रामरघुनाथ अस्तोत्र संपुरन सुभ मस्तु सुभ भवतु।

विषय--राम की स्तुति।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात।
रचयिता का नाम ग्रथात मे 'उदै' दिया है। अन्य वृत्त अप्राप्त है।
सभवत. ये "जोग लीला" ग्रथ के रचयिता उदय है, जो ब्रज के रहनेवाले थे।

सख्या २७. नवरत्न कवित्त, रचयिता--उमादास (?), कागज--देसी, पत्र--३, आकार--११३/४ × ६ इच, पक्ति (प्रपृष्ट)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--५५, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि--अथ नवरत्न कवित्त लिष्यते॥

दोहा--धन्वंतर क्षपनक अमर घटकर्पर वैताल॥
वररुचि शंकु वराहमिह कालिदास नव लाल॥ १॥
विमल चित याचक शिपल मूढ़ तपस्वी शंत॥
कृपण वुद्धि तिय नरपती ज्ञानवंत नव वात॥ २॥

छप्पय--विमल चित्त करि मित्त सतुव्वल वलि वसि किज्जय॥
प्रभु सेवा बसि करिय लोभवंतह धन दिज्जय॥
जुवति प्रेम वसि करिय साध आदर बस आनिय॥
महाराज गुन कथन बंधु सम रस सनमानिय॥

गुरु नमत सीस रस सौ रसक विद्या बल बुध मान हरिय ।।
मूरष विनोद विकैथा बचन सुभ सुभाउ जगवसि करिय ।। ३ ।।

छप्पय--याचक लघु पद लहै काम आतुर कलंक पद ।।
लोभी दुरजसु लहै असन लालची लहै गद ।।
उन्नत लहै निपात दुष्ट परदोष लहै तकि ।।
कुमन विकलता लहै लहै संसै जु रहै चकि ।।
अपमान लहै निरधन पुरष द्वारी बहु संकट सहै ।।
जो कहै सहज करकस बचन सो जग अप्रियता लहै ।। ४ ।।

मध्य--कृपन बुद्धि जस जाइ ।। कोप दृढ़ प्रीति विछोरइ ।।
दंभ विधंसइ सिफत ।। छदा मर्यादा तोरइं ।।
कुबिसन धन छय करै विर्पात पिरतापद ढारै ।।
मोह मरोरै ज्ञान विषय शुभ ध्यान बिडारै ।।
अभिमान विनेदे विनय गुर्नाप सुन कर्म ।। गुरुता गिलै ।।
कुकला अभ्यास नासै सुपथ दारिद सौ आदर टलै ।। ८ ।।

अंत--ग्यानवंत हठ गहै निरधन परिवार बढ़ावै ।।
विधुवा करै गुमान धनी सेवक होइ धावइ ।।
वृध न समुझै नारि भरता अपमानै ।।
पंडित किरियाहीन राज दुरबुद्धि प्रवानै ।।
कुलवंत पुरुष कुल वित्त जे वंधु न मानै वंधु हिउ ।।
सन्यास धार धन संचरै ये जमै मुरष विघत्त ।।

इति श्री नवरत्न कवित्त संपूर्ण ।। मिति असाढ़ शुक्ला ।।१२।। संवत् १८८८ ।।

विषय--विभिन्न उदाहरणो द्वारा ज्ञानोपदेश किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ से तो रचयिता के विषय मे कुछ प्रकट नही होता। परतु उमादास-कृत "नवरत्न" नामक नीति ग्रथ है। बहुत सभव है, प्रस्तुत रचना उन्ही की हो। लिपिकाल सं० १८८८ है।

संख्या २८. स्वरोदय (षट्प्रकास), रचयिता--ऋषीकेश, (स्थान--आगरा), कागज--देसी, पत्र--३१, आकार--५½ × ५½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--३४१, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८०८ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० अम्बिकादत्त शुक्ल, कविराज, ग्राम--शेरगढ, पो०, मूरतगज, जिला--इलाहाबाद।

आदि--. . . . . .जुहै
तुमते वहोते काल न्यारो जुहौ।
वेगि दया सिंधु दया कीजियै ।।
चाहत हो वेगि दरस आई दीजियै ।।
देख्यौ नहीं और कोऊ भै हरन ।।
याते पर्यौ आइ तिहारी सरन ।।

।। सोरठा ।।

ज्ञान दीप सुषरासि "जीवनराम" सनेह सों ।।
जैसे कियो प्रकास सो सुनियै सब कहत हौं ।।

॥ नगर वर्नन ॥

जमुना के तीर मित्र आगरौ बसै जेते हैं नगर आगरौ सब सों सोई लसै ॥
जानौ निवास सदा ऋषीकेश कौ वही ॥
गुरू के प्रसाद कछु ज्ञान रीति में लहो ॥
. . . . ॥
अष्ट दस सत अष्ट सु संवत जानिये ॥
चैत्र शुक्ल तिथि तीज वार शशि मानिये ॥
:o: :o: :o:

अंत—इति तृतिय काल ॥
उचै प्रात ही कों सुवन कू सिधावै ॥
उदै होई तब भानु उपर कू आवै ॥
तहां होई वा ठौर विहि पीवि दे जू ॥
तहां एक सीधा हलै ना चलै जू ॥
दोऊ हाथ नीचे तबै छाड़ि देई ॥
कहूँ नेकूं चिता नहीं चित्त लेई ॥
करै दृष्टि ऊँची सु भ्रू को निहारै ॥
तहां छांह अपनी बडी जो विचारै ॥
सबै बिब पेषै बडी आयु ताकी ॥
न देषै जुनेना घटे मास वाकी ॥
जु पाने न पेषै सु छै वर्ष मानो ॥
पगै न देषै सुरा कै वा नों ॥
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—स्वरोदय शास्त्र के अंतर्गत नाडी भेद आदि का वर्णन।

१८ ८
अष्टादस सत अष्ट सु संवत जानिये।
चैत्र शुक्ल तिथि तीज वार शशि मानिये॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। केवल ३१ पत्रे है। रचनाकाल सं० १८०८ वि० है। रचयिता का नाम ऋषिकेश है। ये आगरा के निवासी थे।

संख्या २६. ऋतुराज मंजरी, रचयिता—ऋषिकेश (स्थान—वृंदावन), कागज—देसी, पत्र—२५, आकार—६३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ रितुराज मंजरी लिष्यते ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रसिक सिरोमनि स्याम घन गुननिधि आनंद कंद।
कवल नैन केसव सुषद "ऋषीकेश" बृजचंद ॥ १ ॥
सौंदर्ज सुधानिधि निति मुदित उपमां दीजै कांहि।
गौरी भौरी भामिनी भई चकौरी चाह ॥ २ ॥

केलि कथा रस माधुरी सुनहु रसिक दै चित्त ।
विविध विनोद विलास सौं विपन विहारी नित्त।। ३ ।।
नट नागर विहरत सदा सुषसागर रसभेलि ।
षट रितु निपट नवेलि विधि करत अनूपम केलि।। ४ ।।

।। चोपई ।।

रसिक करी रितुराज मंजुरी । प्रेम सुवास सरस रस भरी ।।
मधु माधुज्जि रचित रतनारी । ललित लहलही चित हितकारी ।।
बरन बरन पल्लव कवनीय । सुमन मनोहर नित नवनीय ।।

अंत--प्रिया जूंकतु वचन सषी सौं

।। कवित्त ।।

होरी धरी जबतें चहोरी चित चैन बेली नवरंग नवेली है लील लेति लहलही ।
सुधा रस सींचो मनमोहन रसिकमनि आनंद पुहुप हित महक महमही ।
मिलिबौ सफल स्वादु रस नैन जानें रसना वषानें रुचि गाहक गहगही ।
तरुन तमाल लाल मृदुल तन लपटानी छवि वरसानो रहो दिन दिन डहडही ।।३४।।

:o: :o: :o: :o: :o:

।। दोहा ।।

सुष विलसत हुलसत हियें रहसि प्रिया घनस्याम ।
"ऋषीकेश" वर्नन कीये सिसिर सकल रसधाम ।।३६।।
रितुराजु मंजरी मोदमय भरी प्रेम रस रंग ।
"रिषीकेस" चित चाइ सों चाहत रसिक सुभग ।।३७।।
षट रितु निपट विशाल सो विलसत स्यांमां स्याम ।
रिसीकेस आनंद सौं वृंदावन निजु धांम ।।३८।।

इति श्री राधा कृष्ण विलासायां रिषीकेस विरचितायां रितुराज मंजरी वर्णनं नाम षष्टम् कलिका समाप्त ।।

विषय--षट् ऋतुओं में राधाकृष्ण की क्रीड़ाओं का वर्णन । ग्रंथ में 'कलिका' नाम से ६ अध्याय है :--

१. प्रथम कलिका	वसत विलास वर्णन	पत्र १ से १६ तक
२. द्वितीय कलिका	ग्रीष्म विलास	पत्र १६ से २१ तक
३. तृतीय कलिका	पावस विलास वर्णन	पत्र २१ से २६ तक
४. चतुर्थ कलिका	शरद् विलास वर्णन	पत्र २६ से ३१ तक
५. पचम कलिका	हेमत विलास वर्णन	पत्र ३१ से ३३ तक
६. षष्ठ (षष्ट) कलिका	शिशिर विलास वर्णन	पत्र ३३ से ३८ तक

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है। हस्तलेख में निम्नलिखित रचनाएँ भी है :--

१. लाल जू को रूप--इसमे अनेक कवियो के छद है।
२-३. प्रिया जू को रूप तथा पूर्वराग अनुराग ।
४. नखशिख (सग्रह)--अनेक कवियों के छद है ।
५. स्फुट सग्रह--अनेक कवि ।

रचयिता वृंदावन के निवासी थे। अन्य वृत्त नही दिया है। इनकी प्रस्तुत रचना काव्य की दृष्टि से सरस है।

संख्या ३०. अंजुल पुराण (वैद्यक), रचयिता—कनाय साहब, कागज—देसी, पत्र—१३५, आकार—६३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४३०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री पं० गयाप्रसाद पाठक, ग्राम-मई, पो०-किराकत, जौनपुर।

आदि—॥ श्रों श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्य शास्त्रे हकीम फरासीस नाम सुत भाषा निर्णय प्रथम सरीर भेद लिख्यते सरीर नें च्यारी कोठा है येक कोठा मैं अग्नि है तहा छुधा होत है दूसरे कोठा मैं अन्न रहत है तीसरे मैं जाय कैं भस्म होत है चौथे मैं जाय कैं मल बंधत है प्रथम मल को कोण ताकी दो रंग है।

:o: :o: :o: :o: :o:

अथ रितु विचार

आदमी के शरीर मे दोष बारह मास मैं होत है। चैत्र वैसाष ज्येष्ठ सीत तौ आदमी के पेट मैं रहतै वाय जो मगज की मींगी मै रहत है १ आसाढ़ सावन भादौ वाय जो आदमी के पेट मै रहत है जुर है जो मास चरबी मै रहत है २ क्वार कातिक अगहन पित्त जो है सो आदमी के पेट मैं रहत है जुर मगज की मींगी मै रहत है बाय त्वचा मे रहत है स सीतनास चरबी मैं रहत है ३ पोस माह फागुन जुर जोहै सो पेट मैं रहत है सीत त्वचा मै रहत है इति सरीर दोष रितुविचार।

:o: :o: :o: :o: :o:

स्त्री का रोग च्यारि प्रकार कौ वाय तैं पित्त तैं कफ तैं सनिपातैं बालक रोग च्यारि प्रकार कौ असे ही सर्व रोग च्यारि च्यारि प्रकार के जान लेना ? इति श्री अंजुल पुराणे वैदे शास्त्रे हकीम फरासीस मतीससुत कनाय साहेब विरंचितायां रोग उत्पत्ति नाम षष्टमोध्याय १

:o: :o: :o: :o: :o:

अंत—१४ गुंन हूचकी जाय उवा की पेट सूल येते रोग नासैं चूरन पाषान भेद टंक ५ पठानी लोध टंक ५ समुद्र सोष टंक ५ सीमल को गुद टंक ५ चीना गुन टंक ५ केवच के बीज टंक २० सौंफ भूज ले टंक २० आवरे टंक २० इंद्रजव टंक १० बील गिरी टंक २० सुपारी चिकनी टंक ५ सुपा राव राग टंक...............अपूर्ण..........।

:o: :o: :o: :o: :o:

विषय—वैद्यक ग्रंथ। रोग, उनके लक्षण एवं औषधों का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण तथा खंडित है। समस्त एक सौ पैंतीस पत्रे उपलब्ध हैं। खंडित होने के कारण रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है। परन्तु देखने मे ग्रंथ प्राचीन जान पडता है। रचयिता "कनाय साहब" है। आप हकीम "फरासीस" के पुत्र थे। और कोई परिचय नही मिलता।

ग्रंथ आद्योपांत गद्य मे है। कदाचित् यूनानी भाषा मे किसी वैद्यक ग्रंथ का अनुवाद है। रोग उनके लक्षण एव औषधों का वर्णन ग्रंथ का विषय है।

संख्या ३१. श्लेषार्थ त्रिशंति, रचयिता—कन्हैयालाल भट्ट (जैपुर), पत्र—२, आकार—७॥ × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हिं० बं० ६०, पु० सं० ६।

आदि—श्री द्वारिकेशो जयति ॥ अथ श्लेषार्थ विंशति कवित लिख्यते दोहा ॥

गुरु गोविंद पद बंदि के गंगाधर सुत कान।
श्लेषारथ विंशति रचै जसवत चित हित मान॥

कवित्त--

पूरण अवतार भू भार के उतारबे कं सूरवंस अवतंस रूप सरसाए हैं।
ईष धनुषंड नृप मंडल प्रभाव हारि हिय मंड जनक नरेश मन माये हैं।
अपजबराम......तहरष बढाय रहे ताकि पलंका नर रछ जग चाऐं हैं।
मागत समुद्र के सुवुज भून् जोव नद ऐसे रघुनंद जदुनंद कान गाये है ।। १ ।।

मध्य--पृ० ३ इन्द्र वन्हि यम नैॠत वरुण वायु कुबेर ईश शिरदा सिंह राहोर रविवंश वेरण् वंव सतयुग पक्षे ।। चतुर्दशार्थं कवित्त ।।

सुबरन कर सोभी है अछन्न लोभी है छंद के प्रबन्ध तै होत हिय तर तर।।
धर्मयति यमक विचारि मित्रिगनहू को विरसन मुच वध जलमल फर फर।।
विरजन सक्त मतुमानहु विरंग गति मृग राज नंदन कर जस रूप धर धर।
कवियर्त्विकंज कुंज प्रभास भालोक लोक कोक सरबर कान मान रमा उमा हरि हर ।।१४।।

अंत--   ।। दोहा ।।

श्लेषार्थ कीने कवित बहुत विचार विचार।
श्री मिरदार नरेस को सकल मंत्र सिरताज ।।
जग जाहर जसरा के हित यह रचि न समाज।
श्री जैपुर वासी सु कवि मथुरास्थ बुजराज ।।
"कान भट्ट" कीने कवित विंशति श्लेष समाज ।।

इति श्री कन्हैलाल भट्ट विरचितं श्लेषार्थ विंशति संपूर्ण ।।
यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया ।।
यदी शुद्ध मशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ।।१।।
शुभं भवतु ।। कल्याणमस्तु ।। दीर्घायु भूयात् ।।

विषय--श्लेष काव्य।

विशेष ज्ञातव्य--म० भ० की छाप लगी है।

संख्या ३२ क. कबीर सागर, रचयिता--कबीर, कागज--देसी, पत्र--२१, आकार--६½ × ५¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--५०८, खंडित, रूप--पुराना (जर्जर), पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--संवत् १७७३ वि०, प्राप्ति स्थान--श्री महंत मंगलदास जी, मठिया, रामकोला, पोस्ट-टीकमपार, जिला-गोरखपुर।

आदि--सत्य नॉम महेवर्धान लीषितंग कविर सागर कथा ।।

प्रथमहि सत सुकीत गुन गांवी। तुमरे चरन सरन मन लांवौं ।।
सतंरि युग जव गए सिराइ। तव सतनांम जेइ प्रगटउ राई।।
अव सतगुन देषी संसारा। बहुतक ममिता अहँकारा।।
येहि ते सब जग गए सोराई। जोगि यति षवरि नहि पाये।।
चौन्है नही रोगि सहस अठासि। नवै नाथ सीध चौरासी।।
नीगम खोज केह नहीं कीयेउ। ऐसेह बीति सकल युग गएऊ।।
गए मुये जीव ठौर न जाई। भ्रमत फिरै सकल दूनी आइ।।
दूनिग्राँ बूडि जो मांझे धधारा। कोउ कोउ षवरि न पावा।
कहहि कविर सतानाम बिनू मीर्था जनमू गवाया।।
अगम अगोचर समझहु जाई। येहि ते आवागौन न होई।।
आवा गौन अभि अमृत वासा। जो जांनें सो करै नेवासा।।

ज्यौं पै हँस उवारेहु भाई । येक नाँम राषहु हिग्र लाई ॥
देहि भीतर देव येक ग्रहई । ताकर भेद न कोई न कहई ॥
मुढ़ मुग्ध नर चेतहु छाड़हु मन कर भाव ।
केवल नाम घटहि लै रहु तवहि प्रेम पदपाव ॥

:o: :o: :o:

अंत—ब्रह्मा कहा धौ मै पूछौ तोहि । ग्रापन बात कहहु तुम मोही ॥
कहहु सागर कौने बीसतारी । काँहाँ ते ग्राये तुम्ह पनिहारी ॥
का कर पूर येह कौंने वसाई । का कह भरौं नीर तुम्ह भाई ॥
तौ ग्रसि कहाँ धनि की पनिहारी । नाँम ग्रन चतिहहि षसमह मारि ॥
माँनीक पूर नगर येक किन्हाँ । कंचन ढारि नगर सा लीन्हा ॥
सेतिषौल ग्रति उजल ताँहा बसै जे नगर हमार ।
कौन भूलै तुम्हहि चलि ग्रायेउ कहहु न नाम तुम्हार ॥

:o: :o: :o:

येऊ गिरि ताँहाँ लागुडा ग्राइ जाँहाँ उतिम जल हल नीर ।
तौं न नीर मह पाप कटि सभै सोभीत सकल सरीर ॥
विहसि भवाँनी बात ग्रसि कहिग्रा । तुम्हार प्रीति तेन्ह रहिग्रा ॥
ग्रपने ग्रादि न देषहु तुम्ह जाइ । तौ हमार बात पतिग्रायेहु ॥
करहु गुँमान पीग्र बहुत ग्रनंदा । उन्ह के लेषे जस कीट पतंगा ॥
सीव ब्रह्मा कीछु मर्म न पाइ । तुम्ह मोहहि सब जीउ लेव उवारि ॥

कविर सागर कथा सँपुन पाउ......मोदी मुकुति पावँता सतनाम सतगुर की वाये चाहिए सदा ग्रा चारि भुजा के सुमीरन.....कौरहि सातसंत कवीर जीव ॥ ताकौं सुमीरिग्रा जाके भुज ग्रांनत कविर सागर कथा सँपूरन कवीर ग्राइ ग्रधिग्यान की गिरिभर्म की भीति भाग्रा ढाठि उडि गइ रहि राम सो प्रीति ॥

संवत् १७२३ समै नाँम जेठ वदि तिज ली० तुरमि राँम कायेस्थ सूत छेदा पाडे ग्रमल रहा व ग्रलह वरिषियों का राजा राजा रुद्रसीघ मूकाम गोरखपूर ली० कथा कविर सागर संपुन्न ग्रागे जैसी प्रति पाइ तैसी लिषि गूनी ग्यानी भेराइ पढ़नाँ लीषा ग्रचूक होता है.....दोस मोर जनि देवै कोई लीषौं सोइ जो पुस्तक होइ ॥ ग्रागे कथा कवीर सागर समस्ताः ॥

विषय—संसार सागर को पार करने के लिये ज्ञानोपदेश किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के बीच मे कितने ही पन्ने नष्ट हो गए है । यह पत्राकार रूप में है। रचनाकाल का कोई पता नही । लिपिकाल सवत् १७२३ दिया है जो पहले सवत् १७२२ लिखा गया था । पर पीछे ग्रत के दो को ३ बनाया गया है । पुष्पिका व लिपि से तो यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रति किसी प्राचीन प्रति की नकल है ।

रचयिता का नाम कही स्पष्ट तो नही है, पर यवतत्र 'कबीर' नाम प्रयुक्त होने से कबीर को ही रचयिता मान लिया गया है ।

वर्णन शैली कुछ कथा का रूप लिए हुए है । जिसमे ब्रह्मा, विष्णु, माया, यमराज तथा एक उत्तर दिशा का राजा पात्र के रूप मे ग्राए है । कबीर जब ससार मे ग्राया तब उसने सब जीवो को जग जंजाल मे फँसा देखा, जिससे उन्हे स्वर्ग, नरक ग्रौर पृथ्वी मे बारबार ग्राना जाना पड़ता था । ग्रतः उससे यह दुख न देखा गया इसलिये ब्रह्मा का ज्ञानोपदेश कर उन्हे मोक्ष का मार्ग बताया ।

संख्या ३२ ख. कबीर, निरंजन ज्ञान गुष्टि और शब्द मंगल, रेखता देहला, रचयिता—कबीर, कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—१४३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५४, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री तुलसीधर दुबे ग्राम-बीरापुर, पोस्ट-हड़िया, जिला-इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कबीर और नीरंजन ज्ञानगुष्ट लीष्यते ॥१॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ शत सुक्रीत अदल अदली अजर अचिंत पुर्स मुनिंद्र करुनामै कविर सुर्ति जोग संत एधनी धर्मदाश ॥ चुरामनि नाम सुदरसन नाम कुल बाभन नाम ॥ . . .बोध गुरू वाला पार का मल नाम अमोल नाम सुरत सनेही नाम ॥ हाक नाम साहेब की दया चारि गुरू की दया ॥ बंश ब्यालीश की दया सो लीषतं ग्रंथ कब्बिर और नीरंजन ज्ञान गुष्टि बीचार ॥

काल नीरंजन नीरगुण राई । तीनि लोक मे परी दोहाई ॥
सात दीप प्रीथीवी नौ षड । सप्त पताल येकईस ब्रह्मांड ॥
सहज सुन्य मै कीन्ह ठेकाना । काल निरंजन सब परधाना ॥
पुर्स नाम को चीन्हे मीटावै । . . . . ॥
सत जुग ऐसै चली गेउ । पुरूष बीवाद येक चित मेटेउ ॥

:o: :o: :o:

धर्मदाश उवचन

येह सुनी धर्मदास हर्षाने । धन्य भागि हम दरसन दीने ॥
काल चरीत्र सकल हम जाना । पुरूष लीला सभै पहिचाना ॥
अब तुम प्रगट भयो मोहि आई । हशन काज कीहे उत आई ॥

इति श्री ग्रंथ सम्पूर्ण कब्बिर साहेब और निरंजन ग्यान गुष्टि सम्पूर्णम् ॥ जो प्रति देषा सो लीषा मम दोष न दीयते ॥

:o: :o: :o:

अथ आगे भजन निर्गुन बानी ।
कछू चलने का साज या दम नाहि भरोसा है ।
येहि जग में कोइ रहन न पावै एहि निश्चै करि मानो ॥ १ ॥

अंत—

तब पींजरा से निकली जायगा पल में पछी पवन ॥ २ ॥
उठत बैठत सोवत जागत करू सतगुरू को ध्यान ॥ ३ ॥
ब्रह्म अखंडित सम घट पूरन जीवन कास समान ॥ ४ ॥
कहै "कब्बीर" सुनौ भाई साधौ पायो पद नीर्वान ॥ ५ ॥

:o: :o: :o:

॥ सब्द ॥

सब्द रंग झीना झीना है ॥टेक॥ कोई जानै सन्त परवीना ॥
उठत लहरी रग राग उपजत बहरे वाउ वह बीना ।
उलटघाट टकसार परषी ले समर सब्द लीष लीन्हा हो ॥ २ ॥
चलत पपील बिहंगम मारग सहज सुंन्य लषि लीन्हा ।
चौदह लवक अकह के आगे बैठा पुर्श परवीना हो ॥ ३ ॥
पूर्श बीदेह देह धरि प्रगटे नटवर कांहुँन चीन्हा हो ।
कही "कब्बिर" सुनो भाई साधो हश बीमल सुष लीन्हा हो ॥

इति श्री कब्विर नीरंजन ग्यान गुष्टि श्रौ सब्द मंगल रेखता देहला सम्पूर्ण जो प्रति देषा सो लीषा मम दोष न दीयते ।। सम्वत् रूधिर नाम १६०८ मीति माघ सुदि ८ गुरू वाशरे लीषा प्रयागदत्त सन्त बीरपुर ग्रामे सुभ ग्रस्थाने शुभम् ।।

विषय––निर्गुण सिद्धात और भक्ति विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य––प्रस्तुत ग्रथ मे कबीर निरजन गोष्टी और कबीर के शब्द, रेखता, मंगल तथा देहला नामक रचनाएं लिपिबद्ध है । 'शब्द और रेखता' आदि मे धर्मदास की भी कुछ रचनाएँ मिली है, जो बहुत थोडी है ।

प्रथम, ग्रथ के रचयिता के सबध मे ठीक ठीक पता नहीं चलता । गोरख कबीर गोष्टी एवं धर्मदास कबीर गोष्टी आदि रचनाओं को देखते हुए इसका रचयिता भी कबीर ही मान लिया गया है । परतु इसमे सदेह नही कि इस प्रकार की रचनाएं कबीर की नही है । कबीर पथियो मे से ही किसी ने इनकी रचना की है ।

रचनाकाल किसी मे नहीं है । लिपिकाल सवत् १६०८ वि० दिया है ।

संख्या ३२ ग. ज्ञान सागर, रचयिता––कबीरदास, कागज––देसी, पत्र––१७३, आकार––११$\frac{६}{१६}$ × ८$\frac{१}{१६}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)––१२, परिमाण (अनुष्टुप्)––१५५७, अपूर्ण, रूप––पुराना, पद्य, लिपि––कथा, प्राप्तिस्थान––श्री गणेशधर दुबे, ग्राम–वीरपुर; पोस्ट–हडिया; जिला–इलाहाबाद ।

आदि––कबीर साहब धनी धरम दास ।।

।। गरथ ग्यान सागर ।।

।। सोरठा ।।

सती नाम न सार बुझोहु सत वीवेक करी ।
जेही ते उतरहु भव जलपार सतगुर को उपदेस है ।।
सत गुरू दीनदयाल सुमीरहु मन चीत एक करी ।
छेरनि सकै काल अगम सब्द परवान इमी ।।
बंदौ गुरपद कज वंदी छोर देश्राल प्रभु ।
तु चरन कमन रंज देत सार जो मुकुती फल ।।

।। चौपाई ।।

मुकुती भेद मैं कहौ वीचारा । जाकहु नाहीं जानै संसारा ।।
बहुत आनंद होत तेही ठाउ । संसै रहीत अमरपुर गाउ ।।
जहवा रोग सोग नही होइ । तहवा के गए अटल से होइ ।।
नहीं संसार देषै फिरी सोई । उहवा जुरा मरन नही होइ ।।

:o: :o: :o:

अंत–– **।। दोहा ।।**

ता मधे चतुरा जो होषे पहीले करै उपाए ।
दुसमन सो मीली रहै अंतहु वंदी वीहाए ।।

।। चोपाई ।।

सुममन मीलन को इहै उपाई ।
ओही भाव रहै जस भाई ।।

––अपूर्ण

विषय—निरगुन सिद्धांत का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अंत में खंडित है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । ग्रंथ कबीर और धर्मदास के प्रश्नोत्तर के रूप में लिखा गया है । इसलिये कबीर को रचयिता मान लिया ।

संख्या ३२ घ. चिंतामनि, रचयिता—कबीर, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—८$\frac{६}{१०}$ × ६$\frac{५}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८, प्राप्ति स्थान—पंडित रामचरित्र दुबे, ग्राम—प्रमदेवा, पोस्ट—मेमरी महमूदपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—. . . . . वान । मोहे उलट कसक मान ।।
परवत छिपे दरिया जान । करले त्रिवेनी असनान ।।
सहजय परस पद निर्वान । तेरे मिटे आवा जान ।।
जामे जेव के बाजार । सरवर होइ दो पाहार ।।
आमे बड़ा कुदरत मार । वाकि जोति अप्र अपार ।।
लागेनो लाष तार फूल । करनि कूट जरिया मूल ।। ३ ।।
जाका देष ना न भूल ।
माया भरम की कांची । अनर देष ना सांची ।।
निपजे निरखन मोती । चन्दा सूर्ज की जोती ।।
झलके झलमलाट न्यारी । जाकी अलपै है कारी ।।
है गुंजार की क्यारी । मानो प्रेम ते डारि ।।
गंगुरा अरसते डारा ।
ताला भ्रम का षोला । दिपक नाम का जोहा ।।
योगी जुगत सो जीवें । प्याला प्रेम का पीवें ।।
मोहो पिलाव को दीजे । तनमन वारना कीजें ।।
परिहै प्रेम की फांसी । मनवा गगन का वासी ।।
नरमन वारना कीजे ।
पारिमता हस हे राजा । सहज पल कहि कीजे ।।
अंबर राम कों दीजे ।
भोरा सगुन का प्यासा । किआ हे कमल मे वासा ।।
वाका चोल ताहे ताल । उनगुन भरे जरद मताल ।।
तन मन सोपी दिया सीस । साहव वसे नेनो वीच ।।
उतर श्याम घन आए । वादर गगन में छाए ।।
इमतं बूदं झरी लाए । जहा दोउ नेन ललिचाए ।।
अजब दीवार को पाए । दरिआव सहज में न्हाये ।।
दरियाउ उलट उमगा नीर । जा विधि चलै चौसठ तिर ।।
हंसा जाय बैठा तिर । निस दिन चुगे मोहबत हिर ।।
पिया है प्रेम का प्याला । नहि है नेम से न्यारा ।।
कीया है सुरत बिन सनेह । बिना बादर बरसे मेंह ।।
बुध मृत तहि काल । त्रिकुटि सहित पलके लाल ।।
तन मन पिउ से लागा । संसा भ्रम का भागा ।।

अंत—तन मन लागा चरनो पासा । जो लगि घड़ा पिंजर पास ।।
चितामनि चितवन वास । जा विधि लिखेगें को उदास ।।
कहत "कबिर" उन्हद का षेल । जहा अलष घर का मेल ।।
राम नैन में रमि रहे मरम न जाने कोइ ।
जाको सतगुरू भेंटिया जाको मोहोरम होइ ।।
जोति अषंड झलमले विन वाति विन तेल ।
साध पेहेचाने सब्द उलट पंथ का षेल ।।
झंडा रोप्या सेव का दोउ परबत के संध ।
साधु षेले नट कला वृत बंध ।।

इति श्री कबिर जी की चितामनि संपुर्ण ।। सुभमसतु ।। लिखतं श्री अयोध्या जिन सखा द्वार मधे श्री बड़े विदेहि जिके स्थान में ।। संवत् १८८४ ।।

—खंडित

विषय—ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना के केवल तीन पत्रे थे जिनमे से दो पत्रे उपलब्ध है । रचना-काल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८८४ वि० है ।
रचयिता का नाम कबीर है ।

संख्या ३२ ङ. वसीस्ट बोध, रचयिता—कबीर (?), कागज—देसी, पत्र—६६, आकार—८$\frac{६}{१०}$ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२१, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण) । पद्य । लिपि—कैथी । प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा (दाता—श्री जेवनारायण राय, ग्राम—अवथही, पो०—कुडमर, जि०—गाजीपुर)

आदि— सतनाम

सत सुकीरीत अदी अवली अजर अचीत पुहस मुनी दरकस्र नामें कबीर सुरती जोग संताएन धनी धरमधं दास चुरामनी नाम परमोध नाम गुरूवाला परिनाम केवल नाम अमोल नाम सुरती सने बेहे ने हो नाम हंका नाम पंका नाम परगट नाम साहेब चारो गुरू वंस कोलीस को दया सो लीखते श्री गरंथ श्री गुस्ट कवीर सतनाम साहेब अस्वंस्टी मुनी को दोहा अरभः

अजर अमर अभे पुरूख अवगिती अगम अपार
कहे कवीरवंक जाना मनोभक्त मतीस्वर ::
जग मूल वो आन। के सो जगमुल लखे ना कोइ
कहे कवीर भे काल को वरनी कहे पुनी सोए

—चौपाई—

राव वं के ज सुने उपदेशा करमी जीव काल को भेसा
गुरू वसीष्ट जो राम के नेहा उसे बुझे सबद सनेहा
तुम वसीस्ट जो रीखीन के राउ मो से ना बोलहु सतधा भाउ
मोसे भेद धरो जनी गोई कैसे मुकुती जीवन के होइ
:o: :o: :o:

—दोहा—(पत्र २)

सती मुकुती मन में करे रावन मलवा लीन्ह सो वसीस्ट तुम भाखहु काल दगा कस कीन्ह
:o: :o: :o:

(पत्र ९)

नीरप हरीचंद सत जुग में राजा बोह नीत करत सत के काजा
ताके छले काल कीमी आवा कहु केही अंगुन सत छोड़ावा

:o: :o: :o:

(पत्र १०)

न्ही उतपती नहीं परले न्ही आवें न्ही जान नहीं साचा सँवसार कीन्ही जीवन के खान
सुनु वसीस्ट अब ततु पसारा तीनी गुनन को भेद नीनारा
अकास तंतु जो सुनावा सरुपा ताके देहु निरंजन रुपा

:o: :o: :o:

(पत्र ११)

धोखे जाऊं धोखे जाऊँ धरम राए दरबार
नीरगुन खोज वस्टो अब मानो वचन हमार

--चौपाई--

ए साहेब तुम सत बखानी कहे वचन तु अकथ कहानी
ए कबीर तु अपरपारा तुम्हरे भेव सभन ते न्यारा

:o: :o: :o:

नीरगुन कथा मोही समुझावा को नीरगुन जग मे पुनी आवा
को नीरगुन जो लोक रहावा को नीरगुन सरगुन मे आवा
अब तुम कहो पुरुख को चीन्हा केही वीधी जंत्त नीरंजन कीन्हा
कैसे रचा काल असथूला ताको भेव कहो नीज मूला

:o: :o: :o:

अंत--उठ वसीष्ट कर जोरी के । राहे चरन लपटाव
नीरगुन अजर अमर कथा । मो प्र कवि ना जाव

कबीर उवचन--चौपाई

सुनु वसीस्ट मदमती हाना अवहु न्ही मुकुती पद चीन्हा
तेज होन काग आपके रीती केहि वीधी होए संहसा संग प्रीती
जो कहु पुत हंसा गती पावा तव खोजी वाना फसी लावा

--दोहा--

एतनी कथा जनाव के फीरी भे अन्तर्ध्यान
गें कबीर सतलोक के तव वसीष्ट पछीतान

--चौपाई--

.... (अपाठ्य)
आ पत्र देखा तय उतारी भुक्ता चुका संमारी वाची लेनी साधु संत सो विनती

--दोहा--

दुआदस पथ चलाइ के गढ़वाचो असथान
कबीरहं पथ है कल के कहेहो कबीर वखान
गुरु साहेव को वडवती पहुँचे सकल साधु को वंडवती
.... ।

:o: :o: :o:

विषय--कबीर तथा वशिष्ट का वादविवाद।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है। इसमे कुल उनहत्तर पत्रे हैं। उसके साथ एक ही हस्तलेख मे "सुक्रीत ध्यान" तथा "मुलग्यान" दो ग्रथ और है। कही कही बीच के पत्र भी टूट गए है और बहुत से स्थलो पर अक्षर भी मिट गए है।

रचयिता का नाम भी स्पष्ट नहीं है। परंतु अनेक स्थानो पर कबीर वक्ता के रूप में आते है। इस आधार पर "कबीर" को ही रचयिता माना है। रचनाकाल और लिपिकाल ज्ञात नही। परतु इमी के साथ लिपिबद्ध "सुक्रीतध्यान" मे "समत पंदरहसै वोनइस १५१९" स्पष्ट लिखा है। सभव है, यही रचनाकाल हो।

प्रस्तुत ग्रथ मे कबीरदास ने गुरु वशिष्ट से बहुत से प्रश्न किए, जैसे--यदि रामचंद्र ईश्वर थे तो उन्हे वनवास क्यो हुआ? राजा हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी को कष्ट क्यों दिया गया? आदि। इस प्रकार कबीर ने सगुण को मिथ्या बतलाया और निर्गुण की उपासना ही से मोक्ष की प्राप्ति बतलाई। साथ ही "नाम" "सबद" को अमृत का घूंट बताया। अंत मे कबीर अंतर्ध्यान हो गए और वशिष्ट जी पश्चात्ताप करते रह गए।

ग्रंथ की भाषा सरल तथा सुबोध है। संपूर्ण ग्रंथ पद्य मे है। लिपि भ्रष्ट कैथी है। पढने मे बड़ी कठिनाई होती है। देखने मे ग्रंथ की प्रति बहुत प्राचीन विदित होती है।

संख्या ३२ च. मूलग्यान, रचयिता--कबीर (?), कागज--देसी, पत्र--२४, आकार--८$\frac{६}{१०}$ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--३०, परिमाण (अनुष्टुप्)--३६०, पूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--कैथी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा (दाता--श्री जेवनारायण राय, ग्राम-अवथही, पो०-कुड़ेसर, जि०-गाजीपुर।

आदि-- **सतनाम**

सत सुक्रीत आदी अदली ।। अजर अचीत ।। पुरूस मुनीदर करूना मे कबीर ।। सुरती संराएन संजोग धनी धरम दास ।। चुरामनी नाम ।। सुदरसन नाम ।। कुलपती नाम ।। गुरूवाला तीरनाम ।। परमोध नाम ।। कवल नाम ।। अमोल नाम ।। सुरती सनेही नाम ।। हंका नाम ।। पंका नाम ।। परगट नाम ।। धीरीजानाम ।। साहेब गुरू बंस सग्योलीस को बम्रा सो लीते अ गरंथ मुलग्यान ।।

।। चौपाई ।।

मुलमंत्र धरमनी साचा जेहीते जीवकाल सो बाचा
आदी नाम बुझे जो कोइ जरा मरन रही ताघर सोइ
नी अछरवोह अक्षर के अपारा अछर सारा खद है भाइ
जंभु राजा तेही देखी डेराइ
जव लगी सारा स्वद नहीं पावै काल फास कैसे मुकुतावै
:o: :o: :o:

---साखी---

(पत्र २) **केतीक पंडित लीखी मुए। अवरी मुए पुनी गाए**
कहे कवीर अछर बीना। जीव परले तरी जाए

---चौपाई---

धरमदास मैं तुम्हें बुझावो सारा स्वद नीजु भेव बताओ
मुलही राही पुनी रोक सीधावै पखंड करे पुनी मुल न पावै

—साखी—

(पत्र १) धनी भाग जो जीवका । जो पावे टकसार
कहे कबीर जो अछर पावे । सो पुनी जीव हमार

—चौपाई—

धरम दास कहे सुनो गोसाइ अछर मुल सबद केही ठाइ
तुम तो बम्रावंत है गोसाइ कहो आगम कछु अंत्र जाइ

—संत कबीर वचन—

धरम दास मै तुम्हें बुझावो स्त्रा स्वाद के भेद बतावो
तबन्ही होत जग कर भाउ तब नहीं पुहुप दीप नीरमाउ

:o: :o: :o:

खोजी वं होए स्वद का । जन कहावो सोइ
कहे कबीर जो अच्छर पावे अटल हीरा व होइ
सारा स्वद का एहो बड़ाइ । जंमु राजा तेहीं देखी डेराइ
जब लगी सारा स्वद ना होइ । जंमु सो बाचे कैसे सोइ

:o: :o: :o:

अंत—

—साखी—

मख मासु जो खाही ।। जल का कीन्ह नीरास
जंमु घ्र पार ना पावा । सतगुरु कहे कबीर

—छाप—

मोरे जीव के एहमता देउ सीख क सीख राह चलाउ
साधु संत का सेवा ठाने सत सुमति जाके घंट आवा
सेवा साधु मुकुती तो पावा

—साखी —

सेवा करे साधु का ।। आपनी अंग बचाए
लेखा लेइ मुलका ।। कहे कबीर समुझाए

—छाप—

आएती मुलग्थान गरथ संमपुरन हुआ सम पत्र जो देखा सो लीखा।....।

:o: :o: :o: :o:

विषय—मन मतानसार "शब्द" का महत्व वर्णन । "कबीरदास" का धर्मदास को उपदेश करना ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है । इसमें कुल चौवीस पन्ने है । रचयिता कबीरदास विदित होते हैं । रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है । इस ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे "वशिष्ठ बोध" तथा "सुग्रीव ध्यान" दो ग्रथ और है । "सुग्रीव ध्यान" मे एक स्थान पर सबत् पन्द्रह से वोनइस १५१६ स्पष्ट लिखा है । पता नही, यह रचनाकाल है या लिपिकाल । प्रस्तुत ग्रंथ की प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही है ।

ग्रथ मे कबीरदास जी ने धरमदास को "अक्षर" तथा "शब्द" की महत्ता बतलायी है । यह भी कहा है कि बिना "शब्द" ज्ञान के भवसागर पार करना दुष्कर है । धरमदास की अनेक शकाओ का समाधान किया है ।

संख्या ३२ छ. मूलबानी, रचयिता—कबीर, कागज—देसी, पत्र—११, आकार—७३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री गुसाईं रामस्वरूप दास जी, कुटी–सठयाँव, डाक०—जहाँनागंज, रोड, जिला–आजमगढ़।

आदि—सतनाम साहेव कबीरधमदास की दाया से चरीगुरु बेसव्यास की दाया ते ग्रंथा मुलावानी प्रथम ही पुरुस धं ग्रहीऊ।

तवीन बोल वनी नही व्यहरहेऊ। नीरालम्हा पुरुस एक रहेऊ।।
ताते पुरुस होते नाहि छाग्रा। तव कछु बोल वाक्य नही न्ग्रामाया।।
तव नाही 'लोक दीया को वानी। तव नाही आस होत कोइ ग्यानी।।
तव नही मासती कछुव को छुवा। तव नाही पेगा करले षाया।।
तव नाही अग्र पुरुस वीवेषा। तव नाही हरिदे आ कठ कलेषा।।
तव नाही आमी आगा की षानी। तव नाही सहजा सुता अवग्यानी।।

:o: :o: :o:

अंत—पुनी सो पदाका कहो वषाना। जहा पुरुस जाइ जे माना।।
आपन जाइ गुपत होइ रहाइ। होइया सकल नीरमाइ।।
एहा वैठीआ ग्रंथ मो कहाइ। तव पंषी रहे न्यारा।।

इति कथा मूलावानी स्मपुरन साधु संतना को वंदगी डंडवता भुल चूक लेव सव जोरी दासषत लीषाहे हरीदास के।।

विषय—कबीर का धर्मदास को उपदेश करना।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही है। प्रस्तुत रचना भी कबीर पंथी रचनाओं के ही सदृश है। इसमें कबीर द्वारा धर्मदास को उपदेश किया गया है। इसलिये यह कबीर की रचना मानी गई है।

प्रस्तुत रचना "आतम अआतम" तथा 'हनुमत बोध' के साथ एक हस्तलेख मे है।

संख्या ३२ ज. मुक्त ध्यान, रचयिता—कबीर (?), कागज—देसी, पत्र—४१, आकार—८६/१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता—श्री जेवनारायण राय, ग्राम–अवथही, पो०–कुडेसर, जिला–गाजीपुर)।

आदि— सतनाम

..............................।

लीखते श्री गरथ सुक्रीत ध्यान

—चौपाई—

वहुत देवस सुन चली गंउ तवही पुरुस ग्यानीहं कराउ
ग्रीग सो वानी पुहुप नीधीमा वो ही जानी पुनी ग्यानी उठी धाए तवही
वुनो कर जोरी के मीनती लावा कीमी कारने मोही पुरुस वोलावा
तवही पुरुस वोले असं वानी वोही सव सार जाहु तुम ग्यानी
कोही कारन वोही सुधी विसारा जीव दुखीत मैं वोही सव सारा
तव ग्यानी उठी मीनती कीन्हा पुरुस वचन सीर उपर लीन्हा

भवसागर में काल है राजा वो ही सब सार मोर नाही काजा
ब्राम्हा बीसुन महेशर देवा सभ जग करत तासु की सेवा
:o: :o: :o:
वोही मी रोत लोग पशु ठलहू जाइ बाला रूप होहु देहु देखाइ
घर घर सबसे भाखो ग्याना चीन्ही रे नरन पुरुख पुराना
:o: :o: :o:

(पत्र ४) --साखी--

कहे पुरुस सुक्रीत सुनो ।। तुमरे सरि न रखवार
जीवन पार उपारहू ।। तुम नीजु वंश हमार
करो प्रनाम पुरुष को ।। मोही प्र सदा सहाए
पलहू कोन्ही लागे ।। भवगे पहुचे आए

--चौपाई--

सुक्रीत घंट में कीन्हा वीचारा अब हम के करेगी पगुढ़ारा
चारो वरन में खोजेउ जाइ करे भगति सभ कपट चतुराइ
घर मे बात करे जोलहा भाइ एक देवस ताहा गाहा हम जाइ
एक देवस ताहा कीएउ वासा एह घंट नही स्वद वीसवासा
:o: :o: :o:

(पत्र ७) जो तो देखी सभ वीवरन भाखा नाम जदा वन बीधी सो राखा
समत् पनरह सै वोनइस १५१६ कातीक सुकल पछी ट्तीआ मांतु रुप नीअर सुदर तन होइ
बाल पुरुख सो मरदे मोइ पाच मास ले सुधी रहाइ पुरुस ध्यान मे रहा समाइ
बीछा पाए छठए मासा तबही काल तन कीन्ह आसा

अंत-- --साखी--

सत लोक के हंसा सनो । बीखो कटहारी मती खाहु ।।
सीघ के बाना बाधी के ।। कछ दीप जनी जाहु ।।

कछदीप जाइके फेरी पाछे पछिताए ।। आपन पुजीहारी के अंत चले बीगोइ ।। अंग गही नहीं जात है बरपन मेरे मन पुजावो ।।

तब दीपक दो जाइके ।। उलटी जो आप को गही आवो ।।
अतमोहे अक्रीत सदा ।। दीह की आवहु रूप ।।
जैसे दीप परगास होए ।। बोले अक्षारी अनुप ।।
क्रीअकुत जो वह बीधी ।। ग्यान दीरीस्टी जेही नाही ।।
अथ चला मघ जात है ।। परे कुप के माही ।।
जेसा आधा के कंध परे ।। बाघ होत असवार ।।
ग्यान कीरीआ दोउ मीले ।। तबही होए नसतार ।।
कीरीआ भगती गरु भगती है ।। अवरी क्रीया भरम जाल ।।
ग्यानी दीरीस्टी देखो भरा ।। सत गरु पद पर मील ।।
सभ जग कली मंत्र अरु मीबीखी ।। राजा तेजी तप जो जान ।।
अनंद बंदा परमानंद तंतु ।। बोधे रूप वीना ग्यान ।।
असे वो गौवे बीखो बैराग एह ।। जाथल बीखो से नेह ।।
एही सव ग्रथ को मान है ।। मन माने सो करीहे ।।

विषय---संत मतानसार ध्यान एव ज्ञान की आवश्यकता तथा उसकी महत्ता ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है। कुल इकतालीस पन्ने हैं। बीच में बहुत से पन्ने टूट गये हैं। रचयिता कबीरदास प्रतीत होते हैं। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। पत्र ७ में एक स्थान पर संवत् १५१६ आता है। यही स्पष्ट नहीं होता कि यह किसके लिये प्रयुक्त हुआ है।

प्रस्तुत ग्रंथ में ध्यान एवं ज्ञान की महत्ता बतलाई गई है। यह भी दिखाया गया है कि बिना क्रिया के ज्ञान कठिन है। क्रिया भक्ति गुरुभक्ति है। अन्य सब क्रियाएँ मायाजाल हैं। संसार सागर पार करने के लिये ज्ञान एवं क्रिया दोनों का योग आवश्यक है। आदि पुरुष ने संसार के कल्याणार्थ प्रथम ज्ञान और पीछे मुक्ति को संसार में भेजा। ज्ञान तो एक बार मृत्युलोक से इसलिए भाग चला कि यहाँ के निवासी ब्रह्मा, विष्णु एवं मूर्ति आदि की पूजा करते हैं। नाना प्रकार के धोखा संसार में है। पश्चात् मुक्ति आए। इन्होंने देश में चारों ओर भ्रमण कर देखा। अंत में एक भक्त के यहाँ बालक रूप में प्रकट हुए आदि।

ग्रंथ की लिपि भ्रष्ट कैथी है। संत साहित्य की दृष्टि से रचना उत्तम है। प्राचीनता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

संख्या ३२ क. हनुमंत बोध, रचयिता--कबीर, कागज--सफेद आधुनिक, पत्र--३४, आकार--७½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--२८०, पूर्ण, रूप--जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि--कैथी, प्राप्तिस्थान--श्री गुसाईं रामस्वरूप दास जी, कुटी--सठयाँव, डाक०--जहानागंज, जिला--आजमगढ़।

आदि--सत सकोत आदि अदली...पुरुसमुनींद्र करुनामै कबीर मुनिंद्र जोग संतएन ......ग्रंथ हनुमान बोध धरमदास वचन

> **धरमदास विनवै करजोरी। तुम समरथ हौ वंदी छोरी॥**
> **जुगन जुगन मै तुम चलि आए। आदि अंत को खबर लगाए॥**
> **एक दया तुम करो गुसाई। हनुमता को कब मिलहु...॥**
> **हनुमत केर ऐहि अभिमाना। कसे लीन्ह सहज.....॥**
> **:o: :o: :o:**

अंत--प्रभु जी या चरन लागे धाए वीर हनुवतौ वोधि के। लैए दीए पन परसाद। संवसार वीदुरायौ नारदा नहीं पया आदी हो॥

॥ साखी ॥

> **नहीं पया आदि सो सीध ब्रंभा नही नारदा।**
> **तुम्हारे वंदान नीहोरी के धरमदास वंदना करे॥**

इति हनुमान वोध ग्रंथ संपुरन = भुल चुका सधु न सतान सो वदगी आछर मंत्र लेव सव जोरी = हरीदास कौ लिषा है दासपत प्रथा हारीदास वारमवारं वदगी डंडावत प्रनामः

विषय--कबीरदास जी द्वारा हनुमान को ज्ञानोपदेश किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल भी अज्ञात है। ग्रंथ अत्यंत जीर्णावस्था में है।

रचयिता का नाम कहीं नहीं दिया है। ग्रंथ कबीर और धर्मदास के संवाद के रूप में लिखा गया है। जिससे कबीर को ही रचयिता मान लिया गया है। परंतु शैली तथा भाषा के रूप को देखकर यह कबीर का ग्रंथ नहीं जँचता। कबीर के नाम से उसके अनुयायियों में से किसी ने यह ग्रंथ रचा होगा, ऐसा जान पड़ता है।

यह आश्चर्य की बात है कि कबीर द्वारा हनुमान को उपदेश दिया गया है। दोनों के समय का अंतर दो युगों का है। हो सकता है कि हनुमान को अमर जानकर कदाचित् कबीर से

उनकी भेंट हो जाने की कल्पना कर ली गई हो। परन्तु यदि हनुमान का अर्थ आध्यात्मिक हो तो असंभव नहीं।

प्रस्तुत ग्रंथ निम्नलिखित ग्रंथों के साथ एक हस्तलेख में है :—

१. अनुराग सागर	कबीर
२. आतम प्रआतम	,,
३. मूल बानी	,,
४. चारो जुग के आरवल	,,

संख्या ३३. दधि लीला, रचयिता—करताराम, कागज—देसी, पत्र—१५, आकार—६$\frac{3}{10}$ x ४$\frac{9}{10}$, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१५७, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, स्थान—ददन सदन, पोस्ट—अमेठी (ई० आई० आर०), जिला—सुलतानपुर (अवध)

आदि— श्री गणेशाय नमः

प्रात क्रिया करि मज्जन के द्रिग अंजन षंजन रूप बनैए।
आजु चले दधि विकन (?) री सगरी वृज मंडल माह जनैए।
मोद करै सुनि गोपवधू आजु होत विनोद माह सुष पैए।
साजहु अंग सवारहु भूषन वेगि चलो मथुरा पुर जैए॥
:०: :०: :०:
वेशरियो झुलनी झमके झहराति बुलाक जबै सिर डोलै।
तामह मोती दुरै अधरोपर सुक्र मही सुत होत कलोलै।
दंतन मो तडिता चम (१ के) जब भाग भरी हँसि भामिनि बोलै॥
ईहेरी की धरता करता कवि कान्ह बिना कवन घुघुट षोलै॥ ५॥
:०: :०: :०:

काहू तो बत्तीसा चौबीसा माल दहो पेधे जिसमो कोवारी लगी हीरन की झालरी।
काहू तास बाबलो को सारी सार सापु पेध्यो जगमगात जरतारा मोतीन्ह की मालरी।
काहू तो पितांबरी पवित्र जानि पधि लीन्हो तापर जरित है जवाहिर की जालरी।
"करत राम" झम झमकति चली झनक मनक झर्षति झरोषे लागि सुरपाल बालरी॥१०॥
:०: :०: :०:

अंत—

एक एक बानन्ह सहस्र बान तानि मारयो मोहे पंचबान बैठे झवै निज माथ धुनि।
जगत को लाज छुटो काहू को न मन पीर धीरकुल कानि सुनि।
मन मोहे पाम मो म तान की तनि सुधि बसनन सभार परै चरन जो चहत मुनि।
"करता राम" स्याम जी के सरन समानि सर्व बावरी भई है गोपी स्यावरे की बंसी सुनि॥४२॥
:०: :०: :०: :०:

कहु कवम की डार झुकि झुकि रहिहै।
मनो मेघ संदेस मोहे सोक कहिहै।
कहु तरु तमाले वनै विमल छवि छाहो।
जहा तरुन की ताप तनिको न जाहो॥
:०: :०: :०:

—अपूर्ण

विषय—श्री कृष्ण और गोपियों की दधिलीला का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण है। केवल आरंभ के १५ पत्र उपलब्ध हैं। शेष नष्ट हो गए हैं।

रचनाकाल और लिपिकाल का भी कोई पता न चल सका।

रचयिता का नाम करताराम है जो जहाँ तहाँ कवित्तो मे दिया गया है।

रचना का नाम भी अविदित ही है, पर अनुमान से तथा विषय की दृष्टि से 'दधि लीला' नाम रख दिया गया है।

कविता की दृष्टि से रचना अच्छी है। परंतु छंदों की मात्राओं में गड़बड़ है।

संख्या ३५. शालिहोत्र, रचयिता--कर्त्ताराम (निवासस्थान--सिधुवा ग्राम, गोरखपुर), कागज--देसी, पत्र--१७, आकार--$१०\frac{८}{१०}$ × $८\frac{६}{१०}$, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--२८७, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १८५८ वि० (सन् १२०५), लिपिकाल--सं० १६२३ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री पं० वशिष्ठ पाण्डेय, ग्राम-डहम, पो०-सैदपुर, जिला-गाजीपुर।

आदि--श्री गणेशाय नमः॥ कवित्त सवैया॥

सिद्धि सदा निकटै प्रगटैन घटै नित ही बुध दारिद्र बंदन
दुर्मति मोह महातम केर विबुद्धि प्रकास क आनन कंदन॥
मगल मूल रहै अनुकुल सो शूल हरै हर गौरि के नंदन
करता कवि जो करू ध्यान हिये त गणेश कहाय कलेश निकंदन॥१॥

:o: :o: :o:

सरकार गोरखपुरमो सिधुआ विमल विख्यात
पावन पडरवना जानिये ज्यौ निर मे जलजात
कवि चंचरीक चतुर अनेक रमल पोषत लोग
सेवत सदा सुखो जह्व जग मह जानि भारी भोग

:o: :o: :o:

दय दान करि सन्मान हरि गुन मान कौ लेश
दुई भये धर्म सहाय विनहु राय प्रवल नरेश

॥ दोहा॥

सुख समेत सेवत तिन्हे कहिज कवि कर्ताराम
वुद्धि विवेक अनेक लखि पावत मन विश्राम

:o: :o: :o:

राम विवेक वुद्धि सागर, दान क्रियान वुद्धि के आगर
वेद वान वसु भू सहित हे संवत सुभ सांच
कार्तिक वदि वुध षष्ठि के सन वारह सै पाँच

:o: :o: :o:

॥ चौपाई॥

रावरजाय शीस पर राखौ। सालहोत्र भाषा अव भाखौं
क्रिया सिन्धु संतन हितकारी। खल दल दलन भूमि भयहारी

:o: :o: :o:

अंत-- दोहा

डारपातफल सोरयुत अमित सहंठा आनि॥
पिंड बांधिये काढिकै पीपरि हरदी सानि॥

बन भांटावरि ग्राइ केरं दीजं मूर मिलाय ।।
त्रिफला तामह मेलि कं दीजं वोरी षियाय ।।७५।।
तामर ।। ईश्वर कृपा जव कौ तव कुरकुरो कह हरं ।।
धर बाजि का हयह व्याधि । जो सेनपात असाधि ।।
यह काहीं मारग पानि ।। कमला के रुचि पहिचानि ।।
यह पठन महित विवेक ।। तेहि होत वुद्धि ग्रनेक ।।
गुन दोष हम जो कहै ।। तव भूप के मन चहै ।।
पुस्तक रहै जेहि गेहि ।। श्री वसत सहित सनेह ।।

इति श्री शालहोत्र भाषा संपूर्ण ।। संवत--१६२३ फागुन

:o: :o: :o:

विषय--अश्वों की पहचान, उनके गुण दोषों का वर्णन। उनके रोग, निदान, औषधो का वर्णन। कमला के आग्रह पर हरि ने इसका वर्णन किया था।

रचनाकाल

४ ५ ८ १
बेद बान वसु भू सहित हे सवत् शुभ सांच।
१२ ५
कार्तिक वदि बुध षष्टि के सन बारह सं पांच ।।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है। समस्त गद्य पद्य है। रचयिता "द्विज कर्त्ताराम है"। इनका वासस्थान, मिधुग्रा ग्राम, तहसील--पडराना, जिला--गोरखपुर में था। राय प्रबल नरेश से इन्हे सनमान भी प्राप्त था। हो सकता है, राय प्रबल नरेश पडराना नरेश ही हो, जो पहले "राय पद" से विभूषित थे। रचनाकाल सं० १८५४ वि० (सन् १२०५ हि० ?) है। लिपिकाल सं० १६२३ वि० दिया है।

ग्रंथ में घोडो का वर्णन है। उनके लक्षणों पर पूर्ण रूप से विवेचन किया गया है। साथ ही रोग और औषध आदि का भी वर्णन है।

समस्त ग्रंथ दोहे चौपाइयों में लिखा गया है। लिपि नागरी एवं भाषा पूर्वी अवधी है।

संख्या ३६. सुदामा जी के सवैया, रचयिता--कल्याणदास, कागज--देसी, पत्र--८, आकार--६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि--श्री राम जी ।। अथि सुदामा जी की सवाईया लिषते ।।
राहिमहि राम रटं न घटं कदिहू मन माहि जू सोचि बहोरी ।।
साध समापि विरंजन बैठी कं ।। जिगहू दान तौ नाहि कियो जु ।।
मानस वेह वोये की सोयम है ।। सोउ, पीया हमते भये जु ।।
बोलि किलाए सुदामा की बाम्हनी ।। कोन करी हरि की हम चोरी ।। १ ।।
चोरी हू मोथे भई हरि की बड़ी ।। जाय प्रतापते असेही डोलु ।।
इनहि जानत ऐगुन है ।। लघु चूक परी दूष देवो मे कोलु ।।
भुलि गये तबही ते सबं सुधि ।। काये जाय काहा कहै बोलु ।।
ताते कि लाए सुदामां यो सोचत ।। पुटि परीक दुबा को है ग्रोक ।। २ ।।

मध्य—

काहे कुकोम दियो महादेवन ।। काहे कुमर जेन बाड़ो ऊजारयौ ।।
लाष के मंदर भी वन भुको कं ।। कायर कारत है जुग कारौ ।।
लंका हूं दगधि करी हनुमान नं ।। सागर कुवी किलांण गुलाम्रौ ।।
देखौ तौ ग्रैसे बली युग माही भये ।। परी पाय दल दूकान हूं जारयौ ।। ८ ।।

अंत—

सास कुं ग्रापि ग्रैसे सोचत है भारी वुज ।। द्वारिका पौहौचे जाय ।।
देषे महैल नंदलाल के ।। ग्रावत सुदामा देख्यौ ।।
उठे हरि ग्रातुर सु ।। हरि कं मीले है ऋरन भारी नंदलाल कौ ।।
भेट कं गवार दीनौ हरि ग्रासन सूं ।। सुंदरी कं पाय लागै मिलहू ललकौ ।।
हरत सुदामा जी कं पद प्रीति ।। पाई ग्राय वंदत किलाष प्रभु ग्रालि तौ निहालकौ ।।२०।।

विषय—सुदामा चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता, कल्याण दास का कोई वृत्त ज्ञात नही ।

संख्या ३६. बहुला लीला, रचयिता—कल्यानदास, कागज—देसी, पत्र—२, ग्राकार—८३/४ × ५३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि,—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४८, प्राप्तिस्थान—ग्रार्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः ।। ग्रथ गउ वहुला लीला लिखते ।।

कन कन भछिया जोरि विप्र एक सुरभी पारी ।
वछा वाको ग्रनाथ वहोत पाडे ग्रधिकारी ।
दूध दही घृत ग्रागरी वहुला वाको नाव ।
उठो नाथ भोजन करो दधि माषन वलि जाउ ।।
सुनो चित कान दे ।। १ ।।
एक दीना एक धेंन जाय गोमती सीधारी ।
चरो कुंज वन जाय जहा चारो ग्रधिकारी ।।
चरत न कोउ, वरजि है ढिग है सीतल ताल ।
जेंर कछू वुष पाइहो तो हमकू दीज्यो गारि ।।
सुनो चित कान दे ।। २ ।।

:o: :o: :o:

ग्रंत—मातासुत दोन्यो चले वनषंड कु धाये ।
वावन राभो गाय जहा केहरि मग जाये ।।
ग्ररीधेम कपि नासनी तुमेरो गर होय ।
ग्राजि के वचन जु पार उतारे होन भषोगो तोहि ।।
सुनो चित कान दे ।। ६ ।।
इतनी सन्य जु देखि कें पठये तुरत विमान ।
सिघन छाड़ी वनी धेन विप्र नहीं छाडूं ।
विप्रन्हो छांडे पुरी पुरी सिया लोक विराज ।
इतनी कथा सुनत ही ग्राये श्री भगवान ।
गऊ लीला बोहुला कथा गावे दास कन्यान ।।
सुनो चित कान दे ।।१०।।

इति श्री वोहला गउ की लीला संपूर्ण भरतपूर मध्ये लं.षी गंगा विरण भट्ट ।।

विषय--ग्रंथ में बहुला नामक एक गाय और एक सिंह की कथा वर्णित है। कथा इस-प्रकार है :--

एक ब्राह्मण की बहुला नामक गाय थी। वह एक दिन गोमती के किनारे, जहाँ एक सिंह रहता था, चरने गई। सिंह ने गाय को देख लिया और मारने के लिये उसकी ओर झपटा। गाय ने सिंह से एक दिन का अवकाश मांगा ताकि वह अपने बछडे को जिसने, उस दिन दूध नही पिया था, दूध पिला आए। सिंह पहले तो सहमत नही हुआ, परंतु गाय के वचन देने पर उसे जाने दिया।

बहुला अपने स्थान पर पहुंची और बछडे को दूध पिलाया तथा उसे अच्छी तरह प्यार किया। पश्चात् सिंह के साथ हुई वार्ता सुनाई। यह सुनकर बछडा भी गाय के साथ सिंह के पास गया। सिंह ने माता पुत्र का प्रेम और गाय की सत्यप्रियता देख दोनों को प्राणदान दिया। इस घटना पर भगवान् भी प्रकट हुए और सबको मनोवांछित फल प्रदान किया।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल वीर भगत कृत "वृज की बाल-लीला" के आधार पर संवत् १८८८ है। दोनों ग्रंथ एक ही हस्तलेख में है और एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखे हुए है। रचयिता का नाम कल्यानदास है। और वृत्त नही मिलता।

संख्या ३७. रामविवाह (?), रचयिता--काकाराम, कागज--देशी, पत्र--१, आकार--६ x ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१४, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--१७६६ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता--पं० सीताराम तिवारी, ग्राम-सिधौना, पो०-रामपुर, जि०-गाजीपुर)

आदि--सी राम ज

चलु सषि देषण सिताराम कि चलु सषि॥
उरांह विभुषित सुखमा धाम लोचन लाभ लहु लघु दाम॥
सुंदरि सिता सुंदर राम सदर राजा दसरथ वाम॥
सुदर जन गण देषन आय लुटहि लोभ ललित फल पाय॥ २॥
बालक नाअ्र तरुण अति वृद्ध कौतुक करन कोविद मुद्ध॥
कणक थम्म रुचि सुभग वनायु कनक पत्र मणि मंडप आय॥ ३॥
हाटक वेदि हाटक भुमि कनक कमस कह भाव ऋ घुमि॥
सवा पवा विधि कइल वनाय निगम संतव पहल सुनाय॥ ४॥
विविध विहित विधि राघुवर कीन्ह मनि वसिष्ट तव आसिष दिन्ह॥
कौतुक मंदिल दुलह राम दुलहिनि सिता सङ्ग जगाम॥ ५॥
आनन्द शागर मंङ्गल मुल सेवक साधु सदा अनकुल॥
देव नाग नर किंन्नर नारि होहि कृतारथ निरषि खरारि॥ ६॥
कोस लेस कुल कमल निनेस मैथिलेस कुल कुमुद निसेस॥
सविता वंस सदंवुज सुर सीता सिद्धि मनोरथ पुर॥ ७॥

:o: :o: :o:

अंत--

अधम उधारन रघुवर निति
पाइय ताकर परम पिरिति
गावहिं सुंदरि सुद ऋ रि गिति
श्री रघुनन्दन मानस प्रिति॥

जो अण गावहि राम विआह उसरहि संभव हिये उथाह॥ ८॥

राम राम रघु राम गुलाम। आपन किजिय सिताराम ॥
कुटिल कुमति अति कालमुढ। आधार अव अमाग बुढ ॥
"काक राम" एक ब्राह्मन अंध। काटिए रघुवर ता कर वन्ध ॥

संवत् १७६६ समै अग्रहणवदि तृतीयायां चन्द्र वासरे

विषय—राम विवाह वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है। केवल एक पत्ना उपलब्ध है। समस्त नौ पद है। रचयिता "काक राम" है। आप एक अंध ब्राह्मण थे। और कोई परिचय नही मिलता। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल स० १७६६ वि० है। प्रस्तुत ग्रथ मे रामचद्र जी के विवाह मडपादि का वर्णन है। ग्रथ की लिपि अशुद्ध है।

संख्या ३८. हरिनाथ विनोद, रचयिता—कवि कान्ह (निवासस्थान—अलवर राज्य), कागज—देसी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, खडित, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१६ वि०, लिपिकाल—स० १९१६ वि० (?), प्राप्ति स्थान—श्री प० गयाप्रसाद पाठक, ग्राम-मई, पो०-केराकत, जिला-जौनपुर

आदि—श्री गणेशा......हरिनाथ......। जयति मात जगदंब जयति भैरव भूतेश्वर ॥ जयति सकल सुरवृंद जयति वरदायक सुरगुर ॥ कान्ह ध्यान दिढ़ आनि तुव करहु कृपा आनँदकरन ॥ पाठक श्री हरिनाथ कों मंगल कृत मंगल करन ॥ ......उपजे जू पंडित जहाँ पाली सहर जरूर ॥ ४ ॥

मनीराम के वंश में कान्ह सुजान ॥

मनीराम के वंश में कान्ह सुजान। कीन्ही रचना ग्रंथ की रस सिंगार पहिचान ॥ श्री विनेश भूपति भयो भू पर भान समान ॥ जिनकी कीरति छंद पढ़ि कवि कुल करत बषान ॥ तिन करि कृपा कटाक्ष ये राषे छं गुनवंत ॥ एक स्वयंवर वैद्य कौ लषि गुन गूढ़ अनंत ॥७६॥ दूजें कवि हरिनाथ कौ भव भूषण मन मानि ॥ ....।

:o: :o: :o:

तिन्ह के हित यह कान्ह कवि रचो ग्रंथ सुषदाइ ॥
जो वाचै सीषै सुनै ताको मन हरषाइ ॥१२॥

:o: :o: :o:

१९ १६
संवत् उन्नीसे बहुरि ऊपर जुवति सिंगार ॥
कातिक सुदि एकादशी भयो ग्रंथ अवतार ॥१७॥

:o: :o: :o:

नायक लक्षन ॥ मोतीदाम छंद ॥

कहौ पहिले सुचि सील सुभाई ॥ उदार धनाधिस है कविराई ॥
जुवा सब केलि कलान प्रवीन ॥ वियापक चाह सवा गुन लीन ॥

:o: :o: :o:

अंत—इति श्री सकल गुन विचछन स्वछ स्वछन प्रतच्छ परेस्वर पदारविंद अनुरक्तभक्त भवद जो तम स्वयंवर सुवन दुवन दहन रोग वन अनल विध्वंसन कुलधर वंसावतंस समर्थ परमार्थ स्वारथानुरक्त वैद्यराज हरिनाथ विनोदे जगदंब जन कान्ह कृते संछेप स्वकीया वर्ननो नाम द्वितीयोध्याय ॥ ॥ २ परकीया दोहा ॥

गुप्त प्रीति जो तिय करै पर पुरुषहि अनुमानि ॥
सो परकीया जांनियें कवि कुल करत बषान ॥

:o: :o: :o:

रितु बर्नन तथा वर्षा ॥ कवित ॥ सवैया ॥

बरसैं मम जात घरी पलहू न वियोग विथा सरसैं ॥
सरसैं अंपियान ते नीर प्रवाह कराहि कराहि हिये करसैं ॥
करसैं न बमात कछू बसरी कवि "कान्ह" सुजान विना परसैं ॥
परसैं तन सौं तनहाय दई घन घोर घमंड घने बरसैं ॥१८॥

पुन:

मन में मनमोहन रूप बस्यौ धरियें किमि धीर जुवापन मै ॥
पन मैं कवि कान्ह जू................ ।

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

भेद सहित विस्तार ह्यां ग्रंथ बढ़न के काज ॥
कहे लघु कान्ह जु लषि लीजो कविराज ॥१५
प्राची दिशि प्राची नगर अलवर गढ़ सुभ स्थान ॥

:o: :o: :o:

विषय--नायिका भेद वर्णन ।

रचनाकाल

संवत् उन्नीसे बहरि ऊपर जवति सिंगार ॥
कातिक सुदि एकादशी भयो ग्रंथ अवतार ॥

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खण्डित है। समस्त मात्र ह पत्रे है। रचनाकाल सं० १९१६ वि० है। लिपिकाल अज्ञात है। परन्तु लिपिकाल भी इसी के समकाल है। प० हरिनाथ जी के वंशजो के ही यहाँ यह प्रति प्राप्त हुई है। रचयिता "कवि कान्ह" है। आप "पाली सहर" वासी, "मनीराम" के वंश मे थे। आप अलवर नरेश के दरबार मे रहा करते थे। नरेश के छह गुणी व्यक्तियो मे से एक आप ही थे। और कोई परिचय नही मिलता।

प्रस्तुत ग्रंथ आद्योपान्त पद्य मे लिखा गया है। नायिका भेद वर्णन इसका प्रधान विषय है।

संख्या ३९ बिहारी सतसई (गोवर्धन सतसैया को सार), रचयिता--कान्ह और व्यास, कागज--देसी, पत्र--८५, आकार--८$\frac{5}{4}$ × ६$\frac{5}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ--१५, परिमाण (अनुष्टुप्)--८५७, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १७८७ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, **वाराणसी।**

आदि--ॐ स्वस्ति ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ बि...तसई लिष्यते ॥ गोवर्द्धन सत सै(या) को सारि कीया ॥ कवि श्री राधिका जी की...(? अस्तुति क)रतु है ।

मेरीभव बाधा हरो राधा नागरी...(सोय)... ।
जा तन की झाइ परें स्याम हरित दुति...(होय) ॥

प्रभु की पिता की स्तुति

प्रगट भए द्विजराज कुल सुबस बसे व्रज आय ।
मेरे हरो कलेस सब केसौ केसोराय ॥ २ ॥

अथ ग्रंथारंभ

।। अकारादि कवि की उक्ति ।।

अपने अंग के जानि कै जोबन नृपति प्रवीन ।
स्तन मन नैन नितंव कौ बडौ इजाफा कीन ।। ३ ।।

।। सषीवचन नायक प्रति ।।

अर तैं टरत न बर परे दई मरक मनु मैंन ।
होडा होडी बढ़ि चले चित चतुराई नैंन ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत--नाइक नाइका सज्या उपरि वैठि प्रथम ही नाइका वीडी जिहि भांति दैन लगी सु सषी सौं कहति है ।।

हँसि औठनु विच कर उचै कीये निचौहे नैंन ।
षरैं अरे पिय कै पिया लगी विरी मुष दैंन ।।७०८।।

।। ग्रंथ का अंत विषै कवि वचन ।।

हुकम पाइ जयसाहि कौ लहि राधिका प्रसाद ।
करी बिहारी सतसया भरो अनेक सवाद ।।७०९।।

।। अथ पूरब पीठिका प्रबंध अकारादि वचन ताका दोहरा ।।

सरस सलंकृत सतसया कीये विहारी दास ।
तिनका पूरब पीठि पर कीन्ही "कान्ह व व्यास" ।।७१०।।
प्रथम अकारादि आदि दै अवर हकार अवसान ।
ससकत कर एकत्र कीये अति प्रवंध यह जानि ।।७११।।
जाको जासौं वचन है सोइ कीयो प्रवान ।
जहां होइ अनमिल कहू लेहु सुधारि सुजान ।।७१२।।

इति बिहारीदास सतसया संपूरनं समाप्तं ।।
संवत् १७८७ ।। शुभं शुभं ।।
विषय--बिहारी सतसई का अकारादि क्रम से संपादन ।
विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है । रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल संवत् १७८७ है । संपादनकर्त्ताओं के नाम कान्ह और व्यास है । यह पता नहीं चलता कि ये कहाँ के रहनेवाले तथा कब वर्तमान थे । इन्होंने 'बिहारी सतसई' के दोहों को अकारादि क्रम दिया है तथा गद्य में दोहों का मर्म भी अत्यंत संक्षेप में खोलने का प्रयत्न किया है । इनके अपने रचे केवल तीन दोहे है, जो अंत में दिए है और जिनमें प्रस्तुत प्रयास करने का कारण प्रकट किया गया है ।

संख्या ४० क. बसंतराज रचयिता--कालिदास, कागज--देसी, पत्र--१३, आकार--९½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप्)--१९०, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य--पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--सिधि । श्री गणेशाय नमः ।। श्री रमितारास सहाइ ।।

श्री "वसंतराज" लिष्यते ।।

अथ वस्त्र पहिरं का विचार ।।

अस्वनी वस्त्र पहिरैं जव वस्तर बहुरि मिलै आइ ।।
भरनी वस्त्र पहिरै जव वस्तर बहु मिलै जाइ ।।

:o: :o: :o:

॥ अथ सगनौती का विचार ॥

तिनि कौडी डारं पासा की जुगुतिनि दाइ जै परं तं लिषति जाइ ॥
तेहि का परल देषि लेइ.................... ।

:o: :o: :o:

॥ अथ छोटा सगनौती का विचार ॥
छ कोठा वनाइकं जंत्र लियौ पुनि सोइ ॥
जौ की चाउर धरं श्रौ ताको फल गनि लेइ ॥

:o: :o: :o:

श्रंत-- ॥ अथ सरवंग का विचार ॥

जात्रा करि होई नर जवही ॥ एते सगुन विचारै तवही ॥
बाए देखं जोगी जवही ॥ एकउ काज होइ ना तवही ॥

:o: :o: :o:

पोछे जोगो कारज हानि ॥ "कालदास भाषं मन जानि ॥"

:o: :o: :o:

विधवा नारी रोदन जो करं ॥ ताको सबदु कान में परं ॥
एहि विधि ताको असगुन होइ ॥ जतन करं कछु काम न होइ ॥
"कालदास" भाषं पुनि सोइ ॥ एह सब खक कहाने गुन गाइ ॥

इति सरवंग का विचार समाप्तं । इति श्री कालदास विरचिते पोथी वसंतराज समाप्तं ॥

:o: :o: :o:

॥ अथ दुघरिया का विचार ॥

वारह महीना सात वार ॥
राति दिन का विचार ॥
.... (अपूर्ण)

:o: :o: :o:

विषय--सगुनादि का विचार वर्णन ।

वस्त्र पहनने का विचार, छोटी सगनौती का विचार, छींक का विचार, सात वार, आठो दिशाओं का विचार, यात्रा विचार, यात्रा औषध, कौआ विचार, छिपकली का विचार, गगिका विचार, स्त्री गर्भ विचार श्यामा, सारस, महरि, कुरकुल, गरुड पक्षी आदि का विचार, निउला विचार, पडैया विचार, सरवग का विचार ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण है । समस्त तेरह पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है । ग्रंथ देखने मे प्राचीन प्रतीत होता है । रचयिता "कालिदास" है । परिचय नही मिलता ।

संख्या ४० ख. वसतराज, रचयिता--कालिदास, कागज--देसी, पत्र--१ (खर्रा-कार), आकार--३.२" × ८३ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--११०, परिमाण (अनुष्टुप्)--४८, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--प० रामदयाल जी तिवारी, ग्राम--संडवापर, पो०--करारी, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--.....................

स्यामा पक्षी का विचार

जत्रा करी होइ नर जवही स्यामा बोल सुने पुनि तबही ।।
सन्मुख बोलै द्रव्य मिलावै । पीछे बोलै हानि करावे ।।
बाये बोलै कारजहानि । दहिने काज करै मन जानि ।।
आगे बोलै छय होइ । "कालिदास" भाषा पुनि सोइ ।।

इति स्यामकरी विचार ।।

अथ सरहसक विचार

जात्रा करि नर होइ निदान । सरहस बोल सुनै तव कान ।।
सन्मुख बोलै मित्र मिलावै । पीछे बोलै काज करावै ।।
दहिने बोलै हानि करावै । बाये बोलै मिध्य मिलावै ।
आगे बोलै क्षय होई । "कालिदास" भाषा पुनि सोई ।।

:o: :o: :o:

अंत--अथ सर्प का विचार

जात्रा करि नर होइ निदान । पन्नग दृष्टि परै परमान ।।
सन्मुष देषै मित्र मिलावै । दहिने देषै कार्य करावै ।।
वाए देषै कारज हान । पीछे देषै असुभ वषानि ।।
उचे ते नीचे चलु सोई । जतन करै कुछ कार्ज न होई ।।
माथ उठै पुनि देषै जबही । महा सिद्धाफल पावै तबही ।।
"कालिदास" भाषा पुनिसोई । यह विचार पन्नग कर होई ।।

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--पशु, पक्षी एव सर्प आदि देखने से यात्रा मे जो शुभाशुभ फल होता है, उसक वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । रचना खंडित और अपूर्ण है । रचयिता का नाम कालिदास है । पता नही ये कौन कालिदास है । अन्य परिचय नही मिलता ।

संख्या ४१. भगवन् गीता, रचयिता--कासीगिरि, कागज--देर्सी, पत्र--८३, आकार--६११/१६ × ४५/१६ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--८७१, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८६३ वि०, प्राप्तिस्थान--प० शिवदुलारे मिश्र, ग्राम- व पोस्ट-दारा नगर, जि०-इलाहाबाद

आदि--श्री गणेशाय नमः ।। अथ भगवद्गीता लिष्यते ।।

।। दोहरा ।।

धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र मै मिले जुध के हेत ।
संजय कह करते भए कुरु पांडवा समेत ।। १ ।।
पांडव सेवा व्यूह लषि दुर्जोधन ढिग आई ।
निज आचारज द्रोन सौ बोल्यौ ऐसे भाई ।। २ ।।
पांडव सेना अति वडी आचारज तू देषि ।
अष्टदवन तुव शिष्य मै व्यूह रच्यौ जु बिसेषि ।। ३ ।।

सूर धनुष धारी बड़े अर्जुन भीम समान ।
द्रुपद महारथ और पुनि है वैराट प्रधान ।। ४ ।।
:o: :c: :o:

अंत--भक्ति वस्य श्रीकृष्ण जू यहै कियौ निरधार ।
करै भक्ति इश्या सवै यहै वेद कौ सार ।।८२।।

इति श्री तत्सादिति श्री महाभारते सत सहस्त्र संहितायां वैयासिक्यायां भीषम पर्वनि श्री भगवद्गीता सूर्पानित्सु ब्रह्मविद्यायां जोग सास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे मोक्षि संन्यास जोगो नाम अष्टदसो अध्याय ।।१८।। संपूर्ण सम्मापता श्रवन करे पाठ करे मोक्षिफल दाता ।। सुभं भवतु मंगलं भूयात् ।। कार्तिक मास कृस्ने पक्षे तिथौ ।।७।। चद्र वासरे तद्दिने संपूर्णम् ।। संवत् ।। १८६३ ।। शाके १७२६ भद्रावती पुर्यां ।। श्री राम ।।

भारत कथायं समाप्ता ।। अथां फल अस्तुति ।।
भगवत गीता संसकृत भवन ग्यान कौ आइ ।
कासी गिरि भाषा करयौ गुर प्रसाद ते आइ ।। ५ ।।
छमीयौ दोष विचारि चित लघु दीरघ कौ सोधि ।
जथा बुद्धि प्रकृति करयौ जीव हेत करि मोधि ।। ६ ।।
इति फल अस्तुति संपूनं ।।

बांचने वारे घासीराम गूजर श्री श्री

विषय--भगवत् गीता का हिंदी मे पद्यानुवाद किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल ज्ञात नही । लिपिकाल संवत् १८६३ है । रचयिता का नाम कासीगिरि है । ग्रंथात मे फल स्तुति के पश्चात् यह नाम दिया है । अन्य वृत्त नही मिलता ।

संख्या ४२. वियोग मालती, रचयिता--किसनलाल, कागज--देसी, पत्र--१०, आकार- -११¼ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२४, परिमाण (अनुष्टुप्)--३६०, पूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--

मूरख छोटो गूरग बड़ो वद्धीह मोय नाहि ।।
चाहत पहाड़ उडावन कोउ फूकन नू माहि ।।
।। नृप महिमा ।।
राजा राजत नीत युत । राम सिंह महाराज ।
प्रजा सुखारी राखते । करते सबके काज ।।
राखत राज प्राण सम । ममे जानता लोग ।।
सिरवारन सिरदार नृप हनत रिपन के लोग ।। १ ।।
राज काज निज कर करत । माली करत जवाल ।।
दुष्टन को भेदन करै । कोउ न राखत...... ।।
तेजवंत रणवीर अति । सुभट सूर रणधी(र) ।।
ऐक २ रण मे हने । प्रजा नाह........ ।।

मध्य--

दुख देवे के कारणे । निर्मोही के लार ।।
ब्याह विधारा कराकर । दीये दुख अपार ।।४८।।

जनमति ही विष ना दियो । औरी माता प्याय ।।
ऐसे दुख कराल ते । वचती मोरी श्राय ।।४६।।
भाल कांति को देखि के । एका लगत कलंक ।।
हिमकर बदलो लेत अब । चाविनि करत निसंक ।।५०।।
प्रीति करी तो का भयो । रह्यौ न मन कौ चेन ।
जो मैं ऐसी जानती । दुख देवंगे वैन ।।५१।।

अंत—प्रेम कृष्ण मन तो वस्यो देखत है तो ओर ।।
नित२ उठ दरशन किये । निति२ प्रेम बढ़ाय ।।
अब वौरेन के कहन ते । विये फलक छिटिकाय ।।
वह दिन भूले ए सखी । बिन दरशन नही चैन ।।
पी दरशन देते नहीं । तरसत है ये नैन ।।
अव तुम काहू नहिं खातिहो । घूंघट में न नैन ।।
भूख गई प्यासो गई । गई वात सव भूल ।।
तेरो ही मन है सवा । मेरो जीवन मूल ।।
मो मन प्यारो मोय को । यों मन प्यारो तोय ।।

विषय—वियोग प्रधान प्रेम कहानी का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ मे पहले नृप महिमा का वर्णन है । जिससे पता चलता है कि यह ग्रथ भरतपुर नरेश, राजाराम सिंह के समय मे रचा गया था । रचयिता का नाम किशनलाल है जो जैन धर्मावलंबी थे । अन्य वृत्त ज्ञात नही होता ।

संख्या ३४. गीता भाषा टीका, रचयिता—किसोर दास, कागज—देसी, पत्र—६०, आकार—८३/४ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१२, अपूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री रामाय नमः ।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ।।

।। दोहरा ।।

ॐ नमो कृष्ण केशव विष्णु वासुदेव विश्वेश ।
आद पुरुष अक्षर पुरुष अलष पुरुष आवेश ।। १ ।।
जगत वन्धु जोति स्वरूप जियकी जानन हार ।
हरि जसु जाचन आइयों दास प्रभू के द्वार ।। २ ।।
जा अर्जुन जन को दियो भगवद्गीता ज्ञान ।
भाष्य में भिष्या मिलै भय भंजन भगवान ।। ३ ।।
"किसोर दास" जाचे प्रभू गीता ज्ञान उदार ।
जिहिं समझैं पहिचानिये पूर्ण ब्रह्म अपार ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अब गीता का कथा प्रसंग चल्याध्याय प्रथम का जब पांडव अरु कौरव महाभारथ के युद्ध को कुरु क्षेत्र को चले । तव राजा धृतराष्ट्र राष्ट्र कह्या कि हों भी जुद्ध का कौतक देषण चल्यौ हों ।

:o: :o: :o: :o: :o:

हे संजे धर्म का क्षेत्र जो है कुरुक्षेत्र । तिस विषै जाइ प्राप्ति भए हैं मेरे पुत्र । अरु पांडव के पुत्र तिह्नो क्या किया । सो मुझकों कहू । राजा के वचन सुणि करि संजै बोलतु भया ।

:o: :o: :o: :o: :o:

मध्य—इसु प्रकार जो मेरा भजनु करं है। सो मेरे मति विषै सभनो जोगीयहुँ ते वह जोगी श्रेष्ट है ।।४७।।

इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे आत्म-संजमि जोगो नाम षष्टोध्याय समाप्त श्री राम कृष्णार्पण शुभमस्तु गीता का चला सतवा ।। श्री भगवानोवाच ।।

चितु राषहु चरणार्विदु भीतर भगवत की पाई ।
येक येक डोलत नहीं इहि विधि जोग टिकाई ।। १ ।।

अवि अर्जुन और सुणु । जो गनिका निहचलु चेता मेरे विषं राषि करि मेरे साथि जोग जोडते है सो मेरे ही आसरे मुक्ति सा......ण जो ढूडते है । मेरे आसरे क्या कहीये कि हे महा प्र................

:o: :o: :o: :o: :o:

विषय—गीता की गद्य टीका ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । केवल छह अध्याय प्राप्त है । टीका का रचनाकाल तथा लिपिकाल भी अज्ञात है । टीका ब्रजभाषा गद्य मे है, जिसमे पंजाबी ध्वनि लिये हुए खड़ी बोली का भी मिश्रण है । ऐसी भाषा हरियाना क्षेत्र की ओर अधिक प्रचलित थी इसमे लिये गए कई ग्रंथ खोज मे मिल चुके है ।

रचयिता का नाम किशोरदास है । अन्य वृत्त नही मिलता । ग्रंथारंभ मे इन्होने मंगलाचरण के रूप मे आठ दोहे रचे है जिनमे इनका नाम आया है ।

संख्या ४४ क. दानलीला, रचयिता—कुंभनदास कागज—देसी, पत्र—६, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णायनमः अथ दान लीला लीषते
व्रज जुवतिन के जुथ चली व्रज नागरी ।
गोकुल बृजनारि दह्यो नित वेचन आवै ।
भूषण बसन सिंगार वनी अती परम सुहावै ।
एक एकतें आगरी सोभा वरन न जाए ।
बन्यो कुंज फुल्यो सखी रसरंग धरचो हे बनाय ।। १ ।।
प्रात समें नंदलाल सखा सब तुरत बुलाये ।
सुनत दान की बात सबै आतुर उठि धाये ।। २ ।।
पेंडो रोक्यो जाय के कालिंदी के तीर ।
नवनि कुंज सुख सदन में हो बैठें है बनवीर ।। ३ ।।
कहत नंद लाडलो ।। ३ ।।

:o: :o: :o:

अंत—मुदित भई ब्रज नार दह्यो ले आगे राख्यो ।
ग्वालनु दीनु बाँटि कछु इक आपुन चाख्यो ।
प्रीत पुरानी जानकें मिली व्रखभांन कुमारि ।
तनमन अरप्यो स्याम कों हो वसि कीने गिरिधारि ।।
कहैं व्रजवासनी ।।३०।।

तुम त्रिभुवन पतिनाथ कियो सोई मन भावै ।
सेस सहस्तर मुख गावैंही ध्यान धरे त्रिपुरारि ।
हम अहीर व्रज वासिनी हो क्यों करि पावैं पार ।
कहैं व्रजवासिनी ।।३१।।
राधा कृष्ण विवाद परस्पर गाय सुनावै ।
मन वांछित फल होय हरदे के ताप नसावै ।
स्यामा स्याम विराजहीं अवलोकन सुख रास ।
गिरिधर बाँन कहिये बसो हो बलि बलि "कुम्भनदास" ।।३२।।

इति बड़ी दानलीला संपूरण : ली० कोटा मधे सा० रामलाल वाच जीवज श्री कृष्ण मीती प्रथम आस्वन शुक्ल ५ सोमे वासरे सं० १६१८ ।।

विषय—श्रीकृष्ण और गोपियो की दानलीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अप्राप्त है । लिपिकाल सं० १६१८ दिया है ।

रचयिता का नाम कुभनदास है जो ग्रथात मे आया है । शेष परिचय नही मिलता । संभवतः ये अष्टछाप के कुभनदास है । इनकी प्रस्तुत रचना नददास जी के भ्रमर गीत की शैली पर निर्मित हुई है ।

यह ग्रन्थ दो ग्रंथ "सामोदर की टीका" और भद्रसेन कृत "चंदनमिलियागिरी सायर की वार्ता" के साथ एक हस्तलेख मे है ।

संख्या ४४ ख. दानलीला, रचयिता—कुभनदास जी (निवासस्थान—गिरिराज), कागज—देसी, पत्र—६, आकार—६$\frac{३}{४}$ × ४$\frac{३}{४}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० स० २२, पु० स० १२

आदि—राग बिलावल ।।

गोकुल ते व्रजनारी दह्यो नित बेचन आवें ।।
भुखन नव विध सिगार बनी अति परम सुहावें ।। १
एक तें एक विराजही सोभा बरनी न जाइ ।।
बन्यो कुंज फुल्यो सखी हो रंग रस धरयो हे बनाइ ।। १ ।।

मध्य—

हम हे जात अहीर दह्यो नीत बेचन आवे ।।
सुन्यो न दधी को दान काहा अब नइ चलावे ।।
तुम बन बेंगे सांवरे रोकत हो बन माही ।।
या मुख सों दधि खाऊगे सो बेठि कदम की छाही ।।
कहति व्रज नागरी ।।१६।।

अंत—

श्री राधा कृष्ण विवाद परस्पर गाय सुनावें ।।
मन वांछित फल होरदे की ताप समावें ।।
स्यामां स्याम बिराजही अवलोकें सुखरास ।।
यह बानिक मेरे रहे बसो हो बलि बली कुंभनदास ।।
कहती नंद लाडीलो ।।३१।।

विषय—गोपियों से श्रीकृष्ण ने दधि दान लिया। उसका वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक कत्थे की स्याही से लिखी गई है। हाशिया इसी स्याही से दोनों तरफ छोड़े हुए है। स० भ० की छाप लगी हुई है।

संख्या ४५ क. रामायण (रामचरित) रचयिता—कुदरतीदास (संभवतः), स्थान—बरोंह ग्राम (गोरखपुर जिला के गोला बाजार के निकट), कागज—देसी, पत्र—१२३, आकार—६¾ × ६⅛ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६३७, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री गुसाईं राम स्वरूपदास, कुटी–सँठयाँव डाक०–जहानागज रोड, जिला–आजमगढ़।

आदि—

इंद्र आदी सकलो सुर देवा। परम तंतु को सुमीरन सेवा॥
सेवही चांद सुरुज औ तारा। सेवही पाय कवन अका....
सेवही धरती गगन अकासा। सेवही जल थल जीव प्रगासा॥
प्रभु की जोती दीसं सभ माही। व्यापी रहा छवी अंतर नाही॥
परम जोती ताके रहु संगा। कोटी कला छवि व्यापीत अंगा॥

॥ साखी ॥

पांच ततु तेही भीतर परम जोती परगास।
नारी पुरुष काके कही अवीनासी नाही नास॥

चौपाई

अजर अडोल आचीत सरीरा। सो निरगुन गुन सहीत सधीरा॥
निरगुन ब्रंभ ताहा ते आवा। सगुन रूप सोए दास कहावा॥
:o: :o: :o:
एक समै नीद्रा मोही आवा। करगही साम्रथ मोही जगावा॥
तुम सीर छत्र मुकुती रसाला। आए तुम्ह लीवन्ह के काला॥
करहु मती संसै भ्रम त्यागो। सुनत वचन वीरहोनी छन भागी॥
सत साम्रथ प्रभु वोले वानी। सुनहु वचन तुम कुदरती ग्यानी॥
तुम तो आहै जो अंस हमारा। तुमरे काज इहा पगु ढारा॥
:o: :o: :o:

मध्य—

॥ साखी ॥

सात दीप नवखंड भरी महीमा तीनो लोक।
जनक विदेही प्रन कीयो जो वीधी करही सोक॥

अंत—

॥ चौपाई ॥

कपी नीस्चर दल होत लराई। चढी वेवान देषही सुर आई॥
होही घाव कपी वीर न माना। ए चरीत्र महीमा भगवाना॥
सुग्रीव आंगद अव हनुमंता। नव अवनील क्रोध जामवंता॥
:o: :o: :o:
धरती पास गए हनीवंता। वसुधा मारग दीन्ह तुरंता॥
पंठी पताल रोरा कपीजा। ....
:o: :o: :o:

विषय—रामायण की कथा वर्णन की गई है।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख मे आरंभ का पत्र और १२८वे पत्र के पश्चात् के पत्रे नही हैं। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है। रचयिता का नाम कुदरतीदास है। इनकी एक रचना "विश्वकारन" भी है, जिसकी कविता शैली प्रस्तुत ग्रंथ से मिलती है। ग्रंथ स्वामी के कथनानुसार ये जिला गोरखपुर के अंतर्गत (गोला बाजार) के निकट बरोंह गॉव के निवासी और वर्ण के ब्राह्मण थे। संत मत ग्रहण करने पर अपना नाम 'कुदरती साहब' रख लिया। इन्होने बहुत से ग्रंथो की रचनाएँ की। लगभग २८ ग्रंथ ग्रंथस्वामी के पास थे, जो काल गति से नष्ट हो गए और कुछ इधर उधर चले गए। उनमें से एक ग्रंथ का नाम "जग समाधि" था। प्रस्तुत रचना काव्य की दृष्टि मे उत्तम है। यद्यपि शैली गो० तुलसीदास जी की ही अपनाई गई है, परंतु कथावस्तु मे जहाँ तहाँ परिवर्तन किया गया है। अनेक कथाएँ स्वतंत्र रूप से भी वर्णन की गई है और कितनी ही कथाएँ छोड़ दी गई है। कथा आरंभ न तो शिवपार्वती के सवाद से है और न याज्ञवल्क्य भरद्वाज के सवाद मे। शिव पार्वती विवाह भी नही है। कांडो का भी समावेश नही है। और न अध्याय या सर्ग ही है। कथा अत्यंत संक्षेप मे लिखी गई है जिसे पढने मे काव्य का पूरा आनंद आता है। कथा का आरंभ रचयिता ने अपना पूर्व जन्म का इतिहास देकर किया है, जिसको स्वयं भगवान् रामचंद्र वर्णन करते है। इसके अनुसार रचयिता का स्वप्न मे राम का दर्शन हुआ था, उनसे उन्हे भक्ति का प्रसाद मिला और पूर्व जन्म का इतिहास विदित हुआ। इन्होने निरगुन और सगुन दोनो प्रकार की भक्तियो का प्रतिपादन किया है। भक्ति करते हुए कष्टो को झेलना ये वांछनीय नही समझते थे। संसार के सब सुखो को भोगकर भी भक्ति की जा सकती है, परंतु सत्य विश्वास अवश्य रहना चाहिए, ऐसा इनका कथन है। रचना साखी और चौपाइयो मे की गई है। ग्रंथ का नाम नही दिया है। केवल कथा के आधार पर ही "रामायण" नाम रख दिया गया है। कथा कुंभकरण की लडाई के पश्चात् खंडित है।

संख्या ४५ ख. विश्वकारन (विस्वकारन), रचयिता—कुदरतीदास या कुदरती साहब, स्थान—बरोंह गॉव (गोला बाजार, गोरखपुर), कागज—देसी, पत्र—८०, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५०, रूप, पूर्ण—पुराना, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९०८ वि०, सन् १२५६, प्राप्तिस्थान—श्री गुसाईं रामस्वरूप दास जी, कुटी—सठयॉव, डाकखाना—जहानागंज रोड, जिला—आजमगढ़।

आदि—सती गुरदेव सीतरम थ... सी पोथी वीसकारन (? विश्वकारन) कूउती भाषाः गोसाइ गुरदेव जी सहाए :

॥ दोहा ॥

नमो नमो परमातमा सती सती संचीतानंत।
जीन्ह जग उतपती नीरमयो जोती काला सुर चंद॥
पानी पवन आगीनी की श्रो धरती ततु अकास।
ब्रंभा वीस्नु महेस भो तीनो गुर परगास॥
रजगुन सतगुन तामसा कारन करता कर्म।
ताते वीसकरमा धरती धारा धर्म॥
ब्रंभ वाकी ब्रहमंड मे ब्रंभा पूजा कीन्ह।
हीदश्रा नाभी कवल मह वीस्नु वास तहा लीन्ह॥

:o: :o: :o:

अंत— दोहा

वार वार करि दंडवत सेंभुगए कैलास।
तब गीरीजही समुझाए के जो प्रभु कीश्रा प्रकास॥

हरी चरीत्र गुन वरनत महीमा वारहीवार ।
आगम अगोचर आपु हरी गुन अजीत वेपार ।।

चौपाई

हरी महीमा नीती भाषु महेस । सुनही स्रवन दे गौरी गनेसा ।।

इति श्री पोथी वीस्वकारन कुदरती माहैव क्रीत संपुरन ।। संवतः ।। १९०८ सन् १२५६ साल मोती कुआर पुरनवासी ।।

विषय—जगत् उत्पत्ति का कारन तथा भस्मासुर की कथा का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९०८ है। रचयिता का नाम कुदरती साहब है। इनके विषय में देखिए इनकी "रामायण" का विवरण पत्र।

संख्या ४६. भागवत, रचयिता—कृपाराम, कागज—देशी, पत्र—२८६, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १८९९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० बालमोहन, ग्राम—विक्रमपुर, डाकघर—गाजीपुर, जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। स्री ।। सरसत्य नमह ।। स्रीराम क्रीरनाय नमह ।।

।। सोरठा ।।

वंदौ स्री रघुवीर ।। क्रीपा सीधु संतन सुखद ।।
प्रनत पाल रन धीर ।। दुख हरन दारीद दहन ।। १ ।।

।। दोहा ।।

हरन मोहतम दवंद सब । स्री गुरुपद करी ध्यान ।।
क्रीस्न कथा वरनौ विमल । अघहर कर कल्यान ।। २ ।।

:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

स्री भागवत पयोधीवर ।। को सक तेही अवगाही ।।
याते कछु भाखा रची नीज सामुझि चित चाही ।। ६ ।।

।। सोरठा ।।

मुक्ती एकादस माहि ।। वरनी स्री सुक वहुत बीधी ।।
संत चाहना चाहि ।। ताही क्रीपा भाखा रच्यौ ।। ७ ।।
एकतीस अध्याय सुभ तिनकौ कहत वीभाग ।।
प्रथम हीं जदुकुल नास कहो सुनी उपजे वैराग ।।

—चौपाई—

तीनी जोगेस्वर सुभग प्रसंगा ।। चारीध्याय वरने वहु अंगा ।।
छठए बीधी बीनतो प्रभु पासा ।। सोई नारद वसुदेव प्रकासा ।।

:o: :o: :o:

अंत—

।। दोहा ।।

सुनै सुनावै पुनी कहै ।। क्रीस्न कथा सुख कंद ।।
उपजै भक्ती अनंत तेही ।। मिटै जगत दुख द्वंद ।।१४।।

॥ दोहा ॥

ध्यान जोग तप ध्यान मख पुजा अरु व्रत नेम ॥
सकल सीधो फल होइ तेही क्रीस्न कथा जेहि प्रेम ॥१५॥

ईती स्री भागवते महा पुराणे एकादस कंधे भाखा निबंधे क्रीपाराम क्रीत क्रीस्न परायनो नाम एकतीसो अध्याय ॥३१॥

स्री क्रीस्नाय नमः स्री रामचंद्राय नमः संमत् १८९९............. ।

:o: :o: :o:

विषय––भागवत पुराण के एकादश स्कंध का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या ४७. कृष्ण विलास (भागवत दशमस्कंध), रचयिता––कृष्णचंद्र अग्रवाल, कागज––देसी, पत्र––३७, आकार––६½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––२५, परिमाण (अनुष्टुप्)––१०६८, अपूर्ण (खंडित), रूप––प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––सं० १७६४ वि० (?), लिपिकाल––सं० १८०४ वि०, प्राप्तिस्थान––पं० रामलोचन पांडेय, ग्राम– व पो०–देवकली, जिला–गाजीपुर

आदि––श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ श्री कृष्ण विलास ग्रंथ नाम ॥ नमो श्रीकृष्ण चरन निहारि ॥

वानि जाको वदन विराजे हीये करत उजीयारि ॥ १ ॥
श्री भागोत दसम भाखा किय चाहत उकि अनुसारि ॥
द्वारकेस गुरदेव कृपा ते मोहि भरोसो है निरधारि ॥ २ ॥
प्रसन परीछन सुकसों कीन्हो ॥
कीह विधि सप्तम गर्भ देवको गर्भ रोहनी लीन्हो ॥ १ ॥
वालक येक दूहुन के उदरे विन देह धरे क्यो जाइ ॥
देह धरें न मन पलटै अचरज बड़ो लखाइ ॥ २ ॥
तातें कहों श्री कृष्ण जनम की लीला सबै बखान ॥
जो होइ मेरे जोग सुनन के तौ कहिये मतिमान ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

येक समें अती प्रवल असुर नृप प्रगटे भुपर आइ ॥
सह न सकी भार अवनी तव कह्यौ विधना पै जाइ ॥

:o: :o: :o:

तब कह्यो विध देवन सों बानी ।
भुभार हरन हित कारन प्रगटेंगे हरिरूप निधानी ॥

:o: :o: :o:

अंत––जदु वंसिन के लड़कन को को कहि सके पारावार ॥
सहसन चेल पढ़े यक गुरू इभवे कोट आठ हजार ॥१७॥
असे सुने जो सौकुल जादौ तिन सबके नेता हरि ॥
जिनके पदसों प्रगटीते भई तीरथ रानी सुरसर ॥१८॥
जा जस त्रिभुअन देवक जासों निमत मात्र......
.........................अपूर्ण (खंडित)

इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंध लीला अध्याई ॥९०॥ संपूर्ण ॥ संवत् १८०४ माघ सुदी १० गुरू वासरे ।...................................

इद्र काथ सवत १७६४ पसवद ११ बुध वासरे कृष्ण चन्द्र आग्रवाल गुलाल चंद जु के सुत श्री

द्वारका नाथ वलभकुल के गोसाइ के सेवक ने जथामति श्री गुरईस्वर की क्रिपा तें बरनन कीये सुभ ॥

विषय—श्री कृष्ण चरित्र वर्णन। भागवत के दशम स्कंध का पद्यानुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण तथा खंडित है। केवल सैंतीस पत्रे उपलब्ध हैं। लिपिकाल सं० १८०८ वि० है। पुष्पिका (अथात) में जैसा लिखा गया है, उसके आधार पर रचनाकाल सं० १७६८ है। रचयिता कृष्णचन्द्र अग्रवाल ने इस कथा का वर्णन किया था।

संख्या ४८. जैमुनिकथा, रचयिता—कृष्णदास, निवासस्थान—तिवई जदुनदनपुर (गोरखपुर), कागज—देसी, पत्र—६०, आकार—११$\frac{1}{8}$ × ८$\frac{6}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२२, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६२८ वि०, लिपिकाल—सं० १८६७ वि०, प्राप्ति स्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी। (ग्रंथदाता—श्री रामलोचन साहु बरनवाल, स्थान व पोस्ट–फूलपुर, जिला—आजमगढ़)

आदि—

:o: :o: :o:

कवल नाल जल अंत निहारा। देवी मूल पुर्ष विस्तारा॥
कटि तल आदि पताल विसेषा। सात भुअन नांभी पर देषा॥

:o: :o: :o:

एक अनंत भौसागर तरना। "कृष्णदास" प्रभु प्रनवै चरना॥
कविन मांह हम कवित आना। पुन्य भूमि गोरषपुर थाना॥
इत सरजु उत गंडक सोला। कलेस्वर मध्य मनोरम मीला॥
"उदैसिह" तह भयो नरेसा। पीता हमार जन्म तेही देसा॥
पीतु पुरान पीतामह धानो। राज उपद्रौ अगमन जानो॥
सकुल सहित लै तुरित सीधाए। तीवइ जदुनंदन पुर आये॥
तिन्ह ये पुन्य दया सत धर्मा। चारि पुत्र मती मानस कर्मा॥
प्रथम मकुंद महामतिमाना। प्रम भक्त मनी ध्रुप सुजाना॥
तीसर पुत्र केदार सुग्याता। चौथे कृष्णदास विष्याता॥

:o: :o: :o:

संवतसर जो गयो सतैसा। सोरह सौ जो उपर अठैसा॥
जेठ मास जे पछ उजीआरा। तिथि साते ता दिन गुरवारा॥
कीन्ह अरंभ तब कथा समाजा। "अकबर साह छत्रपति राजा"॥

:o: :o: :o:

अंत—

पुन्य जाय हस्तिनापुर भए। चौदह बर्ष बीती तह गए॥
जग्य कीन्ह सब रिषयन जाना। ध्रम बुदीस्ठील सत्य समाना॥
कुंती सहित रहे पुर चौदह वर्ष भुआर।
श्रीपति आग्या मानी नृप पहुचे जाइ हेवार॥

इति श्री जैमुनि कथा समाप्त सुभमस्तु कृष्णदास कवि कृत संवत् १८६७ अगहन सुदी चुती १४ बार मंगर।

विषय—पाडवों के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन।

र० का०

संवतसर जो गयो सतैसा। सोरह सौ जो उपर अठैसा॥
जेठ मास जे पछ उजिआरा। तिथि सात ता दिन गुरवारा॥

विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ अपूर्ण है। प्रथम दो पत्रे तथा चार और पाँच संख्या के पत्रे नहीं हैं। रचनाकाल संवत् १६२८ है और लिपिकाल सवत् १८६७।

रचयिता का नाम कृष्णदास है। इन्होने यह ग्रथ गोरखपुर मे रचा। इनके पिता का नाम परान और पितामह का नाम धाना था। पिता का जन्म गडक और सरजू के संगम पर बसे कलेस्वर स्थान मे हुआ था। उस समय वहाँ का राजा उदय सिंह था। राज उपद्रव के समय इनके पिता और पितामह कुटुब समेत तीवई जदुनदनपुर (गोरखपुर) चले आए। उस समय अकबर बादशाह का राज्य था। ये चार भाई थे। पहले का नाम मुकुद, दूसरे का भक्तमनी (?), तीसरे का केदार और चौथे का नाम कृष्णदास (स्वयं कवि) था।

संख्या ४६. विरुदावली (अनुमान से), रचयिता--कृष्णदास, कागज--देसी, पत्र--३, आकार--७ × ३$\frac{१५}{१६}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ--)१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--४१, खडित, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पडित सीताराम जी मिश्र, ग्राम-अहरौली,
रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पंडित सीताराम जी मिश्र; ग्राम-अहरौली;
पोस्ट-सलेमपुर; जिला-गोरखपुर।

आदि--..............................

चहेरोदास कृसुन की सुध प्रभु लीजे काहे लागी करत हव अवेरो॥ ५॥
दास मलुक को पार उतारो सुर कुप परत सौ उबारो।
सेना अव मकरंद चतुरभुज कुवे कान्ह चरन को चेरो।
तुलसीदास वो मीरांवाइ जाके प्रसाव लेत हव सवेरो।
दास कृसुन को सुधी प्रभु लीजे काहे लाग करहव अवेरो॥ ६॥
दास तीलोचन की वुषमोचन रंचा बंका सौं प्रेम वडाइ।
सुपच कोल कीराति निषाद वरस देत व धाम पठाइ।
गनीका गीध अजामील सवना हरिगुन गाये के लोक सीधाई।
दास कृसुन की बोर द्रवु तुम कारन कवन धरो निठुराइ॥ ७॥

:o: :o: :o:

मध्य--

दुषरन भगत को सुत लक्षमन रहे सो येक दीन बर गंग नहाई।
मारन वुडकी अगम जल वहे उडे वस वलि नाही उतराई।
दास तुम्हार कीयो तव स्तुति कर दे मुरली तीर लगाई।
दास कृसुन की सुधी प्रभु लीजे नाहि त जग में होत हसाई॥२४॥
राम प्रसाद सं..............................

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--भगवद् स्तुति।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खंडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही। रचयिता का नाम प्रत्येक छंद के चौथे चरण मे आया है।

संख्या ५०. कृष्णसागर तथा फुटकर कीर्तन, रचयिता—कृष्णदास (तथा अन्य), कागज—देसी, पत्र—८२, आकार—६।। X ७।।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४० के पूर्व (अनुमान), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० बं० ५१, पु० सं० ८।

आदि—।। श्री कृष्णाय नमः ।। कृष्णदास के कीर्त्तन :: राग ललित । रूपक ताल ।

अधिक नीके लागत रगमगे लाल ।
अधी आधी बतियाँ कहत मेरे प्यारे ।
खेलत प्रान प्यारी सो कुंचित अलक छूटि निसि जागरन नयनन रतनारे । १ ।।
मृग ज्यो मृगमद तिलकु माथे ऊपर कछुक जंभात अधर मसिकारे ।
श्रमजल भरे कपोल मंडल बरमें दुररंग राते भोंह अनियारे । २ ।।
अभरन बसन पलटि पहरे अंग नूपुरकु नित चरण सोहें भारे ।
सुनि कृष्णदास रसिक गिरिधर पाए अब तन तें न करिहूँ न्यारे ।। ३ ।।

मध्य—पृ० २६

एरी कान्ह बुलावत चलो मृगनैनीए राधा व्रज भामिनि ।
सुनि मन मुग्धि बिफल जात हे रितु कुसुमाकर जामिनि । १ ।।
कामरतन अरु नागर तूं अनुरूपा कामिनी ।
ले मिलि भेंट उरस्थल को फलराज हंस गजगामिनि । २ ।।
कृष्णदास स्वामी गिरधर पिय तू जगती की स्वामिनि ।। २ ।। १५ ।।

अंत— अधरामृत लालन पीवेगो ।

पारवतो पति जारच्यो मदन अब नव निकुंज में जीवेगो । १ ।।
राधे तुव बदन इंदु देखि ससिधर कि मन में हीं चेगो ।
कहे कृष्णदास रसिक गिरिधर अलकावलि कर जनि छीवेगो ।। २ ।।

श्री कृष्णः शरणं मम ।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। श्री कृष्णो विजयतेतराम् ।। श्रीकृष्णः ।।

विषय—प्रारंभ में पदों की सूची है। बाद में कृष्णदास के बनाए हुए कीर्तन पृ० ५६ तक है, जो पुष्टिमार्गीय मंदिरों में गाये जाते है। फिर फुटकर कीर्तन (पृ० २५) दिए गए है। अष्टछाप के इस कवि का इतना बड़ा पदों का एकत्र संग्रह अन्यत्र अनुपलब्ध है। कृष्णदास के पदों का शुद्धाद्वैत संप्रदाय के कीर्तनों में विशेष स्थान है। भाषा और भाव की दृष्टि से ये पद उच्चकोटि के है।

विशेष ज्ञातव्य—सफेद छींट के पुट्ठे में रखी हुई पुस्तक है। अक्षर सुवाच्य है। सरस्वती भवन की छाप लगी है।

संख्या ५१. विद्रुम देस (रुक्मिनी विवाह), रचयिता—कृष्ण दास जाडा (श्री विट्ठलनाथ जी के सेवक), निवासस्थान—व्रज, कागज—देसी, पत्र—३, आकार—६ X ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १६८२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० वि० बं० १३, पु० सं० ७।

आदि—अथ विद्रुमदेस लिख्यते ।।

विद्रुम देस कुंदनपुर नगरी भीषम नृपति, जाके नवनिध सगरी ।।

पाँच पुत्र जाके कन्या एक रुक्मिणी, तीनो लोक तरुण सिररंगेनी ॥
॥ टेक ॥ रंगिनी ते त्रिभुवन तरुन लायक सहस्र ब्रह्मा पचि रची ॥ २ ॥
रंग मुरत रमा सरवर एकहु अंग नाहिन बची ॥
युगल खोर सुलच्छन ललना भनत पिंगल पारखू ॥
सोले से आभूषन अंग बिराजें दिन दिन कोउ सवा लखु ॥

मध्य—राग ॥ टेक ॥
चोरी चडे हे गोपाल मुरारी ॥ बेठी दक्षिण रुक्मिणी नारी ॥
लीनो हथलेवो सकुंवारी ॥ दुलह दुलहनी सुंदर भारी ॥
जहां परनत कृष्ण नरेशा ॥ आये ब्रह्मा इन्द्र महेसा ॥
आये सुक सनकादिक सेसा ॥ आये नारद मुनी उपदेसा ॥
आये छप्पन कोटि तेतीसा ॥ आये गौरी पुत्र गनेशा ॥

अंत—
रुकमिनी जांबुवती सतभामा, सत्या भद्रा नारी ॥
लक्षमणा कालिन्दी मित्रविंदा ये आठो पटरानी ॥
दस दस पुत्र एक एक कन्या तरुनी तरुनी प्रतिदीनी ॥
नवलकिसोर मुरलीधर सुंदर ये माया रस भीनी ॥
रुकमिणी ब्याह कह्यो जन कृष्णा सीखे सुने ओर गावे ॥
धर्म अर्थ कामना मुक्त फल चार पदारथ पावे ॥
भक्त हेत अवतार लियो हरि भूतल लीला धारी ॥
श्री गिरिधर राधावर ऊपर जन जाडो बलिहारी ॥
॥ विद्रुमदेस संपूर्ण ॥

विषय—श्री कृष्ण का रुक्मिणी के साथ विवाह वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक के पत्रों में संख्याएँ दी हुई है । पृ० सं० १६ से २३ तक यह ग्रंथ लिखा गया है ।

आदि मे 'कीर्तन' दिए गए है । बाद मे 'स्याम सगाई' और 'फुटकर कीर्तन' है । खाली पन्ने भी छोड़े गए है । सरस्वती भंडार की छाप तथा छपा लेबिल लगा हुआ है ।

संख्या ५२. रामपञ्चाध्यायी, रचयिता—कृष्णदास कायस्थ, स्थान—रामपुर शमशाबाद, कागज—देसी, पत्र—२८, आकार—१० × ६½ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७६, पूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गोपाल चन्द्र सिंह एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः
हरिजन हरिहर सुमिरन करहू हरि चरनारविन्द उर धरहू
कोट जगत जप तप विधि नाना अमित जोग व्रत संजम नाना
प्राग आदिक तीरथ पुनि जेती नाम तुल्य होइ सकें न तेती
वन को अनल तिमिर को भानू त्यों अघ को हरिनाम प्रधानू
मुल मनतर हरिनाथ जानो मोछ दुआर कुंजी पहचानो
है हरिनाम पाप कों अरनी मोह नही कहँ सुंदर तरनी
सुखदायक कलि कलिख भंजन है हरिनाम विस्वमन रंजन
जग धंधा तजि धंध विचारो हर उसास हरि नाम सम्हारो

छन्द ॥ हरिनाम हरजन हर उमामन मुखाद पर हर भाखहू
अघ हरन हरि चरनारबिंदन मन मधुप कर राखहू
हरिनाम ब्रह्मा अपार न पार सुन जन लह सके
सारद सुरेस गनेस महेस ताहू न कह सके
:o: :o: :o:

सोरठा ॥ "कृष्णदास" मम नाम हरिजन चरन सरोज रज
रहत रामपुर ग्राम शमशाबाद प्रसिद्ध जो
करो कृपा पंछी बरन बरन सुनावो तोहि
एक सुन्यों कायस्थ कुल जान दूसरो मोह
:o: :o: :o:

सुक बोल्यो सुन राज बद भाकी कलियान मे
लीला रुचिर समाज "पंच अध्याई" अघहरन

दोहरा ॥ सुकुल पछ तिथि पूरना ग्रगुन मास पुनीत
बन छायो फूलन विविध अरुन नील सित पीत
:o: :o: :o:

अंत--कहूँ मीत अब चीतदई बड़ी बात यह भनत दूरकी
सबको अदया जोग न होई बहरि भाग....... ।
श्रद्धा सहित प्रेम निधि जानो गुप्त बात...... ।
प्रभु पद प्रीति विमल नर जोई नाहिंन कहो.... ।
रास केलि अदभुत कथा कही यथामति गाइ
प्रभु पद पंकज पर सदा "कृष्णदास" बलि जाइ
:o: :o: :o:

विषय--श्री कृष्ण भगवान की रास केलि का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है परन्तु बीच और अंत के कुछ पत्रे फट गए है । उपलब्ध अंश में समस्त अड़तीस पत्रे है । रचयिता रामपुर, शमशाबाद निवासी कृष्णदास कायस्थ है । अन्य कोई परिचय नहीं मिलता । रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिया गया है ।

संख्या ५३. बभ्रुवाहन कथा, रचयिता--कृष्णदेव, कागज--देसी, पत्र--२, आकार--८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--५५, खंडित, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८६६, शाके १७३१, प्राप्तिस्थान--पं० विश्वेश्वरी तिवारी, ग्राम--बड़गहन, पोस्ट--बरदह, जि०--आजमगढ़ ।

आदि... ....

राय वासुकी वीनवही हमसे मनि तुम लेउ ।
काहे के नागन्ह मारहु जीवदान कै देहु ॥

॥ चौपाई ॥

बबुर बाहना तबही मनि पाई । तजि पताल मीतलोकहि आई ॥
मनि जब पावा मृष भा तबही । अर्जन केर माथ तब नाही ॥
ब्रह्मलोक तब जीव बीचारा । षोजेउ प्रीथी नाग पताला ॥

दोहा

केशव के मन चिंता सभके परा षभार ।
अर्जुन के माथ तब न पाइब करब कवन उपचार ॥
:o: :o: :o:

अंत--

नाती भेटु तब कुंतै रानी। नैन ढरे जस जमुना पानी॥
अब तुम अपने गृह कह चलहु। सेवा राय जुधिष्ठिर करहु॥
नाती देषि जाय गहुजारा। द्रापताहु पाव लेइ परी॥

॥ दोहा ॥

बबुरबाहना कै कथा जो कहै मन लाइ।
कृष्णदेव तब भाषा सभ कर पातष जाइ॥

इति श्री महाजुधे ववुल वाहना कांडे जुधीष्ठीर अस्ववधने ववुर वाहना कथा समाप्त॥ सुभमस्तु सवत् ६७ साके १७३१ मासातमे मासे पाव मासे सुक्ल पक्षे अष्टम्या तिथौ ८ बुध वासरे॥ लोग्रोत घरहु ब्रोपाठी तस्य ग्राम बड़गहन॥

विषय--महाभारत के आधार पर बभ्रुवाहन की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--हस्तलेख खंडित है। ५३ पत्रों में से केवल अंत के दो पत्र उपलब्ध है। रचनाकाल ज्ञात नहीं। लिपिकाल सं० १८६७ वि० (शकाब्द १७३१) है।

रचयिता का नाम कृष्णदेव है जो अंत में दिया है। अन्य परिचय नहीं मिलता।

संख्या ५४. गीता भाषा टीका, रचयिता--कृष्णराम सर्नोगिया चक्रवर्ती, कागज--देसी, पत्र--१६८, आकार--१० × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२६८०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि--श्री कृष्णाय नम.॥ अथ भगवद्गीता लिख्यते॥

ॐ अस्य श्री भगवद्गीता माला मंत्रस्य भगवान वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप छंदः॥

:o: :o: :o:

त्रिलोकी वंदित चरणः लोक हित निमित धृतावतारः परम कारुणिक भगवान देवकीनंदन ते अज्ञान वर्द्धित शोक मोह नष्ट विवेक निज धर्म त्यागी पर धर्मग्राही जो अर्जुन ताको धर्म ओर ज्ञान रहस्य को उपदेश रूप जहाज पर चढाय शोक मोह रूप समुद्र ते उद्धार करत भये।

:o: :o: :o:

या रीति या गीता शास्त्र की संगति ओर संक्षेप अर्थ कह्यों॥ अब प्रत्येक श्लोकार्थ श्रीधर के अनुसार लिखियत हे॥

धृतराष्ट्र उवाच

धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामका पांडवाश्चैव किमकुर्वत सजय॥ १॥

॥ टीका ॥

हे संजय धर्म भूमि जो कुरुक्षेत्र तामो युद्ध कि इच्छा करिके परस्पर एकत्र भये मेरे पुत्र दुर्योधनादिक ओर पांडव युधिष्ठिरादिक वा ठोर गये पाछे कहा करत हे.

:o: :o: :o:

अंत-- ॥ श्लोक ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्द्धरः।
तत्र श्री विजयो भूति र्ध्रुवा नीति र्मतिर्मम॥७८॥

टीका

हे धृतराष्ट्र जिन पांडव को साक्षात योगेश्वर कृष्ण सहाय हे जिनकी ओर अर्जुन सों धनुर्धारी हें तहां लक्ष्मी जय ऐश्वर्य नीति ए सब पदार्थ हे एसे मेरी मति हें ताते दुष्ट वुद्धि दुर्योधन के कहें सर्वथा पांडवन सों तू बेर मति करे॥७८॥

इति श्री भगवद्गीतोपनिषद्ब्रह्म विद्या कृष्णार्जुन संवाद योग शास्त्रटीकायां श्री मच्च-क्रवर्ति परमोदार कृष्णराम संतोषिण्यां मोक्ष संन्यास योगो नामाष्टदशोध्यायः ॥१८॥ संपूर्ण-श्चायं ग्रंथं ॥ यदृष्टचभावान्मति बिभ्रमाच्च यद् न्यूनयुक्तं लिषितं मया च विद्वद्भि राद्यैः परि-शोधिनीयं प्रायेण दृग्मुह्यति लेखकानां ॥१॥ यह पुस्तक संपूर्ण भई श्री गोकुल मध्ये मिति सांम कृष्णा ११ संवत १९२३ वाह्मण मनाढय सालिग्रामेन लिषी जो वांचे तांकू भगवत्स्मर्ण ॥

विषय––गीता की हिंदी गद्य मे टीका।

विशेष ज्ञातव्य––टीका का रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल सं० १९२३ है। टीका ब्रजभाषा गद्य मे है। टीकाकार का नाम कृष्णराम मनोपिणा चक्रवर्ती है। अन्य परिचय ज्ञात नही।

संख्या ५५. शरदनिशा, रचयिता––कृष्णा बाई या कृष्णा दासि, (श्री आचार्य जी के सेवक), निवासस्थान––अडैल, कागज––देशी, पृष्ठ––३½ (२५ से २८), आकार––६¾ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)––८०, परिमाण (अनुष्टुप्)––६०, पूर्ण, रूप––पुराना, पद्य, लिपि––नागरी, रचनाकाल––स० १६०० के पूर्व। प्राप्तिस्थान––श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० स० ३५, पु० स० १७।

आदि––**॥ अथ सरद निसां लिख्यते ॥ राग सोरठ ॥**

श्री बृंदावन नव कुंज मे त्रिभुवनपति आनंद ॥
बेन बजाई बिचित्र सुर तानमान गति छद ॥ १ ॥
सुरनर पसु खग पवन तरु ब्रज वनिता अकुलाय ॥
श्रवन सुनत आतुर चली सरद निसा परम सुहाय ॥ २ ॥

मध्य––**पृ० २६ दोहा ॥**

बोलखि वचन बनिता कहे, सब अंग पीडत मेंन ॥
प्रान तज्यो पन ना तज्यो सुनि गोंविद मुख बेन ॥ १ ॥ चाल ॥
ब्रज नारी सबे जुरि आई ॥ देखन पति जादोराई ॥
सुंदर त्रभोवन नही रासो। हरि कोटि मदन सम जेसो ॥
जाके मस्तक मुकट बिराजे ॥ दीपक अंधियारो भाज्जे ॥
दोऊ कुंडल झलके काना ॥ जाके कंठ बनो बनमाला ॥

अंत––

एक भई है गोपाल लला री ॥
जिन दृष्टि पुतना मारी ॥
एक भेख मुकंद सो कीनो।
जिन त्रनावर्त हरि लीनो ॥
एक भेख दामोदर धारी ॥
जिन जमुला अर्जुन तारी ॥
॥ दोहा ॥
प्रेम प्रीति हरि जानिके आये तिनके पासि ॥
मुदित भई सब मानिनी गुन गावें कृष्णदासि ॥

विषय––श्रीकृष्ण की सुप्रसिद्ध रासलीला का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य––खुले पत्ते है। रैपर लगा है। उस पर सरस्वती भडार की छाप तथा छपा लेबिल है।

संख्या ५६. कवित्त, रचयिता--द्विज केवल लीन, कागज--आधुनिक, पत्र--खर्रा-कार--१, आकार--१७३/४ × ६३/१६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--५०, परिमाण (अनुष्टुप्)--३७, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशीनागरी प्रचारिणी सभा, बनारस। (दाता--श्री महत ईश्वरशरण भारती, ग्राम-बासी, पोस्ट-भाटपार, जि० गोरख-पुर)।

आदि--राम

।। कवित्व ।।

प्रभु दीन को दानी दया करिके चीतवो एक वार तु नैन की कोरे।
जैशे कीयो प्रहलाद शों कीरती शोर भए चहुं वोर की वोरे।
शाम शरूप तु शंकट मोचन श्री रघुवीर वशो मन मोरे।
जानकी नाथ क्रीपा करीके करुनानिधी हों विनवों कर जोरे।।
मोर के पछ धरौ शीर उपर काछनी काछी पीतामर केरे।
कुंडल लोल कपोल की राजीत शारंग हाथ लीए शर जोरे।
शंभु पीनाक तोरे तीनुका सम भुप जगत्र के मान मरोरे।
शीय शुअंमर जीती लीयो मीथीलापुर के शभ शंकट कोरे।
केश गहो द्रोपती के दुशासन खंचत चीर शरीरहु केरे।
अरजुन भीम जुवीस्टील देषत भीषम द्रोनन त्रान करो रे।।

:o: :o: :o:

अंत--

केली कियो सभ ग्वालीनी के संग रीतु वशंत में राश बनाइ।
कुबरी के कुवर शीध कीयो अपने कर लेकें रूप बनाई।।
एंशो गरीब नेवाज के राज में कोटीन्ह शंत को शोक मेटाई।
दीज केवल लीन भजो भगवंतन कव मोरी वार वीलंव लगाई।।
काटहु संकट श्री रघुवीर शरीर के पीर मेटे गीरधारी।
घेरी के राषत है घर में जहवा भकशी अतो है अंधीआरी।।
पवनो के गम्व ना तहवा पुनी तापर देत दुआरे केवारी।
शो दुष काशो कहों करुनानिधि मोरें त एक अलंब तोहारी।।
काटहु शंकट वेगी महा प्रभु शंत सदा तुम हो उपकारी।
जो जन है एह शंकट में प्रभु वंधन काटो के दुरी पवारी।।
"दीज केवल लीन" भजो भगवंतत शीताव्र जी का नाम पुकारी।

विषय--भगवद् स्तुति।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत कवित्त खर्राकार कागज मे लिखे हुए है। रचनाकाल एव लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम "द्विज केवल लीन" है जो जहाँ तहाँ कवित्तो मे प्रयुक्त है। अन्य परिचय नही मिलता। गोपियो और कृष्ण के रास का समय वसंत ऋतु लिखा है। अनुस्वारो और शब्दो मे जहाँ तहाँ अशुद्धियां है।

प्रस्तुत खर्राकार पद्य के दूसरी ओर हनुमान जी की स्तुति है जो कई बार विवृत्त हो चुकी है। अतः उसका विवरण लेना आवश्यक नही समझा गया। प्रथम पक्ति दी जाती है :—

बाल समै तुम भक्ष कियो रवि तीनहो लोक भयो अंधियारो।।

संख्या ५७. श्री आचार्य जी की वंशावली, रचयिता--केवलकिशोर, कागज--देसी, पत्र--१३ (२२ से ३५), आकार--५।।। × ५।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२८, विद्या विभाग काकरोली से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)--२१६, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६०० से १६८० के भीतर (अनुमान से), प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० बं० सं० ४३, पु० सं० १६।३ ।

आदि--श्री हरिः ।। श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ।। श्री आचार्य जी की वंसावली लिखत हैं ।

श्री बल्लभ चरन प्रताप बल मुग्धहू कूं होय ज्ञान ।।
गूंगे हू गुन गनि कहे चरन कमल धरि ध्यान ।। १ ।।
लीला अगम अगाध हे ताको वार न पार ।।
कछुक कहत हूं चरण गहि अपने मत अनुसार ।।

मध्य-- **संवत् १५७२ नोमी पौस वदि प्रात ।**
शुक्रवार सुभ लगन बृख हे सब हीन को थाप ।।११०।।
हस्त नछित्र वेतल करन गृह सब नीकी ठांव ।।
देखि मुदित वल्लभ भए धरयो श्री विट्ठल नांव ।।१११।।
कन्या चंद्र सु मिथुन गुरु करक राहु रह्यो आनि ।।
उसना मंगल रवि बुध सुदस बखानि ।।११२।।

अंत--द्रावड भक्त उत्पन्न हे गूजर पुर लोभाय ।
प्रगटे विट्ठल नाथ जी दानी बेलि बढाय ।१८५।
सास कही कहि बोलता ये जानत हे सिव पूजि ।
अबतें भरा अनन्य सब रहतराम रस गुंजि ।१८६।
पालत जे जम किंकरे लाग नहो कहू घाते ।
चित्र गुप्त कागद तज्यो पूछत नहि कोई बात ।१८७।
यह लीला प्रतिदिन पढे उठे मगन व्हे जाय ।
ताकूं श्री गोपाल जी राखे चरन लपटाय ।१८८।
इते नाम गुन रूप हें भए हमारी हारि ।
आगे भक्ति हू बरनिये श्री बल्लभ कुल विस्तारि ।१८६
श्री द्वारिकेस जी कृपा करी लीनो हूं अपनाय ।
श्री बल्लभ कुल की केलि पर केसो किसोर बलि जाय ।१९०

इति श्री आचार्य जी की वंसावली संपूर्ण समाप्त ।।

विषय--श्री आचार्य महाप्रभुजी और श्री गुसाईं जी के चरित्रों का वर्णन किया गया है तथा उनके वंश का भी कुछ विवरण है । ग्रंथ उक्त संप्रदाय के इतिहास ज्ञान में सहायक एवं प्रामाणिक है । यह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ था, अब विद्या विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया है । इसकी रचना दोहा छंदों में है ।

संख्या ५८. वैराग्य शतक (विवेक दीपिका), रचयिता--केशवदास जी, कागज--देसी, पत्र--७६, आकार--८१/२ × ७१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्), --१७३८, अपूर्ण, रूप--पुराना (जीर्णशीर्ण), गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १७४७ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—.....................

......ज्वतु है ।। मोसौं यह कहै देत है कि महर्षिः पुरायौद्यैः ।।
व......पुन्यं न करि चिरपरि गृहीतांश्च विखयाः ।।
संग्रहिज.........विषयते ।। महांतोयत् ।।
यातंते आर्तही डुक्टत है...विषयिणा विसने ।। प्रववांतु ।।
विषईनि कहु ।। प्रम दुष दे......कहुं ।। पहिलं तौ परिग्रह वढ़तु है ।।
सुवहु दुषनि करि सं...ध्यौ परिगृहु ।। जव विनसतु है ।।
तव भयो दुष परतु है ।। यह (द)त्तात्रय मुनि ।। राजा जदसों ।।
एकादशहू स्कंधहू मध्य कही........।। श्लोक ।।
परिगृहोति दुःखाय यद्यत्प्रियतम नृणां ।।
अनंत सुखमाप्नोति तद्विद्वान्यस्त्व किंचन ।। १ ।।

अर्थ ।। देषहु यवु एक पंक्षी हतौ ।। तिहि कहूं अनेक दुषन्य करि मांस पायौ ।। तौ ताकौ संगृह करि राष्यौ ।। तव और कुरचं पक्षीनिवहु कुरच मारि डारयौ ।। मांस छुड़ाय लीयौ ।। सुयत...व ।। जुजुवस्तु ।। नृणां प्रियतम ।।

मध्य—
श्लोक ।। विस्तीर्णे सर्वस्वेतरुणा करुणा पूर्व हृदये ।।
स्मरंतः संसारे विगुण परिणामावधि गति ।।
कदा पुण्यारण्ये परिणत सर शरच्चंद्र किरणौ या ।।
मान्नेष्यामोहहर चरणं चितैक सरणय: ।।४३।।

टीका ।। भर्तृहरि मनोर्थ करतु है ।। विस्तीर्णे ।। सर्वस्वे ।। सर्वस्वेदैकवि तरुण ।। कहैं तें जुक्षण क्षण नवीन ।। जु करुणा ।। ताकरिपूर्ण जुकरुणामपहृदय ।। अरु संसारे ।। या संसार विष ।। विगुणपरिणां ।। मवधि गति ।। दोष संवंधीनी जु दुर्गति ।। ताहि स्मरतिः सुमिरि ।। पुन्यारण्ये ।। पवित्र वन विषै ।। परिणत शरच्चंद्र किरणैं निमध्य :।। हर चरणैंहै चित्त केहमुष्य सरनु जिनके हम ।। अैसे रात्रि दिनक वगवाद है भाइ ।।

अंत—अव भर्तृहरि कहै तुहै ।। कि देषहु ।। यासंसार मध्य ।। नृभय कछू नाही ।। भोगे रोग भयं ।। जौ भोग बहुत करि कीजे तो ।। रोग कौ भय ।। अरु सुखे ।। सुषनि विषै छय कौ भय ।। अरु वित्तेग्निभृ भृद्भ्यं ।। चित्त विषैं जरि जाय ।। अरु भूभृत जु है राजा ।। ते छिपाइ लेहि यह भयु ।। अरुदा से ।। सेवकाई ।। स्वांमी कौ भयु ।। अरु ।। रूपेषु ।। योषिद्भ्यं ।। नीकौ रूप देषि ।। स्त्री कौ भयं ।। काहू की स्त्री आप गिरि परैं ।। अरु माने ग्लाय निभयं ।। भाई हमारौ ।। जौ यहि मन्मानं न करिहै ।। तौ हमारे गलांनि हूं है, मरु गुंणई खल भयं :: गुणीन विषै ।। दुष्टीन कौ भयं ।। अरु देहे ।। शरीर विषै ।। कृतांता भयं ।। काल कौ भयं ।। तातैं सर्वनाम भयं ।। सर्वंभयं अस्ति है ।। हे सखे ।। अरे सखा ।। वैराग्यमेव ।। वैरागि अकेलौ ।। अभयंखः ।। जनभजः ।। चित्त एकाग्रहै करि ।। निर्भै पदाथ वैराग्यहि मांभजगछ ।। ईति श्री मतसकलनृपति मौलि मंडन मति श्री मधुकरि नृपति तनुंज श्री मंद्रि विरचितायां विवेक दीपिकायां भर्तृहरि विरंचितायां वैराग्य सतंसंपूर्णं भवति ।। समत १७४७ वृषे मास आसौ जै कृष्ण पषे तिथि ६ वार सुक्रवारे नग्र पोटरां मध्ये लिषतं च स्वामी जी श्री उधवदास जी को पोता लिषि ।। वावा जी श्री लालदास जी कौ वालक तुरसी वास वांचे जिस कूं राम राम ।। श्री श्री राम ।।

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ भर्तृहरि कृत वैराग शतक का हिंदी अनुवाद है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में आदि के दो पत्रे नही है । प्रथम श्लोक की टीका खंडित है । ग्रथ सुप्रसिद्ध कवि केशवदास जी का रचा हुआ ज्ञात होता है । पुष्पिका में उन्होंने

"मधुकर नृपति तनुज श्री मदिद्र विरचितताया" लिखा है। इन्होंने अपने ग्रंथों की इसी प्रकार पुष्पिकाएँ दी हैं। अतएव इसी आधार पर इन्हें रचयिता माना है।

ग्रंथ का लिपिकाल सं० १३८७ है। इसकी प्रस्तुत प्रति बड़ी ही जीर्णशीर्ण दशा में है।

संख्या ५९. विवाह खेल, रचयिता—केशवदास नारायण, कागज—सफेद, पत्र—७ (६ से १२ तक), आकार—५।।। × ७। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्—८६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भंडार, विद्या विभाग काकरोली, हि० बंध १६, पु० सं० ८।

आदि—।। श्री कृष्णाय नमः ।। अथ व्याह खेल ।। राग मारू ।।

व्रज वेद वदित बरसानो, व्रखभान गोप ताहां रानों ।। १ ।।
ताकें राधा रुचिर कुमारी ।। पिता मातहि प्राण पियारी ।। २
गुण रूप राशि विधु वदनी, रति रमा उमा मद कदनी ।। ३
भई बरष सात की बाला, लागी खेलन खेल रसाला ।। ४
तहि सखी वृंद रही घेरी, मानु हैं सब याकी चेरी ।। ५ ।।
वृष भान भवन निति आवें । ६

मध्य—पृ० ६ से—

स्यामां दई स्याम मुख बीरी, तब गावति गारि अहीरी ।।६३
यह ग्वाल छाछि को भोगी, कहा जाने बीरो अरोगी ।।६४
मेरी राधा जू आज सिखायो, तुम पुय परमफल पायो ।।६५
हरि निज करि बीरी लीनी, त्रिया मुख मेलन मति कीनी ।।६६
जब अरुण अधर तन हेरयो, तब स्यामां जी श्री मुख फेरयो ।।६७

अंत—**तब बोलि व्रषभान कुमारी, अति तुम तिहो ए कारी ।।११६**
मेरो व्याह करेगी मैया, ससुरो श्री गोकुल को रैया ।।११७
बाढ्यो मोद विनोद अपारा, कविवर ने कोंन प्रकारा ।।११८
जहां शेष सारदा हारे ।। तहां कवीजन कोन बिचारे ।।११९
ताको पार कोउ नही पावे ।। केशाराम नारायण गावे ।।१२०
।। इति व्याह खेल संपूर्णम् ।।

विषय—श्री राधा जी वन में सहेलियों के साथ खेलने को गई सो वहाँ श्रीकृष्ण का मिलाप हुआ। बाद में श्रीकृष्ण और राधा जी वर वधू बनकर खेल खेलने लगे। वही वर्णन किया गया है।

संख्या ६०. केशव विनोद भाषा निघंटु, रचयिता—केशवप्रसाद शर्मा, स्थान—बंराजमऊ (बैसवारा, अवध), कागज—आधुनिक, पत्र—२२०, आकार—८$\frac{४}{१०}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८६३, लिपिकाल—सं० १९३० वि०, सन् १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० ईश्वरदत्त तिवारी, ग्राम—लेहरा तिवारीपुर, पो०—सराय हरहर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—**श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अथ केशव विनोद नामा भाषा निघंटुर्लिलख्यते ।।**

शंकरसुत गिरिजा तनय गणपति चरण मनाय ।
श्री धन्वंतरिहि पुनि वार वार शिर नाय ।। १ ।।
:o: :o: :o:
वर्ण क्रम सो ग्रंथ यह संस्कृत मांहि समोद ।
प्रथम रच्यौ ता नाम यह केशव पूर्व विनोद ।। ३ ।।

पुनि देख्यो जग में सकल संस्कृत जानत नाँहि ।
ताते रच्यो निघंटु यह निज भाषा के मांहि ।। ४ ।।
:o: :o: :o:
प्रथम खंड सब औषधी दूजे व्यंजनरीति ।
तीजे मांस प्रकार सब लिखे सकल करि प्रीति ।। ६ ।।

।। ग्रंथकर्ता का वर्णन ।।

अवधपुरी सुंदर सुखद वसत जु सरजू तीर ।
जहँ जन्मे रघुवंश मणि राम हरण भवभीर ।। ७ ।।
ताके सुभग प्रदेश में बैसवार इक देश ।
सुख सों बस जामें प्रजा तनक न जानत क्लेश ।। ८ ।।
जैराज मऊ है नाम जिहि वसत ग्राम तहँ एक ।
जाके नाम सों ख्यात कुज बे कहावत जेक ।। ६ ।।
:o: :o: :o:
अद्रि नंद वसु चंद्र मिति विक्रम संवत जान ।
ज्येष्ट मास में आइ किय वेलनगंज सु थान ।।२१।।
:o: :o: :o:

अंत--

हरीत--(पुं०) एक प्रकार का पक्षी है जिसको हरियल कहते हैं ।।

इसका लक्षण ।। हरियाइ लिए लाल पीला कंठ में काला होता है ।। गुण ।। रूखा गरम रक्त पित्त कफ का नाशक प्रस्वेद तथा स्वर का करनेवाला और कुछ वातकर है । इति श्रीमत्पण्डित परमसुख तनय केशवप्रसाद शर्म्म द्विवेदिना विरचिते केशव विनोदे निघंटौ मद्यमांस खण्डस्तृतीयस्समाप्तः ।। ३ ।। पूर्णता मितोऽयं ग्रंथः व्योमाऽङ्कु निशाकरैस्समुदिते वर्षे शुभवंक्रमे चेत्रे मासि परे दले हरि तिथौ श्री चंद्रमो वासरे । वैद्यानन्द करोनिघंटुरमलो यंत्रे शिलानिर्म्मिते श्री मत्केशव शर्म्मणार्ग्गलपुरे मुद्राङ्कुताम्प्रापिताः ।। १ ।।

विषय--औषधियों, व्यंजनों और अनेक प्रकार के मांसों का गुण दोष वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल सवत् १८६७ वि० और प्रकाशनकाल सन् १८७३ ई० है । रचयिता का नाम केशवप्रसाद द्विवेदी है । इनके पिता का नाम परमसुख और छोटे भाई का नाम बलदेव था । इनके पूर्वज भवानीदत्त द्विवेदी थे जो अयोध्या के समीप बैसवारे के अंतर्गत जैराजमऊ ग्राम मे रहते थे । यहाँ से ये बिठूर के पास राधनगाँव मे जाकर बसे । राधन से परमसुख, रचयिता समेत आगरा चले गए और तब से वही अध्यापन कार्य करके जीवनयापन करने लगे । रचयिता आगरा कालेज मे संस्कृत के प्रथम अध्यापक हुए । प्रस्तुत ग्रंथ संस्कृत में रचा गया और लोकोपचार की दृष्टि से हिंदी भाषा मे अनुवाद करके विद्याकरत्नाकर यंत्रालय, आगरा मे मुद्रित किया गया । ग्रंथ पत्थर टाइप मे छपा है और छापे की प्राचीनता की दृष्टि से महत्व का है ।

संख्या ६१. कवित्त, रचयिता--केशोराम, कागज--देसी, पत्र--१ (खर्रा़कार), आकार--१०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--८, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० विष्णु देवमणि त्रिपाठी, ग्राम-हकरापार, पोस्ट-रामपुर कारखाना, जिला-गोरखपुर ।

आदि--श्री गणेशाय नमः

सीषो चारु वेद अठारहो पुराण शीषो जोग जोतिश को जीतो तरवार में ।
कोक अगम शीषो व्याकरण न्याय शीषो अम शो वईदाई शीषो वक्ता हजार में ।
गावन वजावन शीषो पारसी पुराण शीषो शकुन को झपट शीषो जितो रण माह में ।
पढ़त कवि "केशोराम" एतो सब शीषो आगो गनि चातुरी न शीषो तब शीषो परो भार में ।। १ ।।
जानत हो पंडिताइ योग जोतिश अव पुराण वाचो अछरो के जोरि जोरि कवित नीके उचरो ।
राग धरि गवाइवरा वो घोड़ा वीना राग नदी नार पवरी परि वाहुवल उतरो ।
बैठे जानो सभा में रीझाई डागे राजन को पागवाही से रनमाह हो लरो ।
देश वो विदेश फिरी आवो "कवि केशोराम" कर्म तई आरो इत ताके में काकरो ।। २ ।।

विषय--जो मनुष्य चतुर नहीं और जो चतुराई से अपने कार्य नहीं करते, उन पर कविता की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । कवित्त केवल दो है, जो खर्रीकार पत्र के एक ही ओर लिखे है । दूसरी ओर संस्कृत के फुटकर श्लोक है । रचयिता का नाम केशोराम है । अन्य वृत्त अज्ञात है ।

संख्या ६२. महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व), रचयिता--केसोदास, कागज--देसी, पत्र--१३, आकार--६ ५/१० × ६ ५/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--३३८, खंडित, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--कैथी, लिपिकाल--सं० १८३२ वि० (संभवत.), प्राप्तिस्थान--राम अनंद जी तिवारी, ग्राम--दरवेशपुर, पोस्ट--भरवारी, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--.... ....

रमवरी ज कीछ वनौ श्री ग्रग होह महइ ।
...अनाग महीजनी ग्यान धीअन गहनी करु ।।

:o: :o: :o:

व...पु ब्रह्मन के पउ । जीन्ह मोही नीरमल ग्येन सीषउ ।।
सहर जगमोहनी मत । सवगी रस होइ उदघट ।।
......बुधी के वनी । स्वंगरोहीनी (? स्वर्गारोहण) कहउ वषानी ।।

:o: :o: :o:

अंत--पवभगी ददीरटील भइन महीत नेवस ।
केसौदस (?केसौदास) सोभदी पंडव गए सषवस ।।
त्रीय सोवत्री भोग है कोउ संकै न रष ।
मरत वार कोछु नहीं मडी इइ मीर षाक ।।
जो नर कथ कहै चीत लइ । जनम जनम के पतष जाइ ।।
जस देवन्ह म नारायन भोगी । तस ग्यानीन्ह म गोरष जोगी ।।
काया म जस ब्रह्म बोले । पुरुष न्ह तस गोवींद डोलै ।।
केसौ कहै विचारी के जो कोउ ग्यान भुलइ ।
राम नाम सवसे भल कहत सुनत तार जइ ।।

संग रोहीनी कै पोथी संपुरन समपंनो भै ।। जो देष सो लीष मम दोष न दीजे ।। पंडित जन सो वीनती मोरी टुट अछछर वरेह जोरी ।। श्री पोथी संग रोहीनी कै पोथी ।। जो सुनै जनम जनम वैकुंठ तरं ।। अशतरी सुनं पुवक फल कलीत्र जनम जनम कंसो गछपवं ।। पुरुष सुनै तो सव जस पव पोथी उतरी भोज गुअल पोथी शोष गंग वनी भगवन कनती मीती वैसाष सुदी १४ संवत ८३२ ।। सलीष संपुरन ।। २४७६४७

विषय—महाभारत स्वर्गारोहण पर्व का हिंदी अनुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। समस्त १३ पत्रे उपलब्ध हैं। आदि का पत्र बहुत ही जीर्णावस्था में है। रचनाकाल ज्ञात नहीं। लिपिकाल दिया तो है, पर अस्पष्ट है। अर्थात् संवत् ८३२ जो संभवतः १८३२ वि० है।

रचयिता का नाम ग्रंथांत में केसोदास दिया है। अन्य परिचय अज्ञात है।

ग्रंथ की लिपि कैथी है और बहुत ही सदोष है। पढ़ने में अत्यंत कठिनाई होती है। भाषा अवधी है।

प्रस्तुत रचना के साथ "मैनमत के उत्तर" नामक रचना भी लिपिबद्ध है।

संख्या ६३. श्री रामगीतमाला, रचयिता—क्षेमकरण, कागज—देसी, पत्र—३४, आकार—१०३/४ × ५५/८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री राम गीत माला लिख्यते ॥

आजु अजोध्यहि मा सब आयो सुख संपति जस भूति भलाई ॥
पुरुष पुरान चारि तनु धरिकै प्रगट भयो नृप तनय कहाई।
कोन्ह चहत प्रभु चरित सुहावन पावन परम सबहि सुखदाई ॥ १ ॥
आए गुरु वशिष्ट विप्रन्ह जुत उचित कर्म श्रुति विहित कराई ॥
निज अभिलाष पाइ द्विज हरषे भूपहि आशिष वचन सुनाई ॥ २ ॥
पुर परिवार देशवासी सब मुदित सबहि मन अभिमत पाई।
सुमन वृष्टि नभ ते सुर छोरत जय जय शब्द चहू दिस छाई ॥ ३ ॥
राम भरत अरु लछन शत्रुहन गुन प्रताप जुत नाम कराई।
"क्षेम करण" दशरथ कौशिल्या सुकृत पुंज फल साथहि पाई ॥ ४ ॥

अंत—

राम विदेहदुलारी जागेउ राम विदेहदुलारी।
कोइ सखि मुख मंजन के कारण पात्र लहे भरि बारी ॥ १ ॥
कोई दातुनि कोइ मुख पोछन पट कोइ सखि लेपनधारी।
कोइ अनुकूल दुकूल विभूषण धूप दीप कोइ न्यारी ॥ २ ॥
कोइ कोइ लै नैवेद्य विविध विधि कोइ सखि पान सुपारी।
कोइ आरती बजावत गावत छत्र चमर कोइ ढारी ॥ ३ ॥
या विधि कोटिन सखिन सयानी निज अधिकार संभारी।
"क्षेम करण" सियरामवदन लषि तन मन धन सब वारी ॥ ४ ॥

इति श्री क्षेमकरण मिश्र कृत श्री रामगीतमाला समाप्त ॥६६॥

॥ चंचरीक ॥

सोहत सर चाप हाथ लीन्हे सब बन्धु साथ माथ नाय मानु पाय आए प्रभु द्वारे।
विप्रन्ह के व्रात वंदि और बरण सकल निंदि लोक नयन चयन अयन वंदिगन निहारे ॥ १ ॥
दिनकर कुल कंज भानु भवजलनिधि अंबु जानु जयति जयनि जीव जीव वचन सब उचारे।
मंद मंद धरत पाव राषत सबही को भाव भावगम्य रम्य सभा सदन को सिधारे ॥ ३ ॥
मौलि मुकुट तिलक भाल भृकुटि बंक विसाल कुंडल...................

विषय—बालकांड के अंतर्गत राम कथा (जन्म, बाल क्रीड़ा, विवाह एवं दंपति केलि क्रीड़ाओं) का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम क्षेमकरण है। अन्य परिचय नहीं मिलता। संक्षिप्त म एक क्षेमकरण 'कृष्ण चरितामृत' के रचयिता के रूप मे उल्लिखित है। पर कहा नहीं जा सकता कि वे प्रस्तुत रचयिता से भिन्न हैं या नहीं।

रचना साहित्यिक है। कहीं कहीं आल्हा की सी शैली अपनाई गई है, यथा :—

आजु अयोध्यहि मा सब आयो सुख संपति जस भूति भलाई।

संख्या ६४. षेम पच्चीसी (हनुमान चरित्र), रचयिता—खेम कवि, कागज—देसी, पत्र—१२, आकार—५३/४×४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री राम जी सति ॥

॥ कवित्त ॥ षेमपचीसी

प्रथम पयानौ कीनू राम की रजा कू पाय सीता जू की सुधि कू सिधारे हनूमान जू ॥
जलनिधि उतरि उतरि तास तीर गये देषि दरवाजे जाई दुगम भयानू जू ॥
च्यारि कोस तैं उठाई कंचन के कोट खेम चक्रत ह्वै रह्यो सोचि ग्रैसो वडो थानू जू ॥
सूक्षम सरूप धरि धस्यौ जाई लंका माहि सुधि न परत कित जानू जू ॥ १ ॥
नगर निहारयौ रनवास देष्यौ ठौर ठौर गयो अकुलाई कहू नजर न आई जू ॥
रावन बिलोक्यौ और रानी वेषी सोवती जो जाकू आयो ताहि कव पायो रघुराई जू ॥
ढूंढि फिरयौ और और आयो तब ताही ठौर त्रजटी जहा ही जहाँ सीता आनि पाई जू ॥
रूम रूम हरष्यौ जनम धनि मेरो आज अंषियां सिराय फूल्यौ अंग न समाई जू ॥ २ ॥

मध्य—

तब बोल्यौ राजा रावन मरन हार भयो रै तू मारिबो विचारयौ ताहि वोलिवे की डरु रे ॥
बुधि वोछी बल वोछो वोछन के गुन यही सो पचास मारि फूल्यौ येह तो मै वलु है ॥
अब तो पूरी परी कटक सब देष्यौ सुन्यो आगे लरिबे कू गढ़ लंका सो नगरु है ॥
आग्याकारी बावरो तू राम तेरो तपसी है त्यू परी बिलाधि होई वहे तेरो सब घरु है ॥१३॥

अंत—

सनी अध्यार धार उरमार सूठी सबै जलहू न वूडत मेरी मीचन पवेरो है ॥
तुम कूहू जतन बताउ जो पत्याहु मोहि मेरे मारिबे को जो उपाय एक नेरो है ॥
तेल घृत रुई लेहु लपेटि मेरी पुछ सेती फूक देहु तौ मै मरुं वहा जीव मेरो है ॥
मन मारि हासी मुष उपरि उदासी देहै हनूमान वार वार लंक तें हेरो है ॥२३॥

विषय—हनूमान जी की लंका यात्रा और वहाँ किए गए उनके वीर कार्यों का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम षेम है। अन्य वृत्त अज्ञात है।

प्रस्तुत ग्रंथ जिस हस्तलेख में है उसमें निम्नलिखित रचनाएँ भी संगृहीत हैं :—

१ ब्रह्म जिज्ञासा—उपनिषद् भाषा—शंकराचार्य कृत
२. खेम पच्चीसी (हनुमान चरित्र)—खेम कवि कृत
३. जगन बत्तीसी—जगन कवि कृत
४. अंगद रावण संवाद
५. ध्यान कृष्ण शंकर
अर्धांगी नाममाला—रघुनाथ कृत

संख्या ६५. महाभारत (शल्यपर्व), रचयिता—गग कवि, कागज—देसी, पत्र—४०, आकार—६$\frac{५}{१६}$×६$\frac{६}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७० खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—.....................

सएना सौंपि कीहेउ सएनानी। अपनी वुद्धी महाबल जानी॥
मोहि भरोस रविनंदन केरा। दिन उठाइ तेन्ह कीन्ह अंगेरा॥
रन समार्थ देषउ नहि कोई। अब सएनापति रौरेहो होई॥
अमर अजीत समर गुनसारा। भारथ मह सब तुम्ही अभारा॥
दारुन वार्य द्रोन कर जैसा। ओन्ह ते अधिक अवहि तुम तैसा॥
समय समुद्र उतार कि पुनि पुनि करौ नीहोर।
काटहु वंधव संकठ स्वामि काम कइ मोर॥
राजही बहुरी कहै अस्थाना। सुनहु नृपति करवेउ तुम्र कामा॥
जो छल वल गुन पीतई सीषाई। सो नहि रषवेउ धोष लगाई॥
सूरन्ह कर होवेउ बल हार्ता। रम मह पेठी प्रलए कर कार्ता॥
सर्व भार सहवेउ एहि देही। तुम्ह ही लागि जिअ प्रान सनेही॥
जो संसै तुम्ह मोसउ काहा। ताकर उतर सुनहु नर नाहा॥
सल्य महा नृप बल कइ रासी। विद्दा निपुन अन्न आभ्यासी॥
लीन्हे काल वाज्र कर जैसे। सवुहीवंत सल्य नृप तैसे॥
:o: :o: :o:

अंत—चंदन वंदन कीन्हेउ वीजए बीलास की चीन्ह।
"गंगाराम" कह सल्य ही नृप सएनापति कीन्ह॥
जौ सब साज वामि कइ कहऊ। पारन पहुचउ अटकै रहऊ॥
तेहि संग्राम विषम मह ऐसे। जल जंतुन्ह तारापति जैसे॥
चीत मरु चार्न व्यास कर गहऊ। रन बहु रंग तमासा कहंऊ॥
समर भयानक वार्नउ ताही। महा ग्राह जनु लीलकी आही॥
हाथी घोर सब जूझि सीरानी। कादव मासु रकत तहा पानी॥
:o: :o: :o:
आगे काल ठाढ रह कोहू न काँपत अंग।
भाषा वानि प्रेम सउ कहेउ सल्य वध "गंग"॥
इती श्री महाभारथे सल्य पार्व वार्नन गदा जुध्य सल्य वधनो नाम प्रथमो
:o: :o: :o:
चौदह चारि अधिक दिन गाएसी विधि वीति।
कह "कवि गंग" जुधिष्ठिर बैठे सवहि जीति॥
:o: :o: :o:
वधौ देस पंचाल ही एक छोहनी सर्व।
सीधी अकासक विरवा कहेसि गर्जि वहु गर्व॥
कृत वह्मइ अस्थामइ काहा। अब पौरुष तोहार नरनाहा॥
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—महाभारत शल्य पर्व की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल और लिपिकाल ज्ञात नही । ग्रथ आदि और अत मे खडित है । केवल पत्र सख्या ३ मे पत्र सख्या ८२ तक के पत्रे उपलब्ध है । रचयिता का नाम गगाराम "गग" है । एक स्थान पर "गगाराम" एव दूसरे स्थान म 'गग' दिया ह । अन्य परिचय नही मिलता । धर्मदास और श्रीपति कृत महाभारत क कुछ पर्वो मे "गग" का भी उल्लेख है । धर्मदास के पुत्र कहकर उल्लेख किया ह और श्रीपति न भाई कहकर । सभवत. उनके अनुसार उल्लिखित 'गग' प्रस्तुत गग ही है । एक बात का सदेह अवश्य होता है, वह यह कि गंग की कविता के सबध म जा प्रशसा उन लोगो न की ह, प्रस्तुत ग्रथ को देखकर उस सबध मे निराशा होती है । हो सकता ह कि प्रस्तुत रचना उनकी आरभिक रचनाओ म से हो । इसके अतिरिक्त प्रस्तुत ग्रथ का लिपि इतनी भ्रष्ट ह कि उसके लिय लिपिकर्ता का ही दोष दिया जा सकता है । यदि सावधानीपूर्वक कविता का सशोधन करते हुए ग्रथ को पढा जाय तो गग की कविता की सार्थकता सिद्ध हो सकती है ।

उदाहरणार्थ

सएना सौपि कोहेउ सएनानी । अपनै बुद्धि महाबल जानी ।।
मोहि भरोस रविनंदन केरा । दिन अढाइ तेन्ह कीन्ह अगेरा ।।
रन समार्थ देषउ नहि कोइ । अब सएनापति रौरेही होई ।।
:o: :o: :o:
दारुन दार्प कर जंसा । ओन्ह ते अधिक अर्वाह तुम तैसा ।।
:o: :o. :o:

शुद्ध पाठ

सना सौंपि किएउ सेनानी । अपनी बुद्धि महाबल जानी ।।
मोहि भरोस रविनदन केरा । दिन अढ़ाइ तिन्ह कीन्ह अंगेरा ।
रन समर्थ देषउ नहि कोई । अब सेनापति रौरेही होई ।।
:o: :o: :o:

प्रस्तुत ग्रथ सभा के लिये प्राप्त कर लिया गया है । यह गभोगग गाँव मे ही प्राप्त हुआ है, जहाँ धर्मदास और श्रीपति के महाभारत मिल ह ।

संख्या ६६. गोदोहन लीला, रचयिता--कवि गग, पत्र--२ (५८ से ५६), आकार--८।×६।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--२५, परिमाण (अनुष्टुप)--१०, अपूर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब०, पु० स० ३ ।

आदि--श्री कृष्ण श्री गोपी जन वल्लभाय नमः ।। गोदोहन लीला गंगकृत ।।
श्री हरि गुरु को आज्ञा पाउ । कछु कोतुहल गोकुल को गाउ ।। १ ।।
नंद महर नंदी सुर राजा, जिनके जसु के बाजे बाजा ।। २ ।।
धन्य सुधन्य जसोमति रानी । सोई संमृत वेद पुरान बखानी ।। ३ ।।

मध्य--
कहत गोपाल नंद सो धाय, बाबा जु हमे दोहन सिखाय ।।१०।।
नान्हो सी नोई करवाउ । छोटी सी दोहनी मगाउ ।।१०।।
सुधि गाय मेलि कर दोहूं । सुनि बाबा होके बरि कहुं ।।१२।।

विषय--श्रीकृष्ण की गोदोहन लीला का वर्णन ह ।

संख्या ६७. चौर्य लीला, रचयिता--गग सरन, पत्र--६ (प० ११ से २२ तक), आकार--८।×६।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--६८, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भण्डार, विद्या विभाग, कांकरोली; **हि० बं० ७, पु० स०--३ ।**

आदि--श्री कृष्ण गोपीजनबल्लभाय नमः ।। चौर्य लीला ।।

श्री गोकुल महिमा परथम रढी । तनुरंग लछमी चिहोधां बढ़ी ।। १ ।।
घर घर घोष घमर के एसे । भादो बादर गरजे जेसे ।। १ ।।
गोकुल महिमा कह्यो न जाय । मुरतवंत रहे सुख छाय ।। २ ।।
अचरज एक नेरे मन होय । यो ब्योरो समुझावो कोय ।। ३ ।।

मध्य--

गोपी एक स्यान जु कीनो, छींके दधी को मथनां धर्यो ।।५२
परा अलोखल आनि बनायो । वा उपर ले सखा चढायो ।५३
ता उपर चढे नंदकुमार । करन पोहोचे कियो बिचार ।।५४
वाको छेद लकुटी सो करे । दोले ग्रीववदन कर धरे ।।५५

अंत--

जो इह लीला रुचि कें गावे । व्रज वासी में वासो पावे ।१०७।
सोधि सोधि देख्यो सब ठोर । व्रज सो व्रज पटतर नही ओर ।१०८।
सहज होय व्रज को जो उपासी । ताको कृपा करे व्रजवासी ।।१०९।।
श्री गुरु चरन कृपा ते कहे । 'गंगसरन' भक्तनि के रहे ।११०।

विषय--श्रीकृष्ण की दधि, माखन चोरी लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--इस पुस्तक मे अन्य ग्रंथ भी लिखे हुए है ।

संख्या ६८ क. ज्ञानकथा रहस्य, रचयिता--गंगा गिरि, कागज--आधुनिक, पत्र--१६, आकार--५½ × ३ १५/१६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--९, परिमाण (अनुष्टुप्)--९०, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १९३४ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० जगदीश शर्मा राजगुरु, स्थान व पोस्ट--फूलपुर, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ।।

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरं ।
हेतुनानेन कौंतेय जगद्विपरिवर्तते ।।
इतिस्मृतेः ।।

अनादि अनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मिकामाया ।। अनादि नाम उत्पत्ति रहितं अनिर्वचनीयं नाम किसी प्रकार कही न जाय त्रिगुणात्मिका नाम सत रज तम एही है स्वरूप जिसका माया आत्मस्वरूप के अज्ञान का नाम है यह माया चिरकाल से ब्रह्म के एक अंश में अध्यस्त पडी रही एक समय ब्रह्म साक्षी माया की ओर दृष्टि करते भये क्या समान से माया को जानता भया तिर काल विषे सूर्य के प्रतिबिंब की नाई जैसे जल मे प्रतिबिंब पड़ता है तैसे ही ब्रह्म साक्षी माया में प्रवेश करता भया वधा लोहे और अग्नि की नाई अथवा चुम्बक पत्थर और लोहे और अग्नि की नाई अथवा चुम्बक पत्थर और लोहे की नाई सत्ता स्फूर्ति सामान से माया में देते भये तव माया चैन्य की नाइ होकर इस्त्रवित ब्रह्म के सन्मुख खड़ी होती भई ।

अंत--और आप स्वयं प्रकाश होवे और दृष्टा होवे आनंद उसको कहते है जो निरुपाधिक व निरतिशय सुख रूप होवे सो सत चित आनंद लक्षण आत्मा के मेरे में घटते है मैं आत्मा हूं एसे निश्चय करने से मुक्ति होता है ।।

इति स्वामी गंगा गिरि विरचितं ज्ञान कथा रहस्य संपूर्ण ।।

विषय--ब्रह्म ज्ञान का उपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल संवत १९३४ है जो प्रस्तुत रचना के आगे "ज्ञान कथा" की पुष्पिका मे दिया है । ये ग्रंथ एक ही हस्तलेख मे है ।

रचयिता का नाम गंगागिरि है। अन्य परिचय नहीं मिलता।

रचना गद्य में होने से महत्वपूर्ण है।

संख्या ६८ ख. ज्ञानकथा कर्म निर्णय, रचयिता—गंगागिरि, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—६६, आकार—५३ × ३६६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७८, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १६३४ वि०, प्राप्तिस्थान—पंडित जगदीशप्रसाद शर्मा राजगुरु, स्थान व पोस्ट—फूलपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

गीता भारत को मता आचारज की जुक्ति।
अष्टावक्र वसिष्ट मुनि नहीं आपनी उक्ति॥ १॥
शिव गीता अरु श्रुति को दीना वहु परमान।
ज्ञान कथ की इस्थिती एतने मे व्याख्यान॥ २॥
ओं तत्सत् ॥ नमो नमो उस देवि को जिः ब्रह्म विद्या व्याख्यान।
सुगम जिसके प्रशाद से हैाइ होत पुज्ञान॥ ३॥
नमो नमो श्री देवियो ब्रह्म विद्या व्याख्यान।
केन उपनिषद मे निश्चै है मुमां है भवंती जाना॥ ४॥
यथा तथा उपदेश से मुक्त होय शुद्ध बुद्ध।
सर्वायुः जिज्ञास कर जाय नर्क दुर्बुद्ध॥ ५॥

अंत—सषुप्ती आनंद भोग को प्राज्ञ भोगता नित्य।
आत्मा साक्षी सर्व का निश्चै जानो मित्त॥१५॥

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्यस्य किंकरेण गङ्गागिरिणा संग्रह क्रियता ज्ञान कंथयां कर्म निर्णय नाम प्रकरण प्रकरण समाप्ताम् शुभमूयात॥७ दोह १३

विषय—ब्रह्म ज्ञान का उपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १६३४ वि० है। रचयिता का नाम गंगा गिरि है। उनका अन्य परिचय नहीं मिलता।

संख्या ६६. शब्द या वाणी, रचयिता—गंगा दास, कागज—आधुनिक, पत्र—१५६, आकार—६३ × ६३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६४३ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० जगदीश प्रसाद जी शर्मा राजगुरु, स्थान व पोस्ट—फूलपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सतगुरु चरन कमलेभ्यो नमः ॥ अथ शब्दा वाणी लिख्यते। अथ मंगलाचरणं ॥ जमख ॥

जै जै जै जै जै जै जै जै जै जै गुरु गोविंद।
जै जै व्यक्ता व्यक्त अनामं नाम अनंतऽनभौ वरदं॥
जै नरहरि जै मीन वराहं जै नर सिंह अरि छिन्न।
कच्छ रूप हरि जै जै वावन परसराम जै रघुनंद॥ २॥
जै बलराम राम जै कृष्णं जगन्नाथं परमानंद।
जै गिरधर कुलगोप उधरनं सुरपति गर्व कियो मंद॥

:o: :o: :o:

जै जै अगुण सगुण गुरु रूपं मोह विनासन रवि बंदं ।
"गंगादास" दास पन्हि प्रभु श्री काशी पदरज बंदं ॥ ६ ॥

मध्य—प्रेम छके हरिजन मतवारे ।
भुलि गई कुल कांनि बडाइ लोक लाज परीवारे ॥ १ ॥
लागो नेह नेम सब छूटयो सुधि न रहि तीथि वारे ॥ २ ॥
दुषन सुषन अस्तुति निंद्या फूकि दियो भ्रम सारे ॥ ३ ॥
पद पंकज मन मधुप लोभांनों जन गंगा विधि डारे ॥ ४ ॥ १९४ ॥

अंत—वीगरी सबै वनि जाए : जो पै सब तजि सरनै औ हैए ॥ १ ॥
नर तन दुर्लभ दीयो कृपानिधि ताको नहि बिसरैये ।
लोक लाज कुल कानि मान तजि हरि चरनन चित लैये ॥ २ ॥
जोग जग्य तप साधन नाना ताकी आस मिटैये ।
काम क्रोध मद लोभ मोह वस तिन्ह सग कवहू न वहीये ॥ ३ ॥
लष चौरासी भ्रमि भ्रमि आये अब नाही भरमैये ।
गुर गोविंद पद सेव निरंतर मिलि संतन गुन गइये ॥ ४ ॥
विषये वासना परिहरु मनु यो सहज विरति मन गहिये ।
कासीराम कहै सुनु गंगा वहुरी न भौजल अईये ॥ ५ ॥ ४९९ ॥

श्री सम्वत १९४३ ॥ दोहा ॥ अगहन मास चतुर्दसी कृष्ण पक्ष गौघूर ।
रामेश्वर दास लिखत भयो गंगा सब्द भरपूर ॥

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सं० १९४३ दूसरी कलम से लिखा गया है, पर ग्रंथ का ही लेखन काल विदित होता है । रचयिता का नाम गंगा दास है । इनके गुरु कोई कासीराम थे और वृत्त अप्राप्य है । इतना स्पष्ट है कि ये सतमार्गी थे और हिंदू मुसलमानो की एकता के समर्थक थे । प्रस्तुत हस्तलेख के अंत मे रामकृष्ण कृत विनै पच्चीसी भी लिपिबद्ध है ।

संख्या ७० क. तिथि प्रबंध, रचयिता—गंगादास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१० × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—४८, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री परमातमने नमः ॥ श्री सत गुरु कर्ण कमलभ्यो नमः ॥ अथ तिथिप्रबंध लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

वंदि सच्चिदानंद घन सर्वातीत अनाम ।
नेति नेति श्रुनि कहि थक्यो ताकौ करौ प्रानाम ॥
श्री सतगुरु पर्य उदार पतरज वंदौ धरि सीस ।
जेहि प्रसाद अनुभौ विमल दरसै उर जगदीस ॥
संतन पद वंदन करौ तन मन अर्पो तेह ।
दीन जानि जन करि कृपा दीजे हरिपद नेह ॥
सर्वभूत हरिरूप मय पद वंदौ सतभाय ।
करौ मंगलाचर्ण को बार वार सिरनाय ॥

सोरह तिथि वर्णन करौ जानै विमल विचार ।
मुनि समुझि जन मुदित मन निगमागम मत सार ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

जिन पाचौ को वसि कियो धन्य धन्य सोइ संत ।
सुखसागर विलसत सदा गंगा रहत सुतंत्र ॥

॥ कुंडलिया ॥

षष्टी षट सास्त्रन वर्णन कियो अष्टादस श्रुतिचार ।
एक ब्रह्म दूजा नही यह कीन्हो निरधार ॥
यह कीन्हो निरधार जक्त भ्रम भूत नेवासा ।
तासो कियो सनेह वृथा मन बाध्यो आसा ॥
उलटि लखौ निज रूप मा रत न छूटै कपि मुरटी ।
"जनगंगा" मन अमन तव कह रहि षष्टी ॥
—अपूर्ण

विषय—पंद्रह तिथियों का दार्शनिक वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । केवल आरंभ के तीन पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात है । रचयिता का नाम गंगादास है । 'दोहावली' भी इन्ही का रचना है ।

संख्या ७० ख. दोहावली, रचयिता—गंगादास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१० × ४$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४२, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री परमातमणे नमः ॥ श्री सतगुरु चर्णकमलेभ्यो नमः ॥ मंगलाचर्ण दोहावली लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

पराब्रह्म परमातमा सब्द परा कहै वेद ।
अनेक बार बंदन करौ गंगा छूटै भेद ॥ १ ॥
गुरु पद रज अंजन करौ तिमिर नसै भ्रम जार ।
बरनौ विमल दोहावली अनुभौ श्रुति को सार ॥ २ ॥
सब संतन बंदन करौ हरिजन हरि के रूप ।
जेहि प्रसाद अति विमल मति दरसै रूप अनूप ॥ ३ ॥
अषिल लोक है ब्रह्म मे कंचन भूषण न्याय ।
बार बार बंदन करौ गंगा सीस नवाय ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

मंगल मोद निधान हरि गुर संत न अपर कोउ ।
गंगा धरि उर ध्यान सकल सुमंगल सिद्धि सब ॥

अंत—॥ जीवरूप वर्णनं ॥

घन बरसत अति विमल जल समल भूमि संग होय ।
त्यौ आतम अति सुद्धि सुचि माया रंग रंग्यौ सोय ॥६०॥
ईसु अंस है आतमा सत चित आनंद रूप ।
देह मान भ्रम द्रिढ कियो आनि परयौ भौ कूप ॥६१॥

वेह मान भौ बीज है वर्तमान भ्रम जाल ।
कर्म मान वधन पर्यो भया विवस वस काल ॥६२॥
कर्म मान छूटव कठिन अधिक अधिक अरुझात ।
पुहु पिक बानि वेद की सुनि सुनि मन ललचात ॥६३॥
वेहमान मनगढ़ कियो मोह प्रवल दल जोर ।
कामादिक भट संग लै आसा त्रिष्णा घोर ॥६३४॥
फैल गई.........................

—अपूर्ण

विषय—ब्रह्मज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खंडित है । केवल संख्या १ और ८ के पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या ७१. पोथी मैनसत कै उतर, रचयिता—गंगाराम (?), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—९ १/१० × ६ ७/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९५, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—संवत् १८३२ वि० (?), प्राप्तिस्थान—पं० राम आनंद जी तिवारी, ग्राम—दरवेशपुर, पोस्ट—भरवारी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—पोथी मैन सत क उतर

॥ दोहर ॥

जेही कली वेलसीए अस दलगज सधन भए ॥
सोवेह ॥ प्रीथीमी चीन हातनर हेवह केहुक ॥ ~ ॥॥
देउ पाव इह सनसर कली गउ तुम्ह धरहु पीअर ॥
पनी जैसे वुल वुल होइ । जो अब सो रह न कोइ ॥
पहीले दो जो रएउपन । अवत देषउ जपन जन ॥
एक दुतरजनी रजन कीन्ह । प्रीथीमी हन तीन करइन्ह ॥
अपुन एक दिन चलु चलु फ । मुष अषर समुझी न फन ॥
भुअ केर भोरहर कोइन चाहनदिन ।
सभन रोइ लउ परोरीए जौन होत सनसर ॥
कौडी कौडी कै जोरी मुए क कीन्ह पपुरे ।
गए गडे तकरोरी मन पछतने पपीए ॥
सतन कुवर नग्र के दुत । कपट रूप नरदे पुत ॥
वैर तन मलीनी कह हकरइ । सत सौ मैने ही देहु डोलइ ॥
दुत वचन जौ मनही पउ । तोही मलीनी सार सौ पहरिउ ॥
मलीन (?व) चनदुत कर लीन्हा । कपट रूप सव अंग में कीन्हा ॥
जोहन मोहन लीन्ह संमरी । टोनटवर पहीरेसी सरी ॥
कपट रूप चलु दूती गै मैन के वर ।
जेही वीधी रषै सत सौ कउन डोलवनहार ॥
जेहीरषे करतरत को वरनवर कीए ।
जौ लगै सनसर सधन दुहन च पीए ॥
मलीनी जइ मदील मो पैठी । नमै जह सीघसन बैठी ॥
चंप को फूल चौसर हरु । दीन भेट औ कीन्ह जोहरु ॥
हंसी कै पुछु मैन रनी । कह गवन कीन्ह जजमनी ॥

कह मलीनी सुनु चलती मैन । अनचीन्ह कस बोलसी बैन ॥
तोरे पीतं धइ मोहा कीन्हा । मैं ताही धरं असयन दीन्ह ॥
मन न रहे चोत गह्वरे अगी उठी तन मोही ।
सवरीन्ह चीत उपजे भेटल अइउ तोही ॥
तसौ कीजे नेह जसौ और नीवहीए ।
वोसौ कौन सनेही टुट कंच सुत जेउ ॥ २८

:o: :o: :o:

अंत--

मैन रतनी नीअर बोलए । धरी भोटी कुटनी नीहुरइ ॥
मुड मुड़ कंसे दुरदोन्ह । कल पीअर दुइ टीक दीन्ह ॥
गवह अनो क धइ चढइ । हट हट सब नगर फीरइ ॥
जो जस करं सो पवे तस । इन कतन करमषन ऐस ॥
लइमकोह तालवे वन । पोदउ तोइ लोनीएधन ॥
सत मैन कथीर रह मघन रवफुर ।
कुटनी मरी नीकरी क कीन्ह "गंग" केवर ॥

पोथी उतर मैन सत कंइ गंगराम बनीसा लीष बनी सो लीष मम दोष न दीजिए पडति सो वीनती मोरी तुक अछर मे रएउ मम दोष न दीजिए ॥ संवत् ८३२ मीती जेठ सुदी छठ क लषि ।

विषय--सतन कुवर के दूत के कहने पर रतन मालिनी ने लोर की पत्नी मैनके सत को डिगाने की बहुत चेष्टा की, पर असफल रही। विरह के अवसर पर बारह मास के कष्टों का वर्णन कर पर पुरुष से प्रेम करने के लिये उसने मैन को उत्साहित करना चाहा, पर मैन तिल भर भी अपने सत्य से विचलित नहीं हुई। अंत में मालिनी की पापयुक्त बातें जब सहन न हो सकी तो उसने उसके केश मुंडा कर के सेंदुर से सिर रंगा दिया, माथे पर काले पीले टीके लगा दिये और गदहे पर बिठलाकर उसको हाट हाट फिराया। इस प्रकार दुर्गति कर उसको निकाल दिया।

विशेष ज्ञातव्य--रचयिता और इस कृति के विषय में देखिए विवरण अंश में गंगाराम (सं० ६) और उसकी पाद टिप्पणी।

ग्रंथ भीम कृत 'महाभारत स्वर्गारोहण पर्व' के साथ एक हस्तलेख में है। रचना प्रेम कथात्मक काव्य की दृष्टि से उत्तम है तथा संग्रह करने योग्य है।

संख्या ७२. शालिहोत्र प्रकाश, रचयिता--गजन सिंह कायस्थ, कागज--देशी, पत्र--२८, आकार--$६\frac{६}{१०}$ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१३, परिमाण (अनुष्टुप्)--३६४, खंडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि--..................सो कहिये सिसु हंत ।
अमरीक महिपाल को कीन्ह्यो पुत्र निहंत ॥१६॥
॥ तोटक छंद ॥
जेहि बाजि की आषि अहै कबरी । कहि दोषु सोहै अकल्यान करी ॥
मानधाता महीप के सोई रह्यो । विन कारण को समं अग्नि दह्यौ ॥१७॥
कयेर जुगलोचन होइ जहां । यह चक्र कहावत दोषु महा ॥
रहिगो हय पांडव भूपति के । वरणमाहि फिरो जितांडव कं ॥१८॥

अटुवा परि भावरि जंत्र लसै । तेहि शंभुजदोश मुन्यो अजसै ॥
इमि दोष को वाजि जहा रहई । तह दूसर वाजि नही चहई ॥१६॥

॥ सोरठ ॥

जेहि वाजि के केश दुहु वोर ठरवत रहै ।
वहु लोचरण दोषेश राज चक्र को घालिये ॥२०॥
ठौर नैर जेहि ठंट जेहि वाजी कोटी कुला ।
सोवहु न्याही उंट नाश कियो महिपाल नृप ॥२१॥

॥ पयंगमछंद ॥

नौन तुरंग के टोक महि मधिभावरी ।
अरष वीनि कामसो चित्त ना धरी ।
जासु नजोक रहै तासु पुत्र जीवै नही ।
संग्रामै मै फौज लै भजै सु कहा कहो ॥२२॥

:o: :o: :o:

॥ सोरठा ॥

सालिहोत्र प्रकाश दोषादिक जे जानियौ ।
इते हय दोषो त्राश ग्यानमाण शव जानिहौ ॥४०॥

इति श्री सालिहोत्र मुनि समाप्तं विरचिते गंजनसिंघ कायस्थे वाजि दूषनो नाम प्रथमो प्रकास ॥ १ ॥

अंत—अथ करन रुज लछनोपचार

जोतौ कर्ण काजै वहै कंधकारी ।
सो पाँचे लवन्न वचै कोर वारी ॥
दलै चंचु मंत्र समै स सर्व लीजे ।
चुरै कै सुतौ कर्ण से कीज पीजै ॥२८७॥

॥ अथ जगरूकलछनं ॥

॥ दोहा ॥

जो घोरै ठाढो रहै लोटै नये............

—अपूर्ण

विषय—शालिहोत्र विषय का वर्णन ।

ग्रथ अध्यायो (प्रकाशो) मे लिखा गया है । प्रस्तुत अश मे छह प्रकाश है जो इस प्रकार है—

१. प्रथम प्रकाश—घोड़ा के दूषणों के नाम और वर्णन—पत्र १ से ५ तक
२ द्वितीय प्रकाश—घोड़ा के भूषणों के (सद्गुणो) के नाम—पत्र ५ से ६ तक
३. तृतीय प्रकाश—घोड़ो के शूल रोग का वर्णन और उपचार—पत्र ६ से १४ तक
४. चतुर्थ प्रकाश—घोडा के ज्वरादि रोगों का वर्णन और उपचार—पत्र १४ से १७ तक
५. पचम प्रकाश—षट् ममय प्रकाश वर्णन (षट् ऋतुओ मे पालने की व्यवस्था) पत्र १७ से २४ तक
६. षष्ट्म प्रकाश—विष तथा वातादि रोगों का वर्णन पत्र २३ से ३२ तक

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आदि के दो पत्रे एव अत मे ३२ के पश्चात् के पत्रे लुप्त हो गये

है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम गजनसिंह कायस्थ है। प्रत्येक अध्याय के अंत में एव पुष्पिका मे इस नाम का उल्लेख है। ग्रथ नकुल प्रबंध के आधार पर लिखा गया है।

पित्त अधिक कुवरनरा इनसो जीवै दशमाश।
नकुल प्रबंध बिलोकिकै गंजन करत प्रकाश ॥१३८॥

संख्या ७३. सुवृत्तहार (? मुक्तहार), रचयिता--गजराज (बनारस), कागज--देशी, पत्र--३८, आकार--१० × ५ ४/१० इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--८३६, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६०३ वि०, प्राप्तिस्थान--पं० रमाकान्त उपाध्याय, ग्राम-महरेव, पो०-गुनवन, जिला-जौनपुर।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुवृत्तहार लिख्यते ॥ दोहा ॥

सिद्धि करनि जग जननिको या मै नाम सनाथ ॥
राजति वृत मुकुतानि मै मनि सरोज मित गाथ ॥ १

॥ सवैया ॥

गोद लिए गिरिजा गननायक है अपने जन की प्रन पाली ॥
छूटी लसै आम कै सुकपोल मै मानो विधुं हुइ की परनाली ॥
पान के हेतु वितुड भयो "गजराज" पयोधर मैं मति साली ॥
कंचन कुंभ अमी सों भरे मनो रक्षक बैठो है तक्षक ताली ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

गना धियै १६०३ गति वान वरस माघ सुदि पंचमी ॥
गुरुवासर अभिराम पूर्व भाद्र उडुपरिछ जुति ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

सेस महेस अगसि पुनिसै तव भाम उदार ॥
इन्ह के पद पंकज प्रनै रच्यौ सुवृत्त कोहार ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

तिहि मैं कहि सरि चारि गल विचारि प्रत्यै सहित ॥
विय कल वृत्त निहारि तीजो वरन चतुर्थितुक ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

लघु गुरु पुनि प्रस्तार कहि सूची और पताल ॥
नष्ट उदिष्टरु मेरु पुनि सध्वज मकटी बाल ॥ ६ ॥
उभं छंद अरु भेद तुक कहे जे पन्नग राव ॥
तिहि सबहों बरनन करों कवि चित कों प्रद चाव ॥ ७ ॥
लघु वोलिबो अनुधस्वर दीर्घ वोल गंभीर ॥
सरल असरल सरूप हैं इक दै कल क्रम धीर ॥ ८ ॥
लघु दीरघहि पसारिए कला वरन जे होए ॥
ताही सों प्रस्तार करहु अहिनायक मुद मोय ॥ ९ ॥
जहा गलादि गलांत को निनै है मतिमानु ॥
ताही कों सूची कहैं कविकुल कैरव भानु ॥१०॥
गल संख्या को ग्यान जहं होय सुकवि सिरमौर ॥
तिहि को नाम पताल धरि अहिप गयो निज ठौर ॥११॥

बिनु देखे हीं भेद को रूप प्रगट करि देय ।।
नष्ट ताहि को जानियौ पन्नगेस मत सेय ।।१२।।

अंत—।। १७६ ।। वार्ता ।। रहाँ कथितपद साभिप्राय नाहीं ताते लाटानुप्रास के अभाव सों पुनरुक्त ही है याको सर्व मतिमान छंदोविद आचार्जन को आग्या करि केवल कुंडलिया में साधरन "जमक" कहत हैं सो जानियौ इति ।। दोहा ।।

दे दोहा गज ८ अहि ८ भुजग कलपं विरति बखानि ।।
जलधर छंद फनिंद्र कह कुंडलिया गति आनि ।।१८०।।

।। दोहा ।।

सताइस कल अंत लहु सोरह रुद्र विराम ।।
अपा छंद कवि चंद................

—अपूर्ण

विषय—पिंगल ग्रंथ ।

रचनाकाल

गनाधिपं १६०३ गति वाम वरस माघ सुदि पंचमी ।।
गुरु वासर अभिराम पूर्व भाद्र उडुपरिघजुति ।। ३ ।।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । समस्त चौतीस पत्रे उपलब्ध है । रचयिता "गजराज" है । आप बनारस के रहने वाले थे । अन्य कोई परिचय नहीं मिलता । रचनाकाल सं० १६०३ वि० है । लिपिकाल अज्ञात है । ग्रंथ देखने से प्राचीन प्रतीत होता है । अनुमानतः वर्ष दो वर्ष पश्चात् की लिपि होगी । ग्रंथ में काव्य नियम एवं अलंकार आदि का भी वर्णन है ।

संख्या ७४. कोकशास्त्र, रचयिता—गगेंद्र (?), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६$\frac{1}{10}$ × ४$\frac{3}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री अमरनाथ मिश्र, अमवरणपुर, पो०—ओइना, जि०—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री गुरुचरण कमलोभ्योनमः ।। श्री सरस्वत्यै नमः ।। लिष्यते कोकशास्त्र ।।

चित्र रूप सम चित्रिनी अति विचित्र रस रीति ।।
चित लायेती सव काम तेलि निरषि गीत संगीत ।। १ ।।

।। छपै छंद ।।

अमल कमल दल वरण कछु लछन षंजन वर ।।
मधुर मधुर मुष बचन स्याम कंचुकी सुंदर ।।
लघु दीरघ नहिं अंग अवत नागव जनावत ।।
मायावंत अति होति पुहुप परिमल मन भावत ।।
ग्रीवं कपोल घुंघुट तुरीया गति गति गएंद आनंद जेहि ।।
विवि कुच नितंव कर पीन कटि केवली थंभ जिमि जंघ तेहि ।। २ ।।

अंत—।। अथ थंभन विधि ।।

अजया दूध सेहुंड लजाहु जरी पाइ कर पद नाभी जो लेपिए ।। थंभन लेह अधिकाइ ।। अथ वन प्रकास चूरन ।। तालमषन मूसलि सोटि भंगिरा पाइर के वाधु बीज असगंध सेमरि फूल मिलाइ वास सतावरी मोचरस औमे लेहसम वाउ जानि सीत दूध लौ पीजिए वहु इस्त्री रमैं जो जानि ।।

इती श्री कोकशास्त्रं संपूर्ण मिति...... ।

विषय—कोकशास्त्र वर्णन ।

संख्या ७५. सगुनौटी (अकार बल), रचयिता—ऋषि गणराम, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—७$\frac{१}{८}$ × ३$\frac{४}{८}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२०, प्रवि०, प्राप्तिस्थान—पं० हनुमतदत्त त्रिपाठी, सनातन धर्मोपदेशक, ग्राम व पोस्ट—इस्माइल गंज, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॐ नमः ॐ नम० अंकाल बल लिप्यते ।। ॐ नमो भगवती कृष्य मोहनी सर्व कार्य प्रसादनी सर्व कार्य साधनी सर्व मित्र प्रकाशनी एह्योहिस्वश्वरे दर्शाहि लिमतागिनी सत्प्रतं यूहिश्वहा ।।

:o: :o: :o:

२१११ सुण हो पृछक तेरे एक एक एक ऐसा पासा आया ते ते **आसापास है जो तेरे शत्रुके नास होयगा और रोजगार मे भी धान भी पावेगा ।। ११२ सुण हो पृछक तेरे एक एक अर दोय ओसा ओसापासह आया ।। ताते विषै आसापा आया तिसमे यह काम छोड और काम कर ।। और तेरे दिल मे पाप है ।। ताते कार्ज सिद्ध ना होगा ।।**

अंत—४४४ सुनिहो प्रस्न तेरेऽध्यारऽध्यार ऐसा पासा आया ताते जो विचारता है सब सिद्धि होयगा सीता बीसेती परदेशीशी मिलापु होयगा ठिकाने लाभ होयगा धनी गम पुत्र प्राप्ति राज्य मनमान मनो वांछित सिद्धि होयगा वहुत अछा फल आया इति श्री सगुनौटी ऋषिगणराम की भली मिलं है ७ जो प्रति देषा शो लिषा मम दोश न दीयते दशषत दुरगादत्त दुबे मिती कार्तिक बदी ७ संमतु १९२० पठवी राम शहायतेवारी ।।

विषय—शुभाशुभ फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल ज्ञात नहीं, लिपिकाल संवत् १९२० वि० है । रचयिता का नाम ऋषिगणराम है । अन्य परिचय अज्ञात है । ग्रंथ की भाषा पुरानी खड़ी बोली है । अतः इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

संख्या ७६. शकुनावली, रचयिता—गिरिधर, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—८$\frac{२}{८}$ × ४$\frac{५}{८}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भोलानाथ (भोरेलाल), ज्योतिषी, ग्राम—धाता, पो०—धाता, जिला—फतेहपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। अथ शकुनावली लिख्यते ।।

गुरु गणपति गौरी गिरा गंगा गकु गोपाल । गायत्री गिरिधर सुमिरि भाषत सगुन रसाल ।
राति जो तीति रथ करै फेकरै दिवस सियारि । मरै भूप दुरभिक्ष परि होवै देस उजारि ।
सूर उदय जो प्रथम ही स्वान समिटि यक ठौर । उभे सिर लषि गंगन दिसि रोवै करि रव घोर ।
तौ जानो षट मास ही सोन होइ वह गांउ । की ताको ठाकुर मरै विघन होइ तेहि ठाउ ।
की कौनो अनयास ते चिंता उपजै आय । निश्चै जानौ अग्नि भय की कछु अवर नसाय ।

। सोरठा ।

जात्र समय जो पानि वरषै कछु अकाल मैं ।।
शात दिवस लौ मानि तव चलि एकै तीन दिन ।।
गहन सूर शशि भूमि चल औरो उलका पात ।।
इन्हान्ह काजे मानिए मरजाता दिन सात ।।

॥ चौपाई ॥

टूटै बिटप गांज जो परै । सात दिवस याहू सो डरै ।
अठए दिन फिरि जात्रा कीजै । गुर गणपति प्रनाम करि लीजै ॥

॥ छंद ॥

तीतिर षंजन हंस सदा बाएं चलै । स्वान स्याम मृग मोर काग सनमुख भले ।
जौं बोलै कँहुँ चहु चलत दाहिने आयकै । एक काज को जाय मिलै दस धायकै ।

॥ दोहा ॥

ससा साँप सेही सुवर इनके नाम निषिद्धि ।
वचन सुने ते जानियो दरसन मे है सिद्धि ।

अंत--

ब्राह्मण तिलक लिलार लगाए साधू दंड समेत ।
छीपा रजक वसन धोए भटचारण आसिष देत ।
ए सब गुन सामुहे नीके सुनिए और बताऊँ ।
दरपन भरे थार सिंहासन मधु घृत कोंचन नाऊ ।
हरित साक गोमय माटी भीजी अरु कमल बधाई ।
पुरुष कंध मे बाल बेद ध्वनि सोन रूप रे भाई ।
भारी सगुन छत्र चामर निहचै सिष मे जय जानौ ।
चना जुवारि धान गोहू अरु मूँग महा सुभ मानौ ।
पड़िया भैंसिय पाल वारि की लादो भैंसा आवत ।
बैल चढी........................... ।

--अपूर्ण

विषय--शकुन विचार वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण है । अंत के कुछ पत्रे लुप्त है । केवल बाईस पत्रे प्राप्त है । देखने मे ग्रंथ प्राचीन प्रतीत होता है । पत्रे लुप्त होने के कारण रचनाकाल, लिपिकाल, रचयिता और लिपिकर्ता आदि का कोई पता नहीं है । प्रारंभ मे एक स्थान पर "गिरिधर" आया है । इसी के आधार पर रचयिता को 'गिरिधर' मान लिया गया है ।

संख्या ७७. नहुष नाटक, रचयिता--गिरिधरदास, पत्र--५०, आकार--७ X ४॥ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--६६०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १९२० (?), लिपिकाल--सं० १९२३, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ७३, पु० सं० २५ ।

आदि--॥ श्री गोपी जन वल्लभो विजयते ॥ दोहा ॥
नागर नट पट पीत धर जिमि घन विज्जु विलास ।
भव आतप को भय हरत होत सुखी सब दास ॥ १ ॥ मंगलाचरणानंतरं नांदी ॥
कवित्त ॥ मेचक बरन वर जीवन निवास थर बकुलनि कील सति संदर परमदाम ॥
सहित सहाय पर भंजन की गति धरे अंबर बिराजै प्रगटावै तियतन काम ॥
हिय हरषित महा सारंग धनुस धरे बरसत सरपर पूरै जन अभिराम ॥
गिरिधरदास देखि नीलकंठ नृत्य करै ऐसो दसो आय मेरे मन कोऊ घनस्याम ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ४६ मातलि की ओर देखिकै ।। नहुस ।। सानंद ।। दोहा ।।

देखनीय कमनीय अति उपवन यह रमनीय ।।
अहै कौन को सो कहहु लग्यो मोहि अति प्रीय ।।७३।।

मातलि ।। दोहा ।।

यह सब रितु सोभा भर्‌यो सुखमय पूरन काम ।
महाराज को विपिन है नंदन याको नाम ।।७४।।

नहुस ।। सानंद ।। सीघ्र चलहु सीघ्र चलहु ।। तब मातलि रथ चढ़ाय नंदन बन मैं गयो ।। तहाँ की सोभा देखिकै नहुस ।। सानंद ।।

अंत—जयंत ।। दोहा ।। सिधि विधुधर आदिक सबै सेवत प्रभु पद पद्म ।। तासों गुनि अपनो भलो चलो चतुरभज सद्म ।।७५।। इंद्र ।। सानंद ।। सत्य सत्य इमि कहि कै सब निकरे ।। इति नहुस नाटके षष्टोंकु ।। ६ ।। दोहा ।। श्री गिरिधर पद पदुम रज सिर धरि सहित हुलास ।। रच्यो नहुस नाटक नवल लघुमति गिरिधरदास ।। १ ।। इति श्री गिरिधरदास विरचितं नहुस नाटक समाप्त ।। श्री संवत् १६२३ आषाढ शुक्ल २ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ।

विषय—नाटक के रूप मे नहुष राजा का चरित्र वर्णन ।

संख्या ७८. समर्पण श्लोक गद्यार्थ की टीका रचयिता—श्री गिरिधर जी, निवासस्थान—गोकुल, कागज—देशी, पत्र—३ (१५२ से १५४ तक), आकार—१२।। × ७। इच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५, पूर्ण रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८० से १७१६ के भीतर, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली हि० बं० १००, पु० सं० $\frac{0}{1}$ $\frac{0}{1}$ ।

आदि—अथ समर्पण को श्लोक गद्यार्थ ताको टीका भाषा सहस्रेति । या पद को अर्थ लिखत हे सहस्र कहिए । अपरमित कहिये इतनो काल व्यतीत भयो हे कृष्ण वियोग कहिये पुरुषोत्तम ते भगवद इच्छा करि के न्यारे भये हे । ताते जनित ताप क्लेशानंद तिरोभावोहं । भगवद्वियोग ते । भगवत मिलनार्थ ताप क्लेश भयो चहिए सो न भयो । और आनंद को अभाव भयो ।

मध्य—पृ० १५३-१५४

रासे जो नंदनदन सो सदा व्रज मे ही विराजे हे सो पुरुषोत्तम वाहिर और व्यूह भीतर । एसे जे पुरुषोत्तम तिनकूं अर्पन करत हूँ । और मथुरा जो पधारे वा स्वरूप की व्यावृत्ति करिबे के अर्थ श्री गोपी जन वल्लभ ये पद धर्‌यो हे । रामे जे श्री कृष्ण है तिनकूं पृथ्वी अप तेज वायु आकास सो पाच महाभूत को सरीर भौतिक अत ईन्द्रिय कहत हें—कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, घ्राण इन कू ज्ञानेन्द्रिय कहिये ।

अंत—जो कछु पदार्थ हें सो सब श्री भगवान को है । तब ममता निवृति भई । और श्री भगवान् अंतःकरन मे प्रेरना करत हे तेसे मे करत हूं । तब अहंकार की निवृति भई तब भगवदीयत्व करिके परिसमाप्तं सब पदार्थ भये । जब ये मुख्य स्वरूप सेवा को अधिकारी भयो—तातें इन दोऊ मंत्रन को मिलाइ के जप करनो । इति श्री गिरिधर जी कृत गद्यार्थ की टीका संपूर्णम् ।

विषय—पुष्टिमार्गीय दीक्षा प्रकार मे अष्टाक्षर के अनतर योग्यतानुसार 'ब्रह्म' सबध की दीक्षा दी जाती है । उसका मत्र गद्य मत्र कहलाता है । प्रस्तुत ग्रथ मे उसी गद्य मत्र की भाषा टीका की गई है जो किसी सस्कृत टीका के आधार पर है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक मे अन्य ग्रथ भी लिखे हुए है ।

गिरिधर जी काँकरोली में वर्त्तमान तृतीय पीठ के संस्थापक श्री बालकृष्ण जी के पौत्र थे। इनका समय स० १६६२ से १७१० तक है। इनके पिता का नाम श्री कारकेश्वर जी था।

संख्या ७६क. श्री द्वारकानाथजी के घर की उत्सव मालिका (रीति), रचयिता—गो० गिरिधर लाल जी, स्थान—कांकरोली, कागज—देसी, पत्र—८६, आकार—६।× ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल स० १६३० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६१, पु० स० ६।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ श्री द्वारिकानाथ जी के घर की उत्सव मालिका लिख्यते ॥ अथ जन्माष्टमी की विधि लिख्यते ॥

जन्माष्टमी के दिन बाल भोग मे नित्य ते दूनो बाल भोग मनोहर लड्डू तथा ओटा को दूध मलाई माखन बूरा संधानो सीरा कोडबरा भोग सर पाछे आरती होइ, श्री ठाकुर जी को लाल दरयाई की धोती उपरना पहरावनो आभरन मे अलकार दुलरी कडा चोटि श्री हस्त में कटि पेच सांकडी इतने आभरन पहरावने पाछे पंचामृत स्नान कों पधारे, पधारतो बिरियां शख नाद झालरि घंटा बाजे स्नान के ठिकाने कोरी हरदी को अष्टदल कमल को चोक पूरि उपर स्नान की परात मांडिके ताके भीतर पीठा बिछाइ ता ऊपर साथिया करिके पीतांबर बिछाइ श्री ठाकुर जी को पधरावनो।

मध्य—पृ० २७

मार्गशिर वदि ८ श्री गिरिधर लाल जी को उत्सव ६० तथा क्षय होइ तो पहली करे नहीं तो दूसरी। अभ्यंग बागा नयो पाट को गोपी वल्लभ मे सेव राजभोग मे जलेबी बूदी घ की छ छि मोती की आरती श्री जी के सामग्री पहोंचे, राज भोग धरिके श्री गिरिधर लाल जी के पादुका जी के केसरि स्नान करे कीर्तन होत नई सुपेदी ओढनी केसरी।

अंत—भाद्रपद कृष्ण ३ कों पाग पिछोरा साडी कसूंभी ठाढे वस्त्र मेघ स्याम नए नाहीं पुरानो पडे तब नयो होइ। राज भोग आरती मोती की सेन भोग मे पूरी सोठि की बुकनी हिंग लोन मिलाइ घी बूरा साक के फीके खाजा दूध लेन सधानो भोग धरे बीडा २ अधिकी यह बरस के उत्सव हे ॥ इति श्री गिरिधर लाल जी विरचितं उत्सव मालिका संपूर्णम् ॥ लिखतं श्री २ देवकरण लिखिया के जे श्री कृष्ण वैष्णव मंडली में।

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा शृंगार प्रणाली में श्री द्वारकाधीश, कांकरोली के वर्ष भर के उत्सव तथा नित्य सेवा का क्रम वर्णित।

संख्या ७६ख. श्री गिरिधर लाल जी के वचनामृत ६२, रचयिता—श्री गिरिधर लाल जी, निवासस्थान—कांकरोली, कागज—देसी, पत्र—३२, आकार—१० × १२½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, प्रकाशित—कांकरोली में, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०२८, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६३३, लिपिकाल—स० १६३३ के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ११०, पु० स० २।

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ श्री गुरुचरन कमलेभ्यो नमः ॥ श्री विट्ठलेश्वराय नमः ॥ अथ श्री मद्गोस्वामी श्री पुरुषोत्तमात्मज श्री गिरिधर लाल जी महाराज के एक सै बीस बचनामृत भाषा में प्रारंभः ॥

॥ श्लोक ॥

चिंता सन्तानहंतारो यत्पादांबुजरेणवः ॥ स्वीयानान्तान् निजाचार्यान् प्रणमामि

मुहुर्मुहुः । यदनुग्रहतो जंतुः सर्व दुःखातिगो भवेत् ।। तमहं सर्वदावंदे श्रीमदवल्लभनंदनम् ।।२।। श्री कृष्णाय नमः ।। एक समय श्री मद्गोस्वामी श्री पुरुषोत्तमात्मज श्री गिरधर लाल जी महाराज आपु प्रसन्न होय के संवत् १६६३ के पोष शुक्ला १० भौमवार कू सखेडा वारे दासानुदास अनुचर अमथा खुशालदास को बेटा--

मध्य---पृ० ३६

अब ततलास सों वचनामृत कहेत है जो जीव को स्वाधिकार जो अलौकिक प्रश्न करनो सो तातर आपुने आज्ञाकारी जो अनन्य भक्त श्रोता सो राजा परीक्षित बालपने में सेवा रूपी श्री ठाकुर जी के स्वरूप रूपी खिलोनान सों खेले है और लौकिक खिलोनन सो खेले नहीं और वक्ता श्री शुकदेव जी सरीखे निश्चय ही परम हंस सों दशमस्कंध में रास पंचाध्यायी पर्यंत कथा वर्णन भई । और राजा को दिसा सुनत ही और होय गई सो प्रश्न कर्‌यो । संस्थापनाय धर्मस्य ।।जे श्री भगवान् तो धर्म स्थापनार्थ प्रगट भए हैं सो ऐसी लीला क्यों करी सो ऐसो प्रश्न राजा ने करचो ।

अंत---सो तब मुखिया द्वारकादास बोले जो आपु के तो परदेस में जगे जगे मंदिर है सो जहां आपु पधारो तहां आपु को सेवा के सुख है । तब आपु आज्ञा करे जो यह बात तो और मंदिरन में कहा सो आवे जो यह सुख गुसांई है और उहां तो केवल वैराग्य को दर्शन देवे को विराजे है सो दर्शन देय है सो उहां के रहवे वारेन को मनोरथ पूरन करे है । जो सुख तो यहांई विराजे है और भक्तन के मनोरथ सिद्ध करिवे को आगे रूप सो परदेस में विराजत है सो ताते हमको तो सर्वथा यहांई सुहाय है । सो तब मुखिया जी ने फेर कही सो उहाउ यहां की सेवा निमित्त सुख जानि के यहां पधारनो होय है सोई चित्त जात है सो आप तो सेवा ही में सदा सर्वदा रहेत हैं । इति श्री गिरधर लाल जी महाराज के वासट गो० वचनामृत संपूर्ण ।।६२।।

विषय--यह ग्रंथ गुरु शिष्य संवादात्मक है । इसमें श्री गिरिधर लाल जी से उनके शिष्य ने सम्प्रदाय के संबंध में प्रश्न किए हैं जिनका उत्तर दिया गया है ।

संख्या ८०. सर्वोत्तम स्तोत्र की संस्कृत टीका का हिन्दी पद्यानुवाद, रचयिता--गो० श्री गिरिधर लाल जी, कागज--देसी, पत्र --८ (६१ से ६८), आकार--८ X ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२८, परिमाण (अनुष्टुप्)--२६०, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ६७, पु० सं० ७ ।

आदि--श्री हरिः ।। श्री गुसांई जी कृत सर्वोत्तम अष्टोत्तर शत नाम ता मध्य हे श्री आचार्य जी के ता टीका दृष्टि पथ श्री गोकुलनाथ जी की करी संस्कृत में है । ता स्तोत्र को सटीक को अर्थ कीर्तन पूर्वक भाषा में श्री व्रजभूषण जी सुत श्री गिरधर लाल जी ने बांध्यो हे । श्रवणं कीर्तनं या श्लोक को तात्पर्य जानत होयगो सो दैनंदिन प्रभु आगे यह गावेगो ।। राग देव गांधार तथा सारंग तथा नट ।।

जो पें श्री बल्लभ रूप न जाने ।
तो कैसे या लीला को नित संबंधी करि माने ।१

मध्य--

आनंद भरि परिपूरन अंबुज नैन देखि ललचाने ।
कृपा दृष्टि आनंदित दासी दास प्रिय पति जाने ।१७।।
रोम दृष्टि के पात भए ते भक्त वृंद रिपुहाने ।
याही ते भक्तन करि सेवित यह निरधारित ठाने ।।१८।।

अंत—

इहि विधि द्विजकुल पति के गिरिधर नाम बिदान बखने ।
श्री बल्लभ श्री बिट्ठल प्रभु को निज अनुचर करि माने ॥७४॥ १ ॥

विषय—सर्वोत्तम स्तोत्र की संस्कृत टीका का हिंदी पद्यानुवाद । सर्वोत्तम स्तोत्र में श्री विट्ठलेश्वर गुसाईं जी ने अपने पिता श्री वल्लभाचार्य जी के १०८ नामों का वर्णन स्तोत्र रूप में किया है । उसमें साम्प्रदायिक सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन हुआ है ।

संख्या ८१. शब्द, रचयिता—गिरिवरदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—८$\frac{१०}{१६}$ × ६$\frac{१०}{१६}$, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—....................

...उदु दू कर जोरि चरन सिर धरऊ ।
अघविनास प्रभु नाम तुम्हारा । निरमल जोति सुजस उजियारा ॥ १ ॥
संत सिरोमनि लावहि ध्याना । पावहि अचल भक्ति वरदाना ॥ २ ॥
जेहि पर क्रिपा किहो जन जानी । जीवन मुक्ति भयो तेहि प्रानी ॥
गिरवर जन जग जीवन साईं । सदा राषु सत सरन गुसाँइ ॥ ४ ॥ ६० ॥

शब्द आरती

आरति सागर सब्द तुम्हारी । बिनती करो सीस मै धारी ॥ १ ॥
पर ग्रंथ श्री ग्यान प्रगासा । प्रल कथा सब पाप बिनासा ॥ २ ॥
चरन बंदगी कहरानामा । माहात्म्य अस्तुति सुखधामा ॥ ३ ॥
बुद्धि बिस्ति बिनवौ दिढ़ ध्याना । लीला मंगल सुभ सतध्याना ॥ ४ ॥
बिनवौ सकल जोरि जुग पानी । भ्रम बिनास आदिक जो बषानी ॥ ५ ॥
दोहावली अब मत बानी । प्रभु जगजीवन जवन बषानी ॥ ६ ॥

मध्य—

तेहि सपतह नेम करै जो कोई । सुने पढ़े पारायेनि होई ॥ ४ ॥ ७ ॥
मन पूरना पढ़ै सब पढि के । रतन पुर जाइ बेवान पै चढि के ॥ ८ ॥
सुनै मनोरथ करै जो कोई । राम क्रिपा सपूरन होई ॥ ९ ॥
गिरवर जन जग जीवन साईं । सदा राषु सत सरन गोसाईं ॥१०॥ ९० ॥

अथ साहेब गिरवर दास जी के सब्द संपूरन जो प्रति देषा सो लिषा मम दोषौ न दीअते ॥

विषय—सिद्धातानुसार भक्ति एवं ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । इसके अन्तिम पत्र की संख्या १०६ है । अतः इससे प्रकट होता है कि ग्रंथ बड़ा था । इसके आगे एक ही हस्तलेख में अह्लाददास कृत 'ज्ञानचेटक" ग्रंथ भी लिपिबद्ध है ।

ग्रंथ का रचनाकाल एवं लिपिकाल नहीं दिए हैं । अह्लाददास कृत "ज्ञानचेटक" के अनुसार लिपिकाल संवत् १९१६ माना जा सकता है ।

रचयिता का नाम गिरवरदास है । ग्रंथ में ये जगजीवनदास जी के शिष्य जान पड़ते हैं—

गिरवर जन जग जीवन साँइ । सदा राषहु सत सरन गोसाँइ ॥

संख्या ८२. रुक्मणीमंगल, रचयिता—गुमान कवि, कागज—देसी, पत्र—३, आकार—२७ × ४$\frac{१}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप)—२१६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--

रथ गजराज बाज सकल समाज साज

राज महाराज सिरताज बड़ तोष के।।

गिलम गलीचा लरमली मख दुलीचा

चादनी चदोवा पहुचो वाकर्य जोष के।।

तर पस पंछी जल थल परजंत ह के

नाग नर किनर देववासी सुरलोक के।।

जरकस जवाहिर अरु अम्मर पटवर

सजाइ दुजराज देपं द्वार दमघोष के।। १।।

हय हहनान लागे घटा ठनान लागे.

बाजे बजन लागे अनेक अलवाढ़ के।।

निसान फहरान लागे रथ गज सजन लागे,

होदा धरन लागे चिकारत दाड़ के।।

भूप सब सजन लागे भाट जस कहन लागे

ढाढ़ी पढ़न लागे सूर रन गाढ़ के।।

वीर दल सजन लागे विरही दहलान लागे,

उठन लागे बादल ज्वा अगिन अनाढ़ के।। २।।

मध्य--नाग नर किन्नर देव कीट पसु पंछिन मै,

जल थल अकाश जोति ब्रह्म को पसारो है।।

असरन के सरन दुष दीनन के हरनहार,

करन निधान कान विरध तुम्हारो है।।

कहत गुमान मन मानो न सोच कछू

सकन कौन चाल जो गुपाल रखवारो है।।

बाह गहि रुकिमिनि को रथ पे चढ़ाइ लयो,

जैसे गजराज सिंधु बूडत उबारचो है।।२७।।

अंत--मोहन की मनमोहन मूरति,

सुंदर पीत पीतांबर राजे।।

राजत सेज सुहागिल दे

रस रूप कलानिधि के मद भाजे।।

दूल्हा स्याम नई दुलहिन रति

कोटिन कामिनि की छवि लाजे।।

को बरनै उपमा कविता की

सु मनो घन मै दुति दामिन साजे।।४६।।

दपति हास विलास परे

अति जागत हू सब रैन विहानी।।

मोहन को उर मै धरि मूरति

आवति है उठि सेज सयानी।।

निखारत हार सुधारत बारन

देषि अलीन लली मुसक्यानी।।

आनन इंदु समान ऊअौ

सब लाज भरी अषीया असयानी।।४७।।

।। समाप्त ।।

विषय--श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह का वर्णन। रचना कवित्त सवैयो मे है।

संख्या ८३. ब्रह्मांड लीला, रचयिता--गुरु गोविंद, कागज--देसी, पत्र--८, आकार--६६/१० × ३६/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१४४, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १५५६ वि०, प्राप्ति स्थान--पं० राम अधार पाण्डेय, ग्राम--करमपुर, पो०--अवनिहार, जिला--गाजीपुर।

आदि--ऊँ राम गुर गोवीद श्री गणेशाय नमः ऊँ अविगतां अविगति जोहे अैसो ब्रह्माण्ड लिलया... । ब्रह्म वदि वा विष्णु सिवो वाणा वो जथा १ अकास ते वायु उत्पन्न वायु ते तोय उत्पन्य तेयते ब्रह्म उत्पन्य पानिमध्ये वण्ड उपायाते ब्रह्माण्ड ते ब्रह्माण्ड फुटि कुटुका भए ता जल मध्ये विष्णु रहे है विष्णु के नाभी कवल ब्रह्मा रहे है तेहि ब्रह्माण्ड वाट कियो है श्रोणचाल कोटि जोजण पृथ्वी प्रमान है। पृथ्वी मध्ये सुमेरु पर्वत है।

:o: :o: :o:

एते शप्तदि प्रिथ्वि प्रमाण है। अथ सात समुद्र है षार समुद्र दुध समुद्र मधु समुद्र

:o: :o: :o:

अथ सातहु दिप क वेवरा है एक लक्ष जोजण यंबु दिप का विरतर है षार समुद्र प्रवष्टित है...... ।

:o: :o: :o:

एते वात विवर्ण गुरु गोवीद है सम १५५६ ।

:o: :o: :o:

वीस कोटि जोजण कुसादिय है।

:o: :o: :o:

अंत--सोम पर व णर पति इधुणले धोधयांम्वुरमाणधाता चित्रागव चित्र दाहण हरि भेद वेनुवद्य राय एतेराय प्रवर्तते एवमद्वापर समाप्तः अथ कली युग वर्त्तमान चारिलछ वतिसशहस्त्र वरिसप्रवाण रुप भए त कलंकि सुर्य पर्छनएव महस्त्र एकइस चंद्रमद्यंभए त सहस्त्र वालिस मनुष्यता लए कहा थसाटेतिनी अइ उप थल विरासौ दूवर्ष इरित्र प्रसुता वार एकइस तिथि गंगा देवि विर्दाभ सतधर्म विस्वा चारि दाप विस्वा सोरह... । (अपूर्ण)

विषय--सृष्टि का वर्णन। सप्त द्वीप, नवखण्ड, सप्त समुद्र, युग और युगों के आदर्श पुरुषों का संक्षिप्त वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ की प्रति अपूर्ण है। केवल आठ पत्रे उपलब्ध है। देखने मे यह अत्यंत प्राचीन प्रतीत होती है। एक स्थल पर "गुरु गोविंद" सम १५५६ आया है। इसी आधार पर रचयिता "गुरु गोविंद" और रचनाकाल संवत् १५५६ मान लिया गया है। लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के संबंध मे कुछ पता नही चलता।

ग्रंथ नागरी लिपि मे लिखा गया है। इसमें समस्त वर्णन "ब्रह्माण्ड" का है। ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और जल थल आदि का सविस्तर वर्णन है। प्रति नागरी लिपि मे होने हुए भी उसे पढ़ना कठिन है।

संख्या ८४क शालिहोत्र, रचयिता--पांडे गुरुदीन कवि, कागज--देसी, पत्र--२१, आकार--१०३/१० × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--३३१, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० सरस्वती प्रसाद उपाध्याय, ग्राम--लुदीकपुर (टिडिहा ताराडीह), पोस्ट--फूलपुर, जिला--इलाहाबाद।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

गज आनन सुमिरन करो सुलभो वरनन बाजि।
शालहोत्र गुरुदीन कवि देत सुछंदन साजि ॥ १ ॥

ग्रंथोत्पत्ति मालिनी छंदः

प्रथम तुरगमारी पंधधारी सुधारी । गगन गति विहारी इंद्र के लोक चारी ।
तव गुनि मघवा नें शालहोत्र विनायो । पग गहि मुनि पति के अश्व पंखा छिनायो ।। २

मोतीदाम छन्दः

भये जव पंखन हीन तुरंग । नये मुनि पायन आठौ अंग ।।
विनय सुनि भे मनिराज कृपाल । दियो वरदान तिन्है तत्काल ।। ३ ।।
तुम्है चढ़ि कें रण जूझत वेदि । लहै गति ते रवि मंडल भेदि ।।
तुम्है खलपायन मे गति गौन । दुषी महिपाल न मानत यौन ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत-- दारू जीरा सेंधव संग जो षाय ।
सब गुलन को नाशं भूष वढाय ।।१७२।।
गऊ मूत्र से षाये रोग ककादि ।
हरै पेट की पीरा दवा विवादि ।।१७२।।

।। चौपाई ।।

घृत संग षाइ पाचक करै । रक्त षाजु वातादिक हरै ।।
वारू सेधव के सँग योग । अतीसार सर नागर रोग ।।१८०।।

इति श्री पांडे कवि गुरुदीन कृतं शालहोत्र सम्पूर्णम्
शुभमस्तु ।।

विषय--घोडे की उत्पत्ति, उसके गुण और अवगुणों का वर्णन तथा रोगों की औषधि ।

संख्या ८४ ख शालिहोत्र, रचयिता--गुरुदीन कवि, कागज--आधुनिक सफेद, पत्र--१५, आकार--१२ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--३५६ अपूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० महावीर प्रसाद मिश्र, ग्राम-ठटा, पो०--बीबीपुर, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--श्री गणेशाय नम. ।।

।। दोहा ।।

गज आनन सुमिरण करो सुनभो वरणन वाजि ।
शालहोत्र गुरुदीन कवि देत सुछंदन साजि ।। १ ।।

।। ग्रंथोत्पत्ति ।।

।। मालिनी छंदः ।।

प्रथम तुरग मारो पंध धारो सुधारी । गगन गति विहारी इंद्र के लोक चारी ।
तव गुनि मघवा ने शालहोत्रे विनायो । पग गहि मुनिपति के अश्व पंषा छिनायो ।।

।। मोतीदाम छदः ।।

भये जव पंखन होत तुरंग । नये मुनि पायन आठौ अङ्ग ।।
ए सुनि भए मुनि राज कृपाल । दियो वरदान तीन्है ततकाल ।। ३ ।।
तुम्हें चढ़ि के रण जूझत वेदि । लहे गति ते रवि मण्डल भेदि ।।
तुम्हें षल पायन में गति पौन । दुषी महिपालन मानत जौन ।।
करौ अब भूतल मध्य विहार । रहै नदहै पशु जन निहार ।।
दियो वरदान अनेकन आन । कियो तब ग्रंथ तुरङ्ग वषान ।।

:o: :o: :o:

अंत—

तज चंदान जवाइन दूनो अजमोदा दोऊ जीरा ।
पित्तपापरा सहिजनब पालि सचूरण हल पीरा॥
॥ वखै छंद ॥
भोजन तीनि टका भरि खाय सवेर ।
अनूपान सुनि लीजै बाने केर॥ १ ॥
दारू जीरा से धो............

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—शालिहोत्र विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अंत से खंडित है । समस्त १५ पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल और लिपिकाल दोनों अज्ञात है ।

रचयिता का नाम गुरुदीन है । ये अपने को कवि लिखते है । अन्य परिचय नही मिलता ।

संख्या ८५. प्रेम रसाल, रचयिता—गुलाम मुहम्मद, कागज—देसी, पत्र—४२, आकार—१० × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७००, अपूर्ण, रूप—पुराना (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी-प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—

सोरठा

नमो नमो भगवान जो सबको सिरमौर है॥
सबति प्रगटि वहि जानि ठौर ठौर में रमि रह्यो॥

कवित्त

कोउ राम जानो बखानो रहीम कोउ
नाम है अनेक एक वाही करतार के॥
रही औ रंच हीं रघु दीरघ नाद बेद
सबही देखौ बनाए परवर्दिगार के॥
वाही सेते आवै फिर वाही में समावैं अंति
जीव जंति जल थल या सकल संसार के॥
हिति करि चिति लाओ सदा गीता पारायन
सुनि हे मुनि गुन गाओ नारायन औतार के॥ २

चौपाई

सुमिरू प्रथम राम कौ नाम॥ जासौं पूरनि होवै काम॥
वही बिह्न तुम निश्चै जानौं॥ वाही कौ ब्रह्मा पहिचानौ॥
वहि शिव रूप शीश है गंग॥ तीन्यौ देव एक ही अंग॥
शशि अरु सूरज देव सरूप॥ नारायन कौ जानौ रूप॥
भूम्मि समीर अग्नि आकासा॥ जल नारायन कौ है वासा॥

मध्य—

सोरठा

नैन हमारे चोरि चोरी करि जाने नहीं॥
तकै पराई ओरि फिर घरि मूसै आपुनो॥१३७॥

कवित्त

भरि नैननि नैन लषे तव ते
जवते नहिं चैन कहा करियै ॥
सुष वैन महादुष दैन भए
दिन रैन चवावनि सों डरियै ॥
निसि मै अव जोहनि जॉव कहाँ,
मन मारि यहाँ मरिहै भरिहै ॥
हित की चित चाटि उछाटि लगी,
उरफाटि निराटि नहीं मरियै ॥१३८॥

अंत-- चौपाई

ऊन ऊजीर की वात सुनौ अब ॥ वहुरि पधारचौ. . .नै गेह जब ॥
अस्त्री सो यह मतो सुनायौ ॥ जो कछु पातसाह फुरमायौ ॥
आपस मैं वतराने दोऊ ॥ ऊच नीच कीम स. . .दोऊ ॥
पातसाहि नै असै कह्यौ ॥ मेरौ तेरौ नात्यौ भयौ ॥
जावो वेग व्याह कर दीजै ॥ और सोच मन मै जिन कीजै ॥
पर मेरे चित मे नहि आवै ॥ नृप सों मेरी कहा वसावै ॥
अस्त्री कह्यौ सुनौ पति मेरे ॥ करौ व्याहि कौ साजि सवेरे ॥
नृप को जानौ महा गयानी ॥ भलो होयगी जो उन ठानी ॥
भई वहुत वतरावन गहरी ॥ तव निजु एक व्याह की ठहरी ॥
जव यौ (हु) कम कियौ परधान ॥ करौ व्याह कौ अब सामान ॥
विप्रन जू. . . . . (खंडित)

विषय--इसमें शृंगारपूर्ण कथा का वर्णन है, पर ग्रंथ के खंडित हो जाने के कारण इसका पता नहीं लगता कि यह कौन सी कथा है। ग्रंथ के बीच बीच मे राधा कृष्ण की प्रेम कथाएँ भी दी गई है।

विशेष ज्ञातव्य--इस ग्रंथ के कर्त्ता का नाम गुलाम महम्मद है। ग्रंथ के अंत के दो तीन पत्रे खंडित मालूम होते है। बहुत संभव है कि प्रारंभ के भी कुछ पत्रे खंडित हों।

रचयिता का भी वृत्त ज्ञात नही होता। हस्तलेख की लिपि को पढ सकना उसके अक्षरो की स्याही उड जाने के कारण दुरूह हो गया है।

संख्या ८६. नखशिख, रचयिता--गोकुल कवि, कागज--देसी, पृष्ठ--५, आकार--८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१३५, अपूर्ण, रूप--पुराना (जीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी प्राप्तिस्थान--सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, कॉंकरोली; हिं० बं० सं० २१, पु० सं० १।

आदि--श्री हरिः ॥ नख सिष ॥

श्री नंद नंदन आनंद कंद गोपीजन बल्लभ रासबिहारी ॥
लाला गोपाल मनोज बिमोहन राधारवन महासुखकारी ॥
अंग चरित्र विचित्र प्रभा वसु चित्त यथामति बानि उचारी ॥
श्री मद्बल्लभ राज कृपा बल गाइए रंग भरचो गिरधारी ॥ १ ॥

दोहा--नखतें सिखलों अमित छवि गुन प्रभाव गोपाल ॥
गोकुल बुधि अनुसार करि. . . . . ॥क॥

मध्य—जे श्रुति सुंदर कुंडल रंजित राजत है नव कंज धरे पुनि ।
जे मृदु कर्ण प्रकर्ण मनोहर मोहि रहे सुर गोप सुता सुनि ।
जे नव कानन कानन में सब कामिनि वारि धरी दुति का धुनि ।
ते शब्दालय गोकुल की विनती सुनि हो कन ही व्रज जीवनि ॥१६॥

अंत—प्राप्त नहीं ।

विषय—श्री कृष्ण के स्वरूप का वर्णन ।

संख्या ८७क. शक्ति प्रभाकर या अद्भुत् रामायण, रचयिता—गोकुल कायस्थ, निवासस्थान—बलरामपुर, कागज—देसी, पत्र—१००, आकार—१०॥ × ६॥ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, जग बहादुर यंत्रालय, बलरामपुर से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४३८, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६१३ वि० मुद्रणकाल—स० १६३६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक, डी० ए० वी० हाईस्कूल, बलरामपुर, गोंडा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥ शिव संपति प्रद शिव सुवन शिव...... ॥
नाम नाम रूप लीला ललित गतिमति प्रद.... ॥
॥ १ ॥ गणपति दोहा ॥ ....खंडित......... ।

:o: :o: :o:

॥ सवैया ॥

जै भगिवंत गोपाल गोविंद मुरारि मुकुंद चराचर स्वामी ॥
जै मधुसूदन केशी निषूदन दीन दयाल दया अनुगामी ॥
जै वनमालिय केशव कृष्ण दमोदर विष्णु है अंतरजामी ॥
जै रघुनंदन जै भृगुनंदन जै नंदनंदन नाम ननामी ॥

॥ सूर्य दोहा ॥

व्याधि उपाधिक तोय तम भवरुज शोषरु भानु ॥
दिनमनि दिन प्रति पोषही जोहै जन हिमि भानु ॥

:o: :o: :o:

अंत—

१ ६ १
तीनि काल नव चंद्र जस विक्रम सो करि भूप ॥
त्यहि सासन ते पूर करि अश्वनि मास अनूप ॥
शक्ति प्रभाकर ग्रंथ यह हरि के चरित मयूष ॥
समन सोक संताप तम लहि श्रुति सब्द पियूष ॥१६॥

इत्यार्षे रामायने वालमीकिए अदभुत्तोत्तर कांडे श्री रामविजयो नाम भाषा कृते.. गोकुल कायस्थ विरचिते शक्ति प्रभाकर ग्रंथ सप्तविंशमो अध्यायः ॥२८७॥

इति श्री अदभुत रामायन समाप्तम लिखितं नाथूराम तिवारी संवत १६३६ मिति चैत्र शुक्ल १५ :o—: :o: :o:

विषय—जानकी जी द्वारा रावणवध वर्णन ।

रचना काल

३ १ ९ १
तीनि काल नव चद्र जस विक्रम सो करि भूप ॥
त्यहि सासन ते पूर करि अश्वनि भास अनूप ॥

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ पूर्ण है। आरंभ और बीच के पत्रे यत्रतत्र फट गए हैं। समस्त सौ पत्रे हैं। रचयिता दिग्विजय सिंह के आश्रित बलरामपुरवासी "गोकुल कायस्थ" हैं। रचनाकाल सं० १९१३ वि० तथा मुद्रणकाल सं० १९३२ वि० है।

संख्या ८७ख. शोकविनाश, रचयिता--गोकुल कायस्थ, निवासस्थान--बलरामपुर (गोंडा) कागज--देशी, पत्र--६०, आकार--१० × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, जगबहादुरी यन्त्रालय बलरामपुर में प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)--२८८०, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १९१३ वि०, मुद्रणकाल--सं० १९३३ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक, एम० पी० बी० हाईस्कूल, बलरामपुर, गोंडा।

आदि--श्री परमेश्वर की कृपा से

शोकविनाश--यह अपूर्व ग्रंथ मोह माया नाशक वेदांत सिद्धांत लोक में चेतन जीव को ज्ञानप्रद श्री ७ महाराजाधिराज भूप शिरताज-हिज हाईनेस के० आनरेबुल श्री महाराज सर दिग्विजय सिंह साहब बहादुर के० सी० एस० आई० की आज्ञानुसार गोकुल कायस्थ विरचित सज्जनों के मनोरंजन के हेतु प्रकाशित बलरामपुर जग बहादुरी यन्त्रालय में ... नगर के यहितिमाम मे मुद्रित किया लिखत नाथूराम तिवारी ... ने छापा सम्वत् १९३२ अगहन सुदी १५ शुभम।

श्री गणेशाय नमः

अथ ग्रंथ शोक विनाश लिख्यते ॥ दोहा ॥
शिव सर्वानिप्रद शिव तन शिव प्रिय शिव के काम
कमल मित्र कमला रमन बंदो पद अभिराम ॥ १

॥ गणपति ॥ दोहा ॥
सिद्धि सदन करिवर बदन दाया करि वर देहि ॥
समन शोक कंटक विपिनि दुख संकट हरि लेहि ॥
:o: :o: :o:

अंत-- ॥ सवैया ॥
जग जीवन मैं नर जीवन थोर निसा वसि भोर न औध है कोई
तन कागद को कलबूत ज्यों थलिहि नीर पाय लवाउ ते सोई
नरकी जनि ह्वै नर कीजै कृपा जग कर्म शुभाशुभ ताहि ते होई
वृज राम को नाम है नित्य सदा प्रिय मित्र कलत्र अनित्य है सोई
:o: :o: :o:

२ ९ १०
उभयराम गृह चंद्रमा सम्वत......... अपूर्ण
:o: :o: :o:

विषय--मोह, माया के नाशक वेदांत सिद्धान्तों का प्रतिपादन।

रचनाकाल

उभय राम गृह चंद्रमा सम्वत......... ।

संख्या ८८क. त्रिविधभावना भाषा, रचयिता--श्री गोकुल नाथ जी, निवासस्थान--गोकुल, कागज--देसी, पत्र--२३, आकार--८ x ६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--३०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२१५, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६२४ से १६६७, प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरौली- हि० ब० ६३, पु० सं० ८।

आदि--।। श्री कृष्णाय नमः ।। श्रीकृष्ण । अथ त्रिविध भावना लिख्यते । श्री वल्लभ पद कमल वर कोमल कर मकरंद । जो छुहि यहे वहे व्रजमंडल आनंद ।।१।। श्री विट्ठल वर नाथ के चरन कमल की रेनु । रहे ललहे व्रज नाथ की अधरामृत कर सेनु । २ ।।

अथ श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रकटित शुद्ध पुष्टिमार्ग की भावना प्रकटित वर्णियत है । तहां भावना तीन प्रकार की ।

मध्य--या प्रकारते स्वरूप भावना जाननी । अब लीला भावना को स्वरूप वर्णियत है । जो स्वरूप वर प्राप्त अनेक कल्पन परमाप्ति करि प्रगट भयो ता स्वरूप को अनुभव दियो साक्षा आद द्वादस लीला सहित हृदय में प्रविष्ट भये ते प्रथम रूपराग प्रथमादर्था प्रभुदर्शन ही को अनुराग कि बहुना । और दृष्टि हांन परे आलंबन विभाव रहित रूपदासदरूप ही दृष्टि मे आवे ।

अंत--श्री मदाचार्य चरणाश्रित ते मुख्य फल भाग रहि दिन्हे सिद्ध प्रेम भाव है अखिल मंगल निधान रस स्वरूप ही को भाव भावना सिद्ध होय । त्रिविध भाव की भावना त्रिविध भाव-फल रूप । रसिक त्रिभंगी लाल के सुललित भाव अनूप । इति श्री आचार्य जी कृत त्रिविधभाव भावना संपूर्ण ।

विषय--पुष्टि मार्ग में सेवा और ध्यान आदि में भावना मिलो से ही तन्हे वर किए जाते है । इसी उद्देश्य को लेकर वैष्णवो के हितार्थ यह त्रिविध भावना बनाई गई है जिसके अनुसार आचरण तथा मनन करने से भगवल्लीला का साक्षात्कार होता है ।

संख्या ८८ख. महाप्रभु जी श्री गुसाईं जी के स्वरूपविचार, रचयिता--गो० श्री गोकुलनाथ जी, निवासस्थान--गोकुल, कागज--देसी, पत्र--२, आकार--१०। x ७।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)--६४, पूर्ण, रूप--साधारण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६२४ से १६६७ तक प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६६, पु० सं० ७।

आदि--।। श्री कृष्णाय नमः ।। श्री वल्लभदेव चरण कमलेभ्योनमः ।। श्री आचार्य महाप्रभु को स्वरूप विचार लिख्यित है । तहां भावना यह करनी जो ठाकुर को शृंगारात्मक स्वरूप दो प्रकार को । एक संयोगात्मक । एक वियोगात्मक । तामें संयोगात्मक सो शुद्ध सत्व अक्षर ब्रह्मरूप जे वासुदेव व्यूह । तिनके आधार ते जो साक्षात पुष्टि पुरुषोत्तम रस रूप । आनन्द मात्र कर पाद मुखोदरादि रूपेण व्रज विषे विहार करि व्रजभक्तन के स्वरूपानंद दान करत हें । और

मध्य--पृ० २ अब श्रीमत्प्रभु श्री गुसांई जी के स्वरूप को विचार लिखियत हे । तहां विचार यह करनो जो साक्षान्मूर्त्य श्री स्वामिनी जी विषे दोय भाव हें । ठाकुर के रसरीति रमण विषे केवल स्त्री भाव । अरु विपरीति रमण विषे पुरुष भाव । तामें स्वामिनी जू के विषें जो केवल स्त्री भाव । अरु ठाकुर के संग रमण करिवें की इच्छा तें उत्पन्न भयो जो काम भाव ।

सों श्री गुसांई जी को स्वरूप हैं । तातें श्री स्वामिनी जू तथा समग्र व्रज भक्तन को ठाकुर के संग परस्पर मिलन अरु प्रति कुंज निर्भर क्रीडा करन के सिद्धि होइवे के कारण सो श्री गुसांई जी कों जाननों ।

अंत--जो कोई निरंतर भावना करे अरु इनही के चरणारविंद को परिशीलन करे तो भगवल्लीलानुभव सिद्धि के प्राप्ति में कहा विलंब है । १ ।। श्लोक । व्रजपति नव केलीभाव सर्वं स्वरूपः सुललित गति राधा राधनासक्त चित्तः । तदुभय रस लीलानंद संदोहपूर्णः स भवतु मम सर्वं विट्ठलेशः सुवेशः ।।१।। इति श्री आचार्य जी को तथा श्री गुसांई जी के स्वरूप को विचार संपूर्ण ।। श्री गोकुल नाथ जी कृत ।। मोहन दास सुत गोवर्द्धन दासस्य पुस्तकं ।

विषय--पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय के मूल आचार्य श्री वल्लभाचार्य तथा उनके पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी के स्वरूप का आध्यात्मिक दृष्टि से वर्णन किया गया है ।

संख्या ८८ग. श्री आचार्य जी महाप्रभु जी की (प्राकट्य) वार्ता द्वादश कुंज भावना, रचयिता--श्री गोकुल नाथ जी (?), निवासस्थान--गोकुल, कागज--देसी, पत्र--११५, आकार--७।। × ६। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६१२, पूर्ण, रूप--साधारण, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--(सं० १६२८ से १६६७), प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ६८, पु० सं० ३ ।

आदि--।। श्री कृष्णाय नमः ।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। श्री आचार्य जी महाप्रभु जी की वार्ता जन्म प्रकरण संबंधि लिखे है । कृष्णदास अधिकारी ने श्री गुसांई जी को श्री नाथ जी के मंदिर मे बरजे हे । जो तुम श्री नाथ जी के मंदिर में मत आवो । श्री नाथ जी की सेवा को अधिकार श्री महाप्रभु जी ने मोको सोप्यो है सो मे अधिकारी हुँ ।

मध्य--पृ० ५८ अथ फल कुंज । पाछे वा सखि के संग आगे फल कुंज कुं जात हैं । सो ऊहा के द्वार पा सब सखीन सो बात । यह पुष्प कुंज को सखी सों सब बात समाचार कहत हे । ओर कहत हे जो तुम अपने कुंजपति श्रीनाथ जी तथा श्री स्वामिनी जी सो जाइ के कहो जू । जो एक सखि श्री आचार्य जी संबंधि सेवक सो इहां त्यो श्री आचार्य जी के दूत वहाँ पोंचाई सोंप गये हैं । याते तुम आइके इनके समाचार सब निरूपण करि कें कहोगे ।

अंत--परि एसें ना विचारनो जो अब तो श्री आचार्य जी के ग्रंथ देखे हे समुझे हे । एसे विचारि के अवकाश करि के मनको बिगारे नाहीं काहे [illegible] को स्वरूप रस रूपी घृत कोहे सो घृत पात्र के आधार बिनु ना रहे मनको कछु ना कछुक आधार तो चाहिए याते मनहूं अविद्या के रस मोह लागे । तो फिरि हाथ आवनो कठिन हे पाछे थमे नाहीं यातें पहेले ही सावधानी सों रहनो एसे वचन हे । इति दामोदरदास हरमानी श्री गुसांई जी को संवाद संपूर्णम् ।।

विषय--श्री गुसांई विट्ठल नाथ जी अपने सम्प्रदाय पुष्टिमार्ग का रहस्य श्री वल्लभाचार्य के प्रिय शिष्य दामोदर दास हरसानी से विदित किया था । इसमें श्री वल्लभाचार्य के प्राकट्य संबधी आध्यात्मिक आदि दैविक रहस्य तथा भगवल्लीलाओं का वर्णन है । यह संवाद गुसांई जी के पुत्र गोकुल नाथ जी ने सुनकर वैष्णवों के प्रति प्रकट किया था ।

संख्या ८८घ. जप को प्रकार, रचयिता--गो० गोकुलनाथ, कागज--देसी, पत्र--३, आकार--१३½ × ८¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१०७, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--१८३४, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--अथ जप को प्रकार ।।

उठत ही माला जनेऊ सभारनो ।। जनेऊ वारे कों माला अवश्य चाहियें ।। मालावारे को जनेऊ की अपेक्षा नाही ।। काहे ते जनेऊ देह सम्बन्धी ।। माला आत्म संबंधी ।। जनेऊ

ब्राह्मण तें और जन्म में हीन जाति होय तो न पहेरो ।। देह पर्यंत माला भगवद्धर्म में सब वर (न) कों अधिकार ।। याही ते जनेऊ टूटचो काम नाही आवें ।। माला टूटे मनिया काटि गांठी दे लीजियें तो चिंता नाही ।। जैसे गंगाधार ते न्यारो होइ तो पाप रूप कहावे ।।

:०: :०: :०:

मध्य--मंदिर में सांचो रा आदि करें तारकी चिंता नाही जहां श्री यमुना जी को प्रवाह हे ।। वैष्णव के इहां विचार मंदिर की अनसर बडी नाम पायो है ।। वैष्णव तथा व्रजवासी के हाथ को लेत हें ।। भगवान पंचाध्याई में कहे हे ।। न पार येहं निरखद्यसंप जीस्य साधु कृतं विलुधा मुखापित्र या प्रकार मुख तें कहे ताते श्री मुख को अवतार श्री आचार्य जी होइ ।। स्वामिनी भाव की सेवा कीये ।।

इति श्री जप को प्रकार श्री गोकुल नाथ जी कृत संपूर्णम ।।

विषय--वल्लभ कुल की भावना के अनुसार भगवान् के जप, पूजा आदि का विधान वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल संवत् १६६४ है।

रचयिता गुसाई गोकुलनाथ जी है।

इनकी प्रस्तुत रचना 'चरण चिह्न' के साथ एक ही हस्तलेख मे है। यह ब्रजभाषा गद्य मे है।

संख्या ८८ङ. चौरासी वैष्णव की वार्ता, रचयिता–गो० श्री गोकुल नाथ जी, कागज--देसी पत्र--१६०, आकार--१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२३, परिमाण (अनुष्टुप्)--५४६२, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह २८५।८६ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि--श्री कृष्णाय नमः ।। अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक चौरासी तिनकी वार्ता लिख्यते ।

श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक दामोदर दास हरषानी क्षत्री तिनकी वार्ता ।।

दामोदर सों श्री आचार्य जी महाप्रभू दमला कहते । और कहते जो दमला यह मार्ग तेरे लिए प्रगट कीयो हे । श्री आचार्य जी महाप्रभू आप वासों ऐसे कहते । और श्री आचार्य जी महाप्रभु अहर्निश श्री भागवत देषते ।। श्री आचार्य जी महाप्रभु दामोदर के आगे कथा कहते और श्री आचार्य जी महाप्रभु दामोदर दास सो कहते । जो दमला बड़ी वार भई । श्री ठाकुर जी की वार्ता नाही कीनी सो करिये । सो एकांत रहस्य वार्ता करते ।।

:०: :०: :०:

मध्य--ऐसे विरह के पद गाइ गाइ सूतक के दिन विवर्त्त कीये । पाछें शुद्ध होइ न्हाइ के कुंभन दास जी भगवद सेवा में आये ।। सो जेसें सदां कीर्तन की सेवा करत हते हो करन लागे ।। एसी जिनकों दर्शन की आर्ति । एसी कुंभनदास जी की अनेक वात हें । सो कहां तांई लिखिये ।।

।। चौरासी वार्ता संपूर्ण ।।

विषय--महाप्रभु वल्लभाचार्य के चौरासी सेवको (वैष्णवो) की वार्ता । नीचे सेवको के नाम दिए जाते है :--

१. दामोदर दास हर्षानी
२. कृष्ण दास मेघ नक्षत्र
३. दामोदर दास सभरवार क्षत्री कनौजिया
४. पद्मनाभ दास कनौजीया
५. पद्मनाभ दास की बेटी तुलसी
६. पद्मनाभ दास की बेटा बहु की वार्ता
७. रघुनाथ दास (पद्मनाभ दास का नाती)
८. क्षत्राणी (सेवकिन)

९. पुरुषोत्तम दास क्षत्री (बनारस के)
१०. हरिवंश [illegible] (से० पुरुषोत्तम का बेटा)
११. गोपालदास सेठ (से० पुरुषोत्तम का बेटा)
१२. रामदास जी सारस्वत
१३. गदाधरदास [illegible] सारस्वत (कड़ा निवासी)
१४. वेणीदास माधवदास क्षत्री
१५. हरिवंश पाठक सारस्वत (बनारस)
१६. गोविंददास [illegible] (आन्योर के वासी)
१७. अम्मा [illegible] (कड़ा निवासी)
१८. गजनधावन क्षत्री (आगरा के)
१९. नारायणदास [illegible] सारस्वत (महावन के)
२०. एक [illegible] ([illegible])
२१ [illegible]
२२. देवा कपूर क्षत्री (रूपदा)
२३. दिनकर [illegible]
२४. दिनकरदास मुकुंददास मानिकचंद कायस्थ
२५. प्रभुदास [illegible] क्षत्री
२६. प्रभुदास [illegible]
२७. पुरुषोत्तम [illegible] (आगरा)
२८ [illegible] कायस्थ ([illegible])
२९ [illegible]
३० [illegible]
३१. [illegible]
३२ [illegible]
३३ [illegible] (बाणगंगा)
३४ [illegible] (उज्जैन)
३५. पुरुषोत्तम [illegible]
३६ जगन्नाथ [illegible]
३७ जगन्नाथ [illegible] की माता
३८ [illegible]
३९ [illegible]
४० [illegible]
४१ रामदास [illegible]
४२ गोविंद [illegible]
४३ [illegible] (भाई)
४४ उत्तम श्लोक दास
४५ वासुदेव दास [illegible]
४६ [illegible] दास [illegible]
४७ जगती नंद
४८. एक ब्राह्मणी
४९. आनंददास विसंभरदास क्षत्री
५० एक क्षत्राणी
५१. रामदास [illegible] के प्रोहित
५२. बूला मिश्र
५३ रामानंद ब्राह्मण
५४. विष्णु दास छीपा
५५. जीवनदास कपूर क्षत्री सिंह
५६. भगवानदास सारस्वत

५७ भगवानदास जी भीतरिया श्री नाथ जी के
५८ अच्युतदास सनोढिया
५९ अच्युत दास गौड़ ब्रा०
६०, अच्युत दास सारस्वत
६१ नारायण दास
६२. नारायण दास भाट

६३. नारायण दास
६४. क्षत्राणी (सास बहू)
६५ एक सुनार
६६. एक वैष्णव
६७. दामोदर दास की माता (शेरगढ़)
६८. [illegible] दास
६९. [illegible] भाट
७० गोपाल दास
७१ [illegible]
७२ [illegible]
७३ [illegible] दास
७४ [illegible] चौहान
७५ माणिक चंद
७६ [illegible] स्वामी
७७ गोपालदास (व्रजवासी)
७८ [illegible] दासी
७९ [illegible]
८० [illegible] चोपड़ा (आगरा)
८१ [illegible] दास
८२ [illegible] पटेल
८३ गोपाल [illegible] के निवासी
८४ नारायणदास
८५ [illegible] दास
८६ परमानंद दास
८७ कृष्णदास अधिकारी क्षुद्र
८८. कुंभनदास

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख में प्रस्तुत वार्ता के अतिरिक्त १. अलीखान पठान की वार्ता, २. निज वार्ता घरु, ३. द्वादश वार्ता और घर की वार्ताएँ भी है।

रचनाकाल, लिपिकाल नही दिए है।

प्रस्तुत 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' श्री मयाशंकर जी याज्ञिक के अनुसार गो० श्री गोकुलनाथ जी ने अपने मुख से कही थी और श्री कल्याण भट्ट ने हे लिपिबद्ध किया था।

संख्या ८८च. चरण चिह्न की भावना, रचयिता—गो० गोकुलनाथ, कागज—देसी, पत्र—८, आकार—१३½ × ८¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८६, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९६४, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह्), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री कृष्णाय नमः॥ श्री गोपीजनवल्लभायनमः॥ अथ श्री हरिराम जी कृत भाव भावना लिख्यतेः॥

सो पुष्टि मार्ग में जितनी क्रिया हे॥ सो सब श्री स्वामिनी जी के भाव ते हैं। ताते मंगलाचरण गावें॥ प्रथम श्री स्वामिनी जी के चरण कमल को नमस्कार करत हैं॥ तिनकी उपमा देवें कों मन दसो दिसा दोरयो॥ परंतु कहू पायो नाही॥ पाछे श्री स्वामिनी जू के चरण कमल को आश्रय कीयो हे तव उपमा देवे कूँ हृदय में स्फुर्ति भई॥ जेसे श्री ठाकुर जी कों अधर विंव आरक्त हैं रस रूप॥

:o: :o: :o:

अंत—जो कोई भावसहित पुष्टि मार्गीये वैष्णव चिंतन करत हैं॥ तिनकूँ सर्व फल की सिद्धि होयगी॥ सो या प्रकार दोऊ चरण के चिह्नभाव सहित बरनन कीए॥ दोऊ चरण में पंद्रह चिह्न हे॥ सो ताकों अभिप्राय यह हे॥ जो तिथि तो पंद्रह हैं तामे सगरे महीना वर्स आय गए॥ ताते जो वैष्णव पंद्रह चिह्न को चिन्तन करें। प्रतिबंध न परे॥सदा एक रस स्वरूपानंद को अनुभव करें॥ सो या प्रकार चरण चिह्न के भाव हे कछूक अपनी वुद्धि के अनुसार वर्णन कीये॥ इति श्री गोकुल नाथ जी कृत चरण चिह्न की भावना संपूर्णम्॥

विषय—श्री राधाजी चरण चिह्नों का ध्यान करने और उनकी श्रद्धाभक्ति से पूजन करने का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९६४ है जो हरिराम कृत "भावभावना की पुष्पिका" मे दिया है।

रचयिता गुसाईं गोकुलनाथ जी है। आरंभ मे "हरिराम" जी कृत "भाव भावना" लिखी है, परतु पुष्पिका मे गोकुल नाथ जी रचयिता कहे गए है।

हस्तलेख बडा है जिसमें—१. चरणचिह्न और २. जप को प्रकार प्रस्तुत रचयिता के हैं। "भाव भावना" हरिराम कृत है। ये सब ब्रजभाषा की गद्य रचनाएँ है।

संख्या ८८छ. गोवर्द्धननाथ जी की वार्ता प्राग(टच) की, रचयिता—गुसाईं गोकुलनाथ जी, निवासस्थान—गोकुल, कागज—देसी, पत्र—६५, आकार—१०½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३००, पूर्ण रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल स० १९८ सभवतः १९०४, प्राप्तिस्थान—श्री रमाविलास पुस्तकालय, अजमतगढ इस्टेट, जिला—आजमगढ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः॥ अथ श्री गोवर्द्धन नाथ जी की वार्ता प्राग(टच) लिख्यते॥

अथ श्री गोवर्द्धन नाथ जी के प्रगट को प्रकार तथा प्रगट होइ के जो जो चरित्र कीने

भूमि लोक में सो श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत के समूह मे ते उद्धे (? उद्धृत) करि के न्यारे न्यारे लिखत हे ।। अब नित्य लीला में श्री गोवर्द्धननाथ जी श्री गिरीराज की कंदरा में अनेक भक्तन सहित अखंड विराजमान है । तहा श्री आचार्य जी महाप्रभु सर्वदा सेवा करत हे ।। जब दैवी जीवन के उद्धारार्थ आग्या ते जब धरती मंडल में प्रादुर्भाव भये ।। तब आप सर्वस्व सेवा श्री गोवर्द्धन नाथ जी हू अखिल लीला सामग्री सहित व्रज में प्रादुर्भाव भये ।। सम्वत १४६६ ।। श्रावण वदी तृतीया आदित्यवार सूर्य उदय के काल समे श्रवण नक्षत्र में श्री गोवर्द्धननाथ जी की उर्द्ध भुजा को दरसन भयो ।।

:o: :o: :o:

अंत—ता समे श्री जी श्री दाउ जी महाराज सों स्वप्न में यह आग्या किए जो यह गहना को वटा आयो है ।। सो नथ ते लगाई के सिष ताई स्त्री के पहिरवे के वामें आभरन हे ।। सो गंगा बाई को पहिरावो ।। सो सब गहना पहराई के मेरे भोग के दर्शन को आइयो ।। तब गंगा बाई ने एस ही कियो ।। एक दिन दिन दर्शन किये ।। जैस ही गहना राख्यो ।। तव श्री जी ले दरसन दीनो तब यह आग्या किये ।। यह कहना सब सज्या मंदिर मे मूढा, पर स्थापन करो ।। तब एस ही भयो ।। एसे श्री गोवर्द्धन नाथ जी के अनेक चरित्र हे । सो कहां ताई लिषवे में आये ।। श्री श्री आचार्य जी महाप्रभू न की कृपा ते स्वकीयन कूं अनुभव में आवे ।।

इती श्री गोवर्द्धन नाथ जी की वार्ता संपूर्णम् सुभं भूयात ।। सम्वत् १६४ ।। कार्तिक कृष्ण ८ रविवासरे ।। प्रातकाले लिषितं घनस्याम शुकुल आत्मार्थ परार्थवा ।। श्री श्री श्री ।।

:o: :o: :o:

विषय—श्री गोवर्द्धननाथ जी के प्रकट होने की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नही दिया है । लिपिकाल सवत् १६४ दिया है जो अशुद्ध है । संभवत १६०४ है ।

संख्या ८८ज. श्री गुसाई जी की व्रज चौरासी कोस की वन यात्रा स० १६०० की, रचयिता- -गो० श्री गोकुलनाथ जी, निवासस्थान—गोकुल, कागज—देसी, पत्र—२६, आकार—५। × ६।। इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७२, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२४ से १६६७ (अनुमान), लिपिकाल—स० १८१३, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ६२, पु० सं० १ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ।। श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ।। अथ वनयात्रा परिक्रमा लिख्यते ।। प्रथम श्री गुसांई जी करी सो श्री गोकुलनाथ जी अपने सेवकन सों कहेत हें । संवत् १६०० भाद्रपद वदि द्वादसी १२ सेन आलि करी पाछें श्री गुसांई जी श्री मथुरा पधारे । व्रज की परिक्रमा करिवें कुं तहां श्री मथुरा जी में श्रीकृष्ण को प्रागटच भयो हे तहां कारागृह की ठोर हे तहां विश्रांत घाट हे । तहां कंस को मारि कें श्री ठाकुर जी विश्राम कीयो हें । तहां स्नान करि श्रम निवारन कीये हें ।

मध्य—पृ० २६

तहां श्री नंद राम जी की बगीची हें । तहां श्री नंदराम जी स्नान करिके सालिग्राम की पूजा करने, सो नैवेद्य धरिकें श्री नंदराय जी ने नेत्र मुंदे । सो श्री ठाकुर जी हरे हरे आईके अपने मुख में मेले । पाछे श्री नंद राम जी नेत्र खोलें तो सालिग्राम तहां नहीं । तब श्री यसोदा जी सो कहे । जो मेरो देवता कहां गया । तब श्री ठाकुर जी हसे । तव श्री यसोदा जी नें श्री ठाकुर जी के मुखारविंद में सों सालिग्राम काढ़ि के श्री नंद राय जीं कों दीयें । तब श्री नंद यसोदा मिलि के सालिग्राम कों केसर सों स्नान कराई के बहुत भांति सो बिनती कीनी जो या बालिक को दोष मति देखो । और या बालक पर कीपा करो । और मेरो अपराध क्षमा करो ।

अंत—बलम घाट पर सीरापुंरी वही सो कठोर लड्डु । जसोदा घाट पर माखन मिश्री दुध वही रोटी कर्ण वेध के कूप पर लाडु गुड़ के टुंक । दोऊ बैठक पर मेवा मिश्री पेडा बासोंधी । दुध की सामग्री । ऊपर की बैठक में मुख्य पलना की सामग्री ।। निचे मुख्य मिश्री । ठकुरांनी घाट पर श्री महारानी जी को श्रृंगार । श्रृंगार गोपी वल्लभ की सामग्री । इत्यादिक भाव सहित सामग्री हैं । इति व्रज चोरासी कोस की परिक्रमा वनयात्रा संपूर्णम् । समाप्तः ।। श्रीः ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

विषय—व्रज का वर्णन किया गया है । स० १६०० में गो० श्री विट्ठलनाथ जी ने व्रज ८४ कोस की यात्रा की उसका सांगोपांग वर्णन है । इसमें व्रज के प्राकृतिक सभी स्थलों का और श्री कृष्ण लीला के स्थलों का वर्णन किया गया है । इतिहास की दृष्टि से श्री गुसाईजी के तात्कालिक चरित्र पर अच्छा प्रकाश पडता है । इसके बाद गोस्वामी कुल के वंशधरों द्वारा ऐसी यात्राएँ क्रमशः की जाती है ।

विशेष ज्ञातव्य—काले रंग के कपडे में सिली हुई पुस्तक रक्खी है । इस पुस्तक में क्रमशः वनयात्रा, भागवत अनुक्रम के पद, बत्तीस लक्षण, वल्लभाख्यान, सर्वोत्तम जी नु धोल, यमुनाष्टक, मधुराष्टक, चतुःश्लोकी, गोकुलाष्टक, शरणाष्टक और मूल आख्यान है । लिपिकाल स० १८१३ मूल आख्यान के आधार पर है ।

संख्या ८८क. "वैष्णव लक्षण ग्रंथ", रचयिता—गोकुलनाथ जी तथा कल्याण भट्ट जी को सवाद, निवासस्थान—गोकुल, कागज—माधोपुरी, पृष्ठ—१।।, आकार—१०।।। × १०। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४२ से १६६७ के बीच, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब०, स० १४, पु० स० १ ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। श्री वैष्णव लक्षग्रंथ ।। श्री महाप्रभु जी सों कल्याण भट ने प्रार्थना करी । जो भगवदीय के लक्षण कहो ।। तब आप प्रसन्न होय के यह कही ।। प्रथम तो अन्याश्रय न करे ।। सर्व प्राणी मात्र ऊपर दया रखें, सदा प्रसन्न रहेनो । क्रोध न करनो । यातें क्रोध हे सो महादुष्ट चांडाल हे । ताते जहां क्रोध रहे तांहां धर्मादिक कोछ न रहे ।

मध्य—जहां बहिर्मुख सर्वलोक बेठे होय तांहा मौन्य करी रहेनो । अवैष्णव को संग न करनो । श्री भगवान भगवदीय विषे मन समान्य राखनो । अंतर न करनो :—

अंत—।। श्री बल्लभ वचनांमृत श्री महाप्रभु जी कृत चोरासी सीक्षा चौरासी वैष्णवो लक्षण हिते संपूर्णम् ।।

विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णवों को पालन करने के नियम तथा शिक्षा का वर्णन है । श्री वल्लभाचार्य के पौत्र, श्री विट्ठल नाथ जी के पुत्र श्री गोकुल नाथ जी का अपने शिष्य कल्याण दास जी के साथ वार्तालाप—साम्प्रदायिक-सिद्धान्तानुसार ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के साथ एक हस्तलेख में सूरदास जी कृत 'भ्रमरगीत' के पद तथा अन्य ग्रंथ भी है जिनका विवरण अलग अलग लिया गया है ।

संख्या ८८ख. नित्यसेवा श्रृंगार की भावना, रचयिता—गो० गोकुलनाथ जी, स्थान—गोकुल, कागज— देसी, पत्रः—२४, आकार—१३। × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—५२, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७५, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२६ से १६६७ तक, लिपिकाल—स० १९५६, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या-विभाग, कांकरोली, हिं० बं० ९८, पु० स० ४।१ ।

आदि--॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ श्री मद् गुरु चरण-कमलेभ्यो नमः ॥ अथ श्री गोकुल नाथ जी कृत भाव भावना लिख्यते ॥ अब प्रथम नित्य की भावना लिख्यते ॥ वैष्णव को प्रातःकाल होत ही भगवत् सेवा को चिंतन करनो । रात्र को वियोग विचारनो । दर्शन की आस राखनी । उठत ही अपने कंठ की माला को दरसन करनो ।

मध्य--पृ० १३

राजभोग को भाव ।

ताको भाव यह है सिंघासन आगे भोग आवें । तहां प्रभू के भक्त आवत है । तहां प्रभू आधीन लीला हे । तहा भक्त आइक भगवद रस को अनुभव करत हे । रीति को रमन यह भाव विचारनों । तहा रसोई घर में प्रभू आप पधारि राज भोग आरोगत हे तहां भक्ताधीन लीला है । तहां भक्तन के रस को अनुभव करत रहे । तहां विपरीत रमन को भाव विचारनो । राज भोग मे प्रथम धूप करनो धूप को भाव ॥

अंत--सो सारस्वत कल्पमे गौड देस मे कन्या होत भई ।

सो श्री नंदराय जी कंस के देन अर्थ मोल ले आए । सो प्रभू के अर्थ कात्यायनी देवी के मिस श्री यमुना जी को पूजन हरन लीयो । सो तब प्रभुचार लीला करि वरदान दीये । हम तुम को रास में अंगीकार करेंगे । या प्रकार अग्नि कुमारिकान को अंगीकार भयो, यह पुष्टिमार्गीय अंतरंगीभक्त के अर्थ नित्य सेवा को प्रकार प्रात संध्या लों वर्णन कीयो । इति श्री गोकुल नाथ जी कृत नित्य सेवा भृंगार की भावना संपूर्णम् ॥

विषय--पुष्टिमार्गीय सेवा के प्रकार में भगवद् विषयक मानसिक भावों की लीलाओं का अनुभव बतलाना इस ग्रंथ का उद्देश्य है । सेवा स्वरूप की सेवा शृंगार और प्रकार में कौन कौन सी भावना किस प्रकार करनी चाहिए यह क्रम वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य--इस पुस्तक के पृष्ठ २८ के बाद श्री हरिराय जी कृत "वर्ष दिन के उत्सव को भाव" नामक रचना है, और अन्त में विषय सूची दी गयी है ।

संख्या ८८८. बत्तीस लक्षण (भगवदीय वैष्णवों के लक्षण), रचयिता--गोकुल-नाथ जी, स्थान--गोकुल, कागज--देसी, पत्र--२५ (८४ से १०९), आकार--८।×६।। इन्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२८, परिमाण (अनुष्टुप्)--३००, पूर्ण, रूप--पुराना, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६२८ से १६९७ (अनुमान), प्राप्तिस्थान--श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ९२, पु० सं० ।

आदि--श्री गोपीजन वल्लभाय नमः । श्री महाप्रभू जी सों कल्यान भट नें प्रार्थना करी जो महाराज भगवदीय वैष्णव के लक्षण कहो । तब महाप्रभु जी प्रसन्न होय के कहे सो लक्षण कहेत हैं । जीव की बुद्धि निमित्त प्रथम तो अन्याश्रय न करनो । आश्रय एक श्री जी को करनो । तातें सकल कामना होत हें । यह लौकिक अरु परलौकिक हु यह जानिके आश्रय एक श्री जी बिन कहू को न करे । यह अन्याश्रय का हेतु हे ।

मध्य--पृ० ९७

पाछें उत्सव कोई आवे तो यथा सामर्थ भेंट करीये । श्री जी के दर्शन को आलस न करीये । जो आलस करे तो आसुरि बुद्धि होई । आसुरि बुद्धि करिकें ज्ञान मंद होई । ज्ञान मंद होई तो भावना जात हें ।

भावना गए ते सेवा को महात्म्य भुले । महात्म्य भूलेते श्री ठाकुर जी ने बहिर मुख होत हें । फिरि अधम गति कों प्राप्त होत हे । आलस करने को यहे फल होत हे । ताते वैष्णव कों आलस न करनो ।

अंत--

अहर्निश श्री जी को सुमरन करनो । श्री जी को ध्यान हृदय में राखनो । सातों स्वरूप के को नाम बारंबार उच्चारन करनों । वृथा न बोलनों । जो लौकिक बिहवार होई सो मर्यादासों करनों ।. ए सब ग्रन्थोत्तर हे । वैष्णव कों योग्य हे जो मन में राखे ईन बातन की सिक्षा मानें । जो या सिक्षा चित्त में राखे तो वैष्णवता सिद्ध भई । ग्रन्थ सर्वोत्तम को पाठ करे । चित्त स्थिर-राखिके ये लक्षण सब आचरण करे । तो सब स्फुरद होई । श्री आचार्य जी को स्वरूप हृदय में आवे । और सब सिद्धान्त हृदे में आवें । स्फुरत होई । इति श्री बत्रीस लक्षण समाप्तम् ।

विषय--पुष्टिमार्गीय वैष्णवों को पालन करने योग्य वैष्णवों के ३२ लक्षण विस्तृतरूप में लिखे गए हैं ।

ये लक्षण गोकुल नाथ जी ने अपने पितृ चरण गो० श्री विट्ठलनाथ जी द्वारा सुने थे और वैष्णवों के हितार्थ उन्होंने अपने शिष्य कल्याणदास के प्रति कहे थे । इसमें वास्तविक वैष्णव के लक्षण गुणों का वर्णन है ।

संख्या ८६. भागवत, रचयिता--जनगोपाल, कागज--देशी, पत्र--५०, आकार--$९\frac{६}{१०}$ × $६\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१४४१, खंडित, रूप--पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि--कैथी, लिपिकाल--संवत् १९०७ वि०, प्राप्तिस्थान--प० बद्री नारायण पांडेय, ग्राम--आगरापट्टी, पोस्ट--मैलहन, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--.................................

श्री जदुनाथ अनुग्रह कीन्हा । भुवन चतुरदस की वल दीन्हा ।।
सबद रूप होइ कहा गोसाई । सत काज अवतरीहौ आई ।।
मैं वसुधाकर भार उतारौ । संतन्ह तारौ दानौ कुल मारौ ।।
मैं दानौ कुल मारब भुइ कर भार उतारौ ।
संतन्ह सुष दुष्टन दुष ओज अवतरो मुरारी ।।
जस कछु प्रभु कै आएसु पावा । सोई मत ब्रह्मा समुझावा ।।
सव कर ससं दीन्ह एकाइ । फीरी वसुधा ओत लोक हौ आई ।।
जेही जेही कह प्रभु अएसु दीन्हा । गोकुल जाइ जन्म तेन्ह लीन्हा ।।
महा पुरुष मोहनी पठाई । देवकी गर्भ अकर्ष जाई ।।

:o: :o: :o:

अंत--

कंसक वधन सुनै मन लाई । कोटि जन्म कर पातष जाई ।।
कोटि जनम कर पातष नासा । जन्म जन्म पावै कवीलासा ।।
भगती भगवत कथा जो होइ । सव पुरन्ह सो उतीम सोई ।।
पढ़ै गुनै जो हरष मन ते करी वीधी मुखही आस ।
सदा नहाइ गंग तट होइ वास कवीलास ।।

इती श्री हरी चरीत्रे दसम सकंधे महापुराने श्री भागवते कंस वधनो नाम पैंतालीसमोध्याय ।। ४५

संमत १९०७ सन १२५७ मीती वैसाख वदी पवरा वुध वरा कं पुथी लीष ललचो पुरान भगवत भोषराम पडे इठेरी ।

विषय--कंस वध तक भागवत पुराण का अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ के आरंभ के ५ पत्र लुप्त हो गए हैं । रचनाकाल का पता नहीं । लिपिकाल संवत् १९०७ है ।

रचयिता का नाम जनगोपाल है। वे सभवत. दादू पंथी और संवत् १६५६ में वर्तमान थे।

संख्या ६०. १. विजयाष्टक, २ हनुमताष्टक, रचयिता--गोपाल "जन", कागज--देसी, पत्र--५, ३, आकार--६½ x ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--४७, २८, १. पूर्ण, २. खंडित, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १८६५ वि०, प्राप्तिस्थान--श्री मुरारी लाल जी पाठक, स्थान व पोस्ट सिरसा, जिला--इलाहाबाद।

आदि--विजयाष्टक

श्री गणेशाय नमः ॥

दोहा

सिद्धि वृद्धि दायक सुमिरि करो मंगला चर्न।
बिघुन बिनासन हेत हरि प्रगटे मंगल भर्न ॥ १ ॥
विजया अष्टक को कहे गणनायक सिर नाय।
ग्यान महाबल दीजिये सिवसुत होउ सहाय ॥ २ ॥

॥ दंडक ॥

कूडी मे मसाला संग डार देत सबजी को मार सोटन मिरिच को तोर डारे षट्ट से।
हरि की वल्लभा कैसो रूप जब नजर परै संभु को चढाइ के उतार जाय घट्ट से।
चरन कर धोई के कुल्ला करे शुद्ध होइ आसन पर बैठ तीन तारी मारै फट्ट से।
नयेन को मूंदि मन लगाइ देइ रामपद विलम न लागै मन लाग जाय झट्ट से ॥

:o: :o: :o:

मेरे हिय ते जु कही शिव ने सु करैंगे सत्य जथा मम भाषी।
साबर मंत्र समान फुरै सब ईस प्रताप कहो यह साषी।
धारन हारन के उर माहि गुन याभै होइ सु दीजिये राषी।
सज्जन को अति प्रिय "गोपाल" सुने उपहास कलै षल माषी ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

विजया अष्टक को पढै तबै लगावै भोग।
विजय होइ रन सभा मे अरु नारी संजोग ॥ ५ ॥

इति श्री विजयाष्टक समाप्तं ॥ चैत्रे शुक्ले २ भौम संवत् १८६५ ॥

॥ हनुमताष्टक ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

यस्य स्मरणमात्रेण सर्वदा सुषकारकम्। इति वदति गोपाल सद्गुरु स्तन्नमाम्यहम् ॥ १ ॥ नत्वा कपीशां चरणारविंद कायेन वाचा मनसा तथैव। मे रामदूत कृपया करोसि वात व्यथारोग दूरिं कुरुष्व ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

सुमिरो सीताराम पद अरु लछमन बलधाम।
वार वार कर जोर के तिनको करो प्रनाम ॥ १ ॥
बंदो श्री कपिधीर पद पवनतनै बलपुंज।
सीय सहित रघुवंसमनि बसत जासु उर कंज ॥ १ ऽ
करो मंगलाचरन को वार वार सिर नाइ।
"जनगुपाल" इहि हेत ते वात रोग मिटि जाय ॥ २ ॥
जो तुव आनन मानिहै वात रोग की पीर।
तौ हौ काहि पुकारिहो सुनहु महाबल वीर ॥ ३ ॥

।। दंडक ।।

केसरी किसोर को प्रताप भूरि प्रगट जग नेकहू न डरत जो लषत षल भीर को।
राम नाम हिये राषि अतिही गंभीर आप रन मे विसारद कहो कपि समान धीर को।
गावत ब्रह्मादि देव नारद सारद समेत आवत जो सरन तासु हर्ता तन पीर को।
वार वार आरत पुकारत है "जनगोपाल" एक मेरे तो भरोसो जान हनुमान बीर को।।

।। १ ।।

वात विथा तब घेरि लियो नहि सूझत नेकहु काहि निहारे।
जंत्रहु मंत्र अनेक किये अरु भेषज ते नहि मानत हारे।
लंक उही छन एक मे नाथ वसानन की तुम वाग उषारे।
श्री रघुवंश कुमार के दूत राषहु पीर के राषनहारे।। २।।
भूरि प्रताप विराजत है गुन गावत नारद सारद वानी।
लंकिनि मारि निवारी सिया दुष बाग उषारे सो सब जानी।
मान मथ्यौ दससीसहि को अरु अच्छै छय कियो ई सब पानी।
"दासगोपाल" पुकारत आरत वात व्यथा तन काहे न हानी।। ३।।

अंत––सीस कबो कर आइ गहै पुनि पीठ मै कील सी वेत ठठाई।
घीच कबो मुख कोष हृदं अरु पेट मै सूर उठै बहुताई।
आइ गहै कटि जंघ कवो पद गाठहु गाठ अधिक्क पिराई।
श्री रघुवंस किसोर के दूत जू नाससु वात विथा तन छाई।। ४।।

।। दंडक ।।

कीधौ कलिकाल पाइ अतिही प्रचंड भई कीधौ पूर्व कर्मन ते व्यथा आइ लसी है।
कीधौ कोऊ दुष्ट ने कियो कछू यंत्र मंत्र कीधौ कछू पास आइ पीर होइ बसी है।
कीधौ कोउ देव कौ कोप होइ छायो तन नेकहू न जानी जात अंग अंग कसी है।
रावरे कपीस गोपाल अति विहाल देषि तेरो दास पालै कष्ट बडो या हसी है।। ५।।

:o: :o: :o:

..................निवाही प्रीति परकासी।
श्री हनुमंत विनै सुनिये "गोपाल भनै" जग होइ न हासी।।२६।।

इति श्री हनुमताष्टक संपूर्ण ।। चैत्रे मासे शुक्ले पक्षे तिथौ ४ गुरु वासरान्वितायं संमत १८६५ ।।

विषय–– **विजयाष्टक**

विजया (भंग) का गुणगान किया गया है।

हनुमताष्टक

बातरोग हरने के संबंध मे हनुमान जी की स्तुति की गई है।

विशेष ज्ञातव्य––"विजयाष्टक" और "हनुमताष्टक" इन दो रचनाओ का एक ही विवरण लिया गया है। रचनाकाल किसी मे भी नही दिया है। लिपिकाल दोनो का सवत् १८६५ है। रचयिता का नाम 'जन गोपाल' या 'दास गोपाल' है। इनकी रचनाओ से पता चलता है कि ये भंग के सेवी तथा हनुमान जी के भक्त थे। इन्हे सभवत. वातरोग की व्याधि थी जिसके निराकरण के लिये इन्होने 'हनुमताष्टक' रचा। शेष परिचय अज्ञात है। ग्रथ स्वामी से रचयिता के सबंध मे निम्नलिखित बाते ज्ञात हुई :––

"रचयिता बिरोही स्टेशन (जि० मिरजापुर में विंध्याचल से एक स्टेशन पच्छिम) से आकर ग्रंथस्वामी के बाबा प० हरिहर जी के पास रहने लगे थे। उनके कोई न था। वे हनुमान

के बड़े भक्त थे । एक दिन बिना पूजा किए कचहरी चले गए तो हनुमान जी बड़े रुष्ट हुए और उन्हें बात रोगी बना दिया ।"

संख्या ६१. गोवर्द्धन चरित्र, रचयिता--गोपाल दास (स्वर्णकार), कागज--देसी, पत्र--३६, आकार--७½ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--३६६, खंडित, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० कमलनयन जी हरानिया गौड़, मोहल्ला--अहैयापुर (म० नं० ७६१), पो०--इलाहाबाद, जिला--इलाहाबाद ।

आदि--..............................

...लित भाल विसाल सोहत तिलक केसर के दिये ।
जास कुंडल कान राजें नैन षंजन कढ़िये ।

:o: :o: :o:

हमहि कौन सुरपति ते काजा । लही छीर की षग दुहु राजा ।
जाको कौन कर्म सुनु देवा । लहहि मद्य फल करि तसु सेवा ।।
सुनहु तात पुनि औरहु वाता । रचे विचारि तीन गुन धाता ।।
रजगुन ते जग उतपन करही । सतगुन ते पालन मन धरही ।।
प्रलै तमोगुन ते पितु होही । जगत विदित यह बात न गोई ।।

।। दोहा ।।

सवं रजोगुन मूल ये अंवर जलद समाज ।
जल वरषत जग जिअतु सव कहा करतु सुरराज ।।

मघवा लषहि पयोजन काहा । धेनु विप्र पूजहु नरनाहा ।।
जो पितु मो मत नीका जानहु । तौ गिरराज हेतु मष ठानहु ।।
नंद आदि ब्रज गोप सयाने । सुनि प्रभु वचन सबै हरषाने ।।
जानि भाग निज नृप तन धारी । उपदेसत लषि दसा बिसारी ।।

:o: :o: :o:

अंत--

गोवर्द्धन मष सुरपति क्रोधा ।
कहेउ वरनि जस मति परबोधा ।।
यह लीला जो सुनी सुनाई ।
सब सुष लहि जल भीति न पाई ।।
ललन लडैती चरित अनूपा ।
सर्ब काल निर्वान सरूपा ।।
जो गैहै करि दृढ़ बिस्वासा ।
सो पैहै वृंदावन वासा ।।

।। दोहा ।।

बकता श्रोता सबन को करैं सप्रेम प्रनाम ।
जथा उचित "गोपाल" जन है किंकर विनु दाम ।।

इति श्री स्वामी गंगा विस्नु गोसांई चरनांवुज चंचरीक गोपाल दास सोनंकार विरचिते गोवर्द्धन चरित्रे भाषा टीकायं संपुरनं ।। समाप्तं ।। सुभमस्तु ।। दोहा ।। जो न अचलता लहहि मन जन गोपाल वे जान । ऐसे थल कहु कौन सो जहाँ न स्याम सुजान ।।

सहज सयाने संत जे राष्यो नैन बसाय ।
सबै लषत गोपालमैं जहाँ तहाँ मन जाय ।। २ ।।

हिवं गगन रवि प्रेम सुचि उदै होइ जब प्राय ।
तब गोपाल कहु कौन विधि नेम तिमिर ठहराय ।।३।।
बड़े बड़ाई ना लहै गुन बिनु जनगोपाल ।
मान सरोवर काग रहि होत कि कतहुँ मराल ।। ४ ।।

विषय—भागवत पुराण के अंतर्गत गोवर्द्धन चरित्र का अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के प्रारंभ का पत्र खंडित है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । पुष्पिका के पढने से पता चलता है कि पुस्तक ग्रथकार के हाथ की लिखी है क्योकि अन्य लिपिकर्त्ता का उसमें नाम नही आता ।

रचयिता गोपालदास है । ये जाति के स्वर्णकार थे । गगा विष्णु गोसाईं के ये शिष्य थे । अन्य परिचय नही मिलता ।

संख्या ६२क. गुरुहरि भक्ति प्रकाश, रचयिता—गोपालदास, निवासस्थान—देवगढ़ (मेवाड़), कागज—देसी, पत्र—१६ (१४ से ३२ तक), आकार—८।। × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) —३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ६३, पृ० स० ३ ।

आदि—श्री द्वारिकाधीशो जयति ।। दोहा ।।

रंचक पालन अरु हरन विधि हरि हर बसराइ ।
पै न काज कछु करि सकै बिन गनेस के नाँइ ।। १ ।।

छप्पै ।। एक दंत दसंत सर्व सुख संत लहावन ।
बुद्धिवंत बलवंत जनहि गुनवंत कहावन ।
सिंदुर भाल विसाल बाल ससि की छबि छाजै ।।
मुक्त माल गर पेषि जाल उडगन दुति लाजै ।
गोपाल दास कह लों कहै गुन अनंत वर अस्ति के ।
भवहरन महा मंगल करन चरन चारु गन पत्ति के ।। २ ।।

मध्य—पृ० २३ छप्पं ।।

यह भव सिंधु अपार पाप पानिप सौं पूरै
तृष्णा ता सुत रंग चलै उत्तंग अतूरै ।
मोहादिक तहं भौर भ्रमहि भूमि कहिन भूमावै ।
राग दोष जहाँ ग्राह राह तिनसौं को पावै ।
दिन आउ चालु ठग काल डर घाट गोपालन वुस्तरो ।
गुरु भक्ति भाव षेवा सुहरि नाम नाव चढ़ि उत्तरौ ।।५२।।

अंत—कवित्त—

छप्पन हूँ भोजन न राजी मे सुजोधन के विदुल की भाजी खाई राजी ह्वै संवारे की । कहत गोपाल ध्यान आवै न मुनिंदन कै अहिर विचारे की । करै रसख्याल ह्वै दयाल कूबरी सों बाल देखबे कौं ररै सुरपाल के अखारे की क्यो करि रिझावै उपजावै उर प्रीति ऐसी सुनिए सुनीति स्याम साहिब हमारे की ।।१००।। दोहा ।। मति माफिक गुर हरि सुजस गायो दास गुपाल । लेहि सोधि साधू सुजन जिनकी सुमति बिसाल ।।१०१।। इति श्री गोपाल दास जी विरचितं श्री गुरु हरि भक्ति प्रकाश संपूर्ण ।। २ ।।

शुभमस्तु

विषय—गुरु भक्ति विषयक वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—इसमे पहले "गुरु भक्ति चन्द्रिका" बाद मे प्रस्तुत पुस्तक, और अंत मे २१ पद्य फुटकर विषयक लिखे है।

संख्या ९२ख. गुरु भक्ति चन्द्रिका, रचयिता—गोपालदास, कागज—देसी, पत्र—१३, आकार—८॥।×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२१, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० वं० ८३, पृ० स० ३।

आदि—श्री द्वारिकाधीशोजयति ॥ दोहा ॥

जय जय जय मंगल करन सदा द्वारिकाधीस।
ब्रह्मादिकहिये बोलहि जिन्है नवागत सीस॥१॥ **कवित्त**—
कोटि अरविंद छबि पुंज सो मुखारविंद कुंडल कलोल सह सुंदर करन मैं।
महा बड भाल मोर चंद्रिका रसाल छबि जाल छहरत हाल सुखद धरन मैं।
नासिका बनक बनमाल की झलक अलिमाल से अलक पलक बरन मैं।
एक ही सरन भव दाम उद्धरन महा मो मन अटकि द्वारिकेस के चरन मैं।२॥

मध्य—पृ० ८

छप्पै। श्री गुरु हरि के रूप सदा हमरै सु सहायक।
श्री गुरु परम रसाल भक्ति नवधा सुखदायक।
श्री गुरु आनँद कंद वचन अमृत जिमि बरषत।
श्री गुरु दरसन पाय हिये गोपाल सु हरषत।
गुरु देव देव सबतें बडे निरखि महा करुना करन।
भव जलधि अनंत अपार श्री व्रज भूषन तारन तरन।६७।

अंत—जय सब जल्प विचार शिल्प मद्रा सब राजहु।
प्रादक्षिन गति सकल भक्ति आहुति सुभ साजहु।
सयन सु सुभग प्रनाम ध्यान करि नयन विषय सब।
आतम सुख सब अर्पि करहु आनंद अधिक जब।
गोपाल मानि बड भाल तँह बिलसेत सुभ विधि विधि धरहु।
व्रज भूषनेस गुरु को सु करि नाम नाम अर्प्पन करहु।१११।

इति श्री गोपाल दास विरचितायां गुरु भक्ति चंद्रका समाप्ता॥१॥

विषय—गो० श्री व्रजभूषण जी गोपालदास जी के गुरु थे इसलिये इन्होने उनका वर्णन किया है।

संख्या ९३. श्री नाथ जी की सेवा विधि, रचयिता—गो० श्री गोपिकालङ्कार जी, कागज—देसी, पत्र—८२, आकार—६।×७॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१६, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० वं० ९१, पृ० स० ६।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री मद्गोस्वामी द्वारिकेसो जयति ॥

श्री नाथ जी के यहां सेवा शृंगार सामग्री की रीति लिखे हैं। चैत्र शुक्ल १ कूं नये संवतसर को उत्सव हैं ता दिन शैया की सुपेती छींट की बिछेबंटा भी तरह चार बिछे सुजनी छींट की शैया पे बोछे। छापा के सेला संया पे पीठक में ओढे। वस्त्र लाल छापा सुनेरी कुलह कसूंभी ताके भीतर खिड सुनेरी वाग खुले बंद को तनिया कसूंभी अभ्यंग जोडी हीरा को आभरण सब उत्सव के

मध्य--पृ० ४६ ॥

धनतेरस कूं वस्त्र हरी जरी के चारु चोरा छजेदार ठाढे वस्त्र लाल चन्द्र का सादा बिछवाई टाट बंद की गोकुल दास षटाऊ वाली लाल जोडी लाल उत्सव की जो लाल आभरण उत्सव के होय सो तों उत्सव में सूधरावने सिर पेच दूसरे हिंडोरा कू धरे ता प्रमाण और ३ थागदार माला तथा और हूं दोय तीन मोती की माला उत्सव के सूधरावनी सादो बालकन की माला कली जूही आदि नित में सू धरावने शृंगार वरन माला ही करनो चुबक वेसरनख भूषण तिलक ये उत्सव के आरसी काका श्री बल्लभ जी वारी, वेणुवेत्र हीराकी दूसरो पन्ना को भोग सब सोने के बासनन में आवें। चन्द्र का सादा पाटया बडे टूक के, फेनो दूध का कटोरा खीर संज्याव की खारि चोकठा हीरा को। सांझ कूं सब साज जदावको निकासना खंडरूपों के दोय रूप चतुरदासी कूं तिलक होयकि अभ्यंग होय।

अंत--पिछवाई हाडी पाटीया बडे टूक ग्वाल नहीं होय सवेरे कों संध्या भोग भलो आवें, कसूंभी कुल्हे हीरा कंठी ऐहो धरें हीरा पोलते समे बडो करना रितु अनुसार उथावनों पहेरावनो। इति श्री नाथ के इहां की सेवा को विधि समाप्त भई सब वडेन की कृपा सूं ६ ॥ श्री ६ श्री गिरिधर जी महाराज के चरणारविंद मे साष्टांग दंडवत् सदा-मूखिया जी सूं जै श्रीकृष्ण सांचोरा बलदेवजी ने बताई ता प्रमाण श्री बल्लभाचार्य जी के वंश मे प्रगट भए काका श्री बल्लभ जी तिनके मुख्य वंस में प्रगट भए श्री मथुरानाथ जो सुत श्री द्वारिकेस जी महासथ सुत श्री गोपिकालङ्कार जी ने कृत शुभमस्तु ॥

विषय--श्री नाथ द्वारा में विराजमान श्री नाथ जी की बारह मास की सेवा विधि वर्णित है।

संख्या ९४. कवित्त, रचयिता--श्री गोविद या गोविद, कागज--देसी, पत्र--९, आकार--१०$\frac{७}{१६}$ × ४$\frac{४}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--२६७, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम-मीरजहाँपुर, पो०-मिडारा, जिला-इलाहाबाद।

आदि--॥ श्रीः पातु ॥

बारे हैं महेश के दुलारे जगदम्ब जू के योग युगति वारे गजराज सो दतारे हैं।
तारे हैं अनेक कों सुधारे बुद्धिमंत कै के केतिक सघारे अघकारे महि भारे हैं।
भारे है सिंदूर सों सुढारे शिर सुंडयारे संत सुखकारे दोऊ नैन रतनारे है।
न्यारे है लोक हूं तें विपति विदारें सदा दास "श्री गोविन्द" हूँ की पति के रखवारे है ॥ १ ॥

लाल गिरि लली जू के भाल शशि बाल सोहै भाल मुकुताल गले हाल हलकतु है।
कुंडल विशाल लाल लोचन कृपाल जू के शोभित सुसुंड सिद्धि झुंड झलकतु है।
बाहु संतपाल चारु चरण प्रवाल मानो कीरति मराल "श्री गोविद" दरसतु है।
काल ते कराल कलिकाल जाल काटबे को धवल मुडाल शंभु गोद किलकतु है ॥ २ ॥

कृपासिंधु ते न छानी भालचन्द्र ते न ध्यानी सुरराज ते न मानी प्रजापति ते न ज्ञानी है।
धनद तें न मानी कोऊ दूसरो धनेश और जलद ते न मानी भूमि बरसन को पानी है।
एते गुन खानी जाहि बेदहू बखानी सो तेऊ उर आनी शंभुरानी अनुमानी है।
जानी नहीं जात श्री गोविन्द गति मातु केरी विन्ध्याचल रानी ते न दूजी महारानी है ॥ ३ ॥

दान ते न दूजो जग आन अरथ साधन कों ध्यान न दूजो पद पंकज पहिचानी है।
मान तें न दूजो सुख आन भूमि मंडल मों ज्ञान ते न दूजो कछू मुक्ति की निसानी है।
दूजो तो कुबेर तें धनेश तिहूँ लोक नाहि ऐसो तो विचारि श्री गोविन्द हिये आनी है।
राम तें न दूजो कोऊ भयो महाराजन मों विन्ध्याचल रानी तें न दूजी महारानी है ॥ ४ ॥

:०: :०: :०:

अंत—

जैसे पछि पक्षहीन जननि वोर सोर करं धाय ववरि माय जाय ताहि लीजिए ।
जैसे बछ दूध को वुभुछ क्षुक्ष पोषिबें को चकित चरति सु मातु तापं श्रुति दीजिये ।
जैसे व्युषित कंत को पतिव्रता बिचेत होत आवन की पाती पति धावन सों भेजिये ।
वैसे चार चरनन कों चाहत गोविंद मंद रामचद्र चंद तूं चकोर मोहि कीजिये ॥४६॥

:o: :o: :o:

मैं मुरलीधर की मुरली लई तब मेरो लयो मुरलीधर माला ।
मैं मुरली अधरा लौ धरी तब ग्रीव धरेउ मुरलीधर माला ।
मैं मुरलीधर की मुरली धरि तब मेरो दयो मुरलीधर माला ।
मैं मुरलीधर की मुरली भई तब मेरो भयो मुरलाधर माला ॥५०॥

विषय—भक्ति विपय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल दोनों अज्ञात हे । रचयिता का नाम श्री गोविंद या गोविद है । इनका अन्य वृत्त अप्राप्त है । परन्तु स्थानीय पूछताछ से विदित हुआ कि ये ग्रथ स्वामी के पूर्वजों में से थे ।

संख्या ६५. १. गोवर्द्धन लीला, २. उत्सव के प्रकार, ३. वैष्णवों के नित्यकर्म, ४. गोवर्द्धन लीला, रचयिता—गोविद, कागज—देमी, पत्र—२७, आकार—८।× ६ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भडार, विद्या विभाग, कांकरोली, हिंदी, ब० ६, पु० स० २ ।

आदि—गोपी जन बल्लभाय नमः ॥ अनकूट उछव । राग बिलावल

व्रज में एक बडो हे गाव । श्री गोकुल जाको कहिये नाव ॥ १
नंद महरि जाहां कहो राजा । मिलि बेठे सब गोप समाजा ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १

श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ अथ उत्सवन के प्रकार लिखियत हे ॥ तहां प्रथम जन्माष्टमी प्रकार ॥ जन्माष्टमी सूर्योदय वेधरहित करनी जो सप्तमी सतावन घडी उपरांत अठावन घडी के समीप होइ तो सूर्योदय वेध जाननो । ता दिन व्रत उत्सव न करनो ।

पृ० १४ (वैष्णव नित्यकर्म)

॥श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ श्री गोकुलनाथ जी वचन सो जो वैष्णव कों जो करनो सो लिखियतु हे ॥ चार घरि रात्रि रहे तब उठनो भगवत नाम को स्मरण करे । पाछे शुभ वस्त्र पेहरि आछमन करि चरणामृत लेईये ।

अंत—गोवर्द्धन लीला सूरदास जी के—पृ० ६५

सब सामग्री अर्पि गोप गोपिन कर जोरे ।
अगनित कीने स्वाद दास बरने मति थोरे ।
इहि बिधि पूजा कीजिये कह्यो सबनि समुझाय ॥
स्याम कह्यो सूरदास सों मेरी लीला सरस बनाय ॥१५॥ कह० ॥

विषय—इसमें—१. गोवर्द्धन लीला, २ गोचारन के पद, ३. विविध कीर्तन, ४. उत्सवन के प्रकार, ५. वैष्णव नित्यकर्म, ६ उत्सव के पद और ७. गोवर्द्धन लीला नामक ग्रथ है ।

गोवर्धन लीला में—अन्नकूट सबधी वर्णन है ।

उत्सव प्रकार में—पुष्टिमार्गीय मदिरो मे उत्सवो का प्रकार वर्णन है ।

वैष्णव नित्यकर्म में—वैष्णवो को प्रातः से सायंकाल तक करने योग्य कर्मों का वर्णन है ।

संख्या ९६. "शब्द विष्णु पद", रचयिता—गोविंददास, कागज—देसी, पत्र—४, आकार—८$\frac{8}{10}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—पं० सुदामा पाण्डेय, ग्राम—चतुरापुर, पो०—भीमापार बाजार, जिला—गाजीपुर ।

आदि—सीताराम १

श्री गनेशाये नमः ॥

शवदः बीसुनपदः ॥

सीव सम सनकादी आदी-ब्रह्मादीक शुमिरी सुमिरी भए पाराएन ॥
सीव शारद नारद चतुरानन शुमिरी शुमिरी भए पाराऐन ॥
राम प्रसाद अजोध्या वासी भजन करत भए पाराऐन ॥
:o: :o: :o:
जौ मन प्रीति गोवींद जी से लावहु छुतमन की चिंता
"गोवीन्दश" म रोम रोमतन मन वच क्रम सेवा री
देहु ज्ञान दीया "गोवीन्दाश" ग्झान की वर्ती वरन उर लागी
नेवन से सव शुभ्का "गोवीन्दाश" महीत अनहीत कोउ जग नाही एह दोउ मेरो मीता
सतगुरु दास आस चरनन्ह की मरन जीवन दोउ शुभ्का ॥ २ ॥
:o: :o: :o:

अंत—

अैठा बान्हे पंच शवारे तेल लगए जुलुफन मे
एक धरी आवहींगे वंदे कागा वैलो कहाँ तन मे
कौड़ि कौड़ी मञा वटोरेन्ह जोरि धरेन्ह वरतन मे
हरी के नाम भुलो गे शाधो मन भुलानवोधन मे
:o: :o: :o:
आइ वुढाइ तन शरदी गरमी शीती कफ भइ तन मे
आऐ वेवान प्रान लै भागा हुकुम भऐ है छन मे
डुवे शे उतीराऐ न पावही डंड लगे शीरनन्ह मे
कहे "गोविंदास" शुनो भाइ शंतो लंबी धोती जे नर ढीलही ते का जुभव रन मे ॥
:o: :o: :o:

विषय—संत मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या ९७. मुमोक्षशास्त्र, रचयिता—गोविंद पंडित (काश्मीरी), कागज—देसी, पत्र—२९६, आकार—६॥ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९९७, खंडित, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामसुंदर पाण्डेय, ग्राम—पांडेपुर, पो०—लेवरुआ, जिला०जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ वैराग्य प्रकरण श्रवण स्मृतभाषालिख्यते ॥ सत चित आनंद रूप जो आत्मा है तिसकों नमस्कार है ॥ कैसा है सतचित आनंद रूप आत्मा सो कहत है ॥ जिसते इह सर्व भासते है । अरू जिस विषे सर्व लीन होते है । अरु जिस विषे सव इस्थित है । तिस सत आत्मा को नमस्कार है ॥ ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय ॥ अरू द्रष्टा दर्शन हदृश्य अरु करता करण क्रिया जिस कर सिद्ध होते है ॥ अैसा जो ज्ञा रूप आत्मा है ॥ तिसको नमस्कार है ॥ जिस आनंद समुद्र के......खंडित... ।

:o: :o: :o:

......नत कुमार जो हैं निहकाम ॥ सो ब्रह्म पुरी विषे बैठे थे । अरु त्रिलोकी के पति जो हैं विसनु भगवान जो बैकुंठ ते उतरे ॥ ब्रह्मपुरी विषे आत ॥ तब ब्रह्मा जी सहित सर्व सभा उठ खड़े हुए ॥ अरु पूजन कीया ॥ अरु सनत कुमार कछु पूजन न कीया ॥ तब तिसको देख करि बिस्नु भगवान बोलत भए ॥ हे सनत कुमार तुमको निहकामता का अभिमान है ॥ तातें तू काम कर आतुर होवेगा ॥ अरु नाम कार्तिक तेरा नाम होवेगा ॥ जब विस्नु भगवान असे कहा ॥ तब सनत कुमार बोले ॥ हे विस्नु तुमको सर्वज्ञता का अभिमान है ॥ तेरो सर्वज्ञता कोऊ काल निवर्त होवेगो ॥ अरु अज्ञानी होवेगा ॥ हे राजन एकतो इह स्राप हुआ और भी सुन ॥ एक काल में भृगकी भार्जा जाती रही थी ॥ तिसके वियोग करि के उहत पाइवान था ॥ तिसको देखकर विस्नु जी हसे थे ॥ हे विस्नु मेरे ताईं देख करि तुम हासी करी है ॥ मेरी न्याईं तू भी इस्त्री के वियोग करि आतुर होवेगा ॥ अरु एक देवसर्मा ब्राह्मण स्राप दीआ था ॥

:o: :o: :o:

वालमीकोवाच ॥ दिवि जो है देवलोक अरु भूम जो है पृथिवी लोक ॥ अरु आकाम लोक त्रिलोकी को प्रकाशता है ॥ अरु अंतर बाहर आत्मज करि पूर्ण है ॥

:o: :o: :o:

अंत—हे राम जो ज्ञानवान पुरुष को शम आदिक गुन स्वभावक आन प्राप्त होते है । अरु अज्ञानी को अभ्यास करिके समादिक प्राप्त होते हैं ॥ तिसते अनंतर आत्मज्ञान की प्राप्त होती है ॥ जैसे छाती को पालना इसत्री करती है । अरु ऊंचे शब्द भी करती है तिस करिके पछियों को उड़ावती है ॥ जब इस प्रकार पालना करती है ॥

हे राम इस मोक्ष उपाइ शास्त्र को आदि ते ले करि अंत परजंत विचारै ॥ तब भ्रांत विर्वत हो जावैगी ॥ अरु धर्म अर्थ, काम, मोक्ष सर्व पुरुषार्थ की सिधता होती है ॥ अरु जस होता है इह मोक्ष उपाइ शास्त्र बोध का परम कारण है ॥ जो शुध बुधवान पुरुष इसको श्रद्धा संजुगत विचारैगा ॥ तिसको सिघ्र ही आत्मपद को प्राप्त होवेगी ॥ तातें इस मोक्ष उपाइ का भली प्रकार अभ्यास करो ॥ इति मुमोक्ष प्रकरणे समाप्तम् ॥

इस मुमोक्षशास्त्र भाषा फते सिंग के भावे वास्ते गोविंद पंडित काश्मीरे ने किया है ॥ संवत् १९०२—.....................

विषय—सांसारिक माया से छूटकर मोक्ष प्राप्त करने के उपायों का वर्णन ।

संख्या ६८क. पद, रचयिता—गोविंद स्वामी (अष्टछाप) कागज—आधुनिक रूलदार, पत्र—२५३, आकार—१०३/४ × ८३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७१५, खंडित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह ८१५१८९ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—राग विभास

मदन मोहन पिय भयो न भोर ।
प्राची दिसि नहि अरुण देखियत और सुनियत नहि खगन रोर ॥
अहिन केउ परस्पर देखिवे पन पिय चि...का नार अनि ॥ भो ।
"गोविंदप्रभु" रस मन परस्पर प्यारी के वचन लीनो चोर ॥
तू आजु देखि री मदन मोहन ए वलवीर राजें मदनमोहन मोहन पिय मनि मंदिर ने बैठे निकसि आइ छाजें ।

लटपटी पाग उरमाल परगजी पटलयत नत मधुप मधु काजे ।
"गोविंद प्रभु" के जु सिथिल अरुन दृग देख को कोटि मदन लाजें ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

अंत—रागमलार

कब की कहत प्यारी ।
अजहू रिस गई मोहन मोन धरि कहत कछू नरी ।
कानिन कछुक रति सनमुख ही लरति ज्यों ज्यों बजी त्यों त्यों भई अति चुनरी ।।
बावरी भई री प्यारी मेरी जान पिय कह्यौ कहूं कौन कह्यौ माने तुव हृदै सुंनरी ।
"गोविंद प्रभु" पीय चरन परसि के अंकों भरि मिले रंग रह्यो जैसे हरद चूनरी ।।२५२।।
इति श्री गोविंद स्वामी के पद सम्पूर्णः ।।

शुभम्

विषय—श्रीकृष्ण की भक्ति तथा व्रज क्रीडाओ का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख आधुनिक रूलदार कागज के एक ही ओर लिखा गया है । समस्त २५२ पद है । एक पत्र मे एक पद है ।

संख्या ६८ख. गोविंद स्वामी के पद, (२५२), रचयिता—गोविंद स्वामी, कागज—देसी, पत्र—५१, आकार—६। × ८।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, रचनाकाल—सं० १६४० के पूर्व (अनुमान), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, विद्या श्री विभाग, कांकरोली, पह० ब० ४६, पु० सं० २ ।

आदि—

।। श्री कृष्णाय नमः ।। अथ श्री गोविंद स्वामी के पद लिख्यते ।। राग विभास
मदन मोंहन पिय भयो न भोर ।
प्राची दिसतें अरुन देखियत और सुनीयत नही खगवन रोर ।। १ ।।
अहित कंठ परस्पर देखियत पिय विश्लेस कातर अति जोर ।
गोविद प्रभू रस मत्त परस्पर प्यारी के बचन लीनो चित चोर ।। २ ।।

मध्य—पृ० २२ राग गौरी ।।

आवत वन ते चारें धेनु । सरग संग श्रुति वदेत मधुप गन मुदित बजावत बेनु ।। १ ।। अमृत मधुर धुनि पूरत श्रवनन उठि धाई सकल तजि ऐन ।। हृदे लगाई व्रजेश्वर अंचल पट पोंछत मुख नेन ।। २ ।।

उन मर्दन मंजन करवावत भूखन पीत वसेंन ।
गोविंद प्रभू खटरस भोजन करि विमल सेज सुख सेंन ।। ३ ।।

अंत—राग वसंत—

बहरत बन सरस बसंत स्याम संग जुवती जूथ गावे लीला भिराम ।। १ ।।
मुकलित नूत सघन तमाल जाई जुही चंपक गुलाल ।
पारिजात मंदार माल लपटात मत्त मधप करनि जाल ।। २ ।।
कुटज कदंब सुदेवश ताल । देखि मन रीझें मोहन लाल ।
अति कोमल नूतन प्रवाल । कोकिल कूजत अति रसाल ।। ३ ।।
ललित लवंग लता सुवास । केतुकी तरुनी मानो करत हास ।
इहि विधि लालन करो विलास । वारनें जाय जन गोविंद दास ।। ४ ।।२५२।।

इति गोविंद स्वामी के पद संपूर्ण ।। पद २५२ ।।

विषय—श्री पुष्टिमार्गीय मदिरो मे गाए जाने वाले भक्तिविषयक कीर्त्तन ।

संख्या ६८ग. कीर्तन संग्रह, रचयिता—गोविंद स्वामी, निवास स्थान—गिरिराज, कागज—घोसुडा, पत्र—१०५, आकार—६ × ४॥। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४० के पूर्व, लिपिकाल—सं० १८६३, प्राप्ति स्थान—सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० सं० १६, पु० सं० ३।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ श्री गोविंद स्वामी के कीर्त्तन लिख्यते :: राज विभास :॥ तज चपक ॥

मदन मोंहन पीय भयो न भोर ॥
प्राची दिस नहीं अरुन देखियत ओर सुनीयत नही खग वन रोर ॥ १ ॥
ग्रहित कंठ परस्पर दंपति पीय विश्लेस कातर अतिजोर ॥
गोविन्द प्रभू रस मत्त परस्पर प्यारी के वचनन लीयो चित चोर ॥ २ ॥

मध्य—राग गोरी ॥
अथैया बेठे हे ब्रजराज ॥
मागद सूत पुरोहित ओर सब बड़े बडे गोप समाज ॥ १ ॥
राम कृष्ण निकसे मंदिर ते पीछें लागी माजु ॥
हसि मुख चूंबि उछंग लीये गोविंद पूरन भये काजु ॥ २ ॥

अंत—राग बीहा गरो ॥
आवत जात हों हारि परीरी ॥
ज्यों ज्यों प्यारो वनिती करि पठवत त्यों त्यों तू गढ़मान चढ़ी री ॥ १ ॥
तिहारे बिच परे सो बावरी हों चोगांन की गेंद भई री ॥
गोविन्द प्रभू सो मिले क्यों न भामिनि सुखद जामिनि जात वहिरी ॥ २ ॥
इति श्री गोविंद स्वामी के कीर्त्तन संपूर्ण ॥
दसकत जीवन दास के मिती महासुद १ सं० १८६३ के.

विषय—पुष्टिमार्गीय मंदिरों में समय समय पर गाये जाने वाले कीर्त्तनों का संग्रह।

संख्या ६८घ. श्रीनाथ जी के शृंगार के वस्त्रन के नोरग, रचयिता—गोविंद स्वामी, कागज—देसी, पत्र—५, आकार—३॥। × ६। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६४० के पूर्व (अनुमान से), लिपिकाल—सं० १८३५, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ६२, पु० सं० ३४।

आदि—श्री कृष्णाय नमः। अथ रंग लिख्यते।
हां हो लालै लाल के लालै लोचन लालै के मुख लालै बीरा।
लाल बनी कटि काछनी लाल के लालै सीस मुकेशि चीरा।
हां हो लालै पाग सोहे अति सुंदर लाल खडे जमुना तट तीरा।
गोविंद प्रभु की लीला दरसन लाल के कंठ विराजत हीरा ॥ १ ॥

मध्य—
हां हृप धोरे मोंहन धोरे सोहन धोरे चंदन खोर दुसाला।
धोरे कडाकर हातन सोहे धोरी सोहे गल मोतिन माला।
हां हो धोरो दधि वेचन जात ग्वालनी जाय लुटावे नंद को लाला।
हां हो गोविंद प्रभु की लीला बरनी धोरी सोहे गलफूलन माला ॥ ७ ॥
जमुना किनारे किनारे प्यारो स्यामा धेन चरावे जमुना किनारे किनारे।

अंत—

हां हो वांके आसन वांके सिंघासन वांके तकियन की छबि न्यारी।
वांके रास विलास वने और बांकी वनी श्री. राधिका प्यारी।
हां हो वांके मंदिर कंचन के और वांकी बनी व्रज की व्रजनारी।
देखत नैंनन ताक रही झुक झांक झरोकन वांक विहारी।
जमुना किनारे किनारे स्यामा प्यारो धन चरावे जमुना किनारे किनारे॥ ६॥

इति श्री श्रीनाथ जी के शृंगार के वस्त्रन के नो रंग समाप्तः मिति जेठ वदी १४ संवत् १६३५ ई।

विषय—श्री नाथ जी के शृंगार के नौ रंग वर्णित है। ये पद शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय की सेवा पद्धति में विशेष समय पर गाए जाते है।

संख्या ६६. कलिजुग के "कवित्त", रचयिता—गोविद लाल (?), कागज—देसी, पत्र—१, आकार—२७ इच लम्बाई, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री राम जी, कलिजुग के कवित्त

राजन की नीति गई मिलन की प्रीति गई
नारी की प्रतीत गई जार जीय भायो है॥
पंचन के न्याव गयौ सांचम प्रभाव गयो
ससित को भाव गयौ झूठ हो सुहायो है॥
ईद्रन की वृष्टि गई भूमि सो अनिष्ट भई
सकल सृष्टि में विप्रीति वरसायौ है॥
कीजियें सहाय जू कृपाल गोंविद लाल
कठिन कराल कलि काल चलि आयौ है॥
हमने ही जे दरद्री भये संग्रही सन्यासी भये
जोगी संजोगी मन माया में भुलायौ है॥
तपी द्रुज भारी दिभचारी व्रह्मचारी भये
कपट को साजु कैसु लोगन बनायो है॥
ग्यानी जनमानी पुनि दंभी आरंभी भये
विरक्त जिन राग द्वेष आनि उपजायो है॥
कीजिए सहाइ जू कृपाल गोंविद लाल
कठिन कराल कलिकाल चलि आयो है॥

मध्य—

सूम भये स्वामी पुनि सेवक हरामी भये
कामी भये पंडित तिन तन मन ठैहैरायो है॥
छीन भये धर्मी अधर्मी ते प्रवीन भये
चाकर कुलीन अकुलीन धन पायो है॥
वौहरे भिखारी भये व्यौपारी लगरी भये,
मारि जमा और की दिवाला विषरायो है॥
पूसु घर सिपाही सूरवीर कहैत
चाकरी को छोडि देउ मान च्यो घटायो है॥

अंत—

मंनि भतीजो भानजी कू न बचावै
कुटिनी कू रीझि दाम देत न अघायौ है ।।
माय सौ लरत पाय सास के परत
निज नारी के कहै मै अनुसरत न सिहायौ है ।।
भैया किये न्यारे जमाई किये प्यारे
घर सारे रखवारे कुछ नेक न पुरायौ है ।।
कीजिए सहाइ जू कृपाल श्री गोविंद लाल,
कठिन कराल कलिकाल चलि आयौ है ।। ८ ।।

विषय—इसमें कलियुग की महिमा और जन साधारण पर उसके प्रभाव का वर्णन है ।

संख्या १००क. वेद गोरखनाथ का, रचयिता—गोरखनाथ, कागज—देसी, पत्र—५६, आकार—६¾ × ३¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५६ वि० (लगभग), प्राप्तिस्थान—पं० बेचनराम जी मिश्र, ग्राम—पंडित का पुरा, पोस्ट—जघई, जिला—जौनपुर ।

आदि—वेद श्री गोरखनाथ जी का लिषते ।।
बसती मह सुंन सुंन मह बसती तह अगम अगोचर ऐसा ।
गगन सिषर इक बालक षेलै वाका वपु वरन कुल कैसा ।। १ ।।

अदेष देषवा देषि चडवा अद्रिष्ट चडिवा ।। पापाल की गंगा ब्रह्मांड चडिवा ।। ताहा विमल जल पीइवा ।।२।। अलेष वरनि दोज दीपक जारीअले तीन भवन कर जोती । तिह प्रसाद त्रिभुवन सूकीअले चुग ले मांणीक मोती ।।३।। वेद नही सासत्र कतेब नही ।। कुरान पुस्तक नही बचिआ जाई ।। इस पद को कोई विरला चीनै ।। अउर सभ धंधे लाई ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत—एका एकी सिधा नमु दोए सिधु साधका ।
तीन चीर कटुं बानां दस वीस लसकरः ।।१५३।।
मनुमुष जाता गुर मुषि लेहु लोहु मासु अगनि मुष देहु ।।
मात पिता मेटे दाति ऐसा होइ बलोवै नाथ ।।१५४।।
इति श्री गोरषनाथ विरचिते श्री सहंश्रवेद संपूर्ण ।।

विषय—तत्व ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल महिम्नस्तोत्र के आधार पर संवत् १८५६ है, देखिए गीतासार का विवरण पत्र । ये ग्रंथ एक ही हस्तलेख मे है । रचयिता गोरखनाथ है ।

संख्या १००ख. गोरख ग्रंथ (?) रचयिता—गोरखनाथ, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—८½ × ३⅞ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४१३ (?), प्राप्तिस्थान—श्रीमती बच्ची मिश्राइन, ग्राम—रामपुर पंडिताइन, पो०—रामदयालगंज, जिला—जौनपुर ।

पत्र १

आदि—।। श्री गणेशाय न्मः श्री गोर्षो वाचें अवधू कोन हे नगरी कोन हे अस्यानः कोन

राजा कोन परधानः श्री गुरदत्तात्रे वाचे स्वामीः १ । काया नगरी हेर्द अस्थान मन हे राजा पवन हे परधानः श्री गोर्षा वाचे अ० कोन मुल कोन वेला कोन हे गुरु कोन हे चेला कौन तत्व ले करो अकेलाः श्री गोर्षो कोन मंगल ते आएं सीधा कोन मंगल ग्रहे वासाः कोन निवाने पानी पीवो कांहां तुम्हारा वास श्री गुरू सून मंगल ते आए साधा गगन मंगल चीर वासः: नवी नीवानि पानी पीए रुषे ब्रछे वासाः श्री गोषा कोन तुम्हारी धुणो वोलीए कोन फावमी आसन धारिः कुवारी गोवरी धुनी वीनी कोन अगन पर जालीः ४ : श्री गुरु० गगन मगल में धुणी हमारी वीवेकपा . . . ।

:o: :o: :o:

पत्र २

श्री गोर्षोः कोन दरिश्राव कोन दरिवेसः कोन गुरुं ने मुण्डे केसः
मागे भीक्षा भामो गांव कोन पूर्स का समरो नावः
श्री गुरुं० विल दरिश्राव एवन दरवेस ग्यान गुरू ने मुंडे केस
मांगे भिक्षा तारे गांव अलष पुरस का समरे नावः
श्री गोर्षोः कोन विसाते आएं सीधा कांहा राषो तुमारा भाव
धरती तुम्हारी वेहन भानजा कांहा रषोरो पाव
श्री गुरुः पूर्व विसाते जाएं सीधा पछम विसा रखो हमारा भाव
धरती हमारी वेहन भानजी पापी के सिर पाव
श्री गोर्षोः कोन तुम जोगी जोग जुगंता कोन तुम जोगी हे अवधूताः
माके षस्म के माके पूता न सन वांन कारोमः राजा किस कारण भएं जोगी अवधूता
श्री गुरुः हमही जोगी जोग जुगंता हमही जोगी हे अवधूता
पेठत षसम नीकलते पूताः नीसनवान कारो उराजा इस कारण भए जोगी अवधूताः
श्री गोर्षोः कहो तुम जोगी जोग जुगंता कहो तुम जोगी भांवर भूता
जव तुम्हारी माता कुंवारी जव कांहा रहते पूता
श्री गुरुः हमही जोगी जोग जुगंता जव हमारी माता कुंवारी जव हम रहते इहलोका

:o: :o: :o:

अंत--

श्री गोर्षोः कीने दीए मम कमल कीने दीनि झारि
कीने दीए भगवा वस्त्र कीने कीए ब्रह्मचारी
श्री गुरुः ब्रह्मा ने दीए मम कममंल सिव ने दीने झारी
वीस्नने दीया भगवा वस्त्र सतगुर ने कीने ब्रह्मचारी
श्री गोर्षोः कहो तुम ब्रह्मा ब्रह्मचारी कहो तुम हात पुस्तका होएं
फरोममधारीः कहो तुम पोथी कलावो कोन हंस की पुजा करो
श्री गुरुः हमही ब्रह्मा ब्रह्मचारी हमही हास पुस्तक लेह फरें मंम धारी
नाद विंद की पोथी चलावे परमहंस की पुजा करे जिसतें आत्म बोध ब्रह्म कहावेंः
श्री गो० . . . .
. . . . अपूर्ण . . . ।
१४१३

विषय--श्री गोरख और दत्तात्रेय गुरु का सवाद ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रंथ के दो ही पत्रे है । जिनकी आद्योपात नकल कर दी गई है। एक स्थान पर १४१३ लिखा गया है । पता नहीं यह सख्या क्या सकेत करती है । लिपिकाल तो यह हो नहीं सकता क्योंकि प्रस्तुत प्रति इतनी प्राचीन नही है । रचनाकाल हो तो हो ।

संख्या १००ग. गोरखबोध, रचयिता—गोरखनाथ, कागज—देसी, पत्र—४६, आकार—८¾ × ३¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५६ वि० (लगभग), प्राप्तिस्थान—पं० बेचनराम जी मिश्र, ग्राम-पंडितपुर, पोस्ट-मेंधई, जिला-जौनपुर।

आदि—ॐ० स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। अथ गोरख बोध लिषते ।।

।। गोरष उवाच ।।

स्वामी जी तुमतो गुरु हम तो सीष ।
सबद इक पुछवा दया करो कहवा मनहु न करवा रोसं ।
आरंभे चेला कसिवदरहु । सतगुरु होय सो पुछ कहु ।।

।। मछंद्रोवाच ।।

अवधू रहवा. वाट घाट रुष ब्रछ कि छाया ।
तजिवा काम क्रोध लोव मोह संसार की माया ।।
आया सुगुष्ट अनंत बीचारधा पंडत नदिरा । अलग अहार ।
आरंभे चेला अस बद रह । गोरष पूछ मछंद्र कहु ।।

अंत—अघेट चक्र का जाणे भेव । आप ही करता आपही देव ।
पन पवन साधते जोगेसरा ।। जरा पलट काञा होये न रागी ।। ये मछंद्र गोरष संवादा ।।
पठंते हरत पापा ।। पापन लियते ।। पुंन ना हरते ।। ॐ नमो सोउ गुरु मछंद्र नाथ ।।

इति श्री मछंद्र नाथ पादका नमोस्तुते ।।

इति श्री मछंद्र गोरष गोष्टे ब्रह्म गोष्टे ।। ब्रह्मग्यान गोरष बोध योग शासत्र संपूरणं ।। शुभमस्तु ।।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल संवत् १८५६ वि० है जो महिम्न-स्तोत्र के आधार पर दिया है, देखिए 'गीता सार' का विवरण पत्र ।

संख्या १००घ. गोरख कुंडली, रचयिता—गोरखनाथ, कागज—देसी, पत्र—५, आकार—११॥ × ५। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—पुरारा, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५५ के नर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० सं० १०७, पु० सं० १७ ।

आदि—।। ॐ० श्री गणेशाय नमः ।। अथ गोरख कुंडलि लिख्यते ।। नाभि विषे कुंडली सर्प के आकारि स्थित है । तिस विषे दस नाडी उर्ध गमनी है । अरु दसो नाडी अधोगमती है । पहिले चतुविंश नाडी है स्थूल ही निति न हो रहिनि सत्तसइ सप्ताधिक है तिना विषे दस नाड़ी श्रेष्ठ सभन तें बडी है ।

मध्य—पृ० ३ श्लोक ।। राग द्वेष तथा लजा भयं मोह स्तथैवच । नम पंच गुणाप्रोक्ता ज्ञातव्या वर वरणोन ।। टीका—

राग द्वेष लजा, भय मोह इतने आकास के गुण । पंच प्रकार प्रकृति है । शुक्ल पक्ष विषे आदि चन्द्रमा, कृष्ण पक्ष विषे आदि सूर्य । एक मते आदि लेसरि आदि ते तै का उदे है । चन्द्रमा के दिन उदे विषे । जे सूर्य नाडी चले । अथवा सूर्य के दिन उदे विषें चन्द्रमा नाड़ी चले तो असुभ होइ उदेग होइ । शुक्रवार बुधवार सोमवार इतने वारे चन्द्रमा नाडी चले ।

अंत--जीवे उ प्रीति मोदिन १६।२३।२६ चले तो महित १। जीवे उपरांति मरे दिन ३१। रात्र ३१। चले तो दिन ५ जीवे उपरांति मरे दिन ३३ रात्र ३३ चले तो उसी दिन मरे। इसि बात को जरिण योगी पुरुष है। चारममंक, पंच रवि-परमाणं ससि सूर्य गोरख बोले योगी योहि। जोतिक घटि मै मूलु। इति श्री गोरख कुंडली संपूर्ण समापत सुभ भवतु कल्याणमस्तु भगवान गाट...

विषय--प्रस्तुत ग्रथ मे योग की दृष्टि से शारीरिक स्थिति का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य--खुले पत्रे हैं। ऊपर "गोस्वामी श्री गोकुलनाथस्येद" लिखा है। इनका समय सवत् १८११ से १८५५ तक है।

सख्या १००ङ. सूक्ष्मवेद, रचयिता--नाथगुरु (? गोरखनाथ), कागज--देसी, पत्र--२२, आकार--६ × ३ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--२०६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--१८३७ वि०, प्राप्तिस्थान--प० वसिष्ठ उपाध्याय, पोस्टमास्टर, ग्राम व पोस्ट-चिरियाकोट, जिला-आजमगढ़।

आदि--श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वतीये नमः॥ श्री गुरुभ्यो नमः॥ श्री पीता-माताये नमः॥

ॐ वस्ती में सुंन्यं में बस्ती तहां अगम अगोचर ऐसा।
गगन मंडल मे बालक बोले तिसका नव धरोगे कैसा (? नाम धरोगे कैसा)॥ १॥
अदेख देखवा देख खबा चारिबा दृष्टराखेवा चीया।
तापाल की गंजा ब्रह्मांड चढीयवा तहां बल वीवल जल पीया॥ २॥
तो यांही इ आछे यांही आलोप यांही रचले भीने त्रीलोक॥
आछे संग बसे जीव ईस कारण अनंतरां जा योगेसर हुवा॥ ३॥
बेदेन सास्त्रे कतेबेन पुराणे पुस्तक न बंचा जाई।
ते पद जानंत कोई कले योगेस्वर और सभ धंधे लाये॥ ४॥

:o: :o: :o:

अंत--तिसरा खटपटी उपाचा दस पांच तहावां वाद। येका येकी सीधानं दोन सिध साद्ध का। चार पांच कुटुंवान'॥ दस वीस तहा लसकूरा मन मुख जाता गुरु मुंख ले। लोहू मास अग्न मुख दे॥१०॥

मात पींता की भेटे आससा होये बोलावे नाथ॥१६१॥
नाद नाद सभ कोई कहे नाद ले कोई बीला रहे।
नाद वींद है फिकी सीला जो साधे सो सिधो मीला॥१६२॥

इति श्री नाम गुरु का सूक्ष्मवेद॥ समापतं संपुरणं॥ सुभं भवतु॥ सं० १८३७। अश्वन् सुदी १४॥ गुरु लरवींत ब्राह्मण उदीच्य ज्ञाती टोल कीया गुजरातना पंडा मंगल जिसु तुमोहं जियेण लखितं शुभभवतु कल्याण मस्तु॥ जोगीतीर्थ नाथ पाठनार्थ परोपकार्थ तीर्थ नाथ नीं पोथी छे काशी मधे लखीछे॥

विषय--तत्व ज्ञानोपदेश वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--रचना काल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८३७ है। रचयिता का नाम नाथ गुरु लिखा है, पर ग्रथ को पढने मे गोरखनाथ विदित होता है। अब तक गोरख-नाथ के ग्रथो की प्रतियाँ सवत् १८५६ तक की लिखी मिली है। प्रस्तुत प्रति उनसे प्राचीन सं० १८३७ की लिखी है। लिपि बहुत अशुद्ध है, ठीक-ठीक पढने मे नही आती। प्रस्तुत रचना के साथ एक ही हस्तलेख मे निम्नलिखित अन्य सस्कृत ग्रंथ भी लिपिबद्ध है:--

१—महिम्न स्तोत्र—पुष्पदताचार्य (अपूर्ण)
२—गोरख शत—गोरख नाथ
३—पचमुखी हनुमान स्तोत्र—
४—दुर्गा कवच—
५—दुर्गा सप्तशती—
६—केदार कल्प—
७—गोरख बोध (हिन्दी)—गोरखनाथ
८—गणेश पचरत्न—
९—बिना नाम का सस्कृत ग्रथ—

संख्या १०१. नवलनेह, रचयिता—घनदेव वैष्णव कान्यकुब्ज, निवास स्थान—बनारस कागज—देसी, पत्र—२६, आकार—५॥ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—३१२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्यलिपि—नागरी रचना काल—स० १८५४, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० १२०, पु स० ६।

आदि—अथ नवलनेह ॥ छप्प ॥ दोहा ॥

एक समय व्रज नागरी गई जमुंन जल लेन ।
देख रूप नंद नंद को गई सुध नेह ।१॥
घर आई बेबस भई बेठी अंगन मांझ ।
खान पान मागत नही भई भार ते साझ ।२॥

मध्य—पृ० ३३ दोहा ॥

सोक मोह मद आद दे तिनके उर अग्यान ।
जो नंद नंदन रूप को कियो न अमृत पान ।४६॥

दोहा ॥ प्रीत करी नंद सो मे सुन सखी मान ।
मोहन सुझत और कछु बिन ब्रजचंद सुजान ।४७॥

सवैया ॥ चंद समान भये बृज चँद जो हो जो चकोर को रूप धरोगी ।
अरस मान कहे हरी सो जुपे कँज मे कँज को रूप रोगी ।
जो रस रास कहे उनसो बृज नार ह्वे [illegible] न जाय परोगी ।
वा नदनंद सो नित मीलो सखी रूप शुधा अँखीयान भरोगी ।४८॥

अंत—संमत अष्टादस सुसत चोपन ही परमान ।
माघ मास दसमी सुकल वार भानुसुत जानि ॥ ९ ॥
कहे ग्रथ घनदेव कवी विप्र बनारस वांस ।
कान्यकुब्ज दुबे सही जेसी बुध प्रकास ॥१०॥
पछिम धरि द्वारावती देस कुसस्थल जानि ।
पुरी सुदामा बसत तहा महा मुक्ति की दानि ॥११॥
ताहा भूमिपति जानिये हे राणा श्री सुरतान ।
दाता ईस मानि पुनि वार यथा हनुमान ।१२॥
बरस द्वारिकानाथ को आय करे घनदेव ।
पुनि पुरब हरमे तहा कीनो ग्रंथ सुभेव ।१३।

इति श्री घनदेव कवी बिरचितं नवलनेह संपूर्ण ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रथ मे कवि ने भगवल्लीला के अतर्गत संयोग और वियोग शृंगार का वर्णन किया है।

संख्या १०८. राग माला, रचयिता—घनश्याम (चतुर्भुज मिश्रात्मज) निवास स्थान—आगरा, कागज—देसी, पत्र—३, आकार—६॥ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप)—१२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—सं० १७००, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० बं० ८२, पु० सं० ३।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जाके रूप न रेष कछु नैनन देखे सब।
निर्मल नाम अपार गुन आदि अंत अब तब॥ १॥

अरिल छंद—

प्रथम सरसुती देवी गणेस मनाई के। मिश्र शिरोमनि जान सुबुध गुरु पाई का।
कासिम जानि सुजान कृपा कवि पर करी। रागमाला भाषा करिवे को चित धरी॥

अथरतनाकर मत—

खरज रिश्वभ गंधार कहि मध्यम पंचम नाम।
धैवत ओर निखाद ये सुर सातो घनस्याम॥ १॥

मध्य—पृ० २

अथ गोरी लछनं।

गोरी स्याम वरन तन जानो। कोकिल केसो कंठ वखानो॥
अतिहीं सूछम नाद जो करई। कानन कोंप आंव धरई॥
स्वेत वास ससि वदनी वारी। रचि पचिकें करतार सवारी।

दोहरा—पीत कंचुकी उर विषें मालकोस को प्रान।
गोरी ग्रह सुर खरज हे ओडव जात बखान॥

अंत—अथ देसकार॥ चौपैया छंद।

कनक वरन तन नेन विसाल। चंदन खोरि मुकत अरु माल।
कुच कठोर मुख ससि उनहारी। सदा रहे नाइक संग नारी।
केलि को रस रँग उपजावे। यह तिय नायक कों सुठि भावे। दोहा।

देसकार सुरगृह खरज संपूरन सुविचार। वरखा रितु निसि अंत ये गावहु नाचो नारि॥ दोहा॥ रागध्याय सुनि संसकृत भाषा करी जु जोरि। पंडित पढो है वनाइके मूरिख लावेंहि खोरि। स्यामु आगरे नगर को राजघाट हे ठोर। पुत्र चतुरभुज मिश्र घट वार्पिन की पोरि। संवत् सत्रह से वरस तापर बीते होई। फागुन सुदि तिथि त्रोदसी सुनहु जुगुन जन लोइ॥ इति श्री रागमाला घनस्याम कृत समाप्ता॥ हनवंत मत करी। शुभं भूयात्॥

विषय—राग रागिनियों का वर्णन। रागों की उत्पत्ति, उनका स्वरूप, और गायन का समय, आदि का वर्णन उदाहरण सहित किया गया है।

संख्या १०३. वैद्य जीवन, रचयिता—घनश्याम "द्विज" निवास स्थान—आजमगढ़, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—६$\frac{1}{10}$ × ५$\frac{2}{10}$ इंच, पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—सं० १९१८ वि०, लिपि काल—सं० १९१७ वि०, प्राप्ति स्थान—श्री बाबू शंकरप्रसाद सिंह, खंडहर, पो०—मुफ्तीगंज, जौनपुर।

आदि—श्रीगणेशायनमः श्रीमते रामानुजाय नमः
अथ वैद्य जीवन भाषा लीष्यते ॥दोहा०॥

श्रीगुरु चरण कमल रज सिर धरि करो प्रणाम
जाकी कृपा कटाछ ते पूर होत सब काम ॥ सोरठा

पुनि कर जोरि प्रनाम रामानुज के चरण को
करि भुसुर घनस्याम वरणत वैद्यक ग्रंथ ऐह
वैद्यक ग्रंथ अनेक है अधिक एक ते एक
तामे लोलिमराज ने कीन्हो कठिन विवेक

॥ दोहा ॥

ताकी मै भाषा करी छामियो कवि अपराध
निज निज वल पक्षी उडै जैसे गगन अगाध

॥ कवित्त ॥

प्रगट है क्षीर अंभोधि ते आयु हरि हाथ पीयुष को कुंभ तीन्हे
रतन मो रतन सुरनारि के हेत प्रभु रूप धरि ताहि को काज कीन्हे
बहुरि ससार के लोग दुष नासवे हेत करि ग्रंथ आराम दीन्हे
भनै "घनस्याम" जो प्रनत जन ताहि को तुरत दुषदोष सब लेत छीने

॥ दोहा ॥

जनक दिवाकर को सुमिरि ताकी कृपामनाय
सहितनिदानक ग्रंथ ऐह लोलिमराज वनाय

॥ सोरठा ॥

वैद्य जीवनो नाम विस्तरते रचना किए
सो वरणत घनस्याम ॥ करि भाषा निज बुद्धि सम०

॥ कवित्त ॥

चित नाहि लगे ललना जिनको कवितारस वारिध मो न तरे
ऐह छंद प्रबध को ग्रंथ परिश्रम सो मन मो केहि भाति धरे
जिमि नैन विहीन ते वार वधू वहु भातिन कोटि कटाछ करै
"घनस्याम" भनै कर जोरि तिन्है जिमि वानर मोतिन हार गरै

॥ चौ० ॥

अंत—

ग्रंथ ऐ लोलिमराज वषानो वैद्य शास्त्र धन्वन्तरि जानो
कवि कोविद रसिआ जग कोई ताके भूषण सम यह होई

॥ दोहा ॥

जनक दिवाकर क्षीरनिधि ससि सम प्रगटे आइ
निज भामिनि ते ग्रंथ ऐह लोलिमराज वनाय०

दो०-लोलिम नारी ते कहै वैद्य जीवनो नाम
करि भाषा तेहि ग्रंथ को वर्नै घन दिज घनस्याम
मनुग्रह ससिवत्सर कहे नपम कृष्ण गुरुवार
षष्टो तिथ घनस्याम द्विज कीन्हों ग्रंथ उदार

॥ सोरठा ॥

आजमगढ़ स्थान गौरी संकर के निकट
कीन्ह ग्रंथ निर्मान पंडित जन सो जानिहै

॥ दोहा ॥

वाजीकर्ण रसायन विस्व ताप हर जानि
रस पुनि विविधि प्रकार के यामे कहे बषानि

इति श्री वैद्य जीवन भाषा कृत घनस्याम रामानुज दास वाजीकर्णादि प्रस्तरो नाम पंचमो विलास : ५ मिति आश्विन वदी १० वार अतवार के संवत् १६१७

रचना काल

मनु ग्रह ससि वत्सर कहे तपस कृष्ण गुरुवार
षष्टी तिथ घनस्याम 'द्विज' कीन्हों ग्रंथ उदार

विषय—आयुर्वेद के अंतर्गत बाजीकरण और रसायन आदि का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। समस्त छब्बीस पत्रे है। रचना काल सं० १६१४ वि० और लिपि काल सं० १६१७ वि० है। रचयिता "द्विज घनश्याम" है। ये गौरीशंकर के निकट आजमगढ के रहने वाले थे। अन्य परिचय नही मिलता।

संख्या १०४. प्रह्लाद लीला, रचयिता—घनस्याम या स्यामदास, कागज—**देसी,** पत्र—३४, आकार—६½ × ४ इञ्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—**६६,** पूर्ण रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० ८०२, प्राप्ति स्थान—**आर्यभाषा** पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा।

आदि—श्री गनेस जू आनिमं श्री सरस्वती जू गुरभेन्मः लिषते पैहैलाद चरित्र ॥

भाषा करौ प्रगासु गुर गनेस प्रसाद।
साधुन सीर नाइए॥
तन मन बुधि विचार राम गन गाइए॥
एक समए निजूधाम चले सनीकादिक चारौ।
इजं विजं छरिदार छीर लैं गुरन सम्हारौ॥
कैसहु वान न पाइए कीनौ वहुत विचार।
जब रिषि जुइ अग्यां करो तुम ठोऊ अवुर संसार॥

अंत—

गोद लिए पहलाद जू भेटें अंकु लगाइ।
ऐसे है रघुनाथ जू स्यामदास वलि जाइ॥
राम गुन गाइए।
प्रभु पहुचे निज धाम इंद्रपदवी पहीराई।
धनि धनि पैहिलाद जूभली तुम भगति दीठाई॥
जौ जह लीला कहै अरु सुनै सुफल सोइ।
धाम सूर नर मूनी आरती करें...घनस्याम।
राम गुन गाइए॥

इति श्री पहिलांद लिलां संपूरसमांपतां श्रीनरसीय जू सदा सहाई भादौं सुदि १॥ सं० १८०२ भूलौ चूकौ माफ जू कोउ वाचे अरु वाचि सुनावें मानि बैकुंठ जाई॥

विषय—प्रह्लाद कथा वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पत्रो के एक ही ओर लिखा गया है। रचना काल अज्ञात है। लिपि काल संवत् १८०२ है।

रचयिता का नाम घनस्याम है, पर कहीं कही "स्यामदास" भी प्रयुक्त हुआ है :—
"ऐसे रघुनाथ जू स्यामदास बलि जाइ"।

अन्य वृत्त नही मिलता।

संख्या १०५, यमुना लहरी, रचयिता—घनश्याम दास, निवास स्थान—भरतपुर (?), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ x ६, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य. लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री राम जी दोहा

विघन विनासन सुख करन गवरि पुत्र गणपत्ति ।।
रस आनंद करि जोरि कै सदा करै प्रणपत्ति ।।

।। कवित्त ।।

ब्रह्मा के कमंडल ते मंण्डित तिहारी जोति पंडित अनेकन के घट मे समानी तूं ।।
सेस औ सुरेस मुन नारद हमेस रहै पारवती गाई कहूं शंकर बखानी तूं ।।
भनें घनश्याम धाम सुक नें सुनी है जहां युक्त सों परक्षित की मुक्त मनमानी तूं ।।
बेदन बखानी सुख संपति की खानी जलरूप सों दिखानी श्रीसारदा भवानी तूं ।।१।।
प्रथम सुभस्थल में गऊ लोक राजत हौ दूजौ रविमंडल की किरण सुहाई हौ ।।
तीजें घनस्याम भनें जामन के वृक्ष बीच चौथे डार डारन में फूलफल आई हौ ।।
पंचमें प्रवेश हेमगिरि में धसी हौ धाय खष्टमै विहाय श्रंग भूम छवि छाई हौ ।।
सप्तमें चली हौ जलरूप सों अपार धार राधिका कमार कुमार ढिग आई हौ ।।२।।

मध्य—

कैसी है सुधाकर में सुधा की सुधाई धरी,
जैसी है सुधाई च्यार ब्रह्माबेद वानी की ।।
कैसी है सुधाई च्यार ब्रह्माबेद वानी बीच
जैसी है सुधाई खल दलन भमानी की ।।
कैसी है सुधाई खल दलन भमानी बीच
जैसी है सुधाई जग कृष्ण सुखदानी की ।।
कैसी है सुधाई जग कृष्ण सुखदानी बीच,
जैसी है सुधाई जमुना जी राजरानी की ।।१६।।

अंत—

।। सवैया ।।

च्यारि असी व्रज कोस के बीच मे ध्यान धरैं गुन गामै प्रसंगा ।।
रामधनी श्री शोभा को सागर मुक्त पदारथ देत अभंगा ।।
दान करैं उरपान करैं असनान करैं प्रिय होत त्रभंगा ।।
मानसी पाप निवारण कौ गिरिराज में राजती मानसी गंगा ।।४१।।

विषय—इसमे यमुना की प्रशसा मे दोहा, कवित्त और सवैया हैं।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के रचयिता का नाम लाला घनश्याम दास है। ये भरतपुर के रहने वाले थे। परिचय अज्ञात है।

संख्या १०६. अरिल्ल, रचयिता—चद गुसाईं, कागज—देसी, पत्र—१५, आकार—८×५½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२०६, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह) काशी नागरी प्रचारिणी सभा।

आदि— ।। अरिल्ल छंद ।।

श्री राधा कृष्णो जयतिः ।। अथ चंद कृत छंद पलवंग लिष्यते ।।
बनि ठनि कें इत आइ कन्हाई । मुरली मधुर बजाइ सबै हम मोई ।।
सषि वाके दृग हौ धौ को कहै । चद रसिक नदनद पद्यौ जिहि के...
किय पेंडो इत आइ ढठौनां नंद कें । निध.....इ सकोचन नंद कें ।।

० ० ०

तब मेरी सुधि लेत सुपांनी पियतकी । करि कुबिजा सौं हेत सु अब तौं पियतकी ।।
उधौ उर कौ तापु सु चाहत जे हरें । जोगहि के मिस आपु सुच हत जे हरें ।।५४।।
तब सौ मन हरि लेत सुपाइनि सांकरें । अबतौं रहन न देत सुपाइनि सांकरें ।।

अंत—

हरि आंवन कब होइ सगुन है देषती । निगुन लषै नहि कोइ सगुन है देषती ।।
कठिन सुममा थुर लोग न जानत पीर सही । तिन्हें सिषावत जोगु जानत पीर सही ।।२२०।।
तब चितु लीनौ चोरि सुहित करि सोच हैं । अब सु वढावत हियें अहित करि सोचहै ।।
कब आवै ब्रजचंद कहौं नहि मुद्दई । ऊधौ तजि छल छंद कहौ नहि मुद्दई ।।१११।।

इति श्री गुसांई चंद कृत अरिल्ल संपूर्ण ।।

विषय—श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियों का विरह वर्णन तथा उद्धव-गोपी संवाद।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल मतिराम कृत रसराज के आधार पर सवत् १८१८ है। ये दोनो ग्रथ एक ही हस्तलेख मे है। प्रस्तुत रचना हस्तलेख के आरभ मे है। इसके ७ पत्रो के किनारों के तिहाई भाग नष्ट हो गए है। इसके साथ एक ही जिल्द मे निम्नलिखित ग्रथ और है :—

१—वियोग बेलि—घनानद
२—वधू विनोद—कालिदास
३—मान मजरी (नाममाला)—नददास
४—अनेकार्थ मजरी— ,,
५—रसमजरी ,,
६—विरह मजरी ,,
७—भाषाभूषण—महराज जसवंत सिह
८—अष्टयाम—देवकवि
९—नखशिख—बलभद्र
१०—रसराज—मतिराम।

संख्या १०७. बूढारासो रचयिता—चंदपरतिष, कागज—देशी, पत्र—१४ आकार—३½×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, खडित (केवल प्रथम पत्र नही है) रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३२ वि०, लिपिकाल—सं० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि— लसी थांरो काम रसां०

मोल मोटरा रए दीसै वाप जी मरोड राषै पिता ।
रूपीया रो लाल वहोवै अति घरणे ।
तो परदेशां क्युं नी जाय सो० ३ अं
मोटी उबै ए माता डावडी अरनान डोषो भरतार
उरणरो तो जीव डोर है दरषसुं मोटो अप जायसी दिन च्यार ४
सां० वारं वरसांरी माता जावजो अरसाच वर सरो गलै फास
उरणरो तो जीव जो आवै सोच मैं निहचै रंजा पारी आस सां. ५ अं०

मध्य—रूपीपा मिचाक देय न जाणं जो जो जंसी सोमल जहर इण भव
डुवंता हरी जी करी जी । काढ्यो पूरवलो वैर ३ पू० रोढ्यो
षावो दिन वस गल गली जी माथं वाधौ मुजरो पाध
म्हे माहरं पूचा सिधावस्यां जीमत धरो मन माहीं राग ३ पू०
।।ढालें: ।। महिलां मैं बठी रासी कमलावती । देसी: ।।

वाप कहै बेटी सुणों वोलोनी वोल वीचार दोरी तोपाल मोटी करी उषदेथ्यां तिणवार ?

अंत—।।ढालें: ।। जतनीरो । देशी: ।। बेटी थांर माथारो मोडो तोनें इशा वितकि
सडीर वोडो इण सुहागण पणं संधांई सामा इक करस्युं सदाइ माई
नव तत्व हिरदं धरसुं तपस्याने पांसो करयु घर साहूं दानं जदेसुं
मन मान्यां कारज करेस्युं । संवत अठार वतीसें आंणी मृगसर मास एजांणी
एजांणी चंदपरतिष वषाणी सुनो कलजुगणी सारंगी १।। ईती बुढ़ा रासो: ।। ।।
संपूर्ण: ।। संवत् १६१८ वर्षे लिषत ।। बीर बैताल ।।
आशोज वदी १३ कलकत्ता: ।।

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ डिंगल भाषा में है। इसमें वृद्ध विवाह के दोष वर्णन किए गए है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ डिंगल भाषा में है । इसका प्रथम पत्र लुप्त है । संख्या २ से १५ तक के पत्ते उपलब्ध है । रचयिता का ग्रंथ से कुछ परिचय नही मिलता । रचनाकाल स० १८३२ वि० और लिपिकाल स० १६१८ है ।

संख्या १०८. भाषा लीलावती, रचयिता—चक्रपाणि, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—१२×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण—(अनुष्टुप्)—२८४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्रीशः पातु श्रीनक्षात्र विद्यायै नमः ।। भाषा लीलावती लिख्यते ।।

छप्पै—

....................नमो नमो असरन सरन ।।
....।।
वंदित पद सुर नर नरिंद....................।।
चतुर नर नांह........कल अलप........जह ।।
कोमल क.................................।।
(नि) त्य पदन लीलावती है सरस सुभा...........।।
............रणनि पुनि नमो नमो असरन सरण ।।

॥ छंद मोतीदास परिभाषा ॥

राटक विसंति काकनिशोइ ॥.......................॥
....षोडश इम्म वषानि ॥ सोलहइम्मा ....॥
............ज कहंत ॥ मिला इत्रि गुंजनि.... ....॥
....॥

मध्य—   उदाहर चौपाई

रुपइया चौराणवें मगाय ॥ दिए तिनकौ व्याज धराइ ॥
कितेकि तिन मै ते धन काज ॥ दीन सही पिचोत्तरा व्याज ॥
मास सात वैते घर आए ॥ फुनि हूजे कौहूते विवाए ॥
दसवें माति डोतर पाए ॥ मास पाँचवें तापर लाये ॥
व्याज तिहूं को भयौ समान ॥ तौ किते किते पाए परमान ॥
अथवा वह सब व्याज बरार्बार ॥ वयो वयो कौनरव एडार्धार ॥
किये गरिणत द्वैते पै कैसे ॥ कहि विचारि लीलावति तैसे ॥

अंत—   उदाहरण सवैया

पहले दिन च्यारि दए कइया दिन हम हैर मैन वरौक दिवाये ॥
पो वढ़तै दिन इंद्र लैहे उन पंच हिसाब सबै भरि पाये ॥
ते सब जोरि विचारी सबै कहौ कितेनै रुपैया उनके घर आये ॥
जो चय गछ प्रवीन निप तै ई लखै जु तुम्हारे बताये ॥

न्यास ॥ आदि च्यारि ४ चय ५ । गछ १५ । गछमें १ । एक घटावें तब १४ ॥ चय पच ५ ॥ पंचगुण हुआ ७० ॥ आदि धन ४ ॥ जो हुवा सो हुवा ७४ ॥ एता सु पाछिले दिन दिया फेरि ॥ आदि धन जो उचा हुवा ७८ ॥ इहको आधौ ॥३९॥ इह गछ १५ ॥ गणाया ५८५ ॥ हुवा यह धन ॥

विषय—संस्कृत ग्रंथ लीलावती का अनुवाद ।

संख्या १०९. गढ पथैना रामा (पथैना रासो), रचयिता—चतुरराय, कागज—देशी पत्र—८, आकार—१०×७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—

....एक दसौ दीसा ॥
पोता सफतर जंग कौ आयौ देत निसान तोप तीर तुपंग कौ दल मै नही समार ॥
सारदुल के वंश मै । वोटी लीयौ सीरभार दया धरम जाके सदा ॥
और कृश्न कौ नाम ॥ लाषन कौ दाता भयौ । सारदुल सरनाम ॥
थरथराई भूमिया सवै । को गहै सकै अवान ।
कोपि पथैने पै चढ़ौ अली सहादत षान ॥

॥ छंद भुजंगी प्रयात ॥

चढ़े षान सुलतान लागी न वारं ॥
सजे भीर उमरांव नाना प्रकारं ॥
चढ़े षाय के षान दै दै दरेरें ॥
बल देज धाए फिरै नहीं फेरे ॥

इरानी तुरानी षुरासीस धाए ।।
तिलंगी फिरंगी फरासीस आए ।।
चढ़ें सेष साबूत लोदीन वानें ।।
दुरंनी मठनी वटनी बयानें ।।
चढ़ें स्याह सीदी वसीदी विलारी ।
करंवा कपट वड़े सब षीलारी ।।
कुमंता विलोरी दुवाजं समंदे ।
चढ़े पीठ तिनके सिपाही चुनंदे ।।

मध्य—

।। छंद ।।

दीनी हला चलाय दल कौ ।। परी जाकी हल है यह जंग जील मलरं ईक लौसा चिलौपुर ।।
लहै तापु सत स्यंघ सुजान ।। ठाकुर आयौ गल गाजि कं ।। कौ सव सनमुख घरं ।।
जाकी गई सेना भाजि कं ।। मौसि पतिता की बया पड़ ।। मौसि पतिता की बया पड़ ।।
जनि करि गाढ़ि जुर्रात है ।। जहां दान स्यंघ पौहौच पास ताके तुरत है ।।
एक पदम स्यंघ कुमार आयौ पौहौप स्यंघ अमान कौ ।। काहुना टारोन काहूपं करं ।।
आनें सदा घनस्याम कौ ।। जिन निकट नाहर स्यंघ आयौ ।। अंग मै अति छोई है ।।
मन ठह्यौ न उपर भार बीतें ।। ठडे भारी लाह है ।। नहीं शीली रारिन वा उपर भार ।।
आनि विह्यौ भार है ।। चलि गई पलटन षेत सं वाजो कठीन तरवारि है ।।
करि जोर जंग नवाब थाक्यौ गई नाहि पेस है कमारि हारि उसारि पलटन कौ यौ जीव कलेस है ।।

।। दोहा ।।

धौकह तोकाराम अरु ।। माहिब स्यंघ सुजान ।।
वरना वारे मोर छै ।। कीयें षुवध मस्यानः ।।
पदम स्यंघ नाहर वली ।। दान स्यंघ दल पेलि ।।
अली सहादत षान कौ ।। लीयौ उठै या केली ।।

अंत—

।।कवित्त ।।

जैसे गज ग्राह तै छुड़ायौ वृजराज लाज
राषी द्रोपता की ताकौ अंबर बढ़ायौ जु ।।
जैसे प्रहैलाद कु छुडायौ हरनाकुस सौ
न्यारो जुग गायौ न्यारो बेदन बतायौ जु ।।
अघासुर उदर तै काढे गोप ग्वाल
तैसोही पथैनो मलेछ तै बचायौ जु ।।
ता समै हकारे सार्दुल के सपुत पुत
ताही समै चक्र लै उमडि हरि आयौ जु ।।
इति श्री षठि पथैने कौ रासौ संपूरन ।।

विषय—पथैना भरतपुर राज्य के एक कस्बे का नाम है। वहाँ के जाटो तथा आगरे के अमीर शहादत खाँ के युद्ध का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ मे आदि के ४० पत्रे नही है। ४१वें पत्रे से लेकर ४७वे पत्र तक है।

संख्या ११०. मधुमालती कथा सचित्र, रचयिता—चतुर्भुज, पत्र—१३२, आकार—९।।×६।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००० लगभग, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८४, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० बं० ४८, पु० स० १।

आदि—श्री गणेशाय नमः।। श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः। श्री गुरुभ्यो नमः। श्री परम गुरुभ्यो नमः। श्री परमेष्टीगुरुभ्यो नमः। श्री इष्टदेवताभ्यो नमः। अथ मधुमालती कथा लिख्यते।।१।।

।। चौपाई ।।

ब्रह्म बीज ब्रह्मादिक गाउ। संकर सुत गनपति कुं मनाउ।
चातुर हित सों सहित रिझाउ। रसिक मालती मनोहर गाउं।१।
लीलावती ललित यक देसा। चंद्रसेन तहां सुघर नरेसा।

मध्य—पृ० १३३ **।। दोहा ।।**

नैन तपत है दरस कुं श्रवन तपत हें चैन।।
कर जो तपत कुच गहन कुं अधर तपत रस लैन।।६७७।।

।। चौपाई ।।

मालनि एक डोकरी रहई। वासुं चंद कुंवर यम कहई।
कुंज कोटरि करि यहां नीकी। फूली लता जाय मईकी। ६७८।
नीकी ठौर निरखि सुख पाउं। मालनि तोहि सिरोपाव पहराउं।
यह वचन कहि मंदिर आयौ। कहत मालनि बेग बनायौ।।६७६

अंत— **।। दोहा ।।**

कामी काम विलास रस जोग पढ़े तो सिद्धि।
संपूरन मधुमालती कलस भयो संपूर।
सुरता कविता सबन कुं सुखदायक दुख दूर।।८५६।।

इति श्री मधुमालती कथा संपूर्णम्। शुभंभवतु। कल्याणमस्तु। सं० १८८४ चैत्र शुक्ला तृतीयायां भृगुवासरे।।१।। श्री राधा कृष्ण सहाय।।१।।

विषय—प्रेम कथानक काव्य है, जिसमें मधुमालती की कथा वर्णित है। इसमें १२८ रंगीन चित्र भी है जो कथा के अनुसार स्थान-स्थान पर बने है।

संख्या १११. भाषा संग्रह, रचयिता—चतुर्भुज मिश्र, पत्र—८६, आकार—८।।×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५२०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि-नागरी, रचनाकाल—सं०१७०२ वि०, लिपिकाल—स०१८५७ से १६०३ के भीतर (अनुमानतः) प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० ७२, पु० स० १।

आदि— ।। श्री गणेशायनमः ।।

।। सोरठा ।।

इक नाही इक पीर हिय रहीम होते रहै।
कबहूं न भई सरीर रीती बेदन एक सी।।१।। दोहरा।।
जौ रहीम करिबे हुतो व्रज को यहै हवाल।।
तौ क्यों गातहि दुख दियो गिरवर धर गोपाल।।२।।

मध्य---चतुर्भुज मिश्रस्य अथ अभिसारिका वर्णनं ॥
सोने से अंग सरोजमुखी चली स्यामयेको ससि के सटके ।
पग नूपुर घुंघरू खोलि धरे सकुचे अति जेहरि के खटके ।
गुरु गुनि ओरु छटी सी कटी न चली रही छुद्र घटी अटके ।
बिनु ही अटकें हटकी सी चले लटकी सी परे लटके लटके ॥८०॥

सुकविराई---
फूलनि सो गूँथि माँग चंदन चढाइ अंग उमडी है मानौं गाँग सरद के नीर की ।
सोहत हैं सब तन मौंतिनि के आभूषन मौंतिनि की जोति सौं मिलि हे जोति चीर की ।
मुसिकात आछी अति दांतनि की देखें दुति तेंसिये गुराई कही सुंदर सरीर की ।
चाँदिनी सी बाल मिलि चाँदिनी मै एसें चली जेसे छीर सिन्धु में चले तरंग छीर की ॥८१॥

अंत---संवतु सत्रह सै वरष बीती द्वै अधिकाइ ॥
अस्विनि सुदि दशमी शनौ ग्रंथ भयौ सरसाइ ॥१८६॥

इति श्री चतुर्भुज मिश्र विरचिते भाषा संग्रहे शांत रस वर्णनं संपूर्णं ॥ समाप्तोयं भाषा संग्रह ग्रंथ: ॥

विषय---नव रसों (शृंगार, वीर, करुण, अद्भुत, हास्य, भय, बीभत्स, रौद्र और शांत) का वर्णन है । जिनके उदाहरण दिए हैं उन कवियों के नाम और पद संख्या :---गंग, केसोदास, अनंत, सुंदर, प्रसिद्ध, सुकविराइ, बीरबर, रामकृष्ण, गोपीनाथ मिश्र, प्रेमनाथ मिश्र, संकर मिश्र, नरोत्तम मिश्र, चतुर्भुज मिश्र, गोवर्धन मिश्र, गुरदास सूरदास मदनमोहन, नंददास, गुसाई तुलसीदास, परमानंद, कबीर, ईश्वरदास, दयादेव, गिरामनि, माधो, जगदीस, अभिमन्यु, हरिवंश, रूपनारायन, शंकर, स्याम, मंडन, परवत मधुसूदन, विद्यापति, कासीराम, ब्रह्म, दामोदर, नेत, बान, जगजीवन, बलभद्र, नारायण, जदुनाथ, सज्जन, लघुराम, विश्वंभर, असद, राजा जगतमनि, छीत, मल्ल, मकुट, पुरुषोत्तम राम आदि अनेक कवि । समस्त छंदों की संख्या १२०० है । चतुर्भुज मिश्र के स्वरचित छंद १६० हैं ।

विशेष ज्ञातव्य---अंत के दो पत्रों में कवियों के नाम दिए हुए हैं और उनके नीचे उनके छंदों की संख्याएं हैं । ग्रंथ के ऊपर "गोस्वामी श्रीगोकुलनाथात्मज श्री पुरुषोत्तमस्य" ऐसा लिखा है । अतः इसका लिपिकाल इनके समय सं० १८४७ से १९०२ के भीतर होना चाहिए ।

संख्या ११२ क. मृग कपोत की लीला, रचयिता---चतुर्भुज दास, कागज---देशी, पत्र---२०, आकार---५½ × ४¼, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---७, परिमाण---(अनुष्टुप्)---११४, अपूर्ण (खंडित), रूप---पुराना, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---संवत् १८८८, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा ।

आदि---अथ मृग कपोत की लीला लिख्यते ॥
श्री वल्लभ गुन गाऊँ । निर्मल बुद्धि भजन तें पाऊँ ॥१॥
कमलासेन कवरि विद्या वर हे । कलियुग में जु चराचर हे ॥२॥
एक गणेश सरस्वती दूजी । सुर नर आदि सकल में पूँजी ॥३॥
बेद पुरांण ग्रंथ के साखी । हरि बिन रसना कवि जन भाखी ॥४॥
जाके सुमरे ते सुख पैये । दुख दालिदर दूर नसैये ॥५॥
बंदन व्याध न रहे न कबहूं । हरि सहाय होय जबहूं ॥६॥
जा रस को ब्रह्मादिक धावे । जोगेश्वर के ध्यान न आवे ॥७॥

:o: :o: :o:

त्रिबैनी के निकट ही आरन खरी उदास।
मृग कपोत वासो बसे कहे "चत्रभुज दास" ।।२४।।
झांसी के ढिग खरी उदासी। जहां रहत एक मृग बनवासी ।।२५।।
दोब चरे त्रन चर जीवें। निर्मल जल जमुना को पीवे ।।२६।।
:o: :o: :o:

मध्य—

मृग कपोत की कथा पठन करे नर जेह।
सुख संपत आनंद सदां संकट लहे न देह।।
बैरी बंदन व्याध ते टरे दुख देस के न कोय।
मृग कपोत जे सुख लए सुख पावे सोय।।
औरन देस विदेस मे नर नांहर डर नाहि।
सर्प जल थल अगिन कहूं सबही विघन नसाय।।
सुमरे ते संकट हरे हरिफल भजले आज।।
चत्रभुज प्रभु जे जन जपे एक पंथ दोय काज।।

इति श्री मृग कपोत की वार्ता संपूर्ण ।। श्री स्तु ।। कल्याणमस्तु ।।

विषय—मृग कपोत विषयक एक पौराणिक आख्यान का वर्णन। मृग को एक व्याधा ने घेर कर मारना चाहा, परतु कपोत के उपदेश से मृग हरि स्मरण करने से बच गया। व्याधा को एक सांप ने काट खाया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। कथा का तात्पर्य हरिस्मरण का माहात्म्य वर्णन करना है।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख मे एक पत्र (संख्या ३० का) नही है। पत्र संख्या २५ पत्र संख्या २६ के पश्चात् लगा हुआ है। अत प्रकट होता है कि हस्तलेख की एक बार मरम्मत हुई है जिससे क्रम मे त्रुटि हो गई।

रचना काल नहीं दिया है, लिपिकाल संवत् १८८८ है जो "मानमाधुरी" में दिया है। दोनो ग्रंथ एक ही हस्तलेख मे है।

रचयिता का नाम चत्रभुज दास है। विशेष वृत्त ज्ञात नही।

प्रस्तुत ग्रथ कुछ अन्य ग्रथो के साथ एक हस्तलेख मे है। ग्रथों के नाम नीचे दिए जाते है :—

१—स्याम सगाई	नंददास
२—यमुनाष्टक	श्री वल्लभाचार्य
३—सनेह लीला	रसिक राम
४—भ्रमर गीत	नददास
५—ऊषा चरित्र	मुरलीदास
६—दान लीला	रसिक (हरिराय जी उपनाम रसिक राय)
७—स्याम सगाई	नददास
८—दान माधुरी	माधुरी दास
९—मान माधुरी	,,

संख्या ११२खं. कीर्तन सग्रह, रचयिता—चतुर्भुज दास, स्थान—गिरिराज, पत्र—३२, आकार—६ × ३।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९३०, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—स० भं०, विद्या विभाग, कांकरोली, हि० वं० सं०—१९, पु० स—५।

आदि—श्री गोपी जन वल्लभाय नमः ।। राग विभास ।। अठताल ।।
आलस उनीदे घूमत आवत मूंदे अधिक नीके लागत अरुन बरुन ।।
जानि हो सुंदर स्याम रजनी के चारयो नेकहूं न पाए मानों पलक परन ।।
अधर निरंग रेख उरह चित्र विसेष सिथिल अंग डगमगत चरन ।।
चत्रुभुज प्रभु कहां बसन पलटि आए सांचिये कहो गिरिराजधरन ।।१।।

मध्य—पृ० ४० जतिताल ।।
स्याम नियरो आयो मेहु
भीजेंगी मेरी सुरंग चूनरी ओट पीतपट देहु ।।
दामिनि तें डरपति हों मोहन निकट आपने लेहु ।।
दास चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सों बाढ्यो है अधिक सनेहु ।।५ ।।

अंत—अप्राप्त ।

विषय—पुष्टिमार्गीय मंदिरों मे गाये जाने वाले भक्ति विषयक कीर्तनों का संग्रह है ।

संख्या ११२ग. कीर्तन संग्रह, रचयिता—चतुरभुज दास, स्थान—जमनावता गांव, (व्रज), पत्र—२१ आकार—६ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५९६ से १६४२ के बीच, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, विद्या विभाग काँकरोली, बध सं० २, पुस्तक सं० १ ।

आदि—आदि का भाग उपलब्ध नहीं हुआ ।

मध्य—पृष्ठ १७ पर—राग गौरी
बात हिलग की कासो कहिये ।
सुनि री सखी बिबच्छा तन की समुझि मनही मन चुप करि रहिये ।
मरमी बिना मरमु को जाने इह बातें सब जिय ही सहिये ।
चतुभुज प्रभु गिरिधरन मिले जब सब सुख संपति तबही लहिये ।।१।।

अंत—अंत का भाग उपलब्ध नहीं है ।

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति कीर्तनविषयक पद ।

संख्या ११३क चरपटिका पत्रिका, रचयिता—चरपटनाथ, कागज—आधुनिक रूलदार, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति—(प्रतिपृष्ठ)—१६, लिपिकाल संवत्—१६८२, प्राप्तिस्थान—पं० सरजू कुमार ओझा, ग्राम व पोस्ट—सिरसा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः ।। अथ सून्य विराज रोग प्रतिकाल रस सर्व अष्टादश कुष्ट दादु आदि प्रेत ब्रह्मदोष पूर्वहत्या सिद्धि दोषादि को नाशक रस ।।

दवा

संखिया की डली आक छीर मो सात दिन तक सोधिए गेहूँ आटा छीर गूंदो बीच डला धर गुड़ अंधौन आंटा लै अर्ध पाव छीर लेहु खप्रदाभ येते सिद्ध खप्पर दावा भौरी सेकुं कच्चा न रहै एकसात इकइस भौरी में संखा भये सिद्ध सून्य कुष्ट नासै प्रबल सब कष्टे मारू गिधि रति ।।१।।

।। दोहा ।।

नित्य घृत सन भर्म मंडल दुइ की टेक ।
आतम्मार बहुतं करैं मंदिना की कै लेक ।।

ब्याधि फुलै पानी झरै जला तना भरि जाय ।
वुइ मंडल के भभन्न सून्य असाधि नसाय ।।
पगु तर बन काटा गडै सोस विथा की बात ।
यह लक्षन सब साधि है "चरपट" की ए घात ।।

:o: :o: :o:

अंत-- ।।अथ भैरोरस सून्य कुष्ठ असाधि सर्व राजरोग दमा छइ कठोदराबि की ।। ईंगुर ऽ।। पातिफूल के बंदाल का रस ऽ४ मदार के पात का रस ऽ४ कागदी नीबू का रस ऽ४ भटकटाइ का रस ऽ४ ये ही चारो रस से ईंगुर खल करे सोरह दिन तब टिकिया बनाई झुरवावै तब बस हाथ कपड़ा लइके सरफोंका के रस से रंगि लेइ तब इहे कपड़ा फारि२ टिकिया लपेटे ७ कपरौटी करि झुरवाइ लेइ तब कोहार के आँवा में धरि आंच एक देई तब काढि वहि तरह कसेरे के भाथीक एक आंच देइ तब फेरि काढि के अपने घर गजपुटक एक आंच दइ देइ--एकै दफे के कपरौटी किहै में तीनि आंच देइ वार वार दूसर तीसरि कपरौटी न किहा करे और गजपुटक में कंडाक आंच और भाथीवाला आठ२ पहरक देइ ज्यादा नाहीं आंवा क आँवा के जुडाने तकः क बाद में जुड़ाइ टिकिया पीत की स्वेत हाइ रहत हे सो लेइ के चाउर २ भरि सर्व राजरोग के देइ छीन छई नपुंसकता दमा अष्टादश कुष्ट असाध-सून्य-वहरि-नासिका-बैठके-फूटे देहे के-विनसे-विनसे चूअते के-नस विमुचे के-घी के साथ एक रत्ता एक रोज देइ । ६३ दिन तक घी भात वा चना गेहूँ की रोटी औ घी पथ्य खियावैं नीक होइ-सौ वर्ष की आयु बढ़ै सही--यह रस ३ दिन खियावैं रत्ती२ आठों ज्वर नीक होइ । औ प्रेतज्वर कालज्वर दि क यह अनभूत रस है--सत्य है--करि देखो सही ।। ।। १७६ ।। ।।

इति गोरख चरपटिका पत्रिका समाप्त शुभप्रद शुभम् ।। ।।
हाटक हरदी औ रतनार तामें आनि भुअंगम मारि ।
उलटि भुअंगम बेधै सुवा गोरख कहै तब हाटक हुआ ।।१८०।।
पारा गंधक औ हरत.र तामे डारै कंचन खार ।।
बंधक जल सोध करै सारा पर्वत कंचन करै ।।१८१।। ।। ।।
।। इति शुभम् ।।

विषय---राजरोग तथा अठारह कुष्ठा का रसोपचार वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---रचना काल अज्ञात हे, प्रस्तुत प्रति ग्रथ स्वामी द्वारा लिखी गई है, अतः उनके कथनानुसार लि० का० स० १९८२ है ।

ग्रथकार का नाम चरपट हे । अनेक स्थानो मे गोरखनाथ का भी नाम आता है जो चरपट को उपदेश करते हुए दिखाई देते है । अतः यह प्रकट होता है कि ये सिद्ध और नाथो वाले प्राचीन चिरपट नाथ है ।

संख्या ११३ख. सबदी, रचयिता---चर्पट, कागज---देशी, पत्र---३, आकार---१० ११/[illegible] × ४ १/५ ५/६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---१०, परिमाण---(अनुष्टुप्)---५६, खडित, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी । ग्रथदाता---ढेरातर के महाराज, स्थान व पोस्ट---माडा, जिला---इलाहाबाद ।

आदि--

.....................मान बोले चर्पट तत्वज्ञान ।।३८।।
धींगा धीगी मुस्ता मुस्ती वुध चोर बाजारी ।
आप गुरु वंदे पर गुरु निंदे लौबड वडिया लबवारी ।।३९।।
झोली पाई पत्र पाया पाया पतर का भेवा ।
रीता जांव भरया आंव कहा करौं गुरदेव ।।४०।।

सहज स्वभाव भिक्ष्या मागिवा संजम भोजन करणं ।
आसण दिढ करि बैठिवा अवधू मनमुष भटकि नहीं मरणं ।।४१।।
बैठे राजा बैठे परजा बैठे जंगली हिरणी ।
हम क्यों बैठें रावल बावल सब नगरी फिरणी ।।४२।।
बायें हाथ कमंडल दाहिने दंड मानौ चकर पूजौ हो भंडा ।
चरपट कहे ए सब पाषाडा ।।४३।।
भेष लिया पर भेद न पाया घर छाड्या पर तजी न माया ।
नाथ बिसारि निडर जग जोया स्वाग बनाइ सुषी ह्वै सोया ।।४४।।
ना घरि त्रिये न पर त्रियरता न घरि धन न जोवति मंता ।
ना घरि पूत न धीय कुंमारी ताते चर्पट निंद पियारी ।।४५।।
दिन उठि घरि घरि दीन्हीं फेरी । अंतरि उटि न आवत महेरी ।।
पत्र पूरया पेट फूलीया ।।४६।।
टूका षाया मकर मचाया जैसा सहर का कुता ।
जोग जुगति की षबरि न जांणी कान फडाय बिगूता ।।४७।।
आई छोडो लेन न जाऊं ताते मेरा "चर्पट" नाम ।
आई भी छोडिये लेन भि जाइये कहे गोरषनाथ पूता विचा विचारि षाइये ।।४८।।

:o: :o: :o:

अंत—

कथनी ववनी वलि कर जांव । वंधीस कौनौ वंधौ नाव ।।
चरपट कहै पवन की डोर । भूंकत गदहा ले गया चोर ।।६७।।
नावे डोडे षाडे धर्म । ऊंचा मंदिर कूडा कर्म ।।
चर्पट कहे सुणों रे लोक । रतन पदारथ गमाया फोक ।।६८।।
एक गूडा उपरि पांव । दूजा गोडा उपर भाव ।।
तीजा आगें बाजे तूरा । चरपट कहे बिगोवा पूरा ।।६९।।
एक पांव ऊपर पांव । दूजा पांव ऊपर भाव ।।
चर्पट कहे दुनिया का भेव । यह क्यों पाप अर इहु क्यो देव ।।७०।।
पूजि पूजि देव सब जग घाटा । निज तत्व रहि गया नियारा ।।
जोति स्वरूपी संग ही है आछे ताका करहु विचार ।।७१।।
पूजवा तौ आत्मा देव पूजिवा स्वस्वरूपं ।
चढ़ायवा तौ अनादि पाती चर्पट कहे कहं भटकि न मरना घट ही तीर्था जाती ।।७१।।
।। चर्पट की सबदी ।।

विशेष—पाखंडी और धूर्त जोगियो, सन्यासियों, ज्ञानियों एव गृहस्थों को फटकार बतलाई गई है ।

संख्या ११४. नागलीला, रचयिता—चूडामणि, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६, खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल सवत्—१८६०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

।। दोहा ।।

जमुना जी के नीकट पं ठाडे है श्री गोपाल ।
काली नाग ज नाथिकै हरि कीयो गेंद को ष्याल ।। १ ।।

॥ छंद भुजंगी ॥

नमो वाल रूपं नमो वृछ तारे ।
नमो आदि नाथं उपावन उधारे ।
नमो नंदलाला नमो ब्रह्म वालं ।
नमो कृष्ण वुल्है सहि नंदलाला ।'
सोहै पीत पटु विराजै दुसाला ।
चंद चौरे मुकट विराजै ।
सहि बाल नंदं भूजा च्यारि राजै ॥
सोहै कंठमाला सोहै कान कुंडल ।
जरी अंग जामा गले माल गुंजै ॥

:o: :o: :o:

अंत--

सदा नाग सौ गरड़ फेरी मिलायौ ।
कहै लाल जी नाग आगै जु आयौ ।
उठौ नाग जी सेतरा दिप जावौ ।
जवै नाग जी सेतरादिप मेल्या ।
चुरामनि कहै किते दंत हुठे घटिकंस
कौ जौम जब नाग नाथे ॥

॥ दोहा ॥

कालो नाग ज नाथि कै बैठे कृष्ण गोपाल ।
चुरामणि कहै चित्त धारि कै प्रगटं नंदकवांर ॥
इति श्री चुरामनि कृत नाग लीला संपूर्ण ॥
मीती चैत्र शूक्ला ६ बुद्ध वासरे संवत् १८६०

विषय--काली नाग लीला वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ का एक पत्र, संख्या २७ का नही है । रचना काल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८६० दिया है जो दूसरी कलम से लिखा गया है तथा जिसकी स्याही ग्रथ की स्याही मे कुछ भिन्न भी है । इस ग्रथ के साथ नददास की 'स्याम सगाई' रचना भी लिपिबद्ध है । आरभ के पत्र मे 'सनेह लीला' की पुष्पिका दी हुई है जिसमे लिपिकाल स० १८८६ दिया है । ग्रंथ का अन्तिम **"वाह सौ पगे रहत अनुराग"** भी है ।

हस्तलेख पत्र संख्या १६ से आरभ होता है । इससे स्पष्ट है कि इसमे 'सनेह लीला' भी थी ।

संख्या ११५. माधव सुयश प्रकाश, रचयिता--छविनाथ कवि (कन्नौजिया), स्थान--बूँदी, पत्र--३५, (पृ० सं०--३४ से ३६ तक नही है), आकार--१०×५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--६६६, अपूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८२५ के लगभग (कॉकरोली का इतिहास), लिपिकाल--बहुधान्य नाम सवत्सरे फा० कृ०--११ गुरौ, प्राप्ति स्थान--श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० ब०--८२, पु० सं०--२१ ।

आदि--"श्री गणेशाय नमः ॥ छंद मात्रा वृत्त ॥ मात्रा ॥ १३।११।१३।११। चरण४ । इति दोहा की रीति । दोहा ॥ त्रिकल नाम ॥ अक्षर ३६ । गुरु ६ । लघु ३० । यथा सिंधुर मुख के चरण जुग नंदित कमल समान । जिनकों ध्यावत बिबुधगण पावत बुद्धि

निदान ॥१॥ दोहा वारण ॥ अक्षर ३८। गुरु १० । लघु २८ । यथा ॥ तिन पदकंजनि को सुमिरि कवि छबिनाथ बिलास । माधव सिंघ नरिंद को वरन्यो सुजस प्रकास ॥१॥ इति जुग्म ॥

मध्य---पृष्ठ ३५ । छंद लीलावती । गुरु लघु अक्षर नियम । रहित मात्रा । पद में ३२ जति विकु. १ ऐसे २ चरण ४ यथा । । भुज बल उदंड कटि खंड खंड भटगण प्रचंड जमपुरहि लहैं । फूटि विकट कुंभ गज गिरत भूमि इमि प्रबल सुकवि छबिनाथ कहै । थलथल सिंदुर जल बहत विघ्य सत कोटि कटितमनु अचल ढहैं । दुरधर अरिंघ माधव नृसिंघ जनसमर मध्य कर खग्गहै ॥ ५७ ॥

छंद । सुही २ । टगण ३ अंत रगन १ ऐसे २ चरण ४ यथा ॥

माधव नृप बीर भिरत दिघ्घ धनुष सज्जिकै । छावत सर तिख्ख सघंन पारथ सम गज्जिकै । बिक्रम करि जिति लहत शत्रुदल निर्खंडि कै ॥ सोभत समरथ्थ पुहुमि शुभ्र सुजस मंडिकै ॥ ५८ ॥

अंत---॥कवित्त घनाछरी ॥ गंगा जू के निकट सहर बगिसर सोहै जाके एक ओर चंडी दूजी घा महेश है । जामें चारिवर्ण हूँ को पालै मरजाद ही सो सुख सो भवानीसिंघ प्रबल नरेश है । तामें गोविंददास उपमन्य बंशी आवस्थिकता को पुत छबि नाथ सेयि द्वारकेश है । तिहि शिरताज महाराज माधवेश जू को सुजश प्रकाश करि दानो ग्रंथ वेश है ॥२५ ॥ इति श्री महाराजाधिराज माधव सिंघस्य सुजश प्रकाश ग्रन्थे छबिनाथ कृतौ राज्य श्री वर्णनाख्य सप्तम प्रकाशः ॥ शोभते । बहुधान्य संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर ऋतौ फाल्गुनेमासि कृष्णपक्षे एकादश्यां गुरुवासरे समाप्तः ॥

विषय---पिंगल विषय वर्णन । छंदों के उदाहरणों में जयपुर नरेश, महाराज माधव सिंह का यश वर्णित है ।

संख्या ११६. नखशिख, रचयिता---छितिपाल, कागज---देशी, पत्र---११, आकार--५$\frac{1}{2}$ × ८$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---११, परिमाण (अनुष्टुप्)---३६५, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि---श्री राम जी सरनान्हः वरनन
कोमल कलित कचमेचक सुगंध सने
वेष हेरि सोभा करत सेवार की ।
कबहु कुहुकी रैंन पर पर परषै नभ षतुल
घन कोप वारी किरिन कुतारकी ॥
छितपाल कबहु सिगार को चवर चक्र बार बार
डारे साज सब हार हार की मरकत तारकी ॥
मनोज स्रग हार की सु मोर पषना की
जमुना जलधार की ॥ १ ॥
राहु सनि साल पै असाल के सदन औ
वह न बालतम तै विरोधि वर नमः ॥
कोप की किरन अहा ओप जब लाके अंग
तंतु नाम नाल तात चाहिए चरन मै ॥
याते छितिपाल के विचार माह ऐसो नाग
रहन न पाये केहु धुम के घरन मै ॥
प्रबल परीछित महीप नंद त्रास परे
संक मान सिगरे ससंक की सरन मै ॥ २॥

मध्य—

कोकनद कारे से तिहारे कजरारे नैन
मीन म्रग मदन तुरंग हिय हारे हैं ।।
दीरघ विसाल छितिपाल छबि जाल
भरे वरवाल रेष षंजन सँवारे हैं ।।
कीधो कंज कोस तें कढे हैं अलि बाल ब्रंद,
कैधो गहै षंजन रोस अहि कारे हैं ।।
तरनितनूजा मन मानि अपमान किधौं
उलटि करत बास वारिधि किनारे हैं ।। ६ ।।
गंग अंग मध्य में जमुन कौ उदोत कैधों
जोति छीरनिधि मध्य स्याम मनि वारी है ।।
सोभा के सदन मांहि मदन महीप राषी
आरसी अनूप कैधौं सुघर सुघारी है ।।
कैधौ छितिपाल नंदलाल के सरूप दोई
वर उर राषी भई परम पियारी है ।।
उतरी तिहारी जाति उपमा अनेक नैन
पुतरी तिहारी राधे सुथरी सिहारी है ।।१०।।

अंत—

कैधौं लंक भूपत की बैठक के मंजु बीच,
मदन फरस धरे मुदे मौजदारी के ।।
कैहू घनस्याम किधौं कंचन के षंभ गंग
आइने अनूप गोल राजै शोभ भारी के ।।
कैधौ मन मँथवे कौ तुलेटी मंथान जात
ढारे विध चक्र सुदरसन सुधारी के ।।
उपमा अनंत कौन वरन वषानन लिय
चीकनाई ये नितंब प्रानप्यारी के ।।२५।।

विषय—शिखनख वर्णन ।

संख्या ११७. कवित्त, रचयिता—छैल, (स्थान—जौनपुर), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—३½ × ३ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० दूधनाथ पाठक, ग्राम—नेवादा, पोस्ट—सुहौली, जि० आजमगढ़) ।

आदि—श्री गणेशायनमः

सहसधारा धारा विथरीगो विमल कीत्ति नित्ति नित्ति नइ रुचि पुहमी बिसेषिये।
कायथ मयंक महिमंडल में मंडलीक षंड षंड सुषद प्रचंड तेज पेषिये ।
गोवरद्धन तनै को पूरन प्रताप राजै क्वयाहिये राजाराम राजाराम लेषीये ।
करन करतूति रीति प्रीति धर्मोद्धार जाके जौनपुर माह "छैल" छहु रितु देषियै ।।१।।
सागर सो सील सरबग्य गुन आगर उजागर पुहमि माह सरव ।
सुभान विस्रो जेहि जीती लियो अरी घेरी अनी के ।
"छैल भनै" कुरसै जौ कुरं सीगडी गढ़टुटत ब्याल सुनीके ।
श्री सेष फतेमहंमद को जस फैलि चल्यो मुष माह गुनी के ।।२।।

विषय—राजाराम कायस्थ (जौनपुर) और सेखमहम्मद (?) यश का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। केवल दो पन्ने उपलब्ध है। इनमे एक कवित्त और एक सवैया है। रचना काल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम छैल है। जौनपुर के एक कायस्थ राजाराम के यश का इन्होने वर्णन किया है, अत विदित होता है कि ये जौनपुर के ही रहने वाले थे। राजाराम के अतिरिक्त इनके एक और आश्रयदाता थे, जिनका नाम शेख महम्मद था तथा जिन्होने सिगड़ी के किले को जीता था। पता नही उक्त सिगड़ी का किला कहाँ है। अन्य परिचय नही मिलता।

संख्या ११८क. महाप्रलै, रचयिता—जगजीवन दास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—७$\frac{१५}{१६}$ × ६$\frac{३}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् भोलानाथ जी (उपनाम भोरेलाल) ज्योतिषी, ग्राम व पोस्ट, धाता, जिला—फतेहपुर।

आदि—**श्री गनेसय नमः ॥ श्री पोथी महाप्रलै प्रथम आरंभ सती नम ॥**

अजया जाप अहै दुइ अछर। घट मे जा मय नहीं वोलय हुर ॥
वे उपदेस मंत्र यह सच सोइ मन मह ग्यहु रे ॥
साधो समुझ वीचार गहो मन। और सबै वीसरहु रे।
रहहु सुचीत मंत्र योही जानहु दुवीधा दुरी बहावहु रे ॥
परी दुबीधा दुइ दीस से जइहहु एक ही से मन लावहु रे।
लाइ रहो कहो प्रगट न भाषहु तवही सो सुष पावहु रे ॥
जनम पाइ लीन समझे सुष है समुझे से दुष होइ रे।
सुष परो सुधे गए जहसे आयउ चलउ सरवस सो षोइ रे ॥
:o: :o: :o:

अंत—

"जगजीवन दास" के मतगुर साहेब दीयो चरननर माथरे।
अपनी सरन रषो मोही लीन्हो कीन्ह मोही सनाथ रे ॥
मन दीढ़ होइ सुमीरत रहै अनत चीत न चलाउ।
"जगजीवनदास" तव भगत होइ तेन्ह कर अलष लषाउ ॥

इति श्री पोथी महाप्रलै संपुरन सुभमस्तु १९२३ मीती भदो सुदी दुवदसी मुकम रजनपुर छावनी मलिषा नंदकुमार लाल रहाने वाला देहता महादेव जीलगोद सकीन गउदवो लीषस अवधपुरी से उतर कोम सात प्रगन कोइतर मल रहै त प्रवसती जनरवा परदान ॥

विषय—निरगुन मतानुसार ज्ञानोपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९२३ वि० है। रचयिता का नाम जगजीवन दास है। देखिए बोधदास कृत (भक्ति विनोद' का) विवरण पत्र।

संख्या ११८ख. ज्ञान प्रगास, रचयिता—जगजीवन दास, कागज—देसी, पत्र—१३, आकार—७$\frac{१५}{१६}$ × ६$\frac{३}{१६}$ इंच, पंक्ति—(प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् भोलानाथ जी (उपनाम भोरेलाल) ज्योतिषी, ग्राम व पोस्ट—धाता, फतेहपुर।

आदि—**श्री गनेसहए नमह ॥ श्री हनोमनजी सहए नम ॥ श्री जगजीवन स्हेव क्रीत गंयन प्रगास लीषते ॥**

॥ दोहा ॥

सतगुर समरथ तुम देव जब तब होए ।
जीन कह ग्यान होए जब कही भाखो तब सोए ॥

॥ चौपाइ ॥

सतगुर अहै सीधी के दाता । आपुही करता आपुही वीधाता ॥
आपुही सत्य के भजन करैया । आपुही सत मत गवइया ॥
आपुही सत जेत अवतारा । आपही आप रहत है न्यारा ॥

:o: :o: :o:

अंत—

॥ सोरठा ॥

अमर भए जन सोए ततसार मन में भजे ।
एही ते मंत्र न कोए कहत है प्रगट पुकार वै ॥
जगजीवनदास गुरमुष भए सतगुर कै परसंग ।
सतो नाम धुनी लगी रहै चरन कंवल अनुराग ॥

इति श्री गरंथ ग्यानप्रगास समपुरन सुभ संवत १६२३ साल महीना कुआर सुदी तेरसी दीन सुक के दीन तएरहु उहे बषतावर दास वैरागी के मकान पर मोकाम रजनपुर गरंथ के मालीक रूपनदास महंत ॥

विषय—निरगुन मत के अनुसार ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना बोधदास कृत 'भक्ति विनोद' और दूलनदास कृत 'नहछुर' तथा अन्य रचनाओं के साथ एक हस्तलेख में है । विशेष के लिए बोधदास कृत 'भक्ति विनोद' का विवरण पत्र द्रष्टव्य है ।

संख्या ११६क. उपखाने सहित दशम की लीला, रचयिता—जगतानद, पत्र—३०, आकार—४। x ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८१ के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० वं०—१०६, पु० सं० १ ।

आदि—श्री द्वारिकेसो जयति ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ उपखाने लिखतंग ॥ सो बातन की बात भजो सी बिठल नाथे । सी गोकुल नाथ सुनाथ राय बिठल मं माथे । सी गोवर्धन इस गुरन के चरन मनाउ । उपखाने सहत दसम की लीला गाऊ । गाउ गुन गोपाल के जगत नंद विख्यात ॥ भजीले कृष्ण चलो तक सों बातन की बात ॥ १ ॥

मध्य—तोही बीरानी कहा परी तु आपुनी न बेर ॥ तु आपुनी न बेरी हेरी मुस्टक चानूंरो । कृष्णदेव बलदेव लरती कोतीक भयो पुरो । मुस्टक कहे पुकारो सुनो चानु रचीत घरी । आडा गोडी लाय बाह गहीदे पटक्यो हरि । हरि मारी चानुर कहे हुं अब लीयो घेरी । तोही बीरानी कहा परी तु आपुनी न बेरी ॥५२॥

अंत—जगत नंद बरनन कीयो सोनो और सुगंध । कृष्ण लीला यह गाइ दसम चरित अपार कहां लों कहु सुनाइ । उपखाने हो घने जीतेक मेरे मन आए । कोतीक जीय मे जानी अबें में बरनी सुनाए । सुनी के भक्त कृपा करो बाचो बन्यो प्रबंध । जगत नंद बरनन कीयो सोनो और सुगंध ॥

उपखाने दसम लीला संपूर्ण समाप्त ॥

विषय—जगतानंद कवि ने लोकोक्तियो पर भगवान् कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया है, जो उनकी एक विशेषता है।

विशेष ज्ञातव्य—लिपि अशुद्ध है। सम्प्रति यह ग्रथ "जगतानन्द" नाम से उक्त कवि की सपूर्ण रचनाओ के साथ शुद्धाद्वैत एकेडमी विद्या विभाग, कांकरोली से प्रकाशित हो रहा है।

संख्या ११६ख दोहा साखी, रचयिता—जगता नंद, पत्र—६ (४२ से ४८), आकार—७।। × ४। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७० के लगभग, लिपिकाल—स०१६१४, प्राप्ति-स्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० स० ३७, पु० सं० १।

आदि—अथ जगतानंद कृत दोहोरा साखि लीखेते ।।

श्री बल्लभ पद बंद के सरस होत सो ज्ञान । अधम रहत आनंद करत अमि रस पान ।। १ ।।
और कछु जानु नहीं बिना श्री बलभ एक । कर ग्रहे छांडे नहीं जिनकी ऐसी टेक ।। २ ।।
एसे प्रभु क्यो बिसारिए जिनकी कृपा अपार । पल पल मे रटत रहु श्रीबलभ नाम उचार।।३।।

मध्य—

श्री बलभ बलभ जो कहे बल से हजारों कोस ।। ताको पातक यों जरे जौ सुरज ते ओष।।३१।।
श्री बलभवर को छांड के भजे जो भैरव भूत ।।
ताको जनमा यों गयो ज्यों बेसा को पूत ।।३२।।
श्री बलभवर निरख्या नहीं नेनहि वैष्णव सो नेह ।।
ताको जनम यो गयो जौ फागुन के मेह ।।३३।।
भगवदी भगवद एक हे तासों राखो नेह ।।
भवसागर के तरन को नाउका कही एह ।।३४।।

अंत— **नंद नंदन सीरराजही बर्साने भृषभान ।**
वोउ मिली क्रीडा करि उत गोपी उन कान ।६१।।
मनपंक्षी तन मन करो उड जाउ वाई देषा ।।
श्री गोकुल गाम सुहावनो जहाँ श्री गोकुल चंद नरेश ।।६२।।
मनपंछी तत लग उडे वसे वासना मांझ ।।
प्रेम बांझ की झपट में जब लग आयो नाही ।।६३।।

इति संपुर्ण ।। यादृशं पुस्तक दृष्ट्वा तादृशं लीखितं मया ।। यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दोयते ।।१।। इति नित समे के पद सो तथा साषियो जक्तानंद जी कृत समाप्तं ।। संवत् १६१४ ना कार्तिग वदि ३ लः ब्राह्मण वैष्णव जे कृष्णदास लीखायतं बहुजी माराज ।।

विषय—श्री वल्लभाचार्य जी के प्रति भक्ति वर्णित है।

संख्या ११६ग. श्री वल्लभाचार्य जी की वशावली तथा स्वरूप वर्णन, रचयिता—जगतानंद, निवास स्थान—गोकुल, पृष्ठ—११ (पृ०—२० से ३१), आकार—६ × ६½ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७८१, लिपिकाल—स० १७८१, प्राप्ति स्थान—श्री विद्या-विभाग कांकरोली, श्री सरस्वती भडार, हि० ब० ५१, पु० स० १।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभो जयति ।। श्री मद्वल्लभाचार्य जी की वंशावली लिख्यते ।।

दोहा—

श्री वल्लभ वंशावली जो सुनिहै चित लाई ।
ताको वंश विशाल अति ह्वै है नित सुखदाई ।। १ ।।
श्री गोवर्द्धन ईस प्रभु हृदे करो रहो कार धाम ।
जिनको पद जुग कमल को करि जगनंद प्रनाम ।। २ ।।

मध्य—पृ० २७

अब कहिहों सुत तीसरे बालकृष्ण जी वंस। इनके देखो पुत्र छह इक कन्या अवतंस ।। १३ ।।
द्वारिकेश व्रजनाथ जी व्रजभूषण जी लाल। पीतांबर जी काम तन अलंकार जी बाल ।। १४।।
पुरुषोत्तम जी षट् भए द्वारिकेश के दोय। जे श्रीगिरिधर लालजी श्री अनिरुद्ध सु होय ।।१५।।

अंत—

सुने सुनावे नित्ति प्रति पढे पढ़ावे नाम ।
भुक्ति मुक्ति धन पुत्र बहु ह्वैहे पूरन काम ।। ७६ ।।
पढ़िहे सुनिहे चित्त दे ताके मगल गेहु ।
श्रीबल्लभ वंशावली जगतनंद सुनि लेहु ।। ७७ ।।
श्रीबल्लभ विट्ठल प्रभू गोकुलेश जी आस ।
श्रीगोवर्द्धन ईस को जगतनंद हे दास ।।७८ ।।

इति श्री मज्जगनंद विरचिता श्रीमद्वल्लभाचार्याणां वंशावली समाप्त ।

संवत् सत्रह से बन्यो इक्यासी वदि माह ।
द्वेज चंद पोथी लिखी जगतनंद करि चाह ।

विषय—श्री आचार्य जी श्री वल्लभाचार्य जी के वश की वंशावली सं० १६८१तककी वर्णित है तथा श्री ठाकुर जी के सात स्वरूपों का वर्णन ।

संख्या १२०. एकादसि कथा, रचयिता—(जन) जगदीश, कागज—देसी, पत्र—१८, आकार—८ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८४६ वि०, प्राप्ति स्थान—प० राम अकबाल उपाध्याय, ग्राम—सेलहरा पट्टी, पो० अतरौलिया, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ एकादशी कथा लीषते ।।

गुरु गोविंद गनेश मनाई। हरि वासर की कथा बनाई ।।
द्वादसकंध भागवत माही। कह सुखदेव परिछीत पाही ।।
कथा कृष्ण सो पूछी पारथ। वरनौ प्रभु विख्यात जथारथ ।।
सो चरित्र भाषा कृत गावौ। सतसंगति मिलि मन विसरावौ ।।
एक समै करनामै स्वामी। भगतवछल उर अंतरजामी ।।
पुरि द्वारिका सहित समाजा। बैठे हुते त्रिभुवन के राजा ।।
महा महा मुनि कहहि पुराना। कहुँ संगीत नृत्य गुन गाना ।।
तेही समाज मह पंडौ पाँचौ। मिले हरिहि जेन्ह को व्रत साचो ।।

।। दोहा ।।

ता दिन एकादसि व्रत उपवासे नर नारी ।
पूछे पारथ कृष्ण सो कथा समै अनुहारी ।।

अंत—

सुर मुनि संत समागम रहऊ। ए सब विषय कछु नहि चहऊ ।।
अपनो जानि कृतारथ कीजै। पद पयोज भगति निज दीजै ।।

एउमस्तु बोले नारायन । ते मम कृत सुकृति पारायन ।।
मम व्रत एकादसि तुम होहु । संत संकोच सतत सोहू ।।
:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

जो फल कष्ट अनेक करि साधन विविध विवेक ।
"जन जगदीश" सकल फल फल हरि बासर व्रत एक ।।

इति श्री .... महापुराणे श्री भागवते द्वादसकंधे श्री कृष्णार्जुन संवादे एकादसी माहात्म्ये संपूर्ण सुभमस्तु संवत् १८४६ कौ फागुण...........

विषय—एकादशी व्रत की कथा का वर्णन ।

संख्या १२१. जगत रस रंजन, रचयिता—जगदीश कवि, स्थान—जयपुर, कागज—देसी, पत्र—३२, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८६१, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० बं० १३४, पु० स० ४ ।

आदि—।।श्री महा गणपतये नमः ।। श्री हयग्रीव देवाय नमः ।। अविघ्नमस्तु ।। अथ जगदीसकृत जगतरसरंजन नाम ग्रंथ लिख्यते ।। मंगलाचरन ।

।। मंगलाचरन कवित्त ।।

होत सब लाइक विनाइक बखानि केते गनपति भाखिके ते धनपति धाए हे ।
कवि जगदीस के ते सुमुख मनावत ही विमुख पदारथनि सुमुख सुहाए हे ।
विघन विनासी कहि विघन विनासे किते इकरद वारौ बोलि सदसुख छाए हे ।
नांवन की महिमा बतावन मे पार को है पारवती सुत के अपार गुन गाए हे ।। १ ।।

मध्य पृ० ३० परकीया खंडिता यथा सवैया ।।

और गुवालिनि के रस मानिके और गुवालिके आए कन्हाई ।
सूरज की अरुने किरने पर रातिके जागर की छवि छाई ।
राजति ही गुरु लोगनि भामिनि कौल के चूक की बात जताई ।
टीकी सुधारन कौ मिस कै अंगुठा करि सूधौ लिलार लगाई ।।३० ।।

सामान्य खंडिता यथा ।। सवैया—

औरहीके रति रंजित भोरही आए हैं बार बधू के अगारे ।

अंत— ।। दोहा ।।

जगत रस रंजन यहै मैं किय निज बुधि बोधि ।
भूल चूक जो होइ सो सुकवि लीजियो सोधि ।। ४२ ।।
अट्ठारे से बासठा संवत् फागुन मास ।
ग्यारसि कवि दिन कृष्ण पछ भयौ ग्रंथ परकास ।। ४३ ।।

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई जगत सिंह जी देव रस रंजनार्थ देवर्षि कलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट सुत जगदीस कृत जगत रस रंजन नाम ग्रंथे हास्यादि रस निरूपणं नाम अष्टमास्वादः ।।

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

संख्या १२२. जगन बत्तीसी, रचयिता—जगन कवि, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—५¼ × ४¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि— रामजी सति

सरसुति सुमरु हुआ रस बुधि दीजे मोहि नमो पाई गनपति गुनहि गंभीर के ।।
एक चित्त ह्वै के गुर छल कौ प्रनाम करूँ जाके गुन ऐसे जैसे गुन दधि छीर के ।।
जिते कवि कलि में कलोले करें कविता को वचन रचन जो पवित्र गंगनीर के ।।
जनकें प्रसाद की जे जगन भगत होति सबैया वती सराज राम रघुबीर के ।। १ ।।
अनकछि सागर सेन हुतो छोटो छील रसो चतुर ब्रह्मा के आगे बेद वयों बखानिए ।।
मान सरबर माफि फूलत सरोज वहु हुतो फूलत्वंबी कहा फूल परवानिए ।।
आन नव वधू प्राम लीज्यै गह लोहू जो तो भल्यो जगन तो अवशिव सुधि लीजिए ।।
मोमें इतनी न बुधि सुह्यगुन की न सुधि मोसो निगुनी कू गुनी बुरो जिन मानिए ।। २ ।।

मध्य—

दोऊ कर भीड़त कहैत ऐसे मंदोदरि,
एहो पीय कोऊ परत्रीय को हरत है ।।
जयति जगन कवि अंधरे असुर सबै,
पानी पानी कहि धाइ पानी में परत है ।।
दौरी दौरी डोलत राजा जू तिहारी नारि,
देषि देषि दावानल मन में डरत है ।।
प्रगटे पाईक कोट प्रजरयो कंचन कोट,
लाष लाष के महल लाष ज्यों जरत है ।। १८ ।।

अंत—

असुर सैना संघारे महा रावन से मारे,
कुंभकरन जैसे अव रहि कै पछार्यौ है ।।
कंचन को कोट पर रावन कू मारि आयो,
महाराजा भभीछन कूं दै आयो है ।।
रैन वरषत आयो चवर ढुरत आयो,
सब कछू स्वामी भुव दीपति सुहायो है ।।
सभन के मरभषे आनंद भयो,
जगत, जगन मंगल गायो है ।। ३३ ।।

जगन बत्तीसी संपूर्ण ।

विषय—राम चरित्र वर्णित है ।

संख्या १२३. सुदर काड, रचयिता—जगन्नाथ, कागज—देशी, पत्र—११०, आकार—८ × ६$\frac{१}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण—(अनुष्टुप)—१९८०, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, श्री राम सुदीष्ट मिश्र, ग्राम—सोनाड़ी, पो०—कुँडेसर, गाजीपुर ।

आदि—(पत्र ४)

।। लछुमन जोरे हाथ नाए कै माथ कहै रघुनाथ बीचारी ।।
।। धरहु धीर रघुवीर...............देव दुखन हरी ।।
:o: :o: :o:
तब जाए धाए मारौ सुभट कह :: अब सोच करत प्रभुजी अ मह ::
:o: :o: :o:

॥ दोहरा ॥

॥ वरवानी सौ लछुमन कहा : जाए कहहु सुग्रीव संते ॥
॥ चौमासा वरखा गएेउ सो : बोला ही रघुबीर तुरंत ते ॥
:o: :o: :o:
॥दूत जाए कहा महाराज जाहा : रघुवर साहेब बोलावते है ॥
॥ लछुमन खरेहही आप...............सीता बोलावते है ॥
:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

सुनी बोख वात अनुज रघुनाथ ॥गहैउ धनुख सर दोनौ हाथा ॥
गुन अकरन स्त्रवन लै टकोरा ॥ चक्रीत मेंउ......जारा ॥
सुनी अस वचन गए प्रभु पाही ॥
जारो जीभ्या कहसी अस वाता ॥ तुम्ह प्रभु आवी जुगधी बीधाता ॥
हुकुम होऐ मारो प्रभु बाना ॥ लेउ अवही अब सुग्रीव को प्राना ॥

दोहरा

वन वन फीरत कर्म वस दुखीत हरत मतीमंद ॥
राज पाऐ उदु.........परेउ रघुकुल कंद ॥

अंत--(पत्र १५८)

दीन दआल क्रीपाल प्रभु: क्रीपा करहु रघुनाथ
"जग्रनाथ" के मती तुछ्य है: ठाढ़े प्रभु कह नावो माथ
:o: :o: :o:

हनुमान मोही पर भएउ दआला
सुन्द्र कान्ड काथा सब गाआ
"जग्रनाथ" दासन के दासा
श्री राम क्रीपा ते कथा प्रगासा

दोहरा

सतगुरु दीन्ह भयो हरी: अग्या दीन्हा जग्रनाथ ॥
भारयेउ सीता वर सुजस: जग्रनाथ जो कहेउ प्रवान
:o :o :o:

झुलना

कहै कौन सकै रघुनाथ के गुनको: सोतौ सेस गनेस महेस भुले ।
ब्रह्मा जबकी नर नारंन्द सारंन्द: नही पावते है कोइ आर पार: ॥
आव वुन्द अथाह असुझ परें: गुनसात समुन्दकों जल धारा:
कहा राम का क्रीपा उन्हका है: जै जै दीन दआल क्रीपाल न्यारा

चौपाइ

सुन्द्रकान्ड जो पड़ी सुनावै
दीनदीन भवन मै लछीमी आवै
:o: :o: :o: (अपूर्ण)

विषय--सुंदर कांड की राम कथा का वर्णन। (सुदर काड)

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ अपूर्ण तथा खडित है। एक सौ दस पत्रे उपलब्ध हैं। प्रति इतनी प्राचीन है कि पत्रे बीच-बीच से टूट कर गिर पड़ते है। रचयिता "जगन्नाथ" हैं। रचना

का कारण ये यों बतलाते हैं :—एक रात को सोते में इन्होंने देखा कि हनुमान आए हैं और 'रामचरित्र' बनाने को कहते है, इसी प्रेरणा से इंहोने 'सुदर कांड' की रचना की। ग्रंथ पढ़ने से ज्ञात होता है कि इसके पश्चात इन्होंने लका काड भी लिखा। सम्पूर्ण ग्रंथ दोहा, चौपाई, छंद, कवित्त, अरील, झूलना आदि पदो मे है।

संख्या १२४. प्रेम विलास, प्रेम लता कथा, रचयिता—कवि जटमल नाहर, निवासस्थान—लाहौर, कागज—कालपी का हाथ का बना हुआ आधुनिक, पत्र—२०, आकार—११$\frac{3}{4}$ × ८$\frac{4}{5}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—स० १६९३, लिपिकाल—स० १९९९ वि०, प्राप्ति स्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

आदि—प्रेमविलास प्रेमलता कथा ॥

श्री जैनाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम प्रणमि पय सरसती गणपति गुण भंडार।
जगु स्वरण अंभोज नमि करूं कथा विस्तार ॥ १ ॥
योतनपुर नामा नगर इंद्रपुरी अवतार।
कोट नदी उतंग गृह वनवारी सुखकार ॥ २ ॥
लोक पीठ अर धर्मगुण दान माल दरबार।
बारह जोयण लांब पाण नव जोजन विस्तार ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

अठतालीस कोस लंबाई। वसैं वरन चारो लोकाइ ॥
राम समान सुधरमी राजा। प्रेम बिजै चिहुं खण्ड अवाजा ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

प्रेमवती ताकी प्रिया पति भगती गुनवंत।
रूप रंग रति सम रच्यो विधना धरि मनिषंति ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

प्रेम लता पुत्री तसु सोहै। रूपवंत सुरनर मन मोहै ॥
चंद्रमुखी मनुहर मृग नयनी। सुक नासा चंचल पिक बयनी ॥ ७ ॥

अंत— ॥ चौपाई ॥

प्रेम लता की वरनी प्रीता। जटमल जुगत सकल रस रीता ॥
सुमति सरसती सद्गुरु दीनी। सबरस लता कथा मुहि कीनी ॥७६॥

॥ सो० ॥

सबरस लता सुनांउ मधि सिंगार अरु प्रेम रस।
विरह अधिक फुनि ताम सुनति अधिक सुख उपजै ॥७७॥

॥ चौ० ॥

संबत सोलह सै त्रैयानुं। भादु मास सुकल पख जानुं ॥
पंचमि चौथ तिथैं संलगना। दिन रविवार परम रस मगना ॥७८ऽऽ॥

॥ दो० ॥

सिंघ नदी कै कंठ पइ मेवासी वो फेर।
राजा बली पराक्रमी कोऊन सक्कै घेर ॥७९॥

॥ चौ० ॥

पूरा कोट कटक पुनि पूरा। परसिरदार गाउ का सूरा॥
मसलत मंत्र बहुत सुजाने। मिले खांन सुलताण पिछाने॥८०॥

॥ दो० ॥

सइदा कौ सहिबाज खां वइरी सिर कलवत्र।
जानत नाही जेहली सब अवान को छत्र॥८१॥

॥ चौ० ॥

रइयत बहुत रहत सुंराजी। मुसलमान सु खास निमाजी॥
चोर जार देख्या न सुहावै। बहुत विलासा लोक बसावै॥८२।

॥ दो० ॥

वसै अडोल जलालपुर राजा थिर सहिबाज।
रइयत सकल वसै सुखी जब लगि थिरहू राज॥८३॥

॥ चौ० ॥

तहां वसै जटमल लाहोरी। बरनै कथा सुमति तसु छोरी।
नाहर बंस न कुछ सो जानै। जो सरसती कहै सो आनै॥

॥ सोरठा ॥

चतुर पढ़ो चित लाय सभ रस लता कथा रसिक।
सुनत परम सुख दाय श्रोता सुन इह श्रवण दे॥८५॥

॥ दो० ॥

सुनहि कथा दुर्जन सजन दुर्जन अवगुन लेह।
सूकर पायस छार कै मुख विष्ठा कुं देहि॥८६॥

इति श्री प्रेम विलास प्रेम लता की सब रस लता नाम कथा नाहर जटमल कृता संपूर्ण संवत् १८०९ रा वर्षे मिती वैसाख वदि ७ दिने गुरुवासरे श्री मरोट नगर मध्ये चतुर्मासी कृतं। पं० प्र० श्री १०५ श्री सुख हेम जी गणिवरान शिष्य सरूप चंद्रेण लिपी चक्रे शुभं भवतु॥ अथ कवित्त॥ सेत तलै ससि विठ, विठ ससि तलि दुइ धनुहर। धनुहर तलि मृग विठ, विठ मृगतल सुक मनुहर। सुकतल गोल्ह अनार, तासु तल विठो अंबा। अंबा हेठ कपोत, तासु तल भवर अचंभा। तसु तलै सुगिरि सरवर विमल सरतल सदा रहंत हर। तसु हेठ नाग पंगज जुगल जटमल बूझो चतुर नर॥१॥

विषय—प्रेमतन पुर नगर मे राजा प्रेमविजै राज्य करता था। उसकी रानी का नाम प्रेमवती तथा पुत्री का नाम प्रेमलता था। राजा के मंत्री मदन विलास का एक पुत्र हुआ जिसका नाम प्रेम विलास रखा गया। प्रेम लता और प्रेम विलास दोनो एक ही गुरु के पास पढने लगे। दोनो अति रूपवान थे। गुरु ने इस आशंका से कि दोनो रूपवान है, अतः उनमे कोई अनुचित प्रेम न हो जाय, दोनो को एक दूसरे के झूठ-मूठ दोष बताए। राजकुमारी से कहा कि प्रेम विलास कोढी है और प्रेम विलास को राजकुमारी का अंधी होना बतलाया। दोनो साथ ही पढते थे, पर जब उनमे से प्रत्येक एक दूसरे को घृणित दोष से युक्त समझता था तो एक दूसरे को देखना भी पाप समझते थे। एक दिन जब गुरु जी किसी कार्य से बाहर चले गए थे, राजकुमारी को पढने मे कुछ अशुद्धि हो गई जिस पर प्रेम विलास ने उसको अंधी कह दिया। राजकुमारी को बडा क्रोध आया और उसने भी प्रेम विलास को कुष्टी कहकर संबोधित किया। प्रेम विलास ने कहा, गुरु ने तुम्हे अंधी बतलाया था, अतः यह सोचकर कि उसी दोष से तुमने अशुद्ध पढ़ा, मैंने तुमको अंधी कहा, परंतु तुमने मुझे कुष्टी क्यों कहा? राजकुमारी ने भी

सत्य बात बतला दी। इस पर दोनों एक दूसरे को ध्यानपूर्वक देखने लगे। दोनों रूपवान तो थे ही, अतः शीघ्र ही एक दूसरे पर अनुरक्त हो गए। इतने में गुरु जी आ गए। उन्होने देखा कि उनकी चतुरता का परदा खुल गया। उन्होंने दोनो को डाँटा और समझाया पर कुछ फल न निकला। दोनों नु गुरु से अपनी अपनी हृदय की बातें कह दी। दुष्परिणाम की आशंका से गुरु ने दोनों को अपने अपने घर विदा कर दिया। परतु दोनो प्रेमियो को शांति कहाँ थी। एक दिन उन्होने निश्चय किया कि महाकाल के सामने विवाह कर भाग जायँ। आगे की अमावस्या का दिन इसके लिए निश्चित हुआ। इस बीच नगर में एक जोगिन आई, जो वीणा बजाना और गाना बहुत अच्छा जानती थी। लोग उसके गायन-वादन पर मुग्ध हो गए। राजा भी उससे मिल कर प्रसन्न हुआ। उसने जोगिन से राजकुमारी को भी वीणा बजाना और गाना सिखाने की प्रार्थना की। जोगिन ने स्वीकृति दे दी। राजकुमारी नित्य जोगिन के पास संगीत के लिए जाने लगी। प्रेम विलास भी अवसर पाकर राजकुमारी से कुटिया पर मिल लिया करता। दोनों एक दूसरे को देखकर व्याकुल हो जाते। ऐसे ही अवसर पर एक दिन राजकुमारी की आँखो से आँसू गिर पड़े जिसमे जोगिन को बडा आश्चर्य हुआ। मूल कारण ज्ञात हो जाने पर उसने राजकुमारी को आँखो का अंजन देकर उडने तथा रूप पलटने की विद्या सिखाई। कुछ दिन पश्चात् राजकुमारी को शिक्षा देकर जोगिन चली गई। इधर पूर्व निश्चित अनुसार दोनो प्रेमी चपक माला सखी के साथ महाकाल के सामने विवाह कृत्य संपन्न कर और देवता का आशीर्वाद लेकर आकाश मार्ग से उड भागे। तीनो रतनपुर नगर पहुँचे, जहाँ का राजा उसी दिन मर चुका था। राजा के कोई पुत्र न होने से यह तब हुआ था कि हाथी जिसको राजतिलक कर देगा वही राजा बनाया जायगा। सयोगवश हाथी ने प्रेमविलास को ही राजतिलक कर दिया। अत वह और प्रेमलता उस राज्य के राजा रानी बनें। कुछ दिनोपरांत प्रेम विलास का चद्रपुरी पाटण के राजा चंद्रचूड से घोर युद्ध हुआ जिसमे वह विजयी होकर घर लौटा। इस प्रकार अनेक कठिनाइयो पर विजय प्राप्त कर प्रेमलता और प्रेम-विलास अपने दिन सुखपूर्वक बिताने लगे। एक दिन उन्होने अपने माता पिता के पास एक दूत भेजा। उधर राजा और मत्री उनके लिए अत्यंत व्याकुल रहते थे, पर महाकाल की उपासना द्वारा उन्हे पता लगा कि ये रतनपुरी मे राज करते है तो सतोप कर चुप हो गए। इधर जब दूत उनके पास पहुँचा तब वे बहुत प्रसन्न हुए और उसको मुँह माँगी सौगात दी, तथा प्रेमविलास और प्रेमलता को यौवनपुरी आने का सदेश भेजा। दोनो प्रेमी अपने घर आए और माता पिता से मिल कर आनदित हुए। दोनों का पुन नियमित रूप से विवाह किया गया। इस प्रकार कुछ दिन माता पिता के पास रह कर ये दोनो फिर रतन पुरी चले गए।

॥ रचना काल ॥

संवत् सोलह सै त्रैयानं। भाद्र मास सुकल पछ जानं॥
पंचमि चौथ तिथै संलगना। दिन रविवार परम रस मगना॥

संख्या १२५. व्यजन प्रकार (पहला भाग), रचयिता--जयशकर सहस्र अवदीच, स्थान--आगरा, कागज--आधुनिक, पृष्ठ--३२, आकार--८$\frac{7}{16}$ × ५$\frac{15}{16}$ इच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--४२०, पूर्ण, रूप--प्राचीन, गद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सन् १८६८ ई० (सवत् १९२५ वि०), मुद्रणकाल--सन् १८६८ ई० प्राप्ति स्थान--श्री नृसिह नारायण शुक्ल, ग्राम--मीर जहापुर, पोस्ट--मिडारा, जिला--इलाहाबाद।

आदि--

॥ व्यंजन प्रकार ॥

इस पुस्तक के बनाने से प्रयोजन यह है कि गांव या शहर की रहने वाली जो लड़कियां

इसे पढ़ेंगी वे व्यंजन प्रकार अर्थात रसोई की क्रिया को भली भांति से जानेंगी ।। और इसी की सहायता से उन्हें यह बड़ा लाभ होगा कि अनेक प्रकार के व्यंजन बनाने या बनवाने में कुशलता हो जायगी ।। और जब मनुष्य इस पुस्तक के आशय को भली भांति से समझेंगे तो वे अवश्य अपनी लड़कियों को रसोई करने में चतुर होने के लिये पढ़ावेंगे क्योंकि लड़कियों को या बड़ी स्त्रियों को रसोई का जितना अधिक अभ्यास हो उतनी ही उनकी प्रशंसा होती है ।

अंत— ।। दोहा ।।

मूल चूक जो होय तो मत करियो काउ खीस ।
जयशंकर यों कहत हैं सब के पद धर सीस ।।
जैसी मेरी बुद्धि थी वैसी दई बनाय ।
अस्त व्यस्त जो होय तो क्षमा करो कविराय ।।

इति श्री जयशंकर कृते व्यंजन प्रकारे प्रथमो भागः सम्पूर्णः

विषय—पाक विद्या का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक सन् १८६८ में प्रकाशित हुई, अतः इसी के लगभग इसका रचनाकाल समझना चाहिए । रचयिता जयशंकर सहस्र अवदीच आगरे के निवासी थे । प्रांतीय गवर्नर की आज्ञा से और एम० केमसन साहब डैरेक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन की इच्छा से उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक की रचना की । पं० वंशीधर ने रचयिता को पुस्तक रचने के लिए उत्साहित किया ।

संख्या १२६क. रत्नावली, रचयिता—कवि जान, स्थान—फतहपुर (राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८$\frac{6}{10}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५०, खंडित, रूप—प्राचीन, (जर्जर), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६१ वि० हि० सन् १०४४, लिपिकाल—१७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद ।

आदि............................

भाग हो हिं तौ लागहिं तीर ।।
बरिया पार नइन कौ राज । जौ पहुँचें तौ सुधरैं काज ।।
जो जल मांहि बूडि हम जांहि । चित न मर्न मित मग मांहि ।।

।। दोहा ।।

बैठि चले तर मूर पर सुँमिरत सिरजनंहार ।
बीस द्यौस पाछैं चली लहरैं वारा पार ।।
कुंवर नै पांनीं मैं पंछी ऐसी भांति बोलत सुंनें जांन्यों साज बाजत हैं

।। चौपाई ४५ ।।

जरत लहरंनि मैं लहराइ । कबहूँ इत कबहूं उत जाइ ।।
कुंवर और संगी बिल लांवहिं । गुर पीरंनं कौ नांवं मंनावहिं ।।
दस दिनं लौं भटक्यो सब साथ । जीवनं मूरनं छाडी हाथ ।।
लहर गई मिटि दस दिनं पाछैं । रबि ससि डिस्ट परत हैं आछैं ।।
चलत मांस द्वै गये बिहाई । तब रेती पर पहुंचे जाई ।।
लै चकमक सौं आग जराई । बनसि मीन पकरि करि खाई ।।
सुंनें औचका बाजत साज । भांति भांति के रहे बिराज ।।
सगरी निस इहिं भांति बिहानी । भोर होत बतियां प्रगटानी ।।

मांनस नांहि बजावत साज । बहु पंछिन की हुती अवाज ॥
ऊंचौ शब्द करत परकास । तब जल मैं प्रगटतहु आस ॥

॥ दोहा ॥

रैन सबै इंहुं विधि रहै द्यौस नीर छपि जांहि ।
रीझ्यो कुंवर निहारि यो उपज्यो जिय मांहि ॥

मध्य—

॥चौपाई ॥ १२६ ॥

पद्मंनी कह्यो सुनहुं जिय प्यारो । प्रथम रीझ अब कहा बिचारी ॥
कछू रीझि कछु पद्मनीं कांनि । रतन कुंवर ढिग बैठी आनि ॥
भरि अंकवार मिले रति मैन । मन उमंग पै उमड़त नैन ॥
रतनवति जब रीझि जंनाई । पीति कुंवर की भई सवाई ॥
पद्मंनि अपनैं धाम सिधारी । रहे बाग मै ये नर नारी ॥
बिथा पाछली मोहंनं भाषं । बरजि बरजि रतनावति राषैं ॥
यहै कहै सुंनि पमं पियारे । सुरति न कर बुष दई निवारे ॥
बीरी बांनि कुंवर दै रतनं । रतन कुंवर कों दै करि जतनं ॥
सगरी निस बीती सुष मांही । सब रसु करे सुरति इक नांहीं ॥
राष्यौ सीस दंहुंनि मिलि भारौ । कठिन अगिन मुष राष न पारौ ॥

॥ दोहा ॥

आनंदंन मोहंनं रंतनं सब निस गई बिहाइ ।
घरी घरी सुष रसु किये रही घरी द्वै आइ ॥

:o: :o: :o:

अंत—सार कथ्यो मैं मति अनुंसार । जहां षोर सो लेहु सुधार ॥
भूलंनं कौ मांनस ब्योहार । है अभूलि आपुन करतार ॥
यहै वीनंती सुनियहु मित्त । दोष हंमारौ धरहु न चित्त ॥
जैसी बुधि तैसी मैं कही । नांव तक लै बैंची वही ॥
सोरह सै इक्यांनुवे वरष । रतनावती बांधी मै हरष ॥
अगहन बदि सातैं कहि जांनं । कथा संपूरनं कर्यो बषानं ॥
कथा पुरातंनं कीनीं नंई । नौं दिनं मै संपूरंनं भई ॥
संनं सहंस चार चालीस । जान वषांनीं बिसवाबीस ॥

॥ दोहा ॥

सुलप कथा यहु मैं कथी नौ दिन मै कहि जांन ।
कविता पढहु सुधार कै भाषी बुधि परवान ॥

इति कथा रतनावली की कबि जान क्रिते संपूरन भई संवत सतरह सै १७८४ मिती फागंनं सुदी नौमी ६ बुधेवार लिषतूं फतेहचंद तारा चंद का डींडवानिया पोथी बहुत सही लिषी है । श्री श्री..................

विषय—ग्रथ के आरभ के नौ पत्रे खंडित हो गए हैं जिससे कथा का आरंभिक भाग अज्ञात रह गया। शेष अश इस प्रकार है :—

पृथ्वी पर अमृत पुरी के राजा जगतराइ के मनमोहन नाम का पुत्र था। उसने एक दिन अप्सराओं के राजा सूरजमल की पुत्री रत्नावली का चित्र देखा जिस पर वह मोहित हो गया। रत्नावली को पाने के लिए वह कुछ मित्रो के साथ अपने देश से चल पड़ा। अप्सराओं के देश में जाना कुछ सरल कार्य न था, अतः उसे अनेक प्रकार की कठिनाइयो का सामना करना पड़ा।

एक समुद्र पार करने पर उन्हे ऐसे पक्षी मिले जिनके बोल वाद्य यंत्रों के स्वरो के समान थे। ये पक्षी दिन को जल मे छिप जाते और रात को बाहर आ जाते। पश्चात् उन्होने केशर बारी, लवंग, बिरवा और श्वानानन जीव (धड़ मनुष्य का और सिर श्वान का) देखे। श्वानाननों का राजा राजकुमार के ही नगर का था जो उधर जा पड़ा था। जिस दिन वह उनके (श्वाननों के) देश मे पहुँचा उस दिन वहाँ का राजा मर गया था। अत. वहाँ की रीति के अनुसार वहाँ के लोगो ने विदेशी को राजा बना दिया और राजा की पुत्री उसको विवाह दी। राजकुमार कुछ दिन उसके पास रहा। पश्चात् वहाँ से आगे चला। समुद्र पार करते समय पाँच साथी मगर के ग्रास हो गए। शेष राजकुमार सहित तीन बचे। आगे मार्ग मे चदन के वृक्ष दिखाई पड़े, जिनमे श्वान के समान बड़ी-बड़ी चींटियाँ थी। उनसे प्राण बचाकर एक शिला पर बैठे तो वह शिला उनको लेकर उड़ चली। किसी प्रकार एक पक्षी के पैर पकड़ कर आकाश से धरती पर आए तो परियों ने पकड लिया। वहाँ से भी निकले तो एक प्रेत ठग कर ले गया। प्रेत से छुटकारा पाकर असुरों के पाले पड़े। असुरो से छूट कर फिर परियो के फदे मे जा पड़े। एक महात्मा की दया से यह विपत्ति भी टली, परन्तु शीघ्र ही और विपत्ति आई। वह अप्सराओ के अन्य राजा के कोट मे गया जहाँ सिहल द्वीप की पद्मिनी बदी के रूप मे थी। राजकुमार ने पद्मिनी की सहायता से राजा को मार दिया और पद्मिनी को लेकर सिहल द्वीप पहुँचा। सिहल के राजा ने राजकुमार को पुत्री के रक्षक के रूप मे बड़ा सत्कार किया। पद्मिनी ने भी रत्नावती से राजकुमार की भेट एक फुलवारी मे कराकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की। पीछे यद्यपि राजकुमार को एक और विपत्ति का सामना करना पड़ा (इस बार वह अप्सर राजा के भाई का बदी हुआ जिसको उसने पद्मिनी छुड़ाते समय मारा था), पर रत्नावती के पिता सूरजमल की सहायता से बच गया। अत मे रत्नावती से राजकुमार का विवाह हो जाता है और उसके साथ वह आनदपूर्वक रहने लगता है। उधर साथियो मे केवल एक साथी, उत्तम नाम का बच रह गया था जो पद्मिनी के यहाँ उसके आग्रह पर टिक गया था। उसका भी प्रेम पद्मिनी से हो गया। जब राजकुमार रत्नावली समेत अपने देश को चला तो सिहलद्वीप मे आकर पद्मिनी से उसका भी विवाह कर दिया। इस तरह राजकुमार रत्नावती, उत्तम और पद्मिनी सहित अपने देश को चला आया। राजकुमार और रत्नावती मे विवाह हो जाने पर उनके आनद विनोद के सबध मे षड्ऋतु वर्णन भी है। कथा मे अनेक प्रकार के आश्चर्यचकित करने वाले जीवो एव देशो के वर्णन, घटना वैचित्र्य तो पद पद पर है। रचयिता इस कथा को बहुत पुरातन बतलाता है। अत हो सकता है प्राचीन भारतीय साहित्य इसका स्रोत हो।

ग्रंथ मे निम्नलिखित प्रकार से आठ खड है :—

१—पहला खड —खडित।
२—दूसरा „ —कुछ खडित। कुवर न पानी मे पछी ऐसी बोलत सुने जान्यो साज बाजत है, केशर बारी बिर्छ और मानस कज देखे, लवग बिरवा, श्वानानन जीव एव पांच साथी मगर ने ली–, चदन के वृक्ष देखे।
३—तीसरा „ —कुवर सिलाने उडायो, प्रेत ठग ले गयो, पछी ने उडायो तथा अनेक कौतिक देखे............११—१५ तक
४—चौथा „ —पद्मनि अप्सरराजा को मारि पद्मिनी को सिंहल द्वीप ले आयो.......................१५–२० तक
५—पाँचवाँ „ —कुँवर ने उत्तम पायो...................२०–२६ तक
छठा „ —रत्नावती – कुँवर रत्नावती से मिल्यो..........२६–३१ तक
७—सातवाँ „ —कुँवर रत्नावती कौ व्याहु भयौ...........३१–३६ तक

८—आठवाँ ,, —पद्मिनी उत्तम का व्याहु भयौ तथा कुँवर रत्नावती
और उत्तम पद्मिनी ले अमृत पुर आइ माता पिता
से मिल्यो.....................................३६-३७ तक

रचनाकाल

सोरह सै इक्यानुवं वरष । रतनावती बांधी मै हरष ॥
अगहन बदी सातै कहि जांन । कथा संपुरन कह्यो वषान ॥
कथा पुरातनं कीनी नई । नौ दिन मै संपूरन भई ॥
सन सहंस चार चालीस । जान बषानी बिसवाबीस ॥

विशेष ज्ञातव्य—विशेष के लिए देखिए परिशिष्ट १ में सख्या, १२६ ।

संख्या १२६ख. लैलै मजनू, कवि जान, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—८½ × ६½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३१, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६९१ वि० लिपिकाल—स० १७८८, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—ग्रंथ लैलै मजनू कवि जांन क्रिते

॥ दोहा ॥

प्रथम चित्त सौ लीजिये अलष अवगोचर नाम ।
सुमिरत ही कवि जांन कहि पूजं मनसा काम ॥
चिता को तारौ जरचो इछ्याभिरट न आइ ।
तारो करता नांव है लेत तंन षुलि जाय ॥ ३ ॥
एक सब्द मे जान कहि सिरज्यो सब संसार ।
जो चाह्यो सोई भयौ होत न लागी वार ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:
साहिजहां जुग जुग जियो जिह हजरत सौ हेत ।
जोइ इछ्या जीउ की सोई करता देत ॥ ८ ॥
कहत जान अब बरनि हौ लैलै मजनू प्रीति ।
सोई विध प्रगट करौं जो ग्रंथनि मैं रीत ॥ ९ ॥
लैलै मजनू की कथा अधिक सुहावै कांन ।
विरही विरहु बढ़ाईहै आहि पै सुषरसान ॥१०॥
:o: :o: :o:

मध्य—

सवइया

काल वसु भये जब लैलै मजनू सुपने मै काहू देषै नीकी भांति पाये है ।
उत्तिम आराम तामै धाम अभिराम केल करै नर बाम नीके तषत बिछाये है ।
हंसि हंसि कहै बात बीतं सुष दिन रात गाति मधि अंबर पटंबर पिन्हाये हैं ।
सलिता सलिल सोहै बोलि बोलि पंछी मोहै दरस भिषारी भोष दरस अघाये हैं ।

अंत— **॥ दोहा ॥**

प्रेम नेम जान्यो नही ते निहचे पसु आहि ।
सो मानस कवि जान कहि जिह करता की चाहि ॥ २ ॥
लैलै मजनूं बाचि कै पैमु बढ्यो मन जांन ।
थोरे दिन मै ग्रंथ यहु बांध्यो बुधि प्रवान ॥ ३ ॥

सोरह सं इक्यानुवै कीनो ग्रंथ बखान ।
भइ मकर सकरांत तब माह लग्यो कहि जान ।।
ग्रंथ लैलै मजनू संपूरन भयौ सं० १७८४ फागुन सुदी १५

विषय--लैला मजनू की कथा वर्णित है ।

रचना काल

सोरह सै इक्यांनुबै कीनौ ग्रंथ बखान ।
भई मकर सकरांत तब माह लग्यौ कहि 'जान' ।।

विशेष ज्ञातव्य--रचना काल सवत् १६९१ तथा लिपि काल सवत् १७८४ है । रचयिता का नाम कवि जान है । इनके सबध में तथा अन्य विशेष बातों के लिए देखिए रत्नावती का विवरण पत्र ।

संख्या १२६ग. रतनमजरी, रचयिता--जान कवि, स्थान--फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--३२, आकार--८½ x ६¼ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--११८८, खडित, रूप--प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--१०६० हिजरी सन्, सवत् १७०७ वि०, लिपिकाल--१७७८ वि०, प्राप्ति स्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि--

... ...की देखत ग्रटक्यौ चित्त ।
इक टक झांषत हीं रह्यौ डिठ न फिरै इत उत्त ।।

।। चौपई ।।

ऐसें लागत भौंहनि बंक । दोइ न उत नउ ये ससंक ।।
अचिरज देषि भयौ आनंद । रैन वरन निकसेब द्वै चंद ।।
तिय दृग उज्जल मनहुं तराव । भौंहैं आवनूस की नाव ।।
मन बैठ्यो जिह भीतर जाइ । भौर त्यौ रमै बूडिक षाइ ।।
हारी धनुष देषि भुवभाव । दै बिन बांनं करेजे घाव ।।

।। दोहा ।।

बांकौ ससिहूं पंदिये लेंहि न सूधै नांवं ।
बंक भौंह कौ देषि दृग सिर पर दीनो ठांव ।।

।। चौपाई ।।

अब नैननि की सुनहु निकाई । षंजन बरन मीन चपलाई ।।
कै संग भूलि परयो म्रिग छौना । कै कछु इनमै टांमन टौना ।।

अंत-- प्रेम ग्रंथ कौ जान कहि अरथ महा अतिगूढ़ ।
सो कैसें कै समुझि है मेरो जियरा मूढ़ ।।

।। चौपई ।।

सुनि सुनि लेहु कहै कवि जान । कथा कथी मैं बुधि परवान ।
कवि ताकौ चित्त बांढयौ जात । उकतिन मैं डोलत भरमात ।।
जौ भूलै तौ अचिरज नांहिं । दूषन जिन करहु मन मांहि ।।
पंडितन कौ है यहै बिचार । जहां षोर सो लेंहि सुधार ।।
यामैं उकति पुरातन बांनी । और नउतन हूं बहुबा आनी ।।

॥ दोहा ॥

उकति जुकति भाषा सहत बहु मति ग्रंथ मिलाइ ।
रतन मंजरी जान कवि भाषी बान बनाइ ॥ २ ॥
रतन मंजरी जान कवि भाषी विसवावीस ।
तबही सप्त यौं कहत है येक सहंस चालीस ॥
जे कवि ता आगे भये रचि पचि भाषी येक ।
बुधि के वर तें जांन कवि बांधी कथा अनेक ॥

इति कथा रतनमंजरी की संपूरन भई मिति पोह वदी १ विसपतबार समत् १७७८ बसषत फतेहचंद ताराचंद का डीडवानीया अग्रवाल गोत गोइला सन् ११३४ माह सफर ता० १५ पोथी फतेह चंद की घर की चौपाई २६४ दोहा २६६ ॥

विषय—चद्रपुरी के राजा अजयचद के मधुसूदन नाम का पुत्र था। एक दिन स्वप्न मे राजकुमार मधुसूदन को रतनमजरी नाम की परम रूपवती राजकुमारी से प्रेम-परिचय हुआ। स्वप्न का राजकुमार के चित्त पर इतना प्रभाव पड़ा कि जागने पर भी वह राजकुमारी को पाने के लिए अधीर हो उठा। भूख-प्यास जाती रही। न दिन को शाति, न रात को नीद। राजा, रानी एव राज्य के लोगो ने बहुत कुछ समझाया, पर कुछ फल न हुआ। एक दिन राजकुमार आखेट खेलने के निमित्त वन मे गया। एक सिह को मारने के पश्चात् विश्राम करने के लिए पेड़ के नीचे बैठा। उसी समय एक सुदर परंतु अद्भुत पक्षी उस पेड़ पर आकर बैठा। राजकुमार की इच्छा उसे पकड़ने की हुई। अत चुप-चाप धीरे-धीरे पेड़ मे चढ़ा और पक्षी के दोनो पैर पकड़ लिए। परतु दैव इच्छा कि पक्षी उड़ चला और राजकुमार का बल कुछ न कर सका। वह पक्षी के पैरो पर लटकता हुआ आकाश मे चलने लगा। पक्षी उड़ता-उड़ता एक घोर कातार वन मे पहुँचा, जहाँ राजकुमार ने अवसर पाकर अपने को मुक्त कर लिया। उस विस्तृत निर्जन वन मे राजकुमार को भय लगने लगा। उसे जीवन की आशका होने लगी। पर चलते-चलते ऐसे स्थान पर आया जिसने उसे चकित कर दिया। एक सुदर सुशोभित भवन दृष्टिगत हुआ जिसके चारो ओर ऐसे रमणीक उपवन थे जिनमे भाँति-भाँति के पुष्प और फलयुक्त वृक्ष एव अनेक मनोहर सरोवर थे तथा नाना प्रकार के पशु-पक्षी क्रीड़ा कर रहे थे। राजकुमार का कौतूहल बढ चला। उसने स्वप्न मे ठीक ऐसा ही दृश्य देखा था। कमी थी तो केवल राजकुमारी रतनमजरी और उसकी सखियो की। उसे स्वप्न सार्थक होता हुआ दिखाई देने लगा। भवन मे जाकर उसको एक शिलालेख द्वारा पता चला कि राजकुमारी प्रत्येक एकादशी को उपवन मे आती है और वन क्रीडा करके चली जाती है। उस अवसर पर जो पुरुष उस उपवन मे दिखाई देता है उसको उसकी सखियाँ तुरंत ही मार देती है। राजकुमार ने मृत्यु से अपने को निर्भय कर दिया। प्रेम के आगे मृत्यु को तुच्छ समझने लगा। अत. राजकुमारी की प्रतीक्षा मे वह उपवन में टहलने लगा। निश्चित समय पर राजकुमारी सखियो के साथ उपवन मे पहुँची। वह भी प्रेम विरह से व्यथित थी। राजकुमार के स्वप्न की तरह उसको भी स्वप्न हुआ था और उसी राजकुमार से उसका प्रेम हो गया था। अत. उपवन में राजकुमार से भेट हो जाने पर उसको प्रसन्नता हुई। लोक-लज्जा एवं मर्यादा पालन के निमित्त यद्यपि उसने राजकुमार के साथ उस समय कठोर व्यवहार किया तथापि सखियो द्वारा अपने माता, पिता से कहला दिया कि उसका प्रेमी राजकुमार उसके देश में पहुँच गया है। राजा उदयभान और रानी चद्रकला यह समाचार पाकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होने रतनमंजरी का विवाह राजकुमार मधुसूदन से कर दिया। कुछ दिन तक आनंदपूर्वक रहने के पश्चात् राजकुमार राजकुमारी से बिछड गया। एक दिन उपवन में राजकुमारी ने पूर्वोक्त प्रकार का पक्षी देखा, जिसको पकडने के लिए उसने राजकुमार से कहा। राजकुमार पक्षी को पकड़ने के लिए गया, पर उलटा पक्षी ही उसको लेकर उड़ चला। जब

पक्षी ने राजकुमार को छोड़ा तब राजकुमार ने स्वयं को अपने देश मे पाया। वह रतनमंजरी के बिना बहुत विकल था और उसको पाए बिना अपने देश में वापिस नहीं आना चाहता था। अतः फिर रतनमंजरी के देश को चला। मार्ग में एक देव मिला जो रतनमंजरी के ही वियोग में घूम रहा था। उसने राजकुमार के साथ दुर्व्यवहार किया। एक सिद्ध की कृपा से राजकुमार को अग्निबाण और वायुबाण नाम के दो अस्त्र प्राप्त हुए जिनकी सहायता से उसने देव को मारा और आगे चला। मार्ग में उसे अनेक विघ्न बाधाओं का सामना करना पड़ा, पर उक्त दो अस्त्रों की सहायता से सब पर विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता गया। एक रूपवती तरुण स्त्री को दानव ले जा रहा था। उसने दानव को मारकर स्त्री की रक्षा की। तत्पश्चात् स्त्री के पिता से भी भेंट हुई जो दानव का पीछा कर रहे थे। परिचय होने पर ज्ञात हुआ कि ये रतनमंजरी के पिता उदयभान राजा के भाई थे। फिर तो राजकुमार की प्रसन्नता का का ठिकाना न रहा। शीघ्र ही उनकी भेंट उदयभान से हो गई। फलतः वह रतन मंजरी से मिला। कुछ दिन पश्चात् रतनमंजरी को लेकर अपने देश को वापस आ गया।

विशेष ज्ञातव्य--रचना के आरंभ के सात पन्ने लुप्त हो गए है। रचना काल हिजरी सन् मे १०८० है। लिपिकाल संवत् १७७८ वि० दिया है। रचयिता का नाम कवि जान है। इनके संबंध में कृपया देखिए 'रत्नावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६घ. कथा नल दमयंती की, रचयिता--जान कवि, स्थान--फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--३०, आकार--८¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२३, परिमाण (अनुष्टुप्)--११२१, पूर्ण. रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सन् १०७२ हिजरी, लिपिकाल--१७७८ वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि-- कथा नल दमयंती की कवि जान क्रित ॥

॥ चौपाई ॥

अलष अगोचर सुमिरन कीजै। कहत जान कवि जौलौं जीजै ॥
जौ सुमिरन जै निसदिन होइ। मनुष अपावन पावन होइ ॥
है करता के भेद अनेक। कहा कहै जिहि रसना येक ॥
सेस सहंस दोए रचन विचार। सुमिरत होइ रह्यौ थकिहार ॥
सुष दुष देन समत्थ गुसांई। करिहै अपनें ही मन भाई ॥
करहि सु है है सहज सुभाई। राजा भिछुक भिछ कराई ॥
विनसें अंचि अवस्वा परें। बहुरौं अलष आपदा हरैं ॥

॥ दोहा ॥

करता चाहत सो करत होत न लागत बार।
कहत जांन या बात कौं जानत सब संसार ॥

:o: :o: :o:

अब हौं करौ पीर परनाम। सेष महंमद जाकौ नाम ॥
हांसी मैं जिनकौ विस्राम। संतत अबूह नीक इमाम ॥

:o: :o: :o:

दारा सुजा षेत विचराये। पुनि मुराद ग्वारेर चढाये ॥
को अरि रह्यौ लरनि को नांहि। इक छत राज करै जग मांहि ॥
दीनदार वरवड डो जूझार। औरंग जेब साहिमूछार ॥

अंत--- ॥ दोहा ॥

दमयंती पतिहेत तें जरत न मोरचो अंग ।
सारस की जोरी जिमै मरे येक ही संग ॥५०॥

॥ सवइया ॥

जान न देत अकेलो पुरी जम नाहु के मोह महा चितु भीनौ ॥
आव घ-तौ कू पीरन आवत जीय दै पीय को आदुर दीनौं ॥
छांडि विभूत विभूत यौ तन पूत सुताहूं कौ नाव न लीनौं ॥
जीवन पोच भयौ है सती तब सोच''' पैठत सोच न कीनौ ॥१४६॥

॥ चौपई ॥

उपज्यौ सोर मरे नल राइ । स...ग आसू मुष मैं हाइ ॥
राग ठौर रोवहिं बहु संग । छाती बाजहि ठौर म्रिदंग ॥
केकत द्यौस ऊजीन जु नगरी । अतिही दुषित रही है सगरी ॥
नल सु...क्रिया जनाई घरी । लोग बुलाइ दिलासा करी ॥
लोगनि कौं जु देत नलराइ । सबकौ दीनौं क्रिया जनाइ ॥
सब काहू के सारे काज । इंद्रसेन बनि आयौ राज ॥
ऐसे मुबत लोग सब भए । नल राजा कौ भूले गये ॥
हुतौ जम...दिल अचलमास । पूरी भई कथा रसुरास ॥

॥ दोहा ॥

सन हजार बहुतरौ...दिन आवित वार ।
करी जान तेईप दिन मै जब पाइ वार ॥
कथा नल दमयंती की संपूरन भई समत ॥ १७७८ सा......

विषय---नल दमयती की कथा का वर्णन ।

र० का०

सन हजार बहुतरौ...दिन आदितवार ।
करी जान तेईस दिन मै जब पाई बार ॥

विशेष ज्ञातव्य---रचनाकाल हिजरी सन् मे १०७२ है । लि० का० सवत् १७७८ है । रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए 'रतनावती' का विवरण-पत्र ।

इस कवि की समस्त रचनाएँ अधिकतर दोहा चौपाइयो मे है । इनका क्रम सर्वत्र समान नही । किसी रचना मे चौपाई की पाँच अर्द्धालियो के पश्चात्, किसी मे छह अर्द्धालियों के पश्चात् एव किसी मे सात या आठ अर्द्धालियो के पश्चात् दोहा आता है ।

प्रस्तुत रचना मे आठ चौपाइयो (अर्द्धालियो) के पश्चात् दोहा है ।

इसमे औरगजेब बादशाह का भ्रातृहंता के रूप मे उल्लेख है ।

संख्या १२६ङ. कथा पुहुप बरिषा, रचयिता---जान कवि, स्थान---फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज---देशी, पत्र---२७, आकार---८३/४ × ६१/४ इच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---२२, परिमाण (अनुष्टुप्)---६६५, पूर्ण, रूप---पुराना, लिपि---नागरी, रचनाकाल---सन् १०३७ हिजरी, संवत् १६८५ वि०, लिपिकाल---१७७८ वि०, प्राप्तिस्थान---हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद ।

आदि—कथा पुहुप बरिया वर्णन जान कृत ॥

॥ चौपई ॥ १ ॥

सुमिरौं अलख निरंजन आद । मुष रसना कौ यहै सवाद ॥
तौलौं जपिए जौलौ जीजं । नाव अलष अंम्रित सौ पीजं ॥

:o: :o: :o:

दूजं नाव मुहंमद गांऊ । ताकी दया परमपद पाऊं ॥
नबी नबी निस बासुर करिहै । ताकौ अंग नरक ना जरिहैं ॥

:o: :o: :o:

साहि जहां सर्हिन कौ साह । जहांगीर सुत जगत पनाह ॥

:o: :o: :o:

बड़े बड़े जाकं उमराव । नीके नीके करहिं उपाव ॥
आसिफषां थंभनिपति साहि । ऐसे दीनो ग्यांन इलाही ॥

:o: :o: :o:

और महावतषां बलिवंत । जाकं संग बहुत सांवत ॥

॥ दोहा ॥

आसिफ खां सरदास है दूजो षांननिषांन ।
साहिजहां करिहै मया भावत दोऊ प्रान ॥ ७ ॥
जहांगीर प्रिथी के पाल । साहिनसाहि भए बस काल ॥
उपज्यौ सारे मेदनी माहिं । काहू कं मन कौ कल नांहिं ॥
कियौ अचानक साहि पयानौ । सकल जगत पल मैं थहरानौ ॥
जेहे बड्डे राजे राने । घर आगजे सब तजि तजि थाने ॥
तिहिं छिन दौलतषां चहुवान । रोये पाव मेर परवान ॥

॥ दोहा ॥

नीकं राष्यौ कांगरौ स्वामधर्म ज्यो मांहि ।
अलिफषांन जाकौ पिता तातें अचिरज नांहि ॥

॥ चौपाई ॥

एक बार सब मिले पहारी । घेरौ कियौ भयौ जुध भारी ॥
कीचक धान परयौ घमासान । दौलत षांन लगाए पांनि ॥
छूटे पाइ पहारी लाजे । अपने अपने घर कौ भाजे ॥

:o: :o: :o:

साहिजहां सुनि येहु भाष्यं । गाढ़े पाइ भलं गढ़ राष्यं ॥

॥ दोहा ॥

इनकौ दादौ क्यामषां मारयौ पेरो साहि ।
दौलतषां कौ बावनी वं करिहौं समताहि ॥

:o: :o: :o:

संमत् सोलह सं पच्यासी । मन सागर ते रंभा निकासी ॥
प्रथम पंचमी सावन मास । कीन वरिषा पुहुप हुलास ॥

अंत—

॥ चौपाई ॥

करनहार समरथ गुसाईं । कैसी कैसी जोर मिलाई ॥
सुषिया किए महा दुषियारे । आस निरास पुजावत हारे ॥

काहू सौं करिहै उपगार । जग मैं जीतब ताहि बिचार ॥
जातं कछु उपगार न भये । यहू आये येहू गये ॥
इछ्या तिहं पुरवै करतार । जाते ह्वं आवै उपगार ॥

॥ दोहा ॥

कोऊ थिर नाहिन रहे जो उपज्यौ संसार ।
अमर रहत है जगत मे "जान" सुजस उपगार ॥
नाव धर्यौ बरिया पुहुप सुनि रीझत अलि प्रान ।
सन सहस सैंतीस मे कथा कथी यह जान ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सतरहि सै जु अठहंतरं कातग सतमी जान ।
फतेहचद सुदि मै लिखी ताराचंद सुत मान ॥

कथा पुहुप बरिखा संपूरन भई दसतखत फतेहचंद का ताराचंद सुत डीडवानीय ॥ १७७८ मिती कातग सुदी ७ सोमवार ॥ चउपाई ॥ १७२ ॥ दोहा ॥ १७४ ॥ श्री श्री श्री

विषय—श्रीनगर (काश्मीर) का राजा भोपाल चहुवान बड़ा वीर और प्रतापशाली था। बहुत यत्नों के पश्चात् उसको पुरुषोत्तम नाम का पुत्र प्राप्त हुआ, जो सर्वगुण-सपन्न एव परोपकारी भावनाओं से युक्त था। एक दिन राजकुमार ने एक विचित्र प्रकार के पक्षी को देखा जिसके पर फड़फड़ाने से अनेक प्रकार के पुष्पों की सुगंधि फैल रही थी। उसने अन्न का दाना दिखाकर पक्षी को पकड़ना चाहा, पर विफल रहा। पक्षी ने भी राजकुमार से कहा कि वह अन्न द्वारा नहीं पकड़ा जा सकता। परतु पश्चात् किसी प्रकार वह पींजरे मे आ गया। वह पक्षी खिन्न और उदास रहा करता था। जिससे राजकुमार को भी अति चिंता रहने लगी। राजकुमार उससे बातचीत करना चाहता पर वह अधिक नही बोला करता। अत मे राजकुमार के प्रेम एव शील और सौजन्य से प्रसन्न होकर पक्षी ने अपनी कथा इस प्रकार आरभ की :—

'राजकुमार ! प्रेमपुरी नगरी का राजा जगमन है। उसकी पाँच रानियाँ है जिनमे रूपनिधि अद्वितीय सुदरी है। यही मेरे माता पिता है। मेरा नाम सुकेसी है। ककन पुरी का राजा उदय सिंह नाम से विदित है जिसकी रानी का नाम दुर्गावती और पुत्र का सुरपति है। राजकुमार सुरपति का प्रेम किसी प्रकार मुझसे हो गया। मेरा पाना असभव देखकर यद्यपि माता पिता एव मित्रों ने बहुत कुछ समझाया कि वह प्रेम हठ छोड़ दे तथापि वह नही माना। उसने खाना पीना छोड दिया और चौसठ घड़ी आठों पहर मेरे ही ध्यान मे लीन रहने लगा। एक दिन पंवार जाति के अपने घनिष्ट मित्र को लेकर मेरी खोज में निकल पड़ा। चलते-चलते मार्ग मे बडा विस्तृत समुद्र पडा जिसको पार करने मे दोनो मित्र एक दूसरे से बिछुड़ गए। राजकुमार को इससे बड़ी वेदना हुई। किसी प्रकार समुद्र पार किया तो बड़े-बड़े पर्वताच्छादित और विस्तृत कातार वनो से युक्त देश मे जा पहुँचा। आगे बढने पर क्या देखता है कि सुसज्जित शय्या पर एक अत्यत रूपवती तरुण स्त्री सो रही है। उसने समझा कि वह सुकेसी है। अतः वह शय्या पर आकर बैठ गया और उसके घूंघट को खोलने लगा। स्त्री जग उठी और शय्या पर पुरुष को बैठे देखकर बहुत क्रुद्ध हुई। उसने राजकुमार को डाँटा और भाग जाने के लिए कहा। पर राजकुमार स्थिर भाव से बैठा ही रहा। उसने उसका नाम पूछा। तरुणी ने उत्तर दिया कि उसका नाम निर्मलदे है। राजकुमार तुरत ही उठ खड़ा हुआ और आगे चलने लगा। तरुणी राजकुमार के इस व्यवहार से चकित रह गई और उससे परिचय पूछने लगी। राजकुमार ने यह सोच कर कि संभवतः सुकेसी के संबंध मे कुछ पता चल जाय, अपना परिचय दिया और फिर उसका भी परिचय पूछा। निर्मलदे ने कहा, "चतुरपुर

नगर के राजा चतुरभुज मेरे पिता है। माता का नाम गिरिजा है। हम दो बहिनें हैं। मेरा नाम निर्मलदे है और दूसरी का, जो मुझसे छोटा है, परिमलदे है। मुझे यहाँ एक दानव उठा लाया है, जो मुझे किसी प्रकार नहीं छोड़ता।" राजकुमार को प्रेम के लिए घोर संकट उठाते देख उसको बड़ी दया आई। उसने मेरा पता दिया और कहा कि परिमलदे, जो उसकी बहिन है, आपको उससे मिलने में सहायता करेगी। राजकुमार मेरा पता पाकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने दानव को मार कर निर्मलदे को विपत्ति से छुड़ा दिया और उसे बहिन के सदृश मानने लगा। निर्मलदे भी मुझसे भेंट कराने का वचन देकर राजकुमार को अपने घर ले गई। उसके माता पिता ने राजकुमार का बहुत सत्कार किया और उसके कृतज्ञ हुए। निर्मलदे की सहायता से उपवन में राजकुमार और मेरे मिलन का प्रबंध किया गया। उपवन को जाते समय राजकुमार का बिछुड़ा हुआ मित्र भी मिल गया। दोनों बहुत प्रसन्न हुए। कुछ देर पश्चात् मुझसे भेंट हुई। हम दोनों प्रेमी रात भर उपवन में ही सोते रहे। प्रातःकाल मेरी माता मुझे खोजती-खोजती उपवन में पहुँची। एक मनुष्य के साथ मुझे सोती हुई पाकर बहुत क्रुद्ध हुई। उसने राजकुमार को उसके देश में पहुँचा दिया और मुझे मंत्र द्वारा पक्षी बना दिया। राजकुमार को जब नींद खुली तो मुझे न पाकर बहुत व्याकुल हुआ। उधर राजा ने उस पर कड़ा पहरा बिठा दिया जिससे वह फिर न भाग सके। परंतु रात को खिड़की द्वारा नदी में कूद कर राजकुमार मेरी खोज में घर से भाग निकला। मैं भी माता के दुर्व्यवहार से घर से निकल पड़ी और राजकुमार सुरपति को खोजने लगी। खोजते खोजते दस वर्ष हो गए पर राजकुमार का कोई पता न चला। अंत निराश होकर तथा आपके शील, सौजन्य और गुणों को देखकर इस आशा से कि कुछ शांति मिल जाय आपके पास आई।

राजकुमार पुरुषोत्तम पक्षी की बात सुनकर अत्यंत दुखी हुआ। उसने उसको बहिन तुल्य माना और वचन दिया कि जब तक उसका मिलन राजकुमार सुरपति से न हो जायगा, वह शांति से न बैठेगा। कुछ दिन विचार करने के उपरांत वह पक्षी को पींजरे में लेकर राजकुमार सुरपति की खोज में निकला। अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करता हुआ दो वर्षों में निर्मलदे के पास पहुँचा। उसके द्वारा रूपनिधि को सुकेशी का पता दिया गया। वह पुत्री को पाकर अत्यंत प्रसन्न हुई और उसे फिर वास्तविक रूप में कर दिया। पश्चात् राजकुमार निर्मलदे और उसके माता पिता के कहने पर सुकेशी का विवाह राजकुमार सुरपति से करना निश्चित किया गया। परंतु राजकुमार सुरपति का तो कोई पता न था। सौभाग्यवश वह भी एक दिन निर्मलदे के घर आ गया। सबको प्रसन्नता हुई और सुकेशी से उसका विवाह कर दिया गया। वह राजकुमार पुरुषोत्तम का उपकृत हुआ और अपने को उसका चिर सेवक माना। कुछ दिन बीतने पर सुरपति की सहायता से राजकुमार पुरुषोत्तम का निर्मलदे से और महानंद सुरपति के मित्र, का परिमलदे से विवाह हो गया। इस प्रकार सब आनंद से रहने लगे। अंत में दोनों राजकुमार और मित्र महानंद स्त्रियों सहित अपने देश को वापस आ जाते हैं। यह कथा मंझन की 'मधुमालती' से मिलती है।

विशेष ज्ञातव्य---रचना काल संवत् १६८५ एवं हि० सन् १०३७ है। लिपिकाल संवत् १७७८ है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय में देखिए 'रत्नावती' का विवरण-पत्र।

प्रस्तुत ग्रंथ में इन्होंने दौलत खाँ चौहान का वर्णन किया है, जो इस प्रकार है :---

"शाह के अचानक पयान करने से बडे-बडे राजे महाराजे अपने अपने थाने छोड़कर घर आ गए। उस समय दौलत खाँ चौहान ने ही मेरु सदृश अडिग होकर संग्राम में पाँव रोपा। उसने काँगरौ को बचा दिया। आलिफ खाँ जिसका पिता है उसके लिए यह आश्चर्य की बात नहीं।

"इस दौलत खाँ पर एक बार सब पहाड़ी राजाओं ने मिलकर आक्रमण किया। बड़ा घोर संग्राम हुआ। खून की नदिया बह गई, पर दौलत खाँ परास्त न हुआ। उल्टे पहाड़ी राजाओं के पाँव उखड़ गए और वे भाग खडे हुए। इस पर शाहजहाँ बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा "इनका (दौलत खाँ का) दादा क्याम खाँ था जिसने पैरो साहि को मारा था। अतः इसको बावनी देकर उसके तुल्य करूँगा।"

ग्रथ के ये ऐतिहासिक अश विवरण पत्र में दे दिए गए है।

संख्या १२६च. कथा कवलावती की, रचयिता—जान कवि, स्थान फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३३, आकार—८¾ × ६¾ इच, पक्ति प्रतिपृष्ठ—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १०२३, सवत् १६७० वि०, लिपिकाल—स० १७७८, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—कथा कंवलावती की कवि जान कृत।

॥ चौपाई ॥ १ ॥

पर्थम निमसकार अविनासी। जिन बिरही औ रचे विलासी॥
रचे दोइ दीया उजियारे। ते विन तेल न होहि अध्यारे॥

:o: :o: :o:

अवहि साहि की असतुति करिहू। रसन धाग जस मुकता भरिहूं॥
जहांगीर जानहुं तिह नाव। आन फिरी जाकी सब ठांव॥
बाबर वंस अंस अकबर कौ। उतर्यौ भीम रूप धर नर कौ॥

:o: :o: :o:

पीर सैष महमद है चिस्ती। बरन नूरी भाषतु हौ फिसती॥
रहन ठांव जानहु तिह हांसी। देषत कटै चित की फांसी॥
नाव धर्यौ याहीं तें हांसी। दुषन हरन दाता सुष हासी॥
रिध सिध नौ निध संपूरन। दुष हरबे को उन समपूरन॥
पीर हरन को वंसे पीरन। पीरहि देहि न सेवक पीरन॥
क्यों न होइ पाछै जिहि कुतब। चहूं कूट प्रगट जिन रुतब॥

॥ दोहा ॥

पहिलै कुतव जमाल है दूसर है बुरहान।
नाव जाहि औषद परम लये चित जुर हान॥
तीसर जानहु नूरदी चतुर मनवर हेर।
सभ जग मै जिनकी फिरी कुतुबपने की रेर॥

:o: :o: :o:

मध्य—

उकति विसेष सांचु कै जानहु। भाषा जो आवै सो मानहु॥
उकति भली भाषा मैं आवै। तौ यहु सौना सुगंध कहावै॥
देषि देषि मै दरब परायौ। बहुत बहुत मन ना ललिचायौ॥
पै जहा मारग नयौ न पायौ। तहा पुरातन ही मग धायौ॥
मथन ग्रंथ करिहै जौ कोई। वाको उकति न कहिये सोई॥

॥ दोहा ॥

सूर सासतर काढि जो करै सु उकतिन ताहि।
और काबिहूं फिरि कहै तऊ न दूषनं आहि॥

ससंकृत ग्वारेर मिलायौ । मध विलाप कै साज बजायौ ।।
यहु कूवलवामें कठिनाई । तातें कहियहु जुगति जनाइ ।।

अंत—

।। सवइया ।। ७ ।।

करता की रचना न रसना कहि सकै ।। कोऊ कैसे भेदु पावै को दिषावै पौन गहि कोऊ कहै जल मूठि बांधु तौ श्रल्यै बकै ।। सपने के चीन्ह काहू कै न प्रगट होंहि नींद मव पीयें कोऊ कहौ जागि क्यौं छकै ।। कहै कवि जान वाकी श्रविगति कैसे लहै गहरी जननका हे श्राउ नैन क्यौ तकै ।। जे तौ पचि पचि रचि रचि कोऊ कह्यौ चाहै ।।

।। दोहा ।।

सब कविन सौं बीनती करी जान सतभाइ ।
सुमिल श्रमल तें जिनि सलहु लीजहु श्रमिल मिलाइ ।।

।। दोहा ।।

द्वादस दिन मैं जान कवि करो सुमिर जगदीश ।।
तबहि संम्र यौ कहत है येक सहंस तेईस ।।

इति कथा कवलावती की संपूरन भइ संवत् सतरह सौ ।। १७७८ मिती असाढ वदी १४।। दसतषत फतेहचंद की ।।

विषय—रूप नगरी के राजा का नाम रूपराई था। उसकी एक सहस्र स्त्रियाँ थी जिनमे रूपरेख अधिक सुंदरी होने के कारण पटरानी हुई। राजकुमार इंदवदन उनका पुत्र था। सर्वगुण संपन्न होने के साथ ही साथ वह अप्रतिम सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध था। जब तरुण हुआ तो राजा ने उसके विवाह करने की इच्छा से ब्राह्मणों को योग्य कन्या ढूंढने के निमित्त देश, देशांतरों में भेजा। इसका पता लगने पर राजकुमार ने ब्राह्मणों को बुलाकर कहा कि वह उसी राजकुमारी से विवाह करेगा जो उसके समान रूपवती होगी। इसलिए जो ऐसी रूपवती मिले उसका चित्र आना चाहिए। ब्राह्मण राजा के पास गए और उनसे राजकुमार की इच्छा प्रकट की। राजा ने सहमत होकर ब्राह्मणों को वैसी ही आज्ञा दी। ब्राह्मणों के साथ चित्रकार भेजे गए जो अपने साथ हजारों चित्र लेकर राजकुमार के पास लौटे। परंतु राजकुमार को उन चित्रों में से कोई भी न जँचा। अतः विवाह की चर्चा बंद हो गई। एक दिन राजकुमार के हाथ पर एक तोता अकस्मात् आकर बैठा। राजकुमार को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने तोते से कारण पूछा। तोते ने कारण बताने के लिए अपनी कथा इस प्रकार वर्णन की :—

मदनपुरी नगरी में मदनराई राजा अपनी रानी मदनकला के साथ सुखपूर्वक राज्य करता है। उसके एक ही पुत्री है जो कवलावत नाम से प्रसिद्ध है। संसार में उसके समान सुंदर स्त्री और कोई नहीं। उसके तरुण हो जाने पर राजा-रानी ने उसके विवाह का प्रबंध करना चाहा, पर उसने यह इच्छा प्रकट की कि वह उसी राजकुमार के साथ विवाह करेगी जो रूप में उसके ही तुल्य हो। अतः पहले चित्र मंगवाए जायँ, जिसका चित्र उसको रुचे उसी के साथ उसका विवाह किया जाय। राजा ने ऐसा ही करने को कहा। चित्रकारों द्वारा सहस्रों चित्र राजकुमारी के पास लाए गए, पर उसको एक भी न जँचा। अंत में उसने मुझसे राजकुमार ढूंढने को कहा। मैं एक बार पहले सारे संसार का भ्रमण कर चुका पर उसके अनुरूप किसी को न पाया। उसने मुझसे फिर अन्य देशों में जाने की प्रार्थना की। अतः इस बार जब मैं इस नगर के ऊपर उड़ रहा था तो मेरी दृष्टि यकायक आपके ऊपर पड़ी। आपके

रूप सौंदर्य ने मुझे स्तंभित कर दिया ! ऐसा सुंदर पुरुष संसार में मुझे कहीं देखने को नहीं मिला। बहुत देर तक एकटक होकर देखता रहा और जब आपके रूप, शील, सौजन्य एवं भोले स्वभाव के प्रति मुझे पूर्ण विश्वास हुआ तो आकर आपके हाथ पर बैठ गया। अतः हे राजकुमार, तुम निस्संदेह उस राजकुमारी के पति होने योग्य हो। उसको पाकर तुम अपने को धन्य समझोगे और वह भी तुम्हें पति रूप मे पाकर अपने जन्म को सफल समझेगी। अब देर न कीजिए और अपनी सम्मति देकर मुझे विदा करिए। राजकुमार को क्या करना चाहिए था। उसे अपनी मनोवाञ्छित इच्छा पूर्ण होती हुई दिखाई देने लगी। वह कवलावत के प्रेम में लीन रहने लगा। फिर भी सदेह की पूर्ण निवृत्ति के लिए उसने तोते से कवलावत का चित्र दिखलाने के लिए कहा। अत एक चित्रकार तोते के साथ कवलावत का चित्र लाने के लिए भेजा गया। कंवलावंत राजकुमारी भी राजकुमार इदवदन के सबध मे सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। उसने अपना चित्र राजकुमार के पास भिजवाया और उसका चित्र अपने पास मँगवाया। दोनों एक-दूसरे के चित्र देखकर बहुत प्रसन्न हुए। दोनों ने अपने-अपने माता-पिताओं द्वारा विवाह का आयोजन कराया। अत शीघ्र ही राजकुमार इंदवदन और राजकुमारी कवलावत का मिलन हो गया। एक रात जब वे दोनो सो रहे थे तो इद्र देवता को संसार के सर्वश्रेष्ठ दपति को देखने की इच्छा हुई। अत एक देव इंदवदन और कवलावत को ही श्रेष्ठ जोडा समझ कर ले गया। इद्र की सारी सभा प्रसन्न हो गई। दूसरे दिन दपति को जहाँ का तहाँ पहुँचाया गया। परंतु जो देव उन्हे पहुँचा गया था। वह कंवलावंत को ले भागा। राजकुमार कंवलावंत के वियोग में जलने लगा। विवाह का उत्सव फीका हो गया और सब लोग विलाप करते हुए अपने अपने घर चले गए। इदवदन राजकुमारी की खोज मे निकल पड़ा। अनेक कठिनाइयाँ पार करके एक गरुड की सहायता द्वारा गुरु गोरख नाथ से गुटिका प्राप्त की। उस गुटिका के प्रभाव से उसने देव को मारा और कवलावंत को लेकर मदनपुरी गया। सब लोग कुछ दिन सुखपूर्वक रहने के पश्चात् राजकुमार कवलावत को लेकर फिर अपने देश के लिए रवाना हुआ। मार्ग मे बलसागर नाम के राजा से युद्ध हुआ जो कवलावत को लेना चाहता था; परंतु वह युद्ध मे मारा गया। वहाँ से आगे बढने पर विशाल समुद्र मिला जिसे पार करने में दोनों बिछुड गए। राजकुमारी तो किसी प्रकार रूपनगर अपने पतिगृह पहुँच गई, पर राजकुमार ऐसे विकट देश मे पहुँचा जहाँ बडे बड़े गगन चुबी पर्वत घोर निर्जन वनो मे आच्छादित थे। चलते-चलते कुछ परियो से भेंट हुई जो उस पर आसक्त हो गई। राजकुमार के विरोध करने पर उन्हें बड़ा क्षोभ हुआ। और उसको पर्वतो के ऐसे खोह मे डाल दिया जहाँ से वह कभी भी बाहर नही निकल सकता था। भाग्यवश कवलावत का तोता राजकुमार को ढूंढता हुआ वहाँ पहुँचा। उसकी सहायता से उस गरुड पक्षी का पता चला जिसने गोरखनाथ से गुटिका प्राप्त करने में राजकुमार की सहायता की थी। राजकुमार से उक्त गुटिका समुद्र पार करते समय खो गई थी। वह किसी प्रकार फिर गरुड के पास पहुँचा जिसने दयावश उसको अपने देश मे पहुँचा दिया। इस प्रकार सत्य प्रेम की विजय हुई। दोनो प्रेमी मिलकर अत्यंत प्रसन्न हुए और आनंदपूर्वक रहने लगे। राजा और रानी यह समाचार पाकर फूले न समाए।

रचनाकाल

द्वादस दिन में जान कवि करी सुमिर जगदीस।
तबही संन्न यौ कंहत है येक सहस तेईस ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल हिजरी सन् मे १०२३ है। लि० का० सवत् १७७८ दिया है। रचना कुल बारह दिन में रची गई।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विशेष वृत्त के लिए देखिए 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६छ. १--बारहमासा, २--सवैया या भूलना, ३--बरवा, ४--षट् ऋतु बरवा वर्णन, ५--ग्रंथ पत्रगम रचयिता--जान कवि, निवास स्थान--फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--५, आकार--८¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१३६, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १७७८, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि--अथ बारह मासा कवि जान को सवइया ॥

प्रथम निमसकार अविनासी निराकर जगदीस निरंजन।
जो चाहै सो करै अगोचर है समरथ गढ़नै औ भंजन।
दूजें नबी मुँहमद सुमिरूं अरिदल मलन अगंजन गंजन।
जान कहै तिह सब जग सूझै जिहि चषि नवीपोत को अंजन।

:o: :o: :o:

लागि अषाढ़ आढ़ को कीनी बाढ़न पावहि हाटिन फेरें।
छीन करौ घन दादुर चातिग पिक केकी कौ था अति नेरैं।
द्वादस मास नहांतो कीनी बिरह वियोग मदन रहे घेरे।
जान भनैं गोपी कहै ऊधौ अबहि भलैं जीवहि हरि हेरैं॥ १४॥
द्वादस मास नंद को नंदन विसरूपी को बिरद निवाह्यौ।
पाछैं नाव बयाल कहावत ताकी ओर नैन भरि चाह्यौ।
नैक सुमिस्ट नीर सौ कीनौ सीतल अंग अनंग जु दाह्यौ।
जान भनै हरि भेंटै गोपी वृष वहुधे विसाह्यौ॥

बारहमासा संपूरन भयौ संमत् १७७८ असुदी ३

सवइया या भूलनाहू कवि जान कृते

कानि करो कलकान सषी द्रिग देष्यौ चहै मन लाज मरै।
जौ हौं देषने जाऊं लजाऊं महा जौन जांव तौ नाहिनै नींद परै।
दुचिताइ भई सुधि बुधि गई नई प्रीती तेरी मेरो अंग जरै।
कोउ मित को है जुड़ुराइ लावै काहू ना लषावै मेरी चित हरै॥
बांसुरी कान्ह बजाइ उठयौ काहू कानि धरी काहु कानि धरी।
जिन कानि करी नही कानिकरी जिन कानिकरी नहो कांनि करी।
जिन चाह्यौ नहो तिन चाह्यौ नहो जिन चाह्यौ सुचाहि कै जार परी।
डीठ नाहि लगी तो न डीठ लगी डीठ लागि गये डिठि लागी षरी॥ १॥

मध्य-- ॥ ग्रंथ बरवा कवि जान कृते ॥

अलह महंमद नाम जपहु दिन रात।
कहत जान ज्यौं सुधरैं सिगरी बात॥
अरे मोरे बालम कहा निठुरई कीन।
सुपने मैं हूं कबहूं दरस न दीन॥
हौं तो तुम पर देहौं बलि बलि प्रान।
तुम कस करत जु देत न दरसन दान॥ ३॥
बात मटपटी चली अटपटी लाल।
पग लटपटी भई चटपटी बाल॥ ४॥
बलिमा कं संग पल मैं रैन बिहाइ।
षेलत हंसत जाति न जानी जाइ॥ ५॥

:o: :o: :o:

गाज गगनुवा घनुश्रा पिय पै जाइ ।
बूंदैं ग्रांसू डारि सुरति हम ध्याइ ॥ ६६ ॥
पलकं पलकं नींद रही द्रिग छाइ ।
नैसक पौढ़हु लाल पलौटों पाइ ॥ ७० ॥

॥ ग्रंथ बरुवा संपूरन भयौ ॥

॥ ग्रंथ षटरितु बरवा बंध ॥

पिय विनु सावन भादौं लागे आइ ।
घन बरसै अरु दांमिनि चमक डराइ ॥ २ ॥
रैन पपीहा दादुर फोरहिं कान ।
दई दई करि मोकौं होत बिहान ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

मानति हौं अपने बलिमा सौं भोग ।
औषध पाये रह्यौ न एवकं रोग ॥ २५ ॥
मेरीये सुवास पर लुबध्यौ आइ ।
हौ केतुक पिय मधुकर छाडि न जाइ ॥

॥ इति षटरित बरुवा बंध संपूरन ॥

अंत— ॥ग्रंथ पवंगम तामै बरुवा हूं निकसै षटरित बर्नन ॥

षट रितु बरनी ज्ञान पवंगम छंद मैं ।
नयौ बनायौ भेदु सुनौ आनंद मैं ॥ १ ॥
अंत पदं कौ एक बरन जौ डारिये ।
तौ बरुवा सब ह्वै है भलो विचारिये ॥ २२ ॥
पावसु की रितु कठिनि सही नहिं जाति री ।
घन गरजै अरु बरसै सिगरी राति री ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

ग्रीषम की लू ताती जारति गात है ।
सीरौ कियें उपाइ न अंग सिरात है ॥
जौ वियोगनी घर उसीर कै आइहै ।
लागेउ उस्न उसास तंत जरि जाइहै ॥ १० ॥

॥ ग्रंथ पवंगम संपूरन ॥

विषय—विरह शृंगार का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत छोटी छोटी रचनाओं मे रचना काल का उल्लेख नही है । लिपिकाल केवल बारह मासा मे सवत् १७७८ दिया है । रचयिता का नाम 'जान है । विशेष के लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र ।

साहित्यिक दृष्टि से प्रस्तुत रचनाएँ उच्च कोटि की है । "पवंगम छंद' रचना पवंगम छंद में रची गई है । यह छद बरवा के प्रत्येक पद के अत मे दो मात्राएँ (एक गुरु वर्ण) जोड़कर बनाया गया है । कवि कहता है कि यदि यह दो मात्रा निकाल दी जायँ तो बरवा छंद ज्यों का का त्यों बना रहता है । और उसका भी रसास्वादन कर सकते हैं ।

१—बारह मासा मे १५ सवइया है ।

२—सवइया या भूलना मे २ सवइया है ।

३—बरवा में ७० बरवे है ।
४—षट्ऋतु बरवा बध मे २१ बरवे है ।
५—पवगम छद मे १० पवगम है ।

संख्या १२६ज. कथा छविसागर की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—८, आकार—८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०६ वि०, लिपिकाल—स०१७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—कथा छविसागर की ॥ १ चौपाई ॥

सुमिरूं आदि नाम करतार । इछ्या सकल पुजावंनहार ।
जो हित सौं इक चित सौ धावं । जो जिय चाहे सोई पावं ॥

॥ चौपाई ॥

राजा एक नाम तिंहि राम । रामपुरी ताकौ बिस्राम ॥
ताकं येक सुता अभिराम । छवि सागर है ताकौ नाम ॥
अद्भुत रूप दयौ करतार । पुनि गुन पारावार अपार ॥
जो देषत वा मुष की जोति । यहै कहत मानस ना होति ॥
कं यहु चंद्र परति की जाई । कं यहु रवि ससि मिलि प्रगटाई ॥
इंद्र पुरी की अछरा आई । धार्‌यौ मानस रूप निकाई ॥
सेत बसन मं तन की कांति । पानी मै बड़वानल भांति ॥
गहनौ पहरति करत सिंगार । मानहु अगनि निकारति झार ॥
याकौ रूप देषि ललिचाइ । ताकौ डारं कांति जराइ ॥
बाकी वोर तकं इक घरी । गरिजं ज्यों बौरे की डरी ॥

॥ दोहा ॥

बौरानो ह्वं आइहै जो छवि सागर संग ॥
सो ऐसं जरि जातु है जैसं दीप पतंग ॥ ३ ॥

अंत—

तब घरमं आयौ गुन आगर । ब्याह दई वाकौ छविसागर ॥
मन की इछ्या पूरी भई । काम कलोल करत निस गई ॥
बहुरौं लै अपनं घर आयौ । मात तात कौ सुष उपजायौ ॥
सुलप कथा यहु "जान" बषांनो । छविसागर की आहि कहानी ॥

॥ दोहा ॥

संबत सत्रह सं भयौ पुनि तापर षट और ।
करी कहानी जान कवि सुनहु रिसिक सिरमौर ॥

इति कथा छबिसागर की संपूरन भई ॥ संवत् ॥ १७७८ कातिग सुदी ६ बुधवार ॥

विषय—रामपुरी के राजा राम की पुत्री का नाम छविसागर था । वह अद्वितीय सुंदरी थी । उसने अपने विवाह के संबंध मे प्रतिज्ञा की कि जो पुरुष उसके चार प्रश्नो को ठीक ठीक हल कर देगा उसी के साथ वह विवाह करेगी । जो न कर सकेगा, उसका मस्तक काटकर कोट के उपर टाँग दिया जाएगा । उसके चार प्रश्न इस प्रकार थे :—

१—सुजात हो तो नाम से ही प्रकट हो जाय ।
२—असम लाह की मूर्ति गिरा दे ।
३—ऐसी दौड़ लगावे जो गढ़ की पौर प्रकट हो जाय ।
४—इस प्रश्न में उसके विवेक परीक्षा के प्रश्न थे ।

बहुत से राजकुमार आए, पर कोई उन प्रश्नों का उत्तर न दे सका । अतः सबके सिर काट लिए गए । एक बार जैतपुरी के राजा जैत का पुत्र गुनसागर छविसागर के देश की सीमा पर आखेट करता हुआ पहुंचा । उसने लोगों से छविसागर के विषय में सुना तो वह भी उसे पाने की इच्छा करने लगा । जब छविसागर को देखा तो सब सुध-बुध भूल गया । परंतु राजकुमार कुछ बुद्धिमान था, अत. उसने चतुराई से कार्य किया । उसको विश्वास हो गया कि छविसागर कोई अप्सरा है और तंत्र मंत्र जानती है । अत. उसने भी तंत्र मंत्र सीखने का प्रयत्न किया । बहुत से व्यक्ति तंत्र मंत्र जानने वालों को ढूंढ लाने के लिए भेजे गए । बहुत दिनों के पश्चात् इस विद्या में पारंगत एक विद्वान मिल गया । उसने राजकुमार को तंत्र मंत्र विद्या के सब रहस्य बतला दिए । पश्चात् राजकुमार छविसागर के पास गया और उसकी आज्ञा से तीन प्रश्न शीघ्र ही हल कर दिए । चौथे प्रश्न का उत्तर राजा के सामने सभा में उपस्थित होकर दिया गया । छविसागर बहुत प्रसन्न हुई और उसने राजकुमार से विवाह कर लिया । दोनों सुख-पूर्वक रहने लगे ।

रचनाकाल

संवत सत्रह से भयौ पुनि तापर षट और ।
करी कहानी जान कवि सुनहु रिसिक सिरमौर ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १७०६ है । लिपिकाल संवत् १७७८ दिया है । रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए 'रतनावती' का विवरण पत्र ।

संख्या १२६. ज. कथा कामलता की, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—प्राचीन देशी, पत्र—५, आकार—८$\frac{३}{४}$ × ६$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६७८ वि०, लिपिकाल—सं० १७७८ वि०, प्राप्ति-स्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि— **।। कथा कामलता की चौपाई ।। ।।१।।**

पर्थम सुमिरत हौ करतार । जिन चितरघौ यहु सब संसार ।।
कैसे कैसे चित्र बनाये । देषत चित्र चितेरा पाये ।।
अनगन चित्रे चित्र अपार । देषौ चित्रकार अधिकार ।।

:o: :o: :o:

।। दोहा ।।

सो विचित्र "कवि जान" कहि नबी नाव जिहि चाइ ।
चित्र मुहंमद आरसी चित्रकार परसाइ ।। २ ।।

।। चौपई ।।

कहत जान चित मैं यौ आई । चित्रौं कथा सुलप यह पाई ।।
चित्रकार चित बुधि हो जैसी । मैं यहु चित्र विषाई तैसी ।।
यह लघु चित्र कियौ है जांन । चित्रत नांहि लटं ज्यौं पांन ।।

:o: :o: :o:

राजा एक सुन्यौ हम कानन । रसना लागी ताहि बखानन ।।
कहित ताकौ नाव रसाल । सेव करहि निस दिन भोपाल ।।
आपु न रहत राव जिहि ठांव । हंसपुरी है ताकौ नांव ।।
सेवत चेरी चेर अनेक । बनिता सरस येक ते येक ।।

:o: :o: :o:

अंत— ।। चौपाई ।।

काम कलोल करत दिन रैन । पल पल छिन छिन बीतत चैन ।।
नेकु न रही विरह की व्याध । औषध पायौ भई समाध ।।
हंसपुरी पुनि सुंदर गांव । राइ दुहाइ दोनौ ठांव ।।
जौ लौं जिये मेदनी माहि । पलक लगन हूँ बिछुरे नांहि ।।
सावधान है कं जे धावे । प्रेम प्रसाद साच फल पावे ।।

।। दोहा ।।

सोलह सै अठहंतर कथा कथी कवि जान ।
थोर विथोर भूलि जिन अनवन बाचहु बान ।।

इत कामलता की कथा संपूरन भई सवत १७७८ मिती कातग सुदी ६ बिसपति बार बसतखत फतेहचंद ताराचंद का डोडवानिया ।।

पोथी फतेह चंद कै घर की ।।

विषय—हंस पुरी के राजा का नाम रसाल था । उसका प्रधान बुधिवत सब मत्रियों में श्रेष्ठ, अनेक विद्याओं मे पारगत और चित्रकारी मे भी प्रवीण था । मत्री एक दिन क्या देखता है कि इधर राजा सो रहा है, महल के ऊपर बच्चे खेल रहे हैं और सूर्य अस्त हो रहा, उधर महल के ऊपरी भाग मे आग लग रही है । उसको बडी चिता हुई कि राजा को किस प्रकार जगाया जाय । जब कुछ उपाय न सूझा तो स्वय जाकर जगाने लगा । परतु ज्योही राजा जगा वह मत्री को अपशब्द कहने लगा और मारने के लिए उसके पीछे तलवार लेकर दौड़ पड़ा । मत्री प्राण बचाकर भागा । कुटुबीजनो ने देखा कि राजा मत्री को मारना चाहता है तो बीच मे आकर खड़े हो गए और उससे कारण पूछने लगे । राजा ने कहा, जब मैं सुख निद्रा में सो रहा था तब स्वप्न मे एक अनिद्य सुदरी के साथ मेरा साक्षात्कार हुआ । वह मुझसे प्रेम करना चाहती थी और उससे मिलन सन्निकट था कि इसने मुझे जगा दिया । आह ! मुझसे एक ऐसा रत्न छीन लिया गया जो कहीं भी दुष्प्राप्य है । इस मत्री ने मेरा सुख भंग किया, अतः यह जीवित रखने योग्य नही । मत्री यह सब सुन रहा था । उसने राजा से कहा कि यदि उसको प्राण भिक्षा मिल जाय तो वह उस सुदरी का चित्र राजा को बनाकर देगा । राजा इस पर सहमत हो गया और मत्री को क्षमा कर दिया : मत्री ने राजा को चिह्न बताने के अनुसार सुदरी का सुदर चित्र बनाकर दे दिया । चित्र देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ । परंतु अब उसको वियोग सताने लगा और चित्र को देख-देखकर रोने लगा । उसे विश्वास हो गया था कि उस प्रकार की स्त्री कहीं है । अत. चौराहो पर मदिर बनवाया गया और चित्र को वहाँ रखा गया । मार्ग से आने-जाने वाले राजा को चित्र के लिए रोते देखने लगे । एक व्यक्ति ने जब चित्र देखा तो राजा से कहा कि इस चित्र के अनुरूप एक स्त्री है । वह सुंदरी पुरी की रानी है । उसके माता पिता मर गए है । उसने विवाह करना तो दूर रहा पुरुष का मुंह देखना भी छोड दिया । इसका कारण यह है कि एक दिन उसने महल की खिड़की से बाहर देखा कि उपवन मे आग लगी है और बच्चा सहित एक मोर का जोड़ा अग्नि मे फँस गया है । मोर मोरनी और बच्चे को छोड देता है और अपनी जान बचाकर भाग जाता है । इससे रानी को पुरुषो से बड़ी घृणा हो गई ।

राजा मंत्री के साथ सुंदरी पुरी गया। मंत्री राजा को एक स्थान पर बिठलाकर और अपने को सर्वोत्कृष्ट चित्रकार के रूप मे घोषित कर रानी के पास गया। रानी ने उससे उत्तम चित्र बनाने के लिए कहा। मंत्री बुद्धिमान तो था ही, चित्र बनाकर दे दिया जिसमें उसने यह दर्शाया कि हिरन और हिरनी अपने एक बच्चे के साथ नदी पार कर रहे है। हिरनी आगे है, तब बच्चा है और पीछे हिरन। हिरनी के थोडा आगे बढ जाने पर बच्चा और हिरन बाढ़ मे फँस जाते है। हिरनी प्राण बचाकर भाग जाती है और हिरन बच्चा सहित बह जाता है। राजा इस दृश्य को देखता रहता है। अत वह स्त्री जाति से घृणा करने लगता है। मंत्री ने जब इस प्रकार चित्र का अर्थ बतलाया तो रानी को बडा आश्चर्य हुआ। उसने राजा को अपने ही विचारो का पाया। साथ ही राजा के रूप पर भी आसक्त हो गई। मंत्री को बुद्धिमान समझ कर उससे अपना भेद कह दिया। मंत्री को क्या चाहिए था उसने शीघ्र ही राजा से उसकी भेट करा दी। राजा और रानी मिलकर बडे प्रसन्न होते है और अपनी अपनी प्रतिज्ञाओ को भग कर देते है। अत मे दोनो का विवाह हो जाता है। और वे सुखपूर्वक रहने लगते है।

रचनाकाल

सोलह सै अठहतर कथा कथी कवि जान।
पोर विषोर भूलि जिन अनवन बाचहु बान॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत्—१६७८ तथा लिपिकाल सवत् १७७८ है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय मे देखिए "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६ञा. कथा छीता की, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—पुराना देशी, पत्र—८, आकार—८¾ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जर्जर), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६६३, वि०, लिपिकाल—१७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग इलाहाबाद।

आदि—

पर्थम सुमिरौं सिरजन हार। अगम अरूप अलष करतार॥
रचत जगत कछु भयौ न षेदु। पल मैं कियौ सकल यहु भेदु॥
:o: :o: :o:
सेष महंमद पीर हमारौ। अलहु पियारौ जग उजियारौ॥
हांसी मेंहं उनकौ विस्राम। ज्यारत किये सरै मन काम॥

॥ दोहा ॥

ज्यां कुतब जिनकै भये आजंम बडौ येमांम।
तिनकी संतति जान कहि क्यों न होइ अभिराम॥

॥ चौपाई ॥

साहिजहां संतत सैसांर। अमर अजर रहियौ करतार॥
दुनियां दीन दिये बिधि दोउ। यहु कुल ऐसौ भयो न कोउ॥
दे सुझाव मैंम्ह छिनिताव। डरपै राजा राना रांव॥
:o: :o: :o:
कहि कबि जांन कथा अभिराम। छीता कहियत ताकौ नाम॥

कीनी साहिजहां कै राज । है मन मोहन कुसल समाज ।।
साहिजहां बलु कहा बषांनौं । महाबली सम को की ग्रांनो ।।

ग्रंत--

तनुं मैं ग्रायौ नयौ मनोज । रंचक रंचक उठे उरोज ।।
नव जुबन दीनी दिषराई । भई निकाई मांहि निकाई ।।
दिन दिन जोबन बाढ़त जात । छिन छिन होति ग्रौर ही बात ।।
जोवन नौतन रूप निकारयौ । ज्यो तिल तेल फूल कौ बारयौ ।।
ग्रति ग्रद्भुत छबि छीता बाम । पुरे पुंननि पाई बाम ।।
छीतां लगत जीय तें प्यारी । उर तें नेकु नं राषत न्यारी ।।
करहि रैन दिनु काम कलोल । गहरी प्रीति भई रंग चोल ।।
यहु रंग कबहूं दूरि न होइ । येक्कै भये कहन कौ दोइ ।।
पातिसाहि करि है बहु प्यार । ग्रपनैं मग ग्राने नरनार ।।

।। दोहा ।।

पातसाहि मनसब दयौ पुनि कंचन के धांम ।
कीला केल ग्रनंद सौं बीतत छीतारांम ।।

।। दोहा ।।

सोरह सै जु तिरानुवें कथा कथी यहु जांन ।
कातिग सुद छठ पूरनं छीताराम बषांन ।।

इति छीता की कथा संपूरन भई ।। संवत् सतरह सै १७८४ मिति चैत वदी ५ लिषतं फतेहचंद ताराचद का डीडवानीया ग्रगरवाला । श्री

विषय--देवगिरि के राजा की पुत्री छीता परम रूपवती थी। उसके रूप की प्रशसा पच्छिम देश के राजकुमार राम तक पहुची। राजकुमार भी बड़ा रूपवान था। उसका मन छीता के रूप पर उलझ गया। वह उसको प्राप्त करने की चेष्टा करने लगा, पर कोई यत्न नही बन पड़ता था। दिन प्रतिदिन वियोग में घुलने लगा। एक दिन कुछ साथियों के साथ ब्राह्मण का भेष बनाकर देवगिरि की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुंच कर राज पुरोहित के यहाँ डेरा डाला। पुरोहित ने ब्राह्मण के नाते राजकुमार का ग्रादर सत्कार किया। परतु कुछ दिन पश्चात् बात उघड गई ग्रौर राजकुमार पहचान लिया गया। राजकुमार ग्रौर पुरोहित के बीच मित्रता हो गई ग्रौर पुरोहित राजकुमार को छीता से मिलाने का प्रयत्न करने लगा। एक दिन मदिर मे पूजा के ग्रवसर पर राजकुमार ने छीता को देख लिया। छीता उस समय बालिका थी, ग्रत: प्रेम की बातो से नितांत ग्रनभिज्ञ थी। राम को देख लेने पर भी उसके मन मे कोई विकार उत्पन्न नही हुग्रा। परतु राम दुगुने वेग से छीता की ग्रोर ग्राकर्षित हुग्रा। उसने ग्रपने साथियो को घर भेजा ग्रौर ग्राखेट के बहाने सेना सहित ग्राने को कहा। कुछ दिन पश्चात् सेना भी ग्रा गई। देवगिरि के राजा को जब पता चला कि राजकुमार राम ग्राखेट करता हुग्रा उसके नगर तक ग्राया है तो उसने उसका स्वागत किया। इस ग्रवसर पर उसको भोज दिया गया। राजकुमार को राजा-रानी दोनो ने देखा ग्रौर उसके रूप की सराहना की। पश्चात् राजकुमार की ग्रौर छीता के साथ विवाह की चर्चा चल पडी। राजा ने पुरोहित को बुलाकर सम्मति पूछी। पुरोहित तो पहले से ही राजकुमार राम से मिला हुग्रा था। उसने राजकुमार की जन्मपत्री छीता की जन्मपत्री से मिलाई। यद्यपि पुरोहित राजकुमार का मित्र था, पर जन्म पत्रियाँ स्वाभाविक रूप से मिल गई। चिह्नो से ऐसा प्रतीत हुग्रा कि उनका मिलन कराने मे ईश्वर का ही हाथ था। राजा ने जब यह सुना तो उसी समय लग्नदान कर दिया। तीन वर्ष पश्चात् विवाह का मुहूर्त रखा गया, जिसका कारण छीता की

बाल्यावस्था थी। विवाह का समय निकट आने पर देवगिरि के राजा ने भवनों की सजावट करने के लिए दिल्ली से कुछ चित्रकार बुलाए। दिल्ली का तत्कालीन बादशाह अलाउद्दीन उसका मित्र था, जिसने राजा को चित्रकार भेज दिए। चित्रकारों ने देवगिरि के समस्त राजभवनों की चित्र द्वारा सजावट कर दी। एक दिन उन्होंने छीता को देखा और उसका चित्र बना लिया। दिल्ली लौटकर बादशाह को वह चित्र दिखाया। अलाउद्दीन छीता पर आसक्त हो गया। वह सदल बल देवगिरि गया और उस पर धावा बोल दिया। राजा से छीता को देने के लिए कहा, पर राजा ने नही माना। अत मे लडाई होने लगी। अलाउद्दीन किला न तोड़ सका। पश्चात् राघौ मंत्री के षड्यत्र से उसने छीता को देख लिया। छीता ने बादशाह को पहचान लिया। उसने उसकी खूब खबर ली और उसे भाग जाने को कहा। अलाउद्दीन भाग तो गया, पर जब सुना कि राजा ने उसके खेमे लूट लिए तो वह लौट पड़ा और छल द्वारा छीता को पकड़ कर दिल्ली ले गया। परतु छीता बादशाह के कहने मे न आई। वह राम के लिए दिन प्रतिदिन व्याकुल होने लगी। राम ने जब यह सुना तो फकीर का वेष बनाकर तथा हाथ मे वीणा लेकर दिल्ली चला। किसी तरह छीता के महल तक पहुँचा और वीणा पर प्रेम गीत गाने लगा। छीता को ज्ञात हो गया कि राजकुमार राम फकीर के भेष मे आ गया है और वीणा पर गीत गा रहा है। वह आंसू बहाने लगी। अलाउद्दीन ने उसे रोते देख लिया। असहाय अवस्था मे भी उन दोनो के उत्कृष्ट प्रेम को देख कर वह दयार्द्र हुआ। उसने छीता और राम का विवाह कर दिया और मनसबदार का पद देकर राम की प्रतिष्ठा बढ़ा दी।

रचना काल

सोरह सै जु तिरांनुवैं कथा कथी यहु जान।
कातीग सुद छट पूरनं छीताराम बषान॥

विशेष ज्ञातव्य--रचना काल सवत् १६६३ और लि० का० सवत् १७८४ है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय मे देखिए, 'रतनावती' का विवरण-पत्र।

संख्या १२६८. कथा कलावती की, रचयिता--जान कवि, स्थान--फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज--देसी, पत्र--८, आकार--८$\frac{1}{4}$ × ६$\frac{1}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२१, परिमाण (अनुष्टुप्)--१३२, पूर्ण, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--हि० सन् १०२३, सवत् १६७० वि०, लिपिकाल--स० १७७८ वि० प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि--कथा कलावंती की कवि जान कृत॥

॥ चौपाई ॥

पर्थम सुमिरौ अलख निरंजन। नाव लेत रसना ह्वै मंजन॥
जो चाहै सो करिहै करता। आनद सुष भरता दुष हरता॥
जासौं जैसी इंछ्या होइ। करि दिषरावै तैसो सोइ॥
काहू कै तन कुंकम लावै। काहू कै अंग भसम चढ़ावै॥

:o: :o: :o:

कहत जान यह कथा पुरानी। मैं सुनि बांधी जैसं जानी॥
जोरत अति मन चिता दीनी। येक द्यौस मैं पूरी कीनी॥
भाषा तुक जो मुष तें आई। तातें बहुरि न उलटि बनाई॥
सुलप कथा मैं कही जु गाई। जितही घोर तित लेहु बनाई॥

॥ दोहा ॥

अछरा भाषा भाव तुक बहुत ठांव ही बित्तु ।
कछु भूल्यौ तौ देष कै दोष दुरावहु मित्त ॥

अंत—— ॥ चौपई ॥

तब यह कुंजर बसतर नीके । नग मुक्ताहल प्यारे जी के ॥
दे दाइजौ विदा तब कीनौं । पहुचांवन जोधा संग दीनौं ॥
चलत चलत अपने पुर आये । संगी द्रब दे उलट पठाये ॥
चंन भयौ सबके मन भाये । मंगलचार बधाये गाये ॥
मात तात मुष देषत विकसे । सगर दुष तन मन तें निकसे ॥
कुंवर प्रान आनंद उमंग । सुष सौं संपूरन अंग अंग ॥

॥ दोहा ॥

यहै पुरांनन मैं लिष्यौ जान लेहु कहि जांन ।
सुष काजं दुष देषिये तौ सुष होइ निदांन ॥
कथा पुरंदर की कथी सन सहंस तेईस ।
दोइ पहर मैं जान कवि भाषी बिसवाबीस ॥

कथा कलावंती की संपूरन भइ दसषत फतेहचंद का संवत १७७८ मीती कातग सुदी ११ सुकरवार ॥ पोथी फतेहचंद की घर की

दोहा	चौपई	छंद	सोरठा	श्री श्री
३६	३६	१३	२	

विषय——विलासपुर के राजा की रानी का नाम कनकवती और पुत्र का नाम पुरंदर था । राजकुमार पुरंदर में सबही श्रेष्ठ गुण विद्यमान थे । रूप सौंदर्य में भी वह अद्वितीय था । राजा के बहुत प्रयत्न करने पर भी उसके योग्य रूपवती राजकुमारी न मिल सकी । फिर भी उसके आठ विवाह कर दिए गए । परतु राजकुमार अपने योग्य स्त्री न पाकर उदास रहता था । एक दिन वह धमार खेलता हुआ मानसरोवर तक पहुँचा । वहाँ क्या देखता है कि एक व्यक्ति को हाथ पाँव और सिर सहित बाँध कर कील पर टाँग दिया गया है । राजकुमार को दया उपजी और उसने उस को बंधन से मुक्त कर दिया । उससे कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि वह गिरिवर नाह का रहने वाला है जहाँ चंद्रचूड राजा राज्य करता है । वह सूपक है । एक दिन जब रत्नमालपुर आया तो उसका प्रेम वहाँ के राजा विद्याधर की पुत्री से हो गया । उसको भगाकर वह यहाँ तक लाया ही था कि विद्याधर ने उसे पकड लिया । बहुत कुछ प्रार्थना करने पर भी विद्याधर ने उसे नहीं छोडा और उसकी दुर्गति की । उसने राजकुमार को चिंतामणि दी और रूप पलटने की विद्या सिखाई । राजकुमार इनको पाकर बहुत प्रसन्न हुआ और उन्हें लेकर घर आया । कुछ दिन पश्चात लोगो द्वारा उसको भोज पुरी के राजा सेतजय और रानी रत्नावलि की पुत्री कलावती के विषय मे चर्चा सुनाई दी । कलावती के सौंदर्य की बात सुनकर वह विकल हो गया और उसकी खोज मे घर से अकेला निकल पड़ा । भोगपुरी पहुँच कर जोगी का रूप धारण किया और विरहा राग गाने लगा । लोग राग सुनकर मुग्ध हो गए । जब बात राजा तक पहुँची तो वह भी जोगी के पास आया और गाना सुनकर उसकी प्रशंसा करने लगा । अपनी पुत्री को भी उसने जोगी का गाना सुनने के लिए उत्साहित किया । राजकुमारी कलावती ने सखियो द्वारा जोगी को बुलाया । राजकुमारी को देखते ही जोगी मूर्च्छित हो गया, पर अमल पान करने की बात कहकर वास्तविक कारण को छिपा लिया । पश्चात् विरहा राग सुनाकर राजकुमारी को भी मोह लिया । राजकुमारी जोगी के साथ बातचीत करने लगी । उसने उसको भी भोगी समझा, जोगी इस बात

को हंसी में उड़ा गया। इतने में राजा भी आ गया। वह जोगी को उसके गुणों के संबंध में पूछने लगा। जोगी ने कहा कि वह जगत के कठिन से कठिन ही नहीं असंभव कार्य तक कर सकता है। जिसको चाहे वह क्षण में सामने ला सकता है एवं जिसकी जो इच्छा हो उसको पूरी कर कर सकता है। राजा ने कहा, वह राजकुमारी के लिए कोई राजकुमार अभी ला दे। जोगी ने स्वीकार कर लिया और राजा से कहा कि राजकुमारी के लिए विलासपुर का राजकुमार लाएगा, जो अपने रूप गुण दोनों के लिए विख्यात है। परंतु वह मेरी कुटी पर ही प्रकट हो सकता है। उसके कुटी में आ जाने पर वह (जोगी) अंतर्ध्यान हो जाएगा। अतः जब कुटी के किवाड़ खुलें तब उसमें प्रवेश कर राजकुमार से मिलना। राजा ने समझा कि फिर जोगी का दर्शन न हो सकेगा उसको एक लाल देकर विदा किया। जोगी राजा को लेकर कुटी पर गया। राजा को बाहर बैठा कर स्वयं भीतर गया और शीघ्र ही रूप पलट कर राजकुमार पुरंदर के रूप में हो गया। शीघ्र ही किवाड खोल दिए गए। राजा भीतर गया तो रूपवान राजकुमार को पाकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसे अपने साथ महल में ले गया तथा दूसरे ही दिन अपनी पुत्री के साथ उसका विवाह कर दिया। समय पाकर राजकुमार ने अपनी कथा प्रकट कर दी जिस पर राजा को बड़ा विस्मय हुआ। उसने राजकुमार से वह लाल बताने के लिए कहा जो उसने जोगी को विदा करते समय दिया था। राजकुमार ने लाल दिखाया तो राजा को विश्वास हो गया। उसने राजकुमार की बडी प्रशंसा की। कुछ दिन पश्चात् राजकुमार कलावंती को लेकर अपने देश को चला आया।

रचनाकाल

कथा पुरंदर की कथी सन सहंस तेईस।
दोइ पहर मैं जान कवि भाषी बिसवावीस।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सन् १०२३ हि० है। लि० का० संवत् १७७८ है। विशेष के लिए देखिए 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६८. कथा रूप मंजरी, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—प्राचीन देसी, पत्र—६, आकार—८¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—संवत् १६८५ वि०, लिपिकाल संवत्—१७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—कथा रूपमंजरी की कवि जांन क्रिते।।
।। चौपाई ।।

परगट करौ जीह जयनाद। अलिष अगोचर सुमिरौं आद।।
वाकौ भेदु न काहू पायौ। अगम रह्यौ तौ अगम कहायौ।।
करता भेदु न बेद बताये। निगम रह्यौ तौ निगम कहाये।।
:o: :o: :o:
संबत सोरह सै पच्यासी। अगहन मास कथा परकासी।।
अक्यासी दोहे चौपई। सकल कथा संपूरन भई।।
नीकी हैं सु पढौ करि प्यार। जहां षोरि सो लेहु सँवार।।
।। दोहा ।।
बहुत उतावर मैं करी जौ कहुंवा ह्वै षोर।
करि यहु चरंनन मोर के यहै बीनती मोर।।

॥ चौपाई ॥

सुनहु कांन दै चातुर गुनी । कथा पुरातंन ऐसे सुनी ॥
हसतीमल राजा कौ नांव । हथनापुरी रहन कौ ठांव ॥
तिह राजा अनगन तिय आनी । परभावती पाट की रानी ॥

अंत— चौपई

ज्यौं ल्यौं जीये चंन रसु कीये । येक संग अंम्रित हित पीये ॥
काम कलोल बैस मदमाते । येक घरी हूं होत न हांते ॥
ऐसौ चैन दयौ करतार । कहत जान आवत न विचार ॥
करनहार विनु कौन निवाजै । वैसी चिंत कौन ते भाजै ॥
सब बातनि समरथ है करता । आनंद कौ भरता दुषहरता ॥

॥ दोहा ॥

सुलिप कथा यहु जांन कहि रूपमंजरी नांम ।
स्रवन सुनौ मुष उच्चरौ लगे तीन ही जाम ॥

कथा रूपमंजरी की संपूरन भई । लिषते फतेहचंद ताराचन्द की डीडवानीया संवत सतरह सै १७८४ मिती चेत बदी ७ मंगलवार पोथी पूरी करी सन् ११४० ॥ श्री श्री श्री

विषय—हस्तिनापुरी का राजा हस्तीमल था । उसकी पटरानी का नाम प्रभावती और पुत्र का नाम ज्ञान सिंधु था । ज्ञाना सिंधु सर्वगुण-संपन्न था । सौदर्य मे तो वह पृथ्वी के सब राजकुमारो से बढ़कर था । शीघ्र ही सब विद्याएं पढ कर बडा विद्वान् भी हो गया । उसका केवल ग्यांना सिंह नामक मित्र था जो उसके समान ही विद्वान् था । दोनो विद्वत्तापूर्ण विवादो मे समय बिताते थे । एक दिन जब दोनों आखेट करने गए तो वहाँ सोते समय राजकुमार ने स्वप्न देखा जिसमे अत्यत सौदर्यवती एक राजकुमारी ने अपनी ओर आकर्षित किया । जागने पर राजकुमार को उसका वियोग सताने लगा । मित्र से कहा, पर मित्र ने स्वप्न की बातों पर ध्यान न देने का उपदेश दिया । राजकुमार को शांति न हुई । फिर स्वप्न हुआ जिसमें उसके पूछने पर राजकुमारी ने अपने देश के नाम लिए "कंकन", पहिचानने के सकेत के लिए "हाथ", पिता के नाम के लिए "कान", माता के नाम के लिए "हंसकर दौडना" और अपने नाम के लिए "दर्पन मे मुख देखना" आदि संकेत बताए । जागने पर राजकुमार ने फिर मित्र से स्वप्न की बाते कही । इस पर मित्र को विश्वास हुआ और उसने सब सकेतों के अर्थ भी राजकुमार को बतला दिए, यथा—'कंकन' मे ककनपुर देश, 'करन' से राजा का नाम करन, 'हंस कर दौडने से' रानी का नाम 'हंसगवनि' और 'दर्पन' में रूप देखने से' राजकुमारी का नाम रूपमंजरी आदि ज्ञात हुए । दोनो इन संकेतों के बल पर कंकनपुर की ओर चल पडे । मार्ग में राजकुमार को तीसरा स्वप्न हुआ, जिसमें उसके यह कहने पर कि हम तुम्हें मिलने के लिए आ रहे हैं, राजकुमारी घूंघट पट देकर विलीन हो गई । ग्यान सिंह ने इसका अर्थ लगाया कि पहले पाटनपुर जाना चाहिए । अत: दोनो पाटनपुर पहुँचे । वहाँ उन्हें ज्ञात हुआ कि वह नगर राजकुमारी की ननसाल है । इस पर दोनों को निराशा हुई, पर पूछने पर पता लगा कि राजमहल में राजकुमारी का चित्र है । बडा प्रयत्न करने पर चित्र को देखा गया जो स्वप्न के रूप में पूर्णतया मिलता था । दोनों को इससे बडी प्रसन्नता हुई । अत: वहाँ से कंकनपुर गए और मालिन के यहाँ ठहरे । मालिन को अपने पक्ष मे मिला लिया और एक दिन उसे स्याम रंग की साड़ी पहिना कर राजकुमारी के पास भेजा । राजकुमारी सकेत समझ गई । उसने मालिन के गले में फूल माला डालकर उपवन में भेंट होने की बात जनाई । पश्चात् उपवन में राजकुमार और राजकुमारी का मिलन हुआ । एक तापसी के द्वारा दोनों का विवाह कार्य भी

संपन्न कर दिया गया। दोनों प्रेमी रात भर उपवन में ही रह गए। प्रातः राजा ने राजकुमारी की खोज कराई।

जब बात उघड़ी तो राजा सेना सजाकर राजकुमार को मारने के लिए चला। इस अवसर पर तापसी ने सहायता की और राजकुमार तथा राजकुमारी के भेष बदल कर उन्हें जोगी जोगिन के रूप में कर दिया। राजा निराश होकर वापस चला आया। उसने समझा कि राजकुमार को कोई गंधर्व भगा ले गया। अत. अच्छा हुआ उसके प्राण बच गए। उधर राजकुमारी और राजकुमारी न्यान सिंह के साथ कुशलपूर्वक हस्तिनापुर पहुँच गए तथा आनंदपूर्वक जीवन यापन करने लगे। राजकुमार के माता पिता भी बड़े प्रसन्न हुए।

रचना काल

संवत सोरह सै पच्यासी। अगहन मास कथा परकासी॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १६८५ और लिपि काल संवत् १७८४ है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय में देखिए 'रतनावती' का विवरण-पत्र।

संख्या १२६.ड. कथा मोहनी की, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—प्राचीन—देशी, पत्र—४, आकार—८½ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—सं० १६६४ वि०, लिपिकाल—सं० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—कथा मोहनी की कविजान किते॥

॥ दोहा ॥

आदि अगोचर अलष प्रभु निराकार करतार।
दैनहार ज्यो सकल तन रसनहार संसार॥ २॥
रवि ससि उडिन अकास सब पल मै करे परकास।
देव हुलास उदास कौ पुजवंन आस निरास॥३॥
नाम महंमद लीजिये तनमन ह्वै आनंद।
पूजै मन की इंछ सब दूरि होंहि दुषदंद॥ ४॥
अबहि बषानौ जान कहि सुलप कथा चितु लाइ।
पढ़त न हारैं रस्नजिह लिषत न कर अरिसाइ॥ ५॥
जगमंडन षंडन षलिनं पछिम दिस कौ राइ।
हय गय दलबल लछिमी गनत लेषं आइ॥ ६॥
ताकै तनया मोहनी रूप कांति अभिराम।
बुधि कौं बुधिवा जान कहि छबि कौ काम निकाम॥ ७॥
जिह मंदिर मैं रैन कौ रहत मोहनी नार।
विनु दीपग विन रतन होत तहां उजियार॥ ८॥
जौ वाकै ढिग आनिये कहि कवि जान चकोर।
तौ वहु धोषै चंद कै सब निस झाकै बोर॥ ९॥

मध्य—

मोहनी बाकि

कलजुग या संसार में कहु ऐसो को आहि।
येक बात जौ सौंपिहै दै बसगुन करि ताहि॥६१॥

मोहन उत्तर

सुनहु अरथ मन मोहनी है यहु धरा सुभाइ।
बये येक ही बीज कै वै दसगुन उपजाइ ॥६४॥

मोहनी वाकि

ऐसे बहु भुष कौन है भषत जु नाहि अघाय।
षात षात भोजन घटे तब आपुन मरि जाइ ॥६५॥

मोहन उत्तर

बहु भुष ज्वाला जानिया तिन लकरी बहु षाइ।
जब भोजन घट जाति है तब सारो ह्वै जाइ ॥६६॥

अंत—जगमडन सुनि सुष भयो जीत्यो प्राचीराइ।
याको व्याहत मोहना मोको लाज न आइ॥
विद्यावर को नीच ओ जीति मोहनी लेत।
तौ मोको सब गोति मिलि डारि पात ते देत ॥११४॥
व्याह रचायौ चाप सौं जगमडन आनंद।
व्याह दई रति मेन को किधौ रोहनी चंद ॥११५॥
मोहन अग न माइहे लही मोहनी वाम।
काम कलोल अमोल सुष करिहै आठौ जाम ॥११६॥
वयौ अमित तब दाइजा कीनौ बिदा नरेस।
मोहन लैकै मोहनी गयौ आपुनै देस ॥११७॥
आनद उपज्यो चितु अमित फूल्यो अग न माइ।
अरुन उदै प्राची बरन त्यो मुष प्राचीराइ ॥११८॥
राइ कह्यौ सोध्यो जगत जिहि प्रीतम के काज।
सो करतार दयाल ह्वै आनि मिलायौ आज ॥११९॥
रूपौ कंचन नगर तन जिह भावत सो लेत।
राजा रानी कुंवर पर नौछावरि करि देत ॥१२०॥
जौ लौं मोहन मोहनी जीये इह संसार।
येक अंग सँगही रहे रंचक घट्यौ न प्यार ॥१२१॥
सोरह सै चौरानुवै ही अगहन सुदि चार।
पहर तीन मै यहु कथा कीनी जान बिचार ॥१२२॥

कथा मोहनी की संपूरनं भई १७८४ चैत बदी ८ लि फतेहचंद ॥

विषय—पच्छिम दिशा के राजा जगमडन की पुत्री मोहनी जगत भर मे अद्वितीय सुंदरी थी। जब वह तरुणावस्था मे पहुँची तब ससार भर के राजकुमार उसके सौदर्य के विषय में सुनकर एव उसे देखकर मुग्ध हो गए। उनमे से प्रत्येक उससे विवाह करने की इच्छा करने लगा। पर राजकुमारी की प्रतिज्ञा कठोर थी। रूप-सौदर्य के साथ-साथ उसकी विद्वत्ता भी प्रसिद्ध थी। दृष्टकूट, प्रहेलिका और गूढार्थ समझने मे तो बडी प्रवीण थी। उसके दस प्रश्न थे जिनका उत्तर विवाह की इच्छा रखने वालो को देना आवश्यक था। उत्तर न देने पर मस्तक काट लेने का आदेश था जिसे कोट के ऊपर टाँग दिया जाता था। अनेक साहसी राजकुमार आए पर सफल न हो सके। उनके मस्तक काट-काट कर कोट के ऊपर रख दिए गए।

प्राची राजा का पुत्र मोहन भी अपने सौदर्य, शील, सौजन्य और विद्वत्ता के लिए प्रसिद्ध था। वह भी मोहिनी के प्रेम मे पागल था। उसकी प्रतिज्ञा को उसने सुन लिया था। एक दिन वह इतना अधीर हो उठा कि अकेला ही घर से चल पड़ा और राजकुमारी के नगर मे पहुँचा।

महल में एक दासी से अपने आने का समाचार कहलाया। राजकुमारी को जब यह विदित हुआ तो उसने राजकुमार मोहन को कहलाया कि वह पहले उन राजकुमारो के शिरो को देख ले जो उससे विवाह करने की इच्छा रखते थे। राजकुमार ने उत्तर दिया कि वह सब बाते समझ चुका है। राजकुमारी की प्रतिज्ञा उसे स्वीकार है और वह उसके दश प्रश्नो का उत्तर तत्काल देने को तैयार है। पश्चात् राजकुमार भीतर बुलाया गया और दोनो के निम्नलिखित प्रकार से प्रश्नोत्तर होने लगे :—

प्रश्न १—कलजुग या संसार में कहु ऐसो को आहि।
येक बात जो सौंपि है दे दसगुन करि ताहि ।।६३।।
उत्तर १—सुनहु अरथ मनमोहनी है यहु धरा सुभाइ।
बये एकही बीजकै दै दसगुन उपजाइ ।।६४।।
प्रश्न २—ऐसो वह भुष कौन है भषत जु नाहि अघाय।
षात-षात भोजन घटै तब आपुन मरि जाय ।।६५।।
उत्तर २—बहु भुष ज्वाला जानियौ तिन लकरी बहु षाइ।
जब भोजन घटि जाति है तब सीरौ ह्वै जाइ ।।६६।।
प्रश्न ३—दृग मूँदे सब देषिये कौन मुकर सो ईठ।
जौ चषि षोल निहारिये कछू न आवै डीठ ।।६६।।
उत्तर ३—वहू सुपन की मुकर है सोवत सब डिठ आइ।
जागे कछु सूझै नही जब दृग जुग षुलि जाइ ।।६७।।
प्रश्न ४—रहै भाकसी मै सदा चिंता कछु न जनाइ।
रुदन करै जब छूटि है वाकौ नांव बताइ ।।६८।।
उत्तर ४—बालक याकौ नाव है गर्भ भाकसी जानि।
जब निकसै तब रोइ है याकौ यहै बषानि ।।६९।।
प्रश्न ५—न्यारे न्यारे पुरुष हं सकल होहि इक ठांव।
तब सब कोऊ कहत है उनि कौ नारी नांव ।।७०।।
उत्तर ५—मनके तौलौ पुरुष है न्यारे न्यारे आहिँ।
धागे मै जब पोइये माला कहिये ताहि ।।७१।।
प्रश्न ६—न्यारी न्यारी नारि है मिलि जै पुरषनि माहि।
तब सबको नरु भाषिहै नारी कहियत नाहि ।।७२।।
उत्तर ६—असुनि असू इक संग ह्वै जबहि कहू दल होइ।
कहे इते घोरा जुरे घोरी कहै न कोइ ।।७३।।
प्रश्न ७—तिय बिगार नर सिर परै नर बिगार सिर तीय।
ये चारौं धौं कौन है कहौ सोचि कै जीय ।।७४।।
उत्तर ७—जौ स्वाननि उजारिहै नांव स्वांन जगु लेत।
हानि करै मंजार जौ दोस मंजारी देत ।।७५।।
प्रश्न ८—नारी पूरन पिय रसन तिय रसना पिय नांहि।
कहि धौं कैसे कै बनी जोर दहुनि कै मांहि ।।७६।।
उत्तर ८—नारी रसना कौ सबद पिय रसना कौ नांहि।
चूमत है पिय नाम कौ राषत अधरनि मांहि ।।७७।।
प्रश्न ९—ना निस कबहू सोइहै ना सोवत है भोर।
कबहू साथी एकही कबहू होंहि करोर ।।७८।।
उत्तर ९—निस के साथी उडिन बहु दिव साथी इक भान।
चले जात सोवत नहीं हैं सो रैन बिहान ।।७९।।

प्रश्न १०—बिनु ज्यो विनु चरननि चलं चवं रसन बिनु बैन ।
बिनुही मुष हंसि हंसि परत रुदन करत बिनु नैन ।।८०।।
उत्तर १०—बादर ज्यो पग बिनु चलै गरज रसन बिनु बैन ।
बीज छटा बिन मुष हंसन स्रवत रुदन बिनु नैन ।।८१।।

राजकुमारी अपने प्रश्नो का उत्तर पाकर लज्जित हो गई । उसने राजकुमार से दूसरे दिन आन और अपनी ओर से प्रश्न करने को कहा । यदि वह उत्तर न दे सकेगी तो निश्चय ही उसकी स्त्री हो जाएगी । राजकुमार चला गया । राजकुमारी को चिता हुई कि न जाने राजकुमार कल कौन सा प्रश्न करे । उसने कूटनीति से राजकुमार के मन की बात जानने के लिए प्रयत्न किया । कुछ स्वादिष्ट भोजन और मदिरा लेकर साधारण वेश मे उसके पास गई । राजकुमार को भोजन खिलाकर मदिरा पिलाई और तन मन से उसकी सेवा करने लगी । राजकुमार जब मद मे चूर हो गया तो उसने प्रश्न के सबध मे पूछा । राजकुमार को सदेह हुआ और उसने बात टाल दी । राजकुमारी निराश होकर घर लौट जाने लगी । राजकुमार ने राजकुमारी को पहचान लिया । उसने उसको पकड़कर बाहुपाश मे बाँध लिया, परतु राजकुमारी ने राजकुमार के हाथ काट लिए और अपने को छुडाकर भाग चली । दूसरे दिन राजकुमार ने इस प्रकार प्रश्न किया :—

को पंछी मंजा भषं को नैना भषि जाइ । कोउ करेजा षात है कोऊ सब तन षाइ ।।
बिना हाथ कछु ना भषं जाको यहै सुभाइ । सो पंछी धौं कौन है मोहि कहौ समुझाइ।।१०६।।

प्रश्न सुनकर मोहिनी को रात की बात याद आ गई । यदि वह प्रश्न का उत्तर देती है तो चोर ठहरती है । और जो नही देती तो हारती है । अत मे वह चुप रह गई और राजकुमार को आत्मसमर्पण कर दिया । दोनो का शीघ्र ही विवाह हुआ और राजकुमार राजकुमारी मोहनी को लेकर अपने देश आ पहुँचा ।

रचना काल

सोरह सै चौरानवे ही अगहन सुदि चार ।
पहर तनि मै यहु कथा कीनो जान विचार ।।१२२।।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६६४ वि० है और लिपिकाल सवत् १७८४ । विशेष के लिए देखिए 'रतनावती' का विवरण पत्र ।

संख्या १२६ढ. कथा चद्र सैन राजा सीलनिधान, जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—प्राचीन देसी, पत्र—४, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६१ वि०, लिपिकाल—स० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—चंद्रसैन राजा सील निधान की कथा चौपई १।।
प्रथम करता नांव उचारौ । पलक मांहि जिन जगत संवारयौ ।।
सब बातिन समरथ करतार । करहि सु करत न लागै बार ।।
भले बुरे कीने संसार । येक नहीं सबकौ व्यौहार ।।
काहू तन मैं सील निवास । विथुरै जगमै ताहि सुबास ।।
:o: :o: :o:
चंद्र सैन राजा को नांव । चंदपुरी रहिबे की ठांव ।।
बडे बडे जाकै गढ कोट । सेवा करिहै रावत कोट ।।

बहुत सुफल ताकैं आराम । नीके धाम मनहि आराम ।।
हाथी मांते घोरा ताते । बहु द्रव अंग न मावत ताते ।।
पूजे है सब मनसा काम । पै राजा घर नाहीं बाम ।।
यहै परी राजा कै जीय । काहू भातिन ब्याहू तीय ।।
भली नाहि मिहरी की जात । जब जब इन ते पानि पुजात ।।
सील मांहि तिय रहै न केहूं । आपहि कौं न बिगोवैं येहू ।।
आगै भयौ भरथरी राव । तीय दुष जोग गह्यौ करि चाव ।।
बनिता सेती करिकै चाव । बहुत लजाने राजाराव ।।
राजा करचो जीप मैं नेमु । नारी सेती करौ न पेमु ।।

:o: :o: :o:

अंत—

काची गागर पर बैठारी । तीजी यौ जल डारि बुढ़ाई ।।
तीनौं उनके मारे मित । तब राजा चित भयौ न चित ।।
राइ सुता विनु और न राषी । वाही सौं मनसा अभिलाषी ।।
रूप कांति जिन गनिहौ ग्यांन । अंत सील जीतै कहि "जान" ।।
सीलवंति सो उत्तिम नारी । रूपवंत को है बेचारी ।।
चेरी चाव करहु जिन कोइ । चेरी को चेरो को होइ ।।

।। दोहा ।।

जैसो जाकौ होइ कुल तैसी ताकी रीति ।
निरकुल सौं कविजान कहि कोइ करहु जिन प्रीति ।।
बात सुनंत भई बहुत ढील लगाई नाहि ।
कथा करी यह जान कवि पहर अढाई माहि ।।
सोरह सै इक्यानुवां हुती दूज बदि पूस ।।
सुक्रवार कवि जान यह बांधी कथा अदूस ।।

कथा सीलनिधान संपूरन भई संवत सतरह सै १७८४ मितो चैत बदि ६ लिषतं फतेहचंद ताराचंद का ।।

विषय—चंदपुरी का राजा चंद्रसेन रूपवान्, शीलवान्, ज्ञानवान् और विवेकी था। इतना होते हुए भी उसको स्त्रियों से स्वाभाविक चिढ़ थी। भर्तृहरि और कंवयी की कथाओं को जब सुनता तो चौंक उठता। उसने निश्चय किया वह विवाह न करेगा। परंतु उसके पश्चात् राज्य की क्या दशा होगी और कौन राजा होगा ? इस समस्या पर विचार करते हुए मंत्रियों ने राजा से उक्त निश्चय परित्याग करने के निमित्त प्रार्थना की। बहुत समझाने-बुझाने पर राजा तैयार हो गया। परंतु जैसे ही वह विवाह न करने का निश्चय टूटा, राजा काम के वशीभूत हो गया। गोआगिरि के राजा को पत्र भेजा कि वह अपनी राजकुमारी उसे विवाह दे। वह राजा सहमत हो गया और बड़े साजबाज के साथ अपनी राजकुमारी शीलनिधान को चंदपुरी भेज दिया। राजकुमारी को पहुँचने मे जब देर हो गई तब राजा बहुत विकल हुआ। एक दिन उपवन में टहलते हुए एक सौदागर को बहुत सी तरुण स्त्रियों के साथ जाते देखा। ज्ञात हुआ कि वे स्त्रियाँ व्यापार के लिए थी। राजा की इच्छा करने पर सौदागर ने अपने घर से तीन परम रूपवती तरुण स्त्रियो को राजा से विवाह दिया। उसने उन्हे राजकुमारी बताया। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। रूप की चकाचौंध मे उसने अपना विवेक खो दिया। रात दिन उनके साथ क्रीडाकेलि करने लगा। जब राजकुमारी शीलनिधान पहुँची तो उसको रूपवती न पाकर महल में उपेक्षिता की तरह अलग छोड़ दिया। राजकुमारी बड़े उद्विग्न भाव से रहने लगी।

उस नगर में एक विद्वान ब्राह्मण रहता था। उसने ऐसी मूर्ति तैयार की जो झूठी बात सुनने पर हँसती थी और सत्य बात पर मौन रहती थी। राजा ने विद्वान् को बहुत सा पुरस्कार देकर मूर्ति ले ली। उस मूर्ति के द्वारा वह तीनों रूपवती स्त्रियों की परीक्षा करने लगा। पहली के पास गया और उसको फूल से मारा। वह मूर्छित हो गई। जब चैतन्य हुई तो अपनी कोमलता का बखान करने लगी। इस पर मूर्ति हँसने लगी। राजा को सत्य का ज्ञान हुआ और वह उदास होकर वहाँ से चल दिया। दूसरे दिन दूसरी के यहाँ गया तो उसके पोस्ती नरी गड़ गया। इस पर उसने भी अपने को कोमलांगी बताया, जिस पर मूर्ति हँस पड़ी। तीसरे दिन तीसरी के पास गया और उसको लेकर उपवन में आया। वहाँ स्त्री ने तालाब में मछलियों को तैरते देखा तो घूँघट काढ लिया। इस पर मूर्ति हँस पड़ी। अब राजा ने अन्य रीति से परीक्षा लेने की ठानी। पहली को उसने हबशी से व्यभिचार करते देखा, दूसरी को मालखान से और तीसरी को नदी पार जाकर अपने मित्र से व्यभिचार करती थी। अंत में राजा ने राजकुमारी शीलनिधान की भी परीक्षा ली। रात को चुपके से जाकर उसकी चारपाई पर सो गया। शीलनिधान ने आधी रात तक राजा की अच्छी तरह सेवा की। तत्पश्चात् पास के मंदिर में जाकर भगवान् से प्रार्थना करने लगी कि उसका प्रेम सदैव अपने पति पर बना रहे। यद्यपि उसका पति उस पर कितना ही निष्ठुर रहे तथापि वह अपने प्रेम से कभी विचलित न हो। फिर प्रार्थना की कि उसका पति उस पर सदय हो। राजा जो छिपकर सुन रहा था दौड़कर उसके पास गया और उसे गले लगा लिया। उसने अपने कृत्यों के लिए क्षमा माँगी और उसे पटरानी बनाया। दूसरे दिन तीनों रूपवतियों को उनके प्रेमियों सहित मरवा डाला।

रचना काल

सोरह सै इक्यानुवों हुतीदूज वदिपूस।
सुक्रवार कवि जान यह बांधी कथा अदूस॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १६६१ और लिपिकाल सं० १७८४ है। रचना अढ़ाई पत्र में समाप्त हुई। रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय में देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६ए. कथा अरदसेर पातिसाह की, रचयिता जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान)—कागज—प्राचीन देसी, पत्र—४, आकार—८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप)—१७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० वि०, लिपिकाल—सं० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—अथ कथा अरद सेर पातिसाह की कविजांन क्रित॥

॥ चौपई ॥

पर्थम नांव निरंजन लीजै। सब सुधरै पाछै जो कीजै॥
बान नांव लेत्रे की करी। ताकै आगै है बुधि धरी॥
नांव प्रसाद करै जो चाहै। जो पकरै सो वोर निबाहै॥
ग्रंथ आवि बिनु नांव न होइ। ताकौ हाथ छुवो जिन कोइ॥

॥ दोहा ॥

अरद सेर पतिसाह की सुलप कथा कहि जान।
जैसी विधि ग्रंथन पढ़ी सो हौं करौं बखान॥

।। चौपई ।।

अरद सेर कौ करूं बषान । जाकौ पिता साहु सासान ।।
ली ईरान और तूरान । बहुरि भरि लीनी मकरान ।।
बहुत विलाइत लीनी मार । परगढ भयौ सकल संसार ।।
दल बल कौ कछु लेषौ नांहि । चढत जाइ रवि छपि रज मांहि ।।
लरिबे कौं आवै सो मरै । काल रूप कैसें को लरै ।।
जब याकी कीरत विसतरी । अरदुवान कै काननि परी ।।
अरदुवान बडेडौ पतिसाहि । ताकी उपमा दीजै काहि ।।
अरदसेर कौं चितहि न आनत । आप समान न काहू मानत ।।

अंत— ।। चौपाई ।।

ताकौ नाव धरयौ सा पूर । एक पलक हूं करहि न दूर ।
सुत माता हू मारी नांही । आनि बिठाई मंदिर मांहि ।।
अमर भयौ मंत्री परसाद । मंत्री कौ दीनौं बहु दाद ।।
सब मंत्रिन कै ऊपर कीनौ । जो वाकौ भायौ सो दीनौं ।।
बीच न रह्यौ साहि परधान । है घट दोइ एक ही प्रान ।।
सुलप कथा गाई कवि जान । दोइ पहर मैं करयौ बषान ।।
हौ बारस बदि माह कुवार । सुकरवार जांनहु हौं बार ।।
सोरह सै नावा तब आहि । जान कवि बांधी चित चाहि ।।

।। दोहा ।।

बहुत उतावर मैं करी छंद सघरी कै मांहि ।
भूल्यो लेहु सुधारि कै यांहि बिषोरहु नांहि ।।

कथा अरदसेर की संपूरन भई ।। १७८४ मिती चैत वदी १० ।

विषय—अरदसेर बादशाह बडा गुणी और वीर था। प्रजा का न्यायपूर्वक पालन करता था। उसका यश दूर-दूर तक फैल गया और शीघ्र ही सब बादशाहों का अधिपति बन गया। केवल बादशाह अरदुवान ही ऐसा था जिसने उसका आधिपत्य स्वीकार नहीं किया, प्रत्युत उससे वैर रखने लगा। अपने बड़े पुत्र बहमन को बड़ी सेना देकर अरदसेर के विरुद्ध भेजा। परंतु बहमन हार गया और भाग कर घर आया। अरदसेर पीछा करता हुआ उसके नगर तक पहुँचा। सारा नगर घेर लिया गया। अरदुवान लडाई करने पर विवश हुआ जिसमे वह मारा गया। बहमन भाइयों और मंत्रियों सहित भाग निकला। अरदसेर ने अरदुवान की पुत्री से, जो रूपवान थी, विवाह कर लिया और अपना जीवन सुखपूर्वक बिताने लगा। उधर बहमन बादशाह के विरुद्ध षडयंत्र रचने लगा। उसने विश्वासनीय व्यक्ति को विष के साथ अपनी बहिन के पास भेजा और कहा कि वह किसी प्रकार बादशाह को विष दे दे। उसकी बहिन पहले तो हिचकी पर जब उस व्यक्ति ने बहुत उभाडा तो वह तैयार हो गई। उसने एक दिन बादशाह को जब वह आखेट मे लौटा, पेय पदार्थ के साथ विष दे दिया। सौभाग्य से पीते समय विष का प्याला बादशाह के हाथ से छूट पडा। बादशाह को संदेह हुआ। उसने पेय द्रव्य मुर्गियों को पिलाया जिससे वे तुरंत ही मर गई। फिर क्या था, बादशाहजादी को मारने का आदेश दे दिया गया। विश्वासपात्र मंत्री को इस कार्य के लिए नियुक्त किया गया। शाहजादी ने मंत्री को अपने गर्भ रहने की बात बताई। मंत्री ने यह बात बादशाह से प्रकट की. पर बादशाह का निश्चय दृढ था। मंत्री द्विविधा मे पड गया। उस समय तक बादशाह की कोई संतान भी न थी। अतः उसने शाहजादी को अपने घर में छिपा कर रख लिया। समय

पर उसका पुत्र हुआ जो रूप और शील में बादशाह के समान ही था। एक दिन बादशाह आखेट करने गया और एक मृग के पीछे घोड़ा दौड़ा दिया। वह उस पर बाण छोड़ने को ही था कि बीच मे मृगी और बच्चा आ गए। उसने बाण रख दिया और रोने लगा। मंत्री के प्रार्थना करने पर कारण बताया कि मृग के बच्चे ने उसे संतान की याद दिला दी। मेरी कोई संतान नहीं और आगे भी आशा नही कि संतान होगी, क्योंकि मै अब बावन वर्ष का हो गया। मंत्री ने कहा, 'यदि मुझे जीवन दान दिया जाय तो मै इस संबध मे उपाय करने की कोशिश करूँ। बादशाह ने स्वीकार कर लिया। पश्चात् मंत्री ने सारा गुप्त रहस्य प्रकट कर दिया। बादशाह पुत्र पाकर बहुत प्रसन्न हुआ और शाहजादी को भी, जो अत्यंत क्षीणकाय हो गई थी, क्षमा कर घर में रख लिया।

रचनाकाल

ही बारस बदि माह कुवार। सुकरवार जांनहु हो बार।
सोरह सै नावा तब आहि। जान कवि बांधी चित चाहि॥

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल लिपिकाल क्रमश: संवत् १६६० और १७८४ है। रचना दोपहर भर में समाप्त की गई।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके परिचय के लिए देखिए "रत्नावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६त. कथा कामरानी व पीतमदास की, रचयिता--जान कवि, निवास स्थान--फतेहपुर (राजस्थान, जयपुर), कागज--देसी, पत्र--५, आकार--८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२५, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६७, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १६६१ वि०, लिपिकाल--सं० १७८४ वि०, प्राप्ति स्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि--कथा कामरानी व पीतमदास की॥

॥ दोहा ॥

पर्थम सोई सुमिरिए जिन सिरज्यो संसार।
पलक मांहि सब कुछ भयौ होत न लागी बार॥
नभि धरि ससि रवि उडिन गिर पवन नीर बन भेद।
रचे अकेलं आपही रंचक भयौ न षेद॥ ३॥
को चातुर कोऊ मुगध धर्मी को पापिस्ट।
नाहिं करी करतार सव एक भांति की सिस्ट॥ ४॥
दोष महंमद सुमिरिहुं उनते दूजी ठौर।
नबी रसूल जिते भए है सब मै सिरमौर॥ ५॥
अबहिं वषानूं जांन कहि येक बात अभिराम।
पंच सजंन कौ भेदु है मित्र कथा इहं नाम॥ ६॥

॥ चौपाई ॥

पंच मित्त बसिहै मुलतांम। अब हौं तिनकौ करौं बषांन॥
राजकुंवर इक छवि की रास। नांव ताहि कौ प्रीतमदास॥
इक सौदागर सुत धनवंत। जाकै लछी आहि अनंत॥
एक सुरंगया देत सुरंग। तिह पहुंचे जित होत उमंग॥

इक बढ़ई सुत पूरंन ग्यान। कोऊ ना जग वाहि समान ॥
इक काछी सुत आछी कांति। हार बनावत है बहु भांति ॥
येक्कै संग रहै ये पंच। बिछुरत नाहीं कबहू रंच ॥

अंत—

पीतमदास भयौ उत राइ। निस बासुर आनंद में जाइ ॥
चारौं मित करे परधानं। दोनौ है करता सुष प्रानं ॥

॥ दोहा ॥

सेवा करि है स्वाम की ज्यो कौ हित चित लाइ।
ताकौ निहचै जानियौ ह्वै करतार सहाय ॥ २ ॥
इक राजा कवि जान कहि और चार परधान।
नां बिछुरे आनंद कीये जौलौं जीये जहांन ॥ ३ ॥
सोरह सै इक्यानुवै कथा करी यहु जांन।
पूस दसै बविहो तबहि बार बुद्धि पहिचान ॥ ४ ॥
कहत जान याकौ करत ढील लगी कछु नांहि।
संपूरन नीके भई पहर सवा द्वै मांहि ॥

इति कथा प्रीतमवास काम रानी की संपूरन भई संवत् सतरह सै १७८४ मिती चैत बदी १० दसतषत फतेहचंद ताराचंद का डींडवांनीया ॥ श्री श्रीः ॥

विषय—मुलतान नगर मे पाँच मित्र रहते थे। उनमें एक राजकुमार था जिसका नाम प्रीतमदास था, दूसरा धनी वैश्य का पुत्र था, तीसरा मुरग देने वाले का पुत्र, चौथा बढई का पुत्र, और पाँचवाँ काछा का पुत्र था। राजकुमार ने अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की तो औरों ने भी उसका अनुकरण किया। परतु उनका प्रतिज्ञा बहुत दिन तक टिक न सकी। राजकुमार को काम ने सताया। उसने मित्रो से कहा कि कामरूप देश की स्त्रियाँ अधिक सुदर बतलाई जाती है, अतएव वहाँ जाकर मनोनुकूल विवाह करना चाहिए। सब एकमत हुए और व्यापारियो का वेश धारण कर कामरूप देश की ओर चले। बहुत दिनो के पश्चात् कामरूप देश पहुँचे जहाँ एक नगर मे डेरा डाल दिया। तत्पश्चात् समीप के मंदिर मे दर्शन के लिए गए। वहाँ एक स्त्री की मूर्ति थी जो देखने मे अति सुदर थी। राजकुमार उसको देखकर मुग्ध हो गया। उसने अपनी सुध-बुध खो दी और मूर्ति से प्रेम करने लगा। मित्रो ने बहुत समझाया, पर न माना। उसे विश्वास हुआ कि उस रूप की स्त्री संसार मे कही है। अत: मित्रो को कहा कि वे पता लगावे कि वह कहाँ है। मित्र विवश थे। राजकुमार के आदेशानुसार प्रयत्न कर लेना उन्होने अच्छा समझा। चारो ओर खोज करने लगे। सौभाग्य-वश उन्हे ऐसा व्यक्ति मिला जो मूर्ति के विषय मे जानता था। उसने बतलाया कि वह मूर्ति हरिदास राजा की पुत्री कामरानी की है पर उसका देश बहुत दूर है। उस नगर के राजा राम ने जब कामरानी के सौन्दर्य की बात सुनी तो चित्रकार के द्वारा गुप्त रीति से उसका चित्र मँगा लिया। उसी चित्र के आधार पर उक्त मूर्ति गढी गयी है। राजा उसकी पूजा करने लगा। उसने राजा हरिदास से उसके साथ कामरानी को विवाह देने की चर्चा चलाई, पर सजातीय न होने के कारण विवाह न हो सका। राजा राम चुप न बैठा। रावतो द्वारा षड्यत्र रचकर कामरानी को भगा लाया। राजा हरिदास ने रावतों को युद्ध मे हरा तो दिया पर पुत्री का उद्धार न कर सका और निराश होकर लौट गया। कामरानी यद्यपि राजा राम के अधिकार मे आ गई तथापि उससे विवाह करने के लिए सहमत न हुई। राजा ने बड़ा उद्योग किया; परतु सफल न हो सका। अत मे एक भवन बनाया गया और उसमें कामरानी को कठोर पहरे में रख दिया गया। इतनी बात कहकर वह व्यक्ति चला गया। मित्र बड़े प्रसन्न हुए

और राजकुमार से सब समाचार कहा। राजकुमार को भी बड़ी प्रसन्नता हुई। पश्चात् राजकुमारी को पाने के निमित्त मंत्रणा की गई। काछी के पुत्र ने मालिन से मैत्री कर ली और कुछ सुंदर मालाएं अपने हाथ में तैयार कर राजकुमारी के पास भिजवा दिए। राजकुमारी बड़ी प्रसन्न हुई। धीरे-धीरे परिचय बढ़ता गया तो बढ़ई के पुत्र द्वारा तैयार की गई राजकुमार की काठ की मूर्ति मालिन के हाथ राजकुमारी के पास पहुँचाई गई। मूर्ति देखकर राजकुमारी मूर्छित हो गई। जब चैतन्य हुई तो मालिन ने विस्तारपूर्वक सब बातें कह दी। राजकुमारी सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। उसने मालिन द्वारा राजकुमार को अपनी आकांक्षा जतला दी। पश्चात् व्यापारी पुत्र ने राजा को बहुत सी भेंट देकर राजकुमारी के निवास स्थान के पास ही रहने के लिए उससे स्थान माँग लिया। कुछ दिन बीतने पर सुरंगिया के पुत्र ने अपने टिकने के स्थान से राजकुमारी के भवन तक सुरंग तैयार कर दी। राजकुमार को सुरंग द्वारा राजकुमारी के पास भेज कर दोनों का मिलन करा दिया। राजकुमारी ने राजकुमार का प्रेम द्वारा सम्मान तो किया, पर विवाह नहीं किया। उसने राजकुमार को अपनी इच्छा बतलाई कि वह उसे पितृगृह पहुँचा दे और उसके पिता से विवाह के लिए स्वीकृति ले। राजकुमार ने मित्रों की सहायता से राजकुमारी की इच्छा पूरी की। राजा हरिदास पुत्री को वापस पाकर बहुत प्रसन्न हुआ और राजकुमार प्रीतमदास से उसका विवाह कर दिया। उधर राजा राम को जब ज्ञात हुआ कि कामरानी भाग गई तो आत्महत्या कर ली। कुछ दिन पश्चात् राजकुमार ने राजा से कह कर उसके कुटुंबियों की पुत्रियों के साथ अपने मित्रों का भी विवाह करा दिया। थोड़े दिन पश्चात् राजा हरिदास ने अपना राज्य भी राजकुमार को सौंप दिया और वन में जाकर तपस्या करने लगा। राजकुमार ने मित्रों को मंत्रियों का कार्य सौंपा और आनंदपूर्वक राज्य करने लगा।

रचनाकाल

सोरह सै इक्यानुवै कथा करी यहु जान।
पूस दसै बदि ही तबहि बार बुद्धि पहिचान॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १६६१ और लिपिकाल संवत् १७८४ है।

रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रत्नावती" का विवरण पत्र।

संख्या १२६थ. पाहन परिछ्या, जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—३, आकार—८$\frac{१}{२}$ × ६$\frac{१}{४}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—ग्रंथ पाहन परिछ्या दोहा।

करता सुमिरन कीजिए निस बासुर यहु तथ्य।
निसतारन तारन जगत पोषन भरन समथ्थ॥ २॥
नबी महंमद मुसतफा रची हेत जिह सिस्ट।
ताकी चाहत आस रब धरमी पुनि पापिस्ट॥ ३॥
पाहन की परिखा कहूं जैसे ग्रंथ बषांनं।
को मुहरो किह काम कौ प्रगट करत कवि जान॥ ४॥
हिंद की तुरकी मति मथौ कथौ षंड द्वै बांनि।
कहत जांन जांनत नहीं सोउ लैहै जानि॥ ५॥

पर्थम षंड हिंद की नर सिंध मुहरे को बरनं।

॥ चौपाई ॥

सिघमुषी मधु कैसे रंग। बाहर भीतर निरमल अंग।
नाभि चक्र तर कंचन कांति। तीन रेष नरसिंघ इहं भांति॥

॥ अथ गुन दोहा ॥

इंछ पुजावत अरिदलनं दे सुहाग संतोष।
धोइ पिवाये जान कहि हरत रोग कौ दोष॥

अंत—अंबरी पाहन गुन

॥ चौपाई ॥

अंबर बरन होइ पाषांनं। मुनि लै ताकौ करौ बषानं॥
तीन भांति बिंदुका अभिरामं। तापर सेत पीति पुनि स्यामं॥
वाकौ भांजन करिकै षाइ। बात सनं कौ रोग घटाइ॥

कपूर गुन

रषत कपूर जु अपनै पास। कवल बात दुष देत न तास॥
गूंद नारियर कौ यहु आहि। तिनकौ उडि लागत है ताहि॥
षाहंन परिषा भाषो जांन। जैसी विधि ग्रंथनि परमान॥

ग्रंथ पाहन परिछ्या संपूरन १७८४ चैत बदी २।

विषय—मूल्यवान् पत्थरों (रत्नों) की परीक्षा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल नहीं है। लिपिकाल संवत् १७८४ दिया है।

रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६द. शृंगार सत, भावसत, बिरहसत, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहसु फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६७१ वि०, लिपिकाल — सं० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—ग्रंथ सिंगार सति कवि जान का किया।

परथम सुजान कहि अलष जु अपरंपार।
भेद अभीधन येध है जो पचि है संसार॥ २॥
कहा ग्यान कोऊ करै काधौं करै बिचार।
जेम बिलूला नीर कौ सो बुधि कौ बिस्तार॥ ३॥
कौन कौन करतार जू कीने जग व्यौहार।
बिरह पेम रस रीति हित औ अनेक परकार॥ ४॥
नबी मुहंमद सेव कौ कीनौ कहा सिंगार।
जाकी छबि पर जान कहि रीझि रह्यौ करतार॥ ५॥
अब हौं कहौं सिंगार सत उकत पुरातन आनि।
नौतनहू प्रति सोधिहू जो आवहि कहि जान॥ ६॥

अंत— मैं यहु करयौ सिंगार सत काचौ कंचन मान।
काम कसौटी कबिनकी कसें कुंदन कहि जान॥ १०१॥

सोलह सै ईकहतरे जहांगीर के राज ।
साज्यौ जान सिगार सत तीन द्यौस मैं साज ॥

ग्रंथ सिगार सति संपूरन भयौ समत १७७७ मिती पोह वदी ६ बार मंगलवार लिषतं फतेहचंद ताराचंद का ॥

मध्य ॥ ग्रंथ भाव सति कवि जान का कीया ॥

अबिनासी कौ सुमिरि हौ परथम कहि कबि जान ।
तौ मन इंछा पूजहै सुष पावत तन प्रान ॥ २ ॥
रैनी करता नाव को जो रसना वै रंग ।
कबहूं फीकौ है नहीं चटक होइ अंग अंग ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

अधरनि अंजन लीक है पानन कौ रंग फीक
नैन पीक उरसी कहै चलत परत पग भोक ॥ १०१ ॥
अछिर सर येमं करे पै घोटे काहू जान ।
पैंने हूं है जो चढ़ै कान गुनी परसान ॥ १०२ ॥
सोरह सै इकहतरं जहांगीर जगसाह ।
दोइ द्यौस मैं जान कवि कियौ भाव अवगाह ॥

इति ग्रंथ भावसति संपूरन भयौ समत ॥ १७७७ मिती पोह वदी १०॥ दसष्त फतेहचंद ॥

अंत— ॥ विरहसत जान कृत ॥

॥ दोहा ॥

निमसकार हू करत हूं आदि अगोचर नांव ।
जिन बनिजन लाहौ लहौ सो कैसे विसरांव ।
जेतक गुन बिध गाइये गावन चोप न जाइ ।
लहै जौ बचंनं चुंच नित देषत ससि न अघाइ ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

अबहि बषानूं बिरहसत यह उपज्यो चित चाव ।
कहत जान कवि लेहु सुनि नेहु बिरहु के भाव ॥ ८ ॥
पीय चलें जीय ना चल्यो जानत कौन सुभाइ ।
बिहबल ह्वै कै परि रह्यौ पैड भरी नहिं जाइ ॥
जौ परि परि केहूं चलत अवध जान नहिं देतु ।
घेरि घेरि तन राषिहै षोरि लगावत हेतु ॥ १० ॥

:o: :o: :o:

मैं जु कह्यो यहु बिरह सत लोहा लैहै कहि जान ।
कान गुनी पारस लगे कुंदन बारह बान ॥ १०० ॥
सोलह सै इकहत्तरे जहांगीर जगपत्ति ।
दोइ द्यौस मैं जान कवि करयौ बिरह सत सत्ति ॥ १०१ ॥

॥ बिरह सत संपूरन ॥

विषय—शृंगारसत ।

नायिका भेद के अंतर्गत बालापन, वयःसंधि एवं तरुणावस्था का वर्णन । इसमें सौ दोहे हैं ।

रचनाकाल

सोलह सै इकहत्तरै जहांगीर के राज ।
साज्यौ जांन सिंगार सत तीन द्यौस मैं साज ।।

भावसत

भावात्मक सौ दोहों का संग्रह ।

रचनाकाल

सोरह सै इकहत्तरै जहांगीर जगसाह ।
दोइ द्यौस मैं जान कवि कियो भाव श्रवगाह ।।

बिरहसत

सौ दोहों में विरह शृंगार का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रत्येक शतक मे तीन-तीन पत्रे है। रचनाकाल प्रथम दो शतकों मे संवत् १६७१ है। लिपिकाल सवत् १७७७ है, यह भी उक्त दो शतकों मे ही है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६घ. बलूकिया बिरही की कथा, रचयिता--कवि जान, निवास स्थान--फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज--प्राचीन देशी, पत्र--६, आकार--८३/४ × ६१/२ इंच, पंक्ति--(प्रतिपृष्ठ)--२०, परिमाण (अनुष्टुप्)--१८०, पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सन् १०४० हिजरी, लिपिकाल--स० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि--बलूकिया बिरही की कथा ।।

।। चौपई ।।

परथम सुमिरौ सिरजनहार । सिरज्यौ आदि महंमद यार ।।
पीति महंमद जगत उपायौ । कीन्हौ वहै जु हजरत भायौ ।। २ ।।
नबी सिस्ट कौ मूल बषानहु । सब कछु नबी बाति ते जानहु ।।
रबि ससि उडिन पंवन अरु मेहु । वन जलधर नभ तेज रतनेहु ।। ३ ।।
सलिता सागर मेरु पहार । मनुष देवता रचे अपार ।।
बैकुंठ और फिर सते हूर । सबै भए हजरत के नूर ।। ४ ।।
नबी पीति ते सब प्रगटाये । लै लै नाम र जाति....ये ।।
जेते नबी जगत ह्वै गये । हेत महंमद हीं कै भये ।। ५ ।।
सब मिलि जप्यौ महंमद नाम । तौ बैकुंठ पायौ निसाम ।।
नबी नूर आदिम प्रगटायौ । तब आदम लै तषत बिठायौ ।। ६ ।।
तबहि फिरस्तनि कौ फुरमायौ । आदम कौ सजदौ करवायौ ।।
वह सजदा आदम कौं नाही । नबी नूर देष्यौ वा माही ।। ७ ।।

अंत--

बात सुनी यह स्तरै गांव । आप परै बिरही कै पांव ।।
बिरही धरम सांचु करि जान्यौ । सबहीं कलमा नबी बषान्यौ ।। १२६ ।।
जांन कहै हौं बलि बलि ताहि । जाकौ नबी महंमद चाहि ।।
या जगमैं नीकैं सो आयौ । जिन हजरत सौं पेमु लगायौ ।। १२७ ।।

केते बली भये जगु मांहि । हजरत जिनहुं बिसारयौ नांहिं ॥
जाकों लागत है रटनाम । ताके सगरे सुधरैं कांम ॥ १२८ ॥
सत हजार चालीस । कथा बषानी बिसवाबीस ॥
अठाईस इक सौ चौपई । येक द्यौस मैं पूरन भई ॥

इति बलूकिया बिरही की कथा संपूरन १७७७ फागन सुदी ७ ।

विषय—बलूकिया इसरायल जाति का था । वह बड़ा गुणवान और विज्ञाता था । पुराण और तौरेत पढ़ता था । मुहम्मद साहब के विषय में जब पढ़ा तो उनका प्रेमी हो गया । नबी को देखे बिना अशांत रहने लगा । माता से कहा कि नबी को खोजने के लिए जाता हूँ, पर माता ने हँसी समझ कर आज्ञा न दी । परंतु जब देखा कि बलूकिया बिना अपनी इच्छा पूर्ति किए जीवित नहीं रह सकता तब उसने जाने की आज्ञा दे दी । नबी के प्रेम में लीन होने के कारण लोग उसको बिरही कहने लगे । आगे वह इसी नाम से प्रसिद्ध हो भी गया । चलते-चलते एक पंडित से मिला जो अत्यंत लोभी था । उससे अपने संबंध में सब बातें कहीं और सहायता करने की प्रार्थना की । पंडित लोभवश उसके साथ हो लिया । दोनों चलते-चलते एक पर्वत पर पहुँचे जहाँ सुलेमा तखत पर सोई हुई थी । उसके हाथ में मुद्रिका थी, जिसका गुण यह था कि यदि किसी को मिल जाय तो वह संसार का बादशाह हो जाय । पंडित ने लोभवश मुद्रिका उतारनी चाही, पर तुरत ही एक सर्प के काट लेने पर जलकर राख हो गया । इस पर जबरील प्रकट हुआ और उसने बिरही से आगे जाने को कहा । साथ ही चेतावनी दी कि यदि वह नबी का प्रेमी न होता तो बच न सकता । बिरही आगे बढ़कर क्या देखता है कि कंचन भूमि है और कतार के कतार विविध फलों के वृक्ष खड़े हैं । उसने फल तोड़ने चाहे, पर वृक्षों ने मनुष्य की आवाज में फल न तोड़ने के लिए कहा । उसको बड़ा आश्चर्य हुआ और कारण पूछा । उन्होंने उत्तर दिया कि वे अप्सर हैं और हिंदू अप्सरों से लड़ने के लिए आए हैं । यह सुनकर बिरही आगे चला । जहाँ उसको सुधर्मी अप्सर मिला । उसकी सहायता से वह घोड़े पर चढ़कर नबी की खोज में निकला । निश्चित स्थान पर जाकर घोड़ा सुधर्मी के भृत्यों को दे दिया और पैदल आगे बढ़ा । मार्ग में एक फरिश्ता मिला, जिसके एक हाथ में उजियाला और दूसरे में अँधेरा था । पश्चात् दूसरा मिला, जिसके एक हाथ में जल और दूसरे में अग्नि थी । और आगे बढ़ने पर चार फरिश्ते मिले प्रथम मनुष्यानन, दूसरा गोआनन, तीसरा गरुड़ानन और चौथा सिंहानन था । वे क्रमश: मनुष्य जाति, पशु जाति । (पालतू), पक्षी जाति और वन पशु जातियों के शासक थे । बिरही सबसे बातें करता हुआ अपने गंतव्य स्थान की ओर बढ़ता ही गया । इस बार एक फरिश्ता ऐसा मिला जो कनिष्ठिका उँगली को एक ओर ऊँचे और दूसरी ओर नीचे घुमाता था । पूछने पर पता चला कि उसके हाथ पर सूर्य का उदय और अस्त होना निर्भर है । आगे दो फरिश्ते और मिले, जिनके अधिकार में खारे और मीठे दो समुद्र थे । वे दोनों समुद्रों को न तो मिलने देते थे और न अलग ही रखते थे । एक सागर और मिला, जिसमें मछलियाँ ही मछलियाँ थीं । उनमें एक मछली सबकी प्रधान थी । बिरही सबके संबंध में ज्ञान प्राप्त करता हुआ बढ़ता ही चला गया । अंत में ऐसे स्थान पर आया जहाँ उसको इसराफील, जमीकाईल और जबराईल मिले । कनक के पंछी दिखाई दिए, जो वैकुंठ वास करते थे । वृक्ष-वृक्ष में उत्तम भोजनों का प्रबंध था । बिरही ने पेट भर भोजन किया । पश्चात् ख्वाजा खिज्र मिले, जिससे उसकी अच्छी तरह बातचीत हुई । खिज्र बिरही को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ । उसने बिरही से कहा कि अभी नबी मुहम्मद साहब को संसार में प्रकट होने के लिए बहुत बरस शेष हैं । बिरही भौंचक रह गया और ध्यान लगाकर नबी का स्मरण करने लगा । उसे ध्यान में नबी का दर्शन हुआ, जिससे उसके चित्त को बड़ी शांति मिली । पश्चात वापस लौट आया । माता पुत्र को पाकर बहुत प्रसन्न हुई । बिरही की चर्चा समस्त संसार में होने लगी और वह पूजा जाने लगा ।

रचनाकाल

सन हजार चालीस। कथा बषानी बिसबाबीस ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सन् हिजरी मे सन् १०४० है। लि० का० संवत् १७७७ वि० दिया है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय मे देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२८न. तमीम अनसारी की कथा, रचयिता—कवि जान, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति(प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०२ वि०; सन् १०५५ हिजरी, लिपिकाल—स० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—तमीम अनसारी की कथा ।।

।। चौपई ।।

सुमिरन आदि करौं करतार। इंछया सकल पुजावनहार ।।
दूजे नबी जपूं कहि जान। ऐसौ मुक्त उपावन आंन ।। २ ।।
हुतौ तमीम येक अनुसारी। ताकी बिपति कथा उचारी ।।
प्रेत उडाइ गयौ लै तहां। वाकी गैर रहन की जहां ।।
तिह धन पूछे बहुत सयांने। सर्व जांन इहि बात अयाने ।।
पूछत बैठि रही थकि नारी। केहू कह्यौ न उति अनसारी ।। ४ ।।
चार बरष इंहि भांति बिहाये। तिया सुता सुत भूष संताये ।।
उमर षिताब पास तिय आई। अपनी बिथा सकल प्रगटाई ।। ५ ।।
हौं पुनि बालक भूष संताये। चार बरष अति दुषित बिहाये ।।
अब कछु ऐसौ करहु उपाई। जातें भूष हमारी जाई ।। ६ ।।
उमर अमीर दर्ब कछु द्यायौ। साढे तीन बरस लौं षायौ ।।

अंत—

पुनि आये तिन भाषी बात। नग्रन मवीनै कौं हम जात ।।
तिनकौं ब्वाज षिजर फुरमायौ। इत भरमत यहु मानस आयौ ।। १४८ ।।
याकौं घर कौ बढ्यौ उमाहुं। तुम अपनै संग इहि लै जाहु ।।
मोसौं इक बादर लपटायौ। गहर न करी इतहिं लै आयौ ।। १४९ ।।
उमर अमीर दिलासा कीनी। याकी तिय याही कौं दीनी ।।
यहु सुष सौं अपनै घर आयौ। दुष सिगरौ करतार गँवायौ ।। १५० ।।
संवत सत्रह सै द्वै भनिये। सन हजार पंचावन गनिये ।।
सुलप कथा बाँधी कवि जांन। बांचन लिषत न ह्वै अरसान ।।

इति तमीम अनसारी की कथा संपूर्ण १७७७ फागन सुदी ।। ८ ।।

विषय—तमीम अंसारी को जब एक प्रेत उडा कर ले गया तब उसकी स्त्री और बच्चे असहाय अवस्था में रह गए। उन्होंने तमीम का पता लगाने की बहुत कुछ चेष्टा की, पर सफल न हो सके। चार वर्ष किसी प्रकार गृह संपत्ति के बल पर कट गए। परंतु उसके पश्चात् जब कुछ न रहा तब स्त्री अमीर उमर के यहाँ गई और अपनी विपत्ति उससे कह सुनाई। अमीर ने कुछ धन दिया जिससे उसके साढ़े तीन वर्ष और कट गए। स्त्री फिर उमर के पास गई और

कहा यदि आज्ञा दी जाय तो वह किसी पुरुष को रख ले, जो उसका और उसके बच्चों का पालन पोषण कर सके। उमर ने आज्ञा दे दी। एक परदेशी उसी समय मिल गया जिसको लेकर वह घर चली गई। रात को जब सोने की तैयारी कर रहे थे तो उसी समय तमीम अंसारी पहुँच गया। घोर अंधकारपूर्ण रात्रि में जबकि रह-रह कर वर्षा भी हो रही थी, तमीम अंसारी की आवाज सुन कर उसकी स्त्री को बड़ा भय हुआ। उसने समझा कि प्रेत उसके दूसरे पुरुष को लेने के लिए आया है। उसने किवाड़ नहीं खोले। भीतर से कहा, तुम तमीम अंसारी नहीं हो वरन् उसके रूप में प्रेत हो और दूसरे पुरुष को लेने के लिए आए हो। तमीम ने साक्षी के रूप में अपने घर की सब वस्तुओं के नाम लिए, पर स्त्री को विश्वास न हुआ। प्रत्युत उत्तर दिया कि प्रेत सब कुछ जान सकता है। इस प्रकार बातें करते-करते प्रातःकाल हो गया। गाँव के लोग इकट्ठा हो गए। सबने स्त्री का पक्ष लिया और तमीम अंसारी को उमर अमीर के पास जाने को कहा। तमीम निराश होकर अमीर के पास गया और उससे अपनी कहानी आरंभ की :—

जहाँपनाह, एक रात जब मैंने स्त्री से पानी मांगा तो उसके उदासीन रहने पर मुझे बड़ा क्रोध हुआ। मैं घर से बाहर चल पड़ा। कुछ दूर चलने पर एक प्रेत ने मुझे उड़ाया। सागर में प्रविष्ट होता और अनंतर शीघ्र ही आकाश में उड़ जाता। इससे मुझे जीवन की आशा न रही और मैं मूर्छित हो गया।

जब चैतन्य हुआ तो अपने को भूमि में पड़ा पाया। कहीं चोट भी नहीं। चारों ओर बहुत से मनुष्यों को देखा। एक नमाज करता हुआ दिखाई दिया। उसने मुझे एक बाग बताया जहाँ मैंने मेवा खाकर क्षुधा तृप्त की। वहाँ दो सेनाएँ आईं और आपस में लड़ने लगीं। एक सवार ने मुझे घोड़े पर चढ़ा लिया। ज्ञात हुआ कि वह तुरक परी था। तुरक परियों ने हिंदू परियों को परास्त कर दिया था। मुझे लेकर वह अपने स्थान पर गया। जब उसको मेरे मुसलमान होने का पता चला तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसने मुझे अपने लड़के को कुरान पढ़ाने के लिए नियुक्त कर दिया और मेरी इच्छा पूरी करने का वचन दिया। कुरान समाप्त हो जाने पर उसने प्रेत द्वारा मुझे मदीना की ओर रवाना किया। प्रेत मुझे मारना चाहता था, अतः बहुत ऊपर आकाश में उड़ा ले गया। परंतु उसके पंख टूट गए और मैं भूमि पर गिर पड़ा। फिर भी कोई चोट मुझे नहीं आई। भाग्य सराहता हुआ एक सराय में आया। वहाँ देखा कि चारों ओर लाल ही लाल बिखरे हैं, पर ले जाने का कोई साधन नहीं होने से कुछ भी न लिया। एक मनुष्याकार प्राणी मिला जो मुझे शुतुरमुर्ग के रूप में सुलेमा के स्थान पर ले गया। सुलेमा के हाथ से मुद्रिका उतारते समय वह जल कर भस्म हो गया। पश्चात् एक पुरुष प्रकट हुआ जिससे मुझे सब बातें ज्ञात हुईं। उसके कहने से पच्छिम दिशा की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में रूपवती परी की पुत्री मिली जिसको कुरान पढ़ाकर प्रसन्न किया। उसने एक प्रेत को मुझे घर पहुँचा देने की आज्ञा दी। परंतु वह प्रेत भी एक दिन चल कर गुप्त हो गया। पश्चात् एक महापुरुष मिला जिसने एक हाजी के साथ मुझे मदीना की ओर जाने-वाले जहाज में बिठला दिया। जहाज पहाड़ से टकराकर डूब गया। मैं बचकर एक बन में पहुँचा। वहाँ कई कौतुक देखे। पहिले मुझे इलियास मिला, फिर ख्वाजा खिज्र मिला और तत्पश्चात् वृद्धा के रूप में लक्ष्मी मिली। खिज्र ने दयावश मुझे बादल द्वारा मदीना पहुँचा दिया।

अमीर उमर को तमीम अंसारी की कथा सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ और सहानुभूति प्रकट कर उसको स्त्री बच्चे दिला दिए।

रचना काल

बसंत सत्रह सै हुं भनिये। सन हजार पंचावन गनिये॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल १७०२ वि०, सन् १०५५ हि० है। लि० का० संवत् १७७७ वि० दिया है।

रचयिता जान कवि है। इनके विषय मे कृपया देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६ प. कथा कलदर की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८½ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०२ वि०, प्राप्तिस्थान—हिदुस्तानी एकेडेमी. प्रयाग।

आदि—कथा कलंदर की।

॥ चौपई ॥

प्रथम नाम निरंजन लीजै। तब आरंभ कथा कौ कीजै॥
नाम लेत उपजै घट ग्यान। प्रान इंछ पूजै कहि जान॥
बिरहु पेम सिरजे करतार। लै मानस को लांवहि पार॥
जा घट मे उपजै ये दोइ। मित मिलाप विरम ना होइ॥
विरहु अगनि मै जोत न जारै। कंचन ते कुंदन करि डारै॥
पैमु उदधि मै बूढक पैहै। मितं रतन ताकै कर ऐहै॥
पौढत नांहि मित बैरागु। जागत जागत जागै भागु॥
जाके नैन नीद ना बरै। मित रूप तकि डिठु परै॥
प्रेम नांहि जाकै घट मांहि। सो निरजोत फिरत ज्यौं छांहि॥
नबी प्रेमु उपज्यौ संसार। सकल पेमुहीं कौ बिस्तार॥

॥ दोहा ॥

प्रेमु निरंजन मै रबी ऐसे रह्यौ समाइ।
जैसे घन जल उदधि ते न्यारौ करयौ न जाइ॥

:o: :o: :o:

अंत—

धन जे पेम पंथ मरि गये। मरे न मरे अमर जगु भए।
कहत जान जामै ना नेहु। रज समान जांनहु सो देहु॥

॥ दोहा ॥

सत्रह सै द्वै पर भये हिम रित मै कहि जांन।
मुलप कथा यहु पैमु की सुनी सु करयौ बखांन॥

इति कथा कलंदर की संपूरन फा० सु० ८।

विषय—कलंदर किसी मसीत मे रहता था। एक दिन घूमता हुआ एक सौदागर की दूकान से निकला, जहाँ एक चेरी को देखकर मोहित हो गया। सौदागर से कहा कि वह चेरी दे दे और बदले मे उसका सर्वस्व ले ले। सौदागर सहमत न हुआ। उसने दस हजार मुद्राएँ माँगी। कलदर के पास भला उतनी मुद्राएँ कहाँ थी। अत वह हताश हो गया। वहाँ के बादशाह को जब पता चला कि चार रूपवती चेरियाँ सौदागर के पास विक्रयार्थ है तब उसको मनोवाछित मुद्राएँ देकर कलदर के सामने चेरियों को लेकर चला गया। कलंदर रोने लगा। लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई और खूब फटकारा। परन्तु उसका उस पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। रोता बिलखता वह मसीत मे चला गया। एक दिन एक दरवेश मसीत मे आया। कलंदर से

उसकी घनिष्ठता बढ़ गई; परंतु उसको दिन प्रतिदिन पीला एवं निर्बल होते देख दरवेश बड़ा चकित हुआ। उसने कारण पूछा तो कलंदर ने अपनी सारी कहानी सुना दी। दरवेश ने ने कहा, यदि उस जैसे बीस सहस्त्र मनुष्य भी प्रयत्न करें तो भी चेरी नहीं मिल सकती। कलंदर ने यद्यपि यह स्वीकार किया तथापि अपने प्रेम को न छोड़ सका। दरवेश से कहा कि वह प्रेम में शीघ्र ही प्राण तज देगा। उसकी मृत्यु प्रेम के रूप में उसके पास आ गई है, अतः प्रसन्नतापूर्वक वह उसका आलिंगन करेगा। उसने विनय के साथ दरवेश से अपने कलेजे के भीतर जवाहर होने की बात बात कही जिसको उसका मृत्यु के उपरांत वह कलेजे को चीरकर निकाल ले। पश्चात् जौहरियों को दिखाकर मूल्य आंक, पर बेचे नहीं। जवाहर केवल बादशाह को दस हजार मुद्राओं में बेचा जाय। यह कहते ही वह अचेत हो गया। दरवेश ने उसके कहने के अनुसार ही कार्य किया और कलेजे के भीतर से जवाहर निकाला। जौहरियों को दिखाकर मूल्य आंकता गया। बात बादशाह तक जा पहुँची और उसने दस हजार मुद्राएँ देकर जवाहर खरीद लिया। जवाहर देखकर बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ और उसको हाथ पर बांध लिया। उसी प्रसन्नता में उसने अपने पास उस चेरी को बुलाया जिससे कलंदर का प्रेम था। उसके साथ वह रति क्रीड़ा का आनंद लेना चाहता था, पर प्रेमालिंगन करते समय जवाहर चेरी से छू गया और तत्काल जल के रूप में उसकी छाती के ऊपर बिखर पड़ा। चेरी उचक कर दूर जा खड़ी हुई। बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने चेरी से भागने का कारण पूछा। चेरी ने कारण बताया तो और आश्चर्य हुआ। जब जवाहर का ध्यान आया तो देखा कि वह अपने स्थान पर नहीं है। अब तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। सभा में जाकर समस्त वृत्तांत कहा, पर वहाँ भी कोई समाधान न कर सका। अंत में वही दरवेश बुलाया गया जिससे जवाहर खरीदा गया था। दरवेश ने कलंदर की सारी कहानी बादशाह को सुनाई। बादशाह सुनकर बड़ा दुखी हुआ और कहा, "यदि कलंदर के प्रेम का पता चलता तो मैं उसको चेरी अवश्य दे देता।"

रचनाकाल

सत्रह सै द्वै पर भए हिम रित मै कहि जान।
सुलप कथा यहु प्रेम् की सुनी सु करचौ बषान॥

विशेष ज्ञातव्य--रचना काल संवत् १७०२ वि० है। लिपिकाल दिया नहीं। रचयिता का नाम जान कवि है। इनके लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६क. कथा निरमल की, रचयिता--जान कवि, स्थान--फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--३, आकार--८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--६६, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७०४ वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी, एकेडेमी, प्रयाग।

आदि--कथा निरमल की चौपाई॥

कहत जांन कवि जौलौं जीजै। तौलौं करता सुमिरन कीजै॥
पुनि हजरत को लीजै नाम। पूजै सबही मनसा कांम॥
सुलिप कथा बांधी कवि जान। पढ़त लिषत ना ह्वै अरसान॥
निरमल कौ सत सुनि मन भायौ। तातैं सबकौ जोरि सुनायौ॥
सील समान और कछु नांहि। सती अमर नितु है जगु मांहि॥
अपनै पिय सौं विमुष न भई। ते मूये हूं ना मरि गई॥

॥ दोहा ॥

जाके घट में होइ सतपति सौं हित ठहिराइ। सील बिना कवि जान कहि घरघर रूप बिकाइ॥

कहत जान इक हौ पतसाहि। वाकौ बहुत रूप की चाहि॥
रूपवंत तिय जो डिठ परिहैं। तासौ काहू भांति न टरिहैं॥
जासौं होइ जीय भांवरि। तापर दब करै नौछावरि॥
दमका बय जु कह्यौ न मानत। ताकौ वरियाई करि ग्रानत॥
जैसे कैसे छांडत नांहि। करता कौ डरु ना मन मांहि॥
काम ग्रंध जोवन मद मातो। कौलातो छिन होत न हातो॥

:o: :o: :o:

ग्रंत—

निरमल जबहि सुने ये बैन। ग्रंगरिनि सौ काढे जुग नैन॥
कह्यौ धाइ छत्रपति को देहि। जासौ नेहु बध्यौ सा लेहु॥
सत उपर सुनि दाई वारा। नैना कोट करौ बलिहारा॥
देखि छत्रपति ग्रधिक लजायौ। पछतावत ग्रपनं घर ग्रायौ॥
बहुरौं जबलौं जीयै साहि। परनारी की करो न चाहि॥
सत निरमल कौ राख्यौ वई। बात ग्रमर जग में यहु भई॥

॥ दोहा ॥

कथा कथी यहु जान कवि बाढत सुनि उछाह।
संन सत्रह सें चार है मास कहत हे माह॥

कथा निरमल की संपूर्न।

विषय—एक बादशाह बड़ा ही कामुक था। उसको ग्रनेक सुदरी स्त्रियो को देखने की नित्य ग्रभिलाषा रहा करती थी। जिस पर ग्रासक्त हो जाता उसको लेकर छोड़ता। यदि दाम देकर सफलता मिल जाती तो ग्रच्छा रहता, नहीं तो बलपूर्वक ले लेता। एक दिन महल के ऊपर खड़ा होकर चारों ग्रोर देख रहा था कि एक रूपवती स्त्री के ऊपर उसकी दृष्टि पड़ी। फिर क्या था, बादशाह बेचैन हो गया। धाई को बुलाया ग्रौर उस स्त्री के घर की ग्रोर भेजा। धाई उस स्त्री के घर पहुँची ग्रौर उसके नाम, धाम एवं जाति के विषय में पूछा। स्त्री ने कहा कि वह राजपूत जाति की है ग्रौर उसका नाम निरमल है। पति के लड़ाई में मर जाने के कारण वह विधवा हो गई है। घर में ग्रकेली रहती है। धाई ने सब बाते ग्रनुकूल समझकर उससे बादशाह की इच्छा प्रकट की। राजपूत स्त्री बहुत ही क्रुद्ध हुई ग्रौर धाई को घर से निकालने लगी। धाई भला ऐसा व्यवहार क्यों सहने लगी थी। उसने निरमल को बलपूर्वक पकड़ना चाहा पर यह जानकर कि वह छूते ही प्राण दे देगी, रुक गई। ग्रतः बादशाह के पास वापस गई ग्रौर उससे सब समाचार कहा। उसने बादशाह को रात के समय स्वयं जाने की सम्मति दी जिससे उस के रूप को देख कर निरमल मग्नता से वश में हो जाय। बादशाह सहमत हुग्रा। धाई के साथ ग्राधी रात को निरमल के घर गया। निरमल ने बादशाह को घर में घुसते देख विनयपूर्वक ग्राने का कारण पूछा। बादशाह ने उत्तर दिया कि उसकी ग्रांखों ने उसको घायल कर दिया है। निरमल ने यह सुनते ही उँगलियों से दोनों ग्रांखे निकाल कर बादशाह को देते हुए कहा, "जिन ग्रांखो से ग्रापका प्रेम बँध गया है, उन्हे लीजिए।" बादशाह यह देखकर लज्जित हो गया तथा पछताता हुग्रा घर की ग्रोर चला। तबसे उसने परस्त्रियों की चाहना छोड़ दी।

रचनाकाल

॥ दोहा ॥

कथा कथी यहु जान कवि बाढत सुनि उछाह॥
सन सत्रह सें चार है मास कहत है माह॥

:o: :o: :o:

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १७०४ है। लिपिकाल नहीं दिया।
रचयिता का नाम जान कवि है। इनके लिए देखिए "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६ब. कथा सतवती की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६७८ वि०, सन् १०३१ हिजरी, लिपिकाल—सं० १७७७, वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—कथा सतवंती की कवि जान कृत ॥

॥ चौपई ॥

परथम सुमिरों सिरजन हार। अलख अगोचर येकंकार ॥
अधम उधार अधार निरंजन। मलिन रसन सुमिरन तिहि मंजन ॥
व्याध असाध महा अपराध। विधि सुमिरन तें होत समाध ॥
जिह रसना सुमिरन रस रसी। प्रगट भयौ ज्यौं सविता ससी ॥
सुमिरन रसना रसना पीजै। तिह सरना षट रस कत दीजै ॥

॥ सोरठा ॥

हारिहार सम रारि पारावार अपार कह्यौ।
कैसे करै बिचार "जान कवि" इक रसन सौं ॥

॥ चौपई ॥

दूसर सुमिरौं नाव नबी कौ। सर्व रसूलनि कौ है टीकौ ॥
रच्यौ महंमद सबते आद रचना। सकल ताहि परसाद ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ सोरठ ॥

काटयौ धूरत सीस लै लटकायौ चौहटा।
ये फल बिसवावीस पाये झूठ कुसील ते ॥ २ ॥
सतवती मनसूर अमर भये या जगत मे।
जगमगात ससि सूर तैसें प्रगटे सील तें ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सोलह सै अठहंतरै सन सहंस इकतीस।
सतवंती सत जान कवि बांध्यो बिसवावीस ॥

इति कथा सतवंती की संपूरन भई संवत् १७७७ मिती फागन सुदी ६ सनीचर बार ॥

विषय—भारतवर्ष मे मनसूर नामका सौदागर था। उसकी स्त्री सतवती सती होने के अतिरिक्त सौंदर्यवती भी थी। एक दिन वह जब व्यापार के लिए परदेश गया तो सतवती उसके विरह मे व्याकुल रहने लगी। उस नगर मे एक धूर्त भी रहता था जिसने सतवंती के सौंदर्य के सबंध मे सुन रखा था। वह उसके सतीत्व को नष्ट करना चाहता था, पर बहुत प्रयत्न करने पर भी सफल न हो सका। एक दिन चार दूतियो, पनवारिन, कलवारिन, मालिन और जोगिन से इस सबध मे परामर्श किया। उनको बहुत सा धन देने का वचन देकर सतवती को बहकाने के लिए भेजा। चारो दूतियो ने बारी बारी से सतवती को सत से विचलित करना

चाहा, पर सफल न हो सकीं। उल्टे मार खाकर एवं अनेक प्रताड़नाएँ सहन कर चली आईं। इस पर धूर्त को अत्यत निराशा हुई। वह देश छोड़कर उन्मत्त की तरह फिरने लगा। फिरते-फिरते एक सेव के पास गया जो अनेक प्रकार के तत्र मत्र और जादू टोना जानता था। उसको प्रसन्न करके उसने रूप बदलने की विद्या सीखी। अतः अपना रूप मनसूर सौदागर का बनाकर सतवती के घर गया। कुटुब के लोगो ने मनसूर को आया देख बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। सतवती भी बहुत प्रसन्न हुई और पति से मिलने के लिए शृगार करने लगी। रात्रि के समय जब सेज पर गई तो पति के भावो और विचारो मे कुछ नवीनता एवं परिवर्तन पाया। उसको कुछ सदेह हुआ। कृत्रिम मसूर के बहुत प्रयत्न करने पर भी वह साथ सोने के लिए तैयार नही हुई। उसने उससे अपना सदेह प्रकट किया और कहा कि यदि वह वास्तविक मसूर है तो दो दिन धैर्य धारण कर ठहर जाय। बात तय हुई; परतु इसी बीच वास्तविक मंसूर घर चला आया। अपने घर दूसरे आदमी को देखकर बहुत चकित हुआ। कुटुब के लोग भी परेशान हुए। एक नया ही बखेडा उठ पड़ा। उसी समय कोई राजा उधर से निकला। लोगो ने दोनो मंसूरो को उसके अधिकार मे कर दिया और उससे उनके संबध में न्याय करने की प्रार्थना की। राजा ने गुप्त रीति से दोनो से अपने अपने विवाह की तिथियाँ पूछी। दोनो ने भिन्न भिन्न उत्तर दिया। पश्चात् सतवती से भी यही बात पूछी गई। उसका उत्तर वास्तविक मंसूर के उत्तर के साथ मिल गया। अतः राजा ने उसको छोड़ दिया और धूर्त मंसूर का सिर काट लेने का आदेश दिया।

रचनाकाल

सोलह से अठहंतरे सन सहंस इकतीस।
सतवंती सत जान कवि बांध्यौ विसवावीस ॥

विशेष ज्ञातव्य--रचना काल सवत् १६७८ और लिपिकाल सवत् १७७७ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६ग. कथा सीलवंती की, रचयिता--कवि जान, स्थान--फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--३, आकार--८$\frac{3}{4}$ x ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति--(प्रति पृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप)--१०७, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १६८४, वि०, लिपिकाल--स० १७७७, वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि--कथा सीलवंती की कवि जान की बीधी ॥

॥ चौपई ॥

आदि सुमिरि हौं येकंकार। अलष अगोचर अपरंपार ॥
कांन सुनत देषित भरि दिस्टि। पलमैं सकल रची यहु सिस्टि ॥
येक भांति सब जग तिन कीनै। को निरगुन काहूं गुन दीनौ ॥
जैसे रचे भये सब तैसे। कोऊ कैसे कोऊ कैसे ॥
कोऊ विरहनि काहू लीला। कोऊ सीलवंत कोऊ असीला ॥

॥ दोहा ॥

को असती कोऊ सती अलष रची संसार।
तैसी सोभा पाईये जैसो ह्वै व्यौहार ॥

॥ चौपई ॥

दूजे करिहों नब तक्कलम । सल्लाह अलहि वसल्लम ॥
जाकौ नाम महंमद कहिए । चरन सरन तें नरक न दहिए ॥
दीरघ रोग मिटत है पाप । नेंसकु किये महंमद जाप ॥
क्रिपा दिष्टि जौ करिहैं वोर । पल मै कटिहैं पाप करोर ॥
:o: :o: :o:

अंत--- ॥ दोहा ॥

जो चाहै पर तियर कूं पर चाहूं भरतार ।
सोई फिरि रासभ चढ़ै यहै रीति करतार ॥ ३ ॥
सोरह सं चौरासिये दोइ ह्यौस करि षेड़ु ।
भले बषानौं जान कवि सीलवंती कौ भेड़ु ॥

इति कथा सीलवंती की संपूरन भई संवत् ॥ १७७७ ॥ मिति फागुन सुदी १० सनीचर बार ॥

विषय---एक जौहरी की सीलवंती स्त्री थी । स्त्री सुशील होने के साथ-साथ रूपवती भी थी । अपने पति के अतिरिक्त वह अन्य पुरुष को देखती तक न थी । पति की प्रत्येक आज्ञा का पालन करती थी । एक दिन जौहरी सीलवती को अपने आने की अवधि बता कर परदेश चला गया । सीलवती अपने दिन पति विरह मे बिताने लगी । उसको एक-एक दिन युग के समान जान पड़ने लगा । बहुत दिन पश्चात् जब विरह अधिक बढ गया तो पति का मार्ग देखने के लिए उसने झरोखा खोला । नीचे एक व्याधे को हाथ मे बाज लिए हुए देखा । उसकी दृष्टि अपनी ओर पड़ती देख वह लजाकर भाग गई । व्याधा सीलवती को देखते ही मूर्च्छित हो गया । वह सीलवती पर अनुरक्त हो गया था । चैतन्य होने पर जैसे-तैसे घर गया । रात-दिन सीलवती के विरह में घुलने लगा और उसको पाने का प्रयत्न करने लगा । एक सुनारिन और एक रंगरेजिन को दूती बना कर भेजा, पर कोई सफलता न मिली । इसके विपरीत उन दोनो को मार खाकर आना पड़ा । इस पर उसे अत्यत निराशा हुई और क्रोधवश सीलवती के ऊपर लाछन लगाने का प्रयत्न करने लगा । उसने दो कीर लिए और उनको सस्कृत के दो वाक्य पढाए । एक का अर्थ था---"हाँ मै पत्रिका पर सीलवंती परदार को देखता हूँ" और दूसरे का अर्थ था---"हम कुछ कहते नही, पडित थोड़े मे बहुत समझ जाएँगे ।"

इधर जौहरी अवधि बीतने पर घर आया । कुटुब मे चारो ओर प्रसन्नता छा गई । अनुकूल अवसर समझ कर बाज वाले ने कीरो को लाकर उसे दिया । जौहरी कीरो को सस्कृत बोलते देख बहुत प्रसन्न हुआ । कुछ पडित जौहरी को परदेश से वापिस आया जान उससे मिलने गए । बातचीत करने के पश्चात जौहरी ने उनसे तोते की बाते सुनने के लिए कहा तथा अनुरोध किया कि उसको भी तोते की बाते बतलाई जायँ । पडित तोतो के पास गए और उनकी बाते सुन कर अवाक रह गए । जौहरी से सब बाते बतलाई । जौहरी को बडा क्रोध हुआ और सेवको को आदेश दिया कि वे सीलवती को जीवित गाड़ दे । सेवक सीलवती के पास गए और उसे जौहरी की आज्ञा सुनाई । सीलवती को अपने पर विश्वास था । उसने धैर्य से काम लिया और सेवको को कहा कि वे जौहरी के पास जाकर कहे कि सीलवती उनसे थोड़ी देर बात करना चाहती है । जौहरी सीलवती के पास गया । सीलवंती ने उससे बाजवाले के षडयंत्र का समस्त वृत्तात कहा । सुनारिन और रगरेजिन दूतियों के सबध मे भी बताया । जौहरी ने तुरत ही सुनारिन और रंगरेजिन को बुलवाया । पहिले तो वे अपने को निर्दोष बतलाने लगी, पर जब भय दिखाया तो सब बाते स्वीकार कर ली । इसके पश्चात वह राजा के पास गया और उसे बाजवाले की कुटिलता की कहानी सुनाई । राजा ने बाजवाले से इसके

विरुद्ध लगाए गए अभियोगों के संबंध में पूछा। उसने सीलवंती के ऊपर लगाए गए लांछन को सत्य बताया और कहा कि उसने स्वयं अपनी आँखों से वह घटना देखी थी। परंतु ईश्वर की ऐसी इच्छा कि ज्योंही उसके मुँह से "अपनी आँखों से वह घटना देखी थी" वाक्य निकला, त्योंही उसके हाथ से बाज छूट पड़ा जिसने उसकी दोनों आँखें तुरत निकाल ली। लोगों को बड़ा विस्मय हुआ और ईश्वरीय न्याय की दुहाई देते हुए सीलवती को सत्य ठहराने एवं बाजवाले को फाँसी पर लटकाने के लिए चिल्लाने लगे। फिर क्या था, राजा को भी वैसा ही करना पड़ा।

रचनाकाल

सोरह सै चौरासिये दोइ द्यौस करि षेवु।
भले बषान्यौ 'जान कवि' सीलवंती कौ भेवु॥

विशेष ज्ञातव्य——रचनाकाल संवत् १६८४ और लि० का० सं० १७७७ है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६म. कथा कुलवंती की, रचयिता——जान कवि, स्थान——फतेहपुर, ('राजस्थान जयपुर), कागज——देशी, पत्र——६, आकार——८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२२, परिमाण (अनुष्टुप्)——३२२, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य' लिपि——नागरी, रचनाकाल——सं० १६९३ वि०, लिपिकाल——सं० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान——हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि——कथा कुलवंती की कवि जान कृत॥

॥ चौपई ॥

परथम सुमिरन कीजै तास। जिन पलमैं जगु करयौ प्रकास॥
नाम लए उपजै सुषस गात। सुमिरन तें सुधरै सब बात॥
जो चितु सौं रटिहै करतार। भौ सागर कौ करिहैं पार॥
जिन सुमिरन सौं जीव लगायौ। बूडत मानहु बोहथ पायौ॥

:o: :o: :o:

चिरंजीव जगु साहिजहांनुं। अलहि रच्यौ आदिल सुलतांनु॥
छुवै न कोइ पराई नारि। कहत जांन कबि बिना बयारि॥
को ऊंचै चढि देषत नांहि। रबि ससि झांकि डरत चलि जांहि॥
को पर घर पर बर न करांहि। मेह बिना को काति नांहि॥
सलिता बिना न कोइ पुकारै। को काहू विनु अगिन न जारै॥
सब कै मिस बचन मुष मांहि। बिन सागर को षारौ नांहि॥

॥ दोहा ॥

बिनु फल को लटकै नहीं ना टूटत को प्रान।
बिनु दरिद्र मारत नहीं साहिजहां सुलितांन॥

॥ सोरठा ॥

कोट बरस की आव साहिजहां जग मै अचल।
अपुनें सहज सुभाव सप्तदीप चगलै लए॥

॥ चौपई ॥

कहत जान जो सुन्यौ सु आनौ। कुलवंती कौ सीलु बषानौ॥
कथा सील की सुनी सुहावै। जिहि चितु सत ताकौं अतिभावै॥

अंत— ॥ चौपई ॥

सहंस ग्रांन मो कों करतार। हों वासों करिहों बहुप्यार ॥
अंत बात को सुन्यो बिचार। धन सौदागर डारयो मार ॥
रहि न सकी करिकै यहु काज। गई इराक डरत बहु भाज ॥
तिह षिन मानस दये पठाइ। सौदागर धन लये बुलाइ ॥
आए तब बहु कीनो प्यार। दीने बकस पचास हजार ॥
कुलवंती लै बेटो कीनी। वाकै पियहि वजीरी दीनी ॥

॥ दोहा ॥

जो तिय सत छाडै नहीं पति राषै भरतार।
मन इंछया पूजै सकल ह्वै दयाल करतार ॥

॥ सोरठा ॥

संवत् हौ संसार सोरह सै जु तिरानुवों।
कीनो सत्त बिचार पूस मास कविजान यहु ॥

इति कथा कुलवंती की संपूरन भई १७७७ फसु १२।

विषय—गयासुद्दीन बादशाह का पुत्र कुतुबद्दीन भ्रष्ट चरित्र का था। जिस स्त्री पर अनुरक्त हो जाता उसके साथ अवश्य व्यभिचार करता। राज्य मे बिरली ही स्त्री उससे बच पाती। एक दिन आखेट के समय उसने एक सौदागर की स्त्री को देखा और मोहित हो गया। स्त्री कुलवंती थी। वह पुरुषो को देखना ही पाप समझती थी। कुतुबद्दीन जब घर गया तो जाल रचाकर सौदागर को घोडो के व्यवसाय के निमित्त इराक की ओर भेज दिया। पश्चात् अपनी दूतियो को उसकी स्त्री के पास भेजा। दूतियों ने बडे छल बल से कुलवती को शाहजादे के चंगुल मे फँसाना चाहा, पर वह किसी प्रकार तैयार न हुई। इतना ही नही, उसने उनकी बडी दुर्गति भी की। अत मे कुतुबद्दीन ने कुलवती को बलपूर्वक पकडने के लिए कई दूतियो को भेजा। यह देखकर कुलवती डरी तो अवश्य, पर उसने बडी बुद्धिमानी से काम लिया। दूतियो को यह कह कर वापस कर दिया कि वह कुलवती है, अत: शाहजादे से वह गुप्त रीति से मिलेगी, जिससे समाज मे उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे। शाहजादा प्रतिदिन अर्धरात्रि को उसके घर आ जाया करे। दूतियाँ प्रसन्न होकर शाहजादे के पास गई और उसे सब बाते कह सुनाई। फिर क्या था, शाहजादा अपनी मनोकामना की पूर्ति के निमित्त तैयारी करने लगा। इधर कुलवंती ने अपनी दासियों को सिखा पढ़ा कर शाहजादे के ज्यौनार का प्रबंध करने के लिए कहा। उसने उन्हे सावधान कर दिया कि जैसे ही शाहजादा उस पर बलात्कार करे, वे शीघ्र ही उसकी आवाज पर मूसलों से शाहजादे पर आक्रमण कर दें। अर्धरात्रि का समय हुआ और शाहजादा कुलवंती के पास आया। ज्यौनार और मद पीकर जब उन्मत्त हो गया तो कुलवंती की ओर वासना पूर्ति के निमित्त बढा। कुलवती चिल्लाई और दासियाँ सुनते ही मूसल लेकर शाहजादे के ऊपर झपटी। शाहजादे का प्राणान्त हो गया। कुलवती बादशाह के भय से पति को खोजती हुई इराक पहुँची। पति से समस्त वृत्तात कहा जिससे वह बहुत प्रसन्न हुआ। गयासुद्दीन बादशाह ने भी जब यह सुना तो पुत्र के मरने से प्रसन्न ही हुआ। उसका मृतक शरीर नगर में फिराया गया और बुरे कर्म करने के लिए प्रजा को चेतावनी दी। कुलवंती को वापस बुलाया गया और उसके पति को वजीर बनाया।

रचनाकाल

संवत हों संसार सोरह सै ज तिरानुवों।
कीनो सत्त बिचार पूस मास कवि जान यहु ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १६६३ वि० और लि० का० सं० १७७७ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र। प्रस्तुत रचना शाहजहाँ बादशाह के समय में रची गई।

संख्या १२६ब. कथा खिजर खाँ शाहजादे व देवल दे की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६४ वि०, लिपिकाल—सं० १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—कथा खिजर खां साहिजादे वो देवल दे की ॥

॥ चौपई ॥

सुमिरौं आदि जगत कौ करता। सकल इंछ भरता दुष हरता ॥
नांव लेत ऊपजै आनंद। ततछिन होंहि दूरि दुष दंद ॥
इंछा दाइक दीनदयाल। रंकहि पल में करत भुआल ॥
:o: :o: :o:
पातसाह कौ करौं बषान। साहिजहां सम साहि न आन ॥
दुनिया दीन दए करतार। दयावंत पुनि मरद मुछार ॥
जो बर करै निबर तिह करिहै। निरबर कै सिर पर कर धरिहै ॥
वै सुभाव मै मूछनि ताव। डरपै राजा राणा राव ॥
जौ चढिहै षेलन चौगान। डरिहै सबै जग के सुलितान ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

चिरंजीव नित ही रहौ साहिजहां सुलितान।
जौलौ रवि संसार मे तौलौ घट मे प्रान ॥

॥ चौपई ॥

सुनि सुनि लेहु कहै कवि जान। सुलिप कथा इक करौ बषान ॥
जोरत अतिमन बेद न होइ। थोरी कथा सुनै सब कोइ ॥
पठत रसन नाहिन अरसात। लिखत हाथ नाहिन अकुलात ॥
सुलिप कथा यह बाधौ ऐसी। नैननि मध तारिका जैसी ॥
कहा जु या मधि सूझत नांहि। सुष दुष बुधि सबहीं या मांही ॥
षिजरषान देवल कौ पेमु। बरनौ मनसा बाचा नेम ॥
दुष सुष षिजर षान कौ भयौ। ते फिरिकै करिहौं अब नयो ॥
:o: :o: :o:
हेंदू बहुत तुरक करि डारे। जे न भए ते पल में मारे ॥
:o: :o: :o:

अंत—

षिजर जीयौ जौलौं जग माहि। देवल ते पल बिछुरयौ नांहि ॥
संग रहै उजियारै मांहि। जैसे घट लागी परछांहि ॥
अंधियारै हूं इक ह्वै जांहि। ज्यो घट नाहि समतत छांहि ॥
ऐसे पेमु पीति मे पागे। नैकु न बिछुरे सूते जागे ॥
रहे एक संग ललना लाल। तब बिछुरे जब पुहच्यौ काल ॥

अमर न कोऊ या जग मांहि। बातें सदा अमर रहि जांहि ।।
काबि रचै करतार बिनानी। नौतन करिहै बात पुरानी ।।
जौ कर्त्ता कवि नाहि उपावति। बात पुरातन को प्रगटावत ।।

।। दोहा ।।

सोरह सै चौरानुवौ संमत हुतौ जहान।
मास पूस सुद दूज ही कथा कथी कवि जान।।

इति कथा खिजरखां साहिजादे वा देवल दे की संपूरन भई संवत् १७७८ मिती चैत सुदी ६ लिखतं फतेहचंद ताराचंद का डोंडवाना।

विषय—अलाउद्दीन बादशाह ने जब गुजरात पर चढ़ाई की तो राजा करन को हराकर उसका सारा परिवार अपने अधिकार में कर लिया। रानी कमलावती को, जो अधिक रूपवती थी, उसने अपनी सेवा में रख लिया। एक दिन कमलावती ने कहा कि उसकी पुत्री देवल दे है जिसको राजा करन भागते समय अपने साथ ले गया। वह उसको अत्यंत प्रिय है। यदि बादशाह उसको किसी प्रकार ले आवे तो वह अत्यंत प्रसन्न हो और उसका जीवन सुख से बीते। बादशाह ने इस कार्य के निमित्त अलिफ खाँ सरदार को गुजरात भेजा। राजा करन देवल दे का विवाह राजा सिंघ देव के साथ करना चाहता था। परंतु जैसे ही डोला सिंघ देव के पास भेजा गया, अलफ खाँ ने मार्ग में ही देवल दे को पकड़ लिया। वह उसको लेकर सीधा बादशाह के पास दिल्ली आया। बादशाह ने देवल को देखा तो उसकी इच्छा उससे अपने पुत्र खिजर का विवाह कर देने की हुई। रानी कमलावती और खिजर की माता भी सहमत हो गई। उस समय खिजर और देवल दोनों अवस्था में छोटे थे, अतः विवाह पीछे के लिए टाल दिया गया। परंतु जब दोनों तरुणावस्था में पहुँचे और दोनों का प्रेम बढ़ने लगा तो बादशाह के विचारों में परिवर्तन हो गया। उसने खिजर की माता से कहा कि देवल दे यद्यपि राजा की लड़की है, पर वह लूट का माल है। इसलिए वह दासी सदृश है। तुम्हारे भाई अलिफ खाँ की लड़की है, अतः उसके साथ खिजर का विवाह करना ठीक होगा जिससे दोनों कुटुंबों में अधिकाधिक प्रेम बढ़े। राय निश्चित हो गई और खिजर का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध अलिफ खाँ की पुत्री से कर दिया गया। परंतु खिजर खाँ देवल दे को न भूल सका। उधर खिजर की माता ने देवल दे को खिजर की आँखों से दूर कर दिया और सेवकों को कड़ी चेतावनी दे दी कि खिजर और देवल दे का कभी मिलन न होने पावे। परंतु होनहार बलवान कि खिजर खाँ देवल के विरह में दिन प्रतिदिन पीला पड़ने लगा। उसको देखकर उसके संबंधी और मित्रों को बड़ा दुख हुआ। वे सब मिलकर खिजर की माता के पास गए और उसे समझाया कि भाई की पुत्री के लिए पुत्र की आहुति देना मूर्खता है। खिजर की माता को बात जँच गई और बादशाह के परामर्श से अंत में खिजर का विवाह देवल दे से हो गया।

रचनाकाल

सोरह सै चौरानुवौ संमत हुतौ जहान।
मास पूस सुद दूज ही कथा कथी कवि जान।।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १६९४ वि० और लि० का० संवत् १७७८ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय में देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र। प्रस्तुत रचना शाहजहाँ बादशाह के समय में लिखी गई।

रचयिता के कथनानुसार मुसलमानी काल में बहुत से हिंदुओं को मुसलमान (तुरक) बनाया जाता था तथा जो नहीं बनते थे उन्हें मार दिया जाता था।

संख्या १२६४. कथा कनकावती की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६७५ वि०, लिपिकाल—सं० १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—कथा कनकावती की ।। चौपई ।।

सुमिरौ आदि अलष करतार। सिरज्यौ साच सकल संसार ।।
मानस रचन भयौ जब चाव। तब विरंचि यह करयौ पसाव ।।
सुर अछिर तौ आदि पठाए। उन्हनि आइ ए भेद उठाए ।।
काटि सघन बन नग्र बसाए। षोदे कूप सदन सौंराए ।।
ज्यौं साहिब कौ आवन जानैं। आइ फरास बिछौना आनैं ।।

।। दोहा ।।

तबहि राज मानस बयौ सुर अछिरा गए लाज ।।
आज दई की दया ते जग मैं रहे बिराज ।।

:o: :o: :o:

कहित जान कवि चित मै आनी। ढूढि बांधि हूं सुलप कहानी ।।
लिषत हाथ नाहिन अकुलावै। पढ़त नही रसना अरसावै ।।
ढूढि लही यहु कथा पुरानी। ज्यौ जानी तिहि भाति बषानी ।।
भाषा आनि जो मुष आई। ग्वारेरीहू मनसा धाई ।।
कीनौ बुधि परवान विचार। जहां षोरि सो लेहु सुधार ।।

अंत—

सोई ह्वै ज करैं अविनासी। कहा अब लछमी बिसासी ।।
जोई जगपति बहुत रिसायौ। महा बिरोध क्रोध करि धायौ ।।
सिंघपुरी सगरी संघारी। भरथनैर भारथ कियौ भारी ।।
गढ उड़ाइ कै डारयौ कंकट। भरथ सिंध दीने दोऊ संकट ।।
फिरि तिनहीं जगपतिधी दीनी। करि विवाह वाहीं को दीनी ।।

।। दोहा ।।

पोषन कौ जिय चाव है पोषन लाग्यौ ताहि ।
देषौ धौ कवि जान कहि कहा वई गति आहि ।।

।। दोहा ।।

सोलह सै पचहत्तरैं जहांगीर कै राज ।
तीन द्यौस मैं जान कहि यहु साज्यौ सब साज ।।

इति कथा कनकावती की संपूरन भई संवत् ।। १७७८ ।। मिती चैत सुदी दसषत फतेहचंद का चौ० ।

विषय—भरथनैर नगर के राजा भरथ सिंह के पुत्र का नाम परम रूप था। परमरूप का सिंघपुरी के राजा की पुत्री कनकावती से स्वप्न में प्रेम हो गया। कनकावती के लिए राजा भरथ ने सिंघपुरी के राजा से युद्ध किया, पर हार जाने के कारण वापस चला आया। परमरूप एक सन्यासी के साथ हो लिया। वेश भी सन्यासी का ही कर लिया। कनकावती को अपने ही पंडित द्वारा जब परमरूप के शील, सौंदर्य और ज्ञान के संबंध में पता चला तो वह उससे मिलने के लिए अधीर होने लगी। उसे डर था कि कहीं राजा जगपति बलपूर्वक उससे विवाह न कर ले। उसने अपने पंडित से परमरूप को लाने के लिए कहा। पंडित

भरथनैर गया, पर वहाँ राजकुमार को नही पाया । बहुत प्रयत्न करने पर एक गाँव मे संन्यासी के साथ राजकुमार मिला । बातचीत होने पर राजकुमार को कनकावती की बड़ी चिंता हुई । उसने सन्यासी से भेद छिपाने की विद्या (कच्छप निधि) प्राप्त की और बहुत से तंत्र मंत्र भी सीखे । कुछ दिन पश्चात् जब सन्यासी मर गया तो विद्या के बल से और पंडित की सहायता से कनकावती से मिला । कनकावती के इच्छानुसार पंडित ने दोनों का विवाह गुप्त रीति से कर दिया । बहुत दिनों के बाद परमरूप कनकावती को लेकर अपने देश चला आया । सिंघराय को इसका पता चला तो जगपति से सब वृत्तांत कह दिया । जगपति सबसे पहले उसी के ऊपर टूटा और उसको कैद कर लिया । पश्चात् भरथ सिंह को भी युद्ध में पराजित कर बंदी बना लिया । परमरूप और कनकावती ने नदी में कूद कर प्राण बचाए , परंतु नदी पार करने में दोनों का बिछोह हो गया । परमरूप जगराइ नामक राजा के हाथ आया जिसको कोई पुत्र न था । अतः उसने राजकुमार को अपने पास ही पुत्र रूप में रख लिया । कनकावती मल्लाहों के हाथ लगी, जिन्होंने उसे ले जाकर राजा जगपति को दे दिया । जगपति को भी कोई संतान न थी, अतः कनकावती को ही संतान के सदृश मानने लगा । कुछ दिन पश्चात् जगराइ के कहने पर जगपति ने कनकावती का विवाह परमरूप से कर दिया । दोनों प्रेमी फिर मिल गए और बड़े प्रसन्न हुए । परमरूप ने दहेज मांगते समय जगपति से भरथसिंह और सिंहराइ को छोड़ने के लिए कहा जिसे उसने स्वीकार कर लिया । पश्चात् सारा भेद प्रकट हो जाने पर जगराइ और जगपति पहले तो चकित हुए, पर पीछे भरथ सिंह और सिंहराइ से मिल कर बहुत प्रसन्न हुए ।

रचनाकाल

सोलह सै पचहत्तरे जहांगीर कै राज ।
तीन द्योस मै जान कहि यहु साज्यौ सब साज ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १६७५ और लि० का० संवत् १७७८ है । रचयिता जान कवि है । इनके संबंध में देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र । प्रस्तुत रचना जहाँगीर के समय में रची गई और तीन दिन में समाप्त हुई । रचयिता ने इसमें लिखा है कि कथा लिखने मे उसने ग्वालियर भाषा का व्यवहार किया है ।

संख्या १२६ ल. कथा कौतूहली की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८½ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १६७५ वि०, लिपिकाल—संवत्—१७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—कथा कौतूहली की चौपाई ।।

परथम निरगुन के गुन गाऊ । हौ नरिगुन गुन पार न पाऊ ।।
वाके गुन अनगन अनलेषं । मोसे निरगुन कहा परेषं ।।

:o: :o: :o:

मोसे अपराधी जग याही ते रचे बिरंचि छांडि दये बिरद दयाल पहिचानियें ।
सेवक कूं सेवाफल इंहाहू के भूप देत वाकूं कभूं जानै नाहि सोउ उहा जानिये ।
सुंदर सरूप गुनी कौन कौन मानै मन निगुन निरूप निरगुन ही कै मानिये ।
कहै कबिजान भरें भरिये सैसार गति अभरे भरन करता रहीं बषानिये ।।

कबित्त छप्पै

अछिर चारि बिचारि बिधि रच्यौ महंमद दुख हरन ।
ममो मुहर उहि मिहर भाग कागर जिहि सो घन ।

हहै हेत जल जनहि सींचियौ सोउ लहयौ बन ।
ममें मेदनी मनिस बैंन बियन कौ मंडन ।
दबं दुख न अपराध नाम ताकौ तिहुं षंडन ।।
कहिजान दुहू जग दूसरौ जन बिन और न को सरन ।।

।। चौपई ।।

पहिलें कथा कथी कंवलावती । पाछें कही पुरंदर रावति ।।
भाषि बहुरि बात कनकावति । अबहि सुनहु कौतूहल गावति ।।
उनमें छंद दोइ कै तीन । यामें बहु समझौ परबीन ।।
कौतूहल उपज्यौ चित जान । कौतूहल कौ कियौ बषान ।।
जहा जुरं सो चित सौ जोरि । लेहु संवारि जहां हुं षोरि ।।

:o: :o: :o:

अंत--

।। भुजंगी छंद ।।

करै दान राजा कियौ जग अजाची ।
उदीची व दछित औ प्रतीची व प्राची ।
रह्यौ नांहि जाचिग सुनी रीति सांची ।
सुभ्राई तमासे सुकेसी घ्रिताची ।।

।। दोहा ।।

सोलह सै पचहतरै कथा कथी यहु जान ।
फूटे टूटे जोरि यहु जुरतें राषहु कांन ।।

इति कथा कौतूहली की संपूरन भई समतु १७७८ चैत सुदी १० ।। मंगलवार दसषत फतेहचंद ताराचंद कै कासवई ।। १८ ।। चौपई ।। ७२ ।। ।। दोहा ।। ८१ ।। छंद ।। ६० ।। कवित्त ।। २ ।। सोरठा ।। ६ ।। सारा ही ।। २२८ ।। (२३६ जोड़ होता है) ।

विषय--चन्द्रसेन हुलासपुरी नगरी का राजा था । उसकी पटरानी का नाम रतनजोत था जिससे उसको सरवंगी नाम का पुत्र हुआ । सरवंगी युवावस्था को प्राप्त होने के साथ-साथ चौदह विद्याओं में भी निपुण हुआ । शील सौंदर्य में तो वह अद्वितीय था । एक दिन जब आखेट करने के लिए गया तो दो बनजारों से उसने राजकुमारी कौतूहल दे के रूप सौंदर्य के संबंध में सुना । राजकुमारी के पिता का नाम जगरूप और माता का नाम रूप सम्मिट था । उसकी प्रतिज्ञा थी कि वह न तो विवाह करेगी और न किसी अन्य पुरुष का मुँह देखेगी । यदि कोई अन्य पुरुष उसकी दृष्टि में पड़ेगा तो उसके लिए मृत्यु का दंड होगा । होनहार बलवान कि राजकुमार यह जानकर भी उसमें प्रेम करने लगा । वह राजकुमारी को पाने के लिए उसके देश को चल पड़ा और उसके उपवन के माली के यहाँ पुत्र रूप में रहने लगा । माली और मालिन की सहायता से उसने कौतूहल दे को देख लिया । तथा बनजारों से जैसा सुना था वैसा ही उसको पाया । अब उसे विरह सताने लगा । बिना कौतूहल दे के उसको सारा संसार असार जान पड़ने लगा ।

एक दिन जब वह राग अलाप रहा था तो प्रधान मंत्री के पुत्र ने सुन लिया । उसके द्वारा नगर भर में उसकी चरचा होने लगी । राजा जगरूप भी मंत्रियों सहित उसके पास गाना सुनने गया । उसके साथ चौदह विद्याओं के संबंध में भी बातचीत की । उसका विचार उसको मंत्री बनाने का हुआ, पर शिर पर केश न होने के कारण ऐसा न हो सका । अंत में कौतूहल दे को भी यह बात विदित हुई । जब उपवन में गई तो गाना सुनाने के लिए राजकुमार सरवंगी को बुलाया । राजकुमार जब माली के भेष में राजकुमारी के सामने उपस्थित हुआ तो राजकुमारी उसके सौंदर्य को देखते ही मोहित हो गई । पीछे गाना सुना तो तन मन की सुध भी

जाती रही। इतने में संध्या हो गई और राजकुमारी को राजमहल में चला जाना पड़ा। इस प्रकार दोनो का प्रेम संबध हो जाता है। राजकुमारी मास मे एक दिन उपवन मे जा पाती थी। अतः उपवन मे जाने के लिए उस दिन की प्रतीक्षा करने लगी। परंतु दैव सयोग से वह वर्ष भर तक उपवन मे न जा सकी। दूसरे दिन पश्चिम देश के राजा के मंत्री ने अपने राजा से कौतूहल दे का विवाह करने के लिए महाराज जगरूप से कहा। महाराज जगरूप ने कौतूहल दे की प्रतिज्ञा की बात कहकर मत्री को वापस कर दिया। इस पर पश्चिम देश का राजा बहुत क्रुद्ध हुआ और जगरूप के ऊपर आक्रमण करने के लिए समय की प्रतीक्षा करने लगा। इतने में एक वर्ष और बीत जाता है और राजकुमारी अपनी धाय की सहायता से राजकुमार सरवंगी से मिल लेती है। राजकुमार अपना पूरा परिचय देता है जिसे सुनकर कौतूहल दे उसके हाथों मे अपने को समर्पित कर देती है। दोनो रात दिन साथ-साथ रहने लगते है। पश्चात् पश्चिम देश के राजा का आक्रमण होता है जिसमे राजकुमार सरवंगी के बाहुबल से राजा जगरूप की विजय होती है। युद्ध मे राजा सरवगी के केशो को भी देख लेता है जिससे उसके राजकुमार होने का उसको विश्वास होता है। पश्चात् राजकुमार सरवंगी अपना सच्चा परिचय दे देता है। राजा बहुत प्रसन्न होता है और कौतूहल दे का विवाह उससे कर देता है। कुछ दिन पश्चात् राजकुमार कौतूहल दे को लेकर अपने देश चला जाता है और माता पिता को प्रसन्न करता हुआ आनदपूर्वक रहने लगता है।

रचनाकाल

सोलह सै पचहतरै कथा कथी यहु जान।
फूटे टूटे जोरि यहु जुरतें राषहु कांन॥

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल सवत् १६७५ और लि० का० संवत् १७७८ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विशेष वृत्त के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र। प्रस्तुत रचना मे रचयिता ने कथाओ के सबध मे कहा कि पहले उसने "कवलावती" की कथा कही, पीछे "पुरदरावती" की और तदुपरात "कनकावती" लिखी। इन सबके पीछे "कौतूहल दे" का वर्णन किया। पूर्वोक्त कथाओ का वर्णन करने मे दो तीन ही छंद प्रयुक्त हुए है जहां "कौतूहल दे" मे अनेक छंद व्यवहृत हुए है :--

पहिले कथा कथी कंवलावती। पाछें कही पुरंदर रावति॥
भाषी बहुत बात कनकावति। अबहि सुमहु कौतूहल गावति॥
उनमें छद दोइ कैं तीन। यामैं बहु समझो परबीन॥

इसमे सदेह नही कि प्रस्तुत रचना मे बहुत से छदो का प्रयोग हुआ है। छदो के नाम नीचे दिए जाते है --

१--दोहा, २--चोपाई, ३--सोरठा, ४--छप्पय, ५--सवैया, ६--कवित्त, ७--भुजंगप्रयात, ८--रिल (छ वर्णो का), ९--गैनद छद, १०--त्रिटक, ११--धारी, १२--विजूमाला, १३--झमका (पाँच वर्णो का), १४--भुजगी, १५--नराच छद, १६--पवानी छद, १७--कवला, १८--प री, १९--त्रिभगी, २०--पवगम, २१--गौराद, २२--चंदाण, २३--ताणी, २४--बिजोहू, २५--रामा, २६--रोडक, २७--धवल, २८--अरिल, २९--मरिल, ३०--गधण, ३१--पजा, ३२--चावर, ३३--सीमा, ३४--लीला सरिषा, ३४--चंदामाल, ३५--पाइक, ३७--गीतक ३८--बधा।

संख्या १७६ब. कथा सुभटराइ की, रचयिता--जान कवि, स्थान--फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--६, आकार--८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२४, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२४, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७२० वि०, लिपिकाल--सं० १७८५, वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—कथा सुभटराइ की ॥ दोहा ॥

प्रथम करता सुमिरिये जिन सिरज्यौ संसार ।
नाम लये कवि जान कहि लहिये चैन अपार ॥ १ ॥
दूजे हित सौं लीजिए नबी महंमद नांम ।
उनतें नीकें सुधरिहैं सब उम्मत के काम ॥ २ ॥
:o: :o: :o:
त्रीतीय बषानौ छत्रपति औरंगजेब मुछार ।
जंबू दीप सब बस कियौ कर गहिकें करवार ॥
औरंगसाहि महाबली है दल बल उद्दाम ।
कोऊ नाहिन जितिहै इनसौं करि संग्राम ॥ ६ ॥
बड़ी बड़ी फौजें रहैं गनत न आवे ग्यान ।
औरंग साहि मुछार कौ प्रगट्यौ सुजस जहांन ॥ ७ ॥
सुभट मेरा चितु जांन कहि कबहू ना थहरात ।
गीदर पुनि कापुरुष नर ज्यौं चलदल कौ पात ॥ ८ ॥
कथा एक भाई बहुत उपजाई चितु चाइ ।
यामै जांनहु जांन कहि मन कलोल सुषदाइ ॥ ६ ॥
:o: :o: :o:

अंत— सुभटराइ अबहै कहां काननि सुनियत बात ।
अचल राज करतार कौ और न को ठहरात ॥ ८ ॥
सन सहंस चौहत्तरै कथा करी यह जांन ।
सत्रह सै अरु बीस पुनि संबत हुतौ जहांन ॥ ६ ॥
माह रबी उल अव्वल हौ अरु कातक कौ मास ।
सुभटराइ की कथा तब पूर्न लयौ प्रकास ॥

इति कथा सुभटराइ की संपूरन भई दसषत फतेहचंद ताराचंद की डीडवानिया फतेहपुर मध्ये क्यामषां राजे लिषा संबत् सतरह सै १७८५ मिति चैत बदी १ बुधवार श्री दोहा ६० चौपई ४० चार तुक की २०० ॥

विषय—सूर नगर का राजा सूरजमल बड़ा प्रतापी था। संतति के अतिरिक्त उसको कोई दुख न था। चार रानियाँ थीं, पर किसी को भी कोई संतान न थी। भगवत्-कृपा से सिद्ध की सिद्धि से चारो रानियो के क्रमपूर्वक एक पुत्र और तीन पुत्रियाँ हुई। पुत्र का नाम सुभटराई रखा गया। राजा को परम आनंद हुआ और सारे राज्य में प्रसन्नता छा गई। राजकुमार जब युवावस्था में पहुँचा तब रूप, शील और बल के अतिरिक्त ज्ञान में भी पारंगत हुआ। माता-पिता ने विवाह की बात चलाई तो कहा जब तक राजपुत्रियो को न देख लिया जाय, तब तक विवाह न किया जाय। परन्तु ऐसी प्रथा न होने के कारण विवाह रुक गया। मंत्रियों के चार पुत्र भी उसके साथी थे जिन्होंने प्रतिज्ञा की कि राजकुमार के विवाह न होने तक वे भी अविवाहित रहेंगे। दिन प्रतिदिन विवाह की आशा मलिन होते देख राजकुमार और उसके साथियों ने आठों दिशाओं में भ्रमण करने का निश्चय किया। इससे उन्हें अपनी आशा पूरी होने की संभावना जान पड़ी। तदनुसार साथ में बड़ी सेना और आवश्यक वस्तुओं को लेकर तथा माता-पिताओं की आज्ञा से दिशा भ्रमण को निकल पड़े। जब उत्तर दिशा के राजा के यहाँ गए तब संयोगवश ऐसी घटना घटी कि वहाँ की राजकुमारी को वाटिका से व्याघ्र उठाकर ले चला। राजकुमार को पता चला तो उसने व्याघ्र मारकर राजकुमारी

को छुड़ा लिया। दोनों एक दूसरे को देखकर मुग्ध हो गए। राजा भी बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने राजकुमारी का विवाह राजकुमार से कर दिया तथा अपने मंत्रियों की कन्याओं से राजकुमार के साथियों का विवाह भी कर दिया। इस प्रकार राजकुमार और उसके साथियों की प्रतिज्ञा पूरी हुई। इन लोगों ने गर्भाधान हो जाने पर स्त्रियों को घर भेज दिया और दिशा भ्रमण के लिए आगे बढ़े। पश्चिम दिशा के राजा के यहाँ पहुंचे तो दूसरी घटना घटी। एक हाथी ने राजकुमारी को स्नान करते समय सूंड़ में पकड़ कर पीठ पर रख लिया और वन की ओर चल पड़ा। राजकुमार को पता लगा तो हाथी मारकर राजकुमारी का प्राण बचा लिया। इस घटना में दोनों ने एक दूसरे को देख लिया और प्रेम के वशीभूत हो गए। राजा ने राजकुमार का बड़ा सम्मान किया और राजकुमारी को उसे ही विवाह दिया। साथ ही मंत्रियों की पुत्रियों का विवाह उसके साथियों से कर दिया। इन पत्नियों को भी गर्भाधान हो जाने पर राजकुमार और मंत्री पुत्रों ने घर भेज दिया तथा आगे यात्रा पर चल दिए। दक्षिण दिशा के राजा के यहाँ गए तो उसने इनका बड़ा सम्मान किया। परन्तु यहाँ भी एक रात आश्चर्यजनक घटना घट गई। पाँच मुँह और दस हाथ वाला एक असुर राजकुमारी को पकड कर आकाश मार्ग की ओर ले उड़ा। राजा और बड़े-बड़े शूर वीर देखते ही रह गए, पर किसी से भी कुछ न बन पड़ा। राजकुमार सुभटराई से न रहा गया। वह राजकुमारी का असुर से उद्धार करने के लिए चल पडा। एक सिद्ध पुरुष से उसकी भेंट हो गई जिसने प्रसन्न होकर उसको कुछ जड़ियाँ एवं अंजन दिए। इनके चमत्कार से उसको सर्वत्र जाने एवं अदृश्य होने की शक्तियाँ प्राप्त हुईं। इससे उसने उपर्युक्त असुर का पता पा लिया और उसको मार दिया। राजकुमारी को लेकर वह दक्षिण दिशा के राजा के पास पहुँचा। राजा और रानी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने पुत्री का विवाह राजकुमार से ही कर दिया। यह राजकुमारी पूर्व विवाहित राजकुमारियों से अधिक रूपवती थी। राजकुमार सुभटराई भी इससे बहुत प्रसन्न हुआ। इस विवाह के उपरांत मंत्रीपुत्रों का भी विवाह वहाँ के मंत्रियों की पुत्रियों से कर दिया गया। पश्चात् घर का पत्र पाने पर राजकुमार स्त्री और साथियों सहित देश की ओर चल दिया। अंतिम दिशा जो बच गई थी इस बार उसकी भी यात्रा पूरी कर दी गई।

रचनाकाल

सन सहंस चौहत्तरे कथा करी यह जांन।
सत्रह सै अरु बीस पुनि संवत हुतौ जहांन॥ ६॥
माह रबी उल अव्वल हो अरु कातक कौ मास।
सुभटराइ की कथा तब पूर्न लयौ प्रकास॥

विशेष ज्ञातव्य——रचनाकाल संवत् १७२०, सन् १०७४ फसली है। लि० का० संवत् १७८५ दिया है। रचयिता जान कवि है। प्रस्तुत रचना औरंगजेब के समय में रची गई। विशेष के लिए देखिए, "रत्नावती" का विवरण पत्र। प्रस्तुत रचना की पुष्पिका महत्वपूर्ण है। इसमें फतेहपुर और क्याम खाँ शब्दों का प्रयोग है। फतेहपुर रचयिता का निवास स्थान था और क्याम खाँ उसके वंश का नाम था।

संख्या १२६श. बुद्धि सागर या मधुकर मालती की कथा, रचयिता——जान कवि, स्थान——फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज——देशी, पत्र——१३, आकार——८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति——(प्रतिपृष्ठ)——२१, परिमाण——(अनुष्टुप्)——४०६, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——स० १६६१ वि०, लिपिकाल——स० १७७८, वि०, प्राप्तिस्थान——हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—ग्रंथ बुधिसागर कबि जान कृत चौपई ॥ १ ॥
आदि अगोचर सुमिरिहौं सिस्ट करन करतार ।
एक सब्द ही में करचा सबु कुछ सुरग पतार ॥
मानस कंचन कसन का करयो कसौटी नेह ।
बारह बांनी होत है कसै पेम सौ देह ॥ २ ॥
दुगम अगम दुष की बिथा सुगम करत है ताहि ।
करता दीनदयाल है सब कोउ पूरत चाहि ॥ ३ ॥
अब बरनौ कबि जान कहि मधुकर मालति पीति ।
मिलि बिछुरन दुष सुष सकल प्रगटावत हौ रीति ॥
इक मधुकर पुनि मालती दुहुवनि साचौ नेह ।
देह देह सुप ना कह्यौ · सहे सकल दुषु देह ॥ ६ ॥

॥ पवंगम ॥

सोई सांची पीति जु हे दहूं वोर की ।
पीत न दीप पतंग तग न चंद चकोर की ॥
नीर मीन नही पीति पीति सारस सरस ।
ना जीवत बिन देषे पीतम कौ बरस ॥

:o: :o: :o:

अंत—
भार भयौ हित सौ पति ताहि । इन दहुंवनि कौ कीनौ ब्याह ।
किरपा बहुत दहुनि सो कीनी । अमित लच्छिमी इनकौ दीनी ॥
भली भांति सो मान बढाइ । अवध मांहि दीने पहुँचाइ ॥
माता के पग परसे जाइ । अति फूली तम मैं न समाइ ॥
निस बासुर ये करहिं कलोल । गहरी पीति भई रंग चोल ॥
जौलौ जीये या जग माहि । मधुकर मालति बिछुरे नाहिं ॥

॥ दोहरा ॥

सोरह सै इक्यानुवौ ही फागन बदि एक ।
जांन कबी कीनी कथा करिकै ग्यांन विवेक ॥

इति मधुकर मालती की कथा संपूरन भई कबिजान की बांधी संवत् १७७८ मिती पोह सुदी ३ अदीतवार वसषत फतहचंद ॥

विषय—अयोध्या में रतन नाम का सौदागर था । उसके पुत्र का नाम मधुकर था । मधुकर रूप और शील के अतिरिक्त गुणवान और विद्या प्रेमी था । जब वह पूर्ण युवा हो गया तब एक दिन उसकी दृष्टि पाठशाला में आती हुई कुछ लड़कियों पर पड़ी । उनमें मालती नाम की लड़की सबसे अधिक रूपवती थी, जिस पर वह अनुरक्त हो गया । मालती की भी दृष्टि मधुकर पर पड़ी और वह भी उससे प्रेम करने लगी । मधुकर ने घर पर की पढाई छोड़ दी और मालती की ही पाठशालाल में पढने लगा । दोनों का दिन प्रतिदिन प्रेम बढने लगा । मालती एक सौदागर की चेरी थी । उसने जब उसको पूर्ण युवती हुई जाना तो पाठशाला की पढाई छुड़वा दी और उसके गुरु से घर पर ही उसे पढाने के निमित्त एक शिष्य भेजने की प्रार्थना की । पता पाने पर मधुकर को बड़ा दुख हुआ । उसको मालती के बिना सारा संसार नीरस लगने लगा । परंतु गुरु से सब बात प्रकट करने पर वही मालती को पढाने के लिए नियुक्त हुआ । मालती को भी बडी प्रसन्नता हुई और फिर दोनों आनंद से रहने लगे । कुछ समय पश्चात् मधुकर के माता पिता को इसका पता चल गया । पिता ने दासी को मोल ले लेना चाहा, पर माता ने दासी से पुत्र का विवाह करना ठीक नही समझा । अंत में निश्चय हुआ कि मधुकर को व्यापार

के बहाने कुछ समय के लिए परदेश ले जाया जाय। वहाँ उसका मन दूसरी ओर जाएगा और मालती को भूल जाएगा। मधुकर मालती को जब इसका पता चला तब दोनों को अपार दुख हुआ। दोनों ने प्रतिज्ञा की कि प्राण रहते वे अपने प्रेम का पालन करेंगे और किसी भी दशा में अन्यत्र विवाह न करेंगे। मधुकर परदेश चला गया। इधर मालती को विलाइत का वजीर मोल लेकर ले गया। चलते समय मालती ने गुरु से उसका पता मधुकर को देने के लिए कहा। मधुकर जब परदेश में भ्रमण कर रहा था तब उसका पिता मर गया। घर आया तो मालती के चले जाने से बहुत निराश हुआ। गुरु से पता पाकर वह भी माता की आज्ञा लेकर मालती के पास पहुँचा। परंतु मालती से किसी भी प्रकार भेंट न हो सकी। वजीर ने मालती को कई प्रकार के प्रलोभन देकर अपने प्रेम में फँसाना चाहा, पर वह अपने सत्त से नहीं डिगी। पीछे बादशाह को उसके संबंध में पता लगा तो वजीर से उसे ले लिया, पर अंत में उसको भी निराश होना पड़ा। उसने उसको फाँसी पर लटकाने की आज्ञा दे दी। शाहजादी के देख लेने पर फाँसी रुक गई। वह उसको अपने साथ ससुराल ले गई, पर वहाँ भी उसको कोई सुख न मिला। शाहजादी का पति उसको चाहने लगा। उसने मालती को बहुत कुछ अपने प्रेम में लाना चाहा पर वह नहीं मानी। अंत में उसने उसको डुबाने की आज्ञा दी। सेवक उसको संदूक में बंद कर समुद्र में डुबा आए। मधुकर जो मालती के पीछे-पीछे फिर रहा था यह देखकर अत्यंत दुखी हुआ। मालती के उद्धार का जब कोई उपाय न सूझा तो अपने पास के रत्न समुद्र में डाल दिए और समुद्र में कूद पड़ा। दूर से एक मछवाहा देख रहा था उसने उसको बचा लिया। इतने में मालती को डुबाने वाले सेवक आ पहुँचे और मालती को निकाल कर उसे अरमनी व्यापारी के हाथ बेंच दिया। मधुकर बहुत पछताया कि क्यों उसने रत्न समुद्र में डाल दिए। यदि वे उसके पास होते तो वही सेवकों को मूल्य देकर मालती को खरीद लेता। विवश हो अरमनी की नाव में वह भी मालती के संग हो गया। अरमनी मालती को चाहने लगा था, पर मालती अपने को बचाती रही। नाव में मधुकर की बातचीत मालती से हो जाती थी। उसने मालती को बावली हो जाने के लिए कहा। मालती ने वैसा ही किया। अरमनी ने उसको अपने बादशाह के हाथ बेंच दिया। पर उस बादशाह को भी निराश होना पड़ा। उसने उसको अरमनी को वापस देना चाहा। अरमनी के बजाय मधुकर ही मालती को लेने गया। बादशाह ने उसको मूल्य वापस कर मालती को ले जाने के लिए कहा। परंतु मधुकर के पास मूल्य कहाँ था। एक मछवाहा उसका मित्र था जो नित्य उसको मछली दे जाता था। एक दिन संयोग से एक मछली के पेट से उसको समुद्र में फेंके हुए अपने ही रत्न मिल गए। फिर क्या था, वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और बादशाह का मूल्य वापस कर तथा मालती को लेकर अपने देश की ओर चल पड़ा। दुर्भाग्य से फिर दोनों समुद्र में बिछुड़ गए। मालती अप्सराओं के पास और मधुकर बगदाद पहुँचा। अप्सराओं की रानी का पुत्र मालती पर अनुरक्त हो गया, पर उससे भी मालती ने अपने को बचाया। अंत में रानी ने उसके इच्छानुसार उसको अपने देश जाने में सहायता दी। बगदाद में बादशाह की उदारता के फलस्वरूप मधुकर और मालती मिल गए।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १६९१ वि० और लिपिकाल संवत् १७७८ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। इनके लिए देखिए, 'रतनावली' का विवरण पत्र।

संख्या १२६ष. चेतन नामा, सिष ग्रंथ, ग्रंथ सुधा सिष, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८¾ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—॥ दोहा ॥ **चेतननामा कवि जान कृत ॥**

पहिले अलह रसूल कौ सुमिरत है कवि जान।
चेतन नामा कहत पुनि सुनियहु दैं दैं कान ॥ १ ॥

॥ फारसीमति छंद ॥

प्रथम पन खेल मैं षोयौ। तरुनपन केल मैं षोयौ॥
भए कच बिधपन धौरे। अजौं कछु चेत रे बौरे॥ २॥
मनुष कौ जनम तैं पायौ। न करता नाम मन लायौ॥
सुतौ तौ करिनो कौरे। अजौं कछु चेत रे बौरे॥
:o: :o: :o:
करहु तप जाप उमाहा। अजौं कछु चेत रे हाहा॥
चेतन नामा संपूरन॥

॥ सिष ग्रंथ छंद फारसी॥

सुमिर निस दिन निरंजन कौं। कहा तुम जपहु अंजन कौ॥
कलषु लष कोट भंजन रे। निरंजन रे निरंजन रे॥ २॥
पंषारो पाग मैं पागैं। सुनी ब्रत नांहि उडि भागैं॥
त्यौंही अंजन भिदे बौरे। निरंजन रे निरंजन रे॥ ३॥
:o: :o: :o:
मुगध सुनि नांहि मन आनैं। न सिष मानैं बुरौ मानैं॥
न उनकौ मिटत है भ्रम रे। कितो को करत जौ स्रम रे॥ २३॥
॥ इति सिष ग्रंथ समाप्त सपूरन भयौ॥

अंत— ॥ ग्रंथ सुधासिष :: छंद फारसी मति॥
दाताल अलह रहमान रे। जिन दयौ है तियदान रे॥
बिसरहु न रैन बिहान रे। यौ देत सिष कवि जान रे॥
सुमिरन करहु करतार रे। तजि सकल ही जंजार रे॥ २॥
पोषन भरन जगदीस रे। ताकहुं नवावहु सीस रे॥
करि सेब देव असीस रे। सुष लहौ बिसवाबीस रे॥
सुमिरन करहु करतार रे। तजि सकल ही जंजार रे॥ ३॥
:o: :o: :o:
मन मुकर कौं राषहु बिमल। करतार सेवा मैं अचल॥
बिसरहु न कबहूं एक पल। वामैं तकहु मन इंछ फल॥
सुमिरन करहु करतार रे। तजि सकल ही जंजार रे॥ १३॥
॥ इति सुधा सिष संपूरन॥

॥ चेतननामा॥

विषय—सासारिक माया मोह तजकर भगवद् भजन करने का उपदेश दिया गया है।

॥ सिष ग्रंथ॥

दश अवतारों को छोड़ कर निरजन का जाप करने का उपदेश है।

॥ ग्रंथ सुधासिष॥

सांसारिक जंजालो से अपने को दूरकर भगवद् नाम जपने का उपदेश किया गया है। इसमें मक्का मदीने जाने का भी उपदेश है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल और लिपिकाल नही दिए है। रचयिता का नाम जान है। इनके सबध में देखिए 'रतनावती' का विवरण पत्र।

प्रस्तुत विवरण मे तीन छोटी रचनाएं है, जिनके नाम है चेतन नामा, सिखग्रथ और ग्रंथ सुधासिष।

रचयिता हिंदू संस्कृति और ज्ञान से जितना परिचित है उसको देखकर आश्चर्य होता है। परंतु खेद है कि कहा कहीं पर वह साम्प्रदायिक बातो को न छोड़ सका। जहाँ दश अवतारों को ईश्वर न समझने का वर्णन किया है, वहाँ मक्का मदीना जाने का उपदेश है। इसका कोई कारण नहीं बताया कि निरजन का नाम किस प्रकार मक्का मदीने जाकर ही भजा जा सकता है। जबकि वह सर्वव्यापक है। राम अयोध्या में नहीं है और कृष्ण मथुरा में नहीं है तो मक्का मदीने मे कौन है इसका समाधान नहीं किया गया है :—

"निरंजन एक कौ धावहु। कहा चौबीस दस गावहु।
:o: :o: :o:
अयोध्या राम कहिए ना। सु मथुरा स्यांम लहिए ना॥
:o: :o: :o:
भए बेकाल बसि सिगरे। तिनहि मानहु जनम धिग रे॥"

—सिषग्रंथ

"करता वए जुग पाइ रे। मकं मदीनं जाइ रे॥ सेवा करहु चित लाइ रे॥"

—सुधासिष

संख्या १२६स. बुधिदायक, बुधिदीप, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१, पूर्ण, रूप, प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—॥ अथ बुधिदाइक। मोदक छंद॥

जिहि नाम लए सब काज सरे। जप तैं जड काहे को ढील करें॥
धन ते जु निरजन नाम ररें। पल मैं अघ कोटक होहि परें॥
सुष कौ भरता दुष कौ हरता। जपि रे जपि रे जपि रे करता॥ २॥
पहिले पन षेलनि माहि गयौ। कबहूं करतार न नाम लयौ॥
तब तौ नही ग्यान सरीर भयौ। तिह कारन तोकौ न दोष दयौ॥
सुष कौ भरता दुष कौ हरता। जपि रे जपि रे जपि रे करता॥ ३॥
:o: :o: :o:
जु निरंजन ओर कौं धावत रे। बड़डी पदई सोई पावत रे॥
करतौं बंदगी अरसावत रे। कहि जान सुतौ पछितावत रे॥
सुष कौ भरता दुष कौ हरता। जपि रे जपि रे जपि रे करता॥

ग्रंथ बुधिदायक संपूरन।

अंत—ग्रंथ बुधि दीप॥ चौपई॥

करता नाव न कबहूं लेत। नेकु न चेतत बडौ अचेत॥
यौंही जनम जुवा सौं हरिहै। दीप हाथि कत कूवा परिहै॥ २॥
सोई करत जु जिय कौ भावै। जामैं मुकति न तिह मग धावै॥
निगम पुरान न कानन धरिहै। दीप हाथ कत कूवा परिहै॥
:o: :o: :o:
माया अगिन चहूं धां धावत। कहत जांन सब जगत जरावत॥
बचै जु नाव निरंजन ररिहै। दीप हाथ कत कूवा परिहै॥

ग्रंथ बुधि दीप संपूरन भयौ॥

विषय—सांसारिक माया, मोह, लोभ, मोह, और क्रोध आदि तजकर भगवद् भजन करने का उपदेश किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य--रचना काल और लिपिकाल ज्ञात नही है। रचयिता का नाम जान है। इनके सबंध मे देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र। रचनाएँ मोदक छंद मे है। प्रस्तुत विवरण पत्र मे विवृत रचनाओ के नाम है--"बुद्धिदाइक" और "बुद्धिदीप"।

संख्या १२६ह. घूंघट नावा, दरस नावा, अलक नावा, रचयिता--जान कवि, स्थान--फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--४, आकार--८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१३२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि-- ॥ घूंघट नावां दोहरी ॥

आदि सुमिर करतार कौं दोय महंमद नाम।
घूंघट नावो जान कहि बरनत हौं अभिराम ॥ २ ॥
अबहिं चौपई बांधिहौं एक भांति तुक चारि।
पाछें फिरि फिरि आइहै द्वै तुक बारंबार ॥ ३ ॥
आवत देषि दूरितें लाल। तैं कत बदन दुरायौ बाल।
कहिधौं कौन गही यह चाल। दुष पावत मोहन सुकमाल ॥
लागि रही नैननि की तारी। घूंघट नैंक उघारहु प्यारी ॥

:o: :o: :o:

छूटि गई नैननि की तारी। घूंघट खोलि मिली हँसि प्यारी ॥

इति घूंघट नामा संपूरन भयौ १७७७ फ सु. २ ॥

मध्य-- ॥ ग्रंथ दरसनावां ॥ षट्रल ॥

नाव निरंजन सुमिरूं आदि। इंछ्या पूजे जिह प्रसाद ॥
भूलत म्रिगा सुने ज्यौ नाद। त्यौ भूल्यौ सुनि रूप सुभाव ॥
घूंघट षोलि दरस परसाव ॥ २ ॥

दूजें सुमिरन करौं नबी कौ। है मनमोहन प्यारौ जी कौ ॥
गुन संपूरन सब बिधि नीकौ। ताकें हितु करि पापरि आव।
घूंघट षोलि दरस परसाव ॥ ३ ॥

रैंन बिहान रहै लव लीन। जान कहै मोहन आधीन ॥
तरफत जैसें जल बिनु मीन। रैंन बिहांन रहै लवलीन ॥
है वयाल ह्वैबे कौ दाव। घूंघट षोलि दरस परसाव ॥

इति दरस नावां संपूर्न भयौ १७७७ फागण सुदी ३।

अंत--अकल नावां षट्रिला ॥ जान कृत ॥

पहलें लेहु निरंजन नाम। दोम महंमद कौ पर्नाम ॥
पाछें अलक बषानौं बाम। यह रट टरत न रसना हारी ॥
बहुरि बिषाव अलक घुंघारी ॥ २ ॥

तू सुंदर षिरकी मैं षरी। मेरी डिसृ औंचका परी ॥
नेहु गयौ लगि वाही घरी। मन षंजन तैं फांदयौ उपरी ॥
बहुरि बिषाव अलक घुंघारी ॥ ६ ॥

:o: :o: :o:

जान आपुनो पेमु सुनायौ। सुनत सुंदरी कै मन भायौ ॥
अतिहीं हित सौं निकटि बुलायौ। जान्यौ याकी पीति करारी ॥
छाडी बहुरि अलक घुंघारी ॥

इति अलकनावां संपूरन भयौ १७७७ फा० सु० ३ ।

विषय—शृंगार पूर्ण रचनाएँ है ।

घूंघट नावां

बाला प्रियतम को दूर से ही देखकर घूंघट काढ़ लेती है । प्रियतम अनेक उपमाओं का सहारा लेकर घूंघट निवारण के लिए मनुहार करता है । अत मे घूंघट अलग कर दिया जाता है और दोनो मिल जाते है ।

दरस नावां

इसमे नायिका से दर्शन देने का अनुरोध किया गया है । यह रचना कुछ रहस्यात्मक संकेतो से भी युक्त है ।

अलक नावां

एक सुंदर खिड़की मे बाला बैठी है, जिसके खुले बाल शरीर की दुगुनी शोभा बढ़ा रहे हैं । कवि यह शोभा देख कर मुग्ध हो जाता है । इसका ज्ञान होते ही बाला अपने को छिपा देती है । पर कवि को धैर्य कहाँ ? अपने को विनीत बनाता हुआ अनेक उपमाओ द्वारा बाला की स्तुति करता है । अत में बाला का धैर्य विचलित होता है और पूर्व रूप मे दर्शन देती है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत विवरण तीन छोटी छोटी रचनाओ का है । इनमे रचनाकाल नही है । लिपिकाल सवत् १७७७ वि० है ।

रचयिता का नाम जान कवि है । इनके लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र ।

रचनाएँ खुट्टिला नामक छद मे है और काव्य की दृष्टि से उत्तम है ।

संख्या १२६क१. दरसन नावा और बारह मासा, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८३/४ × ६१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२ पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—दरसन नावां कवि जान कृत ॥

सुमिरौं आदि अलख करतारा। रच्यौ महंमद जगत उज्यारा ॥
जाकी प्रीती करयौ संसारा। ताकौं हितु करि हेतु जनाव ।
वहु दरसन चुष बहुरि दिषाव ॥ २ ॥
जा दिन कौ दरसन हौ देख्यौ। ता दिन कौ हिरदैं अवरेख्यौ ॥
दर्पनु न्यान रैन दिन पेख्यौ। पगंट परसन कौ चितु चाव ॥
वहु दरसन चुष बहुरि दिषाव ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

अंत—

चलत जेठ मैं उस्न बयार। बिरहनि जार करत है छारि ॥
मोकौं सीरी लगं अपार। पिय संग सदन उसीर बनायौ ॥
वहु दरसन जब बहुरि दिषायौ ॥ ३ ३॥

इति दरसन नामा संपूरन ॥

आदि—— बारहमासा फुनिग छंद

सुमिरहौं आदि करतारा। रच्यौ जिन नबी उजियारा॥
मिटयौ सब जगत अंधियारा। बड़ाइ ताहि जगु मानी॥
परै कल नांहि बिन जांनी॥ २॥

लग्यौ आसाढ़ घन गाजन।
भयौ दुष सुष लग्यौ भाजन॥
चहूं दिस बीज चमकानी।
परै कल नांहि बिन जानी॥ ३॥

अंत—— न बोले हे कबहु चित सौं।
रहे रूखो निलहीं नित सौं।
भरयौ तन ताहि अब हित सौं॥
लगे घट मोहि सुष रितवन।
कहाँ वह प्यार की चितवन॥ ४॥
नमो सो रूप उजियारी।
कहा धौं आहि वै नारी।
सदा सनमुष कियें हारी॥
लगे अब जानि तिहिं जितवन।
कहाँ वहु प्यार की चितवन॥ ५॥

इति बारह मास संपूरन भयौ॥

विषय——विरहिणी के बारह मास के विरह का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य——रचना काल और लिपिकाल नही है।

इस विवरण पत्र मे "दरसन नावा" और "बारह मासा" नाम से दो छोटी छोटी रचनाओं के विवरण लिए गए है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके सबध मे देखिए, 'रतनावती' का विवरण-पत्र। बारहमासा मे प्रयुक्त छद का नाम फुनिग है।

संख्या १२६ख२. सत्तनावा और वर्णनामा, रचयिता——जान कवि, निवास स्थान, ——फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज——देशी, पत्र——५, आकार——८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२२ परिमाण (अनुष्टुप्)——१६५, पूर्ण, रूप——पुराना, (जीर्ण-शीर्ण), पद्य, लिपि——नागरी, रचना काल——सवत्——१६६३ वि० (सत्तनावा), लिपिकाल संवत्——१७७७ वि० (सत्तनावा), प्राप्तिस्थान——हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि——सत्तनावां कवि जान कृते चौपई॥ १॥

परथम लेउं नाम करतार। सती पुरुष सिरजे संसार॥
दूजे लेहुं महंमद नाम। है जिन को सत ही सौं काम॥
सुनि सुनि लेहु कहै कवि जांन। अबहि संत सत करहु बषांन॥
जो अपनं सत राषै ठौर। सो संतनि कौ ह्वै सिरमौर॥
सती पुरष है सुकिया नारि। इंद्री दूति डिगांवन हार॥
जाकौं नाहि डिगत है प्रान। सो सतवंत संत कहि जान॥

॥ दोहा ॥

जाकौ सत नाहिन डुरै संत होइ संसार ।
मन इंछया पूजै सकल पावै सिरजनहार ॥

॥ सोरठा ॥

सती अमर जगमांहि सुजस जगमगै भान ज्यौं ।
असती जैसें छांहि पलक मांहि ढरि जांहिगे ॥

अंत—

॥ सोरठा ॥

कहत जान करतार सत डिढ मोहू दीजिए ।
भौसागर कौ पार करौं तिहारी दया तें ॥

॥ दोहा ॥

सोरह सै जु तिरानुवै मास पूस कवि जानि ।
यहु सत नावौ संत कौ हितु सौं करचौ बषान ॥

संतनावा संपूरन भयौ १७७७ मिती फागन सुदी ४ लि फतेहचंद ।

आदि— बर्ननामा कवि जांन कृत ॥ दोहा १ ॥

ककै करहु करनी भली ज्यौ आगै सुष होई ।
कर्त्ता कौ सुमिरन करै लहै पर्म पद सोइ ॥ २ ॥
षषै षरी यहु बात है सुनहुं कांन दै दोइ ।
करता की सेवा करहु ज्यौं आगैं सुष होइ ॥ ३ ॥

अंत— ऊ ऊत तौ सुष पाईए जौ इत सेवा होइ ।
नीज बयें बिनु जांन कहि नाहि लहत फल कोइ ॥ ३२ ॥
बावन अछिर कहत हत सों संसक्रित वषांन ।
भाषा मैं इकतीस ही आवत है कहि जान ॥

इति बर्नमाला सम्पूरन ॥

॥ सत्तनवा ॥

विषय—सत के लक्षणों का वर्णन किया गया है :

रचनाकाल

सोरह सै जु तिरानुवै मास पूस कवि जानि ।
यहु सतनावौं संत कौ हितु सौं करचौ बषान ॥

वर्ननामा

नागरी के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर उपदेश किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस विवरण पत्र में "सत्तनावां" और वर्णनामा" रचनाओं का विवरण है ।

रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष वृत्त देखिए, "रतनावती" के विवरण-पत्र में ।

'सत्तनावा' में रचना काल संवत् १६६३ और लिपिकाल संवत् १७७७ वि० है ।

संख्या १२६ग१.बांदी नावा, रचयिता—कवि जान, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण-शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—चौपाई १ बंदी नावाँ कवि जान क्रिते ।।

पहिलै सुमिरौं सिरजनहार । दूजें नबी जगत आधार ।।
कहत जान सुनियौ दै कान । बांदो नावो करौं बखान ।।
बांदी मीयां मोल लै आयो । तिया देखि कै सोर मचायौ ।।
मीया कहै को भरिहै पानी । मै तेरै सुष कौ यह आंनी ।।
ज्यौं ज्यौं देषै जोबन कांति । त्यौं त्यौं तिया बुरी हुं जांति ।।
मन मैं कहै भलो ना भई । अब तौ बात हाथ तै गई ।।

अंत—

उततै गयौ जहां ही बाम । भेंट धरे दासी कै दांम ।।
मनोहार करि पकरे पाइ । बात कही नीकै समुझाइ ।।
बादी घर ते मिये निकारी । रोस मिटचो घर आइ नारी ।।
वहै मियां वहु वाम पियारी । बांदी गई करौं बलिहारी ।।

।। दोहा ।।

उत्तम मानस छाडिकै कोजै मधिम पीति ।
कहत जांन कबि जानियों है यहु बडी अनीत ।।

इति बांदी नामा संपूरन भयो ।।

विषय—एक मियाँ, जो बड़े मनचले थे, एक बाँदी को मोल ले आए । स्त्री ने विरोध किया तो कहा, यह काम करने के लिए है जिससे तुझको ही सुख मिलेगा । स्त्री का मियाँ पर कुछ वश न चल सका, अत. मन मसोसकर रह गई । धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों दासी युवती होती गई, मियाँ की आँखे उसकी ओर आकर्षित होती गई । जब दासी को वश में कर लिया तो एक रात स्त्री को सोते जान चुपके से उसके पास चला गया । रात अँधेरी थी और आकाश मे बादल छाए हुए थे, अत: जैसे ही बादल गरजे कि स्त्री की आँखे खुल गई । वह पति को पास न पाकर खोजने लगी । खोजते-खोजते बिजली की चमक मे एक कोने मे मियाँ को दासी के साथ व्यभिचार करते देख लिया । मियाँ ने बहुत कुछ सफाई देनी चाही, पर स्त्री को सतोष न हुआ । वह दूसरे दिन अपनी माता के पास चली गई । मियाँ को इससे प्रसन्नता हुई, अतएव निश्चित होकर दासी के साथ आनद करने लगा ।

बहुत दिन बीत जाने पर एक दिन कुटुबियो ने उसे घेर लिया । स्त्री को छोड़कर दासी के साथ व्यभिचार करने के लिए उसे बहुत फटकारा । साथ ही साथ जाति से बाहर करने का भी भय दिखाया । अब तो मियाँ बहुत मिटपिटाए और शीघ्र ही दासी को नखास मे ले जाकर बेच आए । जो मूल्य मिला उसको लेकर सीधे स्त्री के पास गए और उसको मनाकर घर ले आए ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही है । रचयिता का नाम कवि जान है । इनके लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र ।

संख्या १२६घ१. बाजनामा और कबूतरनामा, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—५, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति —(प्रतिपृष्ठ),—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, (जीर्ण-शीर्ण) पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७७७ वि० (कबूतर नामा), प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—

बाजनामा कवि जान कृत ॥
पर्थम हित सौं सुमिरिहौं रचनहार करतार ।
पसु पंछी जिय जंत जिन पल में रचे अपार ॥ २ ॥
सकल सिस्ट करता रची प्रेम महंमद काज ।
तीन लोंक कौ जान कहि दीनौ ताको राज ॥ ३ ॥
बाज जुरा बहरी कुही सबकौ एक बिचार ।
औसध समझाऊँ भलै सुनि सुनि लेहु षिलार ॥ ४ ॥
जे औसद कहि कहि गए पहिले मीर सिकार ।
ते इनमें आने बहुत ग्रंथ निहार बिचार ॥ ५ ॥

अंत—

जौ पगतरं उपजि है रोग । मानस मुत्र लौन करि जोग ।
गदी एक बस्त्र की वानि । इन दुहु मंमि जाइ करि आंनि ॥
लै वाकौं बाधं पतवाज । ता ऊपर बैठावै बाज ॥
तौलौं राखं गदी भिजाइ । जौ लौ बाज भलौ ह्वै जाइ ॥
बाजनावां संपूरन ॥

आदि—दोहा कबूतरनामा कवि जान कृत ॥
आदि सुमिर करतार कौ जाकै आदि न अंति ।
पलक माँहि सब जगु रच्यौ नर पसु पंछ अनंत ॥ २ ॥
दोम महंमद सुमिरहौ जाते सब जगु दोम ।
सकल रसूलनि मधि बन्यौ ज्यों उडिगन मैं सोम ॥ ३ ॥
सब पंछिनि मे जान कहि ऊत्तम कबूतर आहि ।
नूह नबी कै हेत तें सब कौ बाढी चाहि ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:

अंत—

बहुरौ सिरको आनि मिलावै । अंडे ऊपर भांति बनावै ॥
बचा अंडा तें बाहर आवै । वहै भांति तन मैं प्रगटावै ॥

इति कबूतरनामा संपूरन १७७७ फागन ॥ सु० ५ ॥

विषय—बाज और कबूतर को पकड़ना तथा उनका पालन पोषण करना एवं उनके रोग उपचारादि का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस विवरण पत्र मे "बाजनामा" और "कबूतरनामा" का विवरण है । रचना काल का उल्लेख किसी भी रचना मे नही हुआ है । लिपिकाल कबूतरनामा में संवत् १७७७ वि० दिया है ।

रचयिता कवि जान है जिनका पूर्ण वृत्त "रतनावती" के विवरण पत्र मे दिया है ।

रचनाएँ विषयो की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं । प्राचीन काल मे बाज और कबूतर पकड़ने और पालने में किस प्रकार मनोवैज्ञानिक दृष्टि रखी जाती थी, उसका इन रचनाओ से पता चलता है । उनके रोगों उपचार के सबध मे भी ज्ञातव्य बाते प्रकट होती है ।

संख्या १२६ङ१. गूढ़ ग्रंथ, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—शी, पत्र—६, आकार—$8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी' लिपिकाल—सं० १८७७, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—गूढ़ ग्रंथ कवि जान कृत ।।दोहा ।।

अलह नबी कौं सुमिरि कै करि गुर पीर जुहार ।
गूढ ग्रंथ कवि जान कहि पाछै करौ उंचार ।। २ ।।
कहत जान इनमाहि मैं राष्यौ ऐसौ भेवु ।
तुरत अर्थ समझ्यौ न जै पावत है कर षेव ।। ३ ।।
रविनंदन उज्जल बरन पं कौ सीच्यौ फूल ।
नाम लह्यौ उड़तौ फिरै पंछी की समतूल ।। ४ ।। (आक)
अरुन बरन सोभा बदन रहत न ग्रितक पास ।
जानि लेहु कबि जान कहि आहि सुरग तिह वास ।।

अंत—

षारौ पानी ना पिए मिठे कौं पी जाइ ।
कहौ अग्नि सो कौन है पानी ते न बुझाई ।। ८० ।।
पाइनि बेरी सीस पर अति ही लांबे बार ।
चलि ना सकहि भतार संग जांहि पहार पहार ।।

इति गूढ ग्रंथ संपूरन १७७७ फा० सु० ६ ।।

विषय—पहेलियों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल अज्ञात है । लिपिकाल संवत १७७७ वि० दिया है । रचयिता का जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र ।

संख्या १२६च१. ग्रंथ देसावली, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८½ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२१, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ देसावली कवि जान कृते ।।

।। दोहा ।।

सुमिरौ आदि इलाह कौ बहुरि नबी कौ जान ।
बर्नत है देसावली नीकै राषहु कान ।। २ ।।
सकल भोम अपबस करी छत्रपति औरंग साह ।
अचल रहौ जौ लौं रहै नभ मैं मिहर रु माह ।। ३ ।।
अबही बषानौ जान कहि सकल धरा विस्तार ।
जैसे ग्रंथनि मैं पठ्यौ त्यौं करिहौ उपचार ।। ४ ।।
कोस चतुर लष जानियहु है पुनि बीस सहस ।
ऐसे ग्रंथनि मैं कह्यौ ब्यौरौ कह्यौ रहंस ।। ५ ।।
एक लाष त्रेपन सहंस जानि लेहु उद्यान ।
बेष चरिव जानि यहु है तामैं कह जान ।। ६ ।।
एक लाष दरियाव हैं और सहंस बत्तीस ।
मगर मीन सालूर अहि तामैं बिसवाबीस ।। ७ ।।

अंत—

ऊपर सप्त जु लोक हैं करिहौं नाम उचार ।
सतलोक तपलोक पुनि अरु जनलोक बिचार ।। ४६ ।।

महालोक सुरलोक पुनि भूवलोक धरि कान ।
लोकालोक सु सातुवो जान लेहु कहि जान ।।

इति देसावली संपूरन संवत् १७७७ मीती फागण सुदी १३ दसषत फतेहचंद का ।

विषय——सृष्टि का भूगोल का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य——रचना काल उल्लिखित नहीं है। लिपि काल संवत् १७७७ वि० है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय में देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६छ१. ग्रंथ रस कोष, रचयिता——जान कवि, स्थान——फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज——देशी, पत्र——१२, आकार——८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——२०, परिमाण (अनुष्टुप्)——३८५, पूर्ण, रूप——प्राचीन, पद्य, लिपि——नागरी, रचनाकाल——सं० १६७६ वि०, लिपिकाल——सं० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान——हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि——**ग्रंथ रस कोष कवि जान कृत ।।**

अलष अगोचर निरंजन निराकार अबिनास ।
काहू की पटतर नहीं ताको पटतर तास ।। १ ।।
नमसकार ताको करा नाव महमदु ताहि ।
असरन सरन अभरन भरन भै भंजन गुन ताहि ।। २ ।।
अबहि बषानो नाइका नाइक कहि कवि जान ।
मथौ कथौ रस मंजरी सुनहु सबै धरि कान ।। ३ ।।
तन मन मै संतोष ह्वै मिटै चित को सोष ।
रस्मारस दोष निमास ह्वै धरयौ नाव रस कोष ।। ४ ।।

।। प्रथम सुकिया नाइका भेद ।।

जेती नारि बिबाहिए, ते सब सुकिया नांहि ।
पतिबरता को नाम है समुझ लेहु मन मांहि ।। ५ ।।

।। सुकिया की चेस्टा चौपाई ।।

निस दिन सेवा करिहै पीय की । और कछु ना भावरि जीय की ।।
हरयें करि है बचन उचार । सुनत नांहि को बिन भरतार ।। १ ।।

अंत——

उतिमा मधिमा पुनि अपुनि अधं त्यौनी बिसवाबीस ।
दिव्य अदिव्या दिव्य दिव्य ह्वै चारि सै छत्तीस ।। १५० ।।
सुकिया प्रकिया पनगना मिलि ह्वै बिसवाबीस ।
दोइ सहंस औ सात सै पुनि गनि लेहु छत्तीस ।। १५१ ।।
जहांगीर के राज मै हरन चित्त कौ दोष ।
सोरह सै षटहंतरै करयौ जान रस कोस ।। १५२ ।।

इति रस कोष संपूरन भयौ १७७७ मिती चैत बदी १ दोह १५२ चौपई ८८ ।।

विषय——संस्कृत ग्रंथ रस मंजरी के आधार पर नायिका भेद वर्णन।

रचनाकाल

जहांगीर के राज मै हरन चित्त कौ दोष ।
सोरह सै षटहंतरै करयौ जान रस कोष ।। १५२ ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १६७८ वि० और लिपिकाल संवत् १७७७ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६ज१. ग्रंथ उत्तम सबदा, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—२, आकार—८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—ग्रंथ उत्तम सबदा ॥

॥ दोहा ॥

पर्थम करता सुमिर कै लेउ महंमद नाम।
पाछै चारौ यार कौं करत जान परनाम॥ २॥
इक दिन नबी सदीक पुनि और उमर उसमान।
गए अली कै धाम पै होइ चतुर मिजमान॥ ३॥
तबहि निषालस सहद भरि आन्यौ निर्मल तास।
राष्यौ हित सौं लै अली हजरत जू कै पास॥ ४॥
बार परयौ हौ सहद पर नबी दयौ फुरमान।
तिहुंवनि कौ डिस्तांत कछु तुम हम करहि बषान॥ ५॥
प्रथम अबाबकर कह्यौ दीनदार नर तास।
मधहूं ते मीठौ महा है ईमान ता पास॥ ६॥

:o: :o: :o:

अंत—

मिस्ट सहद तें लागि है कीजत जबहि नमाज।
पाप दूर सब होत है मनहु जन्यौ है आज॥ २५॥
ठाढौ होइ नमाज पर निहचल राषै चित्त।
यह कुच तें बारीक है कहत जान सुनि मित्त॥

इति उत्तम सबद संपूरन भयौ ॥

विषय—एक दिन हजरत अली ने नबी साहब और उसके यार अबाबकर, उसमान और उमर की दावत की। हजरत नबी के सामने खालिस शहद लाकर रखा तो उसमे एक बाल पडा हुआ मिला। बस, इसी पर उपदेशात्मक विवाद छिड गया। नबी साहब ने बारी बारी से प्रश्न किया कि शहद से अधिक मीठा एव बाल से अधिक सूक्ष्म क्या है? अबाबकर साहब ने कहा कि आपके पास जो ईमान है वह शहद से भी मीठा अधिक एव बाल से भी अधिक बारीक है। उमर साहब ने कहा, बादशाह के पास लक्ष्मी ही शहद से अधिक मीठी एवं न्याय ही बाल से अधिक बारीक है। उसमान ने कहा, ज्ञान ही शहद से अधिक मीठा और बाल से अधिक बारीक है। इस प्रकार बारी बारी से सबने प्रश्न का उत्तर दिया। अंत मे नमाज पढ़ना शहद से अधिक मीठा एव बाल से अधिक बारीक ठहराया गया।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६झ१. सिषसागर पदनावा, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—६, आकार—८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—सं० १६६५ वि०, लिपिकाल—संवत् १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—सिष सागर पंद नावा कवि जान का कीया ।।

प्रथम करता सुमिरिए दूजे नबी रसूल ।
पाछे ग्रंथ जु कीजिए सो जगु होइ कबूल ।। २ ।।
ग्रंथनि कै मति जान कहि देउं सबषी को सीषु ।
विषु सम लगै अग्यान कौं ग्यानी जैसी ईषु ।। ३ ।।
सीष बचन ग्रौषद कटुक हरननि बुधि गद गात ।
मैठे ज्यौं ग्रौगुन करै झूठी मीठी बात ।। ४ ।।
जिह जगती मैं आइकै नाहि जप्यौ करतार ।
ते करमी उतिहि गए जरम जुवा सो हार ।। ५ ।।
प्रथम मन मैं ग्यांन करि आपहि देषि विचार ।
रज बीरज अपवित्र ते तूं सिरज्यौ करतार ।। ६ ।।
रज बरोज बसत्र लगै तंत डारिए धोइ ।
पिंड रच्यौ इन दुहूनि तें सो क्यौ निरमल होइ ।। ७ ।।

अंत—

गर्ब करहि जिन गोत पर बिन सुमिरन न सहाइ ।
छत्रपति हूं जग मरै तबहि अकेलो जाइ ।। ३४४ ।।
कोऊ ना गहिराइहै लगें काल की बाइ ।
जग तें केते चलि गए राजा राना राइ ।। २४५ ।।
सोरह सै पच्यानुवै ग्रंथ करघौ यहु जान ।
सिष्या सागर नाम धरि बहु बिधि करघौ बषान ।।

इति सिष्या सागर पदनामा संपूरन १७७७ फ० वदी २ ।।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

सोरह सै पच्यानुवै ग्रंथ करघौ यहु जान ।
सिष्या सागर नाम धरि बहु बिधि करघौ बषान ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६६५ वि० और लिपिकाल सवत् १७७७ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए "रतनावती" का विवरण-पत्र ।

संख्या १२६इ१. वैदक सत पदनावा, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—४, आकार—८½ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६५ वि०, लिपिकाल—स० १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—वैदक पदनावा कवि जान कृत दोहा १ ।।

आदि अलह कौ नाव लै दोम महंमंद नाम ।
वैदक सतको सीषद्यौ कहत जान अभिराम ।। २ ।।
कहत जान कवि यौ लिष्यौ वैद्यक ग्रंथनि माहि ।
अनरुच हूं तौ लीजिए जनरुचि लीजै नाहि ।। ३ ।।
लीजै अपनी भूष सम भोजन षोयौ जात ।
अधिक लीजिए भूषतें तौ फिरि भोजन षात ।। ४ ।।

मनकौ सुख रिसचित घट तन सुख अलप अहार ।
बहु भोजन बहु चित रिस तन मन करत बिकार ।। ५ ।।
इन बहुवनि ते हानि ह्वै कहत सयाने लोग ।
अति षेलन अति गाइबौं अति मदि अति सयोग ।। ६ ।।
अति सोए रंग पीति ह्वै अति बोलें पछितात ।
अति संभोग दुबल करै अति भोजन ज्यो जात ।। ७ ।।

:o: :o: :o:

अंत—

थोहर कै संग पीसि कै सिरस बीज औलाइ ।
ताकौ यहु उपचार है जाकौ दादुर षाइ ।। ६७ ।।
जो काहू कै अंग मैं लगै नाग के दंत ।
तौ पीतौ कुकटात कौ बांधत हातूं तंत ।। ६८ ।।
ल्हसंन कूटि मधु मेलि कै बिछी डंक लगाइ ।
वाकौ विषु दुष देत ना लावत ही सुष पाइ ।। ६६ ।।
जौंब ततईया क्रोध करि काहू काटै आइ ।
फूल करर दूनौं संदल ता ऊपर घसि लाइ ।। १०० ।।
सोरह सै पच्यानवै ग्रंथ कियौ यहु जान ।
बैदक सत इह नाम है भाष्यौ बुधि परवान ।। १०१ ।।

इति पंदनावा बैदक सत संपूरन ।। समत १७७७ मिती चैत बदी पद ५ दसषत फतेचंद ।

विषय—वैद्यक विषय का वर्णन ।

रचनाकाल

सोरह सै पच्यानवै ग्रंथ कियौ यहु जान ।
बैद्यक सत इह नाम है भाष्यौ बुधि परवान ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १६६५ वि० और लि० का० संवत् १७७७ वि० है । रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र ।

संख्या १२६ट१. सिंगार तिलक, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—१८, आकार—८ $\frac{3}{4}$ × ६ $\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचानकाल—सं० १७०६ वि०, सन् १०३० फसली, लिपिकाल—स० १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ सिंगार तिलक भाषा कवि जान कृत दोहा ।।

सुमिरन कीजै अलष कौ रैन दिना कहि जान ।
अंत परमपद पाइए पूजै इंछया प्रान ।। २ ।।
दूजै सुमिरन नबी कौ जो करिहै करि चाइ ।
ताकै ज्वाला नर्क की नैकु न नेरैं आइ ।। ३ ।।
करौ सिंगार तिलक की टीका कहि कवि जान ।
संसक्रित तें भाषा भए ह्वै सब कौं आसान ।। ४ ।।
ज्यौं भर्ता बिनु कामिनी जैसें ससि बिनु रैन ।
दान बिना ज्यौं लछिमी रसि बिनु कवितु बनै न ।। ५ ।।

रसों के ये स्याईभाव

॥ दोहा ॥

सोक हास उछाह भय बिसमय निंदा क्रोध ।
भावस्थाई आहिए भगनिरति आदि सबोध ॥ ६ ॥

विभाचारी भाव

॥ चौपाई ॥

है निर्वेद ग्लानि स्मृत । संका असुया मद भ्रम धृत ॥
आलस और देईन बिषाद । चिंता मोह हर्ष उनमाद ॥
बीड़ा और चपलता जांनि । निंद्रा गर्बा केग बषांन ॥
अपस्मार उछब वैवर्न । जड़ता सपुन व्याधि मति मर्न ॥
त्रास बितक उग्रता अवबोध । विभचारी पातै उच्चरैं ।
सकल रसन मैं ये विचरैं ।

:o: :o: :o:

अंत—

सबही रसु मैं दोष ये चातुर आनहि नांहि ।
दूषन रहत जु कवितु हुं सो प्रगटं जग मांहि ॥ ३ ॥
संबत से जुनौ और पूस कौ मास ।
भेद सिंगार तिलक कौ कीनौ जान प्रकास ॥ ४ ॥
सन हजार जचंसगं और मुहरम माह ।
ग्रंथ कियौ यहु जांन कवि सुनि बाढत उछाह ॥

इति सिंगार तिलक भाषा कबि जान क्रित संपूरन भयौ बसबत फतेहचंद का पोथी घर की समत १७७८ मिती भादवा बदी १५ सुवरवार दोहा ॥१५७॥ चौपई ॥२१२॥ श्री,......

:o: :o: :o:

लिषतु महमद माह फतेहचंद पास रतनावत लीनी तिसकै बदलै सुधासागर का दोहवा तिलक सिंगार का स्वास संग्रह फतेहचंद कै षत सेती लिषाइ लीनी समत १७८४ भादवा बदी २ श्री ० महमद उमर का लीवा सही ।

विषय—संस्कृत ग्रंथ शृंगार तिलक का भाषा मे अनुवाद ।

रचनाकाल

संबत सत्रह सै जु नौ और पूस कौ मास ।
भेद सिंगार तिलक कौ कीनौ जान प्रकास ॥ ४ ॥
सन् हजार ज त्रेस गै और मुहरम माह ।
ग्रंथ कियौ यहु जान कवि सुनि बाढत उछाह ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १७०९ वि० और लिपिकाल संवत् १७७८ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र ।

संख्या १२६७१. पैम सागर, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—१२, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६४ वि०, लिपिकाल—सं० १७७९ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ पेमसागर कवि जान कित ॥

॥ दोहा ॥

लीजै जो आरंभ मै प्रथम करता नाम।
तो निहचै पूरौ परै सुष सों सगरौ काम ॥ २ ॥
जौलौं घट ज्यो रसंन मुष अरु नासिक मैं स्वास।
तौलौ सुमिरन कीजिए सब पूजै मन आस ॥ ३ ॥
मन की इछया पूरिहै दाइक सुष दुष गथ्थ।
कर्ता तैं सब पाइए और न कोइ समथ्थ ॥ ४ ॥

अंत—

काहे चितु भरमत फिरतु जैसे चपल बयार।
निहचल ह्वै कवि जांन काहि घटहि मांहि निहार ॥ २६३ ॥
सोरह सै चौरांनुवै चैत मास के अंत।
बरन्यौ सागर पेमु कौ जांन कवि हित संत ॥ २६४ ॥

इति श्री ग्रंथ पेमु सागर संपूरन भयौ संबत् १७७६ ॥ मिती चैत सुदी ११ सुकरवार बसतखत फतेहचंद का पोथी फतेहचद की हरकदावे अनद ॥

विषय—प्रेम की विवेचना और उसके प्रभाव का वर्णन।

रचनाकाल

सोरह सै चौरानुवै चैत मास के अंत।
बरन्यौ सागर पेमु कौ जांनि कवि हित संत ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६६४ वि० और लिपिकाल सवत् १७७६ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६ड१. वियोग सागर, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—६, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१० पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १०६६ हिजरी, लिपिकाल—सवत्—१७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—ग्रंथ वियोग सागर कवि जान कृत ॥

॥ दोहा ॥

नाम लए करतार कौ पूजत मनसा कांम।
धन धन ते उत्तम नरा सुमिरैं आठौं जाम ॥ २ ॥
दूजें सुमिरन नबी कौ जो करिहै चितु लाइ।
यामैं कछु संदेह ना सांचु परमपद पाइ ॥ ३ ॥
चिरंजीव जग मै सदा साहिजहां पतिसाहि।
ह्वै क्रिपाल कवि जान कहि सब इल दई इलाहि ॥ ४ ॥
अब वियोग सागर कहौं जब विछुरैं है मित।
तब तन मन कौं देत दुषु अति मिलिबे की चित ॥ ५ ॥
लाल गवन स्रवननि सुन्यौ जल भरि आए नैन।
बाढ़ी चिंता चटपटी मैं उपज्यो है अंन ॥

अंत—

दंपत करत चैन संगर है दिन रैन लागत सुहाई रित पावस की आइ है ।
घमंडि घमंडि उमंडि उमंडि बारिवार रिमझिम रिमझिम नीकी झरी लाइ है ।
मेदिनी भई है जलामई चिकनई लयें उपज्यो प्रसेद रति सहनान पाइ है ।
रसा सौं सुरेस रस परस करत मानौ ठौर ठौर देषियत ताकी सरसाई है ।।

।। दोहा ।।

नए पुराने आपुने कवितु किए संयोग ।
सन सहंस सत छघासठं कीनौ उवधि वियोग ।।

इति ग्रंथ वियोग सागर संपूरन ।। संवत् सतरह सै १७८४ मिती माह सुदी १५ सोमवार बसषत फतेहचंद का ।। सवइया ७७ दोहा ३४ ।।

विषय—वियोग शृंगार का वर्णन ।

रचनाकाल

नए पुरांने आपुने कवितु किए संयोग ।
सन सहंस सत छया सठं कोंनों उदधि वियोग ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सन् १०६६ हि० है और लि० का० संवत् १७८४ वि० । रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र । रचना साहित्यिक है जिसमें कवि के नए पुराने दोहा, कवित्त और सवैयाओं का संग्रह है ।

संख्या १२६८१. रस तरंगिनी, रचयिता—जान कवि, निवासस्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६१, पूर्ण, रूप—पुराना, (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १७११ वि०, हि० सन् १०६५, लिपिकाल—संवत् १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ रसतरंगनी कवि जान क्रित ।

।। दोहा ।।

अलष अगोचर सुमिरिए हित सौं आठौ जाम ।
तौ निहचै कवि जान कहि पूजै मनसा काम ।।
दीनदयाल क्रिपाल अति निराकार कर्तार ।
तन कौ पोषन भरन है मन इंछ्या दातार ।। ३ ।।
नब महंमद सुमिरिए जिन सुमरचौ कर्तार ।
वारापार जिहाज बिनु कैसैं कीजै पार ।। ४ ।।
साहिजहाँ जुग जुग जिवौ सुलतानंनि सुलतान ।
जान कहै जिहि राज मै करत अनंद जहान ।। ५ ।।
रस तरंगिनी संसक्रित क्रिते कोविद भान ।
ताकी मैं टीका करी भाषा कहि कवि जान ।।
सब कोऊ समुझत नहीं संसकृत दुगम बषानि ।
तातें मैं कीनी सुगम रसकनि हित कहि जान ।। ७ ।।

ग्रंथ उच्चार

पहलैं कारन होत है, पाछैं कारज होइ ।
रस के कारन भाव हैं भाषत् बुधइ लोइ ।। ८ ।।

अंत—
एकहीं सिंगार रसु बरन है वानदी में जाकों कही कालिंदी जु अंगना है भान की ।
भान वृति कीनी है जु रस की तरंगिनी सु तामैं नवों रसु संसकित मैं बखान की ।
मैं तौ यहु कीनी भाषा कवितु चतुर हितु दुगम तें निपट सुगम करी ग्यान की ।
जौलौं अंगु माँहि वै थिर रहैं दोऊ नवी तौलौं वहोर है विधि भाषा नवी जान की ॥३२०

॥ दोहा ॥

सन् हजार जु पैसठैं राबिल अवल मास ।
रसु तरंगिनी जान कबि भाषा करी प्रकास॥ ३२१ ॥
संमत सत्रह सै भयौ ग्यारह तापर और ।
माह मास पूरन भई साहिजहां के दौर॥

ग्रंथ रसु तरंगिनी भाषा बंध संपूरनं भई संबत् १७७८ मिती बैसाष सुदी ७ सनीसरवार लिषतं फतेहचंद ताराचंद का डडिवांनिया गोत गोइल अग्रवाला श्री बयाषाराजं दोहरे ३२३ पंवंगम ३२ सवईया १०४ सकल छंद ४४६ ॥

विषय—भानु कृत सस्कृत ग्रथ रस तरगिनी का भाषानुवाद किया गया है ।

रचनाकाल

सन हजार जु पैसगै (पैसठे) रबिल अवल मास ।
रसुतरंगनी जान कवि भाषा करी प्रकास॥ ३२१ ॥
संमत् सत्रह सै भयौ ग्यारह तापर और ।
माह मास पूरन भई साहिजहां के दौर॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १७११ वि० एव हि० सन् १०६५ है । लि० का० संवत् १७७८ वि० है ।

रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विररण-पत्र ।

प्रस्तुत रचना संस्कृत के प्रसिद्ध कवि भानु कृत "रस तरगिनी" का अनुवाद है । शाहजहाँ बादशाह के समय मे यह ग्रथ लिखा गया ।

संख्या १२६ए१. कंद्रप कलोल, रचयिता—कवि जान, स्थान—फतेहपुर, (राजस्थान, जयपुर), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—८½ × ६½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८३, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ कंद्रप कलोल जांन का कीया दोहा १ ॥
कहत जान जौ लीजिए रचनहार कौ नांम ।
तौ निहचै ही जांनियौ पूजैं मनसा काम॥ २ ॥
जो कछु कवि चाहत कियौ करि दि (?ब) रावै सोइ ।
रचनहार के नाम सौं रचना पूरी होइ॥ ३ ॥
दूजैं सुमिरन नबी कौ कीजत है चितु लाइ ।
उनकी सेवा जांन कहि संकट होइ सहाइ॥ ४ ॥
चिरंजीव जगता रहौ जगत माँहि 'कहि जांन' ।
सपति दीप आठौं दिसा प्रगटी जाकी आन॥ ५ ॥

नाम धरयौ यह ग्रंथ कौ मैं कंद्रप कलोल ।
रसकनि के चित सुनत हीं रस कौ होंहि बिलोल ॥ ६ ॥
दंपति कौं सिष देति हैं दूती अन अन भांति ।
कैसे देहि मिलाइ कै उपजावै सुषसांति ॥ ७ ॥
तीन भेद कवि जान कहि यामैं आनों सार ।
पर्थम तौ बैसंध है पुनि रति पुनि सिंगार ॥ ८ ॥

अंत--

अंग अनंग की ओप अनूप है जोवन रूप विराजति भारी ।
चंद सौ आनंन चांदनी सौं तन होइ रह्यौ घर मैं उजियारी ।
हूं कुच बीच कहै कवि जान बन्यौ अति ही तिय कै तिल कारौ ।
लालन कौ मन लूटन काज रहै जुग पब्बन मैं बटपारौ ॥ ११६ ॥
नवला कंवला मुष..............................

--अपूर्ण

विषय--नायिका भेद के अंतर्गत वय संधि, रति और शृंगार का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचना अंत से खंडित है । रचनाकाल लिपिकाल दोनों के उल्लेख नहीं हैं । रचयिता कवि जान हैं । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र । प्रस्तुत रचना औरंगजेब के समय की है ।

संख्या १२६त१. भाव कलोल, रचयिता--जान कवि, स्थान--फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--१०, आकार--८३/४ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२३, परिमाण (अनुष्टुप्)--३४५, पूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी और कैथी मिश्रित, रचनाकाल--संवत् १७१३ वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि--ग्रंथ भावकलोल कवि जान कृत ॥

॥ दोहा ॥

पर्थम अल्लह सुमिरयें जिन साज्यौ जगु साज ।
दोम महंमद सुमिरिये सिरज्यौ जाके काज ॥ १ ॥
:o: :o: :o:
चिरंजीव चगता रहौ साहिजहां सुलितान ।
सपति दीप मैं तिमर ज्यौं नीकै फेरि आनि ॥ ३ ॥
भांति भांति कौ भाव हैं जों भोजन कच कोल ।
नाव रच्यौ यह समुझिकै यातें भाव कलोल ॥ ४ ॥
कहूं कछू रसु कहूं कछू एक भांति सब नांहि ।
न्यारे न्यारे भाव ये समुझि लेहु मन मांहि ॥ ५ ॥
:o: :o: :o:
नए पुराने आपुनें दोहा सोधि अमोल ।
सन् हजार अरु छयासठै कीनौ भाव कलोल ॥ ७ ॥
लघु गुर उत्तम नीच नर है तिनकी यह रीति ।
प्रीति करत हैं नाम पर बैर करै बिपरीति ॥ ८ ॥
उत्तम जो रिस अगन मैं तातौ होत अपार ।
सीरो हूं सीरो किये बहुत जनावै प्यार ॥ ९ ॥

अंत—

मुगधा भाजी नाहु ते गई न पहुँची द्वार ।
मछरी उछरी नीर मैं लगी न पैलै पार ॥ १५ ॥
नांहि नांहि तूँ कत करत नाहु नह्यौ तुव नेहु ।
वेह रव रसन कहै है ये वेही तूँ वेह ॥ १६ ॥
परै जु प्रेम समुद्र यौं विहा ताकौं थाइ ।
जो मछरी तें उबरिहै तौ मछरी भषि जाइ ॥ १७ ॥
तुव मुष पिय कौ चंद्रमा सौतिन रवि दुषदाइ ।
जो इक नैन रिसाइहै उनके वेत जराइ ॥ १८ ॥
संमत सतरह सै भयौ तापर तेरह जांन ।
ग्यांनी बांचौ ग्यान सौं हूं कलोल अभिराम ॥

संपूरन भयौ सवैया लिषना रह्यौ ॥

विषय—अनेक भावयुक्त दोहो का संग्रह ।

रचनाकाल

संमत सतरह सै भयौ तापर तेरह जांन ।
ग्यानी बांचौ ग्यान सौं हूं कलोल अभिराम ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १७१३ है । लि० का० दिया नहीं । रचयिता का नाम जान कवि है । इनके विषय में देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र ।

रचना शाहजहाँ काल में रची गई । इसमें रचयिता के समय-समय पर रचे गए नाना भाव संयुक्त दोहो का संकलन है ।

अंत में एक सवैया खंडित है । शेष ग्रंथ पूरा है ।

संख्या १२६४१. ग्रंथ पंदनामा लुकमान का, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८½ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी तथा कैथी मिश्रित, रचनाकाल—संवत् १७२१ वि०, सन् १०७४ हि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ पंदनामा लुकमान का ॥

॥ दोहा ॥

पहलै अलह रसूल कौं सुमिरत है कवि जांन ।
पंदनामा लुकमान को पाछै करत बखांन ॥ २ ॥
जिते हकीम जगती तिनकौ गुर लुकमान ।
पंद वई है पूत कौं सुनियहु दै दै कान ॥ ३ ॥
जौ इन पंदनि पर चलै सो मग चूकै नांहि ।
भलौ कहावै जान कहि निहचै जगती माह ॥ ४ ॥
प्रथम कह्यौ लुकमान यौं सुनि सुत दै दै कान ।
नाम लेहु करतार कौ भूलि न रैन बिहान ॥ ५ ॥
जौ लौं तू जीवत रहै या जगती कै मांहि ।
तौ लौं उर करतार कौ भूलि भलाई नाहि ॥ ६ ॥

अंत—

ये सिष है लुकमान की नीकै राषहु कांन ।
हिंदकी भाषा मैं करी तुरकी तें कहि जान ॥ ७६ ॥

सन हजार चौहत्तरौ माह मास रमजान ।
ग्रंथ कियौ यहु जान कवि नीकहि राषहु कान ॥ ८० ॥
संवत सत्रह सै भये ता ऊपर इकईस ।
लगत मास वैसाख ही बाध्यौ बिसवाबीस ॥

इति पंचनाम लुकमान का संपूरन ॥

विषय—लुकमान हकीम के उपदेशों का हिंदी में अनुवाद किया गया है ।

रचनाकाल

सन हजार चौहत्तरौ माह मास रमजान ।
ग्रंथ कियौ यहु जान कवि नीकहि राषहु कान ॥ ८० ॥
संवत सत्रह सै भए ता ऊपर इकईस ।
लगत मास वैसाख ही बाध्यौ बिसवाबीस ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १७२१ वि०, सन् १०७४ हि० है । लिपिकाल नही दिया है । रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र ।

संख्या १२६ब१. जफरनामा नौसेरवां का, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८½ × ६¼ इंच, पंक्ति—(प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी तथा कैथी मिश्रित, रचनाकाल—स० १७२१ वि०, लिपि—काल—सवत् १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—जफर नामा नौसेरवां का कवि जान कृत ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम ताकौ करौं बषान । जिन दीनौ घट कौं ज्यौ दान ॥
जीव बिना तन माटी आही । निकस गयें लै गाड़ै ताही ॥
अंध होत जौ देत न नैन । गुग होत जो देत न बैन ॥
जौ ना देत अंग कै कांन । बोरो भाषत सकल जहान ॥ ३ ॥
जौ नहीं नासिक करत प्रकास । भली बुरी को समुझत बास ॥
जौ कबहु कर नाहिन पावत । दांन जूझ कौं कहा उचावति ॥ ४ ॥
जौ नाहिन दीने हुते पाइ । कैसै कोउ तीरथन जाइ ॥
जौ बुधि चित कौ दई न होत । तौ कैसे उपजत घट जोत ॥ ५ ॥
बुधि उज्योरे मारग सूझ्यौ । करता सुमिरन कौ गुन बूझ्यौ ॥
कित लौं कोऊ करै बषानि । सब कछु अलह दयौ कहि जान ॥ ६ ॥
दूजें सुमिरन करौ नबी कौ । सकल रसूलन मैं है टीकौ ॥

:o: :o: :o:

अविचल रहौ साहि औरंग । जौ लौं पानी जमुना गंग ॥
जौ लौं ध्रुव चंद्रमा भान । तौ लौं राज करौ सुलतान ॥
साहिजहां सुत अद्भुत सूर । दुर्ज लै पहुचाये दूर ॥
इकछित राज करै ज्यौ भान । उदै अस्त लौं जाकी आन ॥ १० ॥
अबं विग्रंथ कौ करौ उचार । चातुर सुनि कै करिहैं प्यार ॥
नगर मदाइन पुजवन काज । नोसेरवां करत तित राज ॥ ११ ॥

अंत—

बहुत नाम काकौ मुष आवै । जोई जिय कौं अति ही भावै ।।
सन सहंस चौहत्तर जान । तब कीनौ यहु ग्रंथ बषान ।। १३५ ।।
संवत सत्रह सै इकईस । सिष भाषी है बिसवावीस ।
इन पंदन कौं कांन जु करैं । तातैं कबहूं चूक न परैं ।।

इति ग्रंथ जफरनामा संपूरन भयौ संवत् १७७७ मिती चैत बदी २ ।।

विषय—नौशेरवां बादशाह ने एक दिन अपने वजीर बुजस्व मिहिर को ऐसा ग्रंथ रचने के लिए कहा, जो समझने में कठिन से कठिन और आसान से आसान हो । वजीर अपने गुरु अरस्तू के पास गया और उसे उपर्युक्त प्रकार से निवेदन किया । अरस्तू ने गूढ़ से गूढ़ प्रश्न करने को कहा और जिनका उत्तर वह स्वयं देने के लिए तैयार हुआ । अतः प्रश्नोत्तर का क्रम चला और पुस्तक तैयार हो गई । यही पुस्तक 'जफरनामा' के नाम से प्रसिद्ध है जिसमें गूढ़ से गूढ़ ज्ञानोपदेश और नीति संबधी बातें हैं ।

रचनाकाल

संवत सत्रह सै इकईस । सिष भाषी है बिसवावीस ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १७२१ और लिपिकाल संवत् १७७७ वि० है ।

रचयिता का नाम जान कवि है । इनके संबंध में देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र ।

रचना औरंगजेब के काल में लिखी गई ।

संख्या १२६ध१. मान विनोद, रचयिता—कवि जान, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२ परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी तथा कैथी मिश्रित, लिपिकाल—संवत् १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ मानविनोद कवि जान कृत ।।

।। दोहा ।।

बनिता है लड़बावरी अति रूसनि सौं हेत ।
षट रित मै सजनी हितू मान करन नहि देत ।। २ ।।
म्रिद उपचारन पोष है संतोषत है प्रांन ।
जैसे कैसे जान कहि करन देत ना मान ।।

।। सवईया १ ।।

गरजन घन घटा प्रगटोनी बीच छटा अपनी अपनी अटा दंपति की जोरी है ।
सीत रस. . .लागै समर समीर जागै पीयन सौं करै केल सांवरी औ गोरी है ।
पीय पीय पपीहा करै सुतौ कहै पावस मै न्यारी रहै तेतौ नाम भोरी है ।
समयो विचार उठी चलि न लगाव बार मान धारबे कौ कहा और रित थोरी है ।।
पावस की जामनी भयावनी लगत भारी निपटि हीं कारी मानौ काजर मैं बोरी है ।
चपला चमत्कार इंद गह्यौ हथियार ताकौं डारै मारि नाहु अंक तै बिछोरी है ।
दादुर पपीहा मोर सोर कै कहत यह जाकै नाही सवन पीय मदन मरोरी है ।
हो तौ तेरी हित तातैं तोको समझावति हौ मान करिबे कौ कहा और रित थोरी है ।।

समिता समुद्र मिली लता तरवर चढ़ी मिलि तु हूं पीय अंक चढ़ि आनंद बढ़ाव री ।
घटा संग देखि बीजि छटा कैसे चमकतु तूं हूं हंसि प्रीतम सौ मान रसु चाव री ।
पावत है सुख समै पावस जु न्यारी रहै भोरी है डरारी कारी लागति विभावरी ।
कोकिला पपीहा मोर सोर है समर वांन मान ठानबे की यहु कौन रितु बावरी ॥

अंत—

तै जु कह्यो रूस रहिबे कौं कहा थोरी रितु अनतु न रूसीहून रूसी सिख कांन की ।
बसन की रितु अब मोकों समझाइ देहु एनमैन कही जिन कहै आन आन की ।
तोही सौं हौं हितु पिय जीवत है तेरैं जिय मैं मगन रहत है लगन तो सुजान की ।
तेरी सौत सांच कहौ काहे मौन साध रहौ षटरितु न लहौ कोऊ रित मांन की ॥

ग्रंथ मान बिनोद संपूरन भयौ दसषत फतेहचंद का संवत् १७७८ मिती भादुवा सुदी १० सोमवार दसतषत फतेहचंद का श्री ॥

विषय—मान सबधी कवित्तो का सग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल ज्ञात नही है । लि० काभ सवत् १७७८ वि० है ।

रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती', का विवरण-पत्र ।

प्रस्तुत रचना कवित्तो मे है जो साहित्यिक दृष्टि से उत्तम है ।

संख्या १२६न१. विरही कौ मनोरथ, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८३⁄४ × ६३⁄४ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, रचनाकाल—सवत् १६६४ वि०, लिपिकाल—सवत् १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ बिरही कौ मनोरथ दोहा ॥

कहौ मनोरथ विरहिया मन की उकत बनाइ ।
जो तरंग घटि उपजिहैं सो दैहौ प्रगटाइ ॥
चित्र पूतरी देषिकै चकित रही कहि जान ।
लगी टगी रसना थकी निकसि गए हैं प्रान ॥ ३ ॥
विरह भ्रम मै बिरहिया पूछत सबसौं बात ।
फिरि उत्तर दै आपुही...तत दिन रात ॥ ४ ॥
क्यौं न चलत बैठ्यो थकित कहत पहारक...म ।
डरनन मिस रोयौ करै तोहू कौं पिय पंमु ॥ ५ ॥
गिर भाषै सुनि बिरहिया मेरी सम तूं नांहि ।

अंत—

काहे चित भरमत फिरै जैसे चपल बयार ।
निहचल ह्वै कवि जान कहि घरहो मोहि निहारि ॥ ४३ ॥
सोरह सै चौरानवै चैत मास कै अंत ।
बरन्यो सागर पंमु कौ जान काबि हित संत ॥
ग्रंथ बिरही का मनोरथ संपूरन भयौ १७७८ ॥ भादुवा सुदी १० ॥

विषय—विरह विषयक दोहो का संग्रह ।

रचनाकाल

सोरह सै चौरानबे चैत मास के अंत ।
बरन्यौ सागर पैमु कौ जान कबि हित संत ।।

विशेष ज्ञातव्य--रचना काल संवत् १६६४ और लि० का० संवत् १७७८ वि० है। रचयिता जान कवि हैं। इनके विषय में देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र।

संख्या १२६ष१. पैमुनामा (? प्रेमनामा), रचयिता--जान कवि, स्थान--फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--४, आकार--८$\frac{3}{2}$ × ६$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप्)--६६, पूर्ण, रूप--प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी और कैथी मिश्रित, रचनाकाल--संवत् १६७५ वि०, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि--ग्रंथ पैमुनामा

।। चौपई ।।

प्रथम पैमु भयौ करतार । रच्यौ महंमद पैमु पियार ।
पैम नबी सिरज्यौं संसार । पैम नबी ससि सूरज तार ।।
पैम नबी आकास रचाए । सुरग धाम निध बंन बनाए ।।
बेघत सुनत रचन करतार । सबै महंमद पैम प्रकार ।।

।। दोहा ।।

पहिलें तौ कवि जान कहि हौ न जगति कौ साज ।
रचना रचौ विरंच सब पैम महंमद काज ।। २ ।।

अंत--

घाट बाढ़ एकके नही बरिष.....हि मास ।
ते संपूरन जांन कहि सभ मैं पैमु निवास ।।

।। दोहा ।।

सोरह सै पचहत्तरै जहांगीर की आंन ।
पैमु भयौ चित जांन कवि कीनौ पैमु बखांन ।।

इति पैमुनामा संपूरन भयौ मिती भादुवा सुदी ११ मंगलवार दसतखत फतेहचंद का। दोहा २१ चौपई २० श्री श्री श्री ।।

विषय--प्रेम विषय का वर्णन।

रचनाकाल

सोरह सै पचहत्तरै जहांगीर की आन ।
पैमु भयौ चित जान कवि कीनौ पैमु बखांन ।।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल संवत् १६७५ वि० है। लि० का० दिया नहीं है।

रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र।

प्रस्तुत रचना जहांगीर बादशाह के समय मे लिखी गई।

संख्या १२६क१. नाममाला अनेकार्थ, रचयिता--जान कवि, स्थान--फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज--देशी, पत्र--११, आकार--८$\frac{3}{2}$ × ६$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--२१, परिमाण (अनुष्टुप्)--३३०, अपूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी और कैथी, प्राप्तिस्थान--हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—ग्रंथ नाममाला अनेकारथी कवि जान कृत

॥ दोहा ॥

पर्थम सुमिरौं एक कौ जाके भाव अनेक ।
एकं कारहिं सुमिरिहै साचौ ताहि विवेक ॥
दूजं सुमिरौं नबी कौ मन रसना करि एक ।
कहत जांन जिहि नाम तै आनद हौहि अनेक ॥ ३ ॥
अबहि नाममाला करौं अनेकार्थी नाम ।
संसकित तै भाषा रची सुगम भई अभिराम ॥ ४ ॥
एक भांति के बर्न मै एक ठौर ही कीन ।
जो चाहिए सो पाइए तंत सुनहु प्रबीन ॥ ५ ॥

अथ ककार बर्न ॥क॥

चितु मस्तक नीर तन कर्ज दर्व रु कांम ।
पवन कनक सुष काल पुनि जांनहुं ब्रह्मा नाम ॥ ६ ॥
विप्र जु न्हावै भोर कौ कीट दभ कहि जांन ।
कर कंबल कंथा बहुरि इते कुथा धरि कान ॥ ७ ॥

अंत—इकार बर्न

पंच इंद्री इंद्र पुनि पंच विषै रु सरेस्ट ।
इद्र एक व्याकर्न पुनि भाषत है बुधि स्रेस्ट ॥ ३८ ॥
धरा बाम बुधि अंबिका नीर सरसुती गाइ ।
इला कहति इन सबनि कौ जांन कह्यौ समुझाइ ॥ ३९ ॥
नीर प्रिथवी वचन पुनि और जानियहु बांन ।
इन सबकौं ईरा कहै जे पंडित कहि जान ॥ ४० ॥

॥ उकार वर्न ॥

हुं स्थान ये कांति कौ और समीप स्थान ।
पुनि................................ ॥

विषय—कोशविषयक ग्रथ ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अंत से खडित है, इसलिए रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात रह गए ।

रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र ।

संख्या १२७. प्रेम लीला, रचयिता—मिरजा मुहम्मद जान, कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—७$\frac{8}{10}$ × ४$\frac{8}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—फारसी, लिपिकाल—सं० १९०६ वि०, सन् १२६५ हि०, प्राप्ति-स्थान—श्रीयेत् गोपालचंद्र सिंह एम० ए०, सिविल जज, मुलतानपुर, (अवध) ।

आदि—

बांसुरिया बिछुरन भई भारी । बिछुरन दुख वह रोइ पुकारी
जब वह रोइ बिछुर बनबारी । धुनि सुनि रोये पुरुष अरु नारी
जल सों बिछुरि मछरिया रोइ । मेरो मिलन बहुरि कब होइ
कैसे निबहै जीवन मेरो । रीत परे संग तजौ न तेरो

निकसि तीर सों बाहर पड़ी । खन उलटी खन सूधी गड़ी
तखवर सों जिमि पाती झड़ी । पौन क मारी इत उत पड़ी
विरह वियोग किमि जाने कोइ । जापर बीते जाने सोइ
अपने प्रीतम लाल से मिलि विछुरे जनि कोइ
बिछुरन दुख सो जानहिं जो कोइ बिछुरा होइ

अंत— मेरे मन की कामना पूरन कर भगवान
हाथ जोड़ि बिनती करूँ बिनती लीजे मान
हूँ अजांन सेवक मै तेरो । तू सुजान साहब है मेरो
मैं अजान को सब तू जाने । वृथा.......
ना कछु जानों ना कछु बूझों । अगम पंथ का अन्त न सूझो
अगम पंथ को मै बैरागी । अगम पंथ क.........लागी ।
वामग को कर मोह बनावो । मोह तोह लहत को को छाड़ छिपायो
निरमोहीं कर मोर गोसाई । ना फिर हँसि है लोग लुगाई
अंत काल जो मोंह जिआयो । इन आगिन जन मोह जलावो
अहो रखैया लाज की अहो गरीब नेवाज ।
मोह अस पतित वेकाज की राख लीन जो लाज ।।

प्रेम लीला मिनत शनीफ मिरजा मुहंमद जान...सन १२६५ हिजरी ।

विषय—प्रेममार्गीय (सूफी) रचना ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता मिरजा मुहमद जान है । रचनाकाल अज्ञात है । लि० का० संवत् १९०६ वि० है ।

रचयिता का अन्य परिचय नहीं मिलता ।

संख्या १२८. "शत्रुघ्नश कुठार", रचयिता—जानकी दास, निवास स्थान—बरौसा, (सुलतानपुर), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ x ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०८ वि० प्राप्तिस्थान—श्री प० रामसहाय मिश्र, ग्राम—बरौली, पो० गवरा, सुलतानपुर, (अवध) ।

आदि—

जब तुम शत्रुहन त मम रिपु हनि डार ।
कहै जनकी दशरथ सुत आपन नाम विचार ।। ६ ।।
दुर्गा दुर्गति करिहे मम अरि उर भ्रम जाल ।
"जनकी दास" कहै काली तवल नज विशाल ।। ७ ।।
निमक हरामिंहि खरग से हनिडारहु जग माय ।।
"जनकीदास" कहै जोरि कर पं मोहि बहुत नचाव ।। ८ ।।
नेमी तब समुझव नहीं वही किहिनि बिस्तार ।।
"जनकी कहै" ऐसे अधिहि काली कर जंजार ।। ९ ।।

।। अथ कवित्त ।।

रामदूत सवारि पवनसुत रिपुमान हनित अंजनि नंदा ।।
दुष्ट निकंदन दुख भंजन सरनपाल कपि माथ सदा ।।

कवि कोविद सज्जन मुनि बरनत संकर वेदपुरान बदा ।।
"जनकीदास" प्रभुता तव बरनो मेरे बैरी सू सिर पर बरसे गदा ।। १ ।।

अंत— ।। अथ दोहा ।।

जे जन पठति नित्यं अथ मंगर अतवार
तासु सवुहि काली करै सति खंकार।

इति श्री पोथी सत्रुवन कुठारी समाप्त माघ मास कृष्ण पक्ष तिथि अठी विप्र सुत वार स—१०६०८ सन् १२५६।

विषय—दुर्गा एवं हनूमान की प्रार्थना।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है। केवल द्वितीय और चतुर्थ सख्यक पत्रे उपलब्ध हैं। सपूर्ण चार पत्रे थे। रचना काल अज्ञात है। लिपिकाल स० १९०८ वि० है।

संख्या १२९. पदस्वयंवर के, रचयिता—जीराम, कागज—देसी, पत्र—६, आकार—११×७ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० विश्वनाथ जी तिवारी, ग्राम—नदना, पोस्ट—बरहज बाजार, जिला—गोरखपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः पद स्वयंवर के

।। सरस्वती ।।

अरी ऐरी माई ब्रह्मभवन है आव ललत सुभग पद शियाराम पद सेवक पै प्रकटाव ।।टेक।।
सकल सिंगार करी हंस पै सवार हूइ पुस्तक हाथ ली हो विणा कुं बजाव ।
सात स्वर ग्राम तिन मूरछना राग रूप होय मेरे हिय सरसाव ।। १ ।।
दीन पुकारे राति दिना धरे ध्यान तेरा आठ पहर जपों नाम करी चाव ।
तेज दे प्रकाश भरी सभा के बिच मे मेरा भरम मिटाव ।। २ ।।
गाऊँ मैं सजीले पद वासी छोडो कहो सद शिया का स्वयंवर कहने मैं भाव ।
सुगम पियारी छवि आवै सुनी भला ज्ञान असि लड़ी बताव ।। ३ ।।
मंचन पै भूप बैठे नर नारि असि कहै शिया जोगी वर रानि राजा कुं बताव ।
कहत जी राम नाहि देर लावै राजा इव भला बना है दाव ।। ४।।

:o: :o: :o:

मध्य—

।। रामजी ठावै ।।

अजी एजी जैसे उछल के हरी चलता । मटकि चटकि प्रभु छैल छबिला मुकुट शिश पै हलता ।।टेक।।
अंठि कै सो थंभ मारी देखति सोभा बिसारी रावरण सो आय देखि हिए मांहि जलता ।
शीया जी समेत सभ प्रजा विमुखि हो देख्यो सफल मनोरथ फलता ।। १ ।।
संबूक के चौफेरं रघुनाथ नाच कुंद फीरै बड़ी वाकै बिच सभा मैं प्रभु खिलता ।
लाय मुठि ठाय धनु मान तेज वोरीयो का छिन्न एक मैं हलता ।। २ ।।
ठायो हि निकसि लगे नाचने चंचत फिरै ठणंक ठणंक रूण झूण घोरै ढलता ।
को हो कू को हो कू तुम तुनुनु धक धक मेघ घोर मैरमै रलता ।। ३ ।।
चंचलै उठायो फिरै थालो हि नीशाने धरै मन मैं रावण रोवै बैठा थेली मलता ।
कहत जी राम करे तिन टूक विचहु तै जनक अंक भरी मिलता ।। ४ ।।१२।।

।। चारण कहै ।।

अजी एजी शीता रामचंद्र कि जोरी । विधि ना लिखि बिचारी एकशि सुनो असिका मेरी ।।टेक।।

ठाढ स्यों धमकि धनु पंचि वांचि तोरीमे राजे ध्वनि भ्रशो विशा भरी है बहोरी ।
बाजते हैं ताले डोर ढोलकि सहनाइ भेरी गावति है मंगल प्रभु के गुन गोरी ।
दान लेय जाचक अंघाय झोरी चले भरी सजी नंद की पोरी ॥ १ ॥

इतने में राजा सभ नीच सो रोसाय गए बाजे तरवारी वेले फाग मचे होरी ।
युद्ध विना जीतोहि मिले ना शिता काहू कुं विअसे मुसकाय के बजावे गाल कोरी ॥
साधु राजा शीलवान धरा चुचकारीक रहे बधे प्रेम की डोरी ॥ २ ॥

सुन घन घोर भृगुनाथ सो रोसाय कहै शिव का चाप इव दीया किन तोरी ।
लक्ष्मण रोशाय क जुवाव दोय च्यारी कहै प्रभु नै मनाए सो तो दोउ कर जोरी ॥
धनुष चढ़ायवाकि कला खैचि लइ दैत्य चलै करी करी चोरी ॥ ३ ॥

भृगुपति हंसे जब अस्तुत गाय कहि मैं तो थारे चरनो मैं मनघों बहोरी ।
भक्ति दान ज्ञान इन दीजै भगवान मोहि वह्री जी मै जाय बसो देवि शुभ ठोरी ।
कहत जीराम फूलमाल गल डारी हसि शीता जनक किशोरी ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

अंत—— ॥ भाटक ॥

अजी एजी जीवों दशरथ अवधि नरेश । राम लक्ष्मण भरथ शत्रुघन सुख
पावो यह देश ॥टेक॥

महादेव गौरी गंगा गायत्री सावित्री विघन निवारो गजवदन गनेश ।
ब्रह्मा मुनि सारद श्री अंबिका भवानी थारा मेटो शकल कलेश ॥ १ ॥
योगोनी रभैरों तो सहाय करो विष्णु तेरी कृपा करो प्रभुजी इंद्र सुरेश ।
दान ले पछिक गया काया तो स रल मेरी घों मैं शिश हमेश ॥ २ ॥
जो को गावै या कुं मन लायक सुनै जो ज । पूजन करै जो प्रेमी मिटत अंदेश ।
सारद कि दइलड़ी उमंग सें कहो सुनो सभ कुं घो उपदेश ॥ ३ ॥
कहत जी राम रघुनाथ नीकें हाथ दीया भाटन कुशल पतरी का संदेश ।
राम जै राम श्रीराम शीताराम पद राति दीवस रटै शेष ॥ ४ ॥२४॥

:o: :o: :o:

विषय——ख्याल शैली मे सीता स्वयवर का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य——रचना काल और लिपिकाल अज्ञात है । रचना पदों में, ख्याल और लावनी बाजो की शैली मे, की गई है । हिंदी के प्रचार का बहुत कुछ श्रेय ख्याल और लावनी बाजों को भी है । अतः इस दृष्टि से रचना महत्त्वपूर्ण है ।

संख्या १३०. "नारायण लीला", रचयिता——जीवन दास, (?), कागज—— बांसी, पत्र——१०, आकार——$8\frac{1}{2}$ × $4\frac{9}{10}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)——९, परिमाण (अनुष्टुप्)——१४१, खंडित, रूप——प्राचीन, (जीर्ण-शीर्ण), पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——पं० महादेवप्रसाद चतुर्वेदी, ग्राम——महंगवा, पो०——मरहद, जिला——गाजीपुर ।

आदि——श्री मते रामानुजाय नमः ॥

जय जय जय श्री जगन्नाथ नारायण स्वामी । ब्रह्मा आदि की हांन जीव सर्वांतर्जामी ।
सचराचर बहिरा व्रसा अभ्यंतर होई । सर्वात्मा सर्वज्ञ नाम नारायण सोई ।
सर्वभूतहित कारणे नारायण नामा । भुवन चतुर्दश उद्र राखि जल मै विश्रामा ।
शेष नाग पर्यंक शायन पंकज नाभि जाता । तहाँ अवतरे चतुरानन सृष्टि आदि विख्याता ।
भूत भविष्यत वर्तमान नानाविधि अवतारा । नारायण आदि मूलबीज ब्रह्मांड विस्तारा ।

नारायण मूलनाम अर्थको करिहैं ब्याख्याना । नारायण महिमा अनंत नारायण मन आना ।
श्री नारायण अवतार कथा सुनहु मन लाई । कर्म नशाई बहु ज्ञान हरि भक्ति कराई ।

:o: :o: :o:

जाति अनुक्रम कारि वराह सुंघत सुंघत डोलै ।
जाको खोज निगम करैं नेति नेति जो बोलै ।।

:o: :o: :o:

अंत--

ताते इह कुमार अवस्था बड़ भागन पाई ।
राज काज सब छाँडि के हरि के गुण गाई ।
सर्व बालक कहे प्रहलाद हम तुम एक नग्र के वासी ।
एक संग वसै एक पाठ पढै इह वुद्धि कहा प्रकाशी ।
तब वोले प्रहलाद भक्त सब बालका सुनोरे भाई ।
जो मैं पूर्व कथा सुनी सो कहूं समुझाई ।
एक समय असुरराज तपकरण सिधारे ।
तेहि औसर सुरराज चढ़ि मुलतान पुर पटणमारे ।
काया धुकों जे चल्यो वह्य पुत्र छोड़ाई ।
तेहि अवसर गर्भवास मोहिना......... ।

--अपूर्ण

:o: :o: :o:

वैसा मासे कृष्ण पक्षे शुक्र................
पठना रविवैस्नवा जिवनदासंदासं श्रीराम..... ।

विषय--नारायण के अवतारों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रंथ खंडित है । समस्त १० दस पन्ने उपलब्ध है । मध्य के सात आठ तथा बारहवे संख्या के पत्रे लुप्त है ।

संख्या १३१. ज्ञान चंद्रिका (नासकेत पुराण), रचयिता--जीवन राम, कागज--देशी, पत्र--४६, आकार--६×६$\frac{8}{10}$ इन्च, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--७७६, अपूर्ण (खंडित), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि कैथी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरी प्रचारिणी-सभा, वाराणसी ।

आदि--

नासकेतु स्पुनी करै प्रनामा ।। वाउ वेगी पहुंचे नीज धामा ।।
जेही वीधी गएउ सरग उठी भाई । तेही वीधी तुरीत वही पहुंचे आइ ।।
ऐह सब चरीत कहो मै गाइ ।। नौमीखारध मंह पहुंचे आइ ।।
मातु पिता रोवत इत देखी ।। सोक वीवस वहु सोक विसेखी ।।
मातु पिता दुख पावत नीके ।। नासकेतु आए मुनी जी के ।।
उदआलक सुत देखी हरखाए ।। हरख समेत लीन्ह उर लाए ।।
उदालक मनि हर्ष जुत लीहे पुत्र उर लाए ।।
गदगद गीरा न आवइ बार बार हरखाए ।।
उदालक कह अती हरखाई ।। जन्म सकल सब जग सोहाइ ।।
कीआ सकल सुत पूरन कीन्हा ।। इहा आइ मोही दरसन दीन्हा ।।
पूजा आजु सकल वीधी पूजा ।। सुत समान धर्म नहीं दूजा ।।

:o: :o: :o:

उबालक पितु नाम है जननी, मातु सुबेसु ।।
चन्द्रावती जानत सबै नाम रघुराज के बेसु ।।

अंत—

बीज हत्या अधीक पातख नाना ।।
नीरक्रीत होइ कवन बीधाना ।।
ब्राह्मन देखत करत नर कोइ ।।
तीन्ह सम पाप अवर नहीं होइ ।।
बीस्वासघात करत वर कोइ ।।
आनक क्रीत बीधीनी कर सोइ ।।
सुबरनीय दीज गवन कराही ।।
सो दीज नरक सत्य चली जाही ।।
सुदर भवन दीज आसन करइ ।।
नींदही बेद नरक चली जाही ।।
गुर नीदक देखेउ जग माही ।।
नीक्रीत होही कवे सुख नाही ।।

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—नासकेत मुनि का जमपुर जाना और वहाँ से लौटकर आना तथा जमपुरी के सुख-दुख का वर्णन करना।

संख्या १३२. आठ प्रहर मूल चेत प्रसंग भाग १–२, रचयिता—जुगतानंद, कागज—बाँसी, पत्र—१५, आकार—४½ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—

है निरखत छांही, जुगतानंद कहै ना भजै हरिकी अति हरषाय ।।
ऊठि बडे प्रभात ही घोडे करम कमाय ।। ६ ।।

।। कुंडलिया ।।

पहर छठे के लगत ही सुमरों वा भगवांन ।।
करै धंध मन मग महो भोंडू निपट अयांन ।।
भोंडू निपट अयांन बांन ऐसी नही गेरैं ।।
निकट आतमा राम तास को छिन नींह हेरैं ।।
जुगतानंद कहैं समझ विन है पसु की सामांन ।।
पहर छठे के लगत ही सुमरों ना भगवान ।। ७ ।।

मध्य—

अथ आठ पहर दूसरे मूल चेत प्रसंग वरनते ।।

।। दोहा ।।

सुभ मारग अटि जोग गति ज्ञान उदै हो आय ।।
जो सतगुर पूरन मिलै देवै तिमिर नसाय ।। १ ।।

आठ पहर बूझें कहूं मूल चेत परसंग ।।
गुर मिल चेतन होते है नातरफ सें कुसंग ।। २ ।।
बहुतक नर भूले फिरें कहूं जू तिनकी चाल ।।
चिंता चाह लगी रहै और न दूजो ख्याल ।। ३ ।।

अंत— ।। दोहा ।।
ब्रह्म दरस औ परस है ब्रह्म सरस सुष षांनि ।।
ब्रह्म गुरु और सिष भयौ ब्रह्म एक पहचानि ।। १५ ।।
अलद जल पाले मैं भेद कछू मत मानियौ ।।
जल ही पाला भयौ फेरि जल जानियौ ।।
चरनदास को रूप ब्रह्म ही रूप है ।।
जुगतानंद सोई लह्यौ प्रगट और गूप है ।। १६ ।।

।। दोहा ।।

जब भयो चेतन रूप मै सब चेतन दरसाय ।।
जटता अंग विसारिया मुकति बंध अबकाय ।। १७ ।।

इति श्री गुसाईं जुगता नंद जी कृत आठ पहर मूल चेत परसंग समाप्त ।। लिखतम बिसनानंद जी की ।।

विषय—इसमें आठों पहर के कृत्यों का वर्णन है और बीच-बीच में उपदेश भी दिए गए हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ के रचयिता का नाम जुगतानंद है । इनके गुरु का नाम चरणदास था । इससे विशेष इनके विषय में ज्ञात नहीं ।

ग्रंथ आदि के तीन पन्नों के नष्ट हो जाने से खंडित है ।

संख्या १३३. ढाढियादान, रचयिता—जैकृष्णदास, कागज—देसी, पत्र—४३, आकार—४ × ५।। इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री विद्या विभाग, काँकरोली, सरस्वती भंडार, हिं० बं० सं० ४३, पु० स० २ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ।। श्री कृष्णायनमः ।। राग सोरठ ।
पुत्र भयौ आनंद ह्वै पूरन परमानंद, ढाढी आयो जाचने तन मन भरि आनंद ।।१।।
बनी सभा सुंदर महा सोभा बरनी न जात, इंद्र सभा जहां वारिए औरन की कहा बात ।।२।।
रतन जटित खंभा बने कनक भई सब भूमि, लगी वितानन झालरी मोतिन की रही झूमि।।३।।
सत्यलोक शिवलोक की वैकुंठहू की जानि, रही संपदा छायकें तिहू लोक की आनि ।।४।।

मध्य—
नवहु नंद कौ जस अमल जानत सब संसार, रोम रोम रसना करों तउव न पाऊं पार ।४२
कहा बरनो श्री नंद कौ बरनत वेद पुरान, पुत्र भयें ऐसो कोहु दियो न देहे दान ।४३
पुत्र भयें सुख होइ सति एक एक परिवार, यह सुख व्याप्यो सकल हिय थिर चर जो संसार ।४४
प्रहसित ह्वै श्रीलक्ष्मी आनि खरी भई द्वार, अनघन देत घटे नहीं अछय भरे भंडार ।४५
मैं विचार मन मै कियो अरु सुन्यो पुरानन मांहि, नंद गेह परगट भए पुरुषोत्तम भ्रम नांहि।४६।

अंत—वरषा वरषें भुवि जैसें दीन्हों व्रज नारिन ऐसें ।
चारिहू दिसि संपति छाई द्रग द्रष्टि नही ठहराई ।
ठहराइ नहि द्रिग दृष्टि जगमग सोन के परबत लगे ।

लेहिं कहां लगि चकित ह्वै रहे परम सुख तन मन पगे ।
पगे सुख दोऊ लगे नाचन देत आसिष चाव सौं ।
बरन्यौ यह जस निर्मल अति जैकृष्ण जन बहु भाय सौं ।१।।

इति श्री जै कृष्णदास कृत ढाढ़िया दान संपूर्ण ।

विषय—श्रीकृष्ण के जन्म होने पर ढाढी का याचना करने को आना और श्रीकृष्ण की महिमा वर्णन करना, पश्चात् नंदराय जी का ढाढी को प्रचुर मात्रा में दान, पारितोषिक देना आदि वर्णन । शुद्धाद्वैत संप्रदाय की दृष्टि से ग्रंथ कीर्त्तन पद्धति का है और उसमे नंद महोत्सव का सांगोपांग वर्णन है ।

संख्या १३४क. रामार्णव (द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पंचम आर्णव), रचयिता—झामदास, कागज—देसी, पत्र—३४२, आकार—१२$\frac{३}{४}$ × ५$\frac{१}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६९४, खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भगवानदत्त मिश्र, ग्राम—ककरा, पो०—हनुमान गंज, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। शीतारामाभ्यां नमः श्री मद्गुरु चरण पंकज जाभ्यांनमः श्री मद्गनुते नमः ।।

।। श्लोक ।।

सिधूराश्यं सर्व भूतै रूपाश्यं देवै वद्यं मंगलादि गनेशम् ।
विना नांवै कोटि विछेदकार वंदे नित्यं सवंदं सर्व सुखम् ।। १ ।।

:o: :o: :o:

।। सोरठा ।।

सेइ सजल घनश्याम रामसीय दामिनि सरिस ।
हरत घोर भवघाम करुणा जल जग शसि सुषद ।। १ ।।
नील पंकरुह पाउ वशत सुमुनि मन मधुप जंह ।
वंदों सोइ वह भांउ ध्याउ जाहि गिरिजारमण ।। २ ।।

:o: :o: :o:

।। दोहा ::

कवित विवेक न एक मोहि नहि वहु वुद्धि विशाल ।
वरणों एह तब सुजस तव जव अति होहु कृपाल ।। १ ।।

:o: :o: :o:

।। चौपाई ।।

रघुपति ब्याह कथा कछु वरणी । कहत सुनत मन वांछित करणी ।।
सुनि अब अपर चरित चित लाई । हरण सकल संदेह सवाई ।।

:o: :o: :o:

अंत—

जो चाहत सिमति मंद छंद आपु शों आपु ।
"झाम राम पद मलिन नहि सहिहो पुनि परितापु ।। १२ ।।
राम भजन तें काम सब सिद्धि होत विनु सिद्धि ।
पारस परस कुधातु ज्यों निर्म्मल शमलन विद्धि ।। १३ ।।

इति श्री मद्राम चरित्रे रामार्णवे सकल पाप प्रशमने विमल विज्ञानान्य भक्ति प्रदायके उमा महेश्वर सम्वादे पंचमार्णवे वानर सैनिकागमनश्राम दशमस्तरङ्ग ॥१०॥ सो० २॥ दो० १३॥ चौ० ३६॥ छंद १ ॥ स० ॥ ५२ सुंदर कांड समस्त सो० २१ दो० १७१ ॥ चौ० ६४६ ॥ छं० १८ ॥ सं० ८६१ इति रामर्णवें सुंदर कांड समाप्तम् ॥ श्री राम श्री ॥

विषय--अयोध्या काड, अरण्यकांड, किष्किधा काड और सुदर काड की राम कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य--हस्तलेख मे बालकांड, लका काड और उत्तर कांड को छोड़कर शेष कांड वर्तमान है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या १३४ख. रामचरित्र, रामार्णव (बाल और सुदर काड), रचयिता--झामदास, कागज--देसी, पत्र--१८७, आकार--बा० का० १३¼ × ५½ इच, सु, कां०--१०¾ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ')--११, परिमाण (अनुष्टुप्)--१९९६४, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८१८ वि०, लिपिकाल--१८६५ वि०, प्राप्तिस्थान--डेरातर के महाराज, स्थान व पोस्ट--माडा, जिला--इलाहाबाद

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्लोक ॥

वांछा भूमिरुहं रामं जग व्याधैर्वरौषधम् ।
वंदे वेदान्तविद्वंद्यं भवाब्धे कुम्भसंभवम् ॥ १ ॥
:o: :o: :o:

॥ सोरठा ॥

वंदौ गणपति पाए मंगलादि अनिमादि प्रद ।
अज्ञ तिमिर उर छाए जासु ध्यान दिनमणि सुषद ॥ १ ।
:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

वंदौ प्रथमहि सज्जन चरणा। जासु गिरा गोपतितम हरना ॥
कृपा सिंधु संतत सुषदाता। विचरहि विस्व जीव हितराता ॥
छमा छमा सम सगुण विलासी। विधु सम गिरा पियूष प्रकाशी ॥
सुरसरि सम सुभ चरित सुहाई। सन्मुष होत सरिस फलु पाई ॥
:o: :o: :o:
संवत करि विधु वसु महि मांही। मधु सित सोम राम जनु जांही ॥
मंगल मूल जानि आनंदी। करौं कथा रघुपति पद वंदी ॥
विन्ध्य क्षेत्र सुरसरि कय तीरा। करौं कथा भंजन भव भीरा ॥
:o: :o: :o:

अंत--

निज बल वर सब तुम्हहि सुनावा। संक न जु उर हर्ष बढ़ावा ॥
अस विचरि मोहि आवत जाता। वेर न पीर न रघुपति भ्राता ॥
अस सुमंत्र करि कपिन्ह समेता। गयउ महेन्द्रो परिचय वेता ॥
:o: :o: :o:

॥ छंद ॥

एह करि विचार महेन्द्र ऊपर आइ अद्भुत तनु धरी।
प्रतिमा महा महिधर समान सुबरण सुबरण मय करी ।
कनि मोह सम बरबांहरण महि माँह बक्र विराजही ।
जन भाम काम करंत सोइ रिपु हन संतन्ह साजही ।

॥ सोरठा ॥

सकल संक भवपक वहु कलंक नाना दुखद ।
महावीर श्रुति अंक रसनारमत विलास सब ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

एह कलि पारावार मंह परो न पारावार ।
भाम राम गुनगान तें बिनु प्रयास निस्तार ॥

इति श्री मद्रामचरित्रे रामार्णवे सकल पाप प्रसमने विमल विज्ञानजन्य भक्ति प्रदायके उमा महेश्वर संवादे चतुर्थार्णवे समुद्र सतरणे व्यवसायो नामैकादसस्तरंगः सो० ॥१॥ दो ॥ २३ ॥ चौ० १८४ ॥ छंद ॥ १ ॥ सो० २६ ॥ दो० ॥ २०६ ॥ चौ० ॥ १५७६ ॥ ॥छं० ॥ २५ ॥ इति श्री चतुर्थ ॥

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

संवत करि विधु वसु महि मांही । मधु सित सोम राम जनु जाही ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८१८ है : लि० का० 'बालकाड' के अंत में संवत् १८६५ दिया है। अतः चतुर्थ काड (किष्किधा) का भी यही लिपिकाल समझना चाहिए ।

रचयिता का नाम भामदास है। स्थान से पता चलता है कि ये पहुँचे हुए साधु थे। विध्याचल घाट पर इन्होने प्रस्तुत रामायण की रचना की। आकार प्रकार में प्रस्तुत रामायण 'रामचरितमानस' से दुगुनी है। इसमें रामायण के प्रसिद्ध प्रसिद्ध वानरों की कथाएँ दी गई है। साहित्यिक दृष्टि से यह साधारण कोटि की रचना है।

यद्यपि इसकी प्रस्तुत प्रति जीर्णशीर्ण तथा खंडित रूप मे है तथापि 'बाल' और 'चतुर्थ काड' ही ऐसे हैं जिनके विवरण सुविधापूर्वक लिए गए है। अन्य कांडो के पत्र बहुत अस्तव्यस्त एव जीर्णावस्था मे होने के कारण, उनके विवरण नही लिये जा सके।

रचयिता ने ग्रंथ का नाम 'रामचरित रामार्णव' रखा है। चतुर्थकांड का प्रथम पत्र लुप्त है।

संख्या १३४ग. ज्वरांकुस, रचयिता—भामदास, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—७ × ४१⁄१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्वरांकुस ॥

महावीर धीर पर पीर के हरनिहार बार बार बंदत वर्णन न जानि ओर ।
भूत प्रेत पूतना पतंग पवमान जस मसक समान करि रक्ष अक्ष आदि घोर ॥
दुष्ट दोष द्रावण औ रावण विरावण कै द्रावण प्रचंड दोर दंड अति सारसोर ।
रामदूत पवनपूत पुरहूते बंदनीय "भाम" काम अवर काम कौस कहा भयो मोर ॥

:o: :o: :o:

साकीनी औ डाकीनी बराकिनी के जोर कहा महामारी मारी आदि अरण में बिदारी है ।
ब्रह्म रक्ष जक्ष भूत हूतके करत भारे भाजि जात प्रेत औ पिशाच आंच भारी है ।
दृष्टि दोष मुष्टि दोष रोष जन्य दोष महा कहातें विचारि जाके दंभ दंभ धारी है ।
जाके नाम ज्वलन जलाय क्षन माह दुष सो सुभाव "झाम" काम कौस क्यों बिसारी है ॥

अंत--

मंत्र यंत्र तंत्र हेरे भेषज घनेरे मेरे दुष के हरैया नाहि दूसरो निहारिए ।
दीन अति पीन आधि व्याधि सों विकल महा मेरी दिसि देषि वाण आपने विचारिए ।
वीर बलिबंत संत संकट हरनिहार भार अधिकार.................

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--हनुमान जी की स्तुति की गई है।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। पुस्तक अपूर्ण है। आरंभ के केवल दो पत्ते उपलब्ध है। इसकी दूसरी भी प्रति मिली, पर वह भी खडित है।

रचयिता झामदास है। इनकी रामायण का भी विवरण लिया गया है।

संख्या १३४घ. ज्वराकुश, रचयिता--झामदास, कागज--देसी, पत्र--५, आकार--७ × ३$\frac{७}{१६}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--८५, खडित, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्ति स्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि...दिदारी है ।
ब्रह्म रक्ष जक्ष भूत हूत के करत भोर भाजो जात प्रेत औ पिसाच अचंभ भारी है ।
दृष्टि दोष मुष्टी दोष रोष जन्य दोष महा कहाँ ते विचारि जाके दंभ दंभ धारी है ।
जाके नाम ज्वलन जलाय क्षन माह दुष सो सुभाव झाम काम कोस क्यों बिसारी है ॥ २ ॥

अंत--

.........ल प्रताप जाको ताको जेन्ह वुझी फल कौल करी डारी है ।
जागत अषंडल प्रभाव जाके राहु बाहु वीक्रम बीलोकी कं सीधारी है ।
देवता समेती देव चक्र औ कचौत भारे हौर टुट दानव देषी दोरा जोरा भारी है ।
सोइ बाहु बीक्रम बीलोकीकं प्रसीधी जानं लोक सारे थारे बल "झामदास" त्रास को बीसारी है ॥ १८ ॥
संत सुषदाई औ सहाई सदा संकटके वंकट से सोक जो विलोकतं मीटाई है ।
दपट औ झपट लंगुर की लपेट पीछे कोन ऐसो सत्रु जसोधरि.............

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--हनुमान जी की स्तुति की गई है।

विशेष ज्ञातव्य--पुस्तक आदि अत से खडित है। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं।

संख्या १३४ङ. ज्वरांकुश, रचयिता--झामदास, कागज--देसी, पत्र--४, आकार--७$\frac{१५}{१६}$ × ४$\frac{१}{१६}$ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--६१, खंडित (केवल प्रथम पत्र नही), रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० रामकिशन जी मिश्र, ग्राम-ककरा, डा०-हनुमान गंज, जिला-इलाहाबाद।

आदि...............................शासूल प्रतिकूल बाई है ।
आनन की सूल अवगाहु बाहु सूल महा कहा कहों उदर की सूल अधिकाई है ।
वक्ष कुक्ष कटि सूल जानु जंघ संघ सूल पाय सूल कृछ मूल जात न बताई है ।
सूल समुदाई महावीर वेगि दूरि कर वृक्षि वाण आपनों प्रसिद्ध बेद गाई है ॥ ३ ॥
अतिसार सन्यपात जात जो अनेक भाँति महाबीर पीर जानि बेगहि बिदारिए ।
ज्वरन के जूह दुष देत तव दास कहुँ त्रास हर तार निज नाम सुनि वारिए ।
होत आचरज एह बीर बलवान बहु नाम तो जपत जुरजोर कर मारिए ।
भानु की उदय पवमान सुत जोहि जिय जगत कहुं निकर निहार नीहारिए ॥ ७ ॥
अंत—
शोभा के सदा अगार शीलता पारावार बार बार संत-श्रुति सूरि सबं गाई है ।
हाटि काइ के अकार कोश केशरी कुमार चारु चर्ण जानु पानि सुषमा सुहाई है ।
शीश कीट भारी भ्राजु कर्ण कुंडलै विराजु साजु अंग अंग सो अनंग की निकाई है ।
कामदास रूप सोई मानस निमेष जोई होई सोई आनंद समुद्र सुषदाई है ॥२१॥
इति श्री ज्वराकुंश हनुमत्कवि का समाप्तम् ॥
विषय—हनुमान की विरुदावली वर्णन ।
विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का प्रथम पत्र लुप्त है । रचनाकाल और लिपिकाल नहीं है ।

संख्या १३५. दम्पति प्रत्युत्तर, रचयिता—टोडरमल (कायस्थ), निवासस्थान—सुवसुवा (?), कागज—देसी, पत्र—४, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा, (याज्ञिक संग्रह) काशी ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ दंपति प्रति उत्त ग्रंथ दोहा ॥
श्री गुरु गणपति शारदा वंदि चरण अभिराम ॥
गुन अवगुन सब दिशन के वरने करि परनाम ॥ १ ॥
पत पत्नी संवाद यह टोडर प्रघट सु कीन ॥
दंपति प्रतिउत्तर यही ग्रंथ नाम धरि दीन ॥ २ ॥
दंपति बैठें परस्पर बातें करत विनोद ॥
इछया उपजी पुरुष सों कही मानि मन मोद ॥ ३ ॥

पति उवाच—
देसाटन पूरब दिसहि करिहैं सो शनि वाम ॥
सुखदायक ह्वां चीज जो वरिनि सुनावौं नाम ॥ ४ ॥

मध्य—
पति उवाच—
पूरब ते रावे भलं दक्षिन को अब जाँहि ॥
कोन चीज उपजंत जहाँ बनि कहौं ता माहि ॥

॥ कवित्त ॥
पल्लूदार सेलाजर जरीदार भेला सालू,
चोरवर चौरा हेरी टोडर सु गाए हैं ॥
षारिज षजूरि अनंनास से अजीर केरा,
कटहर बेर सीता फल सुगाए हैं ॥

मुरट प्रवाल मणि माणक रतन लाल,
अतिही विसाल वेस मुकुता सुहाए हैं ।।
तरनी अनूप मन हरनी सो प्यारी सुनि,
दक्षिन दिशा के गुन बरनी सुनाए हैं ।। ६ ।

अंत---

तिय उवाच---

चीज चारघो दिसनि की आवति अनूठी जहाँ,
तीय कमनीयता की छवि सरसाई है ।।
वृंदावन गोवर्धन मथुरा महावन है,
अति ही पुनीत वृज वेदनि बतायौ है ।।
गेहूं गुड खांड घृत तंदुल तांबल जुत,
खान पान टोडर छम्रौं रितु सुहाई हैं ।।
राखौं विस्वास इंष्ट देव जू सहाइ रहें,
मध्य देश रहिबे कूँ पिया सुखदाई है ।। २१ ।।

उक्ति सखी की सखी की प्रति दोहा --

बुधिबल करि राख्यौं पिया तिया जु उक्ति उछाय ।।
रैंनि बिना बिछुरत नहीं कृपा कृष्ण की पाय ।। २ ।।

उक्ति कवि की दोहा--

बिधु वसु रस रिषि अंक गिनि विक्रम साष वितीत ।।
नभ तम वसमी गुरु दिना रच्यौं ग्रंथ करि प्रीति ।। २३ ।।
टोडरमल कायथ प्रगट बसत सुवसुवा वास ।।
जगति सिंह जैपुर नृपति राज सुषद परकास ।। २४ ।।
कवि कोविद सब जन जिते सीखें सुनें नवीन ।।
जथा जोग मे रीत है प्रणवपौं प्रणव प्रवीन ।। २५ ।।

इति श्री दंपति प्रति उत्तर ग्रंथ टोडरमल कृत संपूर्णम् ।। श्री ।।

विषय---ग्रंथ मे उत्तर प्रत्युत्तर द्वारा भारतवर्ष मे जितनी चीजे पैदा होती अथवा पाई जाती है उनका वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत रचना के स्थान एक ही हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएँ भी संकलित है :--

१. कलि चरित्र--बाग कवि कृत
२. कलियुग रासो--गोविंद
३. स्फुट संग्रह--

संख्या १३६. लालदास की कथा, रचयिता---डूंगरसी साधु, कागज---आधुनिक, पत्र---७१, आकार---७३/४ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)---६, परिमाण (अनुष्टुप्)---७६६ पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---सं० १६५५ वि०, प्राप्तिस्थान---आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह ४।५५ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा ।

आदि---**श्री राम जी: अथ बाबा लालदास जी महाराज की कथा लिख्यते ।।**

साध संत की अग्या पाऊं । लाल भगत की कथा सुनाऊं ।।
पुरपटन सेर परवास सुथान । तहां "डूगरसी" साध ने कियो बखाण ।।
प्रथम सुमरूं हरगुर साध । वाणी बकसो बुध अगाध ।।

निहचे हो निरमल जस गाऊं । परम तत को मारग पाऊं ॥
परम तत पूरन जगदीसा । सो बैठो अंतर घट बीसा ॥
गाफल ढूंढे पार न पावे । हर अपने जन कूं मारग लावे ॥
:o: :o: :o:
भरत षंड जहां उत्तम ठाव । धोली द्रब नना को गाव ॥
पिता बसे ससरे सुषवास । जा घर जनम लीयो लालदास ॥
धन धन घड़ी धन्य वह रैन । माता पिता सुष पायो चैन ॥
:o: :o: :o:
पिता चांदमल समदा माय । जिनकी कूष ग्रोतरे आय ॥
सदां सुचेत रहै दस मास । सत सील जहां देषो सांच ॥
तब गरब सूं बाहर आए । जननी सूं सनमुष बतलाए ॥
ग्रोधा बासण सूधा कीया । दया हुई जब सब भर दीया ॥
जोई कहै सो सांची होई । जाका मरम न जाने कोई ॥

॥ दोहा ॥

संमत पंदरह से सतावर्णे १५५७ लाल लियो ग्रोतार ।
हिंदु तुरक बिच बैठकर होत भगत परगास ॥

ग्रंत— ॥ दोहा ॥

कथा हुई किरया भई वाणी हुई अगाध ।
सतगुर मिहर मया करी भन गावै डूगर साद ॥
राम गुन गाइए ॥ हरे चोपई ॥

इति श्री डूंगर साध कृत लालदास जी की कथा संपूरन ॥ लिषी मंगत प्रशाद ने रसोइया नें हादरपुर का ने लिषाई ग्हतं श्री मलूक दास जी ने माई भोगरी अगोन की ॥ १ ॥ चांदनी सांठा वाड़ी की ॥ २ ॥ राजकोर वेरला की साहो भीहाकी ॥ ४ ॥ आसल वे वुडोली की ॥

ग्यान दास जी का चेला मलुक दास जी ॥ ८ ॥ वांचे विचारे जांकू राम राम मीती भादवा बदी १४ मंगलवार संवत् १९५५ ॥

विषय—भक्त लालदास की कथा वर्णन की गई है ।

भक्त लालदास संवत् १५५७ में उत्पन्न हुए थे। पिता का नाम चाँदमल और माता का नाम समदा था। निवासस्थान अलवर रयासत में धौलीद्रव गाँव था। ये जन्म से ही अलौकिक गुण संपन्न थे। इनकी कृपा से कितने ही पापियों का तरण तारण हुआ। ग्रंथ में इनके पुत्र, पुत्रियों और शिष्यों का उल्लेख किया गया है। शिष्य परंपरा इस प्रकार है :—

लालदास
|
बेगादास
|
भारूदास
|
निहालदास
|

हीरादास
|
ठाकरदास
|
ज्ञानदास
|
मलूकदास
(सं० १९५५ में वर्तमान। इन्हीं के कहने से प्रस्तुत प्रति लिखी गई)

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९५५ है। रचयिता का नाम डूंगर सिंह साधु है। इन्होंने अपना और परिचय नहीं दिया।

संख्या १३७. ज्योतिष और गोलाध्याय (टीका), रचयिता—तामसन साहब, कागज—आधुनिक, पत्र—१२०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६००, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७९ वि०, लिपिकाल—सं० १८७९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० महावीर जी मिश्र, ग्राम—ठटा, पोस्ट—बीबीपुर, जिला—इलाहाबाद।

आदि—ज्योतिष के विवरण ॥ आकर्षण विषय ॥

ईश्वर ने सब वस्तुओं को ऐसा स्थापन किया है कि सब वस्तु महत्व क्षुद्रत्व के अनुसार आपस में आकर्षण करती है तिससे सब बड़ी वस्तु चारो ओड़ की छोटी वस्तुओं को अपनी तर्फ खेंचती है इसलिए सूर्य पृथ्वी को अरु और और ग्रह को आकर्षण करता है। और पृथ्वी चाँद को आकर्षण करती है क्योंकि पृथ्वी से छोटा है।

अंत—अब पृथ्वी को दर्शन समाप्त हुआ है पृथ्वी के बीच में कोई एक देश ऐसा नहीं है कि उसका बिवरण इस पुस्तक में पाया नही जाता है। इन सभी से हम ये ज्ञात होते हैं कि जहाँ विद्या व्याप्त है और ब्रह्म का सत्य आराधन चलता है वहाँ लोक उँचा अभिलाषी अरु ज्ञानी अरु प्रबल अरु सुखी है परंतु जहाँ विद्या का अभ्यास नहीं वहाँ के लोक दीन अरु हीन अरु दुःखी अरु दुर्बल हैं।

विषय—आकर्षण, खगोल, जगत, ग्रह और उनकी गति, धूमकेतु, तारे, नक्षत्र, पृथ्वी, अक्षांश, देशांतर तथा पृथ्वी भर के देशों, समुद्रों, पहाडों एवं अन्य बातों का वर्णन।

संख्या १३८क. शालिहोत्र, रचयिता—रताचद या चेतनिचंद, कागज—देसी, पत्र—४२, आकार—६½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१६ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० लाल संकर्षण सिंह, ग्राम—सुदरपुर, पोस्ट—आरा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गनेशनमः आथा लीखते सालहोत्र ॥

बंदो चरन गुर कोमल कलमख तिमीर दीनेस।
सालीहोत्र गरनथं कहौउ बुधि देहु गनेस॥ १॥
बीजै करन बाजे करन गावत चारिउ बेद।
नकुल कहै सहदेउ से रवि वाहन को भेद॥ २॥
वाहन भूसुर कोस नर छतिरीन कोहे जन।
बइसी बीरषभ वहनं कहउ महीषा सुदर नीदन॥ ३॥
रवी ससी के जे बंश मे छत्री बीर परचंड।
एक सुरित बीरवल बीजै इकरत प्रभंड॥

अंत---
नागी नैन बतावै देषी । प्रक्रोत सुभाव सकल अवरेषी ।। ५५ ।।
वैद करै रोग पहिचानी । ताके हाथ न भवै हानी ।। ४६ ।।
गुरह पडे गोपी नाथा । कनकुवज मैं ए भए सनाथा ।।
तेनके सुत चरीउ अधीकाई । इंद्रजोत सीधीमन जदुराई ।।
चौथे तरचंद कहएवो । जे एह अस्व वीनोद बनाएवो ।।
हरी चैतनी नमको आसा । सालहोत्र भयो परकासा ।। ६० ।।
कुसल सीघ महराज अनुपा । चीरंजीव भुपन के भुपा ।। ६१ ।।

।। सोरठ ।।

एह ग्रंथ सुषसारा जेनके है हीतहि अएये ।
लीजे सुघर बीचारा चीतन चंद कहै जथ ।। ६२ ।।

।। दोहा ।।

संवत् सोरह सैए आधीका चारी चौगुनो जान ।
ग्रंथ कहो कुसलेसहित रक्षक श्री भगवान ।। ६३ ।।

इति श्री सालहोत्र सात अस्वची कीस समपातह ।।

विषय---सालिहोत्र विषय वर्णन ।

रचनाकाल

संवत् सोरह सैए आधीका चारी चौगुनो जान ।
ग्रंथ कहो कुसलेस हित रछक श्री भगवान ।। ६३ ।।

विशेष ज्ञातव्य---रचनाकाल सवत् १६१६ वि० है । लिपिकाल नही दिया है । रचयिता का नाम ताराचद या चेतनीचद है । ये चार भाई थे जिनके नाम इंद्रजीत, सिधमन, जदुराई और ताराचंद थे । पिता का नाम गोपीनाथ पाडे था जो कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे । रचयिता कुशलसिह नामक राजा के आश्रय मे रहते थे । प्रस्तुत प्रति की लिपि सदोष है ।

संख्या १३८ख. शालिहोत्र, रचयिता---ताराचद (चेतनचंद), कागज---देसी, पत्र---२५, आकार---८३/४ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---२२, परिमाण (अनुष्टुप्)---३७८, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---स० १६३० वि०, प्राप्तिस्थान---श्री बाबू शंकरप्रसाद सिह, खंडहर, पो०-मुपतीगज जिला-जौनपुर ।

आदि---श्री गणेशाय नमः ?। अथ सालहोत्र लिष्यते ।। दोहा ।।
नमो निरंजन देव गुरु ।। मारतंड ब्रह्मांड ।।
रोगहरन आनंद करन ।। सुषदायक जगपिंड ।। १ ।।
श्री महाराजधिराज गुर ।। सगर वंश नरेश ।।
गुन गाहक गुन जननि के ।। जात वीवित कुशलेश ।। २ ।।
जासु नाम प्रताप को ।। चाहत जगत उदोत ।।
नर नारी मुष मुषक है ।। कुशल कुशल कुलगोत ।।
:o: :o: :o:
वालापन तें सरन रहि ।। मैं सुष पायो वृंद ।।
सालहोत्र मत देषिकै ।। वरनत चेतन चंद ।। ६ ।।

श्री कुसलेस नरेश हित ।। नित चित चाउ लह्यौ ।।
"अश्व बिनोद" शो ग्रंथ यह ।। शार विचारी कह्यौ ।। ७ ।।
:o: :o: :o:
मुल मान साषा सुमधु ।। पत्रं शूभकरत राज ।।
सुमन सुफल फलिग्रौ सदा ।। कुशल सिह महाराज ।। ८ ।।
:o: :o: :o:
विसशी कुल के बंश जे ।। क्षत्रि वीर प्रचंड ।।
एक तुरी तरवारि बल ।। वीजै करत ब्रह्मांड ।। ११ ।।
:o: :o: :o:
तेहि वाहन को भेद सब ।। सुनहु सकल सहदेव ।।
पशुदेही मती जानु ऐह ।। है देवन मे देव ।। १३ ।।

अंत—

घुरहा पांड़े गोपीनाथ ।। कान्ह कुविज से भये सनाथ ।।
तिन्ह के सूत चारों अधिकाई ।। इंद्रजीत लछिमन जदुराई ।।
चौथे "ताराचंद" कहाए ।। जेहि ऐह अश्व विनोद बनाये ।।
हरिपद चित नाम की आसा ।। सालिहोत्र भाष्या परकासा ।।
"कुशल सिह महराज अनुपा ।। चीरंजीव. . . . . . .अपूर्ण ।।
. . . .(खंडित) ।।
चंदन चंद कहौ जथा ।।

।। दोहा ।।

संवत वोन से असिक चारो चौगुनो जानु ।।
ग्रंथ कहो कुसलेसहित रक्षक श्री भगवान ।।

इति श्री अश्व विनोदक ग्रंथ समाप्तम् । संवत् ।। १६३० ।।

विषय—अश्वभेद, उनके रोग और लक्षणादि का वर्णन ।

रचनाकाल

।। दोहा ।।

संवत वोन सं अधीक चारी चौगुनो जानु ।
ग्रंथ कहो "कुसलेस" हित रक्षक श्री भगवान ।।

संख्या १३६. तत्व उपदेश या पोथी ज्ञान गोष्ठी, रचयिता—ताराचंद, कागज—देसी, पत्र—२७, आकार—७½ × ४½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४३, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८१२ वि०, प्राप्ति-स्थान—पं० ब्रह्मादत्त जी पांडे, ग्राम–कनेरी, पोस्ट–फूलपुर, जिला–आजमगढ ।

आदि—. . . . . .तजोगी ।।

।। सोरठा ।।

पिता पितंबर नाम षेडवाल शासन कहैं ।
जन्मवास] ता धाम नगर वराहिम महम ढिग ।।
न पूरन जोगेश "रामचंद्र" शत रामचंद शतगुर भए ।
जथा कथन उपदेश प्रति शंदेह तथा लिष्यौ ।।

गए सकल संदेह आदिन ते शतगुर मिले ।
मिटेउ भरम मन देह पूरब शुक्रित पुन्य ते ।।
श्रीवासतव सोई कासथ दुशरी पंक्ति के ।
सालहोत्र पद होइ मूल ग्राम सोइ भोजपुर ।।

।। दोहा ।।

परसराम तें भागमल रामचंद शुत तासु ।
पिता पर पिता जानियो विस्न भगति विश्वास ।।
पाथर तें कचन भयो पारस गुर गोविंद ।
"रामचंद" को चंद शो कियो विमल सुष कंद ।।

।। चौपाई ।।

प्रथम मिलाप गुस्टि जो भई । तत्व कला पूरन निरमई ।।
स ग्यान कर्म अध्यातम सत्व । ।।

अंत--

जव फिरि चहै जमावन षेत । उहै बीजतें उपजै हेत ।।

राम राम राम इती श्री तत्व उपदेश पोथी ग्यान गोष्टिकला शमाप्तः भाषाभनित तारा-चंद लीषीतं रेवती राम कायस्थ अस्ठाने स्थान सहीपर तपै दुबैया प्रः नीजामबाद सवार, जौनपुर शमत १८१२ मीती भादौ शुदी १० मोकाम आजमगढ़ मो लीषा ।।

:o: :o: :o:

पंचम मुद्रा प्राणायांम । एइ पांचों मुंद्रा नाम ।।
मुद्रा चरी उनुमुनी । .... ।।

:o: :o: :o:

--अपूर्ण

विषय--तत्वज्ञान का उपदेश किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ अपूर्ण है । प्रथम पत्र और तीसरे पत्र से लेकर २१ पत्र तक तथा तीस से लेकर छत्तीस तक एव चौवन के पश्चात् के त्रे नही है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल संवत् १८१२ वि० है ।

सख्या १४०क. अद्भुत विलास (वशीकरण विधि), रचयिता--ताहिर, कागज--बाँसी, पत्र--६, आकार--८ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--१५२, पूर्ण, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १६५५ वि०, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि--श्री गणेशायनमः ।। अथ अद्भुत विलास गिरंथ लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

जैसे जैसे पोहप संग सुर है।। जो तिल के तेल ।।
तैसे तैसे बास गुन कहिए वाको नाम फुलेल ।।

।। चौपाई ।।

कोई आमचरज है दीषलावै ।। कोई जाटक चाटक लावै ।।
कोई इंद्रजाल लै आया ।। कोई काया कलप दिखाया ।।
कोइ लोक अंजन मोहन करै ।। कोइ चित्रन की सुरत हरै ।।
कोइ रूप पलट के हरै ।। वेषै श्रोर श्रोर कुछ कहै ।।

कोई कल अनखत फलं ।। कोई बात करत जो चलें ।।
कोई जल पैठी होई जलवासी ।। कोई अगिन सेज ले उदासी ।।
कोई नीर बीच सर जीव दिखावें ।। कोई चित्र रोवें और गावें ।।
सब गुनियन मिलि कौतक कीना ।। जो देखे सो अचरज गिना ।।

मध्य— ।। और वसीकरन ।।

चाहै नारि पुरुष बस कीजें ।। तब ऐसी बीधी कीजें ।।
मूल कनेर लाल को अने ।। बरस आदित लीजें ।।
पीसी कुटि के गोली करिए ।। आन सुखावें छाही ।।
आगे जतन कहुगो जैसो ।। तिसमें धोष नाही ।।
तिल के तेल जलावें गोली । जैसे छार दीषवें ।।
तब इह नल छानिए ।। बस तरसीर के लावें ।।
कामनी करे तेल का मरदन ।। अपने पीया सो सोवें ।।
पुरुष होय कामनी के वश मै ।। कपट हीए का षोवें ।।

अंत— ।। और वसीकरन ।।

जो आने खरबी मीढ़हा की ।। ताही अगिन में धरीय ।।
मेल फुलेल ताही ओटावें ।। दोहु एकत्र करीय ।।
उठि के प्रात हथेली धरिके ।। लंक भोह लगावें ।।
जो सनमुष होइ देषे ताको ।। संग लगा सोइ आवें ।।

इति श्री अद्भुत विलास ।। वसीकरण बोध समापतं ।।

विषय—इसमे वशीकरण की विधियाँ दी हुई है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम ताहिर है । ये सभवतः आगरे के रहनेवाले थे; क्योंकि मुखपृष्ठ पर श्री मयाशकर जी याज्ञिक ने उन्हे 'आगरे के रहनेवाले थे' लिखा है । रचनाकाल सं० १६५५ वि० का अंत समय है :—

संवत सोले सौ गने और पचपन मे राष ।।
अंत काल गिनि लीजिए वेद भेद सब भाष ।।

प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित दो ग्रथ सकलित है :—

१. अद्भुत विलास—ताहिर कृत
२. भरत विलाप—ईश्वरदास कृत ।

संख्या १४०ख. मुक्ति विलास (हठ प्रदीपिका), रचयिता—ताहिर, कागज—देसी, पत्र—२६, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ मुक्तिविलास लिष्यते ।।

।। चौपई ।।

ऊंकार आदि अविनासी । रूप अपार ज्योति प्रकासी ।।
षट दरसन जे सिद्ध कहावें । परम तत्व दरसन को पावें ।।
गहै नाक अरु गाल बजावें । अदिन पंथ ताही बे पावें ।।
पलक मुरती उर धरहि । जल पर चिति पुनका करहिं ।।
मूंदें नैन षोज नहीं पावें । पुनि तिहिं षोज षोज मन लावें ।।
बहुतें कहै कहानी भूलें । प्रगट कमल अग्नि महि फूलें ।।

अंत—

इड़ा पिंगला धमनि मैं दोऊ चलत ससि भान ।
तामस कहिए चंद्रमा राजस सूरज जान ।।
उपाइ सबै हठ किए राजजोग सिधि सार ।
संजम जोग अरूढ़ करि काल बचावन हार ।।
ताहर सुकवि सुभाइ सब कीयौ सार उधार ।
रूढ़ (?गूढ़) विद्या बरनन कीयौ नाना ग्रंथ विचार ।।
नाना रिष के मति बिना धात वढौहि पास ।
हठ विद्या अभ्यास तें कियो मोह तम नास ।।
कवि ताहर वरनन कियौ साधन जोग अमोल ।
अहिमद गुरु की कृपा तें दिए कपाट हिए के खोल ।। १६ ।।

इति श्री मुक्ति बिलास जोग साधन पूर्वाचार्य हठ प्रदीपका ग्रंथ संपूर्ण ।। १ ।।

विषय—हठयोग का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नहीं है । रचयिता का नाम ताहिर है । इनके गुरु का नाम अहमद था । और वृत्त नहीं मिलता ।

ग्रंथ अपने विषय का उत्तम है । इससे यह पता चलता है कि मुसलमान भी योग क्रियाओं से प्रभावित हो चुके थे ।

प्रस्तुत ग्रंथ निम्नलिखित ग्रंथों के साथ एक हस्तलेख में है :—

१. सामुद्रिक, २. ग्रहदान विधि, ३. दिन प्रमाण घटिका विचार, ४. स्वरोदय टीका, —अखैराम, ५. शकुन विचार ।

संख्या १४१क. रामायण (बालकांड), रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१६४, आकार—११ × १०$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०३४, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ वि०, लिपिकाल—सं० १७४६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० तामेश्वरप्रसाद मिश्र, ग्राम—डाँगीपार, पो०—भैंसा बाजार, जि०—गोरखपुर ।

आदि—

..................जोती । सुमिरत दिव्य द्रिस्टि हिय होती ।।
दलन मोह तम सो सु प्रकासू । बड़े भाग उर आवै जासू ।।
उघरहि विमल विलोचन ही के । मिटहि दोष दुष भव रजनी के ।।
सूझहि रामचरित मनि मानिक । गुप्त प्रगट जहाँ जो जेहि षानिक ।।

।। दोहा ।।

जथा सुअंजन अंजि द्रीग साधक सिध्य सूजान ।
कौतुक देषहि सैल बन भूतल भुरि निधान ।। १ ।।

अंत— ।। छंद ।।

निज गिरा पावनि करन कारन राम जस तुलसी कह्यौ ।
रघुबीर चरित अपार बारिधि पार कवि कौने लह्यौ ।
उपबीत ब्याहु उछाहु मंगल सुनि जे सादर गांवही ।
बैदेह राम प्रसाद ते जन सर्व्वदा सुष पावही ।

॥ सोरठा ॥

सिय रघुबीर बीवाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।
तिन कहु सदा उछाहु मंगलायतनु राम जसु ॥ ३८८ ॥

इति श्रीराम चरित्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने प्रथम सोपान : समाप्तं सुभमस्तु इति बालकांड संवत् १७४६ समें नाम जेठवदि सतमी वार सुक्रवार ॥ ली० षुरामनि बास वासूवास सुत जाति रैदास मुरति थान सगड़ी सभसंतन्ह के पाउ की षाक ॥ दोहरा ॥
जो जन रुषेउ विषय रस चीकने राम सनेह । तुलसीते प्रिय राम कहुं कानन बसहु कि गेह ॥१॥
काम गाइ के दूध सो हाड चाम सो नाहिं । तुलसी अंवृत पीजिए साधून्ह के मुष मांहि॥२॥

विषय--बालकाड रामायगा की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत प्रति मे सख्या १ और सख्या ४३ के पत्रे नही हैं। एक पत्रे पर दो कागद चिपके होने के कारण कितने ही पत्रों के एक ओर के लिखे पृष्ठ भी लुप्त हो गए हैं। रचनाकाल स० १६३१ तथा लिपिकाल स० १७४६ वि० है। प्रति प्राचीन होने से ही इसका विवरण लिया गया है।

संख्या १४१ख. रामायगा (अयोध्याकाड), रचयिता--गो० तुलसीदास, कागज--देशी, पत्र--८५, आकार--६ × ८½ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--१९१२, खडित, रूप--प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि--नागरी, लिपिकाल--सं० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता--पं० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट-बरदह, जिला-आजमगढ)।

आदि.......................................सुंदर सब भांति ॥
कहि न जाय कछु नगर विभूती । जनु एत निय विरंचि करतूती ॥
सब विधि सब पुरलोग सुषारी । रामचंद मुष चंद निहारी ॥
मुदित मातु सब शखि शहेली । फलित विलोकि मनोरथ बेली ॥
राम रूप गुन शील शुभाऊ । प्रमुदित होहि देषि मुनि राउ ॥
॥ दोहा ॥
सबके उर अभिलाष अस कहहि मनाइ महेसु ।
आपु अछत जुवराज पद रामहिं देहु जनेषु ॥ १ ॥
एक बार जानकी समेता । बैठे प्रभु निज रुचिर निकेता ॥
भुज प्रलंब उर नयन विशाला । पीत वसन तन स्याम तमाला ॥
कोटि मनोज देषि छवि मोहा । सीता कर चामर वर सोहा ॥

मध्य--
मोहि लगि सबै सहेउ संतापू । बहुत भांति दुष पावा आपू ॥
अब गोसाइं मोहि देउ रजाई । सेवउं अवध अवधि भरि जाई ॥
॥ दोहा ॥
जेहि उपाइ पुनि पाय जनु देषै दीनदयाल ।
सो सिष देइअ अवधि लगि कोशलपाल कृपाल ॥

अंत..............................नहि ।
सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरति ॥ ३२९ ॥
इति श्री रामचरित मानसे सकल कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपाति ओगो नाम द्वितीय सोपान: समाप्त: ॥ शुभमस्तु संवत् ॥ १७७७ ॥ वैशाख मासे कृष्ण पक्षे रवि वासर... वासी पुस्तक समाप्त शुभमस्तु ॥ राम राम........

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति जीर्ण शीर्ण तथा खंडितावस्था में प्राप्त हुई है। लिपिकाल संवत् १७७७ होने से यह काफी प्राचीन है।

संख्या १४१ग. रामायण, गोस्वामी तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—२९९. आकार—९३/४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८७७, अपूर्ण (खंडित)—रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी और कैथी, लिपिकाल—सं० १७५२ वि०, प्राप्तिस्थान—बाबू मूसनसिंह, ग्राम–सेवराई, पो०–भदवरा, जिला–गाजीपुर।

आदि.............।

करहु हरखी हीअ रामहि टीका। मंत्री मुदीत सुना नृप बानी।
... ... । अभीमत बीरव परा जनु पानी।
वीनती सचीव करै कर जोरी। जीअहु जगतपती बर्ख करोरी।
जग मंगल भल काज बीचारा। वेगी नाथ न लाइअ बारा।
नृपही मोद सुनी सचीव सुभाखा। बढ़त बवरी जनु लहत सुसाखा।

॥ दोहा ॥

कहेउ भूप मती राज कर, जो जेही आएशु होइ।
राम राज अवीखेक हीत, वेगी करीअ सोइ सोइ।

:o: :o: :o:

अंत—इती श्रीराम चरित्रे मानसे समुल कौलुख वीधंसनो नाम पोथी उत्रकांड सपुरन समापतहु जौ प्रती देखा सो लीखाम्म दोख न दीअते पंडित जन सो बीनती मोरी छुटल अछर लेव सम जोरी॥ सम १७५२ समे नाम माघ सुदी पुरनवासी मोकाम फराकाबाद गंगा जीव का निकट बीधं।

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य–ग्रंथ अपूर्ण है। केवल १२९९ पत्रे उपलब्ध है :—

अयोध्या कांड	३१ पत्रे।
अरण्य कांड	३१ पत्रे।
किष्किधा कांड	२५ पत्रे।
सुंदर कांड	२६ पत्रे।
उत्तर कांड	८० पत्रे।
कुल	२९९ पत्रे।

लिपिकाल संवत् १७५२ वि० है। प्रस्तुत प्रति जीर्ण शीर्ण अवस्था में है और इसकी लिपि अत्यंत भ्रष्ट है।

संख्या १४१घ. रामायण, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देसी, पृष्ठ—३९५ (कांडों के क्रम से उनके पत्रों पर अलग अलग संख्याएँ लगी है), आकार—१३ इंच × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७७, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या बिभाग, काँकरोली, हिं० बं० ६१, पु० सं० ३।

आदि—श्री रामचन्द्राय नमः॥ श्री रामो जयति॥ श्री जानकीवल्लभो जयति॥

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ बंदे वांनीविनायकौ॥ १॥

भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वांतस्थमीश्वरं ॥ २ ॥
वंदे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणं ।
यमाश्रितोहि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० १ किष्किंधा कांड, चौपाई ॥
आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत नियराया ॥
तहाँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सींवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेसि जानि जिय सयन बुझाई ॥
पठए बालि होंहि मन मैला । भागौं तुरत तजौं यह सैला ॥
बिप्र रूप धरि कपि तहां गएउ । माथ नाइ पूछत अस भएउ ॥

अंत—
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञान भक्ति प्रदं ।
माया मोह मलापहं सुविमल प्रेमाम्बुपूरं शुभं ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंतिये ,
ते संसार पतंग घोर किरणैर्दह्यंति नो मानवाः ॥ २ ॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने अविरल हरि भक्ति संपादिनी नाम सप्तम सोपानः ॥

संवत् १७७७ वर्षे आषाढ सुदी ६ बुधे लिखतं श्री अमदावादे श्री राय जी पठनार्थं ॥ श्री राम ॥

विषय—श्री रामचरित्र वर्णन ।

संख्या १४१ङ. रामायण, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—५६१, आकार—६$\frac{३}{४}$ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८३ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामराज पण्डेय, ग्राम—मड़ही, पो०—पतरही, जिला—जौनपुर ।

आदि— ॥ सोरठा ॥
जो सुमिरत सिधि होई गन नायक करिवर बदन ॥
करौ अनुग्रह सोई बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ १ ॥
मूक होई बाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ॥
जासु कृपा सो दयाल द्रवौ सकल कलिमल दहन ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥
भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं ॥
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भवरस बिरति ॥ ३२५ ॥

इति श्री राम चरित्र सकल कलुष बिधंसने बीमल वैराग्य संपादनी नाम द्वितीय सोपान समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् ॥ १७८३ ॥ राम राम ॥

अंत— ॥ दोहा ॥
मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर ॥
अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भवभीर ॥
कामिहि नारि पियारि जिमि लोभीहि प्रिय जिमि दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥ १३० ॥

बालकांड	१६१ पत्रे
अयोध्या कांड	१५७ पत्रे
आरण्य कांड	२८ पत्रे
किष्किधा कांड	१६ पत्रे
सुदर कांड	३६ पत्रे
लंका कांड	७३ पत्रे
उत्तर कांड	६० पत्रे
समस्त	५६१ पत्रे

विशेष ज्ञातव्य—"गोस्वामी तुलसीदास" कृत रामायण की प्राचीन प्रति (सं० १७८३ वि०) की मिली।

संख्या १४१च. "रामसतसई" या तुलसी सतसई, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—४७, आकार—१०४/५ × ५२/१० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १६११ वि०, प्राप्तिस्थान—पंडित भागवत तिवारी, ग्राम—कुरथा, पो०—पीरनगर (गोराबाजार), जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री गनेसाएनम्हः श्री राम सतसई लिखते दोहाः ॥

नमा नमो श्रीराम प्रभु परमातम परधाम।
जेहि सुमिरत सिधि होत है तुलसि जन मन काम॥

राम बाम दिसी जानकी लखन दाहिनि वोर। ध्यान सकल कल्यानकर तुलसि सुरतरु तोर॥
परम पुरुष परधाम बर जापर अपर न आन। तुलसि सो समुझत सुनत राम सोइ निरबान॥
सकल सुखद गुन जासु ते राम कामना हीन। सकल काम प्रद सर्वहित तुलसी कहहि प्रवीन॥
जाके रोम रोम प्रति अमित अमित ब्रह्मंड। सो देषत तुलसि प्रगट अमल सु अचल प्रचंड॥

:o: :o: :o:

अहि रसना थन धेनु सर गनपति दिज गुरुवार। माधवसित सिय जन्मतिथि सतसैआ अवतार॥
हरन भरन अति अमित विधि तत्य अर्ध कविरिति। साकेतक सीध्यांतमत तुलसि बदत विनित॥
विमल बोध कारन सुमति सतसैआ सुषधाम। गुरमुष पढ़ीगति पाईहै विरति भगति अभिराम॥
मनमय जरसत लागुजुत प्रगटछंद जुत होए। सो घटना सुषदा सदा कहत सुकवि सबकोए॥
जल समान तत वान लघु अपर वेद गुर मान। संजोगादि विकल्प पुनि पवन अंत कहु जान॥
दीर्घ लघु करी तह पढ़ब जह मुष लह विश्राम। प्राकृत प्रगट सुभाव एह अनीत बुधाबुध काम॥

अंत—

जो जगदिस तो अति भलो जो महिस तव भाग।
जन्म जन्म तुलसि चहहि राम चरन अनुराग॥
का भाषा का संस्कृत विभव चाहिअत साच।
काम जो आवं कामरी का लेय करीय कुमाच॥
वरण विसद मुकुता सरिस अर्थ सुत्र समतुल।
सतसइआ स्रवर विसद गुण सोभा सुभमुल॥
वरमाला बाला सुमति उर धारे जुत नेह।
सुखं सोभा सरसात नित लहे राम सिनेह॥
भूप कहहि लघु गुनिन कह गुनि कहहि लघु भूप।
महि गिरिगत दोउ लखत जिमि तुलसि सर्व सुरूप॥

॥ दोहा ॥

वाद विचारि चल परी हरि वाद विवाद ।
सुकृत सिमस्या रथ अपध परमाथ मरजाद ॥

इति श्री मद्गोसामि तुलसिदास विरंचितायं सत्य सातिय सतया सर्ग समापत सुभमस्तु सिधि संतु संवत् १६११ साल माह चैत सुदी रोज दीन एक एतवार के लिषा मयाराम सतसइ संपुरन सर्ग ॥ ७ ॥

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

अहि रसना थन धेनु सर गनपति दिज गुरुवार ।
माधव सित सिय जन्म तिथि सतसैआ अवतार ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सं० १५४२ है, जो संगतिजनक नहीं जान पड़ता । संभवतः 'सर' लिपिकाल द्वारा गलत लिखा गया है । वास्तव में उसे 'रस' होना चाहिए । इससे संवत् १६४२ वि० होता है, जो गो० तुलसीदास जी के समय को दृष्टि में रखकर ठीक जान पड़ता है ।

संख्या १४१छ. सर्वांगपीर मोचन (हनुमान बाहुक), रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६¾ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७४ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रंथदाता—डेरातर के महाराज, स्थान व पो०—मांडा, जि०—इलाहाबाद) ।

आदि.................... ।

शीलधाम पूरोकाम आठो जाम लेत नाम कौशपति कृपा करि रोष विसराइए ।
वास शीश पीर वीर कालनेमि सम जानि वातपूत लूम्वते लपेटि कै भवाइए ।
डाटि कै चपेट मारि दूरि डारि कोशनाह पुन्यवाह तुलसी के सीश ढिग ल्याइए ॥ ७ ॥
पाप के प्रभाव की कि कर्म के सुभाव की कि काल के करालता की प्रेरिका हू रिश की ।
जंत्र मंत्र ओटकी कि दुराचार मोटकी कि पूर्वा द्विज दोह की अघ ओघ वलीश की ।
एते हेरु शंभव पिशाची रूप शिषापीर भागि जाहि वेगि वानि वलि कीश की ।
आन हनुमान की सपथ बलवान की दोहाई कवि धीश की जौ रहै पीर शीश की ॥ ८ ॥
आरत वयन पुकारत हो कपिनाथ न नेकु अवार लगाए ।
राघव दूत अकूत बली जन हेतु विशाल लङ्गूर लफाए ।
शीश कि पीर पिशाचिनि लङ्किनि समुझि समेटि पछारि भवाए ।
गात शुभाय भए तबही जही तुलसी हनुमान मनाए ॥ ९ ॥
लोचन पीर प्रवेश करो तब पंडित लोग सुनो परिमाना ।
औषद मूल विचारि हिए करु मारुतनंदन के पद ध्याना ।
होइह लोचन शुच्छ सुहावन छूटहि पाप व्यथा बलवाना ।
राम कृपाबल पाय प्रतीति सदैव भजै तुलसी हनुमाना ॥ १०० ॥

:o: :o: :o:

अंत—

रचिकै सुभेषज गो संत द्विजन कीधौ मित्र सो विरोध कीन्हों लोभ लागि थाति की ।
कीधो कुलवंती नारि गृह सो निकारि दीन्हों प्रीति मानि चेरी सो अति नीच जाती की ।

तुलसी कहत कीधो कुल के कलङ्क है फेर काहू कुव्हन की अति बिजघाती की ।
पापिनी निशाश्चरी सि जानिकै कृपानिधान महाबीर बूरि कीजै पीर बडी छाती को ॥६०॥

छपय

जय रघुवर व(र) दूत जयति सम मारुत नंदन ।
जय कपि कुल पङ्कज दिनेस तिमिर गन गंजन ।
जय सुर मुनि हेतु दशानन दर्प्प विहंडन ।
जय महिरावन कालनेमि निसिचर मद खंडन ।
जय राम काज लगि प्रगट भय कपि सरूप पावन परम ।
रुजहर अघहर कष्टहर जय हनुमान धूरधर धर्म्म धुरंधर ॥

इति श्री गोसाइ तुलसीदास विरचिते सर्वांगपीर मोचन हनुमान बाहुक समाप्तम् सुभम मिश्रे ॥ १ ॥ संवत् १८७४ फालगुण शुक्ल नवयां चंद्र वासरे लेषित ममिद पुस्तकं रघुबर-दयाल मिश्रेण स्वार्थ परार्थं वा श्रीमते रामानुजाय नमः ॥

विषय--समस्त शरीर कष्ट निवारण के लिये हनूमान की स्तुति की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य--रचना के आरभ के दो पत्रे नही है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपि-काल सवत् १८७४ है ।

संख्या १४२क. वानी, रचयिता--तुलसीदास, कागज--देशी, पत्र--३६, आकार--६ × ४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१०, परिमाण (अनुष्टुप्)--२६२, खडित, रूप--प्राचीन, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (दाता--पं० हनुमानप्रसाद मिश्र, ग्राम-सोनई बड़ी, पो०-करछना, जिला-इलाहाबाद) ।

आदि-- ॥लिष्यते छंद ॥

सत सुरति समुझसी हार साधो नीरष नीत नैनन रहो ।
धून धधक धीर गभीर मुरली मरम मत मारग गहों ।
सम सील लील आपील पेलं षेल षुली षुली लषी परं ।
नीत नेम प्रेम पीपार पी को सूरती सजि पल पल भरं ।
धर गगन डोर अपोह परषं पकर पट पीव पीव करं ।
सर साध सुन सूधार जानो ध्याव धर जव धीर थूवा ॥
जहा रूप रेष नभेष काया मनन माया तन जूवा ॥
अली अंत मूल अतूल कवला फूल फीर फीर धरी धसं ।
तुलसी तार नीहार सूरति सैल सत्र मत मन वसं ॥ १ ॥

अंत--प्रदबुध प्राव अलेषा री सषी सिया को भेषा ॥ टेक ॥

उवित मुदीत दोउ सहेर सोहावन स्याम सेत नीत देषा ।
अरज नेत्र नभ फटक सीला पर पद नीरवान वीवेका री ॥ १ ॥
सील पीली वीजै षेत्र वींवाचल लील सीषर पर टेका ।
समुंदर सात पार जल षंडी अंड अव लेषेषारी ॥ २ ॥
नीरषो चार षानी गत चारी वीध वीध जीव वीसेषा ।
केवल ग्यान होत गुंकारा देषे केवल अनेका री ॥ ३ ॥
ये नीरवान भूमि मति मारग आगे जानै ना लेषा ।
सीरवग जेन धरम मत माही उनके याकी टेका री ॥ ४ ॥
आतम ज्ञान ध्यान बतलावं आगे भेद न पावं ।
सास्तं साष भाष वीधी देवं षोजत मुवे अनेका री ॥ ५ ॥

या के परे मींन बोधि न्यारी सुंनवाई सबोधि बेषा ।
ताके परे पार सत साहेब सो पद संतन लेषा री ॥ ६ ॥
सुनी सुन प्रत प्रत माही जहां नीरबान ना पेषा ।
केवल ग्राव ग्रात मां नाही धरम कर्म नही येका री ॥ ७ ॥
सुर बंदा नही धरनी अकासा तेज पौन जल छेका ।
ताके परे पार नीरष न्यारा तुलसी होये ग्रोग देषा री ॥ ८ ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—निरगुन मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना खंडित है । मध्य भाग के कई पत्र लुप्त हैं । देखिये "दत्तलाल की बाराखड़ी" का विवरण पत्र ।

संख्या १४२ख. बानी ?, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामदेव शुक्ल, ग्राम—राजापुर, पो० गौरा बादशाहपुर, जिला—जौनपुर ।

आदि—जब मन हाथ होय जेहि प्रानी ॥
तत छन भेंटे सारंगपानी ॥

॥ दोहा ॥

जो मन जीति सकै नहिं ॥ वो ममता नहिं त्याग ॥
तब सर्गुन के पंथ लै ॥ ज्यों जोगी के आग ॥
बेद भेद लै रहे निवारा ॥ जो कहै ग्रंथ सो करे बिचारा ॥
पूजिय बोडर तीरथ कीजै ॥ पिड पानी पित्रन्ह कहँ दीजै ॥

:o: :o: :o:

सर्गुन रूप दशो अवतारा ॥ ताकर सुनहु सब बेवहारा ॥
तामह सातो जन्म मुरारी ॥ निर्गुन रूप जानतु बनवारी ॥

॥ दोहा ॥ नवधा भक्ति कहों मै ॥ सुनो रिखं मन लाइ ॥
अध्यातम महं देषियहु ॥ कह कविवर समुझाइ ॥
प्रथम भक्ति दरशन हरि संता ॥ दूसर समगुन रहे जपंता ॥
तीसरि भक्ति कहों जिन भांति ॥ गुरपद लीन रहे दिन राती ॥
पहिले आपुहि चीन्ही के तब चीन्हे संसार ॥
"तुलसी" मन के बोध तें भेंटत लागु न बार ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

सहस बार सो नहिं जपै तौ सत बार जपंत ।
गुगुल होम करि अग्रबल करिहें अग्नि प्रजंत ॥
हुमराव कुंभे भरे घट कुंभे घटमाल ॥
तब सब लै धरनी तले जहां बेदी तहां बास ॥

:o: :o: :o:

जाके राम हृदय मंह आया ॥
सो परिनाम चिन्त लगाया ॥

:o: :o:

जलज पत्र ज्यो रहे जल माहीं ॥
आपन भेद न कहे कोइ पाही ॥
अजपा जाप न जानै कोई ॥
वासर निसा तत्वचित होई ॥
परदारा विमुख रहें कैसे ॥
.... ॥
:o: :o: :o:

विषय—संतमतानुसार ज्ञानोपदेश तथा ईश्वरभक्ति वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण और खंडित है । केवल सोलह पत्रे उपलब्ध हैं । खंडित होने के कारण रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं ।

संख्या १४२ग. रत्नसागर ज्योतिष या बृहस्पति कांड, रचयिता—तुलसी, कागज—बांसी, पत्र—१७, आकार—६$\frac{1}{8}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० विश्वनाथ दुबे, रेकबारेडीह, पो० मऊ, जिला—आजमगढ ।

आदि—रत्नसागर ज्योतिष ?
श्री गणेशाय नमः । अथ पोथी रत्नसागर ज्योतिष श्री शिव उमा सम्वाद तुलसी कृत लिख्यते ।

॥ अथ दोहा ॥

जय जय श्री रघुवंशमणि दीनदयाल कृपाल ।
अस कहि श्री गौरीश्वर बोले वचन रसाल ।

॥ चौपाई ॥

सुनहु उमा अति रुचिर प्रसंगू । सुमति विलास करनि भ्रम भंगू ।
सुर गुरु दशा केर फल जैसा । द्वादश राशि बखानौ तैसा ।

॥ अथ मेष राशि ॥

मेष राशि पर जब गुरु रहहीं । अब्द एक तब अस बुध कहहीं ।
नर सु अन्न संग्रह सब करिहै । प्रथम मास भवनन्हि भरि धरिहै ।
ताहि समय श्रावन के मासा । सप्त दिवस सब ग्रंथ प्रकासा ।
बिको होइ सुअन्नन्ह केरी । तेहि आगे दुर्भिक्ष न फेरी ।
:o: :o: :o:

अंत— सुर गुरु द्वादस रासि पर माना ।
गनित अचल से निगम बखाना ।

:o: :o:

॥ छंद ॥

निर्भय सहित परिवार होइ अनेक भव सचु पावही ।
तिहु भाति कपट विहाइले नर वेद मत में ल्यावही ।
षट भ्रष्ट वश सन्मत इहै दिज चरन रति प्रिय जाहि को ।
तुलसी कृपा गिरिजेश करि अमरेश पद जग ताहि को ।

॥ सोरठा ॥

देहि सपद भगवंत वारहि वार वेद क ।
बसहि हृदय श्रीकंत सुख सिंधु कृपायतन ।

इति श्री बृहस्पति कांड तुलसीकृत शीव उमा संवादे ज्योतिष मत संपूर्ण ।

:o: :o: :o:

विषय—शिव उमा सवाद । राशियो का विचार । संवतो का फल । तथा उनका देश विशेष पर क्या प्रतिफल होगा ? आदि का विचार ।
